

من افريك مام عظم الناوية صدرالائرام موفق بن احدى رمناه ت مولاً المحرك الماري ينزاده إقبال المخرفاوقي أل الحدجاويدر في وكلي المجين وود و لا المور

# تعارف كتاب مناقب امام اعظم الوحنيفة

مناقب امام اعظم ابو صنيف وياه كتاب ......☆ صدرالاتمه الامام الموفق بن احر كلي مايية (م ١٨٥ه) .....☆ حضرت علامه مجر فيض احمه اوليي بماوليوري مدخله العالى ......☆ 3.7 پیرزادہ اقبال احمد فاروتی 'ایم - اے ' لاہور ......☆ پروفیسرغلام مصطفیٰ مجددی ایم - اے ......☆ حضرت امام اعظم ابو حنیفہ دانچو کے احوال و مقامات .....☆ موضوع سال تُصنيف كتاب .....☆ اسااه وائرة المعارف حيدر آباد وكن سال ظیاعت (عربی) اول ١٩٩٩ء بمطابق ٢٠١٠ه - مكتبه نبويه ٔ لابور ٢٠١٣ عر نهال ظباعت (اردو) اول تعداد اشاعت اول .....☆ .....☆ صنقحات OFA ايم يو كمپوزنگ سينثر' بينك كالونی' سمن آباد' لاهور ......☆ كمپوزنگ ......☆ قوى پريس لامور طالح ا فحد جا و مدف روقی پیلشرز داماً دربار مارکسط 0342-4584608 ......☆ 冷 ......☆ قيمت مجلد

مکتبه نبویه سنج بخش روژ، لا هور احمد اوبدف اوقی پبلشرز داتادربار مارکیٹ لاهور

# فهرست مضامين

| P. Sept. Sep | Charles of the Charle | 4               |
|--|--|-----------------|
| مقد المناقب از پروفيسرغلام مصطفي مجددي   | استادى مند كاحق اداكرويا   | qr.             |
| الم الوضيف ظاه كانب اورولادت   | حضرت الم ابوضيف فالح ك ابتدائي تلاقه   | 91"             |
| حرد الم الوطنية والوكائب   | الم ابوضيفه والحرى قابليت كاشرو  | 40              |
| الم اعظم في كريم الدين كا احاديث كي روشن ميس   | حضرت سفیان توری رافعه کی مجلس میں امام ابو حنیفہ واللہ   |                 |
|  | Jak Jak  | 99              |
| حرت الم الوطيقة عام كاحليه مبارك   | امام ابوصنيفه عاله اور همتين احاديث  | 99              |
| م المستعمل بن عابت والم القمان عاني  | فقهی مسائل پرایک بحث   | 100             |
| الم الوضيف واله في حزن صحابه كرام سے ملاقات  | الم ابو حنيفه والدكى خراسان مين شرت  | 100             |
| كاثرف بالا   | امام ابوضيفه طاقد كي احاديث ير مهارت   | 141             |
| سر الم اعظم ابوصنيفه والحدك اساتذه كرام  | سيدناصديق اكبر دايع الم ابوضيفه دايني كى مماثلت  | 100             |
| الإسالم مادول ١٨   | امام ابو حنيفه خام اورعشق احاديث رسول الله الجايم  | 100             |
| ۱۸ عقم طح کی فقہ پر ابتدائی نظر  | الم ابوصيفه فالوكالتخسان   | 100             |
|  | الم ابوصيفه علي اوراحادث نبوى الخيط  | 10              |
| مرت لام شعبی دافته الم الماتات   | كتاب العلم والمتعلم  | 1-1             |
| معقرے اور مبلے   | اختلافی روایات کی وجه  | I+A             |
| تي قواتين كاكروار ٢٨   | نائخ ومنسوخ آيات كاليك قاعده   | 1.4             |
| هم تشد کی تعلیم و تدریس  | امام ابو حنیفہ فاد کے نہ بب کے بنیادی اصول   |                 |
| ۸۷ . نظر میں ۸۷ . ۸۷   |  | "               |
| الله الله الله الله الله الله الله الله  | فنیل عیاض رافعہ ام ابو صنیفہ دیاو کے فضائل بیان  |                 |
|  | ا کرتیں  | 111             |
| الم  | كفرك فتوئ سے احراز   | III             |
| الله المراة كاتى كاتى المراة كاتى المراة كاتى كاتى كاتى كاتى كاتى كاتى كاتى كاتى   | امام ابو حنيفه ويوكو كاحديث پاك پر عمل   | 111             |
|  |  | CONSTRUCTION IN |

| -     |   |       |  |
|-------|---|-------|--|
|       |   |       |  |
| . 157 | وراثت كاليك مئله                            | 10    | المام ابو حليفه شاهد اور حديث رسول كى پابندى |
| 100   | الل كوفد كو قتل عام بياليا                  | 111   | موزوں کے مسح کی حقیقت                        |
| m     | ایک مورت کو طلاق سے بچالیا                  | IN    | مرداور عورت كى بلوغت كا آغاز                 |
| 11/2  | وحريون كاليك حمله                           | -112  | حضرت الم الوضيفه فأفه كالجتنادي أنداز        |
| IPA . | خارجی میدان مناظرویس                        | 114   | محابه كرام كے متعلق لهام اعظم خاف كاعقيده    |
| 1179  | قرات خلف الم برايك مكالمه                   | IIA   | شيعد ام ابوحنيف كي كيون خالفت كرتے بي        |
| 14.   | الم ابو صنيف والحرى حاضر جوالي كاعتراف      | IIA   | نماز عصر کاصح وقت                            |
| 10.   | وی ساکل طل کر نے پی دلچی                    | 119   | موس کی اقسام                                 |
| IM    | ایک قدری کی اصلاح                           | ir.   | انبیاء کرام کی شان و نضیلت                   |
| irr   | مرنے والی عورت کے پیٹ میں زندہ بچہ          | 11.   | نوت كيام؟ من مناه ديدا الكلية                |
| ILL.  | چار ہزار سوالات کے جوایات                   | ırr   | فليفه وتت كا قائم مقام                       |
| 15.7  | استحاضد برحفتكو                             | ırr   | عطاء بن الي رياح مدفير ، ما قات              |
| IN.Y  | مئله دور کاصیح جواب                         | er    | اعش الم الوصفيف كمالات كاعتراف كرتي بي       |
| ior   | زیادہ مبرکے مطالبہ سے نجات                  | . Irr | بيؤهي پر چڙهي ٻيوي کو تين طلاقين             |
| IOM   | ورية كي تنتيم پرايك فيعله                   | IFF   | غلام ابوضيف والم                             |
| 10°   | الم ابوصيفه والدوار القصاويس                | Iro   | حفرت الم باقر في ال عالمه                    |
| 101   | امام ابو صفيفه دايلته اور سفيان توري دايلته | 112   | الم ابوطنيفه والاس ايك رافضي كامكالمه        |
| 104   | ال آپريده کچتي موئي بايدي مي گر گيا         | 114   | نيذ كاسئله                                   |
| 104   | المش ایک تم کھاکر پیش کئے                   | 119   | مدت کے دوران نکاح                            |
| IDA   | ایک بزار مسائل کافوری جواب                  | ırı   | کوفدے گور نز کو انتباہ                       |
| 109   | ایک کینه باز کاانجام                        | ırr   | ایک نقط بدل کرمنله حل کردیا                  |
| 109   | ایک شم کاهل                                 | 100   | الم جعفر صادق والوائي زماند كے فقيه اعظم تھے |
|       |   |       |  |

|     |   |      | - 1  |
|-----|---|------|--|
| F4  | ما الاستامان المساوية                         | 109  | جھوٹے مری نبوت سے مجزہ طلب کرنامجی کفرب          |
| r-r | ارست. ا                                       | U+   |  |
| r-r | متوں اور پائی کامشکیزه                        | N+ - | حعرت مديق اكبر فالد اور حعرت على فالدر أيك مكالم |
| r-0 | الم ابو حنيفه في له كا تقوى                   | u    | عمده تضاة سے انکار                               |
| 1.4 |   | ME   | المش ايك مكالمه                                  |
| r.2 | کارویاری دیانت داری کی آیک مثال               | an   | الم ابوطنيفه والوك برجسة جوابات                  |
| F+A | امين شر                                       | 149  | الم الك فراد ك أثرات                             |
| rı  | كاروبار مين احتياط                            | IZT  | کوفہ کے ایک رئیس رافضی کو نفیحت                  |
| rn  | كاروياريس رزق طال ك حصول كامعيار              | 121" | اثمةالعلم  |
| rr. | حضرت امام ابو حثيفه والحرك اخلاق وعادات       | 140  | فكاح بالشرط طلاق                                 |
| rrr | ائمه كاسائل دينيه پراختلاف اورانقاق           | 1/4  | چورول کی گر فاری کیلئے عجب وغریب طریق کار        |
| rrı | الم ابوصنیفہ طاف کی دنیاہے بے نیازی           | IAT  | فارجيوں ايك مكالمه                               |
| rra | منصب قضاة (عمده چيف جسش) سے انکار             | IAY  | يويان تبديل بو گئيں                              |
| rrr | امام ابو حنیفہ امانت اور مروت کے کوہ گراں تھے | IAA  | رفع بدین کی ممانعت                               |
| rro |   | 191  | حفرت المم باقر غاف كى فدمت من                    |
|     | المنتول كامير مثال محافظ                      | 191" | الم ابو حنيفه والوكي فقهي بصيرت اور دانائي       |
| rra | المم ابو حنيفه والحدكام اليول سے حسن سلوك     | 190" | -<br>حن قرات کی ایک مثال                         |
| rra | ایک سار می نوازے حسن سلوک                     | 190  | ایک لالی سے الات برآد کرال                       |
| rm  | امام ابوحنیفہ کے تہد ، قرات ، جعد کے معمولات  | 199  | امام مالک دولیے کے متعلق ایک پیشین کوئی          |
| ror | خوش لبای                                      | 199  | احمق کی آلیک علامت                               |
| no  | الم الوصفيف فالدك تقوى كى چند مثاليس          | r    | ا قاضى بنے سے انکار                              |
|     |   |      |  |

| 110   | كاليال ويخ والح لوك                       | 177    | سيدنالهم موى كاظم فالاے الت               |
|-------|---|--------|---|
| TAZ   | الم ابو صنيفه ظاهر كي شب وروز كي مصروفيات | mz     | دعدگ می ایک بار تقهدارا                   |
|       | ш , 1 э                                   | ma     | الم الوضية والحس عوام الناس كاستفاده      |
|       | " جلددوم                                  | P19    | ودات كوهيمت                               |
|       | الم ابو حذیفه ظام کاوالدین اور اساتذه سے  | P14    | بیٹے کے استادی فدمت                       |
| rgr   | حن سلوك وتعظيم                            | · 1/20 | ودست كاقرض اداكروا                        |
| 190   | حفرت امام ابويوسف داينتيه كامعمول         | 14.    | راه گیرول پر مروت                         |
| 194   |   | 141    | احباب کی خدمت                             |
|       | الم ابوطنيفه كالب عاسدين سے حسن سلوك      | 121    | احباب كو تق                               |
| r-r   | ایک شرابی سے مفتلو                        | 121    | سفر کے دوران مروت                         |
| r.7   | ایک حاسد کا انجام                         | 125    | الم ابويوسف رافع كال دعيال كى كفالت       |
| F+2   | الم ابوطنف طاع کے وشمنوں کی ایک سازش      | r/r    | نادم قرض خواه کو معاف کردیا               |
| rır   | الم ابوحنيفه والدامرائ كوف                | r2r .  | حضرت زيد بن على رايلي كي سخاوت            |
| rır   | گور ز کوف کے دربار ش                      | 124    | تجارت کے منافع میں مشامح کا حصہ           |
| rir   | بيت المال كى نظامت سے انكار               | 1777   | تجارت کے نفع میں ایک ضرورت مند کا حصہ     |
| rır   | دنياد آخرت ميں ايك كاانتخاب               | 724    | مدعث پاک بیان کرنے سے پہلے صدقہ ویا جا آ  |
| rır   | دین کے لیئے سزائیں                        | 741    | كثيرالعلوم والصيام                        |
| rw    | علاء اور فقها کے لیئے اعلیٰ مناصب         | ۲۸۰    | ایک شاگر و کاصلہ                          |
| riz   | لام ابو حنیفه دیلو اتمه دین کی نظرمیں     | TAT    | مسلمانوں کے تقویٰ کا دور                  |
| riz . | ېم عصراتمه دين کاېد پيه خسين              | ram    | المام ابوحنيفه فأفر كاو قاراور قلبي كيفيت |
| r2.   | الم ابو حنيفه طاه كي قرات قرآن پاك        | rar    | مجلس میں سانپ کاگر تا                     |
| -//// |   |        |   |

| r9.   | ايك اورسوال                                      | T/LI | فاتحةالكناب                                |
|-------|--|------|--|
| P4+   | شافعی حصرات کے ایک اعتراض کاجواب                 | 1-41 | 9.00,000                                   |
| 1-01- | على مرغيناني كالك خط                             | rzr  | موره بالرعمران<br>موره آل عمران            |
| P40   | الم ابوحنيفه والوك فضائل                         | 2    | سورة النساء                                |
| max   | ایک قصه گوداعظ کی مجلس ش                         | 1-4- | سورة الانعام                               |
| P94   | محدثين حفرت الم كي فدمت من حاضر موتح             | 747  | سورة الاعراف                               |
| P***  | الم ابوطنيفه فالوك شبوروز                        | 1-20 | سورة الانفل وتوبيه                         |
| la+la | الم الوصيفه والدفاري مين بهي بات كرتے تھے        | TZT  | موره يوني                                  |
| P*10  | محمد بن فضل رايلته                               | rzr  | سورة يوسف                                  |
| ۱۳    | ابوسليمان مايطير كاتعارف                         | 1    | الم ابو حذیف طاف کے منہ سے نکلے ہوئے الفاظ |
| ۳۱۵   | امام جعفرصادق والهدكا شيحين كم متعلق عقيده       | F44  | یادگار زماند بن گئے                        |
| M19   | حصرت امام ابوصيف واله كالب شاكردول يرشفقت        | 722  | ا الم الوصيف يؤلد نابعي تنص                |
| rrr   | جيل ميں امام ابو حنيفه طيخه کی وفات کی رات       | TAI  | علم فرائض کی تدوین                         |
| ***   | الم ابوصيفه والح كاجنازه بحاس بزار لوگوں نے بڑھا | TAT  | ابو بكررازي ما في كاليك تأثر               |
| ***   | ابن جرئ مافي كوصدمه                              | TAT  | شوافع کے استدال پر ایک نگاہ                |
| ***   | الم ابوطنيفه والوكافشل                           | ۳۸۳  | عمروبن شرجيل هاته                          |
| rry   | الم ابوضيفه غاد كاجنازه الله                     | TAY  | نب رسول الجديم كامقام ومرتبه               |
| 774   | عدہ قضاۃ کی تبولت کے لیے فلیفہ کی کوشش           | TAY  | المة من القريش كي مديث يراك نظر            |
| rp.   | عدة قضاة كے تھم نامے جارى كرديے مح               | TAA  | آ فری بحث                                  |
| r.r   | امام ابوصنیفہ جاتھ موت کے دروازے پر              | TAA  | قدمواقريشأ                                 |
| rrr   | حضرت امام ابو صفيفه عام كاس وفات                 | F9+  | ایک الزای جواب                             |
| name, |  |      |  |

|   | 1              |  | -     |
|---|----------------|--|-------|
| - لام اوطف فالم ك مح يتداشعار                 | MEN            | شريعت كي مدوين ش اولت                          | rer   |
| عيدالله بن السيارك والله                      | rra            | جرومقابلہ کے علوم کی تدوین ۵۵                  | r90   |
| کیا قرآن مخلوق ہے؟                            | CLL            | شوافع کے تاثرات                                | 190   |
| الم الوضيف فالد ك مزار كاكتبد                 | ~~             | ایک اور غلط فنی                                | MAY   |
|   | ורוין          | شافعی حضرات کاایک اور اعتراض                   | 1791  |
| الم ابو عنیفہ دیاد کے مزار پر دعاؤں کی قبولیت | ma+            |  | 1799  |
| ازاله وتم                                     | ror            | الم ابوصفه والدك شاكروخاص المم ابويوسف والحيد  |       |
| الم ابوحنیفہ کے منہ سے نکلے الفاظ عربوں کے    | 1              |  | 04    |
|   | 202            | : 02 33 20 2 (0)                               | ٥٠٢   |
| ایک بدندب پر تغید                             | ladla          | 24,000   | 0.1   |
| حضرت الم ك تقوى كى ايك مثال                   | r21            |  | 0+1   |
| الم ابوصيفه عاف كى مناجات                     | m2r.           |  | 0-1   |
| الم ابوصيفه والحرى البية شاكروول كووميتين     | 447            |  | 0+0   |
| حضرت امام ابوصنيفه والموكاوميت نامه           | MYA            |  | ۵۱۱   |
| قاضى كے ليئے فيملد كرنے كا طريقہ              | · MZ9          |  | ora   |
| الم نوح بن الي مريم                           | MA+            |  | מיים  |
| دابب اسلام پر دب الم ابوطيف فالدي برتري       | ۳۸۳            | 1  | ٥٣٢   |
| الم ابوصنيفه فالدے علقه برایک نظر             | rm.            | 2-0-10-20-25: 4                                |       |
| ایک اعلان                                     | r <sub>M</sub> | الم ابوبوسف والله كي فخصيت برائد وقت كم تاثرات |       |
| الم ابوطنيفه والحرى مجلس شورى                 | r'A9           | فاتمه الطبع مصنف برايك نوث                     | )rz 4 |
| معاندین الم ابوضیفه فاحد ایک گذارش            | r91            |  |       |
|   |                |  |       |

# مقدمهالمناقب

#### از = پروفسرغلام مصطفی محددی ایم اے

امام الائمہ مراج الامہ حفرت ابوضیفہ نعمان بن طابت المعروف بہ امام اعظم قدس مرو سے ترین روایت کے مطابق 220 کو پیدا ہوئے۔ قاضی ابوعبداللہ ممیری اور امام ابن عبدالبرنے امام ابویوسف قدس مروکی روایت نقل فرائی جس سے یہ سال ولادت افذ ہوتا ہے۔ (اخبار ابی حنیفہ و اصحابہ صغیہ ہم ۔ کتاب بیان العلم و فضلہ جلد اصغیہ ۲۵) ابن حلکان نے ۸۰۵ کو اصح فرمایا ہے۔ (وفیات الاعمان جلد ۵ صغیہ ۱۳۳) آپ فسلا فاری تھے۔ (ابوضیفہ و حیات صغیہ فرمایا ہے۔ وفیات الاعمان علیہ کے اسلام تک ذکر فرمایا ہے۔ والحواہر المنیفه جلد اصفیہ ۲۲)۔

ام ملاعلی قاری مطیع فراتے ہیں کے آپ کے آباؤاجداد میں غلامی کا کوئی اثر نہیں از اور ہیں علامی کا کوئی اثر نہیں از اور ہی صحیح ہے کہ آپ آزاد پیدا ہوئے۔ ( مناقب الله ماعظم ) آپ کے والد ماجد حضرت علیہ الرحمہ کی ولادت اسلام میں ہوئی تھی۔ ( آریخ بغداد جلد سالا صفحہ ۱۳۳۳ ) آ ، ، کے والد ماجد حضرت علی الرتضی رضی اللہ تعالی عنہ کی خدمت میں حاضر ہوئے تو آپ نے ان کے حق میں دعائے خیر فرائی۔ ( ایسنا صفحہ ۱۳۲۹ ) گویا آپ کے گھر میں شیرخدا کا فیضان بھی شاخییں مار رہا تھا۔ آپ تابعی تھ اس حقیقت کو علامہ ذہبی نے " مناقب اللم ابی صفیفہ " میں اور امام ابن حجر بہندمی نے " الخیرات الحسان " میں صراحت نے " تب تابعی اللہ و کنر الایمان و جمعہمة العرب یعنی " ابلہ کا نیزو ایمان کا خزانہ اور عرب کا وماغ کما اللہ و کنر الایمان و جمعہمة العرب یعنی " ابلہ کا نیزو ایمان کا خزانہ اور عرب کا وماغ کما ہے۔ " حضرت علی رضی اللہ تعالی عنہ نے " سیف اللہ " یعنی اللہ کی آلوار کما۔ اور حضرت سلمان فاری رضی اللہ تعالی عنہ نے قبہ الاسلام یعنی " اسلم کا گھر " کما ہے۔ ( الطبقات الکبری جلد فاری رضی اللہ تعالی عنہ نے قبہ الاسلام یعنی " اسلم کا گھر " کما ہے۔ ( الطبقات الکبری جلد فاری رضی اللہ تعالی عنہ نے قبہ الاسلام یعنی " اسلم کا گھر " کما ہے۔ ( الطبقات الکبری جلد

اصغه ۵)

آپ کے زمانہ میں کوف تعلیمات اسلامی کا زبردست مرکز تھا، جس میں تین سو اسحاب رضوان اور سر افراد بدر نازل بہوئے۔ ( ایشا صفیہ ۱ ) ایک ہزار سے زیادہ صحابہ کرام رضی اللہ تعالی عشم نے رہائش افتیار فرائی ' ( ایشا صفیہ ۷ ) آپ نے جوان ہو کر ریشی کپڑے کی تجارت کی ' اس لئے آپ کو ''الخزاز '' کہتے ہیں۔ آپ کے سوانح نگاروں نے آپ کی صاف ستھری تجارت کا ذکر بڑے اہتمام سے کیا ہے۔

حضرت المام شعبی علیہ الرحمہ کی نفیحت پر علم دین کی طرف راغب ہوئے۔

(المناقب از لهام موفق جلد اصفحہ ۵۹)۔ ابتدا" علم کلام سے از حد دلچپی تھی۔ فداہب باطلہ سے مناظرے کرتے تھے جس کے لئے آپ کو بیس سے زائد مرتبہ بھرہ کا سفر کرتا پڑا۔ (الیفاً) علم کلام کا مرتبہ بھرہ کا سفر کرتا پڑا۔ (الیفاً) علم کلام کے ماہر کی حیثیت سے آپ کو بہت شہرت علی۔ بعدازاں علم نقہ کے لئے حفرت تماد رضی اللہ تعالی عنہ کے حلقہ درس میں حاضر ہوئے۔ (آباریخ بغداد جلد ۱۳ صفحہ ۱۳۳۳)۔ آپ نے چار ہڑار مشائخ سے استفادہ کیا۔ (المناقب جلد ۱ صفحہ ۱۳ ) ان مشائخ کرام میں بعض صحابہ ہیں 'جس کا الم ابن حجر عسقلانی نے بھی ذکر کیا ہے۔ خصوصاً حضرت انس بن مالک رضی اللہ تعالی عنہ سے آپ کی ملاقاتیں واضح ثابت ہیں۔ (قادی ابن حجر) دیباچہ " شرح سفرالمعادت " میں الشیخ عبدالحق کی ملاقاتیں واضح ثابت ہیں۔ (قادی ابن حجر) دیباچہ " شرح سفرالمعادت " میں الشیخ عبدالحق محدث والوی علیہ الرحمتہ نے بھی بی قول نقل کیا ہے۔

فقہ میں آپ کا مقام بہت بلند ہوا۔ آپ نے سب سے پہلے علم شریعت کو مدون فرمایا۔
آپ کی اتباع امام مالک بن انس مطفحہ نے موطا کی ترتیب میں گی۔ نبییض الصحیفہ صفحہ (۳۲) آپ کی مجلس نداکرہ میں وقت کے جلیل القدر فقہا حاضر ہوتے تھے مثلاً امام یوسف ' ذفر واود طائی' اسد بن عمرو' علی بن مسمر اور مندل بن حبان وغیرہ ( آریخ بغداد) بعض مسائل میں تو ایک ایک ماہ تک بحث جاری رہتی' انقاق ہوتا تو اے امام یوسف " اصول " میں درج کر لیتے۔ ( الکناقب جلد ۲ صفحہ ۱۳۳۳) آپ نے تراسی بڑار مسائل حل فرمائے' جن میں اڑ تمیں بڑار کا تعلق عبادات سے بادے میں ہیں۔ ( ذیل الجوام جلد ۳ صفحہ ۲۳۷۳) آپ عبادات سے ہے۔ باتی مسائل معاملات کے بارے میں ہیں۔ ( ذیل الجوام جلد ۳ صفحہ ۳۲۷۳) آپ علم کلام و فقہ کے میدان کے شہوار تھے اور میرت و کردار کے بھی روشن مینار تھے۔

العيان جلد ٢ صفحه المال تك عشاء ك وضو سے فجركى نماز براهى۔ ( دفیات الاعیان جلد ٢ صفحه الله ١٠٥٠)

الصحيفه المارك من سائه بار قرآن مجيد ختم قرات تق- ( تبييض الصحيفه صفي ٢٣)

 شرات کو ہر رکعت میں سارا قرآن ختم کر جاتے۔ (طبقات الکبری صفحہ ۳۲)
 ہے ۔.. جس جگہ وصال ہوا وہاں سات ہزار مرتبہ قرآن پاک ختم کیا گیا تھا۔ (ایضاً)
 ہے ۔.. جس جگہ وصال ہوا وہاں سات ہزار مرتبہ قرآن پاک ختم کیا گیا تھا۔ (ایضاً)
 ہے ۔.. جس جگہ وصال ہوا وہاں سات ہزار مرتبہ قرآن پاک ختم کیا گیا تھا۔ (ایضاً)
 ہے ۔.. جس جگہ وصال ہوا وہاں سات ہزار مرتبہ قرآن پاک ختم کیا گیا تھا۔ (ایضاً)
 ہے ۔.. جس جگہ وصال ہوا وہاں سات ہزار مرتبہ قرآن پاک ختم کیا گیا تھا۔ (ایضاً)
 ہے ۔۔۔ ہو ۔۔۔ ہوا وہاں سات ہزار مرتبہ قرآن پاک ختم کیا گیا تھا۔ (ایضاً)
 ہے ۔۔۔ ہو ۔۔ ہو ۔۔۔ ہو ۔۔ ہو ۔۔۔ ہو

ابني كمائي سے كھاتے عطيات كو ردكر ديتے تھے۔ ( الخيرات الحسان صفحه ۵۵ )

المناقب جلد اصفحه ٩٢ ) اور متقى تھے۔ ( المناقب جلد اصفحه ٩٢ )

🖈 ... اكثر شاكردول كے بھى اخراجات برداشت كرتے۔ ( الخيرات الحسان صفحه ٣٧)

اریخ ... چرہ اچھا' لباس برترین' خوشبو نفیس' محفل پاکیزہ تھی۔ یاروں کے غیزار تھے۔ ( تاریخ بغداد صفحہ ۳۳۰)

م ساساندام

الله عليه وآله وسلم سے جارہ كا وصف عشق رسول عليه الله على الله صلى الله صلى الله عليه وآله وسلم سے جابت ہے مر آتھوں پر قبول ميرے مال باپ ان پر فدا ہوں الله عليه وآله وسلم سے خابت ہے مر آتھوں پر قبول ميرے مال باپ ان پر فدا ہوں مم ان كے ارشاد كى مخالفت كا تصور بھى نہيں كر كتے۔ (كتاب الميزان از شعرانی)

#### رسول ا کرم مالیا کی نظریس

الله كريم في آپ كو سيرت و كرداركى جمله خويوں سے آراسته فرمايا تھا۔ جس في آپ كو ديكھا آپ كا ہو گيا۔ جس في آپ كى زندگى كا مطالعه كيا وہ متاثر ہوا۔ چنانچه آريخ شاہد ہے كه آج تك ملت اسلاميه كے برے برے مفكرين و متصوفين في آپ كے حضور اپنى عقيدت و اراوت كے بصول نچھاور كئے ہيں۔ سب سے پہلے ہم حضور سروركونين صلى الله عليه و آله و سلم كى مديث نقل كرتے ہيں كه آپ في كس طرح اپناس عظيم غلام اور محبوب بستى كى خبردى ہے فرمايا ....

المن سناوله " لعنى اگر ايمان عندالشريا لنهب به رجل من فارس ابناء فارس حتى يناوله " لعنى اگر ايمان ثريا كے پاس موا تو الل قارس ميں سے ايك آدى وہال بھى پنچ كاور اے حاصل كرے گالـ" ( رواہ مسلم )

ہے ... صحیح بخاری میں بھی قدرے اختلاف الفاظ کے ساتھ یہ حدیث موجود ہے " آگر ایکان ثریا کے پاس لٹکا ہوا ہو گا تو عرب اس کو نہ پا سکیں گے البتہ فارس والے اس حاصل کرلیں گے۔ ( رواہ طبرانی )

حضرت امام سيوطى عليه الرحمه فرمات بين

" میں کہنا ہوں حضور صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم نے یقینا ان احادیث میں امام ابوضیفہ قدس سروکی خبر دی ہے جس کی روایت حضرت ابو هريره رضی اللہ تعالی عند نے کی ہے۔ (بعض صحدی بن عبادہ رضی اللہ تعالی عند سے مروی ہیں۔) (تبییض الصحیف صفحہ ۳)

#### الم اعظم رايليه اور علم حديث

غیر مقلدین حفرات کے نزدیک حفرت امام اعظم رضی اللہ تعالی عنه علم حدیث میں یالک نابلد ہیں۔ اس طرز قکر پر خود غیرمقلدین کے مقتدر عالم جناب داود غرنوی صاحب نے اظہار افسوس کیا ہے کہتے ہیں :

" جماعت اہل حدیث کو حضرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی روحانی بد
وعالے کر بیٹے گئی ہے ' ہر شخص ابو صنیفہ ' ابو صنیفہ کہہ رہا ہے۔ کوئی بہت
ہی عزت کرتا ہے تو امام ابو صنیفہ کہہ رہتا ہے۔ پھر ان کے بارے میں ان کی
تحقیق یہ ہے کہ وہ تمین حدیثیں جانتے تھے یا زیادہ سے زیادہ گیارہ ' اگر کوئی
بڑا احسان کرے تو وہ سترہ احادیث کا عالم گردانتا ہے۔ جو لوگ اشنے جلیل
القدر امام کے بارے میں یہ نقطہ نظر رکھتے ہوں ان میں اتحاد و پیجتی کیو تکر
پیدا ہو سکتی ہے۔ (حضرت مولانا داود غزنوی صفحہ ۱۳۳۰)

حضرت عبدالله بن مبارک روافید : فرات بین که "تم پر لازم ب اثر کاعلم اور اثر کاعلم اور اثر کاعلم اور اثر کاعلم ماصل کرنے کے لئے امام ابو حنیفه روافید کی صحبت لازم ب که انهی سے حدیث کا معنی اور تاویل مل سکتی ہے۔ " ( المناقب، صفحه ۲۰۰۷ ) یاد رہے که حضرت عبدالله بن مبارک روافید عظیم محدث سخے وہ ایک ایسے آدمی سے مخصیل حدیث کا مشورہ کیسے وے سکتے ہیں جو حدیث کو نہیں جانا۔

صدر الائمه امام موفق والطّية : فرمات بين كه " امام ابوطنيفه والله ف كتاب " الاثار " كو عاليس بزار احاديث سے منتب فرمايا۔ (المناقب صفحه ۸۲)

المام ملاعلی قاری روایتی : نقل فرماتے میں کہ الم اعظم رواید نے اپنی تصانف میں ستر ہزار سے زیادہ حدیثیں بیان فرمائی میں جبکہ چالیس ہزار سے کناب الآثار کو منتف فرمایا ہے۔ (مناقب المام ذیل الجواہر المضیدة جلد ۲ صفحہ ۳۷۳)

این حجر مسمی رایشیہ : فرماتے ہیں کہ حضرت امام نے جار ہزار مشائخ کرام سے جو کہ ائم

آبعین تھے اور دوسرے حفرات سے روایت کی ہے' اس لئے علامہ زہبی اور دوسرے علاء نے آپ کو حدیث کے حفاظ میں شار کیا ہے اور جس مخف نے گمان کیا کہ وہ حدیث کی طرف کم توجہ دیتے تھے اس نے تسائل یا حمد کی بنا پر الیا کہا۔ (الخیرات الحسان صفحہ ۲۲)

معر بن كدام ملطی : طلبت مع ابی حنیفه الحدیث فغلبنا میں نے ابوطیفہ کے ساتھ حدیث کی مخصیل کی وہ ہم سب پر غالب تھے۔ (منافب الذہبی صفحہ کے بہت سے صندوق سب سے بڑھ کر امام خود فرماتے ہیں کہ میرے پاس ذخیرہ حدیث کے بہت سے صندوق بحرے پڑے ہیں جن میں سے بہت تھوڑا حصہ انفاع کے لئے نکالا ہے۔ (المناقب از موقق) غیر مقلد حضرات نے ابن خلدون کے حوالے سے یہ پراپیگنڈہ کیا ہے کہ امام کو سرہ حدیثیں یاد تھیں مالانکہ ابن خلدون نے حضرت امام ریا ہے کو حدیث کے کبار مجمدین میں شار کیا ہے اور رد و قبول مالانکہ ابن خلدون نے حضرت امام ریا ہے کو حدیث کے کبار مجمدین میں شار کیا ہے اور رد و قبول کے سلمہ میں ان کے ذہب کو قابل اعتاد کما ہے۔ (مقدمہ صفحہ ۲۲۳) باتی انہوں نے جو یہ کما اون حوصا ابو حنیفہ رضی اللہ تعالٰی عنہ سے سرہ یا اس کے لگ بھگ حدیثیں مردی ہیں اس کی ہو تھیں مردی ہیں اس کی ہم مختلف پہلوؤں سے تشریح کرتے ہیں۔

ا ..... ایک ہے افذ حدیث لینی حدیث حاصل کرنا اور دو سرا ہے روایت حدیث کینی حدیث کی بھالنا اور پڑھانا۔ ابن خلدون کے قول سے روایت حدیث کی قلت ثابت ہوتی ہے افذ حدیث کی برگز نہیں۔ اور روایت حدیث میں قلیل ہونا کوئی جرم اور علم حدیث میں بے بضاعت ہونے کی دلیل نہیں۔ علامہ ابن حجرنے کیا خوب کہا ہے '' وہ مسائل کے استباط میں مصوف تنے اس لئے ان کی روایت سے کی روایت کی وجہ ہے کم ہوئیں اور حضرت ابو بحر رضی اللہ تعالی عنما کی روایات ان کی مصوفیات کی وجہ سے کم ہوئیں اور حضرت ابو حریرہ رضی اللہ تعالی عنہ اور ان بیسے دو سرے صحابہ کی روایات بے شار ہیں۔ یہ حضرات عوام کے مصالح میں مشغول تنے۔

اب یہ کمنا کہ حضرت مدیق اکبر' عمر فاروق ' عثمان غنی اور علی الرتضای رضی اللہ تعالیٰ عنهم کا پایہ حضرت ابو ہریرہ یا ووسرے صحابہ کرام ۔ سے کمزور تھا بہت افسوسناک اور علم حدیث کے ساتھ کھلا غراق ہے۔ ای طرح امام مالک مطبحہ اور امام شافعی مطبحہ کی روایات ان حضرات سے کم

یں جو روایات کھیلانے میں فارغ تھے۔ اس سلسلہ میں ابوذرعہ اور ابن معین کی مثال وی جاسکتی ہے۔ کیا کوئی ان حضرات کو امام مالک رائیتہ اور امام شافعی رائیجہ پر فوقیت دے سکتا ہے۔ لندا روایت صدیث میں قبیل ہونے پر قیاس کرنا بہت برا تعصب ہے اور ابن خدون کے کلام میں بہت بری تحریف ہے۔ علامہ ابن خلدون خود فرماتے ہیں :

قد تقول بعض المبغضين المنعسفين الى ان منهم من كان قليل البغاعة فى الحديث فلهذا قلت رواية ولا سبيل الى هذا المعتقد فى كبار الائمة كان الشريعة انما توخذ من الكتاب والسنة " بعض مراه وثمنول نے تو يمال تك جموث باندها ہے كه بعض ائمه كبار حديث من نائل تھ اس لئے ان كى روايات كم بيں - ائمه كبار كي نبت به اعتقاد كوئى حيثيت نبيں ركھتا شريعت تو كتاب و سنت سے مانوذ كى نبعت به اعتقاد كوئى حيثيت نبيں ركھتا شريعت تو كتاب و سنت سے مانوذ ہے - (مقدمه صفحه ۲۲۳)

ا .... ابن خلدون نے جو کما ہے کہ امام اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے سترہ یا اس کے لگ بھگ حدیثیں مروی ہیں تو بید ان کا اپنا قول نہیں ہے۔ انہوں نے اسے صیغہ مجمول کے ساتھ تقل کیا ہے۔ بعنی یقال کمہ کر اس قول کی صنعت پر مرتفدیق ثبت کی ہے۔

سو ..... ابن ظدون عظیم مورخ تو بین محدث نمین اس لئے انہیں اتمہ کرام کی روایات کا علم کم ہے کہ انہوں نے انہوں نے انام مالک مانید کی مرویات کی تعداد موطا میں تین سو بتائی ہے فرماتے بین " ومالک رحمه الله انما صح عنده مافی کتاب الموطا وغایتها ثلاث مائة حدییث اونحوها-" (مقدم).

اور امام احمد بن حنبل علیه کی مرویات مند احمد میں پچاس بزار بیان کی بیں، فرماتے بیں احمد بن حنبل رحمه اللّه فسی مسئلہ خمسون الف حدیث طلائلہ آبل علم سے مخفی میں کہ یہ تعداد غلط ہے۔ موطا شریف میں " سرہ سو بیں " اور مند احمد میں تمیں بزار احادیث مروی بیں۔ بسیا کہ شاہ ولی الله ریائی نے فرمایا ہے، اب ویکھنا یہ ہے کہ ابن خلدون سے امام مالک ریائی اور امام احمد ریائی کے بارے میں تمامل ہو سکتا ہے تو امام اعظم ریائی کے بارے میں کیول نہ دیائی اور امام احمد ریائی کے بارے میں کیول نہ

ساقب امام اعظم

ہوا ہو گا۔ نیز اس سے غیرمقلدین کی حضرت امام اعظم مالیجہ سے دشمنی ظاہر ہوتی ہے کہ انہوں نے عدشین کرام کے اقوال پر اعتبار کرنے کے بجائے ایک مورخ کے نقل کردہ انتہائی مجمول قول کو سامنے رکھا۔ گویا ۔

مث محلی بربادی ول کی شکایت دوستو اب گلتال رکھ لیا ہے میں نے ویرانے کا نام

مم ..... امام اعظم رضی الله تعالی عنه روایت حدیث میں قلیل نمیں' اس اجمال کی تفصیل و یکھنی ہو تو آپ کے بلند پاید شاگردوں اور آپ سے روایت لینے والوں کی تعداد پر غور کرنا چاہئے۔ حافظ محمد بن احمد الذهبی الثافعی مالجد نے لکھا ہے :

" آپ ہے محد شین اور فقہا نے کثیر روایات حاصل کی ہیں کہ ان کا شار نہیں کیا جاسکتا۔ آپ کے اقران ہیں ہے مغیرہ بن مقسم' ذکریا بن ابی زائدہ' مسعر بن کدام' سفیان ٹوری' مالک بن مغول' یونس بن ابی اسحاق اور ان کے بعد کے زائدہ بن شریک' حسن بن صالح' ابو بکر بن عیاش' عیلی بن یونس' علی بن مسر' حفص بن غیاث' جربر بن عبدالحمید' عبداللہ بن مبارک' ابومعاویہ' و کیم المحاربی' فراری' یزید بن ہارون' اسحاق بن یوسف مبارک' ابومعاویہ' و کیم المحاربی' فراری' یزید بن ہارون' اسحاق بن یوسف الازرق' المحانی بن عمران' زید بن حباب' سعد بن صلت' کی بن ابراہیم' ابوعاصم النبیل' عبدالرزاق بن حباب' سعد بن صلت' کی بن ابراہیم' ابوعاصم النبیل' عبدالرزاق بن حباللہ انصاری' ابوقیم' ہودۃ بن خلیف' ابواسامہ' ابویجیٰ المحانی' ابن نمیر' جعفر بن عبداللہ انصاری' ابوقیم' ہودۃ بن خلیف' ابواسامہ' ابویجیٰ المحانی' ابن نمیر' جعفر بن عون' اسحاق بن سلیمان اور خلق خدا۔ ( مناقب المام ابی حنیفہ ریا ہے صفحہ ۱۲)

اور علامہ سمس الدين شامى عليه الرحمہ نے آپ سے روايات افذ كرنے والوں كے نام درج كے بيں جن كى تعداد تقريباً نو سوچوبيں ہے۔ (عقود الحمان باب سم - ۵) اس طرح خطيب بغدادى نے بھى كافى تعداد كا ذكر كيا ہے۔ حافظ كردرى عليه الرحمة نے صرف ايك محدث حضرت عبد التحد بن يزيد مكى عابيہ الرحمہ كے بارے ميں لكھا ہے كہ انہوں نے حضرت انام دالجت سے نو سو

احادیث مبارکہ حاصل کی ہیں۔ (مناقب کردری صفحہ ۲۹۸)

پھر آپ سے پندرہ مسائید منقول ہیں جن بی سے چار کو ان کے عظیم تلافہ نے بلاواسطہ جمع کیا ہے۔ علامہ زاہد کوٹری نے امام قطنی اور ابن شاہین کے حوالہ سے لکھا ہے کہ خطیب بغداد کے پاس بھی دار قطنی اور ابن شاہین کی مند الی حنیفہ تھیں۔ یہ دو سندیں ان پندرہ کے علاوہ ہیں۔ ( امام اعظم اور علم حدیث بحوالہ نقدم نصب الرابہ صفحہ ۱۳۸۹ ) ان مسائید کے علاوہ امام ابویوسف دیلیے کی کتاب الخراج عبدالرزاق کی مصنف ابن ابی شیبه کی مصنف اور امام محمد کی مراز ان مراز ان مراز ان روایات آپ سے متصلاً لی گئی ہیں۔ پھر اپنی کتاب الاثار جس کو چالیس ہزار دا داویث سے فرمایا ہے۔ ان حقائق کے ہوتے ہوئے جن کوئی سترہ روایات کی رث بڑار احادیث سے فرمایا ہے۔ ان حقائق کے ہوتے ہوئے جن کوئی سترہ روایات کی رث لگائے تو تاریخ حدیث کو مسخ کرنے کے متراوف ہے۔

امام اعظم رضی اللہ تعالی عنہ کے پاس اگر سترہ احادیث کا بی ذخیرہ ہو آ تو برے برے محد ثین اور نادر روزگار فقما چند دن کے بعد آپ سے منہ موڑ لیتے۔ جبکہ اس کے بریکس ہم دیکھتے ہیں کہ امام بخاری روالی کے استاد حضرت کی بن ابراہیم روالی نے اپ اوپر ساع حدیث کے لئے امام اعظم رضی اللہ تعالی عنہ کے درس کو لازی قرار ریا تھا۔ (المناقب از موفق جلد اصفحہ لئے امام اعظم رضی اللہ تعالی عنہ کے درس کو لازی قرار ریا تھا۔ (المناقب از موفق جلد اصفحہ لئے اور حافظ ابن عبدالبر نے امام و کیم کے بارے میں لکھا ہے کہ انہوں نے حضرت امام روالی کے احادیث کا بہت زیادہ ساع کیا تھا۔

#### امام اعظم رایطیه کی ثقابت

غیرمقلدین حفرات امام اعظم رضی الله تعالی عنه کو ضعیف کتے ہیں ولیل یہ که اہام بخاری میلیجہ نے انہیں اپنی کتاب " الضعفاء " ہیں نقل کیا ہے ، یماں ہم کی که سے ہیں که جب آدی دن کو رات کئے پر تلا ہو تو اے کون روک سکتا ہے۔ جس عظیم انسان نے صحابہ کرام ہب اوی دن کو رات کئے پر تلا ہو تو اے کون روک سکتا ہے۔ جس عظیم انسان نے صحابہ کرام سے حدیث لی ہو تابعین کی کثیر تعداد کو دیکھا ہو بلکہ خود اس طبقہ صالحین میں نمایاں ترین مقام کا حال ہو ، جس کے زہد و تقویٰ خلوص و احتیاط کی اس کے جلیل القدر محاصرین نے گوائی دی ہو علی سے بڑھ کر جس کی بشارت خود سرور عالم ، مخرصادق صلی الله علیہ و آلہ و سلم نے دی ہو پھر سب سے بڑھ کر جس کی بشارت خود سرور عالم ، مخرصادق صلی الله علیہ و آلہ و سلم نے دی ہو

اور اسے بخاری و مسلم نے اپنی صحاح میں ورج کیا ہو' آگر وہ بھی ضعیف ہے تو یہ غیرمقلدین کمال سے نقتہ ہو گئے؟

باقی رہ می امام بخاری کی بات تو ہم ان کی جلالت علمی اور نقابت فکری کو تسلیم کرتے ہیں لیکن چران ہیں کہ انہوں نے کس بنیاد پر حضرت امام رطیع کا ذکر "کتاب الضعفاء "میں کیا ہے' میں نہ کہ کان مرجیا سکنوا عن رواینہ و عن حدیثه وہ مرجی تھے اور لوگوں نے ان سے روایت و صدیث لینے میں سکوت کیا ہے۔ (معاذ الله)

حضرت امام ملطح پر مرحی ہونے کا الزام اتنا غلط ہے کہ ولیل کی بھی ضرورت نہیں 'خود حضرت امام ملطح نے اپنی مشہور آلیف" فقد اکبر " میں ارجاء کی تردید فرمائی اور علامہ مرغینائی نے آپ کا قول لکھا کہ اھل الارجاء الذين يخالفون الحق فكانوا بالكوفة اكثر و كنت اقهر هم بحمدالله كوفه ميں مرحی كثرت سے رہتے تھے جو حق كے خلاف تھے اور میں ان سے مناظرے میں جیت جاتا تھا۔ (كشف الاسرار جواللہ مناقب اللمام اعظم جلد اصفحہ م

علامہ عبدالكريم شرستانى شافعى عليه الرحمة قرات بين كه فلا بعبد ان اللقب انما لزمه من فريقين المعتزلة و الخوارج بعيد نهيں كه الم صاحب كو يه الزام معزله اور خوارج في من فريقين المعتزلة و الخوارج وغيره في بود ( جليل و آخل جلد اصفحه 24 ذكر مرجيه ) اى طرح شرح موافق اور عقود الجوام وغيره بين اس كى سخت ترديد ہے۔ لاذا كما جا سكتا ہے كه الم بخارى سے تساع موا ہے۔

علاوہ اذیں فیرمقلدین حضرات کے اس الزام کا تجزیہ ہم یوں کرمتے ہیں کہ اگر حضرت لمام رضی اللہ تعالیٰ عدر کے ارجاء کی وجہ ہے آپ کی روایات پایہ جُوت کو نہیں پنچین تو یہ الزام المام بخاری پر بھی عائد ہو سکتا ہے کیونکہ انہوں نے اپنی صحیح ہیں تقریباً سولہ راویوں سے روایت کی ہے جو مرجی ہونے میں مشہور تھے۔ ( تمذیب التمذیب ہیں اس کی تفصیل موجود ہے۔) نیز چار راوی نسب کے علمبروار تھے، تقریباً ستاکیس شیعہ، چے قدری، چار خاری اور چار جمی ہیں۔ ( یہ کتاب المعارف اور میزان الاعتدال ہیں دیکھا جا سکتا ہے۔) صحیح بخاری کے اننی رواة کی بنا پر کما گیا ہے کہ اس میں بھی ضعیف روایات ورج ہیں، میں حال مسلم کا ہے، علامہ ملا علی قاری علیہ الرجمتہ فرماتے ہیں :

" اہام بخاری کے چار سو بیں (۳۲۰) راویوں میں سے ای (۸۰) راوی ضعیف بیں اور مسلم کے چھ سو بیں ( ۱۲۰) راویوں میں سے ایک سو ساٹھ ( ۱۲۰) ہیں۔" کنا ذکرہ السخاوی فی شرح الفیة العراقی (مصطلحات ابل الاثر علی شرح تخبة الفکر)

اور محقق على الاطلاق علامه ابن جام عليه الرحمة في فرمايا ب

"جن نے کہا ہے کہ احادیث میں سب سے زیادہ صحیح وہ حدیث ہے جو بخاری و مسلم میں ہے یا بخاری و مسلم کی شرطوں پر کمی اور نے روایت کی ہے تول بلادلیل ہے۔ اس کی تھلید جائز نہیں ...... کیونکہ بخاری و مسلم میں کثرت سے ایس روایات ہیں جن کے راوی جرح سے نہیں نکی سکے۔ (فتح القدیر باب نوافل جلد ا)

اب ائمہ فن کی ان تصریحات کی موجودگی میں غیر مقلدین کا یہ کمنا کہ ہم تو بس بخاری و مسلم کو ہی قبول کریں گے، محیحین سے روایت لاؤ ' برے رحم دل واقع ہوں تو کہتے ہیں کہ چلو دوسری صحاح ترفدی ' ابوداود' ابن ماجہ' نسائی سے افذ کر لو۔ سوچنا چاہئے کہ جب بخاری و مسلم کا یہ حال ہے تو باتی کیسے ضعیف روایات سے محفوظ ہو سکتی ہیں۔ دریں حالات اگر '' صحاح ستہ '' کو صحح روایات کی گرت سے محملے روایات کی گرت سے '' یہ نہیں کہ ان میں صحح روایات موجود ہی نہیں۔

ووسرى طرف جس امام جليل اور مجتد عظيم كو ضعيف كما جاتا ہے اس كے پاس ضعيف روايات لينے كا ذريعہ بى كوئى شيس۔ وہ يا تو صحابہ سے روايت لينے بيں جيسا كه امام سيوطى عليه الرحمتہ نے اساد لكھى بيں مثلاً ....

ا ... عن ابى يوسف عن ابى حنيفه سمعت انس ابن مالك يقول سمعت رسول الله صلى الله عليه و آله وسلم يقول طلب العلم فريضة على كل مسلم (تبييض الصحيفه)

س عن يحيلي بن قاسم عن ابي حنيفة سمعت عبدالله بن ابي اوفلي يقول ... r

سمعت رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم من بنى الله مسجداً ولو كمفحص قطاة بتيى الله به بيتاً في الجنة (ايناً)

صحابہ کرام سے روایت بلاواسطہ افذ کرنا حضرت امام مطیعہ کا وہ اعزاز ہے جو ان کے بعض معاصرین و محدثین حضرت امام مالک مطیعہ وغیرہ کو بھی حاصل نہیں۔ یا بھر تابعین کرام کی کثیر جماعت سے احدیث سے ثابت ہے 'یمال بید کہا جائے جماعت سے احدیث سے ثابت ہے 'یمال بید کہا جائے

کہ حضرت امام رابیجہ نے حضرت امام مالک سے مجھی روایات کی ہیں جیسا کہ علامہ شبلی نعمانی جیسے مورخ نے بھی کمہ دیا ہے۔ (سیرت النعمان صفحہ ۵۰۰)

کیونکہ حضرت حافظ عسقالتی نے اسے قبول نہیں کیا فرماتے ہیں لما بثبت روایہ ابسی حنیفہ عن مالک بلک حضرت امام مالک مالیجہ کا حضرت امام رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے شاگرد حضرت امام محمد مرابیجہ سے استفادہ ثابت ہے۔ امام محمد مرابیجہ نے ساع حدیث کے لئے تین سال امام مالک مرابیجہ کے باس بسر کئے اس دوران امام مالک مرابیجہ نے ان سے امام اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے اصول و قواعد حاصل کئے کی سب ہے کہ آپ کی ترتیب کدہ دس بزار احادیث پر مشتمل موطا سترہ سو ہیں احادیث پر رک گئی جن ہیں جی سو مدد دو سو با کیس مرسل چھ سو تیرہ موقوف

روایات اور وو سو بچای تابعین کے اتوال ہیں۔ (مصفی شرح موطا از شاہ ولی اللہ ماليد)

حضرت عبدالله بن داود روافيد كت بين كه بين في حضرت المام رضى الله تعالى عنه ب يوجها كه آپ في تابعين كرام بين بي كن كن كى صبت ب فيض الحمايا، آپ في فرمايا قاسم، سالم، طاؤس، عكرمه، مكول، عبدالله بن وينار، حسن بقرى، عمرو بن دينار، ابوالزبير، عطا، قاده، ابرابيم، شعبى، نافع، وامثالهم ليني اور ان جيسول كى- (مند ابوضيفه كتاب الفضائل)

ہائے ان بزرگان دین میں سے کون ہے جس کی جناب سے آپ کو ضعیف روایت کی توقع ہے۔ اس کئے حصرت امام رضی اللہ تعالی عند کی روایات کی ثقابت پر امام عبدالوہاب شعرانی علید الرحمتہ نے کیا خوب تبھرہ فرمایا ہے :

" الله تعالى نے مجھ پر فضل الماليا كه ميں نے امام ابو حقيفه رضى الله تعالى عنه كى تين مسانيد كا مطالعه كيا ميں نے ويكھا كه امام ابو حقيفه را الله الله الله

صادق آبعین کے سواکس سے روایت نہیں کرتے جن کے حق میں حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے خیرالقرون ہونے کی گوائی دی ہے۔ جیسے ملقم، عطا، عکرمہ، کابر، مکول اور حسن بھری وغیرہ۔ امام اعظم اور رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے درمیان سب راوی، عدل کے مالک، ثقتہ اور بررگ ہیں، جن کی طرف کذب کی نسبت نہیں کی جا عتی۔ (میزان الشریعة الكبرلی جلد اصفحہ ۱۸۸)

الشریعة الكبرلی جلد اصفحہ ۱۸۸)

روى الآثار عن نبل ثقات غزار العلم مشيخة حصيفه

لینی کتاب الا اور میں وسیع علم والے نقتہ اور معزز بزرگوں سے روایت کی ہے۔ موفق)۔

(المناقب از مونق)حضرت امام ابوبوسف ریشید فرماتے ہیں " جب بھی کی مسئلہ میں میرا اختلاف ہوا اور
میں نے بورے تدبر سے کام لیا تو حضرت امام ریشید کا ہی مسلک نجات دہندہ ہاہت ہوا۔ احادیث کی
طرف نظر دوڑائی تو وہ حدیث صحیح کی بھی زیادہ ہی بصیرت رکھتے تھے۔ ( الخیرات الحسان ) حضرت
انس رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے شاگرد امام اعمش علیہ الرحمتہ فرماتے ہیں " ابوحنیفہ تم نے تو حدیث و
فقہ کے کنارے لے لئے ہیں۔" ( الیفا ) اور وکیع علیہ الرحمتہ کا بیان نمایت جائے ہے :
"ابوحنیفہ خطا کس طرح کر کتے ہیں جب کہ ابوبوسف اور محمہ و زفر جیسے
اصحاب قیاس اور اہل اجتماد ان کے ساتھ ہیں اور کیجیٰ بین ذکریا و حفول بن
غیاث اور حبان و مندل جیسے حفاظ حدیث اور اصحاب معرفت ان کے ساتھ
میں اور قاسم بن معین جیسا ادیب اور ماہر لغات ان کے ساتھ ہے اور داود
طائی اور فضل بن عیاض جیسے خدائرس ان کے ساتھ ہیں .... جو مختص اس
طائی اور فضل بن عیاض جسے خدائرس ان کے ساتھ ہیں .... جو مختص اس

حضرت محیل بن معین علیہ الرحمة نے فرمایا ہے کہ ابوطنیفہ سے صالحون کی ایک جماعت

نے روایت کی ہے 'وہ روایت میں سے ہیں۔ (اخبار الی صنیفہ صفحہ ۸۰) امام زفر میلیجہ فرماتے ہیں کہ بدے بدے محدثین حضرت امام کے پاس آتے اور مطلبہ احادیث کے بارے میں آپ سے بوچھا کرتے تھے۔ (المناقب از موفق جلد ۱۳۸ جلد ۲)

أخريس جم المام بدر الدين عيني عليه الرحمه كا ارشاد ديكهة بين :

" میں کہنا موں کہ مینی بن معین سے امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عند کے بارے میں ہوچھا کیا تو انہوں نے فرمایا تقد ہیں۔ میں نے کسی کو نسیل ساکہ آپ کو ضعیف کما ہو۔ شعبہ بن محاج آپ و کتے ہیں کہ آپ حدیث بیان كريں اور شعبہ اور سعيد آپ كو روايت كے لئے كتے ہيں اور يكيٰ بن معین نے یہ بھی کما ہے کہ کان ابوحنیفه ثقه من اهل الصدق ولم يتهم بالكذب وكان ماموناً على دين الله - صدوقاً في الحديث ابوطنیفہ ثقتہ ہیں' اہل صدق میں سے ہیں' ان پر کذب کی تھت نہیں' وہ دین خدا کے این اور حدیث میں سے ہیں۔ عبداللہ بن مبارک سفیان الحمش سفیان عبدالرزاق ملو بن زید اور و کیم جیسے ائمہ کبار نے اور ائمہ ملاشہ مالک و شافعی و احمد وغیرہ نے ان کی تعریف کی ہے۔ اس سے وار قطنی کا ستم اور تعصب اجاگر ہو گیا ہو گا۔ پس وہ کون ہے جو امام اعظم رضى الله تعالى عنه كو ضعيف كے وهو مستحق التضعيف وه خود اس تضعیف کا حقدار ہے کہ اس نے اپنی مند میں سقیم و معلول و منکر و غريب و موضوع روايات نقل كي بي- اس لئے وہ اس قول كا مصداق ہے۔ جب لوگ امام کی عظمت کو نہ پہنچ سکے تو آپ کے وعمن بن گئے۔ مثل ساز میں ہے کہ سمندر کھی کے گرنے سے گدلا نمیں ہو آ اور کتوں كے يئے سے تاياك شيں موتا۔ وحديث ابى حنيفه حديث صحيح "اور ابوطنیفہ کی حدیث صحیح حدیث ہے۔" امام تو امام میں مویٰ بن ابی عائشہ کوفی علیہ الرحمتہ ثقات میں سے ہے اور سیحین کے راوبوں میں سے

مناقب امام اعظم

ہے اور عبداللہ بن شداد آبعین اور نقات میں سے ہے۔ ( بنامیہ شرح ہدائیہ جلد اصفحہ ۵۰۹ )

#### امام اعظم اور اكتباب صديث

یہ الزام آکش سنے اور دیکھنے میں آیا ہے کہ امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ صدیت کا لحاظ جس رکھتے سے اور صدیث کے مقابلے میں اپنا قول معتبر سجھتے ہیں۔ یہ کتنا ہوا ظلم ہے اور یہ ظلم صدیوں کی غلط فنمیوں سے ہوتا چلا آرہا ہے۔ حضرت لمام ریٹیہ کے دور میں ہی یہ فتنہ عام ہوا تو حضرت لمام باقر رضی اللہ تعالی عنہ نے آپ سے مختلو نرمائی ' آپ نے انہیں اپنے بارے میں مطمئن کر دیا۔ ( الانقا از قرطبی صفحہ ۱۹۳۷) ایک مرتبہ حضرت امام جعفر صادق ' صغرت مقاتل بن حیان اور جماد بن سلمہ رضی اللہ تعالی عنم وغیرہ آپ کے پاس آئے اور کما کہ آپ دین میں کشرت سے قباس کرتے ہیں' آپ نے حضرات علماء سے زوال تک بحث کی ارو ثابت کر دیا کہ ان کا غرب قرآن و صدیث اور صحابہ کرام کی انباع کا آئینہ داز ہے تو دہ سب حضرات امام کے سر اور سخطنوں کو چوم کر یہ کہتے ہوئے کے کہ ہم نے لاعلی میں آپ کی برائیاں کیں' آپ معاف کر دیں۔ آپ نے فرمایا اللہ ہماری اور آپ کی مغفرت فرمائے۔ ( المیزان از شعرائی صفحہ معاف کر دیں۔ آپ نے فرمایا اللہ ہماری اور آپ کی مغفرت فرمائے۔ ( المیزان از شعرائی صفحہ معاف کر دیں۔ آپ نے فرمایا اللہ ہماری اور آپ کی مغفرت فرمائے۔ ( المیزان از شعرائی صفحہ معاف کر دیں۔ آپ نے فرمایا اللہ ہماری اور آپ کی مغفرت فرمائے۔ ( المیزان از شعرائی صفحہ معاف

مامون رشید کے دور میں کچھ محدثین نے آپ کے بارے میں فتنہ کھڑا کیا تو مامون رشید نے ان کو لاجواب کیا اور پھر کہا " اگر ابوطنیفہ کے اقوال کتاب اللہ اور رسول اللہ صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم کے خلاف ہوتے تو ہم ان پر عمل نہ کرتے۔" (المناقب از موفق جلد ۲ صفحہ ۵۵) گویا شروع سے ہی حاسدین و معاندین آپ کے خلاف برسم یکار ہیں جبکہ علائے حق شخفیق و جبجو اور عقل سلیم کی روشنی میں آپ کے تفقہ فی الدین کا جائزہ لے کر آپ کے علم و فضل کا اعتراف کرتے رہے۔ ابوالا مود نے کیا خوب کما ہے ۔

حسد والفتى از الم ينالوا سعيه فالناس اعداء له و خصوم آپ امت محرب میں عظیم فقیہ ہوئے ہیں اور فقاہت بغیر صدیث کے معتبر نہیں ' جیسا کہ حضرت امام محر علیہ الرحمہ نے فرایا لایستقیم الحدیث الا بالرائی ولا یستیقم الرائی الا بالحدیث فقہ کے بغیر صدیث درست نہیں رہتی اور صدیث کے بغیر فقہ ' (کشف الاسرار شرح منارالانوار از سفی جلد اصفحہ ۵) کی وجہ ہے کہ محدثین جن کو فقہ میں تجراور عیور نہیں فقا ان سے الیے ایے " طائف " مروی ہیں کہ خدا کی پناہ حضرت امام بخاری علیہ الرحمتہ کی صحیح کے ابواب اور ان کے تحت اصادیث کا اندراج و کیج کر آپ کی فقاہت کا اندازہ لگایا جاسکا کی صحیح کے ابواب اور ان کے تحت اصادیث کا اندراج و کیج کر آپ کی فقاہت کا اندازہ لگایا جاسکا

محدثین کرام صرف احادیث کو جُنع کرتے چلے جاتے ہیں ان کے احکام اور ناتخ و منسوخ وغیرہ کا کوئی ادراک نہیں ہو آ جبکہ نقما ہر عدیث کو خوب جانچتے ہیں اور پھر امام اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ تو حدیث کے سمندر کے غواص ہیں اس لئے ہر باریک ہیں ' منصف مزاج اور صاحب علم کو آپ کے غراب ہیں کوئی حیب نظر نہیں آتا نیز ہی کا غرب دو تمائی ملت اسلامیہ نے قبول کیا ہے جس میں خامور نقہا عظیم محدثین اور جید عرفا علیم الرحمتہ شامل ہیں۔ جن مسائل قبل آپ پر الزام لگایا جاتا ہے کہ آپ حدیث کے خلاف تھم دیتے ہیں وہ حدیث ان تین حالتوں سے خالی نہ ہوگی۔

#### 🖈 منسوخ ہوگی

حضرت الم منسوخ حدیث پر عمل نہیں کرتے ، ناتخ پر عمل کرتے ہیں تو یہ عمل حدیث پر بی ہوا ، ظاہر ہے حدیث کو منسوخ کرنا حدیث کا بی کام ہے۔ الم اپنے قول سے تو اسے منسوخ نہیں کر سکتے ، پھر کیے کما جاسکتا ہے کہ الم کا حدیث پر عمل نہیں۔ اس کی واضح مثال تجمیر تحریمہ کے علاوہ نماز میں رفع بدین ہے جو احادیث صحیحہ سے منسوخ ہو چکا ہے۔ غیرمقلدین حضرات منسوخ احادیث پر الل کرتے ہیں اور الٹا حضرت الم رضی اللہ تعالی عنہ کے خلاف محاذ کھڑا کرتے ہیں کہ ابوحنیفہ کوریث پر عمل نہیں کرتے ، خدارا انصاف ! عمل تو آپ فود نہیں کرتے ، آگر منسوخ احکام پر عمل کرنا ہی آپ کا دین ہے تو سود و شراب کی حلت کا فتوئی بھی دے دو اور ادھر منسوخ احکام پر عمل کرنا ہی آپ کا دین ہے تو سود و شراب کی حلت کا فتوئی بھی دے دو اور ادھر

تائج احادیث پر عمل کی وجہ سے حضرت امام کی مخالفت کرتے ہو تو پھر حضور سرور عالم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی بھی اس طرح مخالفت کو کیونکہ آپ طابع نے تہمارے بہندیدہ فعل کو ختم کر ریا۔ نائخ احادیث ترقری ابوداور نسائی مصنف این ابی شیبہ مسند احمر سنن الکبری بیمتی شرح معانی آثار ' جامع المسائیر ' مصنف عبدالرزاق ' مند ابی یعلی ' وار قطنی ' مجم طبرانی میں موجود ہیں ' ان سب سے بڑھ کر بخاری و مسلم نے بھی روایت کی ہیں۔ مثنا بخاری جلد اول میں جو حضرت ابوجید ساعدی صحابی رضی اللہ تعالی عنہ نے لوگوں کو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ و سلم کی نماز اللہ تعالی ہے اس میں کمیں بھی اس رفع بدین کا ذکر نہیں۔ اس طرح مسلم نے عباد بن زبر رضی اللہ تعالی عنہ سے مروی جو عدیث لی ہے اس میں رفع بدین کو بدے ہوئے گھوڑوں کی وموں سے اللہ تعالی عنہ سے مروی جو عدیث لی ہے اس میں رفع بدین کو بدے ہوئے گھوڑوں کی وموں سے تشبیہ وی گئی ہے اور تھم دیا گیا ہے اس میں رفع بدین کو بدے ہوئے گھوڑوں کی وموں سے تشبیہ وی گئی ہے اور تھم دیا گیا ہے اسکنو فی الصلو ہ '' نماز میں سکون کرد۔'' ( مسلم جلد اول صفحہ ۱۸۱)

پھر طفائے راشدین اور صحابہ کبار' عبداللہ بن مسعود' ابو ہریرہ' عبداللہ بن عمر' حضرت ابن عباس رضی اللہ تعالی عنم کی مخالفت کرہ کہ وہ سب ناتخ احادیث پر عمل کرتے ہوئے رفع بیرین نہیں کرتے تھے۔ اس طرح عظیم تابعین ابواسحاق' شعبہ' ابراهیم مخعی' اسود بن بزید' صقیم' قیس بن ابی حازم رضی اللہ تعالی عنم کا بھی کہ دیں کہ ترک رفع یدین پر امام ملک کا عمل بھی رضی اللہ تعالی عنہ نے عمل فرمایا۔ اور یہ بھی کہ دیں کہ ترک رفع یدین پر امام ملک کا عمل بھی منقول ہے۔ (المدونته الکبری صفحہ ۱۸) نیز اس پر الل مدینہ اور اہل کوفہ کا اجماع ہے۔ (هدایه المحتهد جلد اصفحہ ۱۵ ہم جدی اصفحہ ۱۵ بیکہ اور بھی فقماء کا اجماع ہے جیسا کہ ابوبکر بن عیاش علیہ الرحمتہ نے فرمایا مار ایت فقیہ افط یفعلہ بر فع یدیه فی غیر النکبرة الوالی عاش علیہ الافار طحاوی جلد اصفحہ 10 اب اہل انساف پر خوب روش ہوگیا ہوگا کہ اس عمل شرح معانی الافار طحاوی جلد اصفحہ تنا نہیں۔ اس طرح آمین با لجمر' فاتحہ خلف العام' طلاق ثلاثہ شی حضرت امام رضی اللہ تعالی عنہ تنا نہیں۔ اس طرح آمین با لجمر' فاتحہ خلف العام' طلاق ثلاثہ کے وقوع وغیرہ مسائل پر آپ کا فرجب آیات و احادیث سے مبرین و منور ہے۔

🖈 نامقبول ہوگی

حضرت المام رضی اللہ تعالی عنه اس حدیث پر عمل نہیں کرتے جو سمی فنی سقم کی بنا ہ

پر نامقبول ہو۔ اس کے بر عکس صحیح و محکم صدیث پر عمل کرتے ہیں۔ مثلاً آپ آزہ محبوروں کی تجارت خشک چھوہاروں کے بدلے جائز قرار دیتے ہیں۔ اٹل بغداد نے صدیث بیان کی کہ حضور صلی اللہ علیہ والہ وسلم نے آزہ محبوروں کو خشک محبوروں کے بدلے فروخت کرنے سے روکا ہے۔ امام نے فرملیا یہ صدیث زین بن عیاش پر موقوف ہونے کی وجہ سے نامقبول ہے۔ اس کے برعکس صحیح اصادیث سے یہ تجارت جائز محمرتی ہے۔ (فتح القدر جلد ۵ صفحہ ۱۹۹۲)

# 🕁 خصوصیت پر منی ہوگی

حضرت الم رضی اللہ تعالیٰ عنہ اس مدیث پر عمل نہیں کرتے ہو حضور صلی اللہ علیہ واللہ وسلم کے ساتھ مخصوص ہوگی مثلاً غائبانہ نماز جنازہ الم اعظم براللہ کے بزدیک جائز نہیں کیونکہ اس کا تعلق صرف حضور صلی اللہ علیہ والہ وسلم کے ساتھ ہے۔ بخاری کتاب البخائز میں نجاثی کی غائبانہ نماز جنازہ کا ذکر ہے تو شار جین نے وضاحت کی ہے کہ صحابہ کرام کے نزدیک نجاثی کا جنازہ حضور صلی اللہ علیہ والہ وسلم کی نگاہ نبوت سے او جھل نہیں تھا۔ (عینی جلہ ۳ صفحہ کہا اس عمل کے بعد کوئی حدیث مرفوعا " فابت نہیں ایک حدیث سے معاویہ بن معاویہ مزنی کی غائبانہ نماز جنازہ کا ثبوت مات ہو وہ حدیث ضعیف محض ہے۔ اس کی مختلف اساد میں بقیہ بن غائبانہ نماز جنازہ کا ثبوت مات ہو وہ حدیث ضعیف محض ہے۔ اس کی مختلف اساد میں بقیہ بن ولید ' نوح بن عمر علاء بن بزید ' محبوب بن ہلال جیسے راوی ہیں جن کو ائمہ نے مدلس' منکر الحدیث محروک الحدیث اور سارق جیسے الفاظ سے یاد کیا ہے ' اس سے بڑ کریہ کہ معاویہ بن معاویہ بن معاویہ بن معاویہ بن معاویہ نہیں۔ ( الاصابہ ۲۳۸)

اس حدیث پر بھی عمل نہیں کرتے یا اس کے مطابق تھم نہیں دیے جس کو حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے کسی خاص فرد کے لئے فرمایا ہو ترفری شریف بیں ہے کہ جب غیال بن سلمہ مسلمان ہوئے تو ان کی دس بیویاں تھیں حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا ان بی سلمہ مسلمان ہوئے تو ان کی دس بیویاں تھیں حضور صلی اللہ تعالی عنہ کا ذہب بیہ ہے کہ آگر کسی آدی سے جن چار کو افتیار کرنا چاہو کر لو الم اعظم رضی اللہ تعالی عنہ کا ذہب بیہ ہے کہ آگر کسی آدی کی چار سے زیادہ بیویاں ہیں تو پہلی چار کے ساتھ اس کا نکاح صحیح اور ان کے بعد والیوں کا باطل ہے۔ معترضین کتے ہیں کہ یمال ان کا ذہب حدیث کے خلاف ہے۔ مالانکہ الم نے یمال قرآن

علیم کی آیت کو پیش نظر رکھا ہے۔ فانکحوا ما طاب لکم من النساء مشنی و ثلاث و رہاع یعنی نکاح میں لاؤ جو عورتیں خوش آئیں دو دو' تین تین' چار چار (سورة النساء) قرآن علیم سے ثابت ہوا کہ پانچیں اور چھے درج کی عورت سے اب نکاح باطل ہے۔ اب رہا حدیث تذکی کا معالمہ تو دہ یا تو قرآن پاک کے اس تھم سے منسوخ ہے یا حضور صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم نے اپنے خداداد افتیار سے اس فرد خاص کے لئے مختص کر دیا۔

### نتيجه فكر

آگر کوئی نظر انصاف ہے ان تمام پہلوؤں کو سامنے رکھے اور حضرت امام اعظم رضی اللہ تحالی عنہ کی تغلیمات کا جائزہ لے تو اسے معلوم ہو گاکہ آپ کی کوئی بات قرآن و حدیث اور انتباع صحابہ سے گریزاں نہیں۔ اس پر ہم جید ائمہ کرام کی گواہی بھی نقل کر دیتے ہیں پہلے امام اعظم رضی اللہ تحالی عنہ کا اپنا ارشاد سنے :

المسئلة من الكتاب و السنة و اقضية الصحابة فان لم نجد دليلا قنا حينذ المسئلة من الكتاب و السنة و اقضية الصحابة فان لم نجد دليلا قنا حينذ مسكونا عنه على منطوق به بجامع اتحاد العلة بينهما ٥ " بم قياس نميس كرت مر شديد ضورت ك وقت بم مئله كي دليل كاب الله رسول الله طابيم ك ارشادات اور صحابه ك قضايا سے خلاش كرتے بيں۔ اگر ان ميں نه طے تو بم نه كه موك كو كه موك ير علت مشتركه كي بنا پر قياس كرتے بيں۔" (الميزان از شعراني صفح موك كو كه موك ير علت مشتركه كي بنا پر قياس كرتے بيں۔" (الميزان از شعراني صفح موك)

الله علامه ابو محمد على ابن خزم اندلى فرماتے بين كه اصحاب ابو حذيفه مايلي اس پر متفق بين

كريزب الوحنف على إن ضعيف الجديث اول عنده و القبل والسائ

کہ فدہب ابوضیفہ میں ان ضعیف الحدیث اولی عندہ من القیاس والمرائ ضعیف حدیث بھی قیاں اور رائے ہے بہتر ہے۔ ( مناقب الامام ابی صنیفہ صفحہ ۲۱)

∴ شارح مسلم امام نووی مالیے فرماتے ہیں کہ حدیث مرسل کے بارے میں امام مالک امام ابوضیفہ اور امام احمد وغیرہ کا فدہب ہے کہ اے بطور دلیل پیش کیا جاسکتا ہے۔ (مقدمہ شرح مسلم جلد اصفحہ کا)

البو حفرت نفيل بن عياض ملطيه فرماتے بيں كه أكر كسى مسئله بين صحيح حديث ملتى ہے تو البوحنيفه اس كو ليتے بيں اور أكر صحابه يا تابعين سے ہو تو بين صورت ہے ورنه وہ قياس كرتے بيں اور قياس اچھا كرتے بيں۔ (الخيرات الحسان فصل ١١)

اللہ این تیم روایتے ہیں ابوطیقہ روایتے کے اصحاب کا اتفاق ہے کہ ان کے نزدیک ضعیف حدیث قیاس ہے بہتر ہے۔ انہوں نے ضعیف حدیث کی وجہ سے سفر میں کھجور کی نبیذ سے وضو کرنے کو قیاس اور رائے پر مقدم کیا ہے اور ضعیف حدیث کی وجہ سے دس درہم سے کم کی چوری میں ہاتھ کا شخے سے روکا ہے۔ وہ آثار صحابہ کو قیاس اور رائے پر مقدم رکھتے ہیں۔ یمی امام احمد کا طریقہ ہے اور سلف کے نزدیک ضعیف حدیث کی وہ اصطلاح نہیں جو متاخرین کی ہے جس کو متاخرین حسن کہتے ہیں اس کو سلف نے روکا ہے۔

ضعیف کما ہوتا ہے۔ ( اعلام المو تعین جلد ا صفحہ ۷۷ ) اب ہم ائمہ فن کی تشریحات کی روشنی میں حضرت امام رضی اللہ تعالی عنہ کے اساس

اصولوں کا ذکر کرتے ہیں۔ ۱- قرآن تھیم

۱ - احادیث قولی و نعلی تقریری و

۳ - محابہ کے فاوی ۳ - اجماع

۵- قیاس

٢ - استحمان (قياس كى وه فتم جو خفى ہوتى ہے گراس كا اثر قوى ہوتا ہے۔)

تعال بندگان خدا

آخر مين غوث العارفين مص المجدو سيدنا حضور مجدد الف هاني قدس سره كا ارشاد نقل كيا

جاتا ۽:

" آپ مرسل حدیث و مند حدیث کی طرح متابعت کے شایان جانتے ہیں اور اس کو اپنی رائے پر فوقیت دیتے ہیں۔ دو سرے الموں کا یہ حال نہیں ، باوجود اس کے آپ کے مخالفین آپ کو صاحب رائے قرار دیتے ہیں اور ایسے الفاظ بیان کرتے ہیں جن سے بے اوبی کا اظہار ہوتا ہے ، حالانکہ المم کے زہد و تقویٰ اور علم و کمال کا سب کو اعتراف ہے .... چند ناقصوں نے چند احادیث کو رف لیا اور شریعت کو انہی ہیں محصور بانے ہیں اور ان احادیث کا انکار کرتے ہیں جن کا انہیں علم نہیں ، ان کی مثال پقر کے کیڑے احادیث کا انکار کرتے ہیں جن کا انہیں علم نہیں ، ان کی مثال پقر کے کیڑے کی طرح ہے اور وہ پھر کو بی اپنی زہن اور آسان سمجھتا ہے۔ ( مکتوب دفتر کی طرح ہے اور وہ پھر کو بی اپنی زہن اور آسان سمجھتا ہے۔ ( مکتوب دفتر کا صفحہ ۵۵ )

### الم اعظم نفق الدي اور محاح سته

کوئی اے تعلیم کرے یا نہ کرے یہ اٹل حقیقت ہے کہ صحاح سے میں امام اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی برکات موجود ہیں۔ اگرچہ اصحاب صحاح نے آپ سے روایت لینے میں کمال بے نیازی کا مظاہرہ کیا ہے اور تو اور صاحب مفکوۃ نے بھی ان کی روایات کی طرف کوئی توجہ نہیں کی لین جس چشمہ صافی سے یہ سب حضرات سیراب ہوئے وہ امام '' اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے علم سے پھوٹا ہے۔ اس سلمہ میں اصحاب صحاح کی مجبوری بھی تھی کہ وہ شافعی المسلک ہونے کے ناتے اپنا مخصوص ذوق رکھتے ہیں۔ صاحب مفکواۃ بھی شافعی سے لین ان لوگوں کی اسانید میں بہت سے حفی شیوخ موجود ہیں' امام بخاری علیہ الرحمۃ کے مشہور استاد حضرت کی بین ابراہیم اور عبدالرذاق بن مام امام اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے اجل تلافہ میں سے تھے۔ امام بخاری علیہ الرحمۃ کی صحیح کا یہ بھی اعزاز ہے کہ انہوں نے اس میں بائیس شلائیات روایت کی ہیں' یعنی ایی

روایات جن میں حضور تی کریم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم اور راوی کے درمیان تین واسطے مول اور ان روایات میں سے گیارہ روایات صرف حضرت امام کی بن ابراهیم علیہ الرحمت سے لی ہیں گویا امام بخاری علیہ الرحمتہ و اعلیٰ ترین سند' حضور امام اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے فیض سے حاصل ہوئی۔ یہاں میہ بھی عرض کر دول کہ امام مالک علیہ الرحتہ کی روایات میں شائیات ہیں لیتن حضور صلی اللہ علیہ والہ وسلم اور راوی کے درمیان دو واسطے جبکہ امام اعظم رضی اللہ تعالی عند كى روايات ميں واحدان ہيں لين حضور صلى اللہ عليه وآله وسلم اور راوى كے درميان أيك واسطه المام اعظم رضى الله تعالى عنه كى ائمه اربعه مين خصوصى فضيلت و عظمت ب- ذلك فضل الله يوتيه من يشاء فتح المغيث من الم سخادي راهي نے محى اس ير بحث فرمائى ب-امام اعظم رضی اللہ تعالی عنہ کے نامور شاکرو رشید حضرت امام محمد بن حسن شیبانی علیہ الرحمت بين الم احد ے الم شافعي نے اتا استفاده كياكه فرماتے بين امن الناس على في الفقه محمد بن الحسن ليني فقه مي مجھ ير سب سے برا احمان محمد بن حسن كا ہے۔ ( تاريخ بغداد جلد ٢ صفحه ١٦١ ) امام شافعي كے تامور شاكرو رشيد حضرت امام احمد بن طنبل عليه الرحمت بوت (تذكرة الحفاظ جلد ٢ صفحه ٣١) المم احمد بن حنبل عليه الرحمته كے سامنے المم بخارى الم مسلم المم ابوداود علیم الرحمته نے زانوے تلمذ طے کے جو کہ اصحاب صحاح میں سے ہیں۔ ( تمذیب

التهذیب جلد اصفی 27)

امام ترزی علیه الرحمته نے امام بخاری و مسلم سے استفادہ کیا۔ (تذکرة الحفاظ جلد ۲ مسلم سے استفادہ کیا۔ (تذکرة الحفاظ جلد ۲ صفیہ ۱۳۵۵) امام ابن ماجہ و نسائی بھی اس سلسلة الذهب سے بندھے ہوئے ہیں جس میں امام اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنه 'فضان سر سر شما شمیں مار رہا ہے کاش لوگ اس طرح بھی سوچے کہ جس کے تلافہ کی شوکت و منزلت کا یہ عالم ہے استاذ اعلیٰ امام والا اور مقدّائے ارفع کی شوکت و منزلت کا یہ عالم ہے استاذ اعلیٰ امام والا اور مقدّائے ارفع کی شوکت و منزلت کا کیا عالم ہو گا۔

#### تعارف مسانيد

الم اعظم رضى الله تعالى عنه نے اپ شيوخ سے احاديث مباركه كو روايت كيا تو لوگول

ئے آپ کے ہر شیخ کی مرویات کو الگ الگ اکٹھا کر لیا' اس طرح مرویات کے الگ الگ نسخ وجود میں آگئے۔ وہ نفخ مندرجہ ذیل جید علاء و فقهاء کی کوشش سے اہل علم تک پنچ۔

حافظ ابو محمد عبدالله بن محمد البخاري وافظ ابوالقاسم طلحه بن محمر وافظ ابوالحسين محمد بن المنطفر وافظ ابولعيم احد بن عبدالله اصفهاني في ابو بمر محد بن عبدالباتي انصاري امام ابو بمراحمد عبدالله بن عدى جرجاني وافظ حسن بن زياوه الولوي عافظ عمر بن حسن اشناني ابو بكر احمد بن محمد الكلامي قاضى ابويوسف يتقوب بن ابراجيم انصارى الم احمد بن حسن شيباني الم حماد بن ابوصيف الم عبدالله بن اني عوام المام حيين بن محد بلخي المام محد بن حسن قدس مرجم القدس

مسانید امام اعظم رضی اللہ تعالی عنہ کے ان تسخول کو ابوالموئد محمد بن محمود خوارزی متوفی ۱۵۵ حد فے جمع فرمایا امام خوارزی اس عظیم کاوش کی وجہ اس طرح بیان کرتے ہیں۔ " میں نے ملک شام میں بعض جاباوں کو کتے ہوئے ساکہ حضرت امام اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی روایت حدیث کم ہے۔ ایک ٹالائق نے تو امام شافعی كى مند المام الك كى موطا اور المم احدكى مند كاحواله وے كر حضرت المم اعظم رضی الله تعالی عنه کی شان میں گسافی کی بیدس کر میری ذہبی غیرت نے جوش مارا کہ میں حضرت امام اعظم رضی اللہ تعالی عنه کی بندرہ مسانید کو ایک مند کی صورت میں ترتیب دول ، چنانچہ میں نے اللہ تعالی پر توکل

وشمنول كا وجم دور مو جائے-"

اس مند کے مقدمہ میں امام خوارزی علیہ الرحمتہ نے حضرت امام اعظم رضی اللہ تعالی عنه کی شان میں کیا خوب لکھا ہے:

كرتے ہوئے ابوات فقہ كو سامنے ركھ كر مند ترتيب دى تاكه جابل

" اجنتاد میں تمام علماء کرام سے چیش قدم اعتقاد میں سب سے پاکیزہ برایت میں سب سے واضح طریقے میں سب سے درست الم الائمہ مراج بدا الامد ابوصیف نعمان بن عابت رضی الله تعالی عنه بین- انهول نے شریعت مطمرہ کے رخ روش سے نقاب بٹایا اور فقہ کے ماتھ سے ظلمت

کی پرچھائیوں کو دور کیا۔ اپنے زمانے کے اہل علم کو آگے بردھایا جمال قدم مسلنے کا موقع تھا وہاں قدم جمائے اور احکامات کو مضبوط کرنے میں پوری کوشش کی۔ اب علما دریائے نعمان میں غوطے لگا لگا کر بیش بما نعتیں حاصل کر رہے ہیں۔" (مند امام اعظم مطبوعہ مجمد دہل)

امام خوارزی علیہ الرحمتہ نے یہ بھی تفریح فرمائی ہے کہ حضرت امام اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ دو سو پندرہ ( ۲۱۵ ) احادیث مبارکہ میں دیگر ائمہ حدیث سے قطعاً منفرہ ہیں۔ اس سے بھی آپ کے اخذ حدیث اور روایت حدیث میں تبحر کا بین جُوت مانا ہے۔ یہ بھی یاد رہے کہ حضرت لمام اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی مسانید حدیث کی سب سے پرانی کتابیں ہیں المذا ان کی روایت دو مری کتابوں کی نبعت زیادہ محکم و مقدم ہونی چاہئے۔

ہمارے سامنے سند امام اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا وہ ننجہ ہے جو قاضی صدرالدین موی حصکفی متوفی ۱۲۵۷ھ نے جمع فرمایا 'اس ننخ کو محدث کبیر علامہ محمد عابد سندھی متوفی ۱۲۵۷ھ نے ابواب فقہ کے حساب سے مرتب کیا 'لمام حصکفی علیہ الرحمتہ نے بھی '' نہسیق النظام کے نام سے شرح کھی ' وگر مسائیر پر بھی علمائے امت کی شروح موجود ہیں جن کی تفصیل کشف الظنون جلد ودئم میں دیکھی جا کتی ہے۔

# المام اعظم نعظ المنابئة أور اصول حديث

فقہ کی ترتیب و تدوین کے علاوہ حضرت امام اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے اصول حدیث بھی تفکیل ویئے جبکہ اصحاب صحاح اور ان کی تابیفات کا نام و نشان تک نہیں تھا۔ ان اصول حدیث کو دیکھ کر آپ کی کتاب الافار اور مسائیر کی روایات کی نقابت کا بخوبی اندازہ ہو سکتا ہے۔ وہ دور عجب دور تھا رائضی و خوارج اور قدریہ کا زور تھا۔ ہر فربق احادیث کو اپنے نظریات کے مطابق تبدیل کر رہا تھا۔ بہت سی موضوع روایات نے جنم لیا بلکہ امام وار قطنی کے بقول اصل احادیث موضوع احادیث میں اس طرح چھپ گئیں جیسے بیل کے کالے بالوں میں بقول اصل احادیث موضوع احادیث میں اس طرح چھپ گئیں جیسے بیل کے کالے بالوں میں سفید بال چھپ جاتے ہیں۔ یہیں سے روایت بالمعنی کی وبا پھوٹی اس صورتحال میں حضرت امام

اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا اصحااب حدیث پر احمان تما کہ آپ نے حدیث کو پر کھنے کے لئے بیادی ضابطے تیار کئے۔ حفرت علامہ عبدالحکیم جنری علیہ الرحمتہ نے ان اصول و ضوابط کو الفجار قبنلہ "کما ہے۔ جب وہ اصول و ضوابط اصحاب حدیث نے دیکھے تو ان کو اپنی روایات اپنی عی نظروں میں تشنہ شخیق دکھائی دینے لگیں' اس کی تفصیل " بطل الحریہ " میں علامہ جدی نے لکھی ہے' ذیل میں کچھ اصول و ضوابط لکھے جاتے ہیں :

ا ... راوی مدیث کے لئے مدیث کا حافظ ہونا ضروری ہے۔

۔۔ صحابہ و فقهائے تابعین کے سوا کسی اور کی روایت بامعنی قابل قبول نہیں۔

۔۔ صحابہ سے روایت کرنے والی اٹل تقویٰ کی ایک جماعت کا ہونا ضروری ہے' ایک یا دو مخص نہیں۔

ا احکام میں روایت کا ایک سے زیادہ صحابہ سے منقول ہونا ضرروری ہے۔

۵ ... حدیث سے اسلام کے کسی مسلمہ اصول کی مخالفت نہ ہوتی ہو نیز عقل قطعی کے خااف نہ ہو۔

... خبر واحد' قرآن کی کسی آیت پر زیادتی کے قول نہیں یا اس کے تھم عام کو محض نہیں \* کر سکتی۔

خبرواحد قرآن پاک کے خلاف ہو تو نامقبول ہوگ۔

A ... خبرواحد سنت مشهورہ کے خلاف ہو تو نامقبول ہو گ۔

هی گیج یا محرم روایات میں محرم کو ترجیح ہوگی۔

ا ... ایک واقعہ کے بارے میں ایک راوی امر زائد و بیان کرتا ہے، وو سرا نفی کرتا ہے تو آگر نفی کرتا ہے تو آگر نفی کرتا ہے او آگر نفی کرنے والے کے پاس دلیل نہیں تو اس کی نفی ٹامقبول ہوگ۔ پہلے راوی کا بیان معتبر ہوگا، یعنی نفی کے لئے دلیل کی حاجت ہے۔

... ایک حدیث میں تھم عام ہے ، دو سری میں اصل چیزوں میں اس کے خلاف تھم ہو بتو تھ ۔۔ تھکم عام کے مقابلے میں تھم خاص کو نہ دیکھا جائے۔

... حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے صریح قول و فعل کے خلاف سے صحابی کا قول و

مناقب امام اعظم مكتبهنبويه

فعل نامقبول ہے کہ ہو سکتا ہے اسے حضور طابط کا وہ قول و فعل نہ پہنچا ہو۔ ١١ ... خبر واحد كے خلاف أكر آثار محاب مول تو ان ير عمل كيا جائے ، مو سكتا ہے وہ خبر واحد منوخ ہو' اور سحابہ اس کے تائخ پر عمل پیرا ہوں۔

۱۳ ... راوی کا اینا عمل روایت کے الث ہو تو روایت نامقبول ہوگی۔

۵ ... متعارض روایات میں سے قریب الشاہدہ کی روایت لی جائے۔

٨ ... متعارض روايات ميس كثرت تفقه كو قلت وسائط ير ترجيح وى جائے-

ا ... مد یا کفارہ کی کوئی مدیث ایک محالی سے ہی مروی ہو نامقبول ہوگی کہ مد و کفارہ شبات سے ساتط ہو جاتے ہیں۔

١٨ ... جس حديث مين اسلاف ير طعن مو تامتبول موكى-

خبرواحد اور مسل کو قیاس پر فوقیت ہوگی۔

ام اعظم رضی اللہ تعالی عنہ کے مسلک میں فکر و تدبر کی ہمہ گیری اور ذکاوت و نقابیت کی بالار تی ہے۔ عقل برتی سے اجتناب کیا گیا ہے۔ قرآن و حدیث اور آثار محابہ سے پورا لگاؤ ہے الندا آپ بی بیں جنہوں نے اسلام کے فطری اور حقیقی شمرات سے الل جمال کو ملامال کیا " آپ کا مسلک آپ کی زندگی ہی میں بہت مقبول ہو گیا تھا' آپ کی وفات کے بعد آپ کے نضیلت ماب تلاقمہ نے اس کی عالمگیر پیانہ پر اشاعت کی اور بلاد عجم' ایٹائے کو حیک' ترکستان' ہندوستان اور چین تک پہنچ کیا۔ ( تغییم الفقہ صفحہ A)

> حفرت امام حصكفي عليه الرحمة نے كيا خوب فرمايا ب " يقديناً آپ عالم عالل عابه صاحب وبرع اور شريعت كے علوم كے امام تھے۔ آپ ہر ایے الزام لگائے گئے ہیں کہ آپ کی قدر و منزلت ان سے بت بلند ہے۔ جیسے خلق قرآن قدر اور ارجاء وغیرہ ان الزامات کے موجدوں کا ذکر کرنے کی کوئی ضرورت نہیں کیونکہ یہ ظاہر ہے کہ آپ ان

ے پاک و صاف ہیں۔ ویکھو' اللہ تعالی نے آپ کے ذکر کو تمام آکناف عالم

میں پھیلا دیا ہے۔ آپ کا علم تمام روئے زمین پر چھلیا ہوا ہے۔ آگر اس

میں کوئی راز نہ ہوتا تو اللہ تعالی فصف عالم اسلام کو ان کا مقلد نہ بناتا' جو

آپ کی رائے پر آج تک عمل کر رہا ہے یہ بہت بڑی دلیل ہے کہ آپ کا

فرجب بالکل درست ہے۔" ( تنیق النظام صفی کے)

ہم کتے ہیں کہ حضرت امام ابوبوسف یعقوب بن احمد علیہ الرحمتہ نے کیا خوب دل کے

مذہب کی عکامی کی ہے اور یوں محسوس ہوتا ہے جسے سبھی نیکار رہے ہیں ۔

حسبی من الخیرات ما اعددته یوم القیامة فی رضی الرحمن دین النبی محمد خیر الوری دین النبی محمد خیر الوری شم اعتقادی منهب النعمان مجمد کو کافی نیکیال بین مین نے جو تیار کین کار مجمد سے راضی ہو جائے ملیک ہوم دین میرے دامن میں تو دین شاہ انس و جان ہے میرے دل میں اعتقاد غرب نعمان ہے میرے دل میں اعتقاد غرب نعمان ہے

#### ان کے جاتے ہی فلک ٹوٹ پڑا

بنوعباس کے ظلم و ستم عروج پر تھے۔ بنوامیہ کو قبروں سے اکھاڑ کر ان کی ہڑیوں تک کی بے حرمتی کی گئی مفرت الم اعظم رضی اللہ تعالی عند یہ سب کچھ اپنی آ تکھوں سے دیکھ رہے تھے ' اس لئے آپ نے بنوعباس کے ساتھ کوئی تعاون نہ کیا بلکہ ایک غیور انسان کی طرح الگ رہے۔ جب خاندان ساوات کے فرد وحید حضرت المم زید بن علی بن حسین رضی اللہ تعالی عمم رہے۔ جب خاندان ساوات کے فرد وحید حضرت المم زید بن علی بن حسین رضی اللہ تعالی عمم نے ظیفہ منصور عباس کے خلاف آواز اٹھائی تو آپ نے ان کی اعانت کے لئے فتوی دیا' اس طرح

مناقب امام اعظم كتبه نبوي

جب حضرت ابراهیم بن عبداللہ بن حسن بن حسن بن مرتفنی رضی اللہ تعالی عنم نے خلافت کا دعویٰ کیا تو درباری علاء نے منصور عبای کے کان بحرے کہ یہ سب کچھ حضرت المام کے اشارے پر ہوا ہے، چنانچہ اس نے آپ پر ظلم و ستم کے بہاڑ تور دیئے۔ منصور عبای کا عکم تھا کہ آپ کو روز قیدخانہ سے نکال کر سرعام دس کوڑے مارے جائیں اور بازاروں میں گھملیا جائے، یہ ظلم و ستم آپ نے دس دن تک برداشت کیا آخر کار آپ کو زہر دیا گیا جس کی وجہ سے عالم اسلام کے اس عظیم محسن کی زندگی کا ستارہ موت کے افتی پر ڈوب گیا۔ یہ ۱۵ھ کا المناک واقعہ ہے، حضرت سس عظیم محسن کی زندگی کا ستارہ موت کے افتی پر ڈوب گیا۔ یہ ۱۵ھ کا المناک واقعہ ہے، حضرت سس بن عمارہ رضی اللہ تعالی عنہ نے آپ کو عسل دیا اور جو تاریخی الفاظ اوا فرمائے وہ آپ کی سیرت طیبہ پر انمول گواہی ہے ....

" الله تعالی تم پر رحم فرمائے " تم نے تمیں سال سے افطار ضیں کیا چالیس سال سے رات کو کروٹ ضیں بدلی ہم میں سب سے زیادہ فقیہ اور عبادت گزار تھے اور زیادہ نیکیاں جمع کرنے والے تھے۔" ( الخیرات الحسان )

امام ابن جری میلید نے کہا "علم چلا گیا " امام شعبہ نے کہا " کوفہ کا نور گم ہو گیا " و کھتے و کھتے کرام مچ گیا " آپ کے جنازے پر پہلے بچاس ہزار یا زیادہ افراد جمع ہوئے ' نماز جنازہ چھ مرتبہ پڑھائی گئی' آخری بار آپ کے گئت جگر حضرت سیدنا حماد علیہ الرحمتہ نے امامت کرائی۔ بعدازاں قبر پر بھی نماز پڑھی جاتی رہی' آپ کے وصل سے عالم اسلام گویا بیٹیم ہو کر رہ گیا تھا ۔

کس سے اٹھے ہیں یہ صدمے ہدم ان کے جاتے ہی فلک ٹوٹ ہڑا

آپ کا مزار پرانوار خیزران میں ہے۔ حضرت ابن حجر علیہ الرحمتہ فرماتے ہیں " جان لو
آپ کی قبر انور کی زیارت کے لئے علماء اور اٹل حاجت ہمیشہ سے چلے آرہے ہیں۔ وہ آپ کے
پاس جاکر اپنی حاجق کے لئے آپ کی ذات مبارک کو وسیلہ بناتے ہیں اور اپنی حاجت دور ہوتی
دیکھتے ہیں۔ ان علماء میں امام شافعی بھی ہیں " آپ فرمایا کرتے تھے کہ میں ابوحنیفہ کی قبر پر ان سے
برکت حاصل کرنے کے لئے جاتا ہوں۔ جب مجھے حاجت در پیش ہو تو میں دو رکعت نماز پڑھتا
ہوں اور ان کی قبر کے پاس اللہ تعالیٰ سے التجاکر تا ہوں تو میری حاجت مل جاتی ہے۔"

#### مصنف المناقت كاتعارف

مصنف " المناقب " کا نام نای موفق بن انجه کی ہے۔ شخ الاسلام خواجہ دوست محمد القداری رحمہ الباری نے اپنے ایک عربی کھتوب میں آپ کے نام کے ساتھ الخوارزی کا لفظ رقم فرایا ان کے نزدیک آپ کا آبائی علاقہ خوارزم بھی ہو سکتا ہے۔ آپ صدرالائمہ کے لقب اور الجالموید کی کنیت سے مشہور ہوئے۔ آپ چھٹی صدی ہجری کے قد آور مصلح 'بلندپایہ محقق اور صاحب طرز مورخ سے۔ آپ اسلای تاریخ کے انتمائی نازک دور میں پیدا ہوئے۔ ایک طرف ساحب طرز مورخ سے۔ آپ اسلای تاریخ کے انتمائی نازک دور میں پیدا ہوئے۔ ایک طرف بخواب کے افتدار کا سورج تیزی کے ساتھ غروب ہو رہا تھا۔ دو سری طرف سلطان نورالدین ذگی کے لئکر اہل صلیب کے سرول پر قیامت ڈھا رہے سے۔ عباس ظائف صرف اپنے روحائی اثر و شدیل کی بنا پر قائم تھی' ورنہ بادشاہت کی خرابیوں نے اس کو دیمک کی طرح چاٹ لیا تھا۔ مرکزیت ختم ہو چکی تھی۔ مسلمان ظاہریہ 'سامانی' صفاریہ 'غزنویہ' قاطمیہ اور سلاجقہ کی ریاستوں میں بٹ بچے سے اور ان ریاستوں پر حس بن صبح کے قلعہ الموت کی تاریک اور وحشت ناک سائے لرز رہے تھے۔

عظیم اندلس پر اموی خاندان کی گرفت ٹوٹ چکی تھی۔ مراکش کے فرمازوا ہوسف بن آشفین نے بنوعباس کے حکران " الفامو" کی ترک آشفین نے بنوعباس کے حکران " معتمد" کی گزارش پر " لیون" کے حکران " الفامو" کی ترک و آڈ کو ختم کیا اور " میدان ذلاقہ" میں تاریخی فتح حاصل کر کے عیمائیوں کا ذور توڑ دیا گر ہوسف بن تاشفین کی قائم کروہ مرابطی حکومت چار سال تک ٹھر سکی، چر بربروں کے موحدین قرطبہ اور غراطہ جیسے اہم ترین شہوں پر قابض ہو گئے۔ موحدین نے سو سال تک حکومت کی۔ غرض بزاروں میل کی وسعتوں پر پھیلی ہوئی مسلم ونیا طائف الملوکی کا شکار تھی۔ شاید اس طائف الملوکی کا شکار تھی۔ شاید اس طائف بخرروں میل کی وسعتوں پر پھیلی ہوئی مسلم ونیا طائف الملوکی کا شکار تھی۔ شاید اس طائف چگیز اور ہلاکو جیسی " تعزیرات فطرت" کا انظام کر رہی تھی۔ یہ حقیقت ہے کہ " فتنہ تا تار" نے چگیز اور ہلاکو جیسی " تعزیرات فطرت" کا انظام کر رہی تھی۔ یہ حقیقت ہے کہ " فتنہ تا تار" نے خطم و ستم کی ہولناک واستانیں رقم کیس اور مسلم امہ کے عزم و و قار کو قصہ پارینہ بنا دیا۔

حضرت صدر الاتمه عليه الرحمته كم معاصرين من علامه شرستاني صاحب طل و النمل محدث ابوالكرم شهردوري لهم ابوالاسعد بهته الرحل قشيرى علامه جارالله زمحشوى صاحب كشاف الم ابوالقاسم اصغماني صاحب الترغيب شيخ الاسلام عبدالقادر جيلاني شيخ ابن نجيب سروردي المام ديلمي صاحب مند الفردوس بهت مشهور و معروف بوئ

حضرت صدر الائمہ کی تحریر سے معلوم ہوتا ہے کہ آپ عربی زبان بیان پر پورا عبور رکھتے تھے۔ شاعری میں بدطوائی حاصل تھا۔ مثلاً المام اعظم رضی اللہ تعالی عنہ کی شان میں لکھے گئے تھے۔ شاعری مہارت و نفاست شعری کا کھلا گلتان دکھائی دیتا ہے ۔

هذا مذهب النعمان خيرالمذهب كنى القمر الوضاح خيرالكواكب ولاعيت فيه غيران جميعه خلا اذ تخلى عن جميع العائب تفقه في خيرالقرون معى التقى فمذهبه لاشك خير المذهب ثلاثة آلاف و الف شيوخه واصحابه مثل النجوم الثواقب

آپ فقتی اغتبارے حضرت لیام اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے زبردست مقلد ہوئے۔
ان کی ذیرِ نظر کتاب " المناقب " دراصل حضرت امام اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی بارگاہ امامت میں شاندار نذرانہ ارادت و محبت ہے۔ کتاب " المناقب " دو صخیم جلدوں میں لکھی گئی ہے اور اس کا ہر باب ولائل و براہین سے بحرا ہوا ہے۔ کتاب میں حضرت امام اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے علم و فضل ' فیم و فراست ' مبرو رضا' زہر و تقویٰ اور خوف اللی کے ایمان افروز واقعات کو جمع کیا گیا ہے۔ آپ کے بارے میں علائے معاصرین اور فقمائے حقد شن کی مدجیہ عبارات تفصیل کے ساتھ درج کی جین ، بالیقین سے کتاب حضرت لیام اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے حلات و واقعات

یہ بنیادی کتاب کی حیثیت سے پہلی جاتی ہے۔ مولا کریم مصنف شیر کو اجر اعظیم عطا فرمائے۔
مستنجد باللّه ۵۵۵ تا ۵۲۱ھ اور مستفی الامراللہ ۵۳۰ تا ۵۵۵ کے اووار
خلافت میں شہرت ووام حاصل کی اور محاصر علماء و صوفیہ کے ساتھ مل کر مکلی اور علمی راہنمائی کا
فریشہ انجام دیا۔ آپ ۵۷۸ھ بمطابق ۱۳۱۲ء میں خالق حقیق سے جالے۔
فریشہ انجام دیا۔ آپ ۵۷۸ھ بمطابق ۱۳۱۲ء میں خالق حقیق سے جالے۔
فدا رحمت کند این عاشقان پاک طینت را

# مترجم المناقب كانعارف

مترجم المناقب فیض الملتہ والدین علامہ فیض اجمہ اولی رضوٰی اوام اللہ علتہ علینا فی الدارین عصر حاضرہ کے المستت کی سربر آوردہ شخصیات میں سے ایک ہیں۔ آپ کا تعلق جنوبی بیجاب کے مردم خیز علاقے ہے۔ جسور محدث اعظم پاکتان مولانا ابوالفضل محمہ سردار اجمہ فیصل آبادی اور حضرت امام سید احمہ سعید شاہ کاظمی علیما الرحمتہ جسے جید اساتذہ سے علم قرآن و حدیث و فقہ حاصل کیا اور تمام عمر اس کی اشاعت کے لئے وقف کر دی۔ آپ کا حقائق افروز اور باطل سوز قلم ان بزرگوں کی زعمہ کرامت ہے جس کی نوک گوہر رقم نے دو ہزار سے زیادہ رسائل و کتب کا ذخیرہ تحریر کیا اور ہنوز المسنت کی تائید اور المل بدعت کی تردید میں جاری و ساری سائل و کتب کا ذخیرہ تحریر کیا اور ہنوز المسنت کی تائید اور المل بدعت کی تردید میں جاری و ساری ہے۔ حضرت فیض عجم کی معر کہ الآراء کتب میں صحیح تفیر قرآن " روح البیان " کا ترجمہ بھی شامل ہے۔ فاضل موصوف نے اپنی تغیر قرآن عبل زبان میں لکھی ہے' افسوس کہ ملی پریشانی کی دجہ سے ابھی تک ہے، علم و فضل کا ٹرانہ مولانا کی حراوں سلے دیا ہوا ہے۔ کاش میری قوم خواب وجہ سے ابھی تک ہے، علم و فضل کا ٹرانہ مولانا کی حراوں سلے دیا ہوا ہے۔ کاش میری قوم خواب الکھوں کی دیلیں لٹانے اور ابھان دشمن پیروں کے آستانوں پر غذریں چڑھانے کی بجائے ایسے علمی و لکھوں کی دیلیں لٹانے اور ابھان دشمن پیروں کے آستانوں پر غذریں چڑھانے کی بجائے ایسے علمی و لکھوں کی دیلیں لئانے اور ابھان دشمن پیروں کے آستانوں پر غذریں چڑھانے کی بجائے ایسے علمی و لکھوں کی دیلیں لئانے اور ابھان دشمن پیروں کے آستانوں پر غذریں چڑھانے کی بجائے ایسے علمی و لگری کام کی اشاعت و لاباعت، کی طرف توجہ دے۔

س سے ہرگز مانے کو تیار نہیں کہ ہم بے زر و غریب ہیں ' میں نے ذاتی طور پر دیکھا

ہے ہم اہلت میں کوڑ تی لوگ موجود ہیں ' بیاہ شادیوں پر ' الکشن پر لاکھوں خرج کرتے ہیں لیکن وس دو بوں دوں دوپ کا کوئی رسالہ خریدنے کے لئے تیار نہیں۔ میں جانا ہوں ہم اہلت خنموں اور ایسال ٹواب کی محفلوں میں ہزاروں کی و کیس پکوا کر برادری کو کھلاتے ہیں لین مسلک کے لئے وس دوپ دینے کے لئے بید مجنوں کی طرح لرزتے کا نیخ ہیں۔ ہم بے حس ہیں' ہم خواب مراں کا شار ہیں' ہم دنیا کے لئے سب پکھ ہیں' دین کے لئے پکھ نہیں۔ جھے حضور مخرصادق صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم کی حدیث مبارک یاد آری ہے کہ واللہ ما اخاف علیم ان تشرکوا من بعدی ولکن اخاف الا تنافسوا فیھا '' فدا کی ہم جھے یہ خوف نہیں کہ تم میرے بعد مشرک ہو جاڈ کے ہل ہے خوف ہے کہ تم دنیا میں کھو جاڈ ہے۔'' الجمدللہ ہم مشرک نہیں' گر محاذاللہ دنیادار اور ذر پرست ہیں۔ میں ہر صاحب درد کے دل پر دستک دیتا ہوں کہ اگر ہم نے محازاللہ دنیادار اور ذر پرست ہیں۔ میں ہر صاحب درد کے دل پر دستک دیتا ہوں کہ اگر ہم نے محازت اولی جیے عظیم لوگوں کی قدر نہ کی تو آریخ ہمیں معاف نہ کرے گی۔ اہلت کی موجودہ باہمی کشش' منصب پرسی اور بے عملی انہیں تاریک راہوں پر لے جاری ہے' ملک و ملت کی قیادت کا سرا بھرتا جارہا ہے۔ مستقبل کے حسین خواب ٹوٹ رہے ہیں' اغیار اس تکہ و تیزی سے ابھر رہے ہیں کہ الامان و الحفیظ۔

حضرت فیض ایوان اہلسنّت کا ایک آبناک چراغ ہیں ' میں نے سا آپ کے آنے ہے پہلے شمر بماولپور میں بدعقیدہ لوگ چھائے ہوئے تھے' اہلسنّت کی کوئی مجد اور ادارہ موجود نہ تھا' آپ کی کاوش چیم اور ادان ہدایت ہے بت کدہ آذری میں زلزلے آگئے۔ الجمدللہ آج وہاں اہلسنّت کی مساجد اور ادارے کیرتعداد میں موجود ہیں۔

میرے استاد کرم حضرت پروفیسر مجر حیین آسی دامت برکا تئم حضرت فیف کے بہت مداح ہیں 'آپ فرماتے ہیں کہ حضرت فیض سیرت و کردار ہیں اسلاف کرام کا نمونہ ہیں۔ مکسرالمزاتی ' فطرت کا خاصہ ہے ' حس اخلاق طبیعت میں رچا ہوا ہے۔ فیج و شام علمی و اعتقادی گلتان کی آبیاری میں مستعد نظر آتے ہیں۔ ملک و ملت کا درو دگ رگ میں سرایت پذیر ہے۔ مورخہ ۲۲ جولائی ۱۹۹۸ء کو کاموکی منڈی میں حضرت فیض کی زیارت نصیب ہوئی جیسا سا ویسا بیا ' میری زندگی میں لیے ظبی و شفیق انسان کم گزرے ہیں۔ فرض ایے لوگوں کے بارے میں کما کیا

-

#### مت سل ہمیں سمجھو پھرہا ہے فلک برسول تب فاک کے پردے سے انسان نطح ہیں

حضرت فیض کی زیر نظر کلوش " ترجمته المناقب "گلش احناف کے لئے باو سیم سے کم میں۔ میں۔ سیس۔ یہ ہماری بدشمتی ہے کہ ہم " مجر عبی " کے غلام تو کملاتے ہیں گر آپ کی مبارک زبان عصف اور پھیلانے کے لئے تیار نہیں۔ حضرت فیض قوم کے اس المیے سے آشنا ہیں لاذا انہوں نے اس بلند پایہ کتاب کو اردو میں تبدیل کر کے پوری قوم پر احمان فرملیا ہے۔ مولا کریم آپ کا سایہ تادیر قائم رکھے۔

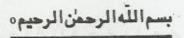
ترجمہ کمل کرنے کے بعد فاضل مترجم نے ہمارے وقت کے وانشور قلکار اور سنیت کے بلند پایہ عالم دین حضرت پرزادہ علامہ اقبال احمد فاروقی ایم اے گران مرکزی مجلس رضا اور باظم اعلیٰ مکتبہ نبویہ لاہور کو خصوصی طور پر منتخب فرما کر اپنے ترجمہ پر نظر ٹانی کی فرمائش کی چنانچہ پرزادہ موصوف نے اس عالمانہ ترجے کو آسمان اردو میں منتقل کر کے قار نمین کے لئے آسائیاں پیدا کر دیں ہیں اور ہم ذاتی طور پر محسوس کرتے ہیں کہ اردو ذبان کی سلاست اور روانی سے بیدا کر دیں ہیں اور ہم ذاتی طور پر محسوس کرتے ہیں کہ اردو ذبان کی سلاست اور روانی سے ترجمہ کی اہمیت بردھ گئی ہے اور یہ اہم تاریخی کتاب ہمارے دینی لڑیچر میں ایک عمرہ اضافہ ہے۔ اس مقام پر " ناشر المناقب اردد " حضرت علامہ پرزادہ اقبال احمد فاروقی کا شکریہ اوا کرنا ابنا اخلاقی فرض سمجھتا ہوں جنہوں نے مناقب الم اعظم " کی اشاعت و طباعت پر ذر کیر صرف کیا ابنا اخلاقی فرض سمجھتا ہوں جنہوں نے مناقب الم اعظم " کی اشاعت و طباعت پر ذر کیر صرف کیا یہنا اخلاقی فرض سمجھتا ہوں جنہوں نے مناقب الم اعظم " کی اشاعت و طباعت پر ذر کیر صرف کیا یہنا اخلاقی فرض سمجھتا ہوں جنہوں نے مناقب الم اعظم " کی اشاعت و طباعت پر ذر کیر صرف کیا یہنا اخلاقی فرض سمجھتا ہوں جنہوں نے مناقب الم اعظم " کی اشاعت و طباعت پر ذر کیر صرف کیا علی سید الاکوان الذی انقذنا من عبادہ الاصنام و الاثان و ہدانا الاسلام و الایمان علی سید الاکوان الذی انقذنا من عبادہ الاصنام و الاثان و ہدانا الاسلام و الایمان

العبد الضعيف غلام مصطفی مجددی ايم اے



# ﴿ مُحُسَّنَدَ كِي الْصَارِيُّ الشَّرِيْ ﴾

احر جاوید ف اروقی پیبلشرز داتادربار مارکیٹ لاہور



" جلد اول "

مناقب المام اعظم

علامه صدرالاتمه ابي المنويد الامام الموفق بن احد المكي رايطيد (م ١١٥)

ترتيب وترجمه

علامه مولانا محرفيض احرصاحب اوليي دامت بركاتم العاليه

**☆\_\_ناشر\_\_**☆

مكتبهنبويه كنج بخش رودُ لابور مراع في 4584608 458

## بسم ولله ولرصى ولرحيمه

الحمد لله الذي جعل الانبياء في الارض خلفاء \* و جعل حملة الشريعة الحنيفية البيضاء ورثة الانبياء والصلوة والسلام على رسوله محمد خاتم النبيين وعلى آله واصحابه واتباعه الاتقياء \* اما بعد \*

خدا كابنده محمد حيدر الله خان وراني (نسباً) حنى (مذهباً) نقشبندي (مشرباً) عرض گذار ہے کہ یہ کتاب امام الائمہ امام ابوحنیفہ نعمان بن ثابت بن مرزبان الاحرار کے مناقب و مقامات ير لكهي كئي ہے جے صدرائمہ صدرالدين ابوالمؤيد موفق بن احمد المكي ريابي نے مرتب كيا- امام موفق ریائے ونیائے اسلام کے خطباء میں سے ایک بلند پایہ اور بھرین خطیب تھے۔ آپ نے حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے مخالفین کے اعتراضات کے جوابات دیئے اور فرزندان اسلام کی حمامیت میں بدے کارنامے سرانجام دیتے۔ انہوں نے امام ابوصیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے مناقب کو سلسلہ وار سندات سے متند فرمایا ہے۔ اور پھرامام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالی عند کے ان احباب اور اصحاب ك طالت ير روشنى والى ب جنهول في دنيائ اسلام من ملك المسنّت ك جهند كارك تھے۔ زر نظر کتاب میں بیان کردہ مناقب کے سامنے طعن و تشنیع کرنے والے بھیڑیے نہیں تھیر سكيں كے اور نه بيار اور بے علم معترضين زبان كھول سكيں مے۔ مناقب كى اس كتاب سے حضرت الم ابو صنیفه رضی الله تعالی عنه کی جلالت شان اور بلند مراتب کی خوشبو تیں چار وانگ عالم میں ممک اتھیں گین۔ کیوں نہ ہو؟ آپ جمان شریعت کے قطب ہیں ' بلکہ دنیائے اسلام میں بعد میں آنے والے تمام اقطاب آپ کے علم سے ہی استفادہ کر کے ان بلندیوں پر فائٹز ہوں گے۔ دنیائے اسلام کا ہر ایک عالم دین آپ کی مهرسے ہی متند ہوگا۔ اور زمانے بھرکے نقیہ آپ کے شاگردیا شاگردوں کے شاگردوں میں سے ہوں گے۔ کوئی ایبا محدث نہ ہو گا جو آپ کے جود علم و سخاء اور فضل سے بسرہ

اندوزنه بو-

حقیقت یہ ہے کہ ہماری شخیق کی روشنی میں یہ پہلی کتاب ہے جس میں امام ابو صفیفہ رضی
اللہ تعالیٰ عنہ کے مناقب کے موتی قطار در قطار پرو دیئے گئے ہیں۔ یہ وہ مناقب ہیں جنہیں قرطاس
علم پر آتھوں کی روشنائی سے لکھا جاتا چاہئے۔ ہمارے نزدیک اس کتاب سے بردھ کر ذمانہ بھر میں کوئی
اور کتاب اس کے ہم پایہ نہیں ہوگ۔ میرے سانے وہ قطی نحۃ ہے جے ہیں نے مصنف علام تولید
کی لکھی ہوئی بیاض سے قلمبند پایا ہے۔ مصنف گرامی ۸۷۸ھ میں فوت ہوئے تھے۔ اس کتاب کے
آخری صفحات پر اجازات و سلمات کی مریں شبت ہیں۔ حضرت حافظ ابو عائم المہذب بن المحمین نمیر ہو
الحافظ محر بن المحمین بن زینة الاصفهائی المحدث متوثی ۵۸۸ھ ہے اسے اپنے ہاتھ سے لکھا ہے۔
الحافظ محر بن المحمین بن زینة الاصفهائی المحدث متوثی ۵۸۸ھ ہے اسے اپنے ہاتھ سے لکھا ہے۔
صاحب کشف المطنون نے لکھا ہے کہ یہ کتاب چالیس ابواب پر مشتمل ہے مگر ہم نے
اسے ہیں ابواب میں مرتب کیا ہے۔ خطبہ کے علاوہ آخر میں حضرت امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ
کے دس اصحاب کے مناقب نظرانداز کر دیئے گئے ہیں اور اس طرح ہم نے امام کردری رحمتہ اللہ علیہ
کے خطبہ اور مناقب و العام الکردری "کا اضافہ کر دیا ہے۔ پھر ہم نے امائیر کو بھی مختمر کر دیا ہے
کے خطبہ اور مناقب و درج کیا ہے۔

\*\*\*\* \*\*\* اقب امام اعظم ۲۹ مکتبه نیز

باب اول

# امام ابوحنیفه ب<del>ضخاهای</del>ینهٔ کانسب اور ولادت

علامہ ابو تھیم رحمتہ اللہ علیہ فراتے ہیں کہ امام ابو حقیقہ تعمان بن طابت رضی اللہ تعالی عنہ من ۸۰ ھیں پیدا ہوئے تھے۔ اس آریخ پیدائش کو آپ نے مخلف روایات کو جید مور نھین اور تذکرہ نگاروں کے حوالے سے نقل فرایا ہے۔ مثلاً ظہیرالائمہ عبداللہ، شیخ الاسلام حیین ابن الحن، آج الاسلام ابوسعد عبدالکریم بن مجر السمعانی، الامام ابوالمعانی، الفضل بن سمل الحلبی، ابوسعد السمعانی، اور حضرت جملو بن ابی حقیقہ رحمتہ اللہ علیم الجمعین نے اسمعانی، اور حضرت جملو بن ابی حقیقہ رحمتہ اللہ علیم الجمعین نے اسمعانی مورضین نے قان واقعہ قرار دیا ہے۔ اس طرح مزاحم نے اپنے والد اور ان کے ہزاروں جید مورضین نے خلاف واقعہ قرار دیا ہے۔ اس طرح مزاحم نے اپنے والد اور ان کے

احباب کی روامیت سے حضرت امام ابو صنیفہ دیا لید کا سال پیدائش اکسٹھ (۱۱) جری لکھا ہے اور وفات ما اجری کھا ہے اور وفات ما جری درج کی ہے۔ مرمصنف علام نے ایسی تمام روایات کو غیر مختیقی قرار دیا ہے۔

### حضرت المم ابو حنيفه المعقاللة كانب

حضرت صالح بن اجر مجلی کی تحقیق کے مطابق حضرت لیام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی " تیمی "
تھے۔ تیمی خانواں حضرت حمزہ زیات کی اولاد ہے ہے۔ آپ ریشم فروش تھے اور ریشم کی خرید ہ
فروخت میں اپنے وقت کے بہت برے تاجر تھے۔ ابو تیم الفضل میلی فرماتے ہیں کہ حضرت الم
ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ " زوطی " ہیں۔ زوطی ان غلاموں میں سے تھے جنہیں فاتحین اسلام
مخلف ممالک ہے گرفمار کر کے لائے تھے۔ فاضل مولف نے آپ کے آباؤاجداد کا اسلامی لفکروں کے
قید میں آتا معیوب قرار نہیں دیا اور ان لوگوں کے غلط رہنے کی بے بناہ دلائل سے تردید کی ہے جو

المامول کو حقیر سجھتے تھے۔ اس سے آپ کی رفعت شان میں کوئی فرق نہیں آلمہ اسلام میں تقویٰ المام انساب سے بلند اہمیت رکھتا ہے اور اسے بلند قدر اور تواب کے تمام اسباب سے قوی تصور کیا گیا

ے ان اکر مکم عندالله اتقاکم " ب شک اللہ کے نزدیک وہ مرم تر ہے جو زیادہ مق ہو۔"

پرنی کریم صلی الله علیه و آله وسلم فرماتے ہیں " ہر متق میری آل ہے " اس کاعملی شبوت

یہ ہے کہ حضور نی کریم صلی اللہ علیہ والہ وسلم نے حضرت سلمان فارس رمنی اللہ تعالی عند کو اپنے

الل بیت ش شار کیا ہے اور اعلان کیا کہ سلمان منا اهل البیت "سلمان مارا الل بیت ہے۔" ایمان اور تقویٰ نہ مونے کی وجہ سے قرآن پاک نے حضرت نوح علیہ السلام کے بیٹے کو بی کی اولاد

ے تکال دیا اور قرمایا ان لیس من اهلک " وہ تمارے الل بیت ہے جس ہے۔" کیونکہ اس کا

کردار فیر صالح ہے۔ حضرت بلال رضی اللہ تعالی عنہ حبثی ہوتے ہوئے بھی حضور نمی کریم صلی اللہ علیہ والہ وسلم کرین در محال میں ان کر تکسی ادار سے سے علیہ وہ تا ہے ا

علیہ واللہ وسلم کے پندیدہ محالی ہیں۔ ان کے برعکس ابولب آپ کے خاندان قرایش کا سروار اور چھا مونے کے باوجود آپ سے کوئی رشتہ نہیں رکھتا۔ حضور صلی اللہ علیہ واللہ وسلم نے اپنے ایک قول

بوت سے بوجود آپ سے تون رحمہ میں رحمه صور می اللہ علیہ و اللہ و مم نے آپ ایک فول میں فرمایا کہ " بہت سے لبدال اموالی (غلاموں) میں ہوں گے۔" پھر فرمایا " اگر علم ثریا اور کہکشاں پر

معلق موجا آ او فارس کے غلام اسے زمین پر لے آتے۔

الا طلبن بالنسك ملكا مؤينا فما الملك في النارين الا لناسك

وليس مليكا غير مالك نفسه وان حازو استصفى اقاصى الممالك

ابولهب في فائق الحسن لم يكن عديل بلال اسود اللون حالك

فرم بالنقى رضوان رضوان مالكاً هواك تفز بالعتق من رق مالك

(ترجمہ) " خبردار عبادت سے بی دائی ملک حاصل ہو آ ہے۔ دونوں جمانوں میں وہی باوشاہ ہے جو

ے حضرت بال رضی اللہ تعالی عنہ سے کمیں خوب تر تھا گر حضرت بال رضی اللہ تعالی عنہ رنگ

كے كالے ہونے كے باوجود ابواب سے بلند تر مقام پر فائز تھے۔ تقویٰ كے لباس سے مزين ہوكر

العب امام اعظم محتبه بيويه

رضوان جنت سے ملاقات کرے۔"

حضرت عثان بن عطاء ماليد نے اپنوالد سے بيد واقعہ بيان كيا ہے كہ وہ رصاف ميں بشام بن عبدالملک کی خدمت میں حاضر ہوئے انہوں نے بوچھا عطاء بتاؤ ان دنوں اسلامی ممالک میں سب سے بوا عالم دین کون ہے؟ میں نے کما ہال مجھے معلوم ہے کہ سب سے بلند پاید عالم دین کون ہے۔ ہشام نے بوچھا اچھا بتاؤ ان دنول ميند يس سب سے برا عالم دين كون ہے؟ يس نے كما حضرت نافع رضى الله تعالى عنه (حضرت عبدالله بن عمر رضى الله تعالى عنهاك غلام) بشام في مربوجهاك الل مكه بيس سب سے برا فقید کون ہے؟ میں نے کما عطاء بن ابی رباح - بوچھاکہ بید غلام ہے یا عربی؟ میں نے کما ب " مولى " ب- پر يوچها الل يمن من س برا فقيد كون ب؟ من في كما طاؤس بن كيمان- يوچها كه بيه غلام ب يا عربي ؟ ميس في كما "مولى" انهول في يوجها الل يمامه ميس برا فقيه كون بع ميس نے بتایا بھی بن ابی کثیر- کما غلام ہے یا عربی؟ میں نے کما" مولی " اس نے دریافت کیا اچھا یہ بتاؤ شام میں برا فقید کون ہے؟ میں نے بتایا کہ مکول - بوچھا یہ عربی ہے یا غلام ؟ میں نے بتایا " مولی " ہے۔ اس نے پھر روچھا اہل جزیرہ میں کون بردا فقیہ ہے؟ میں نے بتایا میمون بن مهران - کہا مولی یا عربی؟ میں نے بتایا "مولی" ہے۔ اس نے پوچھا خراسان میں کون برا فقیہ ہے؟ میں نے بتایا کہ الفحاك بن مزاحم يوچها يه عربي ب يا غلام ؟ ميس في كما "مولى" ب- پخريوچها الل بصره ميس كون برا فقیہ ہے؟ میں نے بتایا حس بقری اور ابن سیرین - اس نے دریافت کیا کہ یہ غلام ہیں یا عربی؟ میں نے بتایا غلام ہیں۔ پھر پوچھا کوفہ میں کون ہے؟ میں نے عرض کی ابراہیم مختی۔ پوچھا وہ غلام ہے یا عربی ؟ مِس نے بتایا عربی ہیں۔ کہنے لگا میری تو جان نکل رہی ہے اسب علائے دین کو غیر عربی ہی بتا رہا صرف ایک عربی ہے۔

الى التقى نانتسب ان كنت منتسبا فلسيس يجدك يوماً خالص النسب بلال الحبشى العبد فاق تقى احرار صيد قريش صفوة ألعرب غدا ابولهب يرمى الى لهب فيه غدت حطبا حمالة الحطب (ترجمه) " تقوى من شرت عاصل كو اگرتم شرت يافته بونا چائج بود تهيس فالص نب كن

ا کے شیں دے گا۔ بلال حبثی رضی اللہ تعالی عنه غلام تھے گر تقوی سے فاکق تھے۔ تمام آزاد خالص على قريشيول سے ابولهب جنم ميں پھينا جائے گا اور اس كى بيوى أيندهن كا كفها اٹھائے جنم كا ايندهن

حضرت المام ابوحنیفه رضی الله تعالی عنه تقوی ، شرافت اور بزرگ کی مثل تھے۔ آپ کی الدامنی اور بلند كردارى كے وفتر بھرے بڑے ہیں-

للاسد في غاب المناقب نارس لاستنزاء من الثر يا فارس سبق العراب فاتحارب داحس في عمره وهو الرفات الدارس

نعمان في ابناء فارس فارس العلم لو غُدت الثريا بيته سبق الخيول عرابها لكنه یا دارستا کان من دارس علمه

Traffich and property

( ترجمه ) " حضرت نعمان بن ثابت رضى الله تعالى عنه ابنائے فارس ميں سے بازى لے جانے والے ہیں۔ مناقب کے جنگل کے شیر ہیں اور شیر ہی بادشاہ ہوتا ہے۔ اگر علم کا گھر ثریا ہو تو فارس ك نوجوان اے ثريا كى بلنديوں سے امار لائيں گے۔ عربی نوجوان ميدان جماد ميں ونيا بھر كے شمواروں سے بازی جیت گئے۔ جب داحس کی جنگ لڑی گئی تو عربی نو جوان ہی فتح یاب ہوئے۔ مگر علمي ميدان ميں ابنائے فارس كاكوئي مقابلہ نہيں كرسكا۔ جو مخص اپنے علم كو اپني زندگي ميں ضائع كر عا ب وه حقیقت میں ریزہ ریزہ ہو کرمٹ جاتا ہے۔"



اقب امام اعظم. مكتبه تدويه

#### باب دوم

# امام اعظم نفتی الله بنی کریم ﷺ کی احادیث کی روشنی میں

عن ابى هريره رضى الله تعالى عنه قال قال رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم يحون فى امتى يقال له ابوحنيفه هو سراج امنى يوم القيامة و " رسول اكرم صلى الله عليه وآله وسلم في فرمايا كه ميرى امت من أيك مرد پيرا بوگا جس كانام ابوضيفه بوگاوه قيامت من ميرى امت كانام عن ايك ميرى امت كانام ابوضيفه بوگاوه قيامت من ميرى امت كانام ابوضيفه بوگاوه تيامت من ميرى امت كانام كانام ابوضيفه بوگاوه تيامت من ميرى امت كانام كانام ابوضيفه بوگاوه تيامت من ميرى امت كانام كانا

(مترجم گذارش كرتا م كه سيدنا جلال الدين سيوطى رحمته الله عليه في تبيض الصحيفه في مناقب ابى حنيفه من چار المان فراجب رضى الله تعالى عنم كه مناقب كا استدلال احاديث نبويه سے فرمايا م - آپ لکھتے ہيں كه نمى كريم صلى الله عليه و آله و سلم في ايك حديث من لام مالك رضى الله تعالى عنه كے ليئے بشارت ديتے ہوئے فرمايا كه " ايك زمانه آئے گاكه لوگ او نول پر سوار ہوكر علم كى تلاش ميں تكليں كے مر مدينه منوره كے عالم دين سے بردھ كرونيا بحر ميں كوئى عالم دين نه ہوگا۔" ايك اور حديث مباركه ميں امام شافعى رضى الله تعالى عنه كے ليئے بشارت ديتے ہوئے فرمايا مرقبی كو برا نه كور ان ميں سے ايك ايما عالم دين پيدا ہو گاجو تمام دنيا كو علم سے مالا مال كر دے گا۔"

حضرت المام شافعی رضی الله تعالی عنه کے متعلق ان بلند پاید بشارتوں کے باوجود سیدنا ابو هریره
رضی الله تعالی عنه کی وه روایت ہے جے ابو تعیم (متوفی ۱۳۳۰ه ) نے " الحلیه " بی بیان کیا ہے که
اگر علم ثریا کی کی بلندیوں پر پہنچ جائے تو فارس کے جوانمردوں سے ایک جوانمرد اس تک پہنچ جائے گا۔
اس طرح علامہ شیرازی نے " الالقاب " میں قیس بن عبارہ رضی الله تعالی عنه کی روایت بیان کی
ہے کہ رسول الله صلی الله علیہ و آلہ و سلم نے فرمایا " اگر علم ثریا پر چلا جائے تو مردان فارس وہاں

کے بھی پنچ جائیں گے۔" ان روایات کو مسلم اور بخاری نے بھی بیان کیا ہے۔ امام طبرانی مالیجہ نے اس میں میں میں میں اللہ تعالی عنہ کی روایت نقل کی ہے۔

حضرت الى هريره رضى الله تعالى عند نے حضور صلى الله عليه و آله و ملم كى أيك اور حديث الله عليه و آله و ملم كى أيك اور حديث القول في الله قبل الله قبل الله في المتى رجلاً حديث القول كي يه الفاظ بين يكون في المتى رجل السمه النعمان و يكنى ابو حنيفه هو سراج المتى ، هو سراج الله عنه كى روایت كے يه الفاظ بين قال رسول الله صلى الله عليه و آله وسلم سيكون رجل يقال له النعمال بن بابت ويكنى بابي حنيفة

یحیی دین الله تعالی وسنتی " رسول الله صلی الله علیه و آله وسلم نے فرمایا ایک ایسا مرد پیدا موگا جس کا نام نعمان بن ثابت موگا اور اس کی کنیت الی صنیفه موگی وه الله کے دین اور میری سنت کو

زندہ کرے گا۔"

ائى الفاظ ميں حضرت انس بن مالک رضى اللہ تعالى عنه نے ایک اور روایت بيان كى ہے جس کے الفاظ يہ بين قال رسول الله صلى الله عليه و آله وسلم سياتى من بعدى رجل يقال له النعمان ويكنى اباحنيفه ليهيين دين الله و سنتى على يديه "ميرے بعد ایک ايا فخص آئے گا جے نعمان كما جائے گا اس كى كنيت ابوطنيفہ ہوگى اس كے ہاتھوں سے اللہ كا دين اور ميرى سنت زنده ہوگ۔"

حضرت الس بن مالک رضی اللہ تعالی عند کی ایک اور روایت میں یہ الفاظ میں قال قبال رسول اللہ صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم یکون فی آخرالزمان رجل یکنی بابی حنیفة بحی اللہ تعالی علی یدیه سنتی " حضور صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم نے فرمایا آخری زمانہ میں ایک ایبا مرو پردا ہو گاجس کی کنیت ابی حنیفہ ہوگی اور اس کے ہاتھوں سے میری سنت زندہ ہوگ۔" ایک ایبا مرو پردا ہوگاجس کی کنیت ابی حنیفہ ہوگی اور اس کے ہاتھوں سے میری سنت زندہ ہوگ۔" انہی الفاظ میں حضرت انس بن مالک رضی اللہ تعالی عند نے وس احادیث بیان کی ہیں جن میں حضرت اللہ البح ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عند کی آمد کی بشارت اور آپ کے ہاتھوں سنت نبوی مظاہیم کو دوبارہ ذندگی اللہ ابوحنیفہ رضی بیان کی میں۔

مکتهنیویه

سیدنا لیام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ نے ایک رات خواب میں دیکھا کہ وہ حضور نہی کریم صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم کی قبر مبارک کھود کر آپ کے جہم پاک کی ہڑیاں جدا جدا کر رہے ہیں اور پھر ان ہڑیوں کو اپنے سینے سے لگا رہے ہیں۔ اٹھے تو آپ اس خواب سے نمایت خوفردہ تھے۔ آپ اس پریشانی اور خوف کے عالم میں بھرہ پنچ اور ایام ابن سیرین رحمتہ اللہ علیہ سے خواب کی تعبیر دریافت کی تو آپ نے فرایا کہ آپ اپنی پشت سے قبیص اٹھا کمیں محضرت ایام ابن سیرین رواجہ نے ویکھا تو آپ کے دو کاندھوں کے درمیان ایک تن کا نشان بیا 'آپ نے ویکھ کر نمایت مسرت میں فرایا آپ کی وہ ابوحنیقہ ہیں جن کے متعلق حضور نمی کریم صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم نے شاد تیں دی تھیں اور اس خواب کی روشنی میں آپ حضور صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم کی سنوں کو ذیرہ کریں گے۔ اور اس خواب کی روشنی میں آپ حضور صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم کی سنوں کو ذیرہ کریں گے۔

عبدالكريم بن معر رحمته الله عليه فراتے بين كه مجھے الل علم كى ايك بهت برى مجلس بين بين المحبار بينے كا اتفاق ہوا ان ميں زيادہ تر غير مسلم الل كتاب تھے۔ انہوں نے بنايا كه تورات ميں كعب الاحبار ونعمان بن طابت رضى الله تعالى عنه و مقاتل بن سليمان مرافي كے اوصاف لكھے ہوئے ہيں. حضرت مجمد بن سائب السكلى امام ابو حنيفه رضى الله تعالى عنه كى تعريف ميں فرماتے بيں كه ميں نے كتاب ساويه ميں لكھا ہوا بايا ہے كه امام ابو عنيفه حكمت اور وينى علوم ہے استے بحرے ہوئے ہوں گے جس طرح بين لكار بين انار كے دائے ہوتے ہيں۔

حضرت کعب الاحبار روائیے نے بیان فرمایا ہے کہ میں نے علیائے امت محمیہ اور فقیبہان عمر کے اسائے گرای المای کتابوں میں لکھے ہوئے ہا۔ ہیں۔ ان اسائے گرای کے ساتھ ان حضرات کے اسائے گرای المای کتابوں میں لکھے ہوئے ہا۔ ہیں۔ ان اسائے گرای کے ساتھ ان حضرات کے اوصاف بھی درج تھے۔ جھے ان ناموں میں ایک نام ابو حفیقہ تعمان بن ثابت کا نظر آیا۔ آپ کے اوصاف میں آپ کے علوم عبورات وہائت ، تقویٰ کے متعلق تفصیل دیمھی۔ یہ بات خصوصی طور پر دیکھی کہ آپ اپنے زمانہ کے اہل علم کے امام ہوں کے اور ان کی شخصیت آسان علم پر چودھویں رات کے چاند کی طرح درخشاں ہوگ۔ لوگ ان کی زندگی پر بھی رشک کریں گے اور موت پر بھی۔ رات کے چاند کی طرح درخشاں ہوگ۔ لوگ ان کی زندگی پر بھی رشک کریں گے اور موت پر بھی۔ حضرت عبداللہ بن مفعل رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ میں نے حضرت علی کرم اللہ تعالیٰ وجہ سے سنا آپ نے فرمایا کہ آج میں تمہیں ایسے مود کی خبر سنانا چاہتا ہوں جو کوفہ کے اہل علم کے مہما ہوں میں رہنے والے اہل علم کے رہنما ہوں میں رہنے والے اہل علم کے رہنما ہوں

گے۔ وہ کوفہ شریس ابو صنیفہ کی کنیت سے شمرت پائیں گے۔ آپ علم و حلم کا خزانہ ہوں گے اور اس ذمانہ میں آپ کی وجہ سے ہزاروں لوگ تباہی و بربادی سے نیج جائیں گے۔ ان پر بعض لوگ حسد کی وجہ سے طعن و تشنیج کر کے اپنا ایمان خراب کریں گے (جس طرح روائض نے حضرت ابو بکر صدیق رضی اللہ تعالی عنہ کو طعن و تشنیج کر کے اپنا ایمان خراب صدیق رضی اللہ تعالی عنہ کو طعن و تشنیج کر کے اپنا ایمان خراب کیا۔ مترجم)

حضرت ابن عباس رضی اللہ تعالی عنبهانے ایک روایت کی ہے کہ نبی پاک حضرت محمہ صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم نے فرمایا کہ " میرے بعد ایک ایسا مرد پیدا ہو گا جو تمام اہل خراسان کے لیئے آئیاں علم پر چود حویں کے چاند کی طرح چکے گا اس کی کثیت ابو حذیفہ ہو گ۔" حضرت بغراز رضی اللہ تعالیٰ عدم نے ایک روایت میں بیان کیا ہے کہ میں حضرت ہماد مطلبی نے پاس بیٹھا تھا "حضرت امام ابو حذیفہ رضی اللہ تعالیٰ عدم تشریف لائے تو ہماد نے عرض کی کہ آپ وہی ابو حذیفہ بیس جن کا ذکر ہمیں ابراہیم فخصی مطلبی غذ تشریف لائے تو ہماد نے عرض کی کہ آپ وہی ابو حذیفہ بیس جن کا ذکر ہمیں ابراہیم فخصی مطلبی نے کیا تھا کہ آپ ایک زمانے کو علم سے سراب کریں گے "آپ کا عام نعمان ہو گا آپ کی کثیت ابو حذیفہ ہوگی "آپ احکام اللی اور سنت رسول اللہ صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم کو زندہ کریں گے اور آپ کے احکام قیامت تک امت مسلمہ میں جاری رہیں گے۔ ججھے ہدایت کی گئی ہے کہ آگر میں آپ کو ملوں تو میراسلام پیش کیا جائے۔

حضرت ابن عباس رضی اللہ تعالی عنبانے فرالیا کہ جاری رائے میں ہے کہ جو مخص صاحب الرائے ہو کر فتوئی دے گا اس کی مضبوط حیثیت ہو گی۔ جب تک اسلام باتی ہے اس کی رائے پر احکالت جاری ہوتے رہیں گے۔ اس مقام پر آیک ایبا مخص ظاہر ہو گا جس کا نام نعمان بن ثابت ہو گا اور کنیت ابوطنیفہ ہوگی اور وہ اٹل کوفہ ہے ہوگا' اس کی شخصیت اسلام اور فقہ میں آیک مضبوط قلعہ کی ہوگی اور اس کی کوششوں سے اسلام میں زندگی آئے گی۔ وہ حنفی دین اور رائے حسن پر قائم ہوگا۔

ایک ون حضرت امام ابو حنیفه رضی الله تعالی حضرت امام جعفر صادق رضی الله تعالی عنه کی خدمت میں حاضر ہوئے۔ حضرت امام جعفر رضی الله تعالیٰ عنه نے آپ کو دیکھتے ہی فرمایا۔ '' میں دیکھ الله علیہ و آله وسلم کی سنتیں تم زندہ کرد گے۔ بیا ہوں کہ میرے نانا جان جناب رسول الله صلی الله علیہ و آله وسلم کی سنتیں تم زندہ کرد گے۔ بیا

اس وقت ہو گا جب عام مسلمانوں کے ہاں سنت رسول طاہر کا احرام کم ہو جائے گا۔ تم ہر پریشان صاحب علم کی جائے پناہ ہو گے۔ حلات کی وجہ سے ہر غمزوہ تممارے پاس فریاد لے کر آئے گا اور تم ان کی داد رس کرہ گے۔ تمماری راہنمائی سے لوگوں کو صحح راستہ ملے گا۔ وہ جران اور پریشان ہوں کے لؤتم انہیں سمارے دے کر سیدھے راستے پر راہنمائی کو گے۔ حمیس اللہ تعالیٰ کی طرف سے اتی توفق حاصل ہوگی کہ زمانہ بحرے علمائے ربانی تمہاری وجہ سے صحیح مسلک افتیار کریں گے۔

## حفرت أمام ابوحنيفه نفع النامية كاحليه مبارك

حضرت امام ابو بوسف رحمتہ اللہ علیہ نے فرمایا کہ امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ مردوں میں میانہ قد محص ننہ بہت قامت اور نہ دراز قد۔ مفتکو کرتے تو دل میں اترتی جاتی۔ زبان میں شری اور بیان میں حلاوت ہوتی۔ وہ اپنے مقاصد سے باخبر تھے اور اپنا کلتہ نظر بیان کرنے میں برے باخبر تھے۔

آپ کے صاجزارہ حضرت جماد رضی اللہ تعالیٰ عدہ فرماتے ہیں کہ آپ کا قد نمایت موزوں اور متوان تھا۔ ربک گندی اور بردی متوسط رفتار کے مالک تھے۔ لباس پہنتے تو بردا اعلیٰ اور صاف ستھرا لباس پہنتے ، جو آپ کے قد و قامت پر بچا تھا۔ آپ کا معمول تھا کہ عطر کا استعال کرت سے کرتے تھے۔ آپ جد هر جاتے خوشبو بھرتی جاتی اور یہ خوشبو بی آپ کی، پچان تھی۔ آپ باہر سے گھر تشریف لاتے تو گھر خوشبو سے ممک اٹھتا اور ہم محسوس کرتے کہ آپ گھر آگئے ہیں۔ ابو تھیم رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ حسین و جمیل شخصیت کے مالک تھے۔ چرو چودھویں کے جاند کی طرح درخش ، بمترین لباس زیب تن کرتے ، خوشبو سے معطر رہے ، جس مجلس میں تشریف فرما ہوتے مجلس میک اٹھتی تھی۔ دوستوں سے حسن سلوک فرماتے ، بیگانوں سے بھی تنظف سے پیش آتے تھے۔

حضرت ابوقعیم رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ حسین و جمیل چرے کے مالک تھے۔ چرے پر موزول داڑھی بجق تھی' بمترین لباس استعال کرتے تھے' ہر ملئے والے سے حسن سلوک کا مظاہرہ فرماتے۔ حضرت عبداللہ ابن مبارک رحمتہ اللہ تعالی علیہ فرماتے ہیں کہ لمام ابوطنیفہ کی مجلس بری بلوقار ہوتی تھی' آپ دور سے ہی ایک فقیہ کی شکل میں نظر آتے۔

عموش طبع اور متوازن چال سے چلتے اور خوش لبای میں تو سارے کوفہ میں ضرب المشل تھے۔
حضرت مبارک رحمتہ اللہ علیہ ایک واقعہ بیان فرماتے ہیں کہ ہم ایک دن مجد میں بیٹے
سوئے تھے 'اچانک چھت سے ایک سانپ فرش پر آگرا اور اتفاق کی بات ہے کہ حضرت امام ابو حنیفہ
رضی اللہ تعالی عنہ کی جھولی میں آپڑا لوگ سانپ کی دہشت سے ادھر ادھر بھاگ المخے۔ لیکن امام
سوخیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نمایت اظمینان اور اعتماد سے اپنی جگہ بیٹے رہے اور سانپ کو نمایت بی
ری سے ایک طرف بٹا دیا۔ لوگوں نے دریافت کیا تو آپ نے فرمایا یہ میری تقدیر میں نمیں تھا اس
لیے اس سے ڈرنے یا بھاگنے کی ضرورت نمیں تھی۔

حضرت حمزہ شلل رحمتہ اللہ علیہ فراتے ہیں کہ ہم ایک دن امام جعفر صادق رضی اللہ تعالیٰ عدد کی خدمت میں بیٹے ہوئے تھے کہ امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عدد تشریف لائے اور آپ کے مائے بیٹھ گئے اور حضرت امام جعفر رضی اللہ تعالیٰ عدد سے چند مسائل پر منفظو کی۔ جب آپ چلے گئے تو حضرت امام جعفر رضی اللہ تعالیٰ عدد نے فرایا کہ یہ مخض برا صاحب ملم و فضل اور کیڑا لفقہ ہے۔ ابوا بشر' ابی جعفر کے غلام فرماتے ہیں کہ میں نے امام ابو حذیفہ رضی اللہ تعالیٰ عدد کو دیکھا کہ آپ میانہ قد' حسین چرہ اور کریم النفس تھے۔ آپ نہ تو دراز قد تھے نہ بہت قد' مر برا اور دانت آپ میانہ قد' حسین چرہ اور کریم النفس تھے۔ آپ نہ تو دراز قد تھے نہ بہت قد' مر برا اور دانت ایکرے ہوئے تھے۔ لوگوں ہے گفتگو فرماتے تو چرہ موزوں اور متوازن رہتا۔

### الم نعمان بن ابت نعمان الممان المان الم

احادیث کرے کابوں میں روایت ملتی ہے کہ حضرت چرکیل علیہ السلام حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم ملی بارگاہ میں حاضر ہوئے اور عرض کیا۔ بارسول اللہ صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم حضرت لتمان علیہ السلام کے پاس حکمت کا اتنا بڑا ذخیرہ تھا کہ آگر وہ چاہتے تو اپنے خرمن حکمت سے ایک وانہ بیان فرماتے تو ساری ونیا کی حکمتیں آپ کے سامنے وست بستہ کھڑی ہو تیں۔ یہ بات سننے کے بور حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم کو خیال آیا کہ کاش میری است کوئی شخص ایسا ہو تا ہو اللہ وسلم کو خیال آیا کہ کاش میری است کوئی شخص ایسا ہو تا ہو اللہ وسلم کو خیال آیا کہ کاش میری است کوئی شخص ایسا ہو تا ہو اللہ وسلم کی خرمن کی یارسول اللہ صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم کا جو حکمت کے خرمن سے ہزاروں حکمتیں بیان

کرے گا اور آپ کی امت کو آپ کے احکام سے واقف کرے گا۔ حضور مال بالے نے یہ بشارت س کر حضرت انس رضی اللہ تعالی عند کو اپنے پاس بلایا اور ان کے مند میں اپنا لعاب وہن عنایت فرمایا اور وصیت کی کہ امام ابو حنیفہ کے مند میں یہ امانت ڈالنا۔

رسول الله قال سراج دینی وامتی الهداة ابوحنفیه غدا بعد الصحابة فی الفتاوی لاحمد فی شریعته خلیفه سدا دیباج فتیاه اجتهاد ولحمه من الرحمان خیفه مقدم متن ساع کل علم له و غدا مناویة ردیفه صحاری الفقه قد قحطت و نادت یشری الخصب انسمبت وصیفه

(ترجمہ) "رسول اللہ صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم نے قرمایا کہ ابو حقیقہ میرے دین اور امت کی ہدایت کے روشن چراغ ہیں۔ صحابہ رضوان اللہ علیہ ما جمعین کے بعد سیدنا محمد مصطفیٰ صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم کے آپ تائب ہیں۔ شریعت میں فتوئی دینے کا آپ کا حق ہے۔ آپ دین میں آہنی دیوار کے طرح مضوط ہیں اور علم کے ہر شعبہ میں مشاق ہیں۔ گر اس علم و فضل کی فراوائی کے باوجود آپ مشکلات کو لبیک کھتے رہیں گے۔ جب فقہ کے ملک میں قحط پڑگیا تو امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے فیصلوں کی باران رحمت نے اسے سرسبز و خوشحال بنا دیا۔

\*\*\*\*\*

The Manager of the Property of the state

باب سوم

# امام ابوحنیفہ نے جن صحابہ سے ملاقات کا شرف پایا

بعض متعقب اور علم فقہ سے ناواقف حضرات اہام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے متعلق بیہ جھوٹا پراپیگنڈا کرتے رہتے ہیں کہ آپ آجی نہیں تنے حالانکہ حضرت اہام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے حالانکہ حضرت اہم ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے طاقات کی اور معجد میں نماز پڑھتے زیارت کی۔ پھر آپ کو حضور صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم کی اہانت لعاب وہن حضرت انس بن الک رضی اللہ تعالی عنہ کی وساطت سے کمی تھی۔

حضرت المام ابو بوسف رحمت الله عليه فرمات بين كه حضرت المام ابوضيفه رضى الله تعالى عنه ٥٨٥ ين پيدا مود اور حضرت انس بن مالک رضى الله تعالى عنه ٩٩٥ ين فوت مود ١٠٠ آپ نے فرمايا كه بين اور فيفه رضى الله تعالى عنه ١٠٥ فود سناد آپ نے فرمايا كه بين اپني والد گراى كم ساتھ ٩٩٥ ين ج كو گيا تو اس وقت ميرى عمر سوله سال كى تقى بين نے ايک فخص كو حرم پاک بين ويك اور گراى سے دريافت كيا كه بيد كون برذگ بين انهوں نے فرمايا كه بيد حضور نبى كريم صلى الله عليه وآله وسلم كے صحابي بين انه كا اسم گراى عيدالله بن الحارث بن جو الزيرى ہے (رضى الله تعالى عنهم) ہے۔ بين نے اپني والد سے دريافت كيا كه اين موادت وريافت كيا كه ان كي بين جو انهوں كے ايك ججوم نے انهيں گيرا ہوا ہے؟ ميرے والد صاحب نے فرمايا ان كے پاس كيا ہے كہ لوگوں كے ايك ججوم نے انهيں گيرا ہوا ہے؟ ميرے والد صاحب نے فرمايا ان كے پاس اماديث بين جو انهوں نے حضور نبى كريم صلى الله عليه و آله و سلم كى ذبان مبارک سنی تنون ميں حضور طابيع كے اس محابی كی زبان مبارک محابی كی زبان مبارک محابی كی زبان اور امادیث مبارکہ بھی سئوں۔ ميرے والد محترم لوگوں كو بشاتے بطے محابی كی زبان سے سامی تفقه فى دين الله محترم لوگوں كو بشاتے بطے و گئے 'ميں آپ كے پاس پنچا' زيارت كی اور ان كی زبان سے سامی تفقه فى دين الله

منافب امام اعظم مناف

کفاہ اللّه همه ورزقه من حیث لایحنسب " جو مخص الله کے دین کی کوئی بات مجھنے کی کوشش کرتا ہے الله تعالی اس کے مقاصد اور رزق میں اتنی فراخی بخشے گا کہ اس کے وہم و گمان میں بھی نہیں ہوگ۔"

حضرت امام ابوحنیف رضی اللہ تعالی فرماتے ہیں کہ میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی بیر حدیث بھی آپ سے سی الدال علی الخیر کفاعلہ واللہ بحب اغاثة اللهفان "الله تعالی پریٹان حال کو دوست بنالیتا ہے۔"

حضرت امام ابو بوسف والليه فرماتے ہیں کہ حضرت امام ابو صفیفہ رضی اللہ تعالیٰ عند نے فرمایا کہ تمام علائے دین کا اتفاق ہے کہ سجد سمو سملام پھیرنے کے بعد کیا جائے پھر نشھد اور سلام پڑھ کر سلام پھیرے۔ حضرت جماد بن ابو صفیفہ واللیہ فرماتے ہیں کہ یہ روایات حضرت انس بن مالک رضی اللہ تعالیٰ عند سے لی گئی ہیں۔ حضرت امام اعظم رضی اللہ تعالیٰ عند نے حضرت انس بن مالک رضی اللہ تعالیٰ عند سے ایک ور روایت بیان کی ہے کہ ہیں ابو قحافہ کی طواڑھی دیکھتا ہوں کہ ضرام عرقج جیسی تعالیٰ عند سے ایک اور روایت بیان کی ہے کہ ہیں ابو قعافہ کی طواڑھی دیکھتا ہوں کہ ضرام عرقج جیسی سے۔

حضرت ابولعیم ریافیہ فرماتے ہیں کہ امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ ۸۰ ہجری میں پیدا ہوئے تھے اور ۱۵۰ میں فوت ہوئے۔ انہوں نے حضرت انس برجالک رضی اللہ تعالیٰ عنہ (صحابی رسول) کو ۹۵ میں ویکھا تھا اور ان سے احادیث سی تھیں۔ حافظ جعابی رحمتہ اللہ علیہ نے لکھا ہے کہ حضرت انس بن مالک رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا وصال ۹۲ میں ہوا تھا۔ بعض نے آپ کا وصال ۹۲ میں کلھا ہے اور بعض نے آپ کا وصال ۹۲ میں موایات کے باوجود ہم ابولغیم مطابحہ کی روایت کو بی صحیح مانے ہیں کیونکہ اس کے اساد روشن ہیں۔

حضرت امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے سات صحابہ کرام کی زیارت کی اور ان سے سات روایات بیان کیس۔ امام ابو بوسف میلیجہ نے امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے انہوں نے انس بن مالک رضی اللہ تعالی عنہ سے۔ آپ نے حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ و آلہ سے روایات بیان کی ہیں خاص کریہ صدیث طلب العلم فریضة علی کل مسلم و علم کا حاصل کرتا ہر مسلمان پر فرض ہے۔" آپ نے انس بن مالک رضی اللہ تعالی عنہ سے روایت کی ہے۔

عن ابى حنيفة عن جابر بن عبدالله رضى الله تعالى عنه قال جاء رجل من الاصار الى النبى صلى الله عليه وآله وسلم فقال له يارسول الله مارزقت ولداقط ولا ولدلى فقال و اين انت عن كثرة الاستغفار والصدقة يرزق الله بها الولدقال فكان الرجل بكثر الصدقه ويكثر الاستغفار قال جابر رضى الله تعالى عنه فولد له تسعة من لذكور ٥

(ترجمه) " حضرت جابر رضی الله تعالی عند فرماتے ہیں کہ ایک انصاری حضور نبی پاک صلی الله علیہ و آلہ و سلم میری اولاد نہیں ہے و آلہ و سلم کی بارگاہ میں حاضر ہوا۔ عرض کی بارسول الله صلی الله علیہ و آلہ و سلم میری اولاد نہیں ہے اور ابھی تک میرے ہاں کوئی بچہ پیدا نہیں ہوا۔ آپ نے فرمایا تم کثرت سے استغفار پڑھا کرو اور صدقہ و و مدقہ و و خیرات بھی کیا کرو آگر تم ایبا کرو گے تو الله تعالی جمہیں اولاد دے گا۔ اس مخض نے صدقہ اور استغفار کثرت سے شروع کر دیئے۔ حضرت جابر فرماتے ہیں کہ الله تعالی نے اسے نو بیٹے عطا فرمائے۔"

حضرت اہام ابوضیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے سات سحابہ کو دیکھا تھا اور ان سے احادیث بھی سے تھیں۔ گر معتبر روایات میں لکھا ہے کہ آپ نے چھ سحابہ کی زیارت کی۔ حضرت جابر رضی اللہ حلیٰ عنہ کو آپ نے نہیں دیکھا اس لینے ان کا وصال 20 ھ میں ہو گیا تھا۔ اس پر تمام اہل سیر متغق اس سے آخر میں فوت ہوئے تھے اور حضرت اہام اوسیفیہ تو ۸۰ھ میں پیدا ہوئے تھے۔ اندریں حالات ان حضرات نے دریافت کیا ہے کہ حضرت جابر رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو اہام ابوضیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا دیکھنا کیے ممکن ہے؟ اسی طرح آپ کی موالات بھی خلاف واقعہ ہیں۔ حضرت اہام ابوضیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرماتے ہیں کہ میں ۸۰ھ میں موالات بھی خلاف واقعہ ہیں۔ حضرت اہام ابوضیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرماتے ہیں کہ میں ۱۰ مقاجب میں اور اور ۱۹۶ھ میں والد گرائی کے ساتھ تج کرنے مکہ کرمہ گیا تھا، میں اس وقت سولہ کا تھا جب میں مجد حرام میں داخل ہوا تو لوگوں کا آیک عظیم بجوم دیکھا۔ میں نے والد گرائی سے پوچھا ہے کون میں مجد حرام میں داخل ہوا تو لوگوں کا آیک عظیم بجوم دیکھا۔ میں نے والد گرائی سے پوچھا ہے کون میں مجد حرام میں داخل عوا تو لوگوں کا آیک عظیم بجوم دیکھا۔ میں نے والد گرائی سے پوچھا ہے کون میں کر زیارت بھی کی اور ان سے حدیث بھی سی۔

يحيلى بن قاسم عن ابى حنيفة سمعت عبدالله بن ابى اوفى يقول سمعت رسول

الله صلى الله عليه وآله وسلم يقول من بنى لله مسجداً ولو كمفحص قطاة بنى الله إله بينا فى الجنة ٥ " يَجُىٰ بن قاسم مليح الم الدونية رضى الله تعالى عنه عدات كرت بين انهول نے معرت عبدالله بن الى اوفى رضى الله تعالى عنه عدات منا م حضور صلى الله عليه وآله وسلم نه فرمايا جس نے الله كر هموركى تقير بين حصه ليا اگرچه تحور اساليا مواس قطاط پرندے كر برابر جنت بين كر ملح كا۔

حضرت عبدالله بن لوفی رضی الله تعالی عند صحابه کرام میں وہ صحابی میں جو کوف میں رہائش پزیر تمام صحابہ کے آخر میں فوت ہوئے تھے۔ حضرت لهام ابوطنیفه رضی الله تعالی عند فراتے ہیں که میں ۸۰ھ میں پردا ہوا تھا۔ حضرت عبدالله بن انس رضی الله تعالی عند صحابی رسول ۹۲۳ھ میں کوفہ میں تشریف لائے میں نے ان کی زیارت کی پھران کی ذبان سے سنا وہ فرما رہے تھے۔

سمعت رسول الله صلى الله عليه و آله وسلم يقول حبك الشي يعمى يصم "شرى في رسول الله صلى الله عليه و آله وسلم كو فرات ساكه جب عجم كى چيزے محبت بوجائ تو وه محمد الدور برو بنا ديتى ہے۔"

(فوٹ) فاضل مولف كتاب نے بہت ى احاديث نقل كى بين اور ان روايات كى اساد بھى بيان فرمائى بين چونك ان روايات بين حرار ہے اور اساد كرر آئى بين اس ليے انسين نظرانداذ كر ديا كيا ہے۔

حضرت امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ فرماتے ہیں کہ میں سات صحابہ رسول سے ملا ہوں اور ہر ایک سے حدیث سی ہے۔ میں عبداللہ بن حارث بن جزء الزبیدی صحابی رسول سے ملا میں نے

ا والد سے عرض کی کہ میں صحابی رسول کی بات سننا چاہتا ہوں۔ میرے والد گرای مجھے اپنے اللہ سننا چاہتا ہوں۔ میرے والد گرای مجھے اپنے معلم سے سے بیٹھ کے۔ انہوں نے مجھے پوچھا کہ بیٹا تم کیا چاہتے ہو میں سے عرض کی میں چاہتا ہوں آپ مجھے رسول کریم صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم کی حدیث سنا کیں۔ انہوں نے فرطا :

سمعت رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم يقول اغاثة السلهوف فرض على كل مسلم " في في رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم كو فرات ساكه غزده كى فراد رى جر سلمان بر فرض ہے-" مزید فرایا من تفقه في دین الله كفاه الله همه و رزقه من حیث لا حسب "جو الله ك وين كو سجح پاتا ہے الله تعالى اس كے مقاصد ميں الى كفايت كرے كاجس بر اس كا كمان نه موگا۔"

آپ نے مزید فرمایا میں عبداللہ بن انیس رضی اللہ تعالی عنہ سے بھی ملا 'ان سے ساوہ فرات تھے قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم رایت فی عارضی الجنة مکتوباً ملاتة اسطر بالذهب الاحمر بماء الذهب (السطر الاول) لااله الاالله محمد رسول الله ( والسطر الثانی ) الامام ضامن المؤذن موتمن فارشد الله الائمه وغفر " رسول الله صلی الله السطر الثانی ) الامام ضامن المؤذن موتمن فارشد الله الائمه وغفر " رسول الله صلی الله علیہ و آلہ وسلم نے فرمایا کہ میں نے جنت کے دونوں کناروں پر تین سطریں کمی دیمی ہیں۔ یہ طری خاص سرخ سوئے سے کمی تھی۔ پہلی سطر میں ادالہ الدائلہ محمد رسول الله 'دوسری سطر میں امام صامن ہو مدایت دے اور بخش دے۔

آپ نے مزید فرایا للمؤذین (والسطر الثالث) وجدنا ما عملنا ربحنا ماقدمنا حسرنا ماخلقناه قدمنا علی رب غفور "موزین کی تیری سطر پر لکھا تھا ہم نے عمل کیا اے یا اور جو ہم نے آگے بھیجایا جو نقصان ہم نے پیچے چھوڑا اور ہم رب غفور کے حضور حاضر سے۔"

آپ نے فرملیا میں حضرت عبداللہ بن اوفی (صحابی رسول) رضی اللہ تعالی عند کو بھی ملا اور ان سے یہ حدیث من وہ فرماتے ہیں۔ قال رسول الله صلى الله عليه و آله وسلم حبک الشي يعمى و يصم " حميس كى چيزكى محبت اندها اور بسره كردے گى-" والدل على الخير كفاعله

۲۱ - مکتبهنیو

والدال على الشر كمثله إن الله يحب اغاثة اللهفان " نيك عمل كرف والاجيها ب اور برائى ير قدم المان والا بحى ويثان حل فخص كى فراد رى كرف والاالله كادوست ب-"

مناقب امام اعظم

آپ نے فرایا میں نے حضرت انس بن مالک انصاری رضی اللہ تحالی عنہ (صحابی رسول) کی زیارت کی۔ میں نے ان کی زبان سے نا وہ فرما رہے تھے قال قال رسول الله صلی الله علیه و آله وسلم من قال الاله الاالله خالصاً مخلصا بها قلبه دخل الجنة ولو توکلتم علی الله حق توکله لرزقتم کماترزق الطیر تغدو خماصاً و تروح بطانا "رسول اکرم صلی الله علیه

علی مولاله مراصم معافروں معلم اور مخلص ہو کر لاالہ الااللہ کما وہ بہشت میں واخل ہو گا، وآلہ وسلم نے فرمایا جس مخص نے خالص اور مخلص ہو کر لاالہ الااللہ کما وہ بہشت میں واخل ہو گا، اگر تم اللہ کی ذات پر کامل طور پر توکل کرو کے تہیں ایسے رزق دیا جائے گا جیسے اس پرندے کو جو

علی الصبح سیرکو لکا ہے اور بھوکا ہوتا ہے مرشام کو پیٹ بھر کرواپس آتا ہے۔"

آپ نے فرایا میں نے حضرت جابر بن عبداللہ رضی اللہ تعالی عند صحابی رسول کی بھی زیارت کی تھی۔ ان سے بہ حدیث سی قال رسول الله صلی الله علیه و آله وسلم علی السمع و الطاعة والنصیحة لکل مسلم و مسلمة "رسول الله صلی الله علیه و آله وسلم نے فرایا که جر مرد عورت پر دو سرول کے لیئے خرخواہی تسلیم و طاعت فرض ہے۔"

آپ نے فرمایا میں حضرت معقل میں بیار المزنی رضی اللہ تعالی عنہ کو ملا ان سے شاوہ فرمات ہیں قال رسول اللہ صلی الله علیہ و آلہ وسلم علامات المؤمن ثلاث افاقال صلق افا وعلوفی افا اؤ تمن الدی و علامات المنافق ثلاث افقال کذب افا وعدا خلف و افاأتمن خان "رسول اللہ صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم نے فرمایا مومن کی تین علامات ہیں۔ بات کرے تو تج کرے و تی کرے و تو اسے و عدہ کرے تو نوال دے۔ اور منافق کی بھی تین علامات ہیں ، بات کرے تو جھوٹ ہو و عدہ کرے تو خلاف ورزی کرے اور المات میں خیات کرے "

مين حضرت واثله بن الاسقع رضى الله تعالى عنه (صحابي رسول) كوطا اور ان سے بيه حديث يك عن قال رسول الله صلى الله عليه و آله وسلم لايظن احدكم أنه يتقرب الى الله باقرب من هذه الركعات يعنى الصلوات الخمس "رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم في

بافرب من هده الرفعات یعنی استسورت مسال می است ما می است که ده الله تعالی کی قربت حاصل کرے گا جب تک ده

#### الح تمازيس باتاعدى سے اوا نيس كرے كا۔"

امام ابوطنيف رضى الله تعالى عنه فرماتے بين كه بجھے عائشه بنت مجرد رضى الله تعالى عنها الله عنها الله عليه وسول) كو ملنے كا موقع طا اور ان سے حضور في كريم صلى الله عليه وآله وسلم كى به صديث مباركه عنى سمعت قال رسول الله عليه وآله وسلم يقول أكثر جنود الله في الارض الحراد لا آكله ولا احرمه "رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم نے فرمايا زمين ير الله تعالى كا سبحداد لا آكله ولا احرمه "رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم نے فرمايا زمين ير الله تعالى كا سبحدا الله عليه واله عليه واله وسلم الله عليه واله عليه واله وسلم الله عليه عنه بين الله عليه عليه عنه بين الله عنه بين اله عنه بين الله عنه الله عنه بين الله عنه الله

ہاری تحقیق کے مطابق حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی صحابی رسول حضرت معقل بن بیار رضی اللہ تعالی عنہ سے ملاقات میں تردد ہے۔ حضرت معقل رضی اللہ تعالی عنہ بلاقات روایات حضرت امیر معاویہ رضی اللہ تعالی عنہ کی حکومت کے آخری ایام میں وفات پا گئے۔ حضرت امیر معاویہ رضی اللہ تعالی عنہ ۱۲ ہجری میں فوت ہوئے اس اعتبار سے حضرت امام بلو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کا آپ سے ملتا روایت و درایت کے لحاظ سے ناممکن ہے کیونکہ امام بلو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ تو ۸۰ ہجری میں پیدا ہوئے شے۔ یاد رہے کہ فاضل مرتب علامہ حیدر اللہ عن ورائی مرحوم نے کتاب کے حاشیہ پر وضاحتی نوث لکھا ہے کہ مناقب الکردی رحمتہ اللہ علیہ میں حوا تھا اور محال عبداللہ بن زیاد کے دور حکومت میں ہوا تھا اور ور کام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی عراس وقت چے سال تحی۔ مرحوم امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی عام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی عات خابت ہو جاتی ہے۔ مرحول اس ملاقات اور ساعت حدیث پر تذکرہ نگاروں نے اتفاق و اختلاف کی آراء دی ہیں۔



# امام ابو حنیفه نفتی انتهای کے اساتذہ کرام

تذکرہ نگاروں نے اپنی تحریوں میں امام اعظم ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عدے کے اساتذہ کی مختلف ذریعوں سے تعداد اور اسائے گرامی تصحیح ہیں۔ ہماری تحقیقات کی روشنی میں ان شاگردوں کی تعداد دو مو ( ۲۰۰ ) کے قریب ہے۔ حضرت ابو عبداللہ بن ابی حفص الکبیر رحمتہ اللہ فرماتے ہیں کہ ہمارے زمانے میں ایک اختلاف برپا ہوا۔ یہ اختلاف ایک عرصہ تک حضرت امام اعظم اور حضرت امام شافعی رحمتہ اللہ علیہ کے تلائمہ شافعی رحمتہ اللہ علیہ کے تاکہ دو شاگردوں اور مداموں میں رہا۔ حضرت امام شافعی رحمتہ اللہ علیہ کے تلائمہ اور شاگرد کتے تھے کہ امام شافعی مطفیہ حضرت امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے افضل ہیں۔ ان کے نورو کی تعداد ای ( ۸۰ ) تھی جبکہ دو سری طرف حضرت امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے شاگردوں نے آپ کے اساتذہ کی تعداد چار ہزار بیان کی ہے۔ حضرت امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے علم کے ہر شعبہ اور ہر فن میں عبور حاصل کرنے کے لیئے ہزاروں اللی علم سے استفادہ کیا۔ اساتذہ کی اس عظیم تعداد سے معلوم ہوتا ہے کہ امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ اور عشل میں کس قدر وسیح حلقہ اساتذہ رکھتے تھے۔ آپ کے دو سرے فضائل اور کملات کے علاوہ اساتذہ کی اس تعداد سے پتاچاتا ہے کہ آپ تخصیل علم می میدان میں بھی امام شافعی مطفی سے افضل شے۔

ہم حضرت امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے اساتذہ کی ایک فہرست پیش کر رہے ہیں آکہ آپ کے احوال و مقالت پر تلم اٹھانے والوں کو ایک وشیع علمی میدان مل سکے۔

#### ☆ ..... من اسهه محمد ..... ☆

عبيالله بن شهاب بن زهرة

ابوبكر محمد بن مسلم بن

الزهرى

المرهبي

م ابوعبدالله بين المنكدر من بني تيم بن مرة

ابوعون محمد بن عبدالله بن سعید الثقفی کوفی

ابوبكر محمدبن سوقة بباع البزكوفي

ما ابوالزبير محمدبن مسلمبن تلرس المكي

الكوفة محمدبن زبير التميمي حنظلي بصرى قيل قدم الكوفة

مي ابوسلمة محمد بن عبدالله العرزمي كوفي

المحمدبن عبدالرحمان بن زرارة ملنى

الكوفي محمدبن عبدالرحمن بن ابى ليلى الكوفي

المحمدابن مالكبن زبير الهمداني

٠ محمد بن عمرو عن عبدالله بن عمر من حديث شعيب بن اسحاق

#### ☆......!Yé......☆

ابراهیم بن محمد بن المُتشر بن الاجدع الهمدانی الکوفی و المنتشر اخومسروق بن الاجدع

ابراهيمبن عبدالرحمن ابواسمعيل السكسكي كوفي

ابراهیمبن مسلم ابواسحاق الهجری کوفی

ابراهيمبنميسرةالطائفي قيلمكي

اسمعيل بن ابي خالد مولى بجيلة

ابوعبدالله اسمعیل بن امیه بن عمرو بن سعید بن العاص مدنی مشهور

مكتبهتيويه

₩ سر اسمعيل بن عبدالملك بن ابي الصعير

الم س آدم بن على بكرى من بنى شيبان

ابوبكر ايوببن ابي تميمة السختياني

☆ ... ايوببن عائذالطائي كوفي

₩ ... ابان بن ابى عياش و اسم ابى عياش فيروز ليس عندهم بالمرضى

☆ ... ابوعتبة العبسى حمصى

ابوحكم مؤذن مسجد ابراهيم النخعي كوفي

٠٠ ابان بن لقيط كوفي

☆ ــ ازادابن خسروالبلخي

اليوببن سبة اليمامي قاضي اليمامة

☆ ... اسمعيل بن مسلة المكي

المحاق بن ثابت بن ابراهيم بن المهاجر البجلي الكوفي

#### ☆ ..... الباء ..... ☆

☆ ... بلال بن ابى بلال قال ابن سعيد يقال له النصيبى و قيل انه بلال بن

عن وهب بن كيسان وان كان بلال بن مرداس فقد حدث عن عكرمة و ابى بردة و شهر بن حوشب و زيد بن وهب وغيرهم

منغير حديثابي حنيفة

☆ ـــ بكير بنعطاءالليثي

☆ ... بالالبنوهببن كيسان

☆ ــ زادبن خسروالبلخي

٠٠٠ بهزبن حكيم بن معاوية بن حيدة القشيرى

المجنون. مهلول بن عمر والصير في يعرف بالمجنون.



#### ☆ .... الثاء .... ☆

ابو حمزة ثابت بن دينار البهني

🖈 زادا بن خسرو

ابت البناني البناني

#### ☆....الجيم.....☆

المعبن شدادابو صخرة

پ جواببن عبيالله كوفى تيمى

🖈 .... جابر بن يزيدابوعبداللهالجعفي وكان ابوحنيفة يحرحه

الجراح بن المنهال الجزرى ابوالعطوف

الصادق عفر بن محمد الصادق

#### ☆....الحاء.....☆

🖈 ... الحكمبن عتيبة بو محمد مولى كندة

🖈 ... حبيب بن ابي ثابت ابو يحيى الاسدى كوفى

الحسن بن سعد مولى على ابن ابي طالب

🖈 ... الحسين بن الحر مولى بني الصيدا وهم من بني اسد بن خزيمة

🖈 ... الحارث بن عبدالر حمن الهمداني ابوهند

 = عصين بن عبدالرحمٰن ابو الهذيل السلمي كوفي لهقدر و جلالة

المسلمان الاشعرى واسم ابى سليمان مسلم

الحارثبن يزيدالعكلي لهقدر وهوكوفي

ى حكيمبن صهيب الصيرفي

₩ ... حوطالعبدي

☆ ... حسين بن الحارث ابوالقاسم الجدلي ان صحت روايته تابعي و اختلف فيه فقيل هو معبدبن خالدلجدلي

🖈 ... حكيم ابن جبير مولى بني امية ابوعبدالله قاله احمد بن حنبل و قيل انهاسدي

> ☆ .... الحربن الصباح كوفى روى درثيا اشتهربه ٠ حجاج بن ارطاة ابوارطاة كوفي ان صغ

#### ☆....الخاء.....☆

☆ .... خالدبن علقمة ابوحية الهمداني كوفي ثقة ٠٠٠ خصيف بن عبدالرحمن ابو عون مولى بنى امية زادابن خسرو ☆ ــ خالدبن عبدالاعلى

#### 

☆ ... داودبن عبدالرحمن بن زاذان وقيل انه يزداد كذا ذكره ابن سعيد ☆ .... داودبن نصير بن سليمان الطائي ☆ ... زادا بن خسرو البلخي

## ☆ ..... الذال ..... ☆

الله الماني المماني المماني

**☆.....الراء....** ☆

الكوفي المام وبيعة بن ابي عبدالرحمن ابوعثمان لهقدر وجلالة رباح الكوفي

#### ☆ .... الزاكل .... ☆

ابوالحسين زيدبن على بن الحسين رضى الله عنهم

الله ويادبن علاقة ابومالك كوفي

الماني له قدر الحارث بن عبدالكريم ابو عبدالله الهمداني له قدر

الخطاب المابواسامة مولى عمر بن الخطاب

الكوفي المادين كليب ابومعشر الكوفي

الكوفي المسرة الكوفي

٠ ... زكريا بن ابي زايدة ابويحيي همداني

٠٠٠ زكريا بنالحارثالكوفي

السلملي كوفي

العدين ابي انيسة ابواسامة جليل القدر على صغر سنه

ابى الوليد فى حديث ابى يوسف وانما هو زيد بن ابى انيسة عن ابى الوليد

☆....السين.....☆

المخيرة البكرى كوفي المخيرة البكرى كوفي

السيمان بن خاقان ابواسحاق الشيباني

الله المه بن كميل ابويحيى الحضرمي الكوفي جليل القدر

المين عجلان ابوعمر الافطس حراني

الله سعيدبن مسروق الثوري كوفي

المرزبان ابوسعد المرزبان ابوسعد

٠ سليمان بن ابى المغيرة ابوعبدالله القرشي كوفي

المس سعيدبن ابي عروبة البصرى واسمابي عروبة مهران ☆ ... سفيان بن سعيد الثوري حكى عنه حكاية و يروى سفيان عن ابي حنيفة الضا ☆ ... زاد ابن خسرو البلخي ★ ... سليمان بن مهران ابو محمد الاعمش الكوفي ☆ ... سلمةبننبيط ☆....الشين.....☆ المس شيبان بن عبدالرحمل ابو معاوية التميمي كوفي اصله من البصرة ☆ .... شدادبن عبدالرحمٰن ابو روية البصري ☆ ... شيبة بن مساور و قيل بن مسور بصرى ذكره ابن سعيد

☆ ـــ شعبة بن الحجاج بصرى روى عنه حكاية

☆ ... شبیببن غرقدة ابوعقیل الکوفی زادا بن خسرو

الله شرحبيل بن سعيد

🖈 .... شرحبيل بن مسلم

#### ☆....الصاد.....☆

☆ ... الصلت بن بهرام الكوفي

#### ☆..... الطاء ..... ☆

☆ .... طلحة بن مصرف اليامي من همدان

☆ ... ابوسفيان طلحةبننافع

- ابوسفيان طريف بن سفيان السعدى البصرى

- طلق بن حبيب البصري

#### ☆ .... العين ..... ☆

عيدالله بن حسن بن حسن بن على ابي طالب رضى الله تعالى عنهم

اللهبن ابى نجيح

🖈 عبدالله بن عثمان بن خثيم

ابوعثمان المكي

الله بن ابى حبيبة

المكي عبدالله بن عبدالرحمن بن ابي حسين المكي

الله بن داود

🖈 ــ عبدالله بن ابي المجالدالكوفي

🖈 ... عبدالله بن نافع مولى ابن عمر

المارى كوفى

المعيدالمقبرى لميصححه ابن سعيد

🖈 عبدالله بن عمر العمرى

🖈 .... عبدالله بن المبارك ابوعبدالرحمٰن المروزي روى عنه حكاية عبدالرحمن بن عمر وابوعمر والاوزاعي

المرين حفص ابوعثمان العمرى

المكي عبيداللهبنابيزيادالمكي

🖈 ... عبدالرحمٰن بن عبدالله المسعودي وهو ابن عتبة بن عبدالله أبن مسعود رضى الله تعالى عنهم

الله عبدالرحمان بن شروان ابوقيس الاودى

☆ .... عبدالملك بن عمير ابوعمير اللخمي الكوفي ☆ ... عبدالملك بن ميسرة الزراد الهلالي الكوفي 🖈 ... عبدالملك بن ابي بكر بن حفص بن عمر سعد ☆ ... عبدالملك بن اياس الشيباني الاعور الكوفي المس عبدالعزيز بن رفيع المكى اصله الكوفة ☆ ... عبدالاعلى الكوفي النيمي ☆ ... عبدالكريمبن ابي المخارق ابوامية ★ ... عبيدة بن معتب ابوعبدالكريم الضبى ★ سعلى بن الاقمر ابوالحسن الوادعى الهمداني ☆ .... عطاءبن ابى رباح ابو محمد مولى اسلم ☆ ... عطا بن السائب ابويزيدالثقفي الكوفي البصرى البصرى المطار البصرى ☆ ... عطية بن سعد بن جنادة الجدلي الكوفي ابوالحسن ☆ ... عطبة بن الحارث ابوروق الهمداني الكوفي ☆ ... عمروبن عبداللهبن على بن اسحاق ابواسحاق الهمداني السبيعي ☆ عمروبن مرةابوعبدالله المرادى الجملى ☆ عمروبن دينار ابومحمدالمكي ☆ .... عمروابن شعيب ابوابر اهيم السهمي من اهل الطائف À ... عامر بن شراحيل ابوعمر الشعبي من همدا ن ☆ ... عامر بن السبط التميمي الكوفي م الله بن عبدالله بن قيس ابوبردة بن ابي موسلي ★ .... عثمان بن عاصم ابوحصين الاسدى الكوفى ☆ .... عثمان بن عبدالله بن موهب القرشي الكوفي اصله المدينة

ابوبكر الكوفى مولى بني اسد النجود

الليلي عيسلي بن ابي ليلي

الله عثمان بن عبدالرحمن ذكره ابن سعد

الكوفي عاصمبن كليببن شهاب الجرمي الكوفي

المدائن عاصم بن سليمان ابو عبدالرحمن الاحول قاضي المدائن

المعدى بن ثابت بن دينار وقيل ابن عبيد بن عازب الانصارى اللوفي

ان هج ... عمر بن ذر بن عبدالله ابو ذر الهمداني الكوفي ان هج

مس عمر بنبشير الهمداني الكوفي

الكوفي الكالله بن عبد الكوفي الكوفي

م عون بن عبدالله بن عتبة بن مسعود

🖈 .... عون بن ابی جحبیفة ابوحفص و هووهم ممن روی عکرمة ابوعبدالله مولى ابن عباس رضى الله تعالى عنهما

٠ ١ عتبة بن عبدالله بن عتبة ابوالعباس المسعودي

المسلمي عثمان بن راشد السلمي

المس علقمة بن مر ثدابوالحارث الحضرمي

الله عبدة بن ابى لبابة ابوالقاسم مولى قريش و قيل اسدى

٠ العلاءبنزهير الكوفي وقيل ابن عبداللهبنزهير

ش عمير بن سعيد ابويحيى الكوفى

٠ - عيسلي بن على ابوعلى الصيقل زادا بن خسرو البلخي

الس عمران بن عمير

٠ علىبنبنيمة

الم عبدالله بن رباح

🖈 .... عبدالرحمان بن حزم يروى عن انس رضى الله عند

منافباماماعا

### ☆ .... الغين .... ☆

الله عالب بن هذيل ابوالهذيل الكوفي زادا بن خسرو البلخي الله علان

### ☆ ..... الفاء ..... ☆.

الله مدانى بن يحيى الهمدانى ابويحيى الكوفى الله مدات بن عبدالرحمن القزاز ابوالحسن الكوفى

## ☆ .... القاف .... ☆

### 

### ☆**…**|W|....☆

المحسد ليثبن ابى سليمان ابوبكير الكوفى

## 

الكوفي موسلي بن طلحة بن عبيد الله ابوعيسلي الكوفي

= موسی بن ابی کثیر ابوالصباح الکوفی ان صح - موسلى بن مسلم الكوفى وهو موسلى الصغير - معالبن عمروالاسدى ابويحيى - ما الخليفة ابوقدامة الكوفي = \_ منمال بن الجراح هكذا قاله ابن سعد و قيل الجراح بن المنهال الوالعطوف الجزرى محارب بن دثار البكرى الكوفي - معنبن عبدالرحمن بن عبدالله بن مسعود الهذلي - مسلم بن سالم ابو فروة و قيل ابو فزاوة الجهني الكوفي - مسلم بن كيسان ابوعبدالله الملائ الكوفي الضبي - منصور بن المعتمر ابوعتاب السلمي الكوفي - منصور بن زاذان مولى عبدالرحمن بن ابى عقيل الثقفي واسطى - منصور بن دينار ذكره ابن سعد - مسعر بن كدام ابوسلمة الهلالي الكوفي = \_ ميمون ابوحمزة الاعور الكوفي ميم ون بن مهران الجزري ذكره ابن البصرى - مجالدبن سعيدبن عمير ابو عمير الهمداني الكوفي - مرزوق ابوبكير التيمي الكوفي - مكحول ابو عبدالله الشامي مولى امراة من هذيل المراحمين زفر التيمي الكوفي - مخول بن راشد ابن مخراق الكوفي الكبن الس ابوعبدالله المدنى الاصبحى عــ موسلى بن ابى عائشة ابوالحسن الكوفى زادا بن خسرو البلخى 

☆ ــ معاوية بن اسحاق

### ☆....النون.....☆

الله الفعمولي عبدالله بن عمر

☆ ... نافع بن درهم ابوالهيثم العبدي الكوفي

☆ ... ناصح بن عجلان و قيل ابن عبدالله

☆ .... نعمان ذكره ابن سعد

☆ .... نصر بن طريف البصرى ذكره إن سعد

### ☆....الهاء....☆

☆ .... هيشمبن حبيب الصراف الكوفي

☆ ... هشام بن عروة بن الزبير المنذر الاسدى المدنى

☆ ... هشام بن عائد بن نصيب الاسدى الكوفي ذكره ابن سعد

### ☆....الواو .... ☆

☆ .... واصل بن حبان الاسدى الكوفي

☆ ... واصل بن سليم التميمي الكوفي

☆ .... وقدان وقيل واقدابويعقوب الكوفي

الوليدبن سريع مولى عمروبن حارث المخزوي

☆ ... الوليدبن عبدالله بن جميع الز هرى ذكره ابن سعد

#### 

☆ ... يحيلى بن عبدالله الجابر ابوالحارث النسيمي الكوفي

t ... يحيني بن سعيد الانصارى ابوسعيد المدنى

Mary 4 Styles 25 to 5 to

其地大人是大人

الكلبي الكوفي

المحديدين عابدالكوفي

المالكوفة على بن عبيد الله بن موهب التسيمي القرشي سكن الكوفة

المائي بن عمروبن سلمة الهمدائي

الكوفى

البصرى عثمان الفقير البصرى

٠ يزيدبن عبدالرحمن بن زيدابوخالدالكوفي

الله يزيدبن عبدالرحمن عن انس

🖈 يزيدبن ابي زياد ابوعبدالله الكوفي مولى بني هاشم

المدنى عبداللهبن ابى فروة المدنى

الله يونس بن زهران ذكره ابن سعد

الطائفي عطاءالطائفي

الكوفي المين بن معاذ ابوخلف الزيات الكوفي

### ☆ ..... من يعرف بالكنية ..... ☆

ابوبكر بن عبداللهبن الجمم

=\_ ابوالسوار

=\_ ابوغسان عن الحسن البصرى

- ابوعبدالله

= ابوعمر عن سعيدبن جبير

=\_ ابوخالد

=\_ ابوبكر عن الزهرى

=\_ ابومحمد

## ☆..... من لم يسم ..... ☆

☆ .... رجل عن ابى بكر المكى اهل الحجاز

المنس رجل عن الشعبي

الله رجل عن شريح

🖈 .... رجل عن انس بن مالک

☆ ... رجل عن ابن الحنيفة

☆ ... رجل عطاء

🖈 ... رجل عن الضحاك رضى الله تعالى عنهم

## حفرت امام حماد نفتيانية

حضرت لهام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے ذرکورہ بالا اساتذہ کے علاوہ لهام اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے چند بائد پلیہ اور ممتاز اساتذہ کا تعارف ضروری بجھتے ہیں۔ ان ہیں ایک بزرگ امام ابواساعیل حملو بن ابی سلیمان الاشعری ثم الکونی ہیں۔ آپ نے علم کی تخصیل کے لیئے بے پناہ النزام فرمایا تھا۔ حضرت لهام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے لوگوں نے پوچھا آپ کے اتنے جلیل القدر اور بعثار اساتذہ ہیں مگر سب سے ممتاز اور بلند پلیہ فقیہ کون ہے۔ آپ نے فرمایا عالم اسلام میں امام حملو رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے بڑھ کر کوئی لور بڑا فقیہ نہیں دیکھا۔ ایک اور موقعہ پر آپ نے فرمایا مام المام میں اللہ تعالیٰ عنہ سے بڑھ کر کوئی لور بڑا فقیہ نہیں دیکھا۔ ایک اور موقعہ پر آپ نے فرمایا مام المام میں اللہ تعالیٰ عنہ نہیں دیکھا۔ ایک اور محفر صادق رضی اللہ تعالیٰ عنہ "میں کہ لمام جعفر صادق رضی اللہ تعالیٰ عنہ الل بیت رسول بھی اللہ کی روشنی ہیں ہم یوں کہ کے ہیں کہ لمام جمار محمد تمام عالم اسلام میں مال طاق فقیہ اعظم ہیں۔

حضرت المام الصلت بن بسطام رحمته الله عليه في فرمايا كه المام حماد رضى الله تحالى عنه رمضان مبارک میں بچاس روزہ واروں کو روزانہ روزہ افطار کرایا کرتے تھے اور عیدالفطر کی رات کو مرایک کو نیا جو ڑا سلا کر دیا کرتے تھے اور پھران روزہ داروں کو سوسو دینار دیا کرتے تھے۔

حضرت لهم شافعی رحمته الله علیه فرملیا كرتے تھے ميں امام حماد بن ابي سليمان رضي الله تعالى عدے ولی محبت کرنا مول۔ مجھے ان کی ایک بات یاد ہے اپ آپ ایک دان گدھے پر سوار کمیں جارہے ہے کہ اچانک آپ کی قتیص کا بٹن ٹوٹ گیا۔ راستہ میں ایک درزی کو کام کرتے دیکھا' آپ نے چاہا که سواری سے بنچ از کریش کو درست کرالیں۔ گرورزی نے آپ دیکھ کر کما حضور آپ سواری پر ی تشریف رکیس میں خود وہل بیٹھے بیٹھے آپ کا بٹن درست کر رہا ہوں۔ چنانچہ درزی نے کھڑے تحرّے بٹن درست کر دیا۔ امام حماد رضی اللہ تعالی عنہ نے جیب میں ہاتھ ڈالا سونے کے ویناروں کی بری ہوئی ایک تھیلی تکال کر درزی کو دے دی اور فرمایا اگر میرے پاس اور دینار ہوتے تو تہماری اس وت افزائی پر مزید دے بتا۔

حضرت حماد رضی اللہ تعالی عنہ کے بے شار مناقب ہیں انہیں بیان کرنے کے لیئے ایک بدی كلب لكسى جا سكتى ہے اس كيتے ہم مخفر كريں۔ لام ابوطنيفه رضى الله تعالى عنه آپ ك شاكرو ر ان کے نضائل علمیہ کی بہت بری دلیل ہے۔ میں نے اپنے دیوان میں امام ابو حقیقہ رمنی اللہ تعالی عنہ کے متعلق کما ہے۔

كفى النعمان فخرا مارواه من الاخبار عن غرر الصحابه المتبوع الانام غدوت بحرا لعلمك والعدى امسوا حبابه اصدر التابعين قبلت مهنم نيابتهم فاحسنت النيابة (جه) " حضرت نعمان رضی الله تعالی عنه کے لیئے ان کی روایات کا فخری کافی ہے۔ وہ روایات ی انسوں نے صحابہ کرام اور اشراف زمانہ سے بیان کی ہیں۔ آپ تمام تابعین کے سرتاج ہیں۔ تمام مسین نے آپ کی نیابت اور لامت قبول کی ہے اور سے نیابت کتنی قلل فخرہے۔ اے لام ابو منیغہ!

يب چمارم

# حضرت امام اعظم التي كي فقه پر ابتدا كي نظر

حضرت المام زور بن النديل رحمته الله عليه فرمات بين كه مجه نهام أبو حنيفه رضي الله تعالى عنه نے تایا کہ میں علم الکلام پر اتن وقیق نگاہ رکھتا تھا کہ اہل علم میری طرف اشارے کیا کرتے تھے۔ ہم اللہ ان ونوں حضرت حماد بن الی سلیمان رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے حلقہ درس کے قریب رہا کرتے تے۔ ایک دن ایک عورت میرے پاس آئی اور بوچھنے گلی کہ ایک مخص کی بیوی کنیزے وہ اے ے کے مطابق طلاق دیا چاہتا ہے اس حکیا کرنا چاہیے؟ میں نے اے اس عورت کو حضرت حماد رضی الله تعالى عنه كي خدمت مي بهيجا اور اے كماكه حضرت حماد رضى الله تعالى عنه جو جواب ويس مجھے ے کر جانا۔ اس عورت نے حضرت حماد رضی اللہ تعالی عنہ سے وہی مسئلہ دریافت کیا تو حضرت حماد رشی الله تعالی عند نے فرمایا وہ اس کنیر کو حیض و جماع سے فراغت کے بعد والے طمر میں ایک طلاق ے اور اس سے بالکل علیمدہ رہے یماں تک کہ اس عورت کے دو حیض گذر جائیں۔ دوسرے سے کے اختام پر وہ کنیر عسل کرے اور جس سے جاہے تکاح کرے۔ اس ساکلہ عورت نے حضرت الم ابو عنیف رضی اللہ تعالی عنه کو سارا مسئلہ بیان کیا تو حضرت امام مالیجہ فرماتے ہیں کہ اس دن کے معد مجھے علم الفقد کی ضرورت کا احساس ہوا۔ میں اس وقت اٹھا جوتے پہن کر حضرت حماد رضی اللہ تعلی عند کے علقہ تدریس میں حاضر ہو گیا۔ ایک عرصہ تک آپ کی خدمت میں رہ کردینی مسائل کو المات غورے سنتا رہا۔ میں آپ کی مفتلو اکثر یاد کر لیا کرنا تھا۔ مجھے ان کے اسباق مکمل طور پر حفظ موجاتے تھے۔ آپ کے تلاقمہ (شاگرو) اپنی اپنی مجالس میں جب کوئی مسئلہ بیان کرتے تو میں ان کی تعلیوں کی نشاند میں کرتا۔ استاد کرامی حضرت حماد رضی اللہ تعالی عند ممیری محنت اور لگن کو دمکیر کر اللاكه ميرے طقه ورس ميں ميرے سامنے صف اول ميں ابوطنيفه ضرور بيشاكرے- ميں في اس

مكتبة تبريه

طرح ذندگی کا ایک حصہ صرف کیا اور صبح و شام اس دریائے علم سے سراب ہو تا رہا۔

هيشم بن عدى الطائى رحمته الله عليه كمت بين كه من في امام ابو عنيفه رضى الله تعالى عنه س یو چھا کہ دنیا میں کئی علوم اور فنون موجود ہیں مر آپ نے صرف علم فقہ کو ہی کیوں ترجیح دی اور اس میں کیوں کمل حاصل کیا اور آپ کو یہ کیے معلوم ہوا کہ علم فقہ تمام دوسرے علوم سے اعلیٰ اور ضروری ہے۔ تو آپ نے جواب ویا کہ میری بدتمام کوششیں قوت الی سے ہیں اور میں اپنے اللہ کا مشكر اوا كرما مول- حقيقت بيب كه ابتداء مين من في تمام علوم كو ابنا نصب العين بنايا اور حتى الامكان برايك ير عبور حاصل بحى كيا، پر برشعبه علوم ك انجام ير نكاه والى اور اس ك فوائد ديكه-میں نے علم الکلام کو پڑھ کر اس کے متائج پر خور کیا تو جھے اس کا انجام اچھا دکھائی نہ دیا اور اس کی افاديت نمايت محدود عمى ، جو مخص اس فن ميس كمال حاصل كراية بهوه پرمناظرانه مودكافيول ميس الجما رہتا ہے اور علم فقہ اور دین کے اصل مطالب کی طرف توجہ نہیں دیتا اور بول محسوس مو تلميكوه نفسانی خواہشات کا پایند ہو گیا ہے۔ میں علم الكلام كو چھوڑ كراوب و نحو كى طرف متوجه ہوا كر مجھے اس کا انجام بھی ورست نظرنہ آیا۔ بس صرف اتن بات تھی کہ طالب علموں میں بیٹے کر عربی حدف کی تراش ساخت پر مختلو كرنا رمول كا اور بس چنانچه بين علم و ادب كو چموژ كرعلم شعر كي طرف آيا اور اس پر کمال حاصل کرے محسوس کیا کہ اس سے کسی کی مدح یا بچو کے علاوہ کچھ حاصل نہیں ہو یک اس جو و محذیب سے دین کے فکڑے فکڑے کی باتیں کرنے کے سوا کچھ فائدہ نہیں۔ ایک وقت آیا کہ میں نے علم القراق کی طرف توجہ دی میں نے ویکھا کہ اب نوجوانوں کا ایک طقہ میرے اردگر جمع موكر خوش الحانى سے قرآن مجيد يرجے لگا ب اور من صرف قرآن پاك كے الفاظ كو نمايت خوش الحاني ے اوا کرنے میں معروف ہو گیا۔ قرآن مجید کے الفاظ فصاحت و بلاغت کی عمدہ مثل ہیں۔ پھر قرآن پاک کے معانی ایک بحر تابیدا کنار ہیں۔ اب مجھے خیال آیا کہ مجھے علم صدیث براحنا جائے میں نے و یکھا احادیث کا ایک بے بناہ ذخیرہ موجود ہے۔ محدثین اے یاد کرتے ہیں اور یہ ایک سمندر ہے جے بلاب كرناكى كے بس كاكام فيس اور اس كى كوئى حد نيس ب- علم حديث كے حاصل كرنے والے بھی وہ نوجوان علاء موں کے مجھی مجھے ضعیف اور موضوع احادیث کا الزام لگائیں کے اور مجھی حافظ کی کمزوری کا طعنہ دیں مے اور میری بیان کردہ احادیث اور روایات پر تاقیامت بحث و تحیص کا سلسلہ

جاری رہے گا۔

آثر کار میرے دل نے کما کہ علم فقہ سب سے بھترین علم ہے ' میں اس کے حصول پر وف ایسا وُٹا کہ اس فن کی جلالت شان نے میرے دل پر اثر کیا جول جول اس کا تصور میرے سائے آتا اس پر بحث و تحیص کرآ' تفصیلا " تفکلو کر آلہ علاء ' مشائخ ' فقہا اور ارباب بصیرت کی علی شست و برخاست کا موقعہ ملا ہے تو مکارم افلاق کے فرزانے کھلتے جاتے ۔ میں نے سے انجام پر فور کیا تو میں اس نتیج پر پہنچا کہ فرائفن کی اوائیگی ' اقامت دین اور عبادت گذاری کی سے تعد نقہ کی معرفت کے بغیر دیں، و و نیا کے تمام امور بیکار ہیں۔ سے فقہ کی معرفت کے بغیر دیں، و و نیا کے تمام امور بیکار ہیں۔ سانچہ میں نے فقہ کی معرفت کے بغیر دیں، و و نیا کے تمام امور بیکار ہیں۔ سانچہ میں نے فقہ کی معرفت کے بغیر دیں، و و نیا کے تمام امور بیکار ہیں۔ سانچہ میں نے فقہ کی معرفت کے لیئے زندگی وقف کر دی۔

حضرت الم ابویوسف رضی اللہ تعالی عند نے مندرجہ بالا واقعہ کی تقدیق و تفصیل بیان کے بعد فرایا کہ ان علوم کی مخصیل کے علاوہ حضرت الم ابوحفیفہ رضی اللہ تعالی عند نے وقت کے بلتہ پایہ مشاکخ 'علاء اور فقما کی مجالس سے برا استفادہ کیا تھلہ پھراس زمانہ بیس کسی گھر 'کسی محطے اور استماک کے شریس کوئی دینی مسئلہ در پیش ہوتا تو ان حضرات کی وساطت سے آپ کو سنخ ' سجھنے اور پیش موقعہ ملکہ اگر آپ کو مسئلہ کا جواب آ تا تو بیان کرتے ورنہ ان حضرات سے مشورہ کرتے اور اگر اس طرح آپ کو اطمینان ہو جا تا تو مسئلہ کا جواب دیتے تھے۔ یہ مخلوق فدا کی علمی راہنمائی کے لیئے ایک نمایت ہی عمرہ طریقہ تھا جس سے اللہ بھی راضی ہوتا ہے اور مخلوق بھی مطمئن ہوتی ہے۔ اس سے دین و وزیا کی راحت ملتی ہے اور اللہ کے فضل سے رفعت و شان میں بھی اضافہ ہوتا ہے۔ ان مسائل کو سمجھ لینے کے بعد ہر مخص علیحہ گی میں جا کر بھی ممنون ہوتا کہ اسے دینی راہنمائی

حضرت لام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ فرماتے ہیں کہ مجھے اپ استاد کرم حضرت الم عماد رضی اللہ تعالی عنہ کی صحبت میں رہنے کا جتنا موقعہ ملا کسی دو سرے کو نصیب نہیں ہوا تھا۔ میں ان سے بڑی کثرت سے سوالات کرتا اور وہ بھی نمایت شفقت سے مفصل جوابات سے نوازتے۔ کئی بار تو ایل ہوتا کہ وہ میری اس کاوش سے نگ آجاتے اور فرماتے ابو صنیفہ تم اجازت دو تو چھ لھے آدام کر اللہ تو میرا سید نگ ہونے لگا ہے۔

قبیصه بن عقبہ فراتے ہیں کہ ابتدائی دور ش امام ابو طنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ علائے ظاہر میں سے مسائل فقہ میں بدی بحث کیا کرنے تھے یمال تک کہ اس فن میں کمال عاصل کر لیا۔ لوگوں کے سامنے کوئی مسئلہ آیا تو ہر فض آپ کی طرف اشارہ کرتا۔ پھر ایک وقت ایما آیا کہ آپ نے بحث و تحیص میں الجمنا چھوڑ دیا اور صرف حدیث و فقہ پر مختلو فرماتے حتی کہ وہ اس فن میں امام وقت ہو گئے۔

## حضرت امام شعبی مایلیه سے ملاقات

لام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ فرات ہیں کہ ایک ون مجھے اپ زمانہ کے جید عالم دین امام شعبی رحمتہ اللہ علیہ سے طاقات کا موقعہ طا' آپ نے پوچھا بیٹے کیا کام کرتے ہو؟ میں نے عرض کی حضور بازار میں کاروبار کرتا ہوں اور استاو حضرت حماد رضی اللہ تعالی عنہ کی مجالس میں حاضر ہو کر علمی مسائل سمجھنے کی کوشش کرتا ہوں۔ آپ نے فرمایا میرا مشورہ ہے کہ آپ بازار کا کاروبار چھوڑ کر صرف علمی جبتو میں وقت دیں کیونکہ مجھے آپ کے اندر جبتو کا ایک سمندر موجزن دُکھائی دیتا ہے اور بمترین سلیقہ نظر آتا ہے۔ لام شعبی ملائے کے اس ارشاد نے مجھے برا متاثر کیا' میں نے بازار آتا جاتا چھوڑ دیا اور کاروبار ترک کرکے علم کے حصول کے لیئے وقت دینے لگا۔ مجھے علماء کرام کی مجالیس نے برا قائدہ دیا۔

### مناظرے اور مباحث

حضرت لهم ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ فرماتے ہیں کہ مجھے علم کلام میں مفتکو کرنے کے بوے مواقع کے اور اس مختل میں مجھے کافی وقت صرف کرنے کا موقعہ طا۔ میں اکثر اپنے مقابل کی تلاش میں رہتا اور مجھے اس سلسلہ میں کی جمم کی گھراہٹ نہیں ہوتی تھی' بلکہ مجھے ایسے مباحث میں بردی دلچیں ہوتی اور کوئی موقعہ ملیا تو میں اسے ہاتھ سے نہ جانے رہتا۔ میں نے ساکہ ایسے اٹل علم کا ایک طبقہ بھرو میں موجود ہے جو دبنی مسائل میں مباحثہ کے لیئے تیار ہے۔ مجھے مباحثوں میں شرکت کا شوق بھرو میں موجود ہے جو دبنی مسائل میں مباحثہ کے لیئے تیار ہے۔ مجھے مباحثوں میں شرکت کا شوق بھرو لے گیا دہاں ان ونوں خارجی لوگ اسلامی مسائل پر بحث کیا کرتے تنے اور عام مسلمانوں کو

ان مسائل میں الجھا کر پریشان کیا کرتے تھے۔ ان خارجیوں نے اباضیہ ' صفریہ اور مشویہ جیسے طبقے قائم کر رکھے تھے۔ مجھے ان حلقوں میں مباحثہ کرنے کا بحربور موقعہ ملا اور میں انہیں میدان میں فکست سے دوچار کر دیتا۔

امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے بھرہ کے علماء اور مختلف طبقوں سے مباحثہ کرنے بر روشنی ڈالتے ہوئے مزید بنایا کہ مجھے علم الكلام پر عبور حاصل تھا، میں اسے افضل العلوم تصور كرما تھا اور میری زندگی کا ایک حصہ ای میں گزرا تھا۔ میرے زدیک فقہ کے بعد علم الکلام اصول دین کی ایک اہم شاخ تھی پھر مجھے خیال آیا کہ حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ والد وسلم صحابہ کرام رضوان الله عليه اجمعين اور دوسرے متقرين الل علم و فضل حتى كه تابعين من علم و فضل تحا- وه وين ك ہر معاملے کو جانتے تھے۔ وہ تمام علوم کی قونوں کے مالک تھے۔ وہ حقائق کے عارف تھے کیل بایں الله و فضل انہوں نے مباحث اور مناظرے نہیں کیئے تھے۔ وہ نہ جھڑے کرتے تھے نہ علمی موشكافيوں سے دو سرول كو قائل كرتے تھے۔ وہ علم كلام سے اسے مخالف كو ديانے كى كوشش نہيں كت شف وه لوكول كو صرف دين سكهات شف علم بانت تنف الله اور رسول الايام كى طرف وعوت ہے تھے۔ اگر ان کا کوئی جھڑا یا اختلاف ہو تا تو وہ اس علم کے زورے نہیں عمل اور تقویٰ کی روشنی ے حل کرتے تھے۔ ان کا جھڑا بس تفہم و تعلیم تک محدود ہوتا تھا۔ ان کا مناظرہ صرف واوت حق تک محدود ہو آ' ان سے کوئی فتوی پوچھا تو وہ صرف اور صرف دین اور علم دین تک بات كتے تھے۔ حضور ماليظ كا زمانه كزرا صدر اول كا دور كزرا اسحاب ميں علم و فضل كے آفتاب و ستاب تھے۔ مجھی مناظرہ اور مباحثہ نہیں کرتے تھے۔ تابعین کا دور آیا' برے برے ارباب علم موجود تے گران کا زمانہ صرف تغییم اور وعوت کا زمانہ تھا۔ میرے دل میں خیال آیا کہ مجھے بھی مناظموہ ساحتہ اور مباہلہ چھوڑ کر ان اسلاف کے نقش قدم پر چلنا چاہیے اور علم فقہ پر غور و خوض کرنا ے ۔ علم كلام صرف علم دين كى تشريح اور وضاحت تك استعال ميں آنا چاہيے "صحابہ كرام اور سین نے دین کی اشاعت کے لیئے زندگیل وقف کر دیں مجھے بھی وہی کام کرنا چاہیے جو انہوں کیا۔ ال معرفت كى مجالس ميں حاضرى وے كروين كى باتيں جمع كرنا جائيس اور علم كى بات آئے تو علم وين ع رائي چاهيي

میں نے علم کلام کے ماہرین کو غور سے دیکھا' ان لوگوں کو گرائی سے دیکھا تو جھے ان میں وہ اوصاف نظرنہ آئے جو صحابہ کرام یا تابعین میں پائے جاتے تھے۔ میں دیکھا ہوں کے علم کلام کے ماہرین قلبی طور پر سخت سے سخت تر ہیں اور ذہنی طور پر اپنے مدمقائل کو زچ کرنے کے در پے رہتے ہیں۔ دو سمرے لفظوں میں میں نے محسوس کیا کہ ان حضرات کے دل و دماغ کتاب و سنت اور طریقہ اسلاف سے ہمنوا نہیں ہیں۔ ان میں تقویٰ اور ورع کی کمی ہے۔ میں اس نتیج پر پنچا کہ اگر علم کلام میں کوئی بہتری یا بھلائی ہوتی تو اسے صدر اول کے صحابہ اور تابعین ضرور اپناتے۔ چنانچہ میں نے علم میں کوئی بہتری یا بھلائی ہوتی تو اسے صدر اول کے صحابہ اور تابعین ضرور اپناتے۔ چنانچہ میں نے علم الکلام کا سہارا لینا چھوڑ دیا اور صرف اور صرف علم دین اور فقہ کو ابنا لیا۔

## تتین خواتتین کا کردار

حفرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ فرماتے ہیں کہ میری زندگی میں نیک خاتون نے مجھے سے وھوکا کیا و مری خاتون نے مجھے زہد و تقوی سکھایا تیمری خاتون نے مجھے علم فقہ حاصل کرنے کی ترغیب وی۔ پہلی خاتون کا واقعہ ہے ہے کہ میں ایک ون کوفہ کے بازار سے گزر رہا تھا میں نے ایک نوجوان مخص کو دیکھا جو زبان کی بجائے اشاروں سے باتیں کر رہا تھا۔ مجھے محسوس ہوا کہ وہ گوتگا ہے میں اس کے نزدیک گیا تو معلوم ہوا کہ وہ مرد نہیں بلکہ عورت ہے۔ اس نے مجھے اشارہ سے بنایا کہ اس کی کوئی چیز راستہ میں گرگئ ہے وہ اس کی ہو کہ اس کے خود وصول کرے گا۔ اس وی کوئی چیز راستہ میں گرگئ ہے وہ اس کی ہو اس کے خود وصول کرے گا۔ اسے دینی اصطلاح میں "لفظہ "کے جین اور بیچزاب لقط تھی اور لقط کا بی تھم ہے۔

جس خاتون نے مجھے زہد و تقویٰ کی ترغیب دی اس کا واقعہ یہ ہے کہ ایک ون میں گلی سے گرر رہا تھا' بہت سی عور تیں کھڑی تھیں' ان میں سے ایک نے کہا کہ دیکھو ابو حنیفہ جارہے ہیں جو عشاء کے وضو سے صبح کی نماز اوا کرتے ہیں۔ ساری رات اللہ تعالیٰ کی عباوت میں گزارتے ہیں' مجھے حیرت ہوئی مگر میں نے دو سمرے روز سے ہی ان خواتین کے نیک مگان کو سچا ٹابت کرنے کے لیئے شب بھر عباوت میں گزارنی شروع کر دی اور عشاء کے وضو سے صبح کی نماز اوا کرنے لگا۔

تیسری خاتون جس نے مجھے فقہ کی تعلیم کی طرف راغب کیا وہ کوفیہ کی ایک ایسی خاتون تھی

جس نے مجھ سے حیض کے متعلق دینی مسئلہ دریافت کیا۔ میں اس کا جواب نہ دے سکا شرمسار ہوا ' اس دن سے میں نے علم فقہ کی تعلیم حاصل کرنا شروع کردی۔

## علم فقه کی تعلیم و تدریس

الم ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی زندگی میں اس قتم کا ایک اور واقعہ پیش آیا ایک خاتون مصرت الم ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے پاس آئی اور ایک مسئلہ دریافت کیا گرنہ الم اور نہ آپ کے ساتھی اسے تعلی بخش جواب دے سکے۔ وہ خاتون حصرت حماد رضی اللہ تعالی عنہ کی خدمت میں عاصر ہوئی اور ان سے مسئلہ بے چھا آپ نے نمایت اعلی جواب دیا اور خاتون مطمئن ہو کر بتا گئی کہ صحرت حماد رضی اللہ تعالی عنہ نے اس مسئلہ کا جل یوں فرمایا ہے۔ اس دن حضرت الم ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے حضرت حماد رضی اللہ تعالی عنہ نے اپنی مصروفیت کی بناء پر فرمایا مجھے منظور ہے گر و خواست کی۔ حضرت حماد رضی اللہ تعالی عنہ نے اپنی مصروفیت کی بناء پر فرمایا مجھے منظور ہے گر و خواست کی۔ حضرت حماد رضی اللہ تعالی عنہ نے اپنی مصروفیت کی بناء پر فرمایا مجھے منظور ہے گر و خواست کی۔ حضرت آیا کہ آپ حضرت عماد رضی اللہ تعالی عنہ نے یہ سلسلہ شروع کر دیا اور ایک وقت آیا کہ آپ حضرت عماد رضی اللہ تعالی عنہ کے کامل فقیہ بن کر ابحرے۔

## الم ابوحنيفه نفظ النهاء الين استادكي نظرمين

امام جماد رضی اللہ تعالی عنہ فرماتے ہیں کہ ابوطنیفہ کی عادت تھی کہ محفل میں آتے تو نمایت علموش بیٹھتے۔ بوے وقار اور آداب محفل کو ملحوظ رکھتے ہوئے بیٹھتے۔ ہم ان کی نشست و برخاست و برخاست کو بھی علمی تربیت کا ایک حصہ تصور کرتے تھے۔ وہ آہتہ آہتہ دقیق سوالات کرنے گئے۔ بعض وقات بھی ان کے حل کرنے میں وقت محسوس ہوتی اور مجھے خوف آنے لگا کہ اگر ان کے مستخدارات کا تعلی بخش جواب نہ ملا تو وہ مایوس نہ ہو جا ئیس اور ایک وقت ایسا آیا کہ سارے کوفے کے لوگوں میں ان کی شاخت ایک فقیہ کی حیثیت سے ہونے گئی۔ وہ بوے ذہین اور سرایع الفہم علم سے محموس میں ان کی شاخت ایک عقریب ایک وقت آنے والا ہے کہ عالم اسلام کے اہل علم و فضل سے مستخداران علم سے استفادہ کرنے آنے لگیں گے اور مجھے محسوس ہوا کہ فعمان ایک ایسا آفاب

ہے جو بطن کیتی کی تاریکیوں کو چیرتا ہوا کائنات کو روش کرے گا۔

ام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کوفہ میں پیدا ہوئے اور اسی شہر میں کلام میں کمال حاصل کیا۔ آپ اس علم میں شخصگو کرتے اور لوگوں کو لاجواب کر دیتے۔ ایک دن آپ کے سامنے ایلاکا مسئلہ پیش ہوا' آپ نے اپنے ساتھیوں سے پوچھا ایلاکیا ہو آ ہے۔ آپ کے تمام رفقاء نے بھی لاعلمی کا اظہار کیا۔ آپ نے دل میں خیال کیا کہ افسوس جس علم کی ہمیں ضرورت ہے ہم اس سے کتنے کے خبر ہیں۔ ہم دو سرے علوم پر غبور حاصل کرنے میں مصروف ہیں جن کا کسی کو کوئی فائدہ نہیں۔ آپ اس دن حضرت جماد رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی مجلس میں شریک ہوئے اور ان کے ذیر تربیت رہ کر فقہ میں کمال حاصل کیا۔

ایک ویماتی نے حضرت اہام اعظم رضی اللہ تعالیٰ سے ایک مسئلہ دریافت کیا جس سے آپ نے معذرت کر دی اس دن آپ کو اس قدر ندامت ہوئی کہ میں علم کلام میں مشاق ہونے کے باوجود ایک دیماتی کو دین کا مسئلہ نہیں بتا سکا۔ آپ اس دن سے علم کلام کا حلقہ چھوڑ کر حضرت حماد رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی خدمت میں بہنچ اور تھوڑ ہی عرصہ میں فقہ میں واقفیت حاصل کرلی۔

تعیم بن عرو روایت بین کہ مجھے الم ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے بتایا کہ میں تجابی بن ابوسف جیسے ظالم حکمران کے زمانہ اقدار میں نوجوان تھا اور کوفہ کے بازار میں کپڑے کا کاروبار کیا کرتا تھا۔ مگر جہال موقعہ ملتا میں لوگوں ہے دینی مسائل پر گفتگو کر لیتا۔ ایک دن میرے پاس ایک ایسا شخص آیا جس نے فرائفن (ورافت) کا ایک مسئلہ پوچھا مگر بچھ ہے اس کا جواب نہ بن پڑا۔ اس شخص نے مجھے خاموش دکھے کر کہا کہ تم تو لوگوں ہے مناظرہ کرتے ہو' مباحثہ کرتے ہو اور بال کی کھال اللہ بعد ہو مگر ایک عام ہے مسئلہ پر خاموشی افتیار کر رہے ہو۔ اس شخص کی بات ہے مجھے سخت شرمندگی ہوئی' میں فقہ کی تحصیل کے لیئے فکا 'مجھے کوفہ میں سب سے پہلے ایک عالم دین عامر الشعبی ملے' میں ان کی مجلس میں بنچا مگر وہ اس وقت بہت بوڑھے ہو چکے تھے۔ سراور داڑھی خصاب ہے رکھین کرکے جوائی کے ایام کو آواز دینے کی ناکام کوشش کھتے تھے۔ سرخ رنگ داڑھی خصاب ہے رکھین کرکے جوائی کے ایام کو آواز دینے کی ناکام کوشش کھتے تھے۔ سرخ رنگ کا ایک نفیس کمیل اوڑھے ہوئے تھے اور چند دوستوں کے ساتھ شطرنج کھیل رہے تھے۔ میں نے کا ایک نفیس کمیل اوڑھے ہوئے تھے اور چند دوستوں کے ساتھ شطرنج کھیل رہے تھے۔ میں نے آپ سے ایک مسئلہ دریافت کیا تو فرمائے گئے یہ مسئلہ بنو استمالین تھم بن عقیمین جاد بن ابی سیلمان

ا على بيں۔ ميں خاموش رہا۔ پھر بولے بيٹا و كھو معصيت كى كوئى نذر نہيں اور نہ اس كا كفارہ ہے۔ میں نے عرض کی .... کہ اللہ تعالی تو اپنے کلام میں وانھم یقولون منکراً من القول وزورا (یارہ ۲۸ سورہ المجادلہ ۲) " وہ جھوٹ اور بری بات کرتے ہیں اس کے باوجود اللہ تعالی نے كاره مقرر كيا ب- انهول نے مجھ جھڑكا اور كماكه " قياس "كرتا ب اٹھ جا يمال سے ميں معروف ہوں۔ امام ابوصنیفہ رضی الله تحالی عنہ فرماتے ہیں کہ اس کے بعد میں اٹھ کر چلا آیا اور قمادہ کے پاس پہنچا وہ اس وقت تقدر کے مسلہ پر گفتگو فرما رہے تھے، مجھے ان کی باتوں میں لطف نہ آیا۔ وبل سے اٹھ کر جاہر بن عبداللہ انصاری رضی اللہ تعالی عند کے شاگرد سیدنا حضرت ابوالزبیر وافعے کی خدمت میں حاضر ہوا میں نے ان سے چند سوالات کیئے لیکن وہ مجھے مطمئن نہ کر سکے اور مجھے بول محسوس ہوا کہ ان کی زبان ان کے قابو میں نہیں۔ میں وہاں سے بھی اٹھا اور سیدھا حماد بن سلیمان رضی الله تعالی عنه کی خدمت میں حاضر ہوا وہ وقت کے شخ ہیں ' بے بناہ عقل و خرو کے مالک ہیں ' وصلے سے بات سنتے ہیں اور اس کا نمایت باو قار طریقے پر جواب دیتے ہیں۔ وہ افہام و تفہیم کے الداز کو بہت اچھی طرح جانتے ہیں۔ ان کی محفل میں میرا دل لگ گیا اور پچھ ہی عرصہ میں مجھے جس کی ك تفتكي تھي ان سے مل كيا۔ ايك دن فرمانے لكے ابوصيفہ تونے تو ميرا تمام پاني في ليا ہے۔

بعض تذكرہ نگاروں نے اس جملے كو سعيد بن المسيب سے منسوب كيا ہے۔ انہوں نے اپنے شاگرد سے كما تھا انز فنندى يا اعمى! "اب اندھ تو نے تو ميرا سارا بانى يي ليا ہے۔" دراصل الله نے حضرت سعيد بن المسيب سے تمام علم حاصل كر ليا تھا اور ايك ايك بات حفظ كرلى تھى۔ محصے امام ابو حذیفہ رضى الله تعالى عنہ كے متعلق چند اشعار پیش كرنے كى اجازت دیں۔

حتى اعتلى منها ذرى الاطواد قد راح فى الاغوار و الانجاد محمود فطنته الى حماد حقا برغم معا طس الحساد هنت مصاعد هاقوى الصعاد فى عصره تبديد رجل جراد وسما ذراه مرتع الرواد فهداهم و لكل قوم هاد

نعمان قد سبر العلوم باسرها ثم انثنی منها الی الفقه الذی وهداه لمالج فی طلب الهدی ثم انبری من بعده یفتی الوری لقد ارتقی من فقهه فی قلة اعصار دولته مبدد کل من فغد انداه مکرع الوراد فرق الضلال عدوا الیه مطیهم

باب پنجم

# فتو کی نویسی اور مدر کیبی فرائض کا آغاز

ابو عسمہ ریائی فرماتے ہیں کہ حضرت حماد بن ابی سلیمان رضی اللہ تعالی عنہ کا انتقال ہوا تو آپ کے خلافہ نے منفق اور کر امام ابو حقیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو اپنے استاد محترم کی مشد پر بیٹھنے کی النجا کی۔ آپ نے فرمایا مجھے یہ کام اس شرط پر منظور ہے کہ اگر آپ میں سے کم از کم وس حضرات میرے ساتھ رہیں گے۔ ان شاگردوں نے آپ کی اس شرط کو قبول کر لیا تو آپ مسند فقہ پر تشریف فرا ہوئے۔ ان حضرات میں ابواسحاتی شیبانی ریائید نے آپ کا بورا بورا ساتھ دیا۔

## حضرت امام ابوحنيفه نفت الله كاليك حيران كن خواب

آپ نے ایک رات خواب میں دیکھا کہ وہ سید الانبیاء صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم کے روضہ الدس کو کھود رہے ہیں اور آپ کے جم پاک کی ہڈیال علیحدہ کرکے اپنے سینے ہے لگا رہے ہیں۔ حضرت محمد بن سیرین پرلیٹے اس زمانہ میں سب سے بڑے مجمز تھے۔ آپ نے فرمایا کہ صاحب خواب حضور صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم کی احادیث اور سنن کو عوام تک پہنجائے گا اور ان احادیث کو تعقیق و سختس کے بعد مسلمانوں میں پھیلائے گا۔ اس خواب کی تعبیر کی صحت اس طرح عملی طور پر سامت آئی کہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے سارے عالم اسلام کو احادیث نبوی لرائیل کے محادف سے آگاہ فرمایا اور فقہ کے علوم سے ونیائے اسلام کو مالامال کر دیا۔

اہل مرو کے امام یکی بن نفر رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ میں نے امام ابوجنیفہ رضی اللہ علی عنہ سے سنا ہے وہ فرماتے ہیں کہ میں دن کا دو تمائی حصہ اپنے شاگردوں کی تعلیم و تربیت میں صرف کر دیا کرتا تھا اور میرا میہ معمول ایک لمبے عرصہ تک رہا۔ ایک دن مجھے خواب میں یوں محسوس

ہوا کہ میں نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ و آلہ و ملم کی قبر مبارک کھود کر آپ کی ہڑیاں نکا لی ہیں ' پھر انہیں جو ڈ جو ڈ کر جع کر رہا ہوں۔ میں اس خواب سے بہت گھبرایا۔ میرے لیئے یہ بات نمایت گراں متھی۔ صبح اٹھا تو اس پریشانی کے عالم میں میں نے تدریس و تعلیم کا سلسلہ بند کر دیا۔ میں نے ایک محرم راز دوست سے رات کے خواب کی بات کی 'وہ اس وقت کے مجر حضرت محمد بن سیرین مولید کے پاس کیا اور اس نے سازی صور تحال کو بیان کر کے خواب کی تجیر کے لیئے استدعا کی۔ انہوں نے خواب کی بمترین تجیر بیان کی جس سے میرا حوصلہ بحال ہوا اور میں دوبارہ شاگردوں کو تعلیم و تدریس دیے گا۔ تب میرے دل و دماغ سے بوجھ اتر گیا۔

کی بن نصر مالیح نے عرض کی کہ اس خواب کی تعبیر کون بنائے گا؟ آپ تو خود بے پناہ علوم کے واقف ہیں 'خود تعبیر نکال لیں۔ آپ نے فرمایا اگرچہ میں خود تعبیر جھنے پر قاور تھا گر مجھے خیال آیا کہ اگر کوئی صاحب علم اس کی تعبیر بیان کرے گا تو میرے دل کو زیادہ اطمینان نصیب ہوگا۔ الحمد لللہ علامہ محمد ابن سیرین میلیجہ نے بھی بھی تعبیر نکال کہ صاحب خواب صاحب علم و فضل ہیں اور وہ اصادیث رسول مالیجہ کی تشریح و اشاعت میں اہم کردار اداکریں گے۔

### كتاب الصلواة كا آغاز

کتاب السلواۃ جے ارباب علم نے ''کتاب العروی '' کے نام سے بھی بیان کیا ہے' ہیں لکھا ہے کہ حضرت لیام ابوحنیفہ رضی اللہ تحالی عنہ نے درس و تدریس کا سلسلہ ختم کر دیا اور اپنے گھر ہیں گوشہ نشیں ہو گئے۔ آپ کے احباب آپ کے پاس آئے اور کئے گئے آپ خود بڑے صاحب علم و فضل ہیں' اپنے خواب کی تجبیر اپنے منہ سے بیان کریں۔ گر حضرت لیام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ خاموش رہے۔ ان احباب نے خود ہی بتایا ان دنوں حضرت محمد ابن سیرین مرافید خوابوں کی تعبیر بیان کرنے میں ماہر ہیں۔ آپ نے ایک دوست کو ان کے پاس بھیجا اور خواب کی تعبیر طلب کی۔ امام ابن سیرین مرافید نے بتایا خواب دیکھنے والا مخص سنت نبوی صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم کو زندہ کرے گا۔ حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ اٹھے اور اس مخص کے ساتھ لیام ابن سیرین رضی اللہ تعالی عنہ اٹھے اور اس مخص کے ساتھ لیام ابن سیرین روائید نے آپ کو عنہ کے پاس گئے تا کہ خواب کی تعبیر اپنے کانوں سے سنیں۔ حضرت ابن سیرین مرافید نے آپ کو عنہ کے پاس گئے تا کہ خواب کی تعبیر اپنے کانوں سے سنیں۔ حضرت ابن سیرین مرافید نے آپ کو عنہ کے پاس گئے تا کہ خواب کی تعبیر اپنے کانوں سے سنیں۔ حضرت ابن سیرین مرافید نے آپ کو تعبیر اپنے کانوں سے سنیں۔ حضرت ابن سیرین مرافید نے آپ کو تا کہ خواب کی تعبیر اپنے کانوں سے سنیں۔ حضرت ابن سیرین مرافید نے آپ کو تا کہ خواب کی تعبیر اپنے کانوں سے سنیں۔ حضرت ابن سیرین مرافید نے آپ کو تا کہ خواب کی تعبیر اپنے کانوں سے سنیں۔ حضرت ابن سیرین مرافید نے آپ کو تاب کی تعبیر اپنے کانوں سے سنیں۔ حضرت ابن سیرین مرافید نے آپ کو تاب کو تا

بشارت دی اظهار مسرت فرمایا اور خواب کی تعبیر تفصیل سے بیان کی- دوسرے دن امام ابوحنیف رضی الله تعالی عند تدریس و تعلیم بین زباره مشغول مو گئے-

حضرت ابو مقائل رحمته الله عليه نے فرمايا كه حضرت امام ابو حنيفه رضى الله تعالى عنه في فقه م سب سے پہلے " کتاب العلواة " کا آغاز فرمایا تھا اور اس کا نام " کتاب العروس " رکھا۔ مر پھھ عرصہ کے بعد انہوں نے پڑھانا جھوڑ ویا' اس کی وجہ آپ کا وہ پریشان کن خواب تھا جس کی تعبیر وریافت کرنے کے بعد آپ نے دوبارہ تدریس کا سلسلہ شروع کر دیا۔ صاحب کتاب علامہ امام ابن الموفق واليجه فرماتے بیں کہ بد واقعہ عبدالغزیز نے بھی بیان کیا تھا۔ آپ ترفد اور اصفهان کے امام تھے اور امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے تلافرہ میں سے ہیں۔ یہ آپ کے نامور شاگرد تھے اب نے انے استاد امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ پر کئی کتابیں لکھیں۔ ان کی حفاظت کی ان کی اشاعت کی اور علوم فقہ کو خراساں میں پھیلایا۔ آپ فرماتے ہیں کہ میں نے امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے ا كه آپ نے فرمایا ایك وقت تھا كه میں ورس و تدريس سے گھراتا تھا حتى كه ميس نے ایك ون قواب میں دیکھا کہ میں نبی کریم صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم کی قبر مبارک کھود رہا ہوں مرایاں علیحمہ معلماء كرربا موں ' كيرانيس جمع كر رہا موں۔ خواب سے اٹھا تو ميں بہت تھبرايا ہوا تھا۔ اس تھبراہث اور ريشاني مين مجھے کچھ نميں سوجھتا تھا اور اللہ تعالى سے دعاكرتا يا اللہ سد كيا واقعہ ب ايك عام مسلمان کی قبر کھوونا بھی بری حیرت انگیز بات ہے چہ جائیکہ نبی پاک صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم کی قبر مبارک ے یہ سلوک میں گوشہ نشین ہو گیا اور گھر میں قید ہو گیا۔ یہ خیال میرے ول پر چھا گیا حتی کہ سے چند احباب آئے اور مجھے کہنے لگے ظاہری حالت میں آپ تندرست و کھائی دیتے ہیں مگرب و شینی اور یہ قطع تعلقات کی کیا وجہ ہے۔ میں نے اپنا خواب بیان کیا اور وہ حضرت ابن سیرین ا کے پاس کئے مگر علامہ ابن سرین روافیہ نے کہا آپ کو ایسا خواب نہیں آسکتا جے خواب آیا ہے ا بلا كر ميرے پاس لاكس - چنانچه ميس خود امام ابن ميرين ماينيد كى خدمت ميس حاضر موا تو انهول ے تعبرے آگاہ کیا اور فرمایا اگر یہ خواب تمہارا نے حتم عنقریب سنت رسول ما<del>ن</del>ا پیم کو اس انداز سے تعد كرد كے كد آج تك كى نے نبيل كيا اور تهاري ان خدمات سے سارا عالم مستفيض ہوگا۔ مجھے المنان ہو گیا اور میں دو سرے دن اینے شاگردوں کو پڑھانے لگا۔

## استاد کی مند کاحق ادا کر دیا

ابویزید آذربا تبجانی رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ میں نے ابوالولید سے سنا کہ جب ہماوین ابی سلیمان رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا انتقال ہوا تو آپ کے سارے تلاخہ نے حضرت ہماد کے بیٹے سے استدعا کی کہ آپ اپنے والد گرامی کی مند پر تشریف لا ئیں گر انہوں نے توجہ نہ دی۔ تلافہ سے موسیٰ بن ابی کثیر کو مند تدریس پر بٹھا دیا لیکن وہ بھی چند دنوں بعد دستبردار ہو گئے وہ فقہی مسائل کے حل کرنے میں کرور تھے۔ ہاں وہ اپنے مشائخ اور اساتذہ سے ملاقات کرتے اور علمی استفادہ کرنے میں پیش پیش رہتے۔ اچانک وہ جج کے سفر پر روانہ ہوئے تو اس مند پر حضرت امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو بیٹے کا موقع ملا۔ لوگوں کو جس قدر آپ کے انداز تعلیم سے اطمینان ملا اور تسلی و تشفی تعالیٰ عنہ کو درس میں آنے گئے۔ آپ ہر موضوع پر بات کرتے اور سائلین کو مطمئن کرتے۔ موسیٰ بن ابی کشرجے سے واپس آئے گر لوگوں کا عظیم اجتماع امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے درس میں ویکھا۔ آپ کے طفہ تدریس میں نہ صرف اہل کوفہ بلکہ عالم اسلام کے دو سرے شہوں سے بھی متلاشیان علم آنے گئے اور آپ مختمرے عرصہ میں "ائے مہ المام کے دو سرے شہوں سے بھی متلاشیان علم آنے گئے اور آپ مختمرے عرصہ میں "ائے مہ المام کے دو سرے شہوں سے بھی متلاشیان علم آنے گئے اور آپ مختمرے عرصہ میں "ائے مہ المام کے دو سرے شہوں سے بھی متلاشیان علم آنے گئے اور آپ مختمرے عرصہ میں "ائے مہ المام کے دو سرے شہوں ہوئے۔

### حضرت امام ابو حنيف نفت المنابئة ك ابتدائى تلانده

حماد بن مسلم فرماتے ہیں کہ ابراہیم بن نخعی کی وفات کے بعد کوفہ کے مفتیان اور فقیمان کو جس شخص پر اعتماد تھا وہ جماد بن سلیمان رضی اللہ تحالی عنہ تھے۔ ان کی موجودگی ہیں لوگ مسائل شرعیہ کے متعلق بڑے مطمئن تھے۔ ان کی وفات ہوئی تو اہل علم و فضل متفکر تھے کہ اس مسلا کو کون سنبھالے گا بلکہ آپ کے بعض تلافہ کو تو یہ خدشہ ہونے لگا کہ کمیں یہ مسند ختم ہی نہ ہو جائے اور آپ کا نام لینے والا کوئی نہ ہو۔ حضرت حماد رضی اللہ تحالی عنہ کے ایک صاجزادہ تھے وہ عالم و فاضل تھے لوگوں نے انہیں منتخب کیا۔ آپ کے پاس حضرت حماد رضی اللہ تعالی عنہ کے مشہور مثارد ابوبردہ ضبی اور محمد بن جابر حنفی وغیرہ حاضر ہوئے اور والد گرامی کی مند

سے لئے کے لیئے اصرار کیا۔ ان پر علم نحو اور علم کلام العرب کا غلبہ تھا اس لیئے انہیں والد کی مند پر سے کا حوصلہ نہ ہوا۔ پھر ان کے شاگردوں کی نگاہیں ابو بکر نہشلی پر پڑمیں مگر انہوں نے صاف انکار ر والعروه كو كما انهول نے بھى انكار كر ديا۔ اب امام ابو حقيقه رضى الله تعالى عندكى خدمت سے گذارش کی گئی آپ نے مالی بھرلی اور فرمایا میں نہیں چاہتا کہ علم مث جائے اور ہم و مکھتے رہ و س- چنانچہ آپ اپنے استاد مرم کی مند پر بیٹھے اہل علم کا ایک برا طقہ جمع ہونے لگا۔ اپنے معرین کے علاوہ قاضی ابویوسف اسد بن عمرو اسم بن معن و فربن الهذيل اور وليد جيسے بے شار ال كوفد نے امام اعظم سے فقد كى تعليم حاصل كى- حفرت امام ابو حنيفه رضى الله تعالى عند نے است الروول کے لیئے علم و فضل کے دروازے کھول دیئے محبت و شفقت کے دامن پھیلا دیمے احسان و کرم کی مثالیں قائم کر دیں اور اینے شاگرووں کو اس طرح زبور علم سے آراستہ کیا کہ میہ لوگ معتبل میں آسان علم و فضل کے آفاب و مهتاب بن کر چیکتے رہے۔ اس زمانہ میں کوف کے علاء میں کے ایسا طبقہ بھی موجود تھا جو حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے مخالف تھا جن میں ابن شربہ 'شریک اور سفیان جیسے بااثر علماء تھے۔ یہ لوگ آپ کی مخالفت کرتے ' آپ کے عیوب نکالتے' تروریوں کی تلاش میں رہتے۔ گر آہستہ آہستہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی محنت اور علمی متعداد نے سارے کوفیہ کو متاثر کرلیا۔ اب نہ صرف علاء تھم اور اللہ اس وقت کے امراء ' وسا امیرو غریب مختاج و غنی سب حضرت کے مداح نظر آنے لگے۔

## الم ابو حنيفه نفت المنابئة كي قابليت كاشهره

حضرت واوو طائی رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ کوفہ میں حضرت حماد بن ابی سلیمان رحمتہ اللہ علیہ صف اول کے نقیہ اور عالم دین تھے۔ آپ کی وفات کے بعد آپ کے صاجزادہ اساعیل کو کی مند پر بعضایا گیا۔ وہ اس عظیم کام سے عمدہ برا نہ ہو سکے۔ ان پر علم آبری علم شعراور سعم کا غلبہ تھا اور وہ اس مند کا حق اوا نہ سکے۔ پھر آپ کے ایک وو قائل شاگردوں کو بھی اس مند کا حق اوا نہ ہوئے۔ آخر کار ابوحمین عبیب ابن عابم و حضرت جماد رضی سے بیا گیا گر لوگ مطمئن نہ ہوئے۔ آخر کار ابوحمین عبیب ابن عابم و من اللہ تعالی عنہ کو آمادہ کیا سے تعالی عنہ کو آمادہ کیا

کہ وہ اپنے استاد کے سلسلہ تعلیم و تدریس کو جاری رکھیں۔ حصرت امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ فوجوان ہے علمی اعتبار سے بلند مرتبہ اور دولت مند بھی تھے۔ آپ کے کاروبار میں اتنی وسعت تھی کہ ہزاروں مساکین اور غرباء آپ سے امداد لیتے تھے۔ آپ کی سخاوت نے سارے کوفہ کو اپنا گرویدہ بنالیا تھا۔ آپ احباب کے اصرار پر استاد کی مند پر بیٹھے 'تھوڑے ہی عرصہ میں آپ نے حق اوا کر دیا۔ اوگ دور دور سے حلقہ درس میں جمع ہونے لگے۔ دکام و امراء بھی آپ کے معرف ہو گئے اور ہر سکتہ میں آپ کی خدمت میں آنے گئے۔ آپ کی علمی شرت نے سارے عالم اسلام کو متاثر کر دیا۔

ایک وقت آیا کہ کوفہ اور بھرہ کے جید علائے کرام بھی آپ کے طقہ تدریس میں آنے گئے۔ قاصی ابویوسف اسد بن عمرو قاسم بن معن ابوبکر ہنی اور ولید بن ابان جیسے اہل علم آپ کے شاگرد ہے۔ ان لوگوں نے حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے علمی کمالات کو سارے عالم اسلام میں پھیلایا اس کے باوجود کوفہ میں علماء کا ایک الیا طبقہ بھی موجود تھا جو حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی مخالفت کرتا الزام تراشی کرتا لوگوں میں غلط خیالات کا اظہار کرتا ان میں ابن ابی لیا ابن شرمہ امام سفیان توری اور قاضی شریک جیسے بڑے بڑے بڑے علماء بھی تھے ان علماء کے علمی اور علموہ ان حضرات کے ذیراثر بے شار لوگ آپ کی مخالفت پر تیار رہتے۔ بایں ہمہ آپ اپنے علمی اور دینی مقاصد کی شخیل کے لیئے سرگرم عمل رہتے۔ آپ کے شاگردوں کی تعداد بڑھتی گئی آپ کا علمی طقہ سارے کونے میں زیادہ وسیع تھا حق کہ کہ علمات بھرہ مھر بغداد اور تمام کے تمام آپ کے درس سفادہ کرنے آتے۔

آپ ہر سائل کو جواب نمایت حوصلے اور اعتاد سے دیتے اور وسیع النظری کا مظاہرہ فرماتے۔

بعض غریب علماء اور کمزور اہل علم آپ سے علمی مسائل کے ساتھ ساتھ مالی عطیات بھی پاتے۔ آپ

ایخ ہم مسلک امراء اور رؤسا کو تحاکف دیتے۔ اس طرح آپ کی علمی روشنیاں علماء کرام کے علقے

سے نکل کر امراء اور وزراء کے ایوانوں کو درخشاں کرنے لگیں۔ آپ کو سادات سے بڑی محبت تھی

اور ان خاندانوں کو مالی ایداد بہم پنچاتے۔ آپ ہر مشکل وقت میں نمایت ثابت قدمی سے کھڑے

ہوتے۔ آپ کے ان ذاتی اوصاف کی وجہ سے ہر مجلس میں آپ کی تعریف اور توصیف ہوتی۔ آپ

ہوتے۔ آپ کے ان ذاتی اوصاف کی وجہ سے ہر مجلس میں آپ کی تعریف اور توصیف ہوتی۔ آپ

م تسیم فرائے کم علموں کو تھوڑے عرصہ میں ایبا آراستہ کرتے کہ انہیں اپنے آپ پر پورا اعتماد اور وہ اپنے شہرول میں جاکران اسباق کو لوگوں کے سامنے دہراتے تو لوگ عش عش کر اشخت۔ عصادی عدمانوں کے سامنے آپ کو غیبی ایداد آتی اور آپ نمایت مطمئن ہو کر اپنا کام جاری

امام الائمہ ابو بکر ذرنجری مطابعہ ان حالات پر روشنی ڈالتے ہوئے فرماتے ہیں کہ حضرت امام الدیم اللہ تعالی عنہ کے تلافہ (شاگردوں) میں ولید' حسن بن زیاد' داؤدطائی' بوسف بن خالد سمتی' ذکریا بن ابی زائدہ' بجی بن ذکریا' نوح بن ابی مریم' عبداللہ س مبارک' مغیرہ بن حمزہ اور مجم اللہ تعالی علیم جیسے حضرات نے دنیائے علم میں روشنایاں پھیلا دیں۔ آپ کے شاگردوں میں چالیس علماء کرام ایسے تھے جو صاحب تصانیف ہوئے اور ان کی فقمی تایفات نے ایک علم کو متاثر کیا۔ میرا قصیدہ امام اعظم رضی اللہ تعالی عنہ کی عظمت اور شان میں ملاحظہ فرما کیں ۔

والقضايا و حاتمى البنان صحب استاذه قروم الزمان ماثناه من العدى قط ثانى مالنعمان فى الخليفة ثانى اترى الزج نال فضل السنان بقطوع الطلى الصقيل اليمانى لم تقعقع لعقله بالشنان فاطعموا من خوان هذى المعانى ان نعمان حیدری الفتاوی اسندته الی وساد الفتاوی ثم ارخی عنانه فی الفتاوی مثله قد طلبت جهلا فمهلا قد تمنی الثری علاء الثریا لاتشبه عصاک ان کنت شهما صاد بالعقل معضلات الفتاوی قد جلا للوری خوان المعانی نخلة الفقه قد ابرت اجتهادا ففتاواک قد حلت کالمشان الکلوا من مشان فقهک لکن سرقاً بالنهار کالور شان ان سفیان قد اتاک عشاء ساترا راسه بمسح الهوان قد علمنا ولیمة الذئب عشیاً فضلة اللیث من صبود سمان

## حرت سفیان توری راینی کی مجلس میں امام ابوحنیفه دین المام کا تذ کره

ایک فخص حضرت سفیان توری را شید رحمته الله علیه کی محفل میں آیا وہ مروجه علوم کا ماہر ت اس نے امام سفیان توری ریائیہ سے پوچھا آپ حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی برگوئی کیں کرتے ہیں ؟ آپ نے پوچھا وہ کیے ؟ اس نے کہا میں نے سا ہے وہ ہربات نمایت تحقیق صحت اور انصاف سے کرتے ہیں۔ وہ فرماتے ہیں کہ میں ہر مسئلہ کتاب اللہ سے بیان کرتا ہوں۔ اس میں نہ لے تو سنت رسول الله ملی یا ہوں اس میں نہ ہو تو صحابہ کرام کے اقوال و اعمال سے لیتا ر اگر صحابہ کے اتوال و افعال میں اختلاف ہو تو ترجی بھی تعنی ، توال کو چھوڑ دیتا ہوں بعض کو الله كرايتا مول- جهال جمهور صحابه كى رائع مو قبول كرتا مون عمال ايك صحابي كا قول مواس جهور سی ویتا ہوں۔ میں صحابہ کے اعمال و اقوال پر کسی دوسرے کی رائے کو ترجیح نہیں دیتا مثلاً ابراہیم تعبی صن ابن سیرین سعید بن مسب اور دو سرے جلیل القدر تابعی علاء کے اقوال کو صحابہ ك اقوال ك سامنے وزن نہيں ديتا۔ ( كاب ميں كئي تابعين كے اسائے كرامي لكھے گئے ہيں ) ان وركول نے اجتماد كيا ہے ميں نے بھى ايسے مسائل ميں اجتماد كيا ہے اور يد ميراحق ہے۔ يد بات س آر حضرت سفیان توری رایئیہ تھوڑی وریے کیئے خاموش رہے پھر فرمایا ( آپ کے بیہ کلمات حاضرین مس نے کھ لیئے ہیں ) ہم حدیث کی شادت س کر خوفردہ ہوتے ہیں اور لوگول کی بداعمالیوں پر سرزنش كرتے ہيں' زندوں كا محاسبه كرتے ہيں' مرنے والوں كے ليئے مغفرت كى وعاكرتے ہيں' ان كى تس سنتے ہیں 'جو قابل قبول ہول مان لیتے ہیں 'جن اموریر ہم آگاہ ضیں ہوتے علماء کرام کے سپرد کر ہے ہیں۔ ہم اپنی رائے کو متم کر کتے ہیں لیکن علاء اسلام کو متم نہیں کر کتے۔

## الهم الوحنيفه نفتح الملاعبة اور شحقيق احاديث

حسن بن صالح رحمته الله عليه فرماتے ہيں كه امام ابوعنيفه رضى الله تعالى عنه احاديث كے ناسخ الله عليه ورحمته الله عليه فرماتے ہو مسوخ كے متعلق بردى تحقيق و جبتو اور جدوجمد فرمايا كرتے تھے۔ اس حديث پر عمل فرماتے جو مسوخ عابت نه ہو اور صحيح سند سے رسول الله صلى الله عليه و آله وسلم سے مروى ہو۔ اس

مثاقب امام اعظم محتبه نبوية

کے اور صحابہ کی روایات کو بھی نمایت صحت اور سند سے قبول فرماتے تھے۔ آپ کو اہل کوفہ کے علاء کرام و علوم احادیث و فقہ کا علم تھا۔ آپ شمر کے فقیہ اور عالم حضرات کے عمل کی پیروی کرتے تھے۔ فرمایا کرتے تھے کلام اللہ میں نائخ آیات بھی ہیں اور منسوخ بھی ۔ ایسے ہی احادیث میں نائخ بھی ہیں اور منسوخ بھی۔ ایسے ہی احادیث میں نائخ بھی ہیں اور منسوخ بھی۔ آپ کو حضور صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم کے وصال کے قریب زمانہ کی احادیث اور روایات کا برواعلم تھا۔ آپ اپنی ہی روایات اور احادیث پر عمل کرتے تھے۔

عبدالرزاق (مولف صند عبدالرزاق) فرماتے ہیں کہ میں معمر کے ہاں بیضا تھا ان کے پاس ابن مبارک روائی اللہ تعالی عند سے بڑھ کر ابن مبارک روائی اللہ تعالی عند سے بڑھ کر کوئی ایسا عالم دین نہیں و یکھا جو فقد میں گفتگو کرتا ہو اور آن کے قیاس کے مقابلہ میں تمام علاء کے قیاس بے وزن ہیں۔ ابن مبارک روائیے ن کر خاموشی اختیار کی اور اس بات سے انکار نہیں کیا۔

## فقهی مسائل پرایک بحث

محر بن حسن رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ قیاسات پر امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ خوب بحث فرمایا کرتے تھے۔ اپنے شاگردوں کو قیاس کی وجوہات تفصیل سے بتاتے تھے۔ جو تلافہہ آپ کے قیاس کو پیند فرماتے' اس پر عمل کرتے۔ جن باتوں سے اختلاف کرتے آپ ان پر مزید شخیق فرماتے حتی کہ جب سب تلافہ مطمئن ہو جاتے' اتفاق کر لیتے تو پھر اس بات پر عمل کی اجازت ہوتی۔ جس مسئلہ پر اتفاق نہ ہوتا اسے چھوڑ دیا جاتا۔ ایک ایک مسئلہ پر گھنٹوں گفتگو ہوتی۔ حضرت عبداللہ ابن مبارک رضی اللہ تعالیٰ عنہ بوچھا گیا کہ ایک فقیہ کو کس وقت اجازت ہے کہ وہ فتویٰ دے یا فیصلہ مبارک رضی اللہ تعالیٰ عنہ بوچھا گیا کہ ایک فقیہ کو کس وقت اجازت ہے کہ وہ فتویٰ دے یا فیصلہ مبارک رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی تحقیقات اور اقوال کو جانیا ہو پھر فتویٰ دینے کمل عبور حاصل ہو پھر امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی تحقیقات اور اقوال کو جانیا ہو پھر فتویٰ دینے کا الل ہے۔

## الم ابوحنيفه نفي النام؟ كي خراسان مين شرت

حضرت ابن مبارک فرماتے رافیر ہیں کہ جن دنوں محمد بن واسع رافیر خراسان میں تشریف

ے استفادہ کرد۔ اس اعلان پر برے لوگ جمع ہوئے اوگوں نے آپ سے فقہ پر مختلو کی ما تلی اس استفادہ کرد۔ اس اعلان پر برے لوگ جمع ہوئے اوگوں نے آپ سے فقہ پر مختلو کی ما تلی اوجوان ماہر ہے جس کا نام انعمان اور کنیت میں ایک نوجوان ماہر ہے جس کا نام انعمان اور کنیت میں میں فقہ میں ایک نوجوان ماہر ہے جس کا نام البوجنیفہ رضی اللہ میں عنہ کا یہ پہلا تعارف تھا۔ لوگوں نے پوچھاکہ وہ فقہ میں ماہر ہے کیا وہ احادیث تبوی سے ناواقف میں عنہ کا یہ پہلا تعارف تھا۔ لوگوں نے پوچھاکہ وہ فقہ میں ماہر ہے کیا وہ احادیث تبوی سے ناواقف سے آپ نے ہو؟ وہ تو علم حدیث میں کمال رکھتا ہے۔ لوگوں نے پوچھاکیا وہ خشک محدول کو ترکجوروں (پرانی کجور کے بدلے میں آزہ کجور) کے عوض بیچنے کو جائز سجھتا ہے۔ این محدول نے فرمایا جائ اوگوں نے کہا یہ تو سعید بن مسیب براٹیے کی روابیت حدیث کے خلاف ہے۔ این محدول نوابی جی اور ان کی دوایت تو حروک سمجھی جاتی ہے۔ اب فرما ہے جو شخص احادیث کی ان جزئیات تک نظر رکھتا ہو وہ محدیث سے بہ خبر ہو سکتا ہے۔ اب فرما ہے جو شخص احادیث کی ان جزئیات تک نظر رکھتا ہو وہ محدیث سے بے خبر ہو سکتا ہے۔

## الم ابو حنيفه نفع المنابئة كي احاديث بر مهارت

اسد بن عرفر حمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرماتے تھے کہ جب حمیں ایس بات کہوں جے میں صدیث میں نہیں پا سکا تو اس کی تلاش کرو۔ انشاء اللہ وہ کی حت میں ضرور ملے گی۔ ایک ون آپ نے فرمایا کہ ایک مخص نے قتم کھائی کہ میں تمین ماہ تک ہوری ہے جماع نہیں کروں گا یہ '' ایلا '' نہیں ہو گا جب تک وہ عکمل چار ماہ کی قتم نہ کھائے۔ یہ کرتے ہوئے امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے کوئی صدیث بیان نہیں کی اس کے باوجود فرمایا میں کی صدیث بیان نہیں کی اس کے باوجود فرمایا میں کی صدیث تلاش کرو۔ ایک عرصہ گذر گیا آیک ون سعید بن ابی عروبہ تشریف لائے اس زمانہ میں کی عادت تھی کہ ہر طرح کے علماء کرام سے طبح جلتے رہتے تھے۔ انہیں علمائے کرام کے مان کی عادت تھی کہ ہر طرح کے علماء کرام سے طبح بات صدیث سائی گئی ہے' انہیں سے کے ذریعہ یہ صدیث سائی گئی ہے' انہیں سے کے ذریعہ یہ صدیث بینی کی حضرت ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنہائے فرمایا کہ جس نے قتم کے ذریعہ یہ صدیث بینی کے قریت نہیں کرے گالیکن اس نے چار ماہ بورے نہ کیئے تو یہ "

ایلا "کرنے والا نہ ہو گا۔ آپ کی یہ بات س کر ہم امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی خدمت میں حاضر ہوئے۔ ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنماکی حدیث سائی' آپ بڑے خوش ہوئے۔ ہم نے پوچھا آپ نے اس روامیت کے سننے سے پہلے اس مسئلہ کو کس طرح سمجھ لیا تھا۔ آپ نے فرمایا۔ کتاب اللہ ہے۔

الله تعالی نے قرمایا که للذین یؤلون من نسائهم اربعة اشهر (سورة البقره ۲۲۹) "جو فتم کھا بیٹھے ہیں کہ وہ اپنی عورتوں کے پاس بھار ماہ نہیں جائیں گے۔" میں نے گوارا نہ کیا کہ چاز ماہ کی مسلت کے مقابلہ میں اپنی رائے سے تین ماہ کی قسم پر "ایلا" کا فیصلہ کر دوں۔

## سیدناصدیق اکبر نفت الله سے امام ابوحنیف مالید کی مماثلت

امام الائمہ ابوجنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی زندگی بھرکوشش رہی کہ وہ سیدنا صدیق اکبر رضی اللہ تعالی عنہ کے نقش قدم پر زندگی بسرکریں۔ آپ کے اقوال' افعال' خصائل پر حتی الامکان پابندی کرتے کیونکہ سیدنا صدیق اکبر رضی اللہ تعالی عنہ افضل السحابہ تھے۔ حضور صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم سے قریت اس لیئے تھی کہ وہ مزاج شناس عادات رسول اللہ ماڑی شخص ان سے بردھ کر تمام صحابہ کرام میں عالم' واقف' متقی' پربیزگار' عبادت گزار' سخی' جواد اور جائٹار کوئی نہ تھا۔ حضرت ابو بر صدیق رضی اللہ تعالی عنہ مکہ میں دکانداری کرتے تھے۔ کیڑے کا کاروبار تھا۔ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ مکہ میں دکانداری کرتے تھے۔ کیڑے کا کاروبار بھی کیا۔ اس طرح حضرت تعالی عنہ کی زندگی میں شامل کرلیا۔ صدیق اکبر رضی اللہ تعالی عنہ کی زندگی کا ایک ایک لیے آپ نے اپنی زندگی میں شامل کرلیا۔

## حضرت المام ابوحنيفه نص المعلمة كالحاديث رسول الله ماليدم عشق

یکی بن آدم رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ قرآن مجید کی طرح احادیث میں بھی نائخ و منسوخ ہے۔ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ ابل بلعری تمام احادیث کو جمع کر کے ان روایات پر عمل کرتے تھے جو آپ کی زندگی کے آخری ایام میں زیر عمل تھیں۔ آپ احادیث کے مقابلہ میں قیاس کو شیں ۔ اللہ تھے۔ امام لین الموفق مالیج (مصنف کتاب) فرماتے ہیں کہ یہ حدیث پہلے حسن بن صالح ہے ۔ اللہ اللہ فق مالیج (مصنف کتاب) فرماتے ہیں کہ یہ حدیث پہلے حسن بن صالح ہے۔ الرق ہو ہے۔ ہیں نے اس کا اعادہ کی بن آدم میلیجہ کی وجہ سے کیا ہے اس لینے کہ آپ کا شار عراق اللہ فقما و محد شین میں موتا ہے۔ ابو بکر عیاش میلیجہ کے بعد کوفہ میں آپ کو حدیث پاک کا سب برا عالم سمجھا جاتا ہے۔ اور پھریہ بھی فرمایا کہ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی مخالفت کرنے اور طعن و تشنیج کرنے والوں کا یہ اعتراض غلط ہے کہ وہ قیاس کے مقابلہ میں احادیث ترک کر معلمے۔ یہ ان پر مراسر بہتان ہے اس لیئے کہ آپ کی اور آپ کے تلافہہ کی تصافیف' ان کے معالیہ میں جب آپ نے احادیث کے تعالیٰ ہیں جب آپ نے احادیث کے معالیٰ ہیں کہ سینکلوں ایسے فیطے ہیں جب آپ نے احادیث کے معالیٰ اور فتبی ناز کو از معن و کوئی ابھیت نہیں دی۔ نماز میں ققہہ سے وضو ٹوٹ جاتا ہے' حدث کے بعد نماز کو از معن اور اکرنا' سارا کر کے بیٹھ جانے سے وضو ٹوٹ جاتا' دوزہ میں بھول کر کھانے سے روزہ باقی رہنا' معارا کر کے بیٹھ جانے سے وضو ٹوٹ باتا' دوزہ میں بھول کر کھانے سے روزہ باقی رہنا' سارا کر کے بیٹھ جانے ہیں جہاں قیاس کی بجائے آپ نے احادیث پر عمل کیا۔ حضرت امام سے کی دوایت پر بہنچنے سے پہلے قیاس پر ہاتھ کی دیت انگیوں کے منافع پر مخصر ہے اس لیک آپ سے ماک کیا گیا کی دوایت پر بہنچنے سے بیا کہ اس ماک کا منے کا حکم فرماتے' لیکن جب نبی کریم صلی میں انگی سے دالہ وسلم کی بہ حدیث بہنی کریم صلی میں انگیوں کی بجائے انگوشے اور خنصر کا ایک بی حدیث بہنی کہ الا بہام والخنصر سمواء انگوشے اور خنصر کا ایک بی حدیث بہنی کریم صلی میں ہے تو آپ نے قابل ترک کرویا اور حدیث کے احکام پر عمل کیا۔

ای طرح امام ابو حنیفہ ویلیے نے حضرت ابو بکر صدیق رضی اللہ تعالی عنہ کی افتدا میں ایک ویا کہ ناک کی دیت بہ نبیت کانوں کے زیادہ ہے۔ قیاس کیا کہ کانوں کو عمامہ سے چھپایا جا سکتا ہے لیکن ناک کو نہیں چھپایا جاسکتا۔ لیکن رسول کریم صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم کا بیہ فرمان سامنے آیا کہ حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم نے ناک اور کان کی دیت کا ایک ہی تھم دیا ہے تو امام سے سنید رضی اللہ تعالی عنہ نے اپنا قیاس ترک کرے عمل بالحدیث کا فیصلہ کیا۔

علی بن عاصم ویلید فرماتے ہیں کہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ ابتداء میں عطاء ویلید کے اس بن علی بر فتولی ویا کرتے تھے کہ حیض کی مت بندرہ دن ہے مگر جب آپ کے سامنے حضرت انس بن اللہ تعالیٰ عنہ کی روایت آئی کہ حیض کی مدت تین دن سے دس دن تک ہے باتی ایام میں مرخون آئے تو استحاضہ ہے تو آپ نے سابقہ فتولی سے رجوع کر لیا اور اپنا قیاس ترک کر دیا۔

خلف الاحمر ما الله فرماتے بین که میرے معتمد علیه امام ابوطنیفه رضی الله تعالی عنه بین آپ

عید کے نوافل نہیں پڑھا کرتے تھے اور نہ بعد از عید نوافل اوا کرتے۔ میں نے ایک دن اراوہ کیا کہ
پوچھوں آپ نوافل کیوں نہیں پڑھے، میں نے عرض کیا بچھے آپ پر بے حد اعتاد ہے آپ نے عید
کی نماز سے پہلے اور بعد میں بھی نوافل اوا نہیں کئے تھے لیکن آج آپ پڑھ رہے ہیں ؟ آپ نے
فرملیا کہ اب مجھے حضرت علی کرم اللہ وجہدے صحیح روایت ملی ہے کہ آپ عید کی نماز کے بعد چار
نوافل اوا کیا کرتے تھے۔

محمد بن شجاع رحمتہ اللہ علیہ نے اپنی تصانیف میں ستر ہزار سے پچھ اوپر احادیث نبویہ جمع کی تخصیں ' پھروہ آثار بیان کیئے بتھے جس پر صحابہ کرام عمل کیا کرتے تتھے۔ حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے ان سے چالیس ہزار الی احادیث کا انتخاب کیا جن کی صحت پر آپ کو پوری شحقیق تھی۔

### امام ابوحنيفه نضيفاتها كالسخسان

مخالفین عام طور پر حفرت امام ابو صنیفه رضی الله تعالی عنه پر اعتراض کرتے ہیں که آپ "استحسان" پر عمل کرتے ہیں کا شریعت میں کوئی ثبوت نہیں۔ ان لوگوں کو شاید علم نہیں که حضور نبی کریم صلی الله علیه و آله و سلم خود "استحسان" فرمایا کرتے تھے اور یہ بات الله اور رسول سے محتری کریم میں ہے۔ الله علیہ و آله و سلم خود " استحسان" فرمایا کرتے تھے اور یہ بات الله اور رسول سے خابت سے الله علی الله علی کر ان پر عمل خابت سے بہتر ہے۔ "

صدیث شریف میں "استحمان" کی یوں اجازت ہوئی۔ آپ نے فرمایا مار آہ المسلون مسید فعو عنداللہ سیمی " جے اہل اسلام اسلام اسلام فعو عنداللہ حسن وما رآہ المسلمون سیمیا فعو عنداللہ سیمی " جے اہل اسلام اچھا سمجھیں وہ اللہ کے نزدیک اچھا ہے۔ اور جے مسلمان برا جانیں اللہ تعالیٰ بھی اسے تاپند کرآ ہے۔ "حضرت ایاس بن معاویہ روائی سے مروی ہے کہ حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا قیاس کو جمال تم قیاس کے لائق سمجھو۔ اگر قیاس میں خرابی پیدا ہو جائے تو استحمان کرو لیمنی جب قیاس فاسد ہو جائے تو دو نظروں میں دقیق تر نظریر عمل کریں۔

حضرت ابن مبارک رضی اللہ تعالی عنہ فرمائے ہیں کہ میں نے ابن شرمہ سے ساتھا فرماتے

ہے کہ اگر کسی کے لیئے جائز ہو کہ وہ دینی معاملات میں اپنی رائے سے کوئی بات کرے تو ان سب میں حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ ہیں ان کی رائے استحسان ہے۔ تمام فقما امام مالک مرافحہ 'امام شعی مرافعی مرافعہ مستحسن سمجھتا ہوں ( یہ متعہ جو ڑا ہے جو مطلقہ عور تیں مستحسن سمجھتا ہوں ( یہ متعہ جو ڑا ہے جو مطلقہ عور تیں مستحسن سمجھتا ہوں ( یہ متعہ جو ڑا ہے جو مطلقہ عور تیں مستحسن سمجھتا ہوں ( یہ متعہ جو ڑا ہے جو مطلقہ عور تیں مستحسن سمجھتا ہوں ( یہ متعہ جو ڑا ہے جو مطلقہ عور تیں مستحسن سمجھتا ہوں ( یہ متعہ جو ڑا ہے جو مطلقہ عور تیں مستحسن سمجھتا ہوں ( یہ متعہ جو ڑا ہے جو مطلقہ عور تیں مستحسن سمجھتا ہوں ( یہ متعہ ہو ڑا ہے جو مطلقہ عور تیں کہ میں ۔)

### الم ابو حنيفه نفت النائج، اور احاديث نبوي مطييم

امام یکی بن نفر بن حاجب برایجہ فرماتے ہیں کہ مجھے امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے بتایا کہ میرے پاس احادیث نبوی کے مجموعوں کے بے شار صندوق بھرے پڑے ہیں ان میں سے چند صندوق ایسے ہیں جن کی روشنی میں مجھے علم فقہ کی ترتیب و تخصیل میں مدو ملی۔

امام حسن بن زیاد ریافیہ فرماتے ہیں کہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ جار ہزار احادیث سے موایت فرمایا کرتے تھے۔ ان جار ہزار احادیث میں سے دو ہزار احادیث اپنے استاد مکرم حماد بن سلیمان رہنی اللہ تعالیٰ عنہ سے حاصل کیس اور دو ہزار دوسرے مشاکخ احادیث سے کمی تحمیں۔

امام ابو بوسف ویلی فرماتے ہیں کہ جمارے سامنے جب کوئی مسئلہ آیا تو ہم امام ابوطنیفہ رضی اللہ عنہ کی خدمت میں حاضر ہوتے تو آپ بوچھتے کیا تمہارے پاس کچھ الیی احادیث یا آثار ہیں سے یہ مسئلہ حل ہو سکے۔ جب ہم احادیث یا آثار روایت کرتے تو آپ غور سے اُن احادیث کا بھی ہے: پھر جن جن احادیث کی تقدیق فرماتے ہم ان پر عمل کرتے۔ ( یہ اس وقت کی بات ہے کہ احادیث اور آثار پر ابھی جرح و تعدیل کا کام نہیں ہوا تھا اور جب تک ذخیرہ احادیث کھر کر سے نہیں آیا تھا۔) ہمیں حضرت امام ابو حقیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے ان آثار میں راہنمائی حاصل سے نہیں آیا تھا۔) ہمیں حضرت امام ابو حقیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے ان آثار میں راہنمائی حاصل سے نہیں آگا تھی۔ اگر احادیث سے بات نہ بنتی تو قیاس فرماتے ورنہ " استحمان " سے کام لیتے۔

امام ابوبوسف رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے جب علی بات کرنا ہوتی یا دقیق مسائل پر گفتگو کرنا ہوتی تو عوام سے ہٹ کر آپ ہمیں علیحدہ خلوت میں بات کرنا ہوتی یا حقیدہ خلوت میں پڑھا کے جاتے 'مشورہ کے لیئے اکثر مسحراور عمر ذر کو بلا لیتے۔ ذر قرآن پاک خوبصورت لہم میں پڑھا

ناقب امام اعظم ١٠٦

کرتے تھے۔ وہ قرآن مجید کی چند آیات پڑھتے اس کے بعد ہم ، قبن ماکل پر بحث و تحیص کرتے۔
حضرت امام ابو بوسف رحمتہ اللہ علیہ سے لوگوں نے بہ جھاکہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ
نے کتنے مسائل پر گفتگو فرمائی تو آپ نے بتایا کہ مجھے یاد ہے کہ سائر برار مسائل پر آپ نے گفتگو فرمائی۔ یہ تعداد حضرت امام ابو یوسف پر اللہ کے علم میں ہے ورنہ ہمیں ثقتہ بزرگوں نے بتایا کہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے فقہ کے تراسی ہزار مسائل پر جھنگو فرمائی تھی۔ اگر تیس ہزار اصل عبادات سے اور بینتالیس ہزار معاملات میں۔ اگر امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ فقہ کی یہ خدمت نہ کرتے تو ہم اوگ قیامت تک بھنگتے رہے۔

#### كتاب العلم والمتعلم

۔ حضرت امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے ایک سائل کے استفسار پر فرمایا کہ عمل علم کے ابع ہوتے ہیں علم کی روشنی ہی تابع ہوتا ہے جس طرح انسانی جسم کے اعضاء آنکھ کی روشنی کے تابع ہوتے ہیں علم کی روشنی میں عمل خواہ تھوڑا ہی ہو مگر وہ کثرت عمل جو جمالت کے اندھروں میں کیا جائے نفع رساں نہیں ہوتا۔ اس طرح اگر زاد سفر جنگل برایت اور راہنمائی کے ساتھ ہو تو کثرت زاد راہ سے کہیں بہتر ہے۔ جو بھنکتے ہوئے مسافروں کی ویر تک گفایت نہیں کر عتی۔ اللہ تعالی اس کی راہنمائی اس آیت کریم سے فرماتا ہے :

قل هل يستوى الذين يعلمون والذين لا يعلمون انما يتذكر اول اللالباب ٥ (سورة الزمر-٩) " وه نافرانوں كى طرح مو جائے گا" آپ فرا و يجئے كيا جانے والے اور نہ جانے والے برابر موسكتے ميں "فسيحت تو وہى مانتے ہيں جو جانتے ہيں۔"

ایک طالب علم نے حضرت امام اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے سوال کیا۔ ایک مخف عدل کو تو جانتا ہے گر ظالم اور ظلم کو نہیں جانتا اور اسے اس کی اہمیت حاصل ہے جس طرح ہم کہتے ہیں۔ فلال عارف بالحق یا وہ اہل اللہ ہے حالانکہ وہ بے علم ہوتے ہیں۔ آپ ایسے لوگوں کے متعلق کیا رائے رکھتے ہیں ؟ حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا " جو مخفص عدل کو جانتا ہے اسے اس کے اوصاف اور مقاصد بھی معلوم ہوتے ہیں گر ظالم ظلم کو نہیں جانتا وہ تو عدل اور جور دونوں

ے جال ہے۔ اے براور! میرے نزدیک ہر قتم کی جمالت ایک اندھرا ہے۔"

میری گفتگو کی وضاحت اس مثال سے واضح ہو جائے گی کہ چار مخصوں کو ایک سفید کیڑا ملا مرود چاروں ایک دو سرے سے کیڑے کا رنگ ہوچھنے لگے۔ ایک نے کمایہ سرخ رنگ کا کیڑا ہے ي نے كما سيس يه زرد ب تيرے نے كما محمد ساه رنگ كاكبرا ب چوتھا كہنے لگايہ سفيد رنگ ے۔ ہم ان تینوں میں ہے کس کو ورست کہیں گے۔ اس کی مزید مثال فقهی ونیا میں ویکھیں۔ کے طبقہ کہتا ہے کہ زانی کو ہم کافر نہیں کہتے حالانکہ ان کے سامنے یہ روایت موجود ہے کہ جب وں زنا کرتا ہے تو اس کا ایمان اس کے جم نے نکل جاتا ہے۔ ایسے بی ایک شخص مرگیا۔ وہ مالدار و اس پر ج فرض تھا' اس نے ج نہیں کیا۔ ہم حنفی تو اے مومن کہیں گے اور اس کی نماز جنازہ می پڑھیں گے' دعائے مغفرت بھی کریں گے اور اے مسلمانوں کے قبرستان میں دفن کریں گے اور س کے وار نوں کو جج بدل کرنے کی نصیحت بھی کریں گے لیکن اس کی تکذیب نہیں گریں گے۔ مگر یک طبقہ سے کہتا ہے کہ الیا آدمی میمودی کی موت مرا ہے' میہ نصرانی اور خوارج کا روبیہ ہے۔ جس المع ہم اپنی بات منوانے کے لیئے خوارج کو دلائل دیتے ہیں ایسے ہی شیعہ عقائد رکھنے والے کئی ر اصلاح کریں گے۔ ای طرح مرجنہ کے کئی عقائد ایسے ہیں جن کی تردید ضرد «ک ریں گے۔ ہر گروہ ' ہر طبقہ جب کوئی بات کر تا ہے اپنی بساط کے مطابق بڑی تحقیق و تز کمن کر کے پیش 📝 ہے۔ وہ اس کے ثبوت میں کئی روایات اور احادیث بھی پیش کر آ ہے۔ اسے مگمان ہے کہ رسول الله عليه وآله وسلم نے اس كے كہنے كے مطابق فرمايا ہے۔ اس روش سے كئي جھرك اور المعات برپا ہوتے ہیں اور ہوتے رہیں گے اس لیئے اپنے وعوؤں کو سچا جان کر دو سرول سے لڑنا جھکڑنا

حضور صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم نے ہمیں جس اسلام کی دعوت دی وہ تو امن اور سلامتی کا سے ہمیں جس اسلام کی دعوت دی وہ تو امن اور سلامتی کا سے ہے۔ حضور صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم کی ذات اقدس کو مجسم رحمت بنا کر بھیجا گیا ہے۔ آپ تو سے الفت اور محبت کی دعوت دیتے تھے۔ آپ نے بھی تفرقہ نہیں ڈالا، بھی فرقہ بازول کی طرز سے الفت اور محبت کی دوسرے سے دست و گربان ہول، حضور صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم نے سے اعتدال والا ندہب دیا ہے۔

## اختلافی روایات کی وجه

حضرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے نزدیک ان روایات میں اختلاف کی وجہ یہ ہے کہ ان میں بعض ناسخ ہیں بعض منسوخ ہیں۔ ہم اس طرح روایت کریں گے جیسے ہم تک پنچی ہیں لیکن ان لوگوں پر افسوس ہے کہ انہوں نے اپنا انجام سوچ بغیرہ ہی خود کو عوام کے سامنے براا بنا کر پیش کیا اور عمدا "منسوخ احادیث بیان کرتے جاتے ہیں حالانکہ منسوخ احادیث پر عمل کرنا گراہی ہے مگریہ لوگ اپنی جمالت کی وجہ سے الی احادیث ساتے جاتے ہیں جن کے احکامات منسوخ ہو چکے ہیں اور وہ لوگوں کو گراہ کرتے جا تیں احادیث ساتے جاتے ہیں جن کے احکامات منسوخ ہو چکے ہیں اور وہ لوگوں کو گراہ کرتے جا تیں گے (آج ہمارے دور کے غیرمقلدین بھی اس طرح کر رہے ہیں) ہمارا تو ایمان ہے کہ حضور ہی کریم صلی اللہ علیہ وآلہ و سلم نے ایک آیت کے بھی دو معانی بیان ممارا تو ایمان ہے کہ حضور ہی کریم صلی اللہ علیہ وآلہ و سلم نے ایک آیت کے بھی دو معانی بیان نہیں فرمائے۔ جو آیت منسوخ ہوتی ہے اسے قرآن خود بھی منسوخ بتاتا ہے اور حضور ہی کریم صلی اللہ علیہ وآلہ و سلم بھی اسے ناسخ العل بیان فرما کر قرآنی شہادت دیتے ہیں۔

#### ناسخ ومنسوخ آیات کاایک قاعده

لعض لوگوں کے خیال میں نائخ و منسوخ کا اطلاق اجتماد صفات میں نہیں ہوتا۔ نائخ و منسوخ کا تعلق صرف اور صرف امرو نہی یا احکام خداوندی پر ہوتا ہے اور اس پر امام ابو صفیفہ رضی اللہ تعالی عنہ فرماتے ہیں کہ مندرجہ بالا خیالات رکھنے وائے حصرات کی ہم فدمت اور تکذیب اس لیئے نہیں کرتے کہ وہ لاعلی کے تجاب میں ہیں۔ اگر ہم ان روایات کی تکذیب کریں گے تو گویا (معاذ اللہ ) ہم رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی احادیث کی تکذیب کریں گے۔ ہم اگر ان کی بات سے اتفاق نہیں کرتے تو وہ بھی اس لیئے کہ وہ اپنی کم علمی کی وجہ سے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم پر افتراء باندھ رہے ہیں۔ ہم احادیث یا روایات کی تکذیب نہیں کرتے ہم تو ان توگوں کے اس عمل کی افتراء باندھ رہے ہیں۔ ہم احادیث یا روایات کی تکذیب نہیں کرتے ہم تو ان توگوں کے اس عمل کی مخذیب کرتے ہیں کہ جب رسول کریم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے اپنے سابقہ احکام منسوخ کر کے بہتر انداز میں راہنمائی فرمائی ہے تو اس پر کیوں عمل نہ کریں۔

ایک مخص کتا ہے میں مومن ہول ان تمام امور پر ایمان لاتا ہوں جو حضور صلی اللہ علیہ

و ملم نے بیان فرمائے ' اب اس اعلان کے بعد وہی شخص حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم <u> گے طرف ایسی باتیں منسوب کر دے جو قرآن کے خلاف ہیں تو ہم ایسے مخص کی جمالت کو رو تو</u> معرور كريس گے۔ بيه رسول اللہ صلى الله عليه و آله وسلم كے فرمان كا رد شيس اس مخص كى لاعلمي كا رو ے یا اس کی ہٹ وظری کا رو ہے جو اس نے اپنی جمالت کی وجہ سے حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ و المام كى ذات كرامى سے منسوب كرويا ہے - حضور ماليزم كى وي احاديث جو تكفر كر مارے سامنے ال میں جو حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم کے آخر زمانہ میں صحابہ کرام کی معرفت لوگوں کے پہنچی ہیں جس پر صحابہ کرام نے عمل کیا ہے ایسی تمام روایات جارے ایمان کا حصہ ہیں۔ انہیں م ب سرو چیئم قبول کرتے ہیں اور ہم گواہی دیتے ہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم نے حق قر الله اور ساتھ ہی گواہی دیتے ہیں کہ حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے آج تک کوئی بھی کی بات (حدیث) نہیں کہی جو قرآن کے خلاف ہو حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم نے از خود الله الله على الله على الله تعالى في آب كو وعوت اسلام كا تحكم ديا اور ايك ايك بات لوكول تك سے نے کا تھم دیا۔ آپ کی زبان مبارک سے کوئی بات ایس نہیں نکتی تھی جو اللہ تعالی کی مرضی کے ازرہ تکلف بات نہیں گا۔ آپ کی صداقت اور امانت کی شمادت قرآن الله "جو فخص حضور ماليم من يطع الرسول فقد اطاع الله "جو فخص حضور ماليم كي اطاعت كرے كا وہ اللہ كى اطاعت كرے گا۔"

حفرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عند نے " تعلیم المنعلم" ایک بہت بڑی کتاب مرتب فرمائی ہے۔ ہم اس مخفر سی کتاب میں ان تمام امور کو بیان نہیں کر کتے جو حفرات اس موضوع پر تفصیل سے پڑھنا چاہتے ہیں وہ امام اعظم کی تصانیف کی طرف رجوع فرمائیں۔

عينيه قبط لذاذة الاغفاء لله ثم السنة الغراء نظروا بنور الحق في الظلماء

ان الامام اباحنيفة لم ينق و على كتاب الله منهبه بنى ثم اجتماع المسلمين فانهم ثم القياس على الاصول فانه زهر نما في الملة الزهراء ماذا جواب علاه ماذا ان يقل لهم اهذا صاحب الآراء راموا القياس على النصوص فما اهناوا وتخبطوا كتخبط العشواء

(ترجمہ) وہ وہ امام ابو حقیقہ جن کی آئھوں نے آج تک کبھی خفلت کی لذت نہیں چکھی۔ ہے ان کا فرہب اللہ کی کتاب اور حضور ماٹھیم کی سنت کی بیروی ہے۔ ہے پھر اجماع امت کے فیصلوں پر جنہوں نے اندھیروں میں اللہ کا نور دیکھا ہے۔ ہے پھر قیاس جو فہ کورہ اصولوں پر ایک ایسا پھول ہے جس سے ملت اسلامیہ کی رونفیس جبک اٹھیں۔ ہے آج آپ کے دشمنوں کے پاس اس بات کا کیا شہوت ہے کہ وہ صاحب الرائے تھے۔ ہے انہوں نے ہمیشہ قیاس کو نصوص کی بنیادوں پر بیش کیا۔ ہے آپ کے وشمن آپ کے فیصلوں کو سن کر ایسے جران ہوتے ہیں جسے اندھی او ٹی جنگل میں ماری ماری پھرتی ہو۔ ہے ان کو سن کر ایسے جران ہوتے ہیں جسے اندھی او ٹی جنگل میں ماری ماری پر پیلی مور ہیں آپ کے فیصلوں کو سن کر ایسے جران ہوتے ہیں جسے اندھی او ٹی جنگل میں ماری ماری پر پیلی ہو۔ ہے ان لوگوں نے آپ کے صرف قیاس پر اعتراض کیئے انہیں معلوم نہیں کہ قیاس فقہا کی ایک ایسی صنعت ہے جے جھٹلایا نہیں جاسکتا۔ ہے ان کی جگہ ان کے سوداؤں پر لیٹ گئے ان کی پسلیاں کی مجون سے علاج کیا۔ کیا اس کے لیئے وہ سوداوی بخل سے پھیل گئی ہیں۔ ہے انہوں نے کامیابی کے مجون سے علاج کیا۔ کیا اس کے لیئے وہ سوداوی مزاج کو مفید ہوگا۔ کیا اس کے لیئے وہ سوداوی





# امام ابو حلیفہ انتہا ہو کے فریب کے بنیادی اصول

ابو عصمہ نوح برالحسریم رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ ہے ہم مرافت کیا کہ المسنت والجماعت کون لوگ ہیں؟ فرمایا " حضرت ابو بحر اور حضرت عمر رضی اللہ عنما کو افضل مانے والے اور حضرت عثمان اور علی رضی اللہ تعالیٰ عنما ہے محبت رکھنے والے۔

وی خیرو شرکی تقدیر پر ایمان رکھتے ہیں۔ وو موزوں پر مسح کرتے ہیں نبیذ الجسر کو طال سے ہیں کرتے ہیں نبیذ الجسر کو طال سے ہیں کمی مومن کو گناہ کی وجہ سے کافر نہیں کہتے اور اللہ تعالیٰ کی شان کے بارے میں غلط گفتگو

ہم نے یہ گفتگو " مناقب العیمری " سے نقل کی ہے۔ آخر میں سعد بن معاذ رویلیے نے قرمایا اللہ اللہ مناقب العیمری " سے القوال میں المستت وجماعت کے نظریات کو جمع قرمایا سے کوئی شخص اگر آٹھوال جملہ یا کلمہ بڑھائے گاتو نہ پڑھائے گا۔

## 

حضرت فضل عیاض رضی اللہ تعالی عنہ فرماتے ہیں کہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ اپنے

تھے کے فقیہ ہی نہیں تھے بلکہ فقیمان وقت کے امام تھے۔ تقوی اور ورع میں آپ بے مثال تھے۔
ووولت کے مالک ہونے کی وجہ سے غرباء و مساکین کے مددگار تھے۔ آپ کے پاس جو بھی مفلوک

ما آیا اے خالی نہ جانے دیتے 'آپ خصوصی طور پر طلباء اور اساتذہ پر بڑا خرچ کرتے تھے۔ رات
عنت کرتے 'شب بیراری میں مصروف رہتے 'کم گھ اور خاموش طبع تھے۔ حلال و حرام کے
سائل پر بردی تفصیل سے گفتگو فرماتے اور اس سلسلے میں خاص خیال رکھتے تھے۔ آپ بادشاہ اور

امراء کے مال و دولت سے دور رہا کرتے تھے۔ ابن صباح رحمتہ اللہ علیہ نے آپ محافلاق و عادات میں مختلکو کرتے ہوئے و مختلکو کرتے ہوئے فرمایا کہ آپ سے جب کوئی سوال کرتا تو اس کے جواب میں سب سے پہلے سمجے صدیث بیان فرماتے ' پھر صحابہ کرام اور تابعین کے عمل سے دلائل دیتے ' اگر ایسا نہ ہوتا تو آپ قیاس کرتے اور قیاس کو برے خوبصورت انداز میں چیش کرتے۔

#### کفر کے فتویٰ سے احراز

امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی کو قبیلہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم سے خارج 
ہیں کرتے تھے جب تک کوئی شخص خود نکلنے کے لیئے اقدام نہ کرے ' یعنی جب تک کوئی شخص 
ضروریات دین سے بیزاری کا اظمار نہ کرے یا انکار نہ کرے اس وقت تک اس کے خلاف فتوئی صادر 
ہیں کرتے تھے۔ آپ نمایت امین تھے ' شہنشاہ وقت نے آپ کو ایک بار اپنے خزانوں کی چابیال 
عنایت کرنا چاہیں تو آپ نے لینے سے انکار کر دیا اور کما کہ میں اس ذمہ داری کو نہیں نبھا سکتا۔ بادشاہ 
نے اسے اپسخرم و عنایت کی توہین قرار دیتے ہوئے آپ کو کوڑوں کی سزا دی۔ آپ نے امانت میں 
خیانت کے ڈر کی بجائے کو ڑوں کی سزا کو لیک کما۔

حضرت جسن بن زیادہ لولوئی ریائی فرماتے ہیں کہ میں نے امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ سے سنا "آپ نے فرمایی جماری ذاتی رائے ہی مشتمل ہے ہاں اگر کوئی جماری رائے سے بہتر قیاس فرمائے تو ہم اسے تشلیم کریں گے اور اسے مبنی برجمواب تصور کریں گے۔ مگر کوئی ایسا قیاس سامنے تو لائے۔
لائے۔

### حضرت امام ابوحنيفه نضي المايج كاحديث ياك يرعمل

حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا معمول تھا کہ اگر کوئی بات حدیث پاک ہے ال جاتی تو آپ کسی دو سری چیز کی طرف توجہ نہیں دیتے تھے۔ حدیث پاک سے راہنمائی نہ ملتی تو صحابہ کرام کے اقوال اور اعمال کو احتیار کیا جاتا' اگر وہاں سے بھی راہنمائی نہ ملتی تو مخقیقی انداز میں قیاس فرماتے' اگر تابعین میں سے کوئی اچھی بات کرتا تو اس سے بات چیت کر کے یقینا قبول کرتے۔ (آپ ر تابعی سے اور تابعین کو قباس کا حق دیتے سے بشرطیکہ وہ قباس قرآن و احادیث کی روشنی میں ستے ہوتا۔)

یمی بات ہمیں "مند امام اعظم روافیہ " میں بھی ملتی ہے۔ حضرت عبداللہ بن مبارک روافیہ اللہ اللہ اللہ علیہ کہ میں کہ میں کہ میں کہ رسول اللہ اللہ عند سے سنا آپ نے فرمایا کہ رسول اللہ سی کہ میں کے حضرت امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالیٰ عند سے سنا آپ نے فرمایا کہ رسول اللہ سی اللہ علیہ و آلہ و سلم کی حدیث پاک میرے سر آنکھوں پر 'ہم صرف اور صرف ای پر عمل کریں کے اس کے سوا باقی جو اقوال سامنے آئیں گے وہ اضافی اور اختیاری ہوں گے' ان کے علاوہ اجتماد کا جسم ایک کو حاصل ہے۔

حفزت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے ان حفرات کے الزامات کی بڑی ذبروست تردید کے جو یہ کہتے ہیں کہ ہم قیاس اور رائے کو حدیث پر ترجیح دیتے ہیں' ہم اولین رائے حدیث پاک کی سے میں قائم کرتے ہیں اور حدیث مبارک پر ہی فتوئی۔ دیتے ہیں۔

عربن جادبن ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرماتے ہیں کہ میں امام مالک رحمتہ اللہ علیہ کی است میں حاضر ہوا اور ایک عرصہ تک آپ کی خدمت میں رہا' آپ ہے علم حاصل کیا' جب میں ہوا ہور اور فروری مسائل پر عبور حاصل کر لیا تو امام مالک ریائیے الوداع کہنے کے لیکے میں نے عرض کی حضور جھے اپنے دشمنوں خاص طور پر حاسدین سے خطرہ ہے کہ وہ لوگ ہو ہوئے۔ میں نے عرض کی حضور جھے اپنے دشمنوں الی باتیں کہیں گے جو ان میں نہیں ہیں' سے امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے متعلق الی الی باتیں کہیں گے جو ان میں نہیں ہیں' میا طل چاہتا ہے کہ میں ان کے متعلق وہ تمام باتیں بتا دوں جو مخالفین اپنے انداز میں بیان کرتے ہوا گی فدشات ہوں تو جھے بتا دیں۔ امام مالک رحمتہ علیہ نے فرمایا کہ بتاؤ میں نے کہا کہ حضرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی گناہ کی وجہ سے کو کافر نہیں کہا کرتے تھے جو فواحش میں جٹا ہو' امام مالک روائیے نے فرمایا یہ بات بھی مسلمان کو بھی کافر نہیں کہا کرتے تھے جو فواحش میں جٹا ہو' امام مالک روائیے نے فرمایا یہ بات بھی میں ہے۔ میں نے مزید کہا کہ آپ فرمایا کرتے تھے کہ آگر کوئی مومن کی مسلمان کو عمدا قبل بھی کرتے ہوں امام مالک روائیے نے فرمایا یہ بھی صبح ہے۔ میں نے عرض کی آگر صب ہوں ان کے متعلق ایسی واپنیں کے تو آپ انہیں نظرانداز کر دیں۔

حضرت امام مالک روایت فرمانے گئے کہ میں نے ساتھ امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عدہ فرماتے ہیں کہ میرا ایمان جرئیل علیہ السلام نے ایمان جیسا ہے، میں نے کما حضور یہ بات آپ کو غلط طور پر کمی گئی ہے، حقیقت میں بات یوں ہے کہ آپ فرمایا کرتے تھے کہ اللہ تعالیٰ نے حضرت جرئیل علیہ السلام کو نبی کریم صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم کے پاس بھیجا اور حکم فرمایا کہ آپ لوگوں کو ایمان کی دعوت کا پیام دیں 'یہ بات ایسے ہی تھی جیسے جرئیل علیہ السلام سابقہ انبیاء کو ان کی امت کو ایمان کی دعوت کا پیام ویا کرتے تھے یہ ایمان تو آیک ہی ایمان ہو وہ قتم کے ایمان تو نہیں تھے۔ ایمان دو یا تین نہیں ہو میا کرتے تھے یہ ایمان تو آلک ہی ایمان اور ہے دو سمرے کا ایمان اور ہے۔ جس طرح قرآن پاک ہر کیے اور یہ بھی غلط ہے کہ آیک کا ایمان اور ہے دو سمرے کا ایمان اور ہے۔ جس طرح قرآن پاک ہر آیک کی تقریر س کر تعبیم فرمایا اور بڑی خوشی کا اظہار کیا مگر زبان سے پچھ نہ کہا۔

یاد رہے کہ حضرت امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ ایمان میں شک کا انکار کرتے تھے بلکہ اے خطاء میں شار کیا کرتے تھے۔ امام مالک رالیے نے فرمایا شک کا کیا مطلب ؟ عمر بن جماد نے عرض کیا ہمارے شہر کوفہ میں چند لوگ ایسے بھی ہیں جو کہتے ہیں کہ ہم مومن ہیں ہم مومن ہیں یا نہیں۔ امام مالک رالیے نے ایسے لوگوں کے متعلق دریافت کیا بھرا سے لوگ کون لوگ ہیں؟

حضرت عبراللہ بن عمر رضی اللہ تعالی عنہانے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے سوال کیا کہ آپ " نبیز " کو کیسے حلال کہتے ہیں ؟ آپ نے فرمایا ہیں نے آپ کے والد (حضرت عمر بن خطاب رضی اللہ تعالی عنہ ) کے ارشاد گرامی سے ثابت کیا ہے۔ آب نے تفصیل بوچھی تو فرمایا فاروق اعظم رضی اللہ تعالی عنہ نے فرمایا جب تمہیں اس میں شک ہو کہ یہ نشہ آور چیز ہے تو اس میں بانی ملا ود آکہ یہ دھل جائے وہ نبیذ نہ رہے گایانی بن جائے گا۔

کوفہ کے ایک قصہ خوان ابوطالب نے اپنا واقعہ بیان کرتے ہوئے بتایا کہ میں نے امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے بوچھا کہ میں عام مجمعی میں وعظ کرتا ہوں اور وعظ کے دوران برے دلچپ قصے بیان کرتا ہوں' لوگ کہتے ہیں کہ قصے کہانیاں بیان کرتا یا سانا کروہ ہے' آپ کا کیا خیال ہے؟ آپ نے فرمایا وہ قصے کہانیاں مکردہ ہیں جو کتاب و سنت میں سے نہ ہوں یا ایسے قصے گھر لیئے جا کیں جن میں کوئی صداقت نہ ہو' یا واقعات تو درست ہوں مگران میں اپنی طرف سے جھوٹ موٹ ملا دیا جائے

کے ریکس بیانی اور قصہ خوانی میں زور پیدا ہو جائے یا لوگوں کو تو واعظ سنایا جائے اور خود اس پر عمل اللہ جائے۔ لوگوں کو نصیحت کی جائے اور خود میاں فصیحت بن جائے الیے قصوں کے سنانے یا سننے کے ول سیاہ ہو جاتا ہے۔ ہاں ایسے قصے جنہیں قرآن پاک نے بیان کیا ہے احادیث میں موجود ہیں۔ منتقد مین کے سیج واقعات اور ایمان افروز کارنامے بیان کرنا مکروہ شمیں۔ یاو رہے کہ یہ قصہ کو ابوطالب کی بن یعقوب حضرت قاضی ابویوسف رائے کے ماموں تھے 'آپ نے ابن عباس کے ماموں تھے 'آپ کے ابن عبان کی تیارہ حضرت مرمہ اور دو سرے کئی تابعین کی زیارت کی تھی اسی طرح ان کا شار تبع تابعین

## حضرت امام ابوحنيفه نفت المنابة بالمحديث رسول ما المايام كى بابندى

میں ہو آ ہے 'وہ اپنے وقت کے زبردست واعظ تھے۔

حفرت الم ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ فرماتے ہیں کہ جب مجھے کتاب اللہ اور تورسول اللہ علیہ وآلہ وسلم ہے تھم ملتا ہے تو اس کی پابندی کرتا ہوں اور اس سے سرمو تجاوز نہیں کرتا ہوں اور اس سے سرمو تجاوز نہیں کرتا ہوں مسئلہ میں صحابہ کرام میں اختلاف دیکھتا ہوں تو اس میں اکثریت کے فیصلے کو اپنالیتا ہوں اگر اس فرریعے ہے مسئلہ کا حل نہ طے تو اہل علم و فضل راسخوں فی العلم سے رجوع کرتا ہوں گر درسوں کو اور انہیں نظرانداز بھی کر دیتا ہوں کیونکہ ہم رجال ہیں اور ہم بھی تابعی ہیں "حضرت امام ابوحنیقہ رضی اور ہم بھی تابعی ہیں "حضرت امام ابوحنیقہ رضی اللہ تعالی عنہ ہر مسئلے کو قیاس کی روسے حل نہیں کیا کرتے تھے 'ہاں بوقت ضرورت جب قرآن و اللہ تعالی عنہ ہر مسئلے کو قیاس کی روسے حل نہیں کیا کرتے تھے 'ہاں بوقت ضرورت جب قرآن و اللہ تعالی عنہ ہر مسئلے کو قیاس کی روسے حل نہیں کیا کرتے تھے 'ہاں بوقت ضرورت جب قرآن و است سے راہنمائی نہ ملے تو قیاس کرتے تھے۔

زہیر بن معاویہ روایٹے فرماتے ہیں کہ ایک دن میں حضرت امام اعظم ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی مجلس میں بیٹھا تھا کہ حضرت امام کے شاگرد ابیف بن الاغر حاضر ہوئے وہ بھی مسائل میں قیاس کو اپلیا کرتے تھے۔ وقت کے ائمہ اور اہل علم میں ان پر برہم تھے' ایک مخص معجد کے ایک گوشے سے پیلیا کرتے تھے۔ وقت کے ائمہ اور اہل علم میں ان پر برہم تھے' ایک مخص معجد کے ایک گوشے سے پیلی گئے کر کہہ رہا تھا چھوڑو! قیاس ویاس کچھ نہیں' عالبا یہ مخص مدینہ منورہ کا رہنے والا تھا' قیاس کے خلاف تقریر کرنے لگا اور لوگوں کو کہہ رہا تھا کہ قیاس کی کوئی حقیقت نہیں' سب سے پہلے قیاس مطاف تھر کے کیا تھا۔ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے اس مخص کو اپنے پاس بلایا اور فرمایا تم نے ایک مسلم سے بیلے قیاس کے کہا تھا۔ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے اس مخص کو اپنے پاس بلایا اور فرمایا تم نے ایک

امام اعظم ١١٦

صحیح بات کو غلط راہ پر لگا لیا ہے' ابلیس کب قیاس کیا کرنا تھا۔ اس نے تو اللہ کے صریح تھم کو ٹھکرایا تھا۔

جب الله تعالی نے فرمایا اذقلنا للملائکة اسجدوا لآدم فسجدوا الاابلیس کان من الجن ففسق عن امر ربه ہی "جب ہم نے فرشتوں کو فرمایا کہ آدم کو سجرہ کرہ تو سب نے سجرہ کیا سوائے ابلیس کے وہ قوم جن ہیں ہے تھا وہ اپنے رب کے تھم سے نکل گیا۔ "ہم لوگ قرآن و سنت میں بتائے ہوئے مسلہ پر اس وقت قیاس کرتے ہیں جب ہمیں واضح احکام نہ ملیں ، ہم مسلہ کے حل کے لیئے قرآن و سنت اور اجماع امت کی روشنی میں مسلہ حل کرنے کی جدوجمد کرتے ہیں اور کوشش کرتے ہیں کہ ہمارا قیاس قرآن و سنت کے قریب تر ہو۔ ہماری اس کوشش اور جدوجمد کو تمہاری غلط بیانی تبدیل نہیں کر سی ۔ وہ شخص اٹھا اور کہنے لگا ابو حقیقہ ! میں اپنی غلط اور جدوجمد کو تمہاری غلط فنمی ہے رجوع کرتا ہوں ، آپ کا دل روشن ہے اور آپ نے میرے دل کو روشن کر دیا ہے۔ حضرت امام ابو حقیقہ رضی الله تعالی عنہ کوئی ایسی بات نہیں کرتے تھے جس کی دلیل قرآن و سنت سے نہ طے۔

## موزول کے مسے کی حقیقت

حضرت عبدالله بن مبارک رحمته الله علیه فرماتے ہیں کہ میں نے امام ابوطنیفه رضی الله تعالی عنه سے سوال کیا کہ موزول پر مسح کرنے کی کیا حقیقت ہے؟ آپ نے فرمایا ہمارے پاس اس مسئله پر سورج سے زیادہ روشن دلاکل موجود ہیں اور جب تک ہمیں سے ولائل قرآن و سنت کی روشنی سے میسر نہیں آئے ہم نے ان پر عمل نہیں کیا۔

## مرد اور عورت کی بلوغت کا آغاز

حضرت سل بن مزاحم روایند فرماتے ہیں کہ میں حضرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی ضدمت میں حاضر ہوا' اس وقت آپ کے اردگرد تمیں سے زیادہ شاگرد بیٹھے تھے۔ آپ نے ان شاگردوں سے سوال کیا کہ بتاؤ مرد کب بالغ ہوتا ہے ؟ اکثر نے جواب دیا کہ اٹھارہ سال کی عمر میں'

سخ حضرات نے کما انیس سال کی عمر میں 'اس مجلس میں اگرچہ اکثریت کے فیصلہ کو تسلیم کر لیا گیا گر حضرت امام اعظم رضی اللہ تعالی عند نے مزید وضاحت کرتے ہوئے فرمایا کہ جب اڑکے میں بلوغت کے آثار نمایاں ہو جا کمیں وہ بالغ مانا جائے گا۔ مو خچھوں یا داڑھی کے بال نمودار ہوں' اس کے جماع سے بچہ پیدا ہو جائے' اے احتلام ہو جائے۔ یہ وہ آثار ہیں جو عمر کی قید کے باوجود ایک مرد کو بالغ قرار دینے کے لیئے کانی ہیں۔

لڑی کی بلوغت لڑکے کی عمرے پہلے ہو باتی ہے ' وہ بارہ تیرہ سال کی عمرے بالغہ ہو جاتی ہے لئے اللہ ہو جاتی ہے لئے اس میں بھی بلوغت کے آثار کو ترجیح دی جائے گی اور ہم فتوئی دیں گے کہ وہ لڑکی بالغ ہے۔ ( یہ اجتمادی دور کی بحث ہے اب اجماع امت اور تواتر عمل سے ثابت ہے کہ لڑکی بارہ سال اور لڑکا پیدرہ سال کی عمر میں بالغ ہو جاتے ہیں۔ مترجم)

#### حفرت امام ابوحنيفه الضياليكية كااجتهادي انداز

سل بن مزاحم روائی فرماتے ہیں کہ امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ " فحصہ " بات کو اپناتے اور فہیج بات کو نظرانداز کر دیتے تھے۔ آپ کی نگاہ لوگوں کے حالات پر ہوتی تھی اور آپ کو حش کرتے تھے کہ راہ حق پر راہنمائی کی جائے۔ آپ معاشرے کمو جادہ حق پر چلنے کی تلقین کرتے تھے اور ان لوگوں کے اندر نیکی پر گامزن رہنے کی صلاحیت ابھارتے تھے۔ آپ ان معاملات میں کتاب و سنت کی روشنی میں قیاس کرتے تھے اور قیاس سے مسلہ حل نہ ہوتا تو " استحسان " سے کام لیت ' جو سل بن مزاحم روائی نے بتایا کہ امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ لوگوں کے مطلات پر نمایت گری نظر رکھتے تھے ' آپ اپنی گفتگو کے دوران قرآن پاک کی بیہ آیت پڑھا کرتے خو فبشارت دیں معالیٰ الدین ایسمنزی القول فیبتر بعون احسنہ ہے " میرے بندوں کو بشارت دیں دو کان لگا کر بات سنیں اور اسے قبول کر کے استحسان کی راہ پر چلیں۔"

## سحابة كرام كے متعلق امام اعظم نصفات كاعقيده

الم ابوحنيف رضى الله تعالى عنه حفرت ابوبكر اور حفرت عمر رضى الله تعالى عنما كوتمام صحاب

کرام سے افضل سمجھتے تھے۔ حضرت علی اور عثان رضی اللہ تعالی عنما سے محبت کرتے تھے 'تقدیر اللی پر ایمان رکھتے تھے 'اللہ تعالیٰ کی ذات کے بارے میں کسی قتم کی ست گفتگو نہیں سنتے تھے 'موزوں پر مسمح فرمایا کرتے 'وہ اپنے زمانہ میں نمایت برے فقیہ 'عالم اور متقی انسان تھے۔

امام زفر رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ لوگو! مخالفین کی باتیں نہ سنو عظرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ اور آپ کے تلافہ و سعدین قرآن و سنت ہے ہٹ کرکوئی بات نہیں کرتے ، پھر صحابہ کرام کے عمل کو مشعل راہ بناتے ، اقوال صحابہ پر عمل کرتے ، بال ان ذرائع سے مسئلہ حل نہ ہو تو قیاس کرتے۔

## شیعہ امام ابو حنیفہ نفی المنائظ کی کیوں مخالفت کے ہیں

امام ابو حذیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سیدنا ابو بر صدیق رضی اللہ تعالی عنہ کو تمام امت 'تمام صحابہ میں افضل ترین مانتے ہیں۔ ان کے بعد سیدنا عمر فاروق رضی اللہ تعالی عنہ کو ' بجر حضرت علی و حضرت عثمان رضی اللہ تعالی عنما کو۔ ان کے نزدیک ان چاروں کے بعد وہ صحابہ افضل ہیں جو متقی اور جانثاران رسول مڑویا ہے۔ ان حضرات کے بعد ان تمام صحابہ رسول مڑویا کو ساری امت سے افضل مانتے تھے اور ان کے متعلق ان کی رائے نمایت عمرہ اور خیر تھی۔ وہ فرمایا کرتے تھے حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم کے صحابی کا بیہ حال ہے کہ اس کی زندگی کا اگر ایک لحمہ بھی جضور صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم کی خدمت میں گررا تو وہ ہماری ساری زندگی کے اعمال سے بہتر ہے۔ اگرچہ ہماری علیہ و آلہ و سلم کی خدمت میں گررا تو وہ ہماری ساری زندگی کے اعمال سے بہتر ہے۔ اگرچہ ہماری زندگیاں کتنی ہی طویل ہوں اور ہمارے اعمال کتنے ہی زیادہ ہوں یہ بات شیعہ حضرات کو نابیند تھی۔

#### نماز عصر كاوفت

ازم بن كيمان ريافي فرماتے ہيں كه ميں نے وصافی كے ساتھ جب بھى عصر كى نماز اواكى آخر وقت ميں اواكى۔ ايك ون وہ مجھے حضرت امام اعظم رضى اللہ تعالى عنه كى مجلس ميں لے گئے وہاں يہ حال تھا كہ آپ نے ابھى تك عصر كى نماز نميں پڑھى تھى ميں نے پہلى بار آپ كى امامت أمين نماز عصر اواكى تو يہ عصر كا آخرى وقت تھا ميں دُر رہا تھا كہ آج عصر كى نماز فوت ہو جائے گى اس كے بعد

کھے حضرت سفیان توری روافیر کی معجد میں لے گئے 'انہوں نے تاحال نماز عصر اوا نہیں کی تھی' میں گئے ۔ کی بی آخری وفت تھا' میں نے کہا اللہ تعالی امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عند پر رحم فرمائے انہوں کے عصر بدی در سے پڑھائی مگریماں مزید تاخیر ہو رہی ہے۔

#### مومن کی اقسام

حضرے امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ فرماتے ہیں کہ ایمان معرفت اور تقدیق اقرار اسلام

ہوے ہے چر فرمایا تقدیق کی کئی قسمیں ہیں اللہ تعالی کہ بانا ان امور کو مانتا ہے جو اس کی طرف ہوں ہوئے اپنے ول کی تقدیق کے ساتھ زبان ہے اقرار کے ساتھ دل کی تقدیق کرتا ہے ول سے ہوئی ہیں کرتا۔ جو شخص ہے کہ گر زبان ہے افکار نہیں کرتا۔ زبان ہے اقرار کرتا ہے گر ول سے قبول نہیں کرتا۔ جو شخص ہوں ہے اقرار کرتا ہے وہ لوگوں کے زویک مومن ہے گر اللہ تعالی کے زویک کافر ہے کیونکہ لوگوں کے متعلق کچھ علم نہیں اور لوگوں کی بیہ ذمہ داری بھی نہیں کہ وہ زبان ہے اقرار کے والے کے ول کو شؤلے وہ اسے مومن ہی شار کریں گے۔ تیمری قتم ہیہ کہ وہ وہ وہ او اقرار ہی نہیں کرتا ایبا شخص لوگوں کے زویک کافر ہے سے اقرار نہیں کرتا ایبا شخص لوگوں کے نزویک کافر ہے سے اللہ کے زویک مومن ۔ بعض لوگ اہتاء و آزمائش کی وجہ سے لوگوں کے سامنے اقرار نہیں کر سے تو جو لوگ اس کے قلبی طالت سے واقف نہیں وہ تو انہیں کافر کہیں گر وہ اللہ کے زویک

ایل حضرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ ایمان کے متعلق وضاحت فرماتے ہیں کہ اہل ساء و اسلامی و اول سے آخر تک جمارا اور ان کا ایمان ایک ہی ہے کیونکہ اللہ تعالی کی وحدا نبیت کا اقرار' اس کے رسولوں کے ذریعہ آنے والے احکامات کی فرمانبرداری' اللہ تعالی کی عبادت' اللہ تعالی کے ساتھ کی فرمیک نہ محمرانا' تمام اہل ایمان میں کیسال رہا ہے۔ اس بات کا ایمان سے کوئی تعلق نہیں کہ ملی ونیا میں مختلف لوگ ہوتے ہیں' اسمی طرح حضرت آدم علیہ السلام سے لے کر آج تک تمام کی دنیا میں مختلف لوگ ہوتے ہیں' اسمی طرح حضرت آدم علیہ السلام سے لے کر آج تک تمام کی دنیا میں مختلف ہوں وہ وحدانیت خداوندی کے انکاری ہیں' شرک کے خوگر ہیں' وہ اعمال کافر ہیں۔

## انبیاء کرام کی شان و فضیلت

حضرت الم ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا الجمدللہ اگرچہ ہم انہی امور پر ایمان رکھے ہیں جن پر انبیاء کرام اور رسول ایمان رکھتے تھے گروہ عبادات میں تمام مخلوقات سے افضل ہیں کو تک وہ عبادت کے اعلیٰ مقامات پر فائز تھے اور ان کی عبادات بدرجہ اتم مکمل اور مقبول تھیں اور وہ تمام انسانوں پر ہی نہیں تمام مخلوقات پر فضیلت رکھتے ہیں۔ ان کا کلام' ان کی دعوت' ان کی عبادات' ان کی نمازیں' ان کے روزے بلکہ تمام امور اپنے امتیوں سے افضل ہیں۔ ان کی افضیلت کی بنا پر کوئی شخص سے نہیں کہ سکتا کہ ہم پر ظلم ہوا ہے اور ہماری عبادت کو فضیلت نہیں ملی۔ حقیقت سے کوئی شخص سے نہیں کہ سکتا کہ ہم پر ظلم ہوا ہے اور ہماری عبادت کو فضیلت نہیں ملی۔ حقیقت سے کوئی شخص سے نہیں کہ سکتا کہ ہم پر ظلم ہوا ہے اور ہماری عبادت کو فضیلت نہیں ملی۔ حقیقت سے کہ انبیاء کرام اللہ کی بلند شان منتخب مخلوق ہیں۔ انبیاء کرام کے طفیل عاصل ہوتے ہیں۔ نواز ہے اور ہمیں جو پچھ تواب' برکات یا کمالات عاصل ہیں انبیاء کرام کے طفیل عاصل ہوتے ہیں۔ اللہ تعالی ان انبیاء کرام کی وجہ سے ہمیں اپنے فضل و کرم سے محروم نہیں رکھتا۔

#### نبوت کیاہے؟

انبیاء کرام کو اللہ تعالیٰ کی تمام مخلوق پر بلاشک و شہدانضلیت حاصل ہے۔ وہ عوام کے قائد اور راہنما ہیں' ان کی برابری کوئی نہیں کر سکتا۔ نہ عبادت میں' نہ خوف اللی میں' نہ خضوع و خشوط میں' نہ احکام خداوندی کے پیغام رسانی میں' نہ ریاضت میں' نہ توت برداشت میں' غرضیکہ انبیاء کرام جرحالت میں مخلوق خدا سے بلند ورجہ ہیں۔

الل ایمان کو اگر کوئی فضیلت حاصل ہوتی ہے تو وہ اللہ تعالیٰ کے خاص فضل و کرم ہے حاصل ہوتی ہے، پھر یہ فضل انبیاء کرام کے لیئے دعاؤں اور راہنمائی سے حاصل ہوتا ہے، جو شخص بھی حقیقت ایمانی میں داخل ہو گا وہ انبیاء کرام کی ابتاع سے داخل ہو گا، جو مسلمان گناہ کبیرہ کا مرتکب ہوتا ہے وہ ایمان سے محروم نہیں ہوتا۔ اس کے لیئے توبہ اور استغفار کا دروازہ کھلا ہے۔ وہ توبہ کرے تو اسے معانی مل سکتی ہے۔ اسے اگر کوئی مسلمان نصیحت کرتا ہے تو اسے حق ہے، البتہ شرک کا مرتکب ایمان سے فارغ ہو جاتا ہے۔ جو شخص تہمارے حق میں غلطی کرتا ہے اسے معانی شرک کا مرتکب ایمان سے فارغ ہو جاتا ہے۔ جو شخص تہمارے حق میں غلطی کرتا ہے اسے معانی

كروينا افضل ب-

جس شخص نے اللہ تعالی کے احکامات پر عمل نہیں کیا مگر شرک بھی نہیں کیا وہ مومن ہی رے گا' اس کے لیئے رحم کی دعا کرنا چاھیئے۔ اس کے لیئے کلمہ شمادت کے احرام کے پیش نظر مغفرت طلب كرنى جاهيئ ايس مخف كے ليئ وعاكرنے كى بھى اجازت ہے۔ اس كے ليئ بمترب ے کہ اس کے لیئے اللہ تعالیٰ سے گناہ سے توبہ کرنے کی توفیق مائے۔ جن لوگوں کے متعلق یقین ہو کہ وہ اللہ کے مجرم بیں اور وہ ضرور جہنم میں جائیں گے تو ان کے لیئے مغفرت مانگنا حرام ہے۔ ہاں الل شادت ہو تو اس کے لیئے رعا مانگنا افضل ہے او بھی کلمہ شمادت کے احرّام کے پیش نظر اگرچہ گناہوں سے بھرا ہوا ہے مگر اسے بخشن کا مستحق جانتا جا<u>ص</u>یئے۔ کلمہ شمادت وراصل افضل الاعمال ہے' ونیا بھر کی عبادات کلمہ شمادت کے مقابلہ میں کوئی حیثیت نہیں رکھتیں۔ یہ عبادات ایس ہیں کہ جس طرح زمین و آسان کی بہنائیوں کے مقابلہ میں ایک فدرہ رکھ دیا جائے۔ دوسرے لفظول میں ہم یول ان كريس كے كه شرك سب سے برا گناہ ہے اور برا جرم ہے۔ اس كے مقابله ميں زمين و آسان ك تمام كناه كيه حيثيت نبيس ركت- الله تعالى نے جس طرح كلمه شادت كو افضل الاعمال قرار ديا ے ای طرح شرک کو عظیم گناہ " ظلم عظیم " کہا ہے۔ ان الشرک لظلم عظیم ث " بیشک شرک ب سے بڑا گناہ ہے" فرمایا ومن پشرک باللّه فکانما خر من السماء 🛪 " جس نے شرک کیا كيا وه آسانوں سے ينج جاكرا-" تكاد السماوات يتفطرن منه و تنشق الارض و تخر الجبال هدا ان دعوا للرحمن و لدا ١٠ ( موزة مريم ) " قريب ع كه آمان كها يدين ور زمین شق ہو جائے اور بہاڑ گر جا ئیں اس بات پر کہ انہوں نے کما کہ اللہ تعالیٰ کی بھی اولاد

ابن ماجہ نے لکھا ہے کہ حفرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ اصل محکم کے سوا فتوئی علی ماجہ نے لکھا ہے کہ حفرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ اس موضوع پر آگے چل کر تفصیلی گفتگو کریں گے۔ ابن جرتے بن عبدالملک عن عبدالعزیز جرتے نے اس موضوع کی روایات کو بیان فرمایا ہے۔ آپ امام الحرمین تھے' آپ نے اسم ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ ہے گئی بار مناظرہ کیا گروہ کبھی تعصب کا شکار نہیں ہوئے۔ (آپ کے بعض مناظرہ لکی تفصیل آگے بیان کریں گے) اور نہ ہی امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے ان

اختلافات کی بنا پر کسی سے دشمنی رکھی۔ حضرت امام نے اپنی مند میں ابن جر یک کی روایات کو بیان کیا ہے، ہاں بھی بھی کرتے گرید علی عند سے شکایت کرتے، گلبہ و شکوہ بھی کرتے گرید علی شکایات تھیں۔

### خليفه وفت كا قائم مقام

حضرت امام اعظم رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ اگر خلیفہ وقت فوت ہو جائے تو اس کا قائم مقام قاضی ( چیف جسٹس ) ہو گا جو خلیفہ کے احکامات کو جاری کرے گا۔ ای طرح دو سرا سربراہ مملکت مقرر ہونے تک ولا بیت و حکومت کے سیاسی امور پر بھی احکامات قاضی ہی جاری کرے گا۔ خلیفہ کے آنے یا مقرر ہونے کے بعد قاضی کے احکامات کی حقیقت صرف فیصلہ کی ہوگی۔ امام سختیانی محتمتہ اللہ علیہ روم کے قاضی ( چیف جسٹس ) تھے۔ آپ فرماتے ہیں کہ ججھے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے بتایا کہ سب سے اہم اور مشکل مسائل حد ' علف بالطاق' قبل النکاح اور حقوق خفتی ہیں۔

#### عطاء بن بحرباح روائيه سے ملاقات

حضرت امام ابوحفیہ رضی اللہ تعالی عنہ عطاء برائی رباح کی خدمت میں حاضر ہوئے انہوں نے بوچھا کہاں ہے تشریف لائے ہو؟ آپ نے بتایا عراق ہے ' بوچھا کیا عقائد رکھتے ہو؟ آپ نے فرمایا ان میں سے ہوں جو تقدیر کی محکذیب نہیں کرتے اور نہ کسی مومن کو گناہ کی وجہ سے کافر کھتے ہیں اور نہ سلف صالحین پر سب و شنم کرتے ہیں۔ حضرت عطاء برائی طرباح مرافیے نے ہاتھ میں انگلیوں کو کیٹر کر کما کہ اسلاف کے عقائد کسی تھے۔ ابرائی کرباح رافیے مکہ کے امام تھے۔ حضرت امام ابوحفیفہ رضی کیٹر کر کما کہ اسلاف کے عقائد کسی تھے۔ ابرائی کرباح رافیے مکہ کے امام تھے۔ حضرت امام ابوحفیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے بوا فقیہ کون ہے؟ آپ نے فرمایا ابن ابی سلیمان مرافیے سے براہ فقیہ کون ہے؟ آپ نے فرمایا ابن ابی سلیمان مرافیے سے براہ جامع انسان کوئی نہیں۔ حضرت امام ابوحفیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے اکثر احادیث کی روایات سے براہ جامع انسان کوئی نہیں۔ حضرت امام ابوحفیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے اکثر احادیث کی روایات آپ سے بی لی ہیں۔

جاتی ہے۔"

## الحمش امام ابوحنیفہ نصفی النہ ہے کمالات کا اعتراف کرتے ہیں

یہ تمام احادیث ' روایات اور ان کی اساد سننے کے بعد اعمش نے حضرت امام اعظم ابوحنیف رضی اللہ تعالی عند کو کما بس بس میں نے جو احادیث سو دنوں میں بیان کی تھیں آپ نے ایک ہی الست میں بیان کرویں۔ مجھے امید ہے کہ آپ ان تمام احادیث پر عمل بھی کریں گے۔ پھر انہوں لے کما کہ اے فقهائے اسلام آپ لوگ عطار ہیں اور ہم دوا فروش ہیں مگراے ابو حذیفہ! تم تو " جامع

ایک محنص امام ابوحنیفه رضی الله تعالی عنه کی خدمت میں حاضر ہوا اور عرض کی مجھے جنابت اولی تو میں نے اپنی بیوی کو کما کہ میں قتم کھاتا ہوں کہ اگر میں نے عسل جنابت کیا تو تحقیم تین القيل مول كى كيا آب مجھے بچا كتے ہيں؟ امام ابوصنيفه رضى الله تعالى عنه اس مخص كا ہاتھ بكر كر م کھڑے ہوئے اور چل بڑے اور ایک سرکے کنارے پر چلنے گئے، امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنه ف اجانك اس مخص كو رهكا وے كر نهر ميں جھينك ويا۔ وہ پاني ميں غوطے كھانے لگا' ووب لگا' آپ ف زورے کما ہمت کو انسرے باہر نکلو میرا ہاتھ تھام لو او وہ باہر نکل آیا تو آپ نے فرمایا اب تم ي ہو' جا كراني بيوى سے صحبت كر سكتے ہو' تم پاك ہو گئے ہو اور قتم بھى نہيں ٹوٹى كيونكه تم نے 

ایک مخص نے تین قتمیں کھالیں اور ہر قتم پر اپنی ہوی کو تین طلاق دیے کا اعلان کیا۔ س نے کہا کہ میں جنابت کے بعد سارا دن عسل نہیں کروں گا۔ اس کے باوجود میں دن میں پانچ الیس رک نہیں کول گا گر آج ہی اپنی بوی سے ضرور جماع کرول گا۔ حضرت امام ابو حفیفہ رضی تعلق عند نے اس مسلد کا حل میہ بنایا کہ وہ بعداز نماز عصراینی بیوی سے جماع کرے اور عسل نہ كس حتى كم سورج دوب جائه اس طرح وه سارا دن جنبي ربا عبب سورج دوب جائ تو فورا س كر لے اور مغرب كى نماز يڑھ كے اس طرح اس نے سارى نمازيں اواكر ليس- اس صورت س نے پانچ تمازیں بھی اوا کرلیں 'سارا ون جنبی بھی رہا اور عورت سے جماع بھی کر لیا۔

## سیرهی پر چردهی بیوی کو تین طلاق

ام اعظم رضی اللہ تعالی عنہ کے زمانہ میں کوفہ میں ایک عورت سیڑھی پر چڑھی تو اس کے خادند نے اسے کہا اگر تو سیڑھی پر مزید اوپر چڑھی تو تخفے طلاق 'اگر تو سیڑھی سے نیچے اتری تو بھی تخفے تین طلاق۔ اس صور تحال سے بچنے کے لیئے لوگ حضرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے پاس گئے اور فرمانے گئے کہ چند لوگ اس سیڑھی کو نیچے اثار لیں 'نہ اس کی بیوی اوپر چڑھ سکے گی 'نہ اس نے اترا بیٹ کے اترا بیٹ کے اترا بیٹ کے اترا بیٹ کورتیں سیڑھی کے اسے نیچے اترا پر مورتیں اور وہ عورت سیڑھی سے اترنے کی بجائے عورتوں کے کندھوں پر بیٹھ کر نیچے کھڑی ہو جائیں اور وہ عورت سیڑھی سے اترنے کی بجائے عورتوں کے کندھوں پر بیٹھ کر نیچے آجائے تو پھر بھی طلاق مشروطہ سے نیچ کھڑی ہو واقع نہیں ہوگ۔

ایک دن ایک شخص نے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے عرض کی کہ حضور میں نے اپنی بیوی کو نمایت خوبصورت کپڑے پہنے دیکھا تو میں نے کہا کہ اگر تم نے یہ کپڑے پہنے رکھے تو تہیں تین طلاقیں۔ تین طلاقیں اور اگر میں نے یہ کپڑے پہنے ہوئے تم سے جماع نہ کیا تو پھر بھی تہیں تین طلاقیں۔ میں کوفہ کے تمام فقہاء سے اس مسئلہ کو دریافت کر آیا ہوں گر کسی سے جواب نہیں بن پڑا۔ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا تم اس کے کپڑے خود پہن لو اور اس سے جماع کرو تو قتم سے بری الذمہ ہو جاؤ گے۔

#### غلام الوحنيف لفتقالله

ایک عورت کے ہاں جڑواں نے پیدا ہوئے ایک کی پشت دو سرے کی پشت ہے جڑی ہوئی محق ۔ ان جس سے ایک مردہ اور دو سرا زندہ تھا۔ علمائے کوفہ نے فتویل دیا کہ مردہ نیچ کے ساتھ زندہ نیچ کو بھی وفن کر دیا جائے۔ جب یہ مسئلہ امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے سامنے لایا گیا تو آپ نے زندہ نیچ کو بلا وجہ وفن کرنے سے روک دیا اور یہ تدبیر نکالی کہ مردہ نیچ کو بلنچ رکھ کر مٹی جس دفن کر دیا جائے اور زندہ بچہ اوپر رہے اور اسے وہاں ہی خوراک بہم پہنچائی جائے حتیٰ کہ مٹی مردہ نیچ کے بدن کو بے حس کر دے اس طرح زندہ بچہ نیچ جائے گا۔ (غالبًا اس وقت اپریشن کی سے

سولتیں نہیں تھیں جو آج میڈیکل سائنس نے مہیا کی ہیں۔) لوگوں نے ایبا بی کیا کچھ عرصہ زندہ علی پرورش ہوتی رہی اور مردہ بچ کی لغش کو زمین چاٹ گئی۔ اب زنرہ بچ کو علیحدہ کر لیا گیا اور کھی عرصہ علاج ہوا تو وہ تذر رست ہو گیا اور کافی عرصہ تک زندہ رہا۔ اس بچ کو لوگ غلام ابو حذیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کما کرتے تھے۔ یہ واقعہ ابو بکر محمد بن عبداللہ فقیہ نے اپنی یادشتوں کے مجموعے میں لکھا ہے۔

ابن ابی کیلی کو حفرت امام ابو حنیفه رضی الله تعالی عنه بر علمی برتری حاصل تو نه تھی مگر اسی خلیفہ عباسی ابوجعفر کے دربار میں رسائی تھی۔ وہ اکثر خلیفہ کے دربار میں آیا جایا کرتے "مگرالمام و ضيفه رضى الله تعالى عنه كى عادت تقى كه وه دربار دارى سے اجتناب فرماتے۔ أيك دن دونول و کول کو بیک وقت خلیفہ ابوجعفر کے وربار میں حاضر ہونے کا موقعہ ملاتو امام ابوحنیفہ رضی اللہ تحالی سے ابوجعفر کے سامنے ہی ابن ابی کیل نے ایک مسئلہ بوچھا کہ ایک شخص نے کپڑا پیج کر کہا کہ وہ س كے ہر عيب سے برى الذمه ہے اور خريدار في تبول كر ليا۔ امام صاحب في جواب ديا كه واقعى و برى الذمه مو جائے گا- اين اني ليلي كمنے لكے وہ برى الذمه نہيں موكاجب تك وہ اس چيز كے عيب و اتھ رکھ کرنہ کے کہ یہ عیب ہے۔ یہ بات آئی گئی ہوگی کچھ دنوں بعد دربار میں دونوں دوبارہ کٹے ہوئے تو امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے خلیفہ ابو جعفر کے سامنے ابن ابی کیلیٰ سے بوچھا کال ا شموال بنو عبدا لمطلب کی ایک خاتون نے ایک غلام بیچا اور اس کے ہر عیب سے برات کا اظہار الله اگر اس غلام کے ذکر پر برص کا مرض ہو تو کیا وہ بی بی ذکر کے واغ پر ہاتھ رکھ کر کھے گی کہ اس سے سے نقص ہے۔ این الی کیلی نے کما ہاں! مید بات من کر ابوجعفر سخت ناراض ہوا اور کما ابی لیلیٰ تم ل بنوہاشم کی اہانت کرتے ہو اور اپنے اصول سے گتاخی کے مرتکب ہوئے ہو' جاؤ میرے دربارے 差 جاؤ اور دفع ہو جاؤ۔ اس طرح امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے مسئلہ بوچھنے پر انی کیلی کی ساری رعونت جاتی رہی۔

حرت امام باقر رضی الله تعالی عنه سے ایک مکالمه

ایک دفعہ حضرت امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ حج پر گئے۔ آپ مدینہ منورہ میں حاضر

المرابعة الم

ہوئے تو آپ کو محمد بن علی بن الحسین بن علی رضی الله عنهم ملے اور کماتم وہی ابو حلیفہ ہو جس فے ہارے دادا کے مذہب اور احادیث کو قیاس میں بدل دیا ہے۔ آپ نے عرض کی معاذاللَّه میں کون ہو تا ہوں الی جرات کرنے والا - امام باقر ( ابوجعفر) رضی اللہ تعالی عنہ نے فرمایا تحقیق سے ثابت كوكه تم واقعي قياس سے احاديث كو نهيں بدلتے۔ حضرت امام ابو حنيفه رضي الله تعالى عنه في عرض کی حضور آپ اپنی مجلس میں اپنی شان بان کے ساتھ تشریف رکھیں میں حاضر ہو کر دو زانو بیٹھ کر وضاحت كرنا مول- ميرى نگاه ميس آپ نائب رسول طايز مين اور ميس آپ كى مجلس مين وي اي حاضری دینا چاہتا مول جس طرح حضور نبی كريم صلى الله عليه واله وسلم كى بارگاه ميں أيك غلام حاضر ہوتا ہے۔ سیدتا امام باقر ( ابوجعفر ) رضى الله تعالى عنه اپنى بورى شان سے مند بر تشريف فرما ہوئے۔ الم ابوحنیفه رضی الله تعالی عنه دو زانو مو کر سامنے بیٹھے اور عرض کی حضور میں تین گذارشات کر چاہتا ہوں۔ آپ مجھے ارشاد فرمائیں۔ مرد کمزور ہے یا عورت ؟ حضرت امام باقر رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا عورت کزور ہے۔ آپ نے پوچھا کہ وراثت میں عورت کا کتنا حصہ ہے ؟ اور مرد کا کتنا حصہ ہے۔ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے عرض کی حضور پھرورانت میں عورت کا کتنا حصہ ہوگا ؟ آپ نے فرمایا عورت کو ایک حصہ اور مرد کو دو حصہ ملیں گے۔ امام اعظم مطبحہ نے عرض کی حضور آپ کے دادا جناب محمد مصطفیٰ صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم کی حدیث کی روشن میں ہی فیصلہ ہے 'اگر میں اس وراثت کا فیصلہ قیاس یا عقلی کرتا تو کمزور کو دو حصے دیتا اور مضبوط کو ایک حصہ مرمیں تو حضور ني كريم صلى الله عليه وآله وسلم كي حديث يريابند مول-

پرعرض کی حضور جھے یہ بتائے کہ نماز انضل عبادت ہے یا روزہ ؟ آپ نے فرمایا نماز انضل ہے۔ حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے عرض کی اگر میں قیاس سے فیصلہ کرتا تو جو عورت جیض سے پاک ہوئی ہے اسے تھم دیتا کہ وہ قضا شدہ نمازیں لوٹائے اور روزے معاف کرا دیتا۔ آپ نے تیمرا سوال کیا اور عرض کی حضور شریعت میں پیٹاب زیادہ نجس اور پلید ہے یا مٹی ؟ امام ہاقر رضی اللہ تعالی عنہ فرمایا پیٹاب کرنے والے کو اللہ تعالی عنہ فرمایا پیٹاب کرنے والے کو عسل کرنے کا تھم دیتا اور محتلم یا جنبی کو صرف وضو کرنے کا کامتا۔ یہ باتیں من کر حضرت امام باقر رضی اللہ تعالی عنہ الحق کیا (معافقہ فرمایا) اور نمایت لطف و

كرام عيش آئے۔

حضرت ابوبكر محد بن عبدالله نے به واقعہ بيان كيا ہے كم امام ابوحنيف رضى الله تعالى عنه ك نانہ میں کوفہ میں ایک محلے کا نام " لولیہ " تھا' آپ وہاں ٹھمرے۔ اس محلے سے ایک نمایت خوبصورت اور حسین و جمیل عورت کا گزر ہوا اور جب وہ ایک حکران رئیس کے گھر کے سامنے سے رری تو امیر آدمی نے اس عورت کے حسن و جمال کی ایک جھلک دیکھ کراہے گھرے اندر تھییٹ لیا اور وہ واپسی کا نام نہیں لیتا تھا۔ عورت کا خاوند بے حدیریشان تھا، کسی نے اسے کماتم حضرت امام و منیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے پاس جاؤ شاید تہمارے مسلمہ کا حل نکل آئے۔ وہ ووڑا ووڑا گیا اور سارا ماجرا سنا دیا۔ آپ نے فرمایا بد بری آسان بات ہے عم بناؤ تمهارا سامان کمال ہے اور کمال رہتے اوع عرض کی ہم ایک جنگل جبانہ کے پاس ازے ہیں۔ حضرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ اور اللم الى كيلى دونوں اس كے ذريب ير كئے۔ ان كے ساتھ كوف كے علاء كرام كى ايك جماعت بھى تھى ( بے معاملہ اس کینے ور پیش آیا کہ ابن ابی کیلیٰ کی عدالت میں سائل نے وعویٰ کیا تو امیر آدمی نے انکار کر دیا تھا کہ اس کے پاس اس شخص کی عورت ہے<sup>،</sup> وہ تو میری این ہے۔) آپ نے فرمایا اس جنگل یں کوفہ کی دس نہایت حسین و جمیل عورتوں کو دعوت دی جائے اور تھم دیا کہ ہر عورت علیحدہ علیحدہ اس مخف کے سامان کے پاس جائے۔ جو عورت بھی سامان کی طرف بردھتی اس پر کتے بھو تکتے اور ہر ورت کول سے ڈر کروالی بھاگ آتی لیکن جب اس مرد کی عورت جو ان وس میں سے ایک تھی سان کی طرف برھی تو کتوں نے بھو تکنے کی جائے وم ہلانا شروع کر دیا۔ قاضی نے فیصلہ کیا سے ورت اس مرد کی ہے اسے اس کے حوالے کیا جائے اور رکیس کو سزا دی۔

## الم ابوصنيفه الفتي الماتيجة سے أيك رافضي كامكالمه

کوفہ میں ایک بوڑھا رافضی تھا جو ہر وقت ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی دل آزاری اور معنی و تشنیع کرنا رہنا تھا۔ وہ " شیطان اللاق " کے نام سے مشہور تھا۔ برا باتونی اور بات سے بات مشہور تھا۔ ایک دن حضرت امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ جمام میں واضل ہوئے اور یہ رافضی سے پہنچ گیا اور کہنے لگا ابوضیفہ! تممارے استاد فوت ہو گئے ہیں شکر ہے ہم نے اس مخض سے

۱۲۸ مکتبهنبو

نجات پائی۔ (حضرت حماد ملیفیہ کو فوت ہوئے ایک ماہ گزر چکا تھا)۔ آپ نے فرمایا ہمارے استاد تو فوت ہوتے رہیں گے ، رصلت کرتے رہیں گے گر تمهارا استاد بھیٹہ زندہ ہے اور زندہ رہے گا کیونکہ اے اللہ تعالیٰ نے من المنظرین کمہ کر مملت وی ہے، وہ قیامت تک نہیں مرے گا۔ وہ بیہ بات من کر جس عنسل خانے میں امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نما رہے تھے نگا ہو کر داخل ہو گیا۔ امام صاحب ملیفیہ نے آنکھیں بند کر لیں۔ اس نے کما ابو صنیفہ ! تم کب سے اندھے ہوئے ہو؟ فرمایا جس ون سے اللہ نے تیری غیرت اور جیاء کو ختم کر ویا ہے۔ ایک روایت میں ہے کہ امام صاحب ملیفیہ نے اس وقت لباس بہن لیا تھا گر رافضی نگا کھڑا تھا۔ آپ نے منہ بھیرلیا اور بیہ شمریڑھا۔

مناقب امام اعظم

اقُول وفي قولي بلاغ و حكمة وما قلت قولا جئت فيه بمنكر الا يا عبادالله خافوا الهكم فلا تدخلوا الحمام الا بميزر

(ترجمه) " میں تہیں تھیت کرتا ہوں اور میری تھیت میں حکمت و دانائی ہے۔ میں اس میں ایسی کوئی بات نمیں کموں گا جس میں بزائی ہو۔ اے اللہ کے بندو! اپ اللہ سے ڈرو' جمام میں نگے نہ آجایا کو بلکہ کیڑا باندھ کر آیا کو۔"

جن دنوں حضرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کمہ کرمہ میں قیام فرما تھے تو وہاں کا گورنر عیسیٰ بن موی تھا' اے ایک فیصلہ میں ایک شرط کھوانے کی ضرورت آئی تو اس نے وقت کے دو برے فقیہ علاء ابن شہرمہ اور ابن ابی لیلیٰ کو طلب کیا' گر ابن شہرمہ جو شرط کھواتے اے ابن ابی لیلیٰ بیش کرتے اے ابن شہرمہ توڑ دیتے۔ اس دوران امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ بھی تشریف لے آئے' آپ کو گور زعیسیٰ بن موی نے شرط کھوانے کا کھا' آپ نے فرمایا کاتب کو بلائے وہ میرے پاس میٹھے میں اے کھوا دیتا ہوں۔ آپ نے کاتب کو جو تحریر کھوائی اے توڑنے کی کسی کو جرات نہ ہوئی۔ چنانچہ سے تحریر ابن شہرمہ اور ابن ابی لیلیٰ کے سامنے پڑھی گئی تو دونوں انگشت بدنداں ہو کر رہ گئے۔ جب وہ گور نر کی محفل سے باہر نگلے تو ایک نے دوسرے کو کہا ویکھا اس جولاہے (کہڑا بینے والا) نے مسئلہ کو کیے حل کر دیا۔ دوسرے نے کہا اس کی تحریف نہ کرو ایک جو ایک خوانے کی جو ایک جو ایک کی جو ایک کی خوانے کو ایک خوانے کو ایک خوانے کی جو ایک کی خوانے کو ایک کی خوانے کی خوانے

#### ب علاء كو ونك كرك ركه ويا ب-

#### تبيز كامستله

ایک دن ابن ابی لیل نے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے بوچھا کہ آپ نییز کو حلال قرار دیتے ہیں اور اس کی بجے و شرا کو جائز گردانتے ہیں۔ آپ نے فرمایا ہاں! اس میں کوئی شک نہیں ابی لیل نے کما آپ بیند کریں گے کہ آپ کی ماں نبیز بچا کرے' آپ نے اس کی بات کا برا نہ سیا گر فرمایا کہ تممارے ہاں غنا ( سرو و ) حلال ہے اور اس کا سننا جائز ہے' ابن ابی لیل نے کمال ہاں! دالانکہ علماء کرام کے نزدیک غنا و سرو و کی ممافعت ہے ) آپ نے فرایا کیا آپ کی والدہ مغنیہ ( حالانکہ علماء کرام کے نزدیک غنا و سرو و کی ممافعت ہے ) آپ نے فرایا کیا آپ کی والدہ مغنیہ ( علی بجانے والی ) بن جائے تو آپ برداشت کریں گے ابن ابی لیل چپ ہو گئے اور غصہ بی گئے۔

#### عدت کے دوران تکاح

حسن بن زیادہ لولوئی فرماتے ہیں کہ میں نے خود امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے سنا ہے بوامیہ کے خلفاء کی شرعی مسئلہ کی دریافت کے لیئے موالی (غیر عرب غلام) عالم دین کو دربار میں بلاتے تھے، گر فلان خلیفہ نے موالی علمائے دین کو بھی بلاتا شروع کر دیا۔ اس خلیفہ نے مجھے میں بلایا، میرے ساتھ دو سرے علماء کرام بھی تھے۔ میں گیا تو دربار میں ابن شہرمہ اور ابن ابی لیکی سول پہلے سے موجود تھے۔ فلیفہ نے ایک سے بوچھا اس عورت کے متعلق تمہارا کیا خیال ہے جس فلی کو فورا علیدہ کر دینا چاہئے اور انہیں سزا دی جائے اور مقررہ کردہ مربیت المال میں جمع کرایا جائے اور اس کے بعد وہ بھیٹہ بھیٹہ جدا رہیں۔ خلیفہ نے دو سرے کو مخاطب کر کے پوچھا اس نے بھی طرح کا فتوئی دیا۔ پھر فلیفہ نے امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالیٰ کو مخاطب کر کے پوچھا تو آپ نے دل سے اللہ و انالیہ راجعوان پڑھ کر کما اے خلیفہ وقت! میں سب سے پہلا شخص ہوں جے موالی ہونے کے بوجود آپ نے اپن طلب فرمایا ہے، اس مسئلہ میں ججھے حضرت علی کرم اللہ وجہہ کا آیک سے بوجود آپ نے اپن طلب فرمایا ہے، اس مسئلہ میں ججھے حضرت علی کرم اللہ وجہہ کا آیک سے بوجود آپ نے اپن طلب فرمایا ہے، اس مسئلہ میں ججھے حضرت علی کرم اللہ وجہہ کا آیک سے بوجود آپ نے اپن طلب فرمایا ہے، اس مسئلہ میں ججھے حضرت علی کرم اللہ وجہہ کا آیک سے بوجود آپ نے اپن طلب فرمایا ہے، اس مسئلہ میں ججھے حضرت علی کرم اللہ وجہہ کا آیک سے بوجود آپ نے اپن طلب فرمایا ہے، اس مسئلہ میں ججھے حضرت علی کرم اللہ وجہہ کا آیک سے بوجود آپ نے کا موقعہ دیا جائے اور اس قول پر بجمود ساکرتے ہوئے میں اللہ کے دین کی بات عرض

مکتبهنبریه ا

کر تا ہوں' آپ خود فیصلہ کرلیس کہ میں غلط کہنا ہوں یا صحح ۔ میں اس قول کو بیان کر تا ہوں اور اس پر عمل بھی کر تا رہوں گا۔

آپ نے حضرت علی رضی اللہ تعالی عنہ کے فیصلہ پر اس لیئے زیادہ زور دیا کہ بنوامیہ کے خلفاء حضرت علی رضی اللہ تعالی عنہ کے قول کو وقعت نہ دیا کرتے تھے۔ حضرت امام ریالیہ نے فرمایا۔ اے ظیفہ! اللہ حمیس نیکی کی توفق دے اس مسلم پر ود بدری صحابہ کرام اختلاف کرتے ہیں۔ خلیف نے یوچھا انہوں نے کیا کما؟ آپ نے فرملا ان میں سے ایک نے تو یمی بات کی جو ابن شرمہ اور ابن انی کیل نے بیان کی ہے علیفہ نے یوچھا کہ بیا کس کا قول ہے ؟ آپ نے بتایا کہ بیا قول حفرت عمر فاروق رضى الله تعالى عنه كا ب- خليفه في فرمايا ووسرا قول كس كلي ؟ حضرت امام ابو حنيفه رضى الله تعالی فرمانے گئے کہ دوسرا قوال سے ہے کہ جن میاں بیوی نے عدت کے اندر نکاح کر لیا ہے انہیں عدت کی محمیل تک علیحدہ علیحدہ کر دیا جائے وہ عورت عدت گزارے ' یہ عدت گزارنے کے بعد وہ عورت نئ عدت گزارے 'بشرطیکہ سابقہ عدت کے دوران مرد نے عورت سے جماع کیا ہو اس کے بعد ودنول کو علیحدہ کر دیا جائے۔ مرد سے مر لے کر عورت کو دیا جائے اسے بیت المال میں جمع كرانے كى ضرورت نيس- اب عورت آزاد ب وه ائني مرضى سے جب چام نكاح كرے- اگر وه ای مردے نکاح کرنا چاہتی ہے تو مرمقرر کر کے اس سے بھی نکاح کر عتی ہے۔ خلیفہ نے دریافت كيا ابوحنيفه! ميه قول كس كام ؟ آپ نے فرمايا حضرت على كرم الله وجه كاله خليفه نے كما ابوتراب كا ؟ آپ نے کما ہل او راب رضى الله تعالى عنه كال اب حضرت لهم ملفيد نے خليفه كو كما آپ بتاكيں كريد قول كيما ہے ؟ خليف نے سرجھكا ديا اور اتن كرى سوچ ميں چلا كياكہ اس كے ہاتھ ميں جو ككرى تھی اس سے زمین کریدنے لگا۔ سر اٹھا کر لہام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے کما یہ قول حدیث شریف کے زیادہ قریب ہے اور مجھے بند ہے۔

میں کتا ہوں کہ یہ قول (حدیث) امام ابوالقائم بن علی رازی نے نقل کیا ہے۔ رازی ہدان میں کتا ہوں کہ یہ قول (حدیث) امام ابوالقائم بن علی رازی نے نقل کیا ہے۔ رازی ہدان میں آئے ہوئے تھے' انہوں نے حضور صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم کے صحابی محر بن مقاتل رضی اللہ تعالی عنہ سے یہ حدیث سی تھی۔ اس میں صرف اتنا اضافہ ہے۔ ابن ہبیرہ نے امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے کہا تم کس قول کو قاتل عمل رکھتے ہو۔ آپ نے فرمایا ہمارے نزدیک سیدنا عمر

دق رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا قول زیادہ معترب اور وہی افضل ہیں گر آپ حضرت علی کرم اللہ وجہہ فول کو ترجیح ویتے ہیں کیونکہ اس دور میں حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے اقوال کو چھبایا جارہا ہور بنوامیہ کے حکام ہے ؤر کر اگر حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا تام بھی لیا جاتا ہے تو ابو زینب کہ خواجہ حسن بھری رضی اللہ تعالیٰ عنہ جیسے بائد پلیا عالم وین بھی جب صرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا قول پیش کرتے تو فرمایا کرتے اخبر نا ابوزینب ان دنوں حضرت می رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا تام لینا جرم سمجھا جاتا تھا اور اسے سزا دی جاتی تھی خصوصاً مروان کا ذہانہ تو میں طالمانہ دور تھا۔ وہ بات بات پر اہل بیت کی مخالفت کرتا تھا اور نمایت سختی سے پیش آتا۔ لوگ می خالف دور تھا۔ وہ بات بات پر اہل بیت کی مخالفت کرتا تھا اور نمایت سختی سے پیش آتا۔ لوگ می خالف میں فراست سے خلیفہ بنوامیہ کے دربار میں حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ سے بات کر جاتے ' یہ حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ سے تول کو پیش کر کے خلیفہ کی گردن جھکا دی ' مسئلہ کی تھانیت بھی واضح فرما دی اور حضرت عمر سے قول کو پیش کر کے خلیفہ کی گردن جھکا دی ' مسئلہ کی تھانیت بھی واضح فرما دی اور حضرت عمر سے میں اللہ عنہ کے قول کو پیش کر کے خلیفہ کی گردن جھکا دی ' مسئلہ کی تھانیت بھی واضح فرما دی اور حضرت عمر سے دوت کر سے میان فرما کر حضرت علی کر م اللہ وجہہ کی عظمت کا اعتراف کرایا۔

#### کونہ کے گورنر کو اغتباہ

حضرت ابن ابی ملیح کوفہ میں تشریف لائے 'وہ جمعہ کا دن تھا' ان دنوں کوفہ کا امیر خالد بن میراللہ القسری تھا۔ یہ بنوامیہ کا سخت ترین دور تھا۔ خالد خطبہ کے لیئے مغبر پر بیٹھا تو مسائل کو موات اور کتابوں سے حوالے دینے میں اتا مگن ہو گیا کہ ظہر کا آخری دفت آگیا اور عصر کا دفت میں سے قریب ہو گیا۔ مجمع سے ایک فخص اٹھا اور زور دے کر پکارا السلوۃ!السلوۃ!جمع سے ایک فخص اٹھا اور زور دے کر پکارا السلوۃ!السلوۃ!جمع نے اوجھا یہ عصر کا دفت ہوئے۔ ابن ابی ملیح نے پوچھا یہ موں فض ہے ؟ لوگوں نے کہا یہ ابو حقیفہ رضی اللہ تعالی عنہ ہیں۔

اس واقعہ کو دوسرے واقعہ نگاروں نے اس طرح بیان کیا ہے کہ جب نماز کا وقت جاتے مائی دیا تو امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے خلیفہ کی طرف کنریاں بھینکتے ہوئے کما السلوة! ' مائی دیا تو پڑھ لی گئی گراس گتاخی پر خلیفہ نے تھم دیا کہ اس فخص کو گرفتار کر کے ہمارے دربار سے بیش کیا جائے۔ خالد نے پوچھا آپ نے ایسا کیوں کیا ؟ آپ نے فرمایا نماز کسی کا انتظار نہیں کرتی '

پھر فرایا اللہ کی کتاب اور اس کے احکام پر عمل کرنے کے لیے آپ زیادہ حقدار ہیں۔ اگر آپ ق اسے پاہل کرتے رہے تو ساری امت کا کیا ہے گا۔ اضاعوا الصلوۃ وا تبعوا الشہوات ﴿ اللهِ لَوْلُول نِے نمازیں ضائع کیں اور انسانی شہوات کو اپنایا۔" امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو گرفار کرکے لایا گیا تو خالد نے بوچھا کیا آپ کا ہماری طرف کنگریاں پھیکنا صرف نماز کے لیے ہی تھا یا کوئی اور غصہ یا احتجاج تھا۔ آپ نے فرمایا جس نے صرف نماز کو نظرانداز کرنے کے لیے کنگریاں پھیکی تھیں اس پر آپ کو بری کردیا گیا۔

## ایک نقط بدل کر مسئلہ حل کر دیا

ایک ون امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عند کو ابوھبیرہ نے کی کام کے لیے بالیا وہ اکثر آپ کو کی مشکل کام کے لیے بالیا کرتے تھے۔ حضرت امام مالیے نے دیکھا کہ ابوھبیرہ کے سائے سونے کی ایک نمایت ہی خوبصورت انگشری رکھی ہے اور اس کو دیکھ دیکھ کر نمایت مغموم ہیں۔ آپ نے پوچھا یہ پریشانی کیوں ہے ؟ کہنے لگے میں اس انگشتری کو پہننا چاہتا ہوں مگر اس پر کسی اور کا نام منقش ہے اس سے بین نہیں سکتا۔ حضرت امام مالطی نے فرمایا مجھے دکھائے امام صاحب مالطی نے و یکھا تو اس پر لکھا تھا "عطاء بن عبداللہ " آپ نے فرمایا کہ نقاش کو کمیں کہ " بن " کو " من " بنا وے۔ عبد کی ب کا نقط اڑا دے ' صرف ایک نقط اڑا کر " م " پڑ جائے تو یہ اس طرح پڑھا جائے گا- "عطاء من عندالله" وه محض نقاش كى پاس كيا تو مسله حل موكيا اور ابوهبيره ن انگشرى پن كرخوشى كا اظمار كيا اور آپ كى دانائى اور بصيرت كى داد دى كه آپ نے ايك لمحه مين ايك نقط ے مسلہ عل کر دیا۔ آپ گر جانے کے لیئے اٹھے تو ابوھبیرہ نے عرض کی حضرت آپ بار بار میرے گھر آیا جایا کریں آکہ مجھے آپ کی ضروریات کا خیال رہے اور ان ضروریات کو پورا کرتا رہا كول- آب نے فرمايا ميرا آپ كے ہال بار بار آنا مجھے فتنے ميں ذال دے گا۔ اگر آپ مجھ سے فيلے كرنے كى رائے ليس كے تو اس پر عمل نہيں كريں كے تو جھے دكھ ہو گا اور اگر ميں آپ كو خوف ولاؤل تو آپ ڈرتے رہا کریں گے۔

یاد رہے جب خلیفہ عباسی منصور نے حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو دربار میں



انے جانے کا کما تو آپ نے یمی الفاظ اے بھی کے تھے ، پھرایک وقت آیا کہ آپ نے ایے بی الفاظ کہ کے گور نرعیسیٰ بن مویٰ کو کمے تھے۔

## الم جعفر صادق نفظ النام؟، این زمانه کے بہت بوے نقیہ تھے

حسن بن زیاد لولوکی فرماتے ہیں کہ میں نے حضرت امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ سے سا فرایا کرتے تھے کہ میں نے اپنے زمانے میں امام جعفر صادق رضی اللہ تعالی عنہ سے زیادہ فقید کسی کو سس دیکھا۔ جب انہیں ابوجعفر منصور خلیفہ عباسیہ کے دربار میں بلایا گیا تو آپ نے ایک آدمی بھیج کر کے بھی بلالیا اور قرمایا کہ منصور لوگوں کو معیبت میں والے کا ارادہ رکھتا ہے۔ آپ چند سوالات وین میں رکھ لیس تاکہ اس کی سوچ کو بدل دیا جائے۔ آپ نے چالیس سوالات وہن نشین کر لیئے اس دوران منصور نے مجھے دربار میں طلب فرمایا میں گیا تو دیکھا کہ حضرت جعفر صادق رضی اللہ تعالی عد ظیفہ کے واکیں ہاتھ تشریف فرما ہیں اس وقت مجھے جعفر بن منصور سے کوئی ور سیس تھا لیکن یں اہام جعفر صادق رضی اللہ تعالی عنہ کے رعب سے مرعوب تھا۔ میں نے السلام علیم کما تو منصور نے مجھے اپنے پاس میٹھنے کو کما' منصور نے حضرت امام جعفر رضی اللہ تعالی عند کو کما کیا بھی ابو حنیف رضى الله تعالى عنه بين آپ نے كما بال! كهر ميرى طرف مخاطب موكر كما ابوطيف امام جعفر رضى الله تحالی عنہ سے کچھ سوالات کریں' آپ سوال کرتے تو اہام جعفر رضی اللہ تعالی عنہ جواب دیتے جاتے' ت سے مسائل میں آپ فرماتے یہ اہل مدینہ کا نظریہ ہے، بعض اوقات فرماتے یہ کوف کے علماء کا الريه ہے البحض او قات فرماتے اس ير علائے ميند اور علائے كوف دونوں متفق بين بهت سے مسائل س آپ علائے کوفہ کے نظریہ کو ترجیح دیتے اور بہت سے مسائل میں آپ علائے مدینہ کے نظریہ کو الله فرماتے۔ میں نے چالیس مسائل پوچھ لیے 'باقی کوئی مسلم ند رہا اور ند ہی مزید بحث و استفسار کی سرورت رہی۔ میں نے اعتراف کیا آج امام جعفر صادق رضی اللہ تعالی عنہ سے بردھ کر کوئی فقیہ سے۔ وہ ونیائے اسلام کے ائمہ کے اختلافات پر بھی نگاہ رکھتے ہیں' پھران کے صحیح فیصلوں کی تائید می کرتے ہیں۔

#### وراثت كاأيك مئله

حضرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے لوگوں نے سوال کیا کہ ایک آدی مرگیا اس کے بھائی اور ایک سال رہ گیا۔ اس کا سارا ترکہ (ورش) اس کے بھائی کو وے ویا گیا اور اس مللہ محروم کر دیا گیا' آپ اس پر روشنی ڈالیس۔ آپ نے کتنا خوبصورت جواب دیا' آپ نے فرمایا اس محص نے ایک عورت سے نکاح کیا تھا جس کی ماں نے اس کے بیٹے سے نکاح کر لیا تھا۔ اس بیٹے سے ایک بچہ پیدا ہوا' اس طرح سے اس کی بیوی کا بھائی بنا۔ لیعنی اس شخص کا سالہ' دو سری طرف اس میں لیو تا بنا' پھر اس شخص کا بیٹا فوت ہو گیا' پھروہ خود بھی فوت ہو گیا' ورشہ میں صرف ایک بھائی اور بیا تی رہا جو اس کی بیوی کا بھائی اور بیا تی رہا جو اس کی بیوی کا بھائی ہے طاہر ہے کہ بوتے کے ہوتے ہو گیا' ورشہ میں صرف ایک بھائی اور بیا تی رہا جو اس کی بیوی کا بھائی ہے طاہر ہے کہ بوتے کے ہوتے ہو گافیا فی بھائی تو محروم وراشت می دیا گیا۔

 کرے لوٹ آئے ہو۔ آپ کی بیوی کو اس خوشبو سے میں خیال ہوا کہ وہ ضرور کسی محبوبہ کے گھر سے آرہے ہیں۔ اس طرح ابوبوسف نے طلاق کی جو قتم کھائی تھی اس سے چ گئے۔ آپ نے میح اسے کہ ستاد محرم کو شکریہ اوا کیا اور آپ کی علمی و عقلی بصیرت کو واو تحسین وی۔

## ال كوفة كو قتل عام سے بچاليا

ابو معاذ بلخی رحمتہ اللہ علیہ نے فرمایا کہ اہل کوفہ حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے علام ہیں۔ آپ نے انہیں ایک بار خلیفہ عباسیہ کے ظالمانہ تھم سے محفوظ کر دیا تھا۔ ضحاک بن قیس شیبائی حوری خارجیوں کا کمانڈر تھا۔ وہ عراق کے مختلف شہوں پر حملہ کر آ نؤ مسلمانوں کا قتل عام کر دیا تھا۔ وہ اپنے سپاہیوں کو لے کر کوفہ میں بھی آپنچا اور جامع مبحد کوفہ میں بیٹے گیا اور ایک فرمان جاری کیا کہ کوفہ کے تمام مردوں کو قتل کر دیا جائے، بچوں کو قید کر لیا جائے۔ اس وقت امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ صرف چادر اور قبیض پنے مبحد میں تشریف لائے اور ضحاک سے کما' میں آپ سے ایک بات کرنا چاہتا ہوں۔ ضحاک نے پوچھا کیا بات ہے' آپ نے پوچھا تم کوفہ کے مردوں کو کیوں قتل کرنا چاہتے ہو اور بچوں کو قید کرنے کا تھم کیوں وے دہ ہو؟ اس نے کما یہ سب مرتد سی ان کے ارتداد کی بھی مزا ہے۔

امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے فرمایا ارتداد تو ایک دین سے دوسرے دین کے افتیار کرنے کا نام ہے۔ آپ پہلے بتائے وہ پہلے کس دین پر تھے اور اب کس دین بیس شامل ہوئے ہیں کیا وہ اپنے پہلے دین بیس نہیں رہے۔ فحاک نے کہا کہ اپنے سوال کو پھر دہیرائیے۔ امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے فرمایا کہ بیہ لوگ پہلے کس دین پر تھے جے چھوڑ کر اب دو سرے دین کو افتیار کر رہے ہیں ؟ ضحاک نے کہا واقعی بیہ میری غلطی ہے۔ اس نے لشکر کو تھم دیا کہ تکواریں میانوں بیس کر لو اور کی کو قتل نہ کیا جائے۔ یہ تھی امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی فقایت جس سے سارا کوفہ قتل عام کے بحالیا۔

ایک فخص کوفہ کے شریس فوت ہو گیا اس نے مرنے سے پہلے ایک فخص کو ایک تھیلی ایک فخص کو ایک تھیلی اس میں ایک ہزار رینار تھے اور اسے وصیت کی کہ اس میں ایک ہزار رینار تھے اور اسے وصیت کی کہ اس میں ایک ہرا ایک چھوٹا بچہ تابالغ ہے

جب وہ براا ہوگا ہجھ دار ہو جائے گا اسے یہ تھیل دے دینا۔ جب وہ لڑکا جوان ہوا تو اس فض اسے تھیلی تو دے دی گروینار رکھ لیئے اور اس لڑکے کو کما میں نے تہمارے باپ کی وصیت پر علی کر دیا ہے۔ وہ لڑکا برا بریثان تھا اس نے علماء کوفہ سے مسکہ دریافت کیا گرسب نے کما تھیلی بختے اگئ ہے، وصیت پر درست عمل تو ہوگیا۔ آٹر وہ امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے پاس بہنچا اور ماری صور تحال بیان کی۔ امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے درایا یہ ایک بست عمرہ وصیت بر ماری صور تحال بیان کی۔ امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے فرمایا یہ ایک بست عمرہ وصیت ہمارا باپ برا عظمنہ تھا' اس نے بردی وانائی سے وصیت کی ہے اس لیئے گھبرانے کی ضرورت نہیں۔ آپ نے اس فخص کو بلا کر بوچھا کیا مرنے والے نے بھی وصیت کی تھی کہ جو شئے بختے پند ہو اس آپ نے اس فخص کو بلا کر بوچھا کیا مرنے والے نے بھی وصیت کی تھی کہ جو شئے بختے پند ہو اس کے بیٹے کو دے دیتا۔ اس نے کما ہاں! آپ نے فرمایا اس وقت تو تھیس دیتار پند ہیں جو تم نے اپ پاس رکھ لیئے اور تھیلی تھیس پند نہیں تھی اس لیئے تم نے اس کے بیٹے کے حوالہ کر دی۔ تھیل قونے اس کو پہلے دے دی اب دیتار بھی دے دے۔ چٹانچہ اس نے دیتار لاکر اس نوجوان کے حوالے کر دی۔

## ایک عورت کو طلاق سے بچالیا

ایک ہخض کی بیوی بانی کا پیالہ اٹھائے آرہی تھی' اس مخض نے کہاکہ اگر تم نے اس پیالے سے بانی بیا تو تخفیے تین طلاق' اگر اسے زمین پر گرایا تو تخفیے تین طلاق' اگر تم نے پینے کے لیئے تکی اور کو دیا تو تخفیے تین طلاق۔ علماء نے اس مسئلہ کو حل کرنے کی کوشش کی مگر کوئی جواب نہ بن پڑالہ ام ابو حذیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے فرمایا کہ اس پیالے میں کپڑا ڈال کر اسے بھگو لو' اس طرح خاوندہ کی شرط پوری ہو جائے گی اور عورت طلاق سے پچ جائے گی۔

وکیع بن جراح فرماتے ہیں کہ ہمارے ہاں ایک برگزیدہ بزرگ حافظ الحدیث تھے 'انہیں اپنی بیوی سے بودی محبت تھی۔ انہیں اپنی بیوی سے بردی محبت تھی۔ ایک دن کہ بیٹھے کہ میری بیوی نے رات کو مجھ سے طلاق ما تکی میں نے کہہ دیا اچھا اگر میں تہمیں طلاق نہ دوں تو تجھے تین طلاق 'دو سری عورت نے کہا کہ اس کے تمام غلام آزاد اور مال صدقہ کر دیا جائے گا اگر میں نے آج رات طلاق نہ لی۔ دونوں میاں بیوی یہ بات تو کہ بیٹھے گر بعد میں نادم ہوئے کہ اب کس طرح بچا جائے۔ دونوں میرے پاس آئے گر یہ مسللہ

میرے کیئے بھی مشکل تھا۔ میں نے انہیں مشورہ دیا کہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے پاس جائين' وه حافظ الحديث كهبرايا' وه اكثر امام ابو حنيفه رضى الله تعالى عنه كي حديث واني پر اعتراضات كيا كرنا تھا' بيہ بات حضرت امام ابو حذيفه رضى الله تعالى كو بھى معلوم تھى۔ وہ كہنے لگا مجھے ان كے سامنے جاتے ہوئے ندامت آتی ہے۔ میرے ساتھ چلو کسی اور عالم دین کے پاس چلتے ہیں۔ ہم دونوں سفیان وری رائید کی خدمت میں حاضر ہوئے مگر بات نہ بی- بھر ابن ابی کیلی کے پاس مھنے مگر مسلہ حل نہ موا۔ اس کے بعد میں میال ہیوی دونوں کو حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عند کی خدمت میں لے آیا۔ وہ میرے ساتھ بادل نخواستہ آئے تھے جب واقعہ سایا گیا تو آپ نے مرد سے بوچھا تم نے جن الغاظ میں قشم کھائی تھی میرے سامنے دمراؤ۔ اس طرح آپ نے اس عورت کو بھی کہا کہ تم نے کیا الغاظ بیان کیئے تھے، عورت نے تمام الفاظ وہرائے۔ اب آپ نے عورت کو اجازت دیدی اور اس ورت نے اپنے خاوند سے کما تم مجھے طلاق دے دو۔ اب آپ نے مرد کو کما تم کمو اے میری ہوی م الله ہے۔ آپ نے عورت کو کہا اب تم کہو میں طلاق نہیں چاہتی ، جب یہ معاملہ اور مکالمہ ہو كيا- تو آپ نے فيصلہ ديا جاؤ تم اپني تعمول سے برى الذمه مو- الله اور اس كے رسول ماليكم ك اون میں تم سے کوئی موافذہ نہیں۔ مرد کو کہاتم اپنے اس عمل سے توبہ کرو اور آئندہ اس طرح کی فيروم دارانه باتيس زبان برنه لايا كرو- بجرعام طور يرتم دوسرك لوگول كي مذمت كرتے رہتے ہو اس ے بھی زبان کو روک لو- ابووکیع فرماتے ہیں کہ دونوں میاں بیوی نماز کے بعد امام ابوحنیفہ رضی الله تعالی عند کے لیئے دعا مانگ رہے تھے۔

#### ومربول كاايك حمله

الم ابوصنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے زمانے میں جمال خارجی وافضی اور دوسرے بدعقیدہ و موجود تھے وہاں بے دین دسریے اور ملحد بھی موجود تھے۔ وہ ایک طرف حکومت کے بعض موثر مسدل پر فائز تھے دوسری طرف عوام کے بعض طبقوں پر اثر انداز تھے۔ وہ چاہتے تھے جب بھی معتدل پر فائز تھے دوسری اللہ تعالی عنہ کو قتل کر دیں۔ ایک دن حضرت امام صاحب رضی مستحد کے حضرت امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو قتل کر دیں۔ ایک دن حضرت امام صاحب رضی سکے تشریف فرما تھے۔ اچانک ایک جماعت اندر آئی اور آتے ہی آپ کے تعالی عنہ معجد میں اکیلے تشریف فرما تھے۔ اچانک ایک جماعت اندر آئی اور آتے ہی آپ کے

المالية المالية

سامنے تلواروں اور چھریوں کی نمائش کرنے گئے۔ آپ نے فرمایا ٹھر جاؤ پہلے میرے آیک سوال گا جواب دو پھر جو جی میں آئے کرلینا۔ آپ نے فرمایا جھے جاؤ اس شخص کے متعلق تم کیا کہو گے جو دو میں سامان سے لدی ہوئی کشتی پر سوار ہے' اس کشتی کو طوفانی ہواؤں اور موجوں نے گھیر لیا گردہ اس کے باوجود اپنے راستہ پر چل رہی تھی' طلانکہ اس کا کوئی ملاح یا چلانے والا نہیں تھا۔ اس پر ایسا آدئی بھی کوئی نہ تھا جو کشتی کا رخ پھیر کر طوفانوں کی ذر سے کسی دو سری طرف لے جائے۔ کیا تہماری عقل شاتم کرتی ہے کہ اس کے باوجود کشتی طوفانوں کے در میان سید ھی منزل کی طرف چلتی جائے گی۔ ان سب نے کما کہ عقل نہیں مانتی۔ آپ نے فرمایا جب تہماری عقل یہ تسلیم نہیں کرتی کہ گئے۔ ان سب نے کما کہ عقل نہیں مانتی۔ آپ نے فرمایا جب تہماری عقل یہ تسلیم نہیں کرتی کہ میں مختلف اقسام کے طوفان ہیں وہ کسی چلانے والے کے بغیر کس طرح قائم رہ سکتی ہے۔ آپ کی سامت میں کر دم بریئے جو قتل کرنے آئے تھے سرنگوں ہو گئے اور اپنی اپنی تلواریں میانوں میں کرلیں بات من کر دم بریئے جو قتل کرنے آپ کے سامنے اپنے عقائد سے توبہ کرلی۔

#### خارجی میدان مناظره میں

ایک وقت آیا کہ خارجیوں نے کوفہ پر قبضہ کر لیا۔ ان کے ایک دستے نے سب سے پہلے حضرت امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو گرفار کر لیا' ان کا مقصد سے تھا کہ آپ کوفہ کے شخ الائمہ بیں اگر آپ ہمارے قابو آگئے تو کی دو سرے کو جرات نہ ہوگی کہ ہمارے سامنے بات کر سے خارجیوں کا ایک عقیدہ سے تھا کہ جو ان کے عقیدہ پر بھین نہیں رکھتا وہ مسلمان نہیں رہتا۔ آپ فرایا میں ہر قسم کے کفر سے توبہ کرتا ہوں انہوں نے آپ کو چھوڑ دیا۔ بعد میں چند لوگوں نے کما للہ ابو حفیفہ رضی اللہ تعالی عنہ تو تہمیں جل دے کر چھوٹ گئے وہ تو تہمیں کافر سجھتے ہیں اور تہمارے کفر سے توبہ کرتے رہے ہیں۔ خارجیوں نے آپ کو گھر سے پھر گرفار کر لیا اور پوچھا شخ آپ نے ان عقائد سے توبہ کی جن پر ہم ہیں۔ آپ نے ان سے پوچھا سے بات تم نے لوگوں کے بھر کانے پہلیان اور لیقین سے ؟ انہوں نے کہا ہم گمان سے کہ رہے ہیں۔ آپ نے فرمایا اللہ تعالی تو ان بعض النظن اثم فرماتا ہے۔ بعض گمان گناہ ہوتے ہیں۔ تم نے تواگناہ کیا ہوئی فرمایا اللہ تعالی تو ان بعض النظن اثم فرماتا ہے۔ بعض گمان گناہ ہوتے ہیں۔ تم نے تواگناہ کیا ہم فرمایا اللہ تعالی تو ان بعض النظن اثم فرماتا ہے۔ بعض گمان گناہ ہوتے ہیں۔ تم نے تواگناہ کیا ہم

مردار کے بہارا عقیدہ ہے کہ ہر گناہ کفرے پہلے تم اس کفرے توبہ کرد۔ خارجیوں کے مردار نے پر بدگمانی کی۔ تمہارا عقیدہ ہے کہ ہر گناہ کفرے توبہ کرتا ہوں گر آپ بھی کفرے توبہ کریں۔ نے کہا اے شخ ! آپ صحیح کمہ رہے ہیں میں کفرے توبہ کرتا ہوں۔ اس پر خوارج نے آپ کو پھر چھوڑ دیا۔ آپ نے اعلان کیا کہ میں ہر کفرے توبہ کرتا ہوں۔ اس پر خوارج نے آپ کو پھر چھوڑ دیا۔ یاد رہے کہ خارجیوں نے آپ کے دو سری بار توبہ کرنے پر سے جاتا کہ آپ نے اپ کفری عقایدہ سے توبہ فرما رہے تھے۔ عقیدہ سے توبہ فرما رہے تھے۔

#### قرات خلف امام پر ایک مکالمه

مدینہ پاک سے علماء کی ایک جماعت کوفیہ میں صرف اس کینے آئی کہ وہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عند سے فاتحہ خلف الامام بر مناظرہ کریں۔ ان کا خیال تھا کہ جب امام ابو حذیفہ رضی اللہ تعالیٰ عند جواب نہیں دے سکیں گے اور اپنی فکست تشلیم کرلیں گے تو ہم انہیں سارے کوفہ میں رسوا کریں کے اور لوگ جاری قدر کریں گے کہ مدینہ کے علماء کرام نے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنه کو مسلت دے دی ہے۔ آپ نے فرمایا میں استے آدمیوں سے تو بیک وقت بات نہیں کر سکتا۔ نہ ہی ہر ایک کی بات کا جواب دے سکتا ہوں۔ آپ ایسا کریں کہ سب کی طرف سے ایک سمجھ دار عالم مقرر كريس وه اكيلا مجھ سے بات كرے۔ انہوں نے ايك برا عالم منتخب كيا جو آپ سے بات كرے گا۔ آپ نے سب کو فرمایا کیا یہ عالم دین جو بات کرے گا وہ آپ کی طرف سے ہوگی اور کیا اس کا فیصلہ آپ کا فیصلہ ہوگا اور کیا تم اس کی ہار جیت پر متفق ہو گے۔ ان سب نے کہا ہاں! ہم اس عالم دین کی ات پر متفق ہیں۔ آپ نے فرمایا کہ تمہارا مسئلہ حل ہو گیا۔ تم نے میرے خیالات کی تائید کروی ے اور میرے موقف کو تسلیم کرتے ہوئے۔ جبت قائم کر دی ہے، وہ کہنے لگے وہ کیسے ؟ آپ نے قرایا تم نے خود اپنی طرف سے ایک آدمی منتخب کیا اور فیصلہ کیا کہ اس کی ہربات تمهاری بات ہو گی، اس کی ہار جیت تماری ہار جیت ہوگی' ہم نماز کے دوران اپنا امام منتخب کرتے ہیں۔ اس کی قرات الری قرات ہوتی ہے' وہ بارگاہ خداوندی میں ہم سب کی طرف سے نمائندہ ہے۔ مدینہ سے آنے والے وفدنے آپ کی بات کو تعلیم کیا اور اپنے مو قف سے وستبردار ہو گئے۔

best brailingers &

## امام ابو حنیفه نفتی این کا عراض جوانی کا اعتراف

حضرت عثان بن زائدہ مرافیہ فرماتے ہیں کہ میں نے امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ ہے بڑھ کرکوئی شخص حاضر جواب نہیں و یکھا۔ خلیفہ ابو جعفر عبای نے امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو اپنی خصوصی دعوت پر بلایا اور فرمایا میں نے آپ کو اس لیئے بلایا ہے کہ آپ ملک کے قاضی القصناۃ (چیف جسٹس) کا عمدہ قبول فرمائیں۔ آپ نے انکار کر دیا۔ ابو جعفر نے فرمان شاہی سے سرتابی کی مطلح پر آپ کو چند دنوں کے لیئے جیل میں بھیج دیا۔ پھر بلا کر کما ابو صنیفہ! آپ کو اتنا بڑا عمدہ قبول کرئے میں کیا عذر ہے ؟ آپ انتے برے فقیہ ہیں' عدل و انصاف کی فرمائروائی میں آپ کو اتمارا ہاتھ بٹانا میں کیا عذر ہے ؟ آپ انتے برے فقیہ ہیں' عدل و انصاف کی فرمائروائی میں آپ کو امارا ہاتھ بٹانا میں علم و فضل نے ہماری سلطنت میں ایسے عمدے قبول کیئے ہیں۔ آپ نے جوابا فرمایا' اللہ تعالیٰ آپ کی اصلاح فرمائے' میں دراصل اس عمدے کی اہمیت نہیں رکھتا۔ خلیفہ نے کما آپ جھوٹ بول رہ ہوں' آپ نے فرمائی اللہ اکبر آپ نے خود ہی فیصلہ فرما دیا جھوٹا آدی تو اس منصب کے لائق نہیں ہو تا' جھوٹا قاضی لوگوں کے فیصلے نہیں کر سکتا۔

## دینی مسائل حل کرنے میں دلچیبی

ایک دن حضرت امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ عشاء کی نماز پڑھ کر مسجد سے باہر آرب سے ابھی جو تا آپ کے ہاتھ میں ہی تھا کہ ابوز فرنے آپ سے ایک مسئلہ دریافت کیا' آپ نے جواب ریا تو ابوز فرنے اس پر قیاس قائم کر کے مزید وضاحت چاہی' آپ نے اس کا جواب دیا۔ اس طرح اس مسئلے پر گفتگو ہوتی رہی اور دونوں حضرات بحث و تمحیص کرتے رہے حتیٰ کہ صبح کی اذان ہو گئ۔ دونوں مسجد میں واپس آئے فجر کی نماز اداکی اس کے بعد پجراس مسئلہ پر گفتگو ہونے گئی' بحث نے طول پکڑا آخر امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے جواب پر مسئلہ طے ہوا۔ ( بیہ واقعہ آپ کے مسائل دینیہ کے حل کرنے میں دلیسی اور آپ کے شاگردوں کی شخیق مسئلہ میں بے پناہ تربیت کی دلیل ہے۔)

امام زفر پر ایک فخص نے گفتگو کی آپ نے جواب دیا تو وہ مطمئن ہو گیا گراس نے کما آپ کی بات سے بھے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عند کا وہ واقعہ یاد آ تا ہے جب آپ نے ان سے ایک مسئلہ دریافت کیا تو آپ نے اس وقت تک منہ نہیں موڑا جب تک آپ مطمئن نہیں ہو گئے۔ آپ کا ایک قدم مکان میں اور ایک مکان کی والمیزسے باہر تھا' آپ اس طرح کھڑے رہے' اس واقعہ آپ کا ایک قدم مکان میں اور ایک مکان کی والمیزسے باہر تھا' آپ اس طرح کھڑے رہے' اس واقعہ کا میں عنی شاید ہوں۔ ابو مطبع نے جب بیہ واقعہ ساتو جران رہ گئے کہ امام صاحب ویٹی مسائل حل کا فیر اور امام زفر اسے حاصل کرنے میں ساری رات اس طرح کھڑے رہے۔

ابو مجاہد مطابعہ و ایک عابد اور زاہد بزرگ سے فرماتے ہیں کہ ایک وفعہ میں حضرت ابو محابد مرضی اللہ تعالیٰ عنہ کے باس بیٹا تھا تو آپ کی محفل بیں بیہ سوال آیا کہ ایک فخص نے الو کو سانپ بھینک دیا۔ جن جن اوگوں کو سانپ نے ڈسا تمام مرگئے آپ فرمائے کہ وہ دیت کی کو ادا کرے گا؟ آپ نے فرمایا اس پر تمام لوگوں کے لیئے علیحدہ علیحدہ دیت ہے جو اس سانپ کے ڈسنے سے مرے۔ ہاں اگر اس نے کسی کے گھر سانپ بھوڑا اور وہاں چند لوگ رہتے تھے سانپ کے ڈسنے سے مرے۔ ہاں اگر اس نے کسی کے گھر سانپ بھوڑا اور وہاں چند لوگ رہتے تھے سانپ کے اس لیئے کہ گھروں میں عام طوز سسانپ گھس نے انہیں ڈسا اور وہ مرگئے تو اس پر دیت نہیں ہے اس لیئے کہ گھروں میں عام طوز سسانپ گھس نے ہیں۔ یہ گھروالوں کی ذمہ داری ہے کہ ان سے اپنی حفاظت کریں۔ ابو مجاہد نے بتایا کہ میں نے مروں مسائل حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی سے سکھے اور یاد کیئے ہیں۔

#### ایک قدری کی اصلاح

اسحاق بن ابراہیم حنظی سمرقد کے قاضی القضاۃ (چیف جسٹس) تھے۔ ہم سمرقد سے چند سوں کے ساتھ کوفہ آگئے۔ ہمارے ساتھ ایک " قدریہ " عقیدہ کا آدمی بھی تھا' ہم نے کوفہ بہنچ کر سے بوچھا تمہاری گفتگو کس سے کرائی جائے ؟ اس نے امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا نام لیا۔ آپ کی مجلس میں پہنچ تو آپ ساکلوں کے ایک انبوہ میں گھرے ہوئے تھے اور آپ اپ ساکلوں کے ایک انبوہ میں گھرے ہوئے تھے اور آپ اپ ساکلوں عزیز کو پکھ لکھوا بھی رہے تھے۔ ہم بھی آگے بڑھے اور عرض کی حضور ہم سمرقد سے آگ ساتھ ایک ایسا ساتھی ہے جو قدریہ عقیدہ رکھتا ہے آگر آپ اس کو گفتگو کا موقعہ دیں سے اس کی اصلاح ہو جائے۔ ہم نے ول میں کہا قدری لوگ بحث کو برا طویل لے جاتے ہیں' آپ

اسے اتنا وقت کس طرح دیں گے اور جو کام کر رہے ہیں اسے کس طرح چھوڑ دیں گے لیکن ہوا ہے کہ آپ نے قدری سے ایک سوال کیا' اس نے اس کا فورا جواب دیا۔ آپ نے پھر سوال کیا گروہ تھوڑی دیر سوچنے لگا اور سوچ کر جواب دیا۔ آپ نے ایک اور سوال کیا وہ قدری سرکو تھام کو سوچنے لگا اور ماتھ پر آئے ہوئے لیسنے کو پونچھنے لگا اور جران تھا کہ کیا جواب دے آخر کہنے لگا ہی اللہ سے کھا اور جران تھا کہ کیا جواب دے آخر کہنے لگا ہی اللہ سے بخشش کی استدعا کرتا ہوں اور اپنے عقا کہ سے توبہ کرتا ہوں۔ اے ابو حنیفہ! اللہ تحالی آپ کو خزانہ خیر دے ' آپ نے دو سوالوں میں میری دنیا بدل دی' میں تو جہنم کے کنارے پر کھڑا تھا آپ نے جھے بچا لیا۔

ابوسعید روایتے فرماتے ہیں کہ ہیں نے ساری زندگی ایبا کوئی شخص نہیں دیکھا جو امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے مسائل میں بازی لے گیا ہو۔ ابوسعد صغانی فرماتے ہیں کہ ہمارے زمانہ ہیں ختنوں کی تقاریب میں لوگ شکر بھیرا (بائنا) کرتے تھے۔ حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ شکر بھیرنے کو ناجائز نہیں کہتے تھے۔ آپ نے مزید بتایا ہم ایک بار ایک ایسے شخص کو آپ کے پاس لے آئے جو شکر بھیرنے میں مشہور تھا' اس نے آپ کے سامنے بہت می شکر پیش کی آپ نے جھے تھم فرمایا یہ شکر لے لو۔

ابوسعد محمہ بن المنتشر صغان کے بہت برے فقیہ تھے۔ آپ امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی صحبت میں رہتے تھے۔ اس طرح آپ کو بہت سے مسائل یاد ہو گئے تھے۔ آپ ان مسائل کو امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی روایت سے بیان فرمایا کرتے تھے۔ آپ نے اپنی مند میں حضرت امام ابو یوسف مطبعہ فرمایا کرتے تھے۔ اس طرح کی بہت می روایات کو جمع کیا ہے۔ حضرت امام ابو یوسف مطبعہ فرمایا کرتے تھے کہ آج روئے زمین پر ابوسعد صغانی سے زیادہ نامینا کوئی شخص نہیں ہوگا۔ یمی ابوسعد صغانی فرماتے ہیں ابویوسف روئید کے اس قول کے باوجود حضرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ مجھے اپ شاگردوں کی پہلی صف میں بیٹھا کرتے تھے، جس میں برے برے جلیل القدر تلافہ موجود ہوتے تھے اور سب سے پہلے میرے ہی سوال کا جواب ویا کرتے تھے۔ میں نے حضرت امام روئید سے عرض کی حضور! آپ کی خصوصی توجہ کی وجہ سے حس بن عمارہ میری بری عزت کرتے ہیں اور اپنے قریب خضور! آپ کی خصوصی توجہ کی وجہ سے حس بن عمارہ میری بری عزت کرتے ہیں اور اپنے قریب بھا کر خوشی محسوس کرتے ہیں۔ آپ نے فرمایا حس بن عمارہ نے میری محبت میں بری تکیفیں بھا کر خوشی محسوس کرتے ہیں۔ آپ نے فرمایا حس بن عمارہ نے میری محبت میں بری تعرب میں بری تعرب میں بری حسوس کرتے ہیں۔ آپ نے فرمایا حس بن عمارہ نے میری محبت میں بری تھیں۔ آپ نے فرمایا حس بن عمارہ نے میری محبت میں بری تکیفیں تکلیفیں کو تو میری محبت میں بری تعرب میری میری محبت میں بری تکیفیں

ابوسعد صغانی ریافیہ فرماتے ہیں کہ ایک دن میں نے محد بن عجلان کی مجلس میں ایک مسئلہ پر سکھ کی تو آپ بڑے مخطوظ ہوئے اور کنے گئے یہ نمایت ہی لطیف جواب ہے تم کس کی محفل میں سکھ کے بو ؟ میں نے کہا' امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی۔ آپ نے فرمایا سجان اللہ جو بھی ان کی سے ہو ؟ میں رہا ہے اسے ایسی لطیف گفتگو کرتا آجاتی ہے۔

#### مرنے والی عورت کے پیٹ میں زندہ بچہ

حضرت امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے پاس ایک شخص آیا اور کھنے لگا میں کوفے کے گئے گوشے میں رہتا ہوں۔ رات کے پہلے جھے میں میری بمن فوت ہو گئی ہے اور بچہ اس کے بیٹ سے اور وہ پیٹ میں حرکت کرتا ہے۔ آپ نے فرایا فورا جاؤ اور عورت کا بیٹ چاک کر کے بچہ میں نکال لو۔ وہ شخص دوبارہ سات سال بعد امام اعظم را اللہ کی خدمت میں حاضر ہوا' اس کے ساتھ کے سات سالہ بچہ بھی تھا' آپ سے پوچھنے لگا آپ اس بچ کو بہچانتے ہیں ؟ آپ نے فرمایا نہیں' کے سات سالہ بچہ بھی تھا' آپ سے فوٹی سے مال کے بیٹ سے نکالا گیا تھا۔ یہ ساری زندگی آپ سے خاوم رہے گا۔ اس کا نام ہم نے د نجا" رکھا ہے۔

عبدالعزیز ظالد صغانی میلید بیان کرتے ہیں کہ ہیں نے بہت ی کتابیں حضرت اہام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے پڑھی تھی۔ فارغ ہوا تو آپ سے عرض کی حضور ہیں آپ سے روایات یا کیوں ؟ آپ نے فرمایا ہاں کر لیا کرو۔ ہیں نے پوچھا کیا ہیں یہ کمہ سکتا سمعت عن موحنیفه " بین نے فرمایا ہاں کوئی حرج نہیں۔ آپ نے مزید موحنیفه " بین نے امام ابوحنیفه سے یوں سنا " آپ نے فرمایا ہاں کوئی حرج نہیں۔ آپ نے مزید الله آپ یوں بھی کمہ کتے سمعت حدثنی مجتمعین میں نے تمام ایک ہی طرح کے جملے ہیں جو موسو کمو۔ اس میں گنجائش ہے۔

عبدالعزیز خالد مطفیہ ترقد اور صفان کے امام اور فقیہ تھے۔ آپ نے فرمایا کہ میں فہام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے وصال سے سات دن پہلے ایک ایسے مخص کے متعلق سوال کیا جو حج ادا نہ کرنے کی متم کھا رہا تھا۔ آپ نے فرمایا وہ کفارہ ادا کرے اور اپنے خیال سے رجوع کرے۔

حضرت ابو مطیع ملافیہ فرماتے ہیں کہ میں نے حضرت امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو جعد کے دن چادر اور قبیص پہنے دیکھا۔ میرے اندازہ میں ان دونوں کپڑوں کی قبت چار سو درہم سے کم نہ ہوگی۔ آپ کا دامن زمین کو چھو رہا تھا' میں نے پوچھا حضور یہ کروہ بات نہیں ہے؟ آپ نے فرمایا صرف چادریا تہبند کا شخنے کے بنیج تک جانا کروہ ہے' کی دو سرے کپڑے کا زمین سے مس کرنا کروہ نہیں' آپ نے فرمایا حضرت ابن عمر رضی اللہ تعالی عنماکی روایت کردہ حدیث ہے کہ جس کی چادر ( تہبند ) شخنے سے بنیج زمین کو چھوے گئی اس کی نماز قبول نہیں کرے گا۔

#### جار ہزار سوالات کے جوابات

محمد بن ابی مطیع والید فرات ہیں کہ میں نے اپنے والد گرای سے سنا ہے کہ میں نے ہر فن کے چار ہزار مشکل مسائل جمع کیئے اور اس طرح مشکل واقعات اسمے کیئے۔ میں امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی خدمت میں حاضر ہوا اور ان مسائل پر گفتگو کرنے لگا۔ آپ نے مجھ سے دریافت کیا ابومطیع ! تمہارے پاس اس فتم کے کتنے سوالات ہیں؟ میں نے کہا چار ہزار۔ فرمایا اس وقت مجھ سے نہ پوچھو میں مشغول ہوں جب فارغ ہوں گا میرے پاس آجانا۔ آپ کو میں جو نمی فارغ پا آ اپ سوالات کا جواب پا آ حتی کہ ایک عرصے میں مجھے تمام سوالات کا جواب پا تا حتی کہ ایک عرصے میں مجھے تمام سوالات کا انداز اور حس بیان بڑا پند آیا ہے فارغ ہونے لگا تو آپ نے فرمایا ابو مطیع ! مجھے آپ کے سوالات کا انداز اور حس بیان بڑا پند آیا ہے فار سوالات کا مجمع کرنا برے دل گردے کا کام ہے اور بردے عالی وماغ کا کارنامہ ہے۔ آگے چل کر بی ابو مطیع بلنی دیائی اپنے وقت کے امام کملائے۔ آپ عابہ ' زاہد اور فقیہ وقت تھے۔ ان کی عادات و ابو مطیع بلنی دیائی سے عمدہ تھے کہ لوگ آپ پر فریفند تھے۔ مسب بن اسحاق نے فرمایا میں لاتے تھے ' یہ ام ابو مطیع دیائی عنہ کی موجت کا اثر تھا۔ ابو مطیع دیائی عنہ کی موجت کا اثر تھا۔ ابو مطیع دیائی عنہ کی موجت کا اثر تھا۔ ابو مطیع دائی عنہ کی موجت کا اثر تھا۔

معربن الحن الروی ولیے قراتے ہیں کہ جھے ایک دن امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ اور محمہ احاق کے ساتھ عبای فلیفہ منصور ابو جعفر کے دربار میں حاضر ہونے کا موقعہ ملا۔ ہمارے جانے یہ اس نے کوفہ ' بھرہ ' بھرہ ' بھرہ ' بھرہ ور در سرے شہوں کے علاء کو بھی بلا رکھاتھا۔ اس کے اس نے کوفہ ' بھرہ تھی جے علاء کرام کے مشورہ سے حل کرنا چاہتا تھا۔ اس نے اس جمع میں البوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو خصوصی دعوت پر بلایا تھا۔ آپ کے لیئے ایک خاص سواری کوفہ سونے تھی اور ایک شاندار وفد آپ کو لانے کے لیئے گیا تھا۔ اس جس پریشانی کا سامنا تھا اسے صرف سرف امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ ہی دور کر سے تھے۔ امام ولیئے کے مشورہ سے خلیفہ عبای پریشانی تو دور ہو گئی مگر اس نے حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو روا ۔ آیا اور اسلای پریشانی تو دور ہو گئی مگر اس نے حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو روا ۔ آیا اور اسلای کے خلف علی مورت کی تھا کہ اس کے عمل دیا کریں تا کہ ملک میں و انصاف کی صور تحال کو صحیح اسلای فقہ کی روشنی میں درست رکھا جائے۔ خلیفہ نے محمد ابن فقہ کی روشنی میں درست رکھا جائے۔ خلیفہ نے محمد ابن مورت کی ایک ملک میں و انصاف کی صور تحال کو صحیح اسلای فقہ کی روشنی میں درست رکھا جائے۔ خلیفہ نے محمد ابن مورت کی ایا اور انہیں کہا کہ آپ اس کے بیٹے کو حضور صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم کے میٹے کو حضور صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم کے میٹے کو حضور صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم کے بیٹے کو حضور صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم کے بیٹے کو حضور صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم کے بیٹے کو حضور صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم کے بیٹے کو حضور علی اللہ علیہ و آلہ و سلم کے والے کو تی روگ کی دی کریں۔

ایک دن یہ دونوں حضرات (امام ابو صنیفہ اور محربن اسخاق) دربار میں موجود تھے۔ محمد ابن کے دل میں امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے حسد کی آگ سلگ رہی تھی' اس نے دیکھا کہ سے دل میں امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے کوفہ بلایا' پھر آپ کی رائے کو بوئی سے دی' آپ کے اعزاز پر خصوصی توجہ دبی' پھر مکی اور سیاسی معاملات پر آپ کے مشورہ کو ترجیح کومت کے معاملات پر آپ کے مشورہ کو ترجیح کومت کے معاملات پر امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی رائے کو فوقیت دی۔ محمد ابن اسحال کو میں آپ کی بردھتی ہوئی اہمیت اچھی نہ گی انہوں نے تہیہ کرلیا کہ آپ کو خلیفہ منصور کی میں آبوں نے تہیہ کرلیا کہ آپ کو خلیفہ منصور کی میں انہوں نے حضرت امام دیا ہے پر ایک ابیا سوال کیا میں گرا دے۔ ایک دن خلیفہ کی موجودگی میں انہوں نے حضرت امام دیا ہے پر ایک ابیا سوال کیا میں غرائے ہیں جو اس بات پر قسم کھائے کہ قلال فلال کام نہیں کرے گایا فلال فلال کام ضرور کے گا نوان فلال کام نہیں کرے گایا فلال فلال کام ضرور کے وقت میں انشاء کی فورا انشاء اللہ نہیں کہا بلکہ یہ میں نے فراغت کے بعد کی دو سرے وقت میں انشاء

محسبه سويه

الله كه ديا يعني فتم س سكوت ك بعد كها-

امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا اے سکوت کے بعد انشاء اللہ کہنے کا کوئی فائدہ نمیں ہوگا۔ قتم کے انقطاع کے بعد استثاء بیکار ہے۔ استثناء تو قتم کے ساتھ متصل ہی مفید ہے۔ محمد بن اسحاق نے کما یہ کیے ہو سکتا ہے جب کہ امیرالمومنین کے جد اکبر ابن عباس ( ابوالعباس عبدالله بن عباس رضى الله تعالى عنما) نے فرمایا ہے كه يمين كے بعد استناء جائز ہے وا ايك سال كے بعد بى ہو اور انہوں نے اس احتدالل كو قرآن پاك كى اس آيت سے ليا ہے۔ واذكر ربكا 8 نسیت ایم منصور نے محد ابن اسحاق کو کما واقعی ہمارے جد اکبر نے ایسا بی فرمایا ہے۔ محمد اسحاق کئے ملکے ہال انہوں نے ایسے ہی فرمایا ہے۔ یہ سنتے ہی خلیفہ منصور نے حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنه کو مخاطب کرتے ہوئے فرمایا اور غضبناک انداز میں کما۔ کیا تم جمارے جد اکبر کی رائے کی مخالفت كرتے ہو؟ امام ابو حنيفه رضى الله تعالى عنه نے قرمايا ميں ابوالعباس ( ابن عباس عبدالله رضى الله تعالی عنما) کی مخالفت تو نہیں کرتا۔ ان کے ارشاد گرامی کو درست طریقے سے بیان کرتا ہوں۔ میں اس مسئلہ پر وضاحت کرتا ہوں کہ حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی حدیث شریف کو حضرت این عباس رضی اللہ تعالی عنہ نے یوں روایت کیا ہے کہ من حلف علی یمین و یستثنی فلا حنث عليه ○ "جس نے قتم كھائى اور استناء كيا تو حانث نہيں ہوگا۔" ہم نے اس مديث پاك كو استناء سے متصل پر محمول کیا ہے لیکن یہ لوگ آپ کی خلافت کے مخالف ہیں اور آپ کی خلافت کے مظر ہو کر سلطنت کے خلاف سازش کر رہے ہیں اور اس مخالفت میں حضرت ابوالعباس رضی اللہ تعالی عنہ کی حدیث کا غلط استعال کرتے ہیں۔ مصور نے آپ سے وضاحت طلب کی تو آپ نے فرمایا' بید کہنے میں کہ ہم خلیفہ منصور کی بیعت کرتے ہیں گربیہ تقیہ کر جاتے ہیں کیونکہ ای وقت استناء کا صرف ارادہ کرتے ہیں چروہ جب چاہیں آپ کی بیت کا قلادہ گلے سے اتار پھینکیں' اس استناء سے آپ کی بیعت کا طوق ان کے گلے سے از سکتا ہے اگر یہ قتم کے ساتھ مصل کردیں تو بعت نیں توڑ کتے۔ گریہ لوگ تو ایک عرصہ تک اشٹناء کے زیر سایہ فتم کو معلق رکھتے ہیں۔ منصور کی سمجھ میں سے بات آگئ اس نے حکم ویا کہ ایے تقیہ بازوں اور منافقوں کو گرفتار کر لیا جائے۔ محد ابن اسحاق کو عباس وربار سے ہی گرفتار کر لیا گیا۔ اس کی جادر اس کے گلے میں ڈال کر

#### وتدان خانه تک لایا گیا اور کچھ عرصہ تک جیل میں بھینک دیا گیا۔

الفضل السجزى والحج فرماتے ہیں كہ ابن ابي ليكئ مفيان تورى اور امام شريك ايك ون ابوطنيفہ رضى اللہ تحاتی عنہ كے پاس بیٹے ہوئے تھے اكى نے مسلہ بوچھا كہ ان لوگوں كے بارے سے آپ كى كيا رائے ہے جو ايك مجلس ميں الحقے بيٹے ہوئے ہوں ايك صحفى پر مانپ پڑھ گيا اور سے آپ كى كيا رائے ہے جو ايك مجلس ميں الحقے بيٹے ہوئے ہوں ايك صحفى پر مانپ پڑھ گيا اور سے اپنے آپ كو بچائے كے ليئے اس مانپ كو دو مرے پر پھينك ديا اس نے تيرے پر پھينك بول اس مانپ نے اور وہ حركيا تو اس كى ديت كے اداكرنا ہو گی۔ بعض ب اس مانپ نے آماكہ پہلے شخص كو ديت دينا چاہئے ابعض كينے آگے تمام ديت ديں گے۔ غرضيكہ مختف علماء سے گفتگو كرتے رہے مرام ابوطنيفہ رضى اللہ تعالى عنہ خاموش بیٹے رہے۔ جب کی طرف رجوع كرتے ہوئے مسئلہ دريافت كيا۔ آپ نے کی طرف رجوع كرتے ہوئے مسئلہ دريافت كيا۔ آپ نے ليا پہلے شخص نے ديدہ دانستہ مانپ كو اپنى جان بچائے كے ليئے پھينك ديا۔ اس طرح ہر ايك پھينكا چلاگيا اگر مخص نے ديدہ دانستہ مانپ دو مرے پر پھينكا تھا تو اسے ديت دينا داجب ہوگى ورنہ كى كو نہيں۔

## تحاضه پر گفتگو

-4000

صفیہ نے امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے دریافت کیا کہ جب ایک عورت ایام حیض سے اسلام میں اللہ علی ہو اور اسے اب حیض کی کوئی نشانی نظر نہیں آتی تو اسلام عورت بھی رحم میں روئی رکھنے کی ضرورت کو پورا کرے گی ؟ آپ نے فرمایا ہاں یہ احتیاط سے استحاضہ کے لیئے ہوتی ہے یا ایسی عورت جے کمزوری یا کی بیاری کی وجہ سے رطوبت کا افراج

حضرت قاضی ابویوسف رحمتہ اللہ علیہ نے فرمایا کہ میں نے حضرت امام ابوطنیفہ رضی اللہ علیہ سے سنا تھا کہ جب قاضی عمد ادیدہ دانستہ ظلم کرے اور انصاف سے دستبردار ہو جائے تو اس سے سنا تھا کہ جب اور اسے معزول کر دنیا جائے۔ شرعی طور پر اس کی قضاء تو خود بخود منسوخ

# مسكله دور كاصحيح جواب

حضرت المام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ جب جج کے لیئے حرین شریقین کو چلے گئے تو کوفہ بھی ایک مسئلہ " دور " سامنے آیا۔ ابن شرمہ ابن ابی لیلی اور امام سفیان توری روبیجے جیے جیہ علاء اور کوفہ کے دو سرے مقتدر علائے کرام سے بیہ مسئلہ حل نہ ہو سکا۔ ان دنوں حضرت امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ کے کئی قاتل شاگرہ بھی کوفہ میں موجود تھے گروہ بھی اس مسئلہ کا جواب نہ وے سکے تمام نے فیصلہ کیا کہ اس مسئلہ کو حضرت امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ کی واپسی تک معلق رکھا جائے۔ حضرت امام ابو بوسف روبی تک معلق رکھا جائے۔ حضرت امام ابو بوسف روبی ہی اس کا کوئی جواب نہ دے سکیس کے تو اس طرح ہماری بکی دل میں بیہ خدشہ تھا کہ شاید امام روبیجہ بھی اس کا کوئی جواب نہ دے سکیں گے تو اس طرح ہماری بکی دل میں بیہ خدشہ تھا کہ شاید امام روبیجہ بھی اس کا کوئی جواب نہ دے سکیں گے تو اس طرح خوفردہ تھے اور بھی اور امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ کی فرقہ میں واپس ہی نہ آئیں۔ بھی شاگرہ تو چاہتے تھے کہ امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ کوفہ میں واپس ہی نہ آئیں۔

امام ابویوسف میلیجہ فرماتے ہیں کہ جب آپ واپس آئے تو میں نے کوفہ سے کئی میل باہر جا کر آپ کا استقبال کیا اور ساتھ ہی اس مشکل مسئلہ سے آگاہ کیا۔ میرا خیال تھا کہ آپ کوفہ پہنچ یا لوگوں کے استفسار سے پہلے ہی اس مسئلہ پر خور فرمالیں گے۔ ایسا نہ ہو کہ عین موقعہ پر آپ کے لیئے بعض دشواریاں ہوں۔ میں نے سلام کیا تو آپ نے جھے اپنی سواری پر اپنے ساتھ بسٹالیا ود سرے لوگ بھی آپ کے استقبال کے لیئے اپنی اپنی سواریوں پر سوار سے۔ بردا زبردست استقبال تھا۔ مرکسیں اور راستے تنگ ہو گئے۔ آپ نے گر آتے ہی وو نقل اوا کیئے۔ لوگوں کا ایک ہجوم آپ کی طرف بردھا اور ملنے لگا۔ اب علماء کرام کے ایک وفلہ نے آپ کے اردگرد مندیں جمالیں اور وہی مسئلہ دریافت کیا۔ آپ نے سوال من کر سر جھکا لیا' چند کموں بعد سراٹھایا' میں نے اندازہ لگا لیا کہ سبتہ دریافت کیا۔ آپ نے سوال من کر سر جھکا لیا' چند کموں بعد سراٹھایا' میں نے اندازہ لگا لیا کہ آپ اور جب تک علماء کرام مطمئن نہ ہو گئے آپ وضاحت فرماتے گئے۔ آپ کا جواب من کر لوگ خوش ہو گئے اس بھوم اٹھے۔ کیا اور جب تک علماء کرام مطمئن نہ ہو گئے آپ وضاحت فرماتے گئے۔ آپ کا جواب من کر لوگ خوش ہو گئے تو ایک دن ظیفہ کے سامنے ایک شخص حضرت لمام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالی عزہ فوت ہو گئے تو ایک دن ظیفہ کے سامنے ایک شخص حضرت لمام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالی عزہ فوت ہو گئے تو ایک دن ظیفہ کے سامنے ایک شخص

گردا' لوگوں نے بتایا کہ یہ مخص حماب دان ہے' ریاضی کا ماہر ہے' ظیفہ کے آدمی اسے اندر لے آئے اور دیتی ممائل پر گفتگو کرنے گئے اور بردی تعظیم و بحریم سے بٹھایا۔ یس نے ایک مسلہ کے برے میں سوال کیا یہ مسلہ حماب دانی کا تھا' میں خود حضرت امام پیلیجہ کے زمانہ میں اس سوال کے جواب کے لیئے مضطرب تھا گر آپ سے دریادہ نہ کرسکا تھا۔ اس نے کمابتائے وہ کیا مسلہ ہے۔ میں فرانی کو انہوں نے فرمایا یہ فلال باب میں موجود ہے نکالیے اور پڑھے۔ لین اس کے باوجود وہ مسلہ حل نہ بوا۔ اب انہوں نے فرمایا اب فلال کتاب کا فلال باب نکالیے گر میں پھر کم باوجود وہ مسلہ حل نہ بوا۔ اب انہوں نے جھے کئی ابواب کی نشاند ھی فرمائی گر مسلہ جوں کا تول میں رہا۔ اب صرف ایک باب رہ گیا تھا' فرمائے گئے اگر اب بھی حل نہ ہوا تو یہ مسلہ جول کا تول میں رہا۔ اب صرف ایک باب رہ گیا تھا' فرمائے گئے اگر اب بھی حل نہ ہوا تو یہ مسلہ جول کا تول میں کہ وہ کی ایک تول بیان کیا تو میں نے دیکھا کہ وہ مسلہ کا صبح جواب تھا۔ میں مطمئن ہو گیا کہ مسلہ حل ہو گیا گر میں نے اپنی آن رکھنے کے لیئے کہا مسلہ کا صبح جواب تھا۔ میں مطمئن ہو گیا کہ مسلہ حل ہو گیا گر میں اس طریقہ سے مسائل حل کرتا رہا۔ میں ان سے علیمرگی میں اس طریقہ سے مسائل حل کرتا رہا۔ میں ان سے علیمرگی میں اس طریقہ سے مسائل حل کرتا رہا۔ ایک دن انہوں نے جھے بوچھا ابوبوسف ابھی تک وہ مسلہ حل نہیں ہوا گر میں ہربار انہیں مثال جا کہ ایک دن انہوں نے جھے بوچھا ابوبوسف ابھی تک وہ مسلہ حل نہیں ہوا گر میں ہربار انہیں مثال جا کہ دن انہوں نے جھے بوچھا ابوبوسف ابھی تک وہ مسلہ حل نہیں ہوا گر میں ہربار انہیں مثال جا کہ دو مسلہ حل نہیں ہوا گر میں ہربار انہیں مثال جا کہ دن انہوں نے دیکھا کہ تول نے میرا مسلہ حل نہیں ہوا گر میں ہربار انہیں مثال جا کہ دو مسلہ حل نہیں ہوا گر میں ہربار انہیں مثال جا کہ دو مسلہ حل نہیں ہوا گر میں ہربار انہیں مثال جا کہ دو مسلہ حل نہیں ہوا گو میں ان سے علیم کردیا تھا۔

حضرت واود طائی والی والی بیا الله نیان فرمایا ہے کہ جب خلیفہ عباب ابوالعباس کوفہ ہیں اور اسلامت آپ انہوں نے کوفہ کے تمام علائے کرام کو اپنے پاس بلایا اور اعلان کیا کہ آج امور سلطنت آپ کے بی کی اولاد کے سرو ہوئے ہیں۔ یہ اللہ تعالیٰ کا فیصلہ ہے ، وہی حاکم ہے۔ اب وہ اولاد رسول ملطبیلا کے ذریعہ سے حق کو قائم کرے گا۔ اب آپ حضرات علائے کرام پر یہ ذمہ داری عائد ہوتی ہے کہ لوگوں کو حق کی اعامت کرنے پر آمادہ کریں۔ آپ لوگوں کو حکومت انعام و اکرام بھی وے گی اور پر بلند مناصب پر بھی فائز کیا جائے گا اور اب آپ لوگوں کے مشورے سے کام ہوں گے۔ چنانچہ حضرات خلیفہ وقت کی بیعت کرلیں تاکہ یہ کام نمایت سلیقہ سے سرانجام پائیں اور قانونی ججت مورات خلیفہ وقت کی بیعت کرلیں تاکہ یہ کام نمایت سلیقہ سے سرانجام پائیں اور قانونی ججت مورات ایک ساتھ ہوں گے۔ ایم اور آخرت میں سرخرو ہوں گے۔ قیامت کے دن بھی آپ حضرات ایک سراتھ ہوں گے۔ ایم اگر کی امام نمیں ہوتا وہ منتشر رہتے ہیں 'اس لیخ آپ کے ساتھ ہوں گے۔ ایم المومنین تنکیم کرلیں۔ اب تمام علائے کرام خاموش تھے۔ سب کی نگاہیں امام

باماما<u>عظم</u> ۱۵۰ مکتبهنیری

ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ پر گلی ہوئی تھیں کہ آپ کیا جواب دیتے ہیں۔ حضرت امام علیے ۔ علائے کرام کو پوچھاکیا آپ مجھے اجازت دیں گے اپنی طرف سے اور آپ کی طرف سے جواب ملا ؟ سب نے اتفاق کیا کہ آپ بی جواب ویں۔

آپ اٹھے' اللہ تعالیٰ کی حمد و ننا بیان کی اور حضور صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم پر درود و ساسے پیش کیا اور فرمایا کہ حضور صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم کی قربت کی وجہ سے ہمیں حق ملا ہے اور ظالم سے کے ظلم سے نجات ملی ہے اور اللہ تعالیٰ نے ہمیں حق بیان کرنے کی توثیق دی ہے۔ اے ابوالعباس

ہم اللہ تعالیٰ کے علم سے آپ کی بیعت کرتے ہیں اور آپ کے ساتھ وفاداری کا عمد کرتے ہیں اور قیامت تک نبی کریم صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم کی اولاد اور قربت والوں سے محبت کرتے رہیں گے۔

خلیفہ ابوالعباس آپ کے اس جواب سے برا خوش ہوا اور فرمایا آپ جیسا خطیب آج ونیا۔ اسلام میں کوئی نہیں ہے۔ میں آپ کی قدر کرتا ہوں' میں ان علائے کرام کی بھی تعریف کرتا ہوں

جنوں نے اپنی علمی بھیرت کا ثبوت دیتے ہوئے آپ کو منتخب کیا ہے۔ جب تمام لوگ دربارے ہے آئے تو حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے پوچھنے لگے کہ قیامت تک سے آپ کی کیا مرد

ہے ؟ کیا آپ کو یقین تھا کہ یہ لوگ قیامت تک رہیں گے۔ آپ نے فرمایا کہ آپ لوگوں نے گھے ایک اہم کام دیا تھا میں نے آپ لوگوں کی جان چھڑا دی اور خود مصائب میں بھنس گیا ہوں۔ میں گ

تو آپ کی خلاصی کے کیئے کما تھا۔ بس علماء کرام نے آپ کی اس کوشش کی تعریف کی۔

حضرت شریک ملیطہ فرماتے ہیں کہ ہم ایک جنازہ میں حاضر نتے ' ہمارے ساتھ سفیان توری ابن شبرمہ' ابن ابی لیلی' امام ابو حلیفہ' ابوالاحوص' مندل اور حبان بھی تھے۔ جنازہ بنوہاشم کے سرداروں

کے ایک بیٹے کا تھا جس میں کوفہ کے بے شار لوگوں کے علاوہ اہل علم کی ایک بہت بڑی تعداد موجود تھی۔ ہم جنازہ اٹھائے چلتے چلتے ایک جگہ رک گئے ' پوچھا گیا تو لوگوں نے بتایا کہ مرنے والے نوجواں کی مال صدمہ سے برشان ہو کر پہنی ہے ان ایس سے میں میں آپ کے جانب میں اور کا میں میں اور است

کی مال صدمہ سے پریشان ہو کر پینجی ہے اور اپنے سرسے دویٹہ اتار کر جنازے پر ڈال دیا ہے چو تک وہ ہا شمیہ اور سیدہ خاتون تھیں لوگ اس حرکت سے برے پریشان ہوئے اور شرم و حیاء کرتے ہوئے جنازہ کو رکھ کر علیحدہ ہو گئے ہیں۔ اس مرے ہوئے ٹوجوان کے والدنے اس سید زادی کو زکار کر کھ

کے یمال سے چلی جاؤ۔ مگر اس خاتون نے جانے سے انکار کر دیا تو خاوند نے غصہ میں آکر کما اگر تم نہ

جادگی تو میری طرف سے جہیں طلاق ہے۔ اس خاتون نے بھی کہا کہ اگر میں بیال سے چلی گئی تو میری طرف سے جہیں طلاق ہے۔ اس وقت تک بیال سے جہیں جاول گی جب تک اس کی نماز جازہ نہ پڑھی جائے۔ یہ صورت حال بری پریٹان کن تھی۔ تمام لوگ سخت پریٹان شے 'علاء کرام کی دو سرے کی طرف دیکھنے گئے۔ جس شخص کا بیٹا فوت ہو گیا تھا اس نے طلاق کی ہم کھائی تھی ' کے دو سرے کی طرف دیکھنے گئے۔ جس شخص کا بیٹا فوت ہو گیا تھا اس نے طلاق کی ہم کھائی تھی ' سے جُمع میں پکارا کہ امام ابو حنیقہ رضی اللہ تحالی عنہ کہاں ہیں ؟ برائے کرم وہ آگے بردھ کر ہمارا سے حل کریں۔ آپ آگے بردھ اور تمام واقعہ کو اس شخص کی زبانی سنا' آپ نے فرمایا جنازہ بمال میں کہاز جنازہ پڑھا کی اس نے نماز جنازہ پڑھائی اور تمام لوگوں کی رکو اور باپ کو فرمایا کہ اب بمال ہی نماز جنازہ کی بعد آپ نے فرمایا اب جنازہ اٹھا کر مردہ کو دفن کر حالے جائے۔ جب مردہ کو دفن کر دیا گیا تو آپ نے اس خاتون کو فرمایا اب تم چلی جاؤ تم پر کوئی پابندی کی شرمہ نے فرمایا ابو حنیفہ رضی اللہ تحالی عنہ بڑی خوش نصیب ماں کا بیٹا ہے۔ آپ نے ایک مشکل سے شرمہ نے فرمایا ابو حنیفہ رضی اللہ تحالی عنہ بڑی خوش نصیب ماں کا بیٹا ہے۔ آپ نے ایک مشکل سے طل کر دیا ہے اور ہر مسئلہ کو بلا ٹکلف حل کرنے کی اہلیت رکھتے ہے۔

ایک شخص نے امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ سے دریافت کیا کہ میں ہمائے کے گھر کی طرف کے اور روشن دان کھول وو 'گریاد رکھو کہ سائے کو خبر نہ ہو۔ دریچہ کھل گیا تو اس کا ہمائیہ اسے قاضی ابن ابی لیل کے پاس لے آیا 'آپ نے سائے کو خبر نہ ہو۔ دریچہ کھل گیا تو اس کا ہمائیہ اسے قاضی ابن ابی لیل کے پاس لے آیا 'آپ نے فرایا کہ تم دریچہ بند کر دو 'تہیں کوئی حق نہیں پنچا۔ وہ شخص حضرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ میں عنہ کے پاس آیا اور صور تحال سے آگاہ کیا۔ آپ نے فرایا فکر نہ کرد۔ اب جس دیوار پر دریچہ دروشندان ہے اسے تو ڑ دو 'اس کی قبت میں اوا کر دول گا۔ اس نے دیوار تو ڑی دی وہ دیوار اس کی شمی۔ اسے حق پنچا تھا کہ اپنی دیوار تو ڑ دے اور کوئی دو مرا اسے روک نہیں سکتا تھا۔ اب اس کا تھا۔ اب اس کا تھا۔ اب اس کا تھا۔ اب اس کا دیوار تو اس کی ہے گئی دیوار تو ڑ نے پاس آیا اور واقعہ شایا۔ ابن ابی لیلی نے کما دیوار تو اس کی ہے دریچہ کھولئے سے روک نہیں سکتا۔ اس شخص نے کما دیوار تو ڑ نے پر آپ اسے جا تر دریچہ کھولئے سے روک تھا جو ایک معمولی بات تھی 'گر پوری دیوار تو ڑ نے پر آپ اسے جا تر دریچہ کھولئے سے روکا تھا جو ایک معمولی بات تھی 'گر پوری دیوار تو ڑ نے پر آپ اسے جا تر دریچہ کھولئے سے روکا تھا جو ایک معمولی بات تھی 'گر پوری دیوار تو ڑ نے پر آپ اسے جا تر اس جا تا ہے جو میرے ممائل کو غلط دورے دیے۔ ابن ابی لیلی نے کہا ہے شخص اس شخص کے پاس جا تا ہے جو میرے ممائل کو غلط دورے دیے۔ میں۔ ابن ابی لیلی نے کہا ہے شخص اس شخص کے پاس جا تا ہے جو میرے ممائل کو غلط

سامام اعظم م

\_\_\_\_\_\_ ثابت کرنے میں کمال رکھتا ہے۔ ابن ابی لیلیٰ نہ صرف امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی علمی ہے کا اعتراف کر رہے ہیں بلکہ اپنی غلطی کا اعتراف بھی کر رہے ہیں۔

حضرت امام ابوحنیفه رضی الله تعالی عنه کے ایک شاگرو (ابن مبارک ملافیہ) نے فرمایا کے

نے اپنے استاد ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ ہے دریافت کیا کہ ایک شخص کے پاس کسی کا ایک

تھا اور ایک دوسرے مخص کے دو درہم تھے ان تین درہموں میں سے دو درہم کم ہو گئے۔ ا

ایک درہم کاکیا کیا جائے "آیا پہلے فخص کو دیا جائے یا دونوں کو مساوی دیتے جائیں ؟ آپ \_

اس کے تین جھے کر دیئے جائیں دو تمائی دو درہم والے کو دیئے جائیں اور ایک تمائی ایک والے کو دیئے جائیں اور ایک تمائی ایک والے کو۔ اس فیلے کے بعد ابن مبارک ابن شرمہ کے پاس گئے اور میں سوال ان کے سات

وہے وے من سے سے جعر بین سیارت ابن جبرمہ سے پان سے اور یکی سوال ان سے ساتے ہے۔ کیا۔ انہوں نے فرمایا تم پہلے بھی یہ سوال کر چکے ہو' ابن مبارک نے کہا میں امام ابو حذیفہ رض

تعالی عنہ کے پاس گیا تھا' انہوں نے ایک درہم کو تین حصول میں تقتیم کر کے دونوں میں ان \_ حصے کی تناسب سے تقتیم کرنے کا فیصلہ دیا ہے۔ ابن شہرمہ فرمانے گئے ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی \_

سے کی خاسب سے مسیم کرنے کا فیصلہ ویا ہے۔ ابن سبرمہ فرمانے ملکے ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی سے نے غلط رائے دی ہے اس تقسیم کی صورت یہ ہے کہ دو درہم ضائع ہونے کے بعد باقی ماندہ در سے

سے علا رائے دی ہے ہاں ہیم می صورت ہیا ہے کہ دو در ہم صاح ہونے کے بعد بای ماندہ در مصاف نصف دونوں کو تقسیم کر دمیا جائے۔ مجھے ابن شرمہ کی تجویز انجھی گئی میں دوبارہ حضرت

ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے پاس گیا میں حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی علمی بھیرت واو مخسین دیئے بغیر نہیں رہ سکا۔ میرے خیال میں اگر دنیا بھر کے وانشوروں کی علمی بھیرت کو سے

دیا جائے تو امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی علمی اور عقلی بصیرت نصف سے زیادہ ہو گ۔ آپ۔ مجھے دیکھتے ہی فرمایا ایسا معلوم ہو تا ہے کہ تم درہم والا مسئلہ لے کر ابن شبرمہ کے پاس گئے ہو گے

اس نے اسے نصف نصف تقتیم کر کے دونوں کو دینے کا کہا ہوگا۔ میں نے تشکیم کیا تو آپ نے فید کہ تین درہم جب کیجا کر دیئے گئے تو دونول افراد کی شرکت ہو گئی اس طرح ہر ایک کو اپ ا

حصد کے نتامب سے ایک درہم سے حصد ملے گا۔ ضائع ہونے والے درہم دونوں کے ہیں اس طرح ایک کا دو تمائی درہم ضائع ہوا اور دو سرے کا ایک تمائی اس طرح باقی درہم میں حصہ ہوگا۔

زیادہ مرکے مطالبہ سے نجات

حضرت امام ابو حنیفه رضی الله تعالی عنه کی مجلس میں ایک نوجوان کا آنا جانا تھا۔ وہ اکثر آ

ے مسائل سنتا۔ ایک دن اس نے عرض کی حضور میں فلال قبیلے کی فلال عورت ہے شادی کرنا چاہتا ہوں' وہ کوفہ کی رہنے والی ہے' میں نے اس کے والدین کو پیغام بھیجا گرانہوں نے حق مراتنا زیادہ طلب کیا ہے کہ میری استطاعت نہیں' گر میرا دل اس عورت سے نکاح کرنے پر مجبور ہے۔ آپ نے فرمایا پہلے تم استخارہ کرو' پھراس عورت کے والدین کو جس قدر مہرماتگتے ہیں اس پر رضامندی کا اظہار کر دو' جب وہ عورت تمہاری مجت کو محسوس کرے گی تو تمہیں مرمعاف کر دے گی۔ نکاح ہوا تو اس خانہ نے مہرفوری نقد طلب کیا وہ شخص دوڑا دوڑا امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی خدمت میں آگیا اور صور تحال سے آگاہ کیا۔ آپ نے فرمایا قرض لے کر مہرادا کر دو اور اپنی منکوحہ کو گھر لے آؤ الیا ور صور تحال سے آگاہ کیا۔ آپ نے فرمایا قرض لے کر مہرادا کر دو اور اپنی منکوحہ کو گھر لے آؤ الیا در صور تحال سے آگاہ کیا۔ آپ نے فرمایا قرض لے کر مہرادا کر دو اور اپنی منکوحہ کو گھر لے آؤ الیا در صور تحال سے آگاہ کیا۔ آپ نے فرمایا قرض لے کر مہرادا کر دو اور اپنی منکوحہ کو گھر لے آؤ الیا در صور تحال سے آگاہ کیا۔ آپ نے فرمایا قرض لے کر مہرادا کر دو اور اپنی منکوحہ کو گھر کے آؤ الیا در صد سے محفوظ ہو جاؤ گے۔

وہ نوجوان قرض لے کر اپنی بیوی کو گھرلے آیا' ادھر امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے اپنی گروسے اس کا قرض ادا کر دیا۔ پھر اس مخص کو کہا کہ اب تم شہر میں اعلان کر دو اور اپنی بیوی کے والدین کو بیہ بات پہنچا دو کہ تم کوفہ سے کہیں جانے کا ارادہ رکھتے ہو اور اپنی بیوی کو بھی ساتھ لے جاؤ

حضرت اہام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے مضورے سے وہ دو اونٹ کرایہ پر لے آیا اور سے گھرکے سامنے بٹھا کر سامان لادنے کی تیاری کرنے لگا اور مشہور کر دیا کہ وہ خراسان جا کر تجارت کرے گا اور الدین آئے انہیں اس کا حصوصاً اپنی بیٹی کا اتنی دور جانا ناگوار گزرا' وہ اہام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے پاس گئے' مصوحاً اپنی بیٹی کا اتنی دور جانا ناگوار گزرا' وہ اہام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے پاس گئے' مصوحاً اپنی بیٹی کا اظہار کیا اور ان سے اہداد چاہی۔ حضرت نے فرمایا کہ خاوند کو حق حاصل ہے کہ اپنی بیوی کو جمال چاہے۔ اخلاقی اور شری لحاظ سے اسے روکا نہیں جاسکا۔ انہوں نے اپنی بیوی کو جمال چاہے۔ اخلاقی اور شری لحاظ سے اسے روکا نہیں جاسکا۔ انہوں نے ساتھ بات تو ہمارے لیئے مشکل ہے' آپ اس مشکل کا کوئی حل نکالیں آپ نے فرمایا اس کا تمام مہر سے واپس کر دو آگ کہ اس کے ارادہ سے باز رکھا جاسکے انہوں نے ابیا ہی کیا' آپ نے بھی اس کے واپس کر وہ آگ کہ اس اس کے ارادہ سے باز رکھا جاسکے انہوں نے کا ارادہ ترک کر دو۔ اس نے محل کو مہرواپس لینے پر آمادہ کرتے ہوئے کہا کہ اب تم خراساں جانے کا ارادہ ترک کر دو۔ اس نے قبل اب تو میں مہرواپس لینے کے ساتھ ان سے ایک مکان کا بھی مطالبہ کروں گا۔ آپ نے فرمایا نہیں

یوں نہ کرو اس طرح معاملہ مزید بگڑ جائے گا چنانچہ اس نے مرنے کر خراسان جانے کا ارادہ ترک کر دیا اور مرواپس لے کر کوفہ میں رہنے لگا۔

## وریژ کی تقتیم پرایک فیصله

ایک عورت حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی خدمت میں حاضر ہوئی اور کئے گلی کہ میرا بھائی فوت ہوگیا ہے اور چھ سو وینار ترکہ چھوڑگیا ہے' اس کی جائیداد ہے مجھے صرف ایک وینار ملا ہے۔ آپ نے بوچھا اس کے ورثے کی تقسیم کس نے کی تھی ؟ اس نے بتایا حضرت واود طائی نے تقسیم کی تھی۔ آپ نے فرمایا بی تہمارا حق بنتا تھا اور تہمیں ای پر اکتفا کرتا چاہئے۔ اس لیے کہ تیرے بھائی نے دو بیٹیاں' ایک بیوی' بارہ بھائی' والدہ اور ایک بمن ( یعنی تو ) چھوڑے تھے' اس نے کہاں ہاں! صرف یمی وارث تھے۔ آپ نے فرمایا بیوی کے جھے دد تمائیاں اور وہ چھ سو وینار سے چار کہاں ہاں! صرف یمی وارث تھے۔ آپ نے فرمایا بیوی کے جھے دد تمائیاں اور وہ چھ سو وینار سے چار دینار کی بیان کی جھوڑ وینار سے گئے۔ بیوی کو آٹھواں خصہ ملا وہ ایک سو وینار لے گئے۔ بیوی کو آٹھواں خصہ ملا وہ ایک سو وینار لے گئے۔ بیوی کو آٹھواں خصہ ملا وہ ایک سے چوہیں وینار بھائیوں کو ملے اور ایک وینار تمہارے جھے سے گئے۔ ان میں سے چوہیں وینار بھائیوں کو ملے اور ایک وینار تمہارے جھے آگے۔ ( یمی فیصلہ حضرت واود طائی رحمتہ اللہ علیہ نے کیا۔)

#### امام الوحنيف الضخاليج وارالقصاة ميس

ابن ابی لیلی سلطنت عباسیہ کے قاضی سخے۔ حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ اپنے شاگرد امام ابو بوسف ملیجہ کو لے کر کسی کام کے لیئے قاضی کے دربار میں گئے۔ قاضی ابن ابی لیلی نے دربان کو تھم دیا کہ جو لوگ فیصلے کے لیئے آئے ہیں انہیں اندر جمیجنا جائے تاکہ آج میں امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی موجودگی میں فیصلے کول اور آپ میرے فیصلوں کو سن کر داو دیں۔

سب سے پہلے دو مرد اندر آئے ایک نے کما اس شخف نے میری مال پر زناکی تہمت لگائی ہے اور مجھے زانیہ کا بیٹے کمہ کر گالی دی ہے۔ آپ ججھے میری اس توہین اور میری والدہ پر تہمت لگانے کا حق دلا کیں۔ قاضی ابن ابی لیل نے معاطیہ کو کما تم کیا کتے ہو؟ حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے فرمایا معاطیہ سے دعوی کا سوال کیسا؟ یہ مدعی تو نہیں ہے اور نہ ہی اس نے دعوی اللہ تعالی عنہ نے فرمایا معاطیہ سے دعوی کا سوال کیسا؟ یہ مدعی تو نہیں ہے اور نہ ہی اس نے دعوی

كيا ہے۔ اس كى مال ير زناكى تهمت لگائى كئى ہے آپ كے پاس اس كى مال كا وكالت نامہ تو شيس ہے کہ آپ اس پر سوال کریں۔ آپ تو سے کر سکتے ہیں کہ مدی سے پوچیس کہ اس کی مال زندہ ہے یا مر سن باگر زندہ ہے تو اس کے بیٹے کو وعویٰ کا کوئی حق نہیں۔ جب تک اس کی والدہ اس کو و کالت المه نه دے یا این مقدمه کا مختار نه بنائے۔ اگر وہ مرحمی ب تو دوسری بات ہے۔ امام ابو حقیقه رضی الله تعالی عنہ کے ٹوکنے یر ابولیلی نے دعی سے دریافت کیا کیا تمماری مال زندہ ہے یا مرحمی ہے؟ اس نے بتایا کہ مرگئ ہے۔ قاضی ابولیلی نے محم دیا کہ اس بر گواہ پیش کریں کہ وہ مرگئ ہے۔ مدی نے مسلواہ بیش کر دیئے کہ واقعی اس کی مال مرگئ ہے۔ اب قاضی ابولیلی نے مدعاعلیہ کو فرمایا اب تم بناؤ تسارا کیا جواب ہے۔ حضرت امام ابو حذیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے پھر نوکا کہ آپ مدعاعلیہ کی بجائے ری سے دریافت کریں کہ کیا مرحومہ والدہ کے اور وارث بھی ہیں یا صرف بھی ایک بیٹا ہے۔ اس نے بتایا کہ حضرت وہی اس کا وارث ہے۔ قاضی نے مدعی کو گواہ پیش کرنے کا کہا' اس نے گواہ پیش سے کہ وہی مرنے والی کا وارث ہے۔ اب قاضی ابولیلی نے مرعاطیہ کو مخاطب کیا مگر امام ابوحنیفہ رضی الله تعالی عند نے پھر ٹوکا کہ آپ اب بھی معاملیہ سے سوال ند سیجئے۔ آپ مدی سے بوچھتے کہ اس کی والدہ آزاد عورت تھی یا غلام ( کنیز) تھی۔ قاضی ابولیلیٰ نے یہ سوال مدعی سے کیا تو اس نے بتایا کے وہ ایک آزاد خاتون تھی۔ قاضی ابولیل نے پھر مدعاعلیہ کو مخاطب کیا تو حضت امام رہ لیجہ نے فرمایا مل سے وریافت فرمائیں کہ اس کی مال مسلمان تھی یا معاہدہ والی تھی؟ ابن کیلی نے مدعی ہے بوچھا تو س نے بتایا کہ میری ماں مسلمان خاتون تھی اور آزاد تھی۔ کوفہ کے فلال سردار قبیلہ کی بیٹی تھی۔ اللها کواہ پیش کریں محواہ پیش ہوئے انہوں نے تصدیق کی کہ وہ مسلمان تھی ازاد تھی اور فلال فلیلے ے تعلق رکھتی تھی۔ حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے قاضی ابن ابی لیلیٰ کو فرمایا اب تم و اور تہمارا کام اب آپ مدی یا مدعاتانیہ سے سوال کر کے فیصلہ کریں۔ اب آپ نے مدعی سے سارا مقدمہ سننے کے بعد مدعا لیہ سے بوچھا تو اس نے گالی دینے یا تھمت لگانے سے انکار کرویا۔ ابن اللی سی نے اس کھے گواہ پیش کرنے کو کہا وہ جو گواہ لایا وہ ایک برے قبیلے کے سردار تھے اور کوفہ میں وں ایمت رکھتے تھے ان کی گواہی کے تمام الفاظ خود نے اب امام ابوصیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے و على اور الله كرعدالت ب بابر آگئ ماكه قاضى آسانى س فيصله ساسكين- اس طرح امام

مناقب امام اعظم ٢

ابو حنیف رضی الله تعالی عند نے قاضی کاعدالتی غرور اور شربیت سے شناسائی کاغرور توڑ کر رکھ دیا۔

#### امام ابو حنیفه رایته اور سفیان نوری رایته

ا یک مختص نے حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی خدمت میں حاضر ہو کر بتایا کہ میں نے قتم کھائی ہے کہ میں اپنی بوی ہے اس وقت تک بات نہیں کروں گاجب تک وہ پہلے مجھ = بات نه کرمے گی۔ ادھر میری بیوی نے بھی قتم اٹھالی ہے کہ اپنے شوہرے اس وقت تک بات نسیر كرے كى جب تك وہ خود مجھ سے بات نہ كرے كا اور نہ ہى شو ہركے كسى سوال كا جواب دے ك-اگر میں این فتم توڑں تو اس کی ساری جائداد صدقہ میں چلی جائے گے۔ حضرت امام ابو حذیف رضی 🛋 تعالی عنہ نے اس شخص سے بوچھا یماں آنے سے پہلے تم نے بید مسئلہ کسی اور سے بوچھا تھا؟ اس نے بتایا حفرت سفیان توری رحمتہ اللہ علیہ ہے۔ حضرت حفیان توری بیالی نے فیصلہ دیا کہ ان سے ے جو بھی بات کرے گا حانث ہو جائے گا۔ اس مشخص نے کما کہ پہلے میں نے اس عورت سے النظم کی ہے۔ حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے کہا ان میں سے کوئی بھی حانث نہیں ہوا۔ شخص حضرت ابو سفیان توری مرافیہ کے پاس گیا اور بتایا کہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے تو بول فتوی دیا ہے کہ ان میں سے کوئی بھی حانث نہیں ہوا۔ بیہ شخص سفیان توری مایلید کا رشتہ وار تھا۔ اس یر سفیان توری مایئیہ سخت ناراض ہوئے اور کہا تم تو خروج کو مباح کرتے ہو۔ ( یعنی صنف واقع ہو 🕊 ے) انہوں نے پھر فرمایا اچھا ہی مسلہ دوبارہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے جاکر یو چھو۔ انہوں نے دو سری بار سوال کیا تو آپ نے وہی پہلا جواب دہرا دیا۔ سفیان توری را طید نے یوچھا آپ 🗕 اس مسئلہ کا یہ جواب کیے دیا ؟ آپ نے فرمایا عورت نے جب مرد سے پہلی بار حلفا" کما کہ میں 🖥 ے بات نمیں کروں گی اگر بات کی تو میری ساری جائداد صدقہ میں دے دی جائے۔ اب عورت \_ بات تو کر دی مرد پر قتم واقع نهیں ہو سکتی۔ اس کی قتم تو ساقط ہو گئی۔ اس طرح مرد بھی حانث نہیں ہوا۔ امام سفیان توری مطیعہ نے کہا ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ تم پر وہ علوم منکشف ہوئے ہیں کہ ہم نصور بھی نہیں کر گئے۔

ابراہیم صائع فرماتے ہیں کہ میں عطاء بن ابن رباح کے پاس بیٹھا تھا۔ امام ابو حقیقہ رضی

الله تعالی عنه تشریف لے آئے و آنیناہ اهله ومثلهم معهم الله پر الفتاكو ہونے لكی عطاء بن ابو رہاح نے كما الله تعالی نے جعرت ابوب علیه السلام كو ان كے اہل و عیال اور ان كی متصل ديگر اہل و الله عنایت فرمائی۔ حضرت لهام ابوحنيفه رضى الله تعالی عنه فے پوچھاكيا الله تعالی الله تعالی الله تعالی الله تعالی الله تعالی سے نہیں عطاكرة ہے جو اس كی پشت سے نہ ہو؟ الله تعالی آپ كو عافیت بخشے بیں نے تو ايماكيس سے نہیں علم ميرے نزديك تو اس آيت كريمه كا مطلب بي ہے كه "الله تعالی نے حضرت ابوب عليه السلام كو ان كے اہل و عيال اور اولاو جو ان كی صلی اولاد ہے عطا فرمائی۔" اور ساتھ ہی ان كی اولاد جيسا اجر و قاب عطا فرمايا حضرت عطاء نے فرمايا بيد بهترین تفسیر ہے۔

## اڑ تا پرندہ بیتی ہوئی ہانڈی میں گر گیا

علی بن مسعر روایت فیراتے ہیں کہ ایک دن ہم امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے باس بیٹھے کہ آپ کے خاص شاگرد عبداللہ بن مبارک روایت تشریف لائے اور عرض کی حضور ایک شخص بھٹی پکیا رہا تھا۔ اڑتا ہوا ایک پرندہ اس پکتی ہوئی ہانڈی ہیں آگرا۔ حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ سے نے اپنی مجلس میں بیٹھے ہوئے شاگردوں کو فرایا آپ لوگ ان کا جواب دیں۔ انہوں نے عرض کی صور ابن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنها کی ایک روایت ہے کہ شورہا گرا دیا جائے گرگوشت پانی سے وصو کہا ایا جائے۔ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرایا ہمارا بھی کی خیال ہے لین اس میں ایک مطلب کہ آگر پرندہ ہانڈی کے جوش مارتے وقت گرا ہے تو گوشت بھی پھینک دیا جائے گا اور شوربہ کی پھینک دیا جائے گا اور شوربہ کی پھینک دیا جائے گا اور گوشت دھو کر پھینک دیا جائے گا در گوشت دھو کر پھینک دیا جائے گا در گوشت دھو کر پھینک دیا جائے گا در ہونت دھو کر پھینک دیا جائے گا۔ ابن مبارک نے عرض کی حضور آپ نے یہ فرق کینے معلوم کیا کہ ہانڈی کے مش کرا تو پھر شورہا پھینک دیا جائے گا۔ ابن مبارک نے عرض کی حضور آپ نے یہ فرق کینے معلوم کیا کہ ہانڈی کے مین کر حالت سکون میں ایسا نہیں ہو تا اس لیئے گوشت دھو کر کھایا جاسکتا ہے۔ ابن مبارک کے جو اس میاس موتا ہے۔ (زرین جواب جائی مار کے این مبارک کے حواب خاص موتا ہے۔ ابن مبارک کے کہا یہ جواب خالص سونا ہے۔ (زرین جواب ہے۔)

المن ایک قتم کھا کر پھن گئے

حضرت ابوجعفر ہندوانی نے فرمایا کہ اعمش حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے

مائل یا فیصلوں سے کوئی ولچین نہیں رکھتے تھے اور نہ ہی آپ سے حسن معاشرت رکھتے تھے۔ اخلاقی طور پر بھی اس کا رویہ اچھانہ تھا۔ ایک بار وہ ایک مصیبت میں گر فآر ہو گیاوہ اپنی عورت = طلاق کی قتم کھا بیٹھا اور کما اگر تم نے مجھے میہ خبردی کہ آٹا ختم ہو گیا تو تہیں طلاق ہو گئی۔ اعمش نے اس بیان پر زور دیتے ہوئے مزید کما کہ اگر آئے کے ختم ہونے کے متعلق کچھ لکھا' اشارہ کیایا پیغام دیا تو ان تمام صورتوں میں تجھے طلاق ہو گئی۔ اعمش کی بیوی خاوند کی اس قتم سے حیران رہ گئی کہ اس نے کیا کہا ہے۔ وہ سوچنے لگی کی اب کیا کیا جائے اسے کسی نے مشورہ دیا کہ اس مشکل ہے صرف امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ ہی نکال سکتے ہیں تم ان کے پاس جا کر سارا واقعہ سناؤ۔ اعمش کی بیوی آپ کے پاس آگئی اور تمام واقعہ بیان کیا۔ آپ نے فرمایا اس میں کیا مشکل ہے اس کا حل ق نمایت ہی آسان ہے۔ تم رات کے وقت اعمش کے ازار بند کے ساتھ آٹے کا خالی تھیلا باندھ دینا وہ خود محسوس کرے گاکہ گھر میں آٹا نہیں ہے۔ صبح کے اندھیرے میں اعمش اٹھا شلوار پینے لگا تو ات ازاربند کے ساتھ کچھ لیٹی ہوئی چیز محسوس ہوئی غور سے دیکھاکہ آٹے کا خال تھیلا بندھا ہوا ے اے معلوم ہو گیا کہ گھریں آٹا نہیں ہے۔ یہ کیفیت و کھ کر کنے لگا بخدایہ ترکیب امام ابو عنیف رضی اللہ تعالی عنہ کے بغیر کسی کو نہیں سوجھ سکتی' میہ ترکیب انہوں نے ہی بتائی ،وگی جب تک وہ كوفيد مين زندہ ہے وہ جميں شرمندہ كرتا رہے گا۔ اب عام مسائل كے علاوہ جميں عورتوں كے ذريعه بھی رسوا کراتا رہتا ہے۔ اب وہ ہر مسئلہ میں ہمیں جابل تصور کرنے لگیں گی اور ہر مشکل میں ان سے مشورے لیا کریں گی۔

# ایک ہزار مسائل کا فوری جواب

ابو حمزہ سکری فرماتے ہیں کہ مجھے ابراہیم صائع مطیح نے ایک ہزار مسائل لکھ کر دیے آکہ میں ان کا جواب امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ سے دریافت کروں۔ میں حاضر ہوا' ایک ایک مسئلہ بیان کر آگیا' آپ جواب دیتے گئے۔ میں جران رہ گیا کہ مسائل فقہ کا یہ بحربیراں کس انداز سے مسائل کو حل کر آجا آ ہے۔ یاد رہے کہ ابو حمزہ سکری اور ابراہیم صائع مود کے تمام اتمہ کے استاد اور دنیائے اسلام کے اکابر علیاء مانے جاتے تھے۔

## أيك كينه باز كاانجام

ابوجعفر منصور عبای خلیفہ کا ایک خادم حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے بغض اور کین رکھتا تھا اور جمل بیٹھتا آپ کے خلاف گفتگو کرتا' آپ کے عیوب بیان کرتا رہتا۔ امیرالمومنین منصور نے اسے کئی بار ردکا ٹوکا گروہ اپنی اس حرکت سے باز نہ آیا۔ ایک دن اس نے منصور سے کما کہ بین آپ کے سامنے ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے تین سوالات کرتا چاہتا ہوں اگر انہوں نے بھی جواب دے حیاب و سامنے تو آئندہ برائی نہیں کول گا۔ منصور نے کما کہ اگر انہوں نے صحیح جواب دے سے تو تمماری گردن اڑا دول گا' اس نے کما تحکیک ہے۔ منصور نے امام صاحب کو بلایا اور خادم کو کما کہ سوال کرو۔

109

پہلا موال یہ تھا کہ ونیا کا درمیان (محور) کمال ہے؟ آپ نے فرمایا جگہ ہی ہے جہان اور بیٹا موال ہے دو مرا موال کیا کہ دنیا میں مروں والی گلوق زیادہ ہے یا پاؤں والی آپ نے فریا مرون والی گلوق زیادہ ہیں یا عورتیں آپ نے فریا مرون والی مخلوق زیادہ ہیں یا عورتیں آپ نے فریا دونوں دیادہ ہیں مگر تم بتاؤ تم مرد یا عورت اور کس جنس سے تعلق رکھتے ہو؟ کیونکہ خصی مردیا دونوں زیادہ ہیں مگر تم بتاؤ تم مردیا عورت اور کس جنس سے تعلق رکھتے ہو؟ کیونکہ خصی مردیا دونوں زیادہ ہوئے ہیں یہ من کو وہ خادم مجموت ہو کر رہ گیا۔ امیرالموشین نے جلاد کو بلاکر میں کا مرقام کرا دیا۔

# اي فتم كاحل

کوفہ میں ایک مخص نے قتم کھائی کہ وہ رمضان کے مینے میں اپنی بیوی ہے دان کے وقت سے کرے گا ورنہ اے طلاق ہو جائے گی۔ علمائے کوفہ اس سئلہ کے حل سے عاجز تھے۔ امام سفیہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے دریافت کیا گیا تو آپ نے فرمایا۔ یہ مخص اپنی بیوی کو سفر پر لے اور دہاں دن کے وقت جماع کرے تو کوئی حرج نہیں سارے علماء حیران رہ گئے۔

و فرعی نبوت سے معجزہ طلب کرنا بھی کفر ہے

حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے زمانے میں ایک شخص نے نبوت کا وعویٰ کیا اور ۔

کما کہ بھی چند روز بعد معجزات بیان کروں گا۔ حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے اعلان کیا کہ مدعی نبوت سے معجزات طلب کرنا یا ولائل مانگنا کفرہے کیونکہ ریہ نص شرعی کے خلاف ولائل مانگنا ہے۔

### الم الوحنيف الصيالية كاعقد ثاني

حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے حماد کی والدہ کے علاوہ ایک اور عورت سے بھی نکاح کر لیا تھا۔ جب حماد کی والدہ کو خبر ہوئی تو انہوں نے عصہ میں آگر آپ سے علیحدگی افقایار کر لی اور حضرت کو مجبور کیا کہ نئی بیوی کو طلاق دے دیں۔ حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے اپنی نئی بیوی سے کما تم اور میں ایک وروازے سے واخل ہوں گے اور جمال میری پہلی بیوی بیٹھی ہوگی تم سوال کرنا کیا بیوی کے جائز ہے کہ اپنے خاوند سے بات کرنا چھوڑ دے اور صرف اس بات پر بات نہ کرے کہ اس کے خاوند نے دو سری شادی کرلی ہے ؟

جب دونوں گریں واخل ہوئے تو گریں حماد کی والدہ ( یعنی آپ کی پہلی بیوتی ) بیٹی تقسی ۔ نئی ولمن نے حضرت سے وہ مسئلہ بوچھا تو حماد کی والدہ نے اپنی قسم دوبارہ دہرائی کی جب تک نئی بیوی کو طلاق نہ دیں گے ہیں آپ سے علیحدہ رہوں گی۔ آپ نے فرمایا میری جو بیوی میرے اس گرسے باہر ہے میں اسے تین طلاقیں دیتا ہوں۔ حماد کی والدہ آپ کے اس اعلان پر بہت خوش ہوئی اور اپنی غلطی کا اعتراف کرتے ہوئے آپ سے علیحدگی ختم کر دی۔ یہ امام صاحب مالین کی حسن تدبیر تقسی کہ سابقہ بیوی نے بھی قسم توڑ دی اور نئی بیوی کو بھی طلاق نہ ہوئی۔

# حضرت صديق اكبر نفت المينية اور حضرت على نفت المينية كي سختي برايك مكالمه

حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کوفہ میں تشریف فرما تھے کہ ایک رافضی معجد میں آگیا وہ کوفے میں شیطان طلاق ( باتونی شیطان ) کے نام سے مضہور تھا۔ آتے ہی بوچھا ابو حنیفہ! تمام لوگوں سے سخت ترین انسان کون ہے ؟ آپ نے فرمایا ہمارے عظیمہ میں حضرت علی رضی اللہ تعالی عنہ ۔ رافضی نے کما یہ تو آپ نے عنہ اور تمہمارے عقیمہ میں حضرت ابو بکر صدیق رضی اللہ تعالی عنہ ۔ رافضی نے کما یہ تو آپ نے

مناقب امام اعظم

#### مدہ قضاہ سے انکار

خلیفہ وقت منصور نے قاضی القصاۃ (چیف جسٹس) کا منصب عطا کرنے کے لیئے کوفہ کے هيه علائے كرام كو طلب كيا۔ ان ميں امام ابو حنيفه ' حضرت سفيان تورى ' حضرت شريك بن عبدالله اور حرت معر تھے۔ ان سب حفرات نے منصب قبول کرنے سے انکار کر دیا۔ حضرت سفیان توری ت مصورے یوچنے لگے آپ کے گھوڑوں کا کیا طال ہے ؟ دوسرے جانور کمال ہیں ؟ آپ کے و کتنے ہیں ؟ خلیفہ نے تھم ویا کہ یہ پاگل ہیں انہیں دربار سے باہر نکال دو- حضرت امام ابو صنیفہ وسی اللہ تعالی عنہ نے بتایا کہ میرا باب باور چی تھا کوفہ کے اشراف ایک باروچی کے بیٹے کو قاضی سے نمیں کریں گے۔ (ایک روایت میں یہ بھی ہے کہ کوف کے لوگ کمیں گے کہ ایک مزدور کا بیٹا سی کیے بن سکتا ہے۔) خلیفہ نے جب امام صاحب مالیجہ کی میہ بات سی تو آپ کو مجبور نہ کیا اور وصت كرويات شريك نے كما مجھے نسيان ( بھول جانا )كى بيارى ہے عليف نے كما ميں آپ كا علاج الداؤل گاجس سے نسیان دفع ہو جائے گا۔ شریک نے کما مجھے ایک اور بیاری بھی ہے میں نمایت مرور ہوں علیفہ نے کہا میں آپ کے لیئے باداموں والا حلوہ تیار کر کے ہر روز پیش کیا کروں گا۔ سے آپ کی کمزوری دور ہو جائے گی۔ اب شریک نے کماکہ اگر مجھے قاضی کا عمدہ دیا تو میں کسی اللط نہیں کروں گا خواہ سے میرا قریبی رشتہ دار ہی کیوں نہ ہویا اپنا بیٹا بھی ہو' خلیفہ نے کہا مجھے سے

مكتبهنبويه

بھی منظور ہے۔ ظیفہ نے کہا کہ آپ کا فیصلہ میرے خلاف یا میری اولاد کے خلاف ہو تو جھے یہ گھ منظور ہے۔ اس شرط پر شریک نے عمدہ فضاء قبول کر لیا۔

ایک دن شریک مند قضاء پر تخریف فرما تھے تو خلیفہ کی لمیک خاص کنیز اور ایک مدی در اس اللہ میں حاضر ہوئے جب بیہ لوگ عدالت بیس آئے تو خلیفہ کی کنیز ان کے آگے بیٹھنے گئی۔ (اس اللہ سے کہ وہ خلیفہ کی خاص کنیز ہے ) قاضی شریک نے اسے جھڑک کر پیچے بٹھا دیا۔ کنیز نے ہو شریک کو کما کہ تو بوڑھا احمق ہے ، قاضی شریک نے کما میں نے تیرے مالک کو پہلے ہی کہ دیا تھا کہ مدالت کے محالمہ میں کی رعایت نہیں کوں گا بیہ محالمہ اتنا بردھا کہ خلیفہ نے اس کنیز کے کے عدالت کے محالمہ میں کی رعایت نہیں کوں گا بیہ محالمہ اتنا بردھا کہ خلیفہ نے اس کنیز کے کے بیا کو معزول کر دیا۔ اس واقعہ سے امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ کے انکار کی وجہ اور ان کو سیاسی اور دینی بھیرت کا اندازہ ہوتا ہے۔

حضرت امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی خدمت میں ایک فخص آیا اور کنے لگا میرا یہ پاکل ہے اور اس کی عمر بھی کافی ہے 'اگر میں اس کی شادی شمیں کرتا تو جھے خدشہ ہے کہ وہ کمیں یہ کا ارتکاب نہ کر بیٹھے۔ اگر نکاح کرتا ہوں تو جھے ڈر ہے کہ وہ اپنے جنون میں طلاق نہ دے دے اس طرح میرا خرچ کردہ مال ضائع ہو جائے گا۔ میں نے اس کا حل یہ نکلا کہ اس کے لیئے ایک کنے خرید لی۔ مگر اس نے چند دنوں بعد اس آزاد کر دیا۔ کنیز بر خرچ شدہ مال ضائع ہو گیا۔ آپ جھے اس مسلہ کا کوئی حل بتائے۔ حضرت امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے فرمایا کہ ایک لونڈی اپنے لیے خیدو اس سے بیٹے کا نکاح کر دو اگر وہ اسے طلاق دے گا تو تیرا مال نے جائے گا۔ اگر وہ آزاد کر جائے گا تو تیرا مال نے جائے گا۔ اگر وہ آزاد کر چاہے گاتو وہ ایبا کرنے کا مجاز نہیں ہوگا۔

امام العصر لیث بن سعد رحمته الله علیه نے فرمایا کہ مجھے حضرت امام ابوحنیفه رضی الله تعالی عنه کی زیارت کی بردی خواہش تھی۔ ایک دن لوگوں کے ایک مجمع میں ایسے مخض کو دیکھا کہ لوگ اسے امام ابوحنیفه رضی الله تعالی عنه کمه کر پکارتے ہیں اور اس سے اپنے مسائل بوچھ رہے ہیں۔ ایک مخص نے ایک نمایت ہی مشکل مسلم دریافت کیا تو آپ نے براا خوبصورت جواب دیا جس سے میں بچد خوش ہوا۔ امام شافعی رحمتہ الله علیه فرماتے ہیں کہ لیش بن سعد مطافحہ کی وفات کے غم کی میں بچد خوش ہوا۔ امام شافعی رحمتہ الله علیه فرماتے ہیں کہ لیش بن سعد مطافحہ کی وفات کے غم کی میں بید خوش میں حموس ہو رہی ہے جھے آپ جیسا مخص زمانہ بحر میں نہیں ملا۔

#### اعمش سے ایک مکالمہ

ایک دن اعمش حفرت امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے مختلف سوالات کرتے جاتے تھے اور آپ ان کے سوالات کے جوابات دیے جاتے 'اعمش نے تعجب سے پوچھا کہ آپ کو اس قدر سور آپ ان کے سوالات کے جوابات دیے جاتے 'اعمش نے بی تو جھے ابراہیم سے بیان کیا تھا' انہوں نے سوم کہن سے حاصل ہوئے ؟ آپ نے فرمایا۔ آپ نے بی تو جھے ابراہیم سے بیان کیا تھا' انہوں نے سام شعبی سے انہوں نے فلال فلال سے۔ اعمش نے برملا کہا اے ابو صنیفہ! تم طبیب ہو اور ہم تو آپ کے سامنے دودھ فروش ہیں۔

عبداللہ بن عمر کتے ہیں کہ ایک دن ہم اعمش کی ہی بیٹے تھے وہ امام ابوضیفہ رضی اللہ حلی عنہ سے مختلف سوالات کرتے جاتے تھے آپ ہر سوال کا جواب دیتے جاتے۔ اعمش نے امام بوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے کہا آپ فلال مسئلہ کا کیا جواب رکھتے ہیں آپ فورا جواب دیے حیا۔ ہیں نے پوچھا کہ اس مسئلہ کی بنیاد کیا ہے ؟ فرمایا آپ نے ابراہیم سے انہوں نے صفیمہ سے موں نے عبداللہ سے انہوں نے نبی کریم صلی اللہ تعالی عنہ سے روایت کی ہے انہوں نے مزید فرمایا اے اعمش! آپ نے ابو وائل رضی اللہ تعالی عنہ سے روایت کی ہے انہوں نے سرت عبداللہ سے انہوں نے حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے۔ اور آپ نے ابوعباس سے حدیث بیان کی انہوں نے ابومسعود انصاری سے انہوں نے نبی پاک صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے۔ پھر فرمایا اے اعمش! آپ نے ابومسلم لے حدیث بیان کی ہے انہوں نے ابومریرہ رضی اللہ سے کہتے جب انہوں نے نبی کریم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم سے۔ "حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی خدمت میں ایک صحفی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی خدمت میں ایک صحفی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی خدمت میں ایک صحفی ایک عنور بر اوا کر رہا ہوں 'حضور سلم کی خدمت میں ایک صحفی عاصر ہوا' عرض کی میں گھر میں نماز بڑھ رہا تھا' ایک صحفی آیا اس سے مجھے عجب اور تکبر لاحق ہوا۔ اس نے محسوں کیا کہ میں نماز ایک طور پر اوا کر رہا ہوں 'حضور سے فرمایا تیرے لیے وو اج بیں' ایک ظاہر کا' ایک باطن کا۔"

حضرت امام اعظم ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے اعمش کو بتایا کہ آپ نے مجھے شقیق بن محصے حدیث بیان کی ہے۔ انہوں نے حذیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی انہوں نے فرمایا کے «منافقین نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے زمانے میں بیہ شور مجایا کہ آج کا دن ان

مرينوسكه

کے لیئے سخت وشوار ہے۔ یہ پروپیگنڈہ اس لیئے کیا گیا کہ وہ اس دن کی ایک بات کو پوشیدہ ر کھنے چاہتے تھے' گران کا یہ راز فاش ہو گیا اور لوگوں پر ان کی منافقت آشکارا ہو گئے۔"

حضرت المام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا اعمش تم نے مجھے ایک صدیث بیان کی ہے جو تھم سے روایت ہے، انہوں نے یہ روایت ابی مجلزے، انہوں نے حضرت حذیفہ رضی اللہ تعلی عنہ سے روایت کی کہ حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم نے فرمایا " اللہ سے «ایزا پر" زیادہ میم کرنے والا کوئی نہیں، وہ دیکھتا ہے کہ لوگ اس کے مقابلہ میں شریک لاتے ہیں۔ بعض کفار اللہ کی ذات پر اولاد کی شمت لگاتے ہیں، اس کے باوجود اس کا حوصلہ ہے کہ انہیں برواشت کرتا ہے۔ عافیت بہم پہنچاتا ہے، پھر اگر توبہ کرلیں تو بخشا ہے، ان سے بلائمیں دور فرماتا ہے، انہیں رزق دیتا ہے۔ "

حضرت امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے اعمش سے کما آپ نے مجھے ابوصالح سے حدیث بیان کی ہے انہوں نے حضرت ابو هريره رضی اللہ تعالی عنه سے 'انہوں نے بتایا رسول اکرم صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم نے فرمایا ''کوئی بندہ ایبا نہیں جس کا شہرہ آسانوں اور زمینوں پر یکساں ہو' جب اس کی نیکی کی شہرت آسانوں پر ہوتی ہے تو اسے زمین میں پھیلایا جاتا ہے' اگر اس کی برائی کی شہرت دمین پر ہوتی ہے تو اسے زمین پر ہوتی ہو جاتی دمین پر ہوتی ہو جاتی دمین پر ہوتی ہو جاتی

حضرت امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے فرمایا اعمش تم نے مجھے ایک حدیث ابوزبیری روایت سے بیان کی ہے ابوزبیر نے حضرت جابر رضی اللہ تعالی عنہ سے روایت کی انہوں نے بتایا کہ ہم نے رسول اکرم صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم کے سامنے اپنی تشکدتی اور رزق کی تنگی کی شکایت کی۔ حضور صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم نے فرمایا " تم لوگ اکیلے اکیلے کھاتے ہو اکٹھے مل کر کھایا کو۔ اس میں برکت ہوتی ہے۔ "

حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عند نے فرمایا اے اعمش! تم نے مجھے ایک حدیث سائی بھے آپ حدیث سائی جے آپ نے بیٹی جے آپ میں اللہ تعالی عند سے سی تھی ایک سے بیٹی باک صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم سے سی آپ نے فرمایا "حد تقدیر پر عالب آجا آ ہے اور فقر کفر کی صورت اختیار کر لیتا ہے۔ انسان گناہ کرتا ہے تو اس کی نحوست سے رزق میں کمی گردی

# امام الوحنيفة التلاكي برجسته جوابات

حضرت امام اعظم رضی اللہ تعالی عنہ اگرچہ دین کے مسائل کے حل میں علائے وقت میں مریر آوروہ تھے گر بعض نکات ' بعض مشکل سوالات کا فوری اور فی البدیمہ جواب دے کر انہوں نے اللہ ت جھنڈا گاڑ دیئے۔ آپ مناظروں میں اپنے مدمقائل پر چھا جاتے اور انہیں لاجواب کر دیتے ہے۔ امام اعظم رضی اللہ تعالی عنہ ہے کسی نے پوچھا' ایک مخص کہتا ہے کہ مجھے جنت کی کوئی امید میں ' میں اللہ سے نہیں ڈر آ' دوزخ کی کوئی پروا نہیں' مروار کھا آیا ہوں' نماز میں رکوع و جود نہیں کرآ۔ میں اس چیز کی گوائی دیتا ہوں جے میں نے آج تک نہیں دیکھا۔ میں حق سے نفرت کرآ ہوں کور فقتے سے محبت کرآ ہوں۔ آپ نے اپنے شاگردوں کی طرف دیکھا اور متوجہ ہو کر فرمایا کہ اس محفی کی ان باتوں کا لیا جواب ہے ؟ بعض شاگردوں نے کما یہ تو کافر ہو گیا' بعض خاموش رہے۔

آپ نے اس گفتگو کو اس انداز میں سلجھایا اور فرملیا یہ مخص جنت کی امید نہیں رکھتا صرف اللہ کی ذات کی امید رکھتا ہے۔ جنت سے اللہ کی محبت اور امید بردھ کرہے۔ وہ مردار کھاتا ہے لیعنی وہ مجلی ذرئ کیئے بغیر کھاتا ہے اور بغیر رکوع جود کے نماز اداکر تا ہے لیعنی نماز جنازہ ۔ وہ بلا دیکھے گوائی جا ہے' اس نے اللہ تعالی کو نہیں دیکھا گر اس کی ذات کی گوائی دیتا ہے۔ یہ اس قیامت کی بھی گوائی دیتا ہے جے اس نے دیکھا نہیں۔ وہ حق سے نفرت کرتا ہے' موت حق ہو اس سے نفرت کرتا ہے۔ وہ اس سے نفرت کرتا ہے۔ وہ فتنے سے محبت کرتا ہے' یعنی اسے اپنی اولاد سے محبت ہے جو ایک فقنہ ہے۔ حضرت کرتا ہے۔ وہ فتنے سے محبت کرتا ہے' یعنی اسے اپنی اولاد سے محبت ہے جو ایک فقنہ ہے۔ حضرت اللہ ابو حذیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی باتیں س کروہ مخض اٹھا اور آپ کے سرکو چوہا اور کہا میں گوائی سے استغفار کرتا ہوں۔

مكتبهنبويه

قادہ ملاقیہ کوفہ میں آئے تو لوگوں کو جمع کیا' ایک محفل جمائی' حضرت اہام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ بھی وہاں تشریف لے آئے۔ قادہ مراقیہ نے کہا جمع سے فقہ کا کوئی سوال پوچھیں' حضرت له ابو حقیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کھڑے ہو گئے اور فرمایا' اے ابوالحطاب! مفقود الخبر کی بیوی کے بارے یہ آپ کی کیا رائے ہے ؟ انہوں نے کہا میں وہی کہتا ہوں جو سیدتا عمر ابن الحظاب رضی اللہ تعالیٰ حد کہتے تھے کہ وہ عورت چار سال تک انظار کرے اور اس کا شوہر واپس آجائے تو بہتر ورنہ وہ عدت گذار کر کمی دو سرے مرد سے نکاح کر لے۔ آپ نے پوچھا کہ اگر اس کا خاوند چارسال کے بعد آجائے اور اپنی بیوی کو کے اے زائیہ تو نے کیوں نکاح کر لیا جب کہ میں ابھی زندہ ہوں' پھر اس کا دوس شوہر کھڑا ہو کر کے اے زائیہ تو نے کیوں نکاح کر لیا جب کہ میں ابھی زندہ ہوں' پھر اس کا دوس شوہر کھڑا ہو کر کے اے زائیہ تو نے جمھ سے کیوں نکاح کیا جب کہ میں ابھی وزیرہ سامنے کھڑا ہے۔ بنائے شوہر کھڑا ہو کر کے اے زائیہ تو نے جمھ سے کیوں نکاح کیا جب کہ میں ابھی وزیرہ سامنے کھڑا ہے۔ بنائے شوہر کھڑا ہو کر کے اے زائیہ تو نے جمھ سے کیوں نکاح کیا جب کہ میں ابھی ان رہ مامنے کھڑا ہے۔ بنائے سے معاملے کون فرمان کیا کہ کوئی گورت کیا کرے اور وہ کس کی منکوحہ تھرے گی اور اس کے ساتھ کون فرمان کرے گا؟

آپ کی بات من کر قادہ دولیے ناراض ہو گئے اور فرمایا اس کا میرے پاس کوئی جواب نہیں " مجھ سے قرآن مجید کی کمی آیت کریمہ کی تشریح یا تغیر کے متعلق سوال کرو۔ حضرت امام ابوطیفہ رضی اللہ تعالی عنہ پھر کھڑے ہوئے اور کما اللہ تعالی فرما آپ قال الذی عندہ علم من الکتاب انا آتیک به قبل ان پر تدالیک طرفک اس آیت میں کون مخص مراو ہے ؟ قادہ دولیے نے کما آصف بن برخیا! امام ابوطیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کھڑے ہوئے اور پوچھا کیا حضرت سلیمان علیہ السلام بی کے دربار میں آیک امتی آپ سے بڑھ کر کتاب کا علم رکھتا تھا۔ یہ بات من کر قادہ دولیئے ناراض ہو گئے اور کما کہ مجھ سے علم الکلام کے بارے میں سوال کریں۔

حضرت الم اعظم رضى الله تعالى عند نے کوئے ہو کر کما ابوا لحظاب! اس شخص کے حق بی آب کیا کہیں گے جو این ایمان کی صرف امید رکھتا ہے (جبکہ ایمان یقین کا نام ہے) مثلاً حضرت ابراہیم علیہ السلام نے فرمایا تھا والذی اطمع ان یعفرلی خطیئتی یوم الدین اے ابوالحطاب! آپ وضاحت فرمائیں جب ابراہیم علیہ السلام کو الله تعالی نے فرمایا "کیا آپ اس پر ایمان نہیں رکھتے۔ تو آپ نے کما میں تو اطمینان قلب کے لیے یہ بات پوچھتا ہوں۔" قادہ اس بات پر ناراض ہو گئے اور کما میرے باس اس کاکوئی جواب نہیں۔

قاده مالجید دو سری بار کوفه مین آئے۔ پہلے سوال و جواب کا وقت تھا، مخلف لوگ سوالات

کرتے رہے' آپ جواب دیتے رہے۔ جب امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عند الشھے تو آپ نے بوچھا حضور بلقیس کا تخت لانے والا کون تھا ؟ انہوں نے جواب دیا آصف بن برخیا جو حضرت سلیمان علیہ اسلام کا کاتب تھا۔ ولا اسم اعظم جانما تھا۔ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے جب قادہ دیئیہ سے سارہ لعان کا مسئلہ بوچھا تو فرمایا (آپ نے اپنے دوستوں کو تیار رکھا تھا کہ اگر قدادہ اپنی رائے سے قالب دیں گے تو درست نہیں ہو گا اگر حدیث کی روسے جواب دیا تو جھوٹ بولیس گے۔) قدادہ دیئیہ نے کہا کیا یہ مسئلہ واقعی بھی پیش آیا ہے؟ اور فرمایا مجھ سے وہ مسئلہ نہ بوچھو جس کا کمیں وجود ہی سے کہا کیا یہ مسئلہ واقعی بھی پیش آیا ہے؟ اور فرمایا مجھ سے وہ مسئلہ نہ بوچھو جس کا کمیں وجود ہی سے کہا کیا یہ حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے کہا علماء کرام آزمائش کے لیئے تیار رہتے ہیں۔ اس میں واض ہونا اور اس سے بچا بھی جانے ہیں۔ قدہ میلئیہ نے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی سے میں داخل ہونا اور اس سے بچا بھی جانے ہیں۔ قدہ میلئیہ نے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی سے میں داخل ہونا اور اس سے بچا بھی جانے ہیں۔ قدہ میلئیہ نے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی سے میں تو تہ راض ہو کر مجلس چھوڑ کر اپنے گھر چلے گئے اور کہا آئندہ کے لیئے اس مختص کے سے اس میں آنے چا ہمیں اور میں ان سے بات نہیں کروں گا۔

حضرت امام ابو حنیف رضی الله تعالی عند فرماتے ہیں کہ قادہ مطلع ایک بار پھر کوفہ میں آئے اور کھٹھ کا کہ منظو کو چند سال گذر گئے تھے گر اب وہ نابینا ہو چکے تھے۔ میں نے انہیں پکار کر کما۔ الولعطاب!

الب سے قرآن پاک کی ایک آیت کی تغییر و تشریح پوچھتا ہوں اور آیت کریمہ پردھی ولیک شھد کہ سے البیاطان فقہ من المومنین ن قادہ نے میری آواز پیچان کی اور لوگوں نے بھی جھے کئیت سے البیاطان فقہ من المومنین ن قادہ نے میری آواز پیچان کی اور لوگوں نے بھی جھے کئیت سے البیادانوں نے اس مجلس سے نکل جانا ہی بھتر جانا۔

صد معاف کرویا اور اے اپنی طرف ے آزاد کر دیا۔ ربیعہ نے کہا اس طرح اس کا کوئی صد شہیں ہوگا۔ ربیعہ نے نہ تو اہام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے مطابق جواب دیا نہ ابن ابی لیے مطابق۔ اس جواب سے میرا مقصد پورا نہ ہوا جس کی بیس تیاری کر کے آیا تھا۔ حضرت اہام میٹے۔ مکراتے ہوئے مجھے دیکھا پھر ربیعہ سے پوچھا اس غلام کا پچھ بھی آزاد نہیں ہوا۔ اس کی وجہ کیا۔ ؟ ربیعہ نے کہا' اس لیئے کہ مفلس ساتھی کا نقصان ہوگا اور حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ واللہ سے فرمایا ہے کہ ضرر اور ضرار دونوں اسلام بیس نہیں۔ اہام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمای کی تشریح سلیم کرلی جائے تو ضرر معتق (آزاد کرنے والا) کا ہے۔ نہ کہ مفلس شرک کیونکہ کہ معنق کا شریک معتق کی طرف رجوع کرے گا۔ اس بدلہ کے لیئے جو اس کی ملک کیونکہ کہ معنق کا شریک معتق نہ تو شریک کے حصہ کو آزاد کرنے اور نہ اس کے شریک کے۔ وہ بیں تصرف کرنے کا۔ اس اعتبار سے معتق نہ تو شریک کے حصہ کو آزاد کرنے اور نہ اس کے شریک کے۔ وہ بیں تصرف کرنے کا۔ اس اعتبار سے معتق کو زیادہ ضرر پہنچا یہ نسبت اس کے شریک کے۔ وہ ابو حقیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی تقریر کا جواب نہ دے سکے بلکہ مجلس سے اٹھ کر چلے گئے۔ ابو حقیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی تقریر کا جواب نہ دے سکے بلکہ مجلس سے اٹھ کر چلے گئے۔

حضرت اہام ابو حذیفہ رضی اللہ تعالی عنہ ایک ایسے شہر سے گزرے جہاں شیعوں کا بہت تھا۔ اس شہر کا حاکم ایک عالی شیعه (حبین بن فرید) تھا۔ اس نے حضرت اہام بولیجہ کے متعلق این ایک عبدی غلام کو کہا کہ تم ابو حذیفہ کے پیچھے جاؤ' ان کی سواری روک کر پوچھو کہ حضور اللہ علیہ واللہ وسلم کے بعد سب سے افضل کونیا مخض ہے ؟ اگر وہ ابو بکر صدیق (رضی اللہ تعلی اللہ علیہ واللہ وسلم کے بعد سب سے افضل کونیا گام پکڑ کر آپ کو روک لیا اور سول کہ حضور صلی اللہ علیہ واللہ وسلم کے بعد سب سے افضل کون ہے ؟ آپ نے فرمایا عباس عبدالمطلب (رضی اللہ تعالی عنہ)

آبوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ قیاس ترک کرتے تو عجام سے ترک کرتے ' آپ نے عجام کو بھی اپنے قیاسی اطیفہ سے لاجواب کردیا۔

ایک فخص مرگیا اس نے امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے متعلق وصیت کی آپ اس وقت وہاں موجود نہ تھے۔ جب آپ تشریف لائے تو آپ نے اپنا دعویٰ ابن شہرمہ کو پیش کیا اور دعویٰ فرمایا کہ فلال شخص نے مرنے سے پہلے میرے لیئے وصیت فرمائی ہے اس پر گواہ بھی پیش کر دیئے۔ ابن شہرمہ نے کما آپ تتم کھا میں واقعی آپ کے گواہ صحیح گواہی دے رہے ہیں آپ نے فرمایا مجھ پر تشم لازم نہیں آتی اس لیئے کہ میں تو وہاں موجود نہیں تھا۔ ابن شہرمہ نے کما پھر تو آپ کی چابیاں گھے ہو گئیں بینی دعویٰ خارج ہو گیا۔

آپ نے فرمایا میری چابیاں گم ہوں یا نہ ہوں آپ تو فیصلہ غلط نہ فرما کیں۔ آب جھے بتا کیں کہ اگر کوئی مخص ایک نابینا مخص کو زخمی کر دے تو اس کے لیئے دو گواہ پیش ہوں گے کہ نہیں اور اگر یہ گواہی دے رہے ہوں تو کیا آپ نابینے کو کہیں گے کہ تم قتم کھاؤ کہ یہ گواہ کجی گواہی دے رہے ہیں اور یہ وہاں موجود تھے ؟ حالانکہ نابینا تہ نہ زخمی کرنے والے کو دیکھ رہا تھا نہ گواہوں کو۔

## الم مالك التخاليكية ك تاثرات

حضرت امام شافعی رحمتہ اللہ علیہ نے حضرت امام مالک رحمتہ اللہ علیہ سے پوچھا کیا آپ نے اللہ ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو دیکھا ہے؟ فرمایا ہال دیکھا ہے۔ وہ ایسے ذبین شخص تھے کہ اگر وہ سامنے والے ستون کو کمہ دیں کہ بیہ سونے کا بنا ہوا ہے تو وہ اپنے دلائل سے ثابت کر دیں گے کہ واقعی بیہ سونے کا ہے۔

ابو غسان فرماتے ہیں کہ میں نے اسرائیل کو فرماتے سنا کہ حضرت امام ابو حفیفہ برضی الله علی عند بهترین انسان تھے۔ وہ ہر اس حدیث کے محافظ تھے جس میں فقہ ہو۔ وہ الی تمام احادیث پر بناہ تحقیق کرتے ' بحث و تمحیص کرتے ' اس لیئے ان کی علمی اور تحقیقی قابلیت کو وقت کے علماء ' اس این اور روسانے بھی شاہم کیا۔ اور وہ اپنے وقت کے مکرم امام الفقماء تھے۔ جب بھی آپ سے سراء اور روسانے بھی شاہم کیا۔ اور وہ اپنے وقت کے مکرم امام الفقماء تھے۔ جب بھی آپ سے

کوئی مناظرہ کرتا تو سخت شرمندہ ہو کر آیا۔ میں ہے '' مناقب ممیری '' میں یہ مضمون دیکھا تو اس کا تفصیل سے بڑا مسرور ہوا۔ آپ نے فرمایا وہ اجادیث پر بحث و شمیص کرنے والے اور مسائل فقہ اسلامیان کرنے میں یدطولی رکھتے تھے۔ آپ نے حضرت حماد ابن سلیمان رکھتے سے علم حاصل کیا اور اسے خوب ذہن نشین کیا۔ آپ کے علاوہ باقی شاگرد بھی اپنی اپنی جگہ بہت مقام رکھتے تھے گر اہام ابو صفیہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ ایک ورخشندہ آفاب تھے۔

ایک بار امام ابو یوسف رحمتہ اللہ علیہ بیمار :و گئے۔ آپ حضرت امام ابوضیفہ رضی اللہ تعلی علیہ کے بہترین شاگردوں میں سے تھے۔ وقت کے قاضی (چیف جسٹس) تھے۔ حضرت امام مطابعہ آپ کی عیادت کے لیئے آپ کے گھر تشریف لے گئے۔ باہر نکلے تو فرمانے گئے اگر یہ نوجوان (ابویوسف فوت ہو گیا تو روئے زمین پر اس جیسا برا عالم اور فقیہ کوئی نہیں ہو گا۔ جب حضرت امام ابویوسف مطابعہ تندرست ہوئے وہ وہ بارہ زندگی کی مصروفیات میں مشغول ہوئے سرکاری درباری جاہ و جلال میں آئے تو بچھ مخرور ہو گئے اور مبجد میں درس دینے گئے۔ لوگ جمع ہونے گئے۔ حضرت امام ابوحنیف رضی اللہ تعالی عنہ نے ایک محض کو آپ بیس بھیجا کہ آپ سے جاکر مسئلہ پوچھو کہ ایک محض نے دھوبی کو اپنی گیڑے دھوبی نے انکار کر دیا وہ بیچارہ خاموشی سے واپس آگیا کچھ عرصہ کے بعد وہ وہوبی کیڑے لیئے گیا تو دھوبی نے انکار کر دیا وہ بیچارہ خاموشی سے واپس آگیا کچھ عرصہ کے بعد وہ وہوبی کیڑے لیے گیا تو دھوبی کا حقدار ہے یا نہیں۔ اگر مالک کے حوالے کر دیئے۔ اب سوال یہ کرتا ہے کہ کیا دھوبی اپنی مزدوری کا حقدار ہے یا نہیں۔ اگر مالک کے حوالے کر ویئے۔ اب سوال یہ کرتا ہے کہ کیا دھوبی اپنی مزدوری کا حقدار ہے یا نہیں۔ اگر وہ کہیں کہ ناماط ہے۔

وہ فخص امام ابوبوسف کے درس میں جا پہنچا اور اپنا سوال پیش کیا۔ امام ابوبوسف نے کما مزدوری اس پر واجب ہے۔ اس نے کما غلط ہے ' امام ابوبوسف نے فرمایا تو بچ کہتا ہے دوبارہ سوال کیا گیا تو امام ابوبوسف نے کما کہ یہ مزدوری واجب نہیں ' اس فخص نے کما یہ بھی غلط ہے۔ قاضی ابوبوسف ای وقت مجد سے اٹھے اور جو تا بخل میں دبائے دوڑے دوڑے حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی خدمت میں حاضر ہوئے ' آپ نے انہیں دیکھتے ہی فرمایا دھوئی کا مسللہ لے کر آگے ہو۔ ( یہ بات صرف اپنے شاگرد کا غرور توڑنے کے لیئے تھی۔)

اس مسئلہ کی وضاحت کرتے ہوئے ابوالقاسم رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ کچھ عرصہ کے بعد

سے اس مسلہ پر گفتگو کی تو مجھے بتایا گیا کہ دھونی نے پہلے کپڑے دھونے سے انکار کر دیا تھا وہ سے دوری کا حقد ار نہیں رہا تھا۔ اگر وہ کپڑے دھونے کے بعد انکار کر آ تو حقد ار تھا۔ ابوالقاسم ریا ٹید اس کی علت (وجہ) بیان فراتے ہیں کہ دھونے سے پہلے کپڑا لے کر انکار کر دیا 'وہ غاصب ہو گیا' ایک سے غصب شدہ چیز کی مزدوری کا حقد ار نہیں۔ اگر اس نے پہلے دھویا بھر انکار کیا تو وہ مزدوری کا حد اس نے انکار کیا وہ کپڑے کا غاصب تو ہے مگر جب اس نے کپڑا لوٹا دیا تو سے سے کیا ہوا مال واپس آگیا تو اب وہ غاصب نہیں رہا۔ وہ مزدوری کا حقد ار ہوگا۔

حضرت امام یوسف کے واقعہ کے اول اور آخر میں فضل بن غانم نے اضافہ کیا ہے۔ پہلی ات تو یہ ہے کہ امام ابوبوسف بیار ہوئے ' حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ ان کی بیار بری کے تشریف لے گئے ' پھر تشریف لے گئے تو بیاری کی وجہ سے ندھال تھے۔ آپ نے اناللہ وانا الیہ اللہ وانا الیہ اللہ کے آخریف کر فرمایا میں تو اپنے بعد حمیس اپنا نائب بنانا چاہتا تھا اگر تم میری زندگی میں ہی فوت ہو کے تولوگوں کے لیئے بری مصبت آئے گئی اور تمہارے ساتھ ہی علم کے چشے ختک ہو جا میں گے۔ والوگوں کے لیئے بری مصبت آئے گئی اور تمہارے ساتھ ہی علم کے چشے ختک ہو جا میں گے۔ امام ابوبوسف صحت یاب ہو گئے 'کاروبار زندگی میں مصروف ہو گئے' کچھ غرور آگیا تو امام روالیہ فیا۔ آپ کو معلوم تھا کہ ابوبوسف اب نے شاگرد کو ایک سطح پر رکھنے کے لیئے ایک سوال اٹھایا۔ آپ کو معلوم تھا کہ ابوبوسف اب حال ہو کے بیاس آئیں گئ وہ آئے دیکھتے ہی فرمایا و صوبی والا مسئلہ لے آئے ہو۔ اب میں عمور ٹوٹ چکا تھا۔

حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے مزید فرمایا یہ وہ فخص ہے جو بے پناہ علوم پر عبور کے ۔ لوگوں میں بیٹھ کر دینی مسائل پر گفتگو کرتا ہے ' فتوئی جاری کرتا ہے گر حال یہ ہے کہ اس اللہ علی مسائل میں ہے ایک مسئلہ کا جواب نہیں آیا۔ حضرت امام ابویوسف نے اپنے استاو مصرت امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ ہے سوال کیا حضور آپ مجھے دھوبی کے مسئلہ کا صحیح عنایت فرمائے۔ آپ نے وضاحت کی دھوبی نے آگر کپڑا لینے کے بعد وہی کپڑا دھویا تو وہ منایت کی دھوبی نے اگر کپڑا لینے کے بعد وہی کپڑا دھویا تو وہ منایت کی حفیدار نمیں ' اس لینے کہ یہ کپڑا غصب کر چکا تھا' اپنا بنا لیا تھا اور اسے اپنے لیئے دھویا تھا۔ سے انکار سے پہلے وہ کپڑا دھویا تھا تو وہ مزدوری کا حقدار تھا۔ آپ نے اپنے شاگرد ابویوسف کو سے فرمایا جو فخص اس گمان میں جنالے کہ اب وہ بڑا عالم بن گیا ہے اسے مزید علم سیکھنے کی

مناقب امام اعظم

ضرورت نسیس اس پر رونا چاہے۔ وہ غرور عجب اور غلط فنمی کا شکار ہے۔

## کوفہ کے ایک رئیس رافضی کو تقیحت

حفرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے شرکوفہ میں ایک رافضی برا رکیس تھا۔ برا ا دولت رکھتا تھا، مگروہ انی مجالس میں برملا کہتا تھا کہ حضرت عثان ( رضی الله تعالی عنه ) يهودي 🛋 معاذ الله ) آپ اس کے ہاں تشریف لے گئے 'وہ امام صاحب کے علمی اور معاشرتی مقام کو جانتا 🖥 باتوں باتوں میں آپ نے اس رافضی کو کما آج میں تمہاری بٹی کے لیئے ایک رشتہ لایا ہوں وہ سے زادہ ہے اور برا دولت مند ہے۔ کتاب اللہ کا حافظ ہے اور رات کو اکبر مصد بیدار رہ کر نوافل ادا کے ہے۔ وہ شب بھر میں سارا قرآن ختم کر لیتا ہے' اللہ تعالیٰ کے خوف سے ڈر تا ہے' رافضی نے وج کی حضور الیا رشتہ تو مشکل سے ملا ہے آپ جلدی سیجے اس میں رکاوٹ کونسی ہے ، مجھے ایسے م كى بے حد ضرورت ہے۔ امام ابو حنيف رضى الله تعالى عنه نے فرمايا اس كى ايك ايس خصلت ہے = غالبًا آپ پیند نہیں کریں گے' اس نے یو چھا وہ کونسی خصلت ہے ؟ فرمایا وہ بزہبا" بہودی ہے۔ را 🚾 نے کہا امام صاحب آپ ایسے عالم ہو کر مجھے یہ مشورہ دینے آئے ہیں کہ میں ایک یمودی سے بٹی بیاہ دوں۔ آپ نے فرمایا جب تم ایک امیراور شریف یمودی سے اپنی بٹی بیابنا پند نہیں کرتے کیا نبی کریم صلی الله علیه و آله و سلم ایسے شخص سے اپنی دو بیٹیاں بیاہ سکتے تھے جو بہودی تھا۔ اس \_ آپ کی تقریر سن کر استغفار پڑھی اور توبہ کر کے حضرت عثان رضی اللہ تعالی عنہ کے متعلق ا اعقادے رجوع کرلیا۔

ایک دن خلیفہ منصور عباس نے حضرت امام اعظم رضی اللہ تعالی عنہ کو دربار میں 🌉 منصور کا برسل سکرٹری ( حاجب ) ربیع حضرت کا ولی مخالف تھا' وہ چاہتا تھا کہ منصور کے وربار پر آپ کو سزا ملے۔ اس نے منصور سے کہا کہ میں ابو حنیفہ ہے جو آپ کے دادا (عبداللہ بن عبار

کے خلاف باتیں کرتا ہے۔ آپ کے دادا میہ فرماتے ہیں کہ جب کوئی قتم کھا کر اسٹنا کرے خواہ وہ آ۔ دن کے بعد یا دو دن بعد ہو تو وہ اسٹنا جائز ہے۔ مگر ابو حنیفہ کتے ہے کہ اسٹنا منصلا ہو تو جائزے ورنه ناجائز ہے۔ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے کہا اے امیرالمومنین ربیع کا یہ خیال ہے کہ کے

کے تمام لکر کی بیعت آپ کے ساتھ صحیح نہیں۔ اس نے کما وہ کیے ؟ آپ نے فرمایا وہ آپ کے اس بیعت کی قتم تو کھاتے ہیں گر بعد میں گروں میں جا کر استثنا کر لیتے ہیں۔ اس طرح ان کی قتمیں اس اور ناجائز ہو گئیں۔ یہ من کر خلیفہ منصور ہنس پڑا اور رہے سے مخاطب ہو کر کہنے لگا رہے تم امام وطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا بیچھا چھوڑ دو۔ جب دونوں باہر آئے تو رہے کہنے لگا نعمان آج میرا وگرام تھا کہ آپ کی گردن اڑوا دی جائے گرتم نے گئے۔ حضرت مالیٹے نے فرمایا میرا بھی دل چاہتا تھا کہ آج تیری گردن اڑ جاتی گر مجھے ترس آگیا اور میں نے صرف اتنی بات کی ورنہ ایک اور بات کر آ تے تیری گردن اڑ جاتی گر مجھے ترس آگیا اور میں نے صرف اتنی بات کی ورنہ ایک اور بات کر آ تے تیرا حشر نشر ہو جاتا۔ ( یہ واقعہ محمد بن اسحاق نے اپنے فاوئ میں بردی تفصیل سے بیان کیا ہے۔)

ابوالعباس طوی امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے مخالفین میں سے تھا۔ امام بھی جانتے تھے اس کے خیالات کیا ہیں۔ ایک ون حضرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ خلیفہ جعفر (عباسی خلیفہ کے دربار میں بیٹھے تھے اور بھی بے شار لوگ موجود تھے۔ طوی نے کما آج میں ابو صنیفہ کو قتل کرا سی گا۔ وہ دربار میں امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے مخاطب ہوا امیرالمومنین! ہم میں سے کی کو تم فرمائے گا کہ وہ کسی کو قتل کردے۔ نامعلوم وہ کون ہو گا۔ کیا بادشاہ کے لیئے جائز ہے کہ وہ سے قتل کرادے۔ امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے فرمایا سے ابوالعباس! کیا بادشاہ حق کا تم کریں سے قتل کرادے۔ امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے فرمایا ہے ابوالعباس! کیا بادشاہ حق کا تھم کریں سے اس نے کما حق کا۔ آپ نے فرمایا پھر دیر کیسی؟ جس کے متعلق تم نے سے باطل تھم کریں گے۔ اس نے کما حق کا۔ آپ نے فرمایا پھر دیر کیسی؟ جس کے متعلق تم نے سے باطل تھم کریں ہو اس کی گردن اڑا دی جائے۔ طوی تو میرے باندھنے کا ارادہ کر رہا تھا مگر خود سی جل میں پھنس گیا۔

اس روایت کو ایک اور اندازی بیان کیا گیا ہے کہ حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنه اللہ تعالیٰ عنه اس روایت کو ایک اور اندازی بیان کیا گیا ہے کہ حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنه کی مجلس میں آیا جایا کرتے تھے ' بھی ایسا یہ واکہ کوئی نہ کوئی نیا مسئلہ نہ سکھ جا ئیں۔ ایک دن حاضر ہوئے تو کوئی مفید بات نہ مل سکی ' صرف یہ نے اتنا بتایا کہ جب تمہارے سامنے کوئی ایسا سوال آجائے جس کا تمہارے پاس جواب نہ ہو تو سامی کو ایک الٹا سوال کر دیا کرو آکہ وہ اس سوال کے جواب میں الجھ کر رہ جائے۔ میرے دل میں مناس آیا یہ تو کوئی ایس بات نہیں جس سے مجھے فائدہ بنچے۔ ایک عرصہ گزر گیا میں ایک دن منصور (

محبهبوية

عباسی خلیفہ ) کے دربار میں موجود تھا تو میرے امتحان کے لیئے " رہیج " (پرسل سیکرٹری خلیفہ ) آگ آیا اور کھنے لگا امیرالمومنین کے بارے میں مجھے فتوئی دیجئے میں نے اسے استثنا کے جواب میں الجھاکر رکھ دیا۔

#### ائمةالعلم

خالد بن بزید عمری کہتے ہیں کہ کوفہ میں امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ امام ابوبوسف و نظر اور حماد بن البی حنیفہ گفتگو میں تمام لوگوں سے زیادہ بصیرت رکھتے تھے۔ وہ جب بھی مناظرہ یا مبلط کرتے تو بمیشہ اپنے مدمقابل کو فکست دے دیتے۔ یہ حضرات اپنے زمانہ میں ائمتہ العلم تھے۔

علامہ واقدی نے لکھا ہے کہ میں نے امام مالک بن انس رضی اللہ تعالی عنہ سے پوچھا کہ ال دنوں اہل عواق میں جو حضرات آپ کے پاس حاضر ہوتے ہیں ان میں سب سے بردا فقیہ کون ہے اس نے دریافت فرمایا اہل عراق سے کون کون لوگ میرے پاس آتے ہیں ؟ میں نے کہا کہ ابن اللہ لیک ابن شرمہ سفیان ثوری ابو حنیفہ ۔ امام مالک روائیہ نے فرمایا تم نے امام ابو حنیفہ کا نام آخر میں کیوں لیا میں نے ابو حنیفہ روائیہ کو دیکھا ہے کہ اگر ہمارے فقہا میں سے ایک فقیہ گفتگو کرتا ہے تو میں اسے تین بار اپنی رائے سے کھینچ لیتے ہیں۔ پھر بھی فرماتے ہیں کہ سے بات مبنی برخطا ہے۔ وہ اپنی بات منوانے کے مختلف طریقے جانتے ہیں۔

اساعیل بن میمی رافیه فراتے ہیں کہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عند مدینہ طیبہ تشریف کے گئے 'جو فقیہ مجمی آپ سے بات کر آیا اس کی بات کاٹ کر رکھ دیتے اور اسے لاجواب کر دیتے 'لیکن امام مالک رافیج سے گفتگو ہوتی تو ادبا '' نرم لہہ ہوتا اور بات سے بات نہ نکالتے تھے۔

امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرماتے ہیں کہ ایک بار ہم حماد بن زید سالم افظمی کو الوادی کہنے کے لیئے نجف اشرف تک چلتے گئے۔ کسی نے حماد سے پوچھا کہ میں تیز سواری پر سوار ہوں اسورج غروب ہونے کو ہے مجھے وضو کی ضرورت ہے تو مجھے شام کی نماز کا کیا کرتا چاہئے۔ انہوں کے کما یہم کر کے نماز ادا کر لو۔ اس نے یمی مسئلہ مجھ سے پوچھا تو میں نے کما چلتے رہو جب شفق غائب ہونے گئے اور خطرہ ہو کہ نماز فوت ہو جائے گی چر تیم کرنا ورنہ موجودہ حالت میں تیم کا جوالہ

نسیں۔ وہ مخف چل پڑا حتیٰ کہ شفق غائب ہونے سے پہلے (مغرب کے آخرت وقت پر) الیہ مقام پر پہنچ گیا جمان پانی موجود تھا' اس نے وضو کیا نماز پڑھ لی' حماد نے اپنی غلطی کا اعتراف کیا۔

حماد بن سلیمان روایئی (حضرت امام ابو حقیف صفی الله تحالی عنه کے استاد محرم) فرماتے ہیں کہ یں نے کئی بار ابو حقیفہ روایئی کی رائے کو اپنی رائے کے خلاف پلیا لیکن بالا خریس اس نتیج پر بہنچا کہ حضرت امام ابو حقیفہ رضی الله تعالی عنه کہتے تھے سیجے ہے۔ محمد بن جابر روایئیہ فرماتے ہیں کہ ہم امام ابو حقیفہ رسانی ابی سلیمان روایئیہ کی مجلس میں جیشتے ہیں جب استاد اور شاگرد کی باہمی گفتگو ہوتی ہو تھاد حضرت امام ابو حقیفہ رضی الله تعالی حذ کے نظریہ کے خلاف بات کرتے ہیں تو آہستہ سے گفتگو کا وائرہ نگل ہوئے لگتا ہے' آپ کو استو ہونے کے باوجود حضرت امام ابو حقیفہ روایئیہ کی سستہ گفتگو کے سامنے رکنا پڑتا ہے۔ کئی بار حضرت حماد روایئی بات کو منوانے کے لیئے اسے حدیث سے مطبق کر دیتے تو حضرت امام ابو حقیفہ رضی الله تعالی عنه خاموش ہو جاتے۔

ام ابوبوسف رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ ایک دن امام ابوحنیفہ رضی اللہ تحالی عنہ اور ابن اللہ ایک جگہ بیٹھے تھے' امام ابوحنیفہ رضی اللہ تحالی عنہ نے ایک مسئلہ میں ایسی گفتگو شروع کی کہ اللہ لیلی کو مزید بات کرنے کی گنجائش نہ ملی' مگر اپنے علم کی گرمی میں کہتے میں اپنے نظریئے سے اللہ علی کو مزید بات کرنے کی گنجائش نہ ملی اللہ تعالی عنہ فرماتے ہیں کہ اس میں اگر خطا یا غلطی بھی سے آئے تو بھی رجوع نہیں کرو گے۔ ابن ابی لیلی کہتے یہ تو میں نہیں کہتا۔ پھر امام صاحب فرماتے ہیں اس خطی تنایم کریں یا نہ کریں مگر میں نے آپ کی غلطی واضح کر دی ہے۔ ابن ابی لیلی کہتے ہیں کہ سوچنے دو' آپ نے فرمایا حق و جواب کو معلوم کر لینے کے بعد سوچنے کی گنجائش نہیں کہتے بھر سوچنے دو' آپ نے فرمایا حق و جواب کو معلوم کر لینے کے بعد سوچنے کی گنجائش نہیں کے محمد سوچنے کی گنجائش نہیں

## ع بالشرط طلاق

حفرت امام ابوبوسف رضی اللہ تعالی عنه فرماتے ہیں کہ ابن ابی لیلی ریافی مسائل میں امام ابوضیفه رضی اللہ تعالی عنه سے اکثر مرعوب ہو جایا کرتے تھے۔ ایک دن میں حضرت امام ابوضیفه اللہ تعالی عنه کی خدمت میں حاضر ہوا تو ابن ابی لیلی ریافید امام صاحب سے مسئلہ طلاق بر گفتگو کر

قب امام اعظم ٢ ١

رہے تھے۔ ابن ابی کیلی رویٹیہ کمہ رہے تھے کہ ایک شخص نے کما میں جب بھی عورت سے نکل میں رہے تھے۔ ابن ابی کیا وقت اس بر طلاق نافذ ہو جائے گی۔ ابن ابی کیلی کا خیال تھا کہ وہ عورت اس شرط پر مطلقہ نہیں ہوگی جب تک وہ نہ کمدے کہ فلان قبیلے کی عورت یا فلان نام کی عورت یا فلان شمر کی عورت یا فلان شمر کی عورت۔ امام ابو یوسف رویٹی نے کما یہ بات س کر امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے سلمہ محققہ کا اور خاموش ہو گئے۔ آغاز کیا تو ابن ابی کیلی رویٹیے جیرت زدہ ہو کر رہ گئے اور خاموش ہو گئے۔

حضرت امام محربن الحن ایک معجد کے امام تھے۔ ایک پاگل عورت تھی اسکا لقب تھا " آ " اے اس لقب مجے الل جاتا تو ایک محرور گال ویت ایک امیر رئیس نے اے ای لقب سے بلایا آ اس نے اسے مال باپ کی نمایت ہی گندی گالی دی۔ اس آدمی کے مال باپ اس محلّہ میں رہتے تھ اس مخص نے پاگل عورت کے خلاف ابن ابی کیلی رابیلی کی مجلس میں دعویٰ کر دیا۔ ابن ابی کیلی ﷺ نے اس پاکل عورت کے لیئے مجد میں کھڑا کر کے دو حدیں قائم کیں اور اسے معجد میں بولایا۔ یہ بات امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ تک پہنچی تو آپ نے کما ابن ابی کیلیٰ نے اپنے فتویٰ میں گی غلطیاں کی ہیں۔ اس شخص کے ماں باپ کو گالیوں پر دو حدیں مقرر کیں حالانکہ گالیوں کا مدعی وہ شخص نہیں ہو سکتا تھا۔ اس کے وہاں موجود والدین مدعی ہونے جا بین تھے گریمال مدعیوں کے بیٹے کے کھنے پر دو حدیں نافذ کی گئیں۔ حالانکہ دو حدیں ایک مقام پر نافذ نہیں ہو سکتیں۔ ایک قاد<sup>ف</sup> کے دعویٰ پر صرف ایک حد نافذ ہو سکتی ہے دو حدیں نافذ نہیں ہو سکتیں۔ عورت کو کھڑا کر کے حد قام کی حالانکہ عورت کو کھڑا کر کے حد نافذ نہیں کی جاستی۔ پاگل عورت پر حد قائم نہیں کی جاسکتی کیونک وہ مرفوع العقل اور مرفوع العلم ہوتی ہے۔ عورت کو لٹا کر پٹوایا گیا حالانکہ عورت کو لٹا کر نہیں ﷺ جامًا مجد میں حد قائم کی طالاتکہ مجد میں حد قائم نہیں کی جاستے۔ علی بن مسی کہتے ہیں کہ اللہ ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی تقسی بھیرت سے ہم حران رہ گئے۔

ایک دن امیرالمومنین ابوجعفر خلیفہ عبای نے حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو اپ دربار میں طلب کیا جب آپ دربار میں تشریف لے گئے تو ابن ابی لیلی اور ابن شرمہ بھی وہاں موجود شخصہ ان ونوں ابن ابی لیلی کوفہ کے قاضی تنجے اور ابن شرمہ بغداد کے قاضی تنجے خلیفہ عباق ابوجعفر نے آمام صاحب بولید کو مخاطب کرتے ہوئے بوچھا آپ کا ان خوارج کے متعلق کیا خیال ہے جو

سلمانوں کا خون بہاتے پھرتے ہیں اور مال لوٹے رہتے ہیں ؟ آپ نے فرمایا آپ کے سامنے دو قاضی ساحبان بیٹے ہیں ان ہے پوچھے۔ خلیفہ نے کما ان سے تو پوچھ لیا ایک کمتا ہے کہ خوارج سے قتل و عارت اور لوٹ مار کا بدلہ لیا جائے۔ دو سرے نے کما ہے کہ ان سے پچھ معاوضہ نہیں لینا چاہئے امام ساحب دیا ہے نے فرمایا ہے دونوں بزرگ غلط کتے ہیں۔ خلیفہ نے کما ای لینے تو آپ کو بلایا گیا ہے ، ساحب دیا ہے فرما کی سے فرما کیں ۔

آپ نے فرمایا اس میں شک نہیں کہ خوارج نے جو پچھ کیا ہے وہ ظلم و ستم ہے۔ گریں وریافت کرتا چاہتا ہوں کہ کیا ان خوارج پر دو سرے مسلمانوں کے احکام نافذ نہیں ہوتے ؟ اگر یمی معاند ہوتے ہیں تو ان سے کمی فتم کا بدلہ نہیں لیا جائے گا۔ کیونکہ وہ باغی ہیں اور کافر ہیں۔
ایکام نافذ ہوتے ہیں تو ان سے کمی فتم کا بدلہ نہیں لیا جائے گا۔ کیونکہ وہ باغی ہیں اور کافر ہیں۔
ایکام اور کافروں سے بدلہ نہیں لیا جاتا بلکہ ان سے جنگ کی جاتی ہے۔ اگر ان پر مسلمانوں کے احکام ان اور کافروں سے بدلہ نہیں لیا جاتا بلکہ ان سے جنگ کی جاتی ہے۔ اگر ان پر مسلمانوں کے احکام خوارج کو مسلمان سمجھتے ہوں۔ امام ابولیوسف ورائے ہیں کہ اس فیصلے سے جعفر مطمئن ہو گیا اور مسلمان سمجھتے ہوں۔ امام ابولیوسف ورائے ہیں کہ اس فیصلے سے جعفر مطمئن ہو گیا اور سے میں جتنے اتمہ اور اہل علم بیٹھے تنے واہ وا کر اٹھے۔

عربن ذر روالي الله ون الم الوحنية رضى الله تعالى عنه كى خدمت مين حاضر ہوئ وضى الله تعالى عنه كى خدمت مين حاضر ہوئ و فرايا الله عبدا يه شيعه (رافضى) ہے۔ اس نے ايک مسئله كھڑا كيا ہوا ہے۔ آپ نے فرايا الله كل حرح ميرے پاس لے آؤ۔ عربین فدر روالي الله كر آگے۔ اس نے كما مين نے اپنى يوى لے كما ہے كہ انت على حوام "تم مجھ پر حرام سے" حضرت الم البوطنية رضى الله تعالى عنه نے الله تعالى عنه نے بنايا تمهارے الم حضرت على كرم الله وجه كافتوكى ہے كہ يہ تين طلاقيں ہو كئيں۔ اس شيعه نے بنايا تمهارے الم حضرت على كرم الله وجه كافتوكى ہے كہ يہ تين طلاقيں ہو كئيں۔ اس شيعه نے الله على ان كافتوكى نہ سائے اپنافتوكى بتائية۔ آپ نے فرمایا تم نے انت على حرام كما ہے۔ آپ نے پوچھا اس بات كے كہتے وقت تمهارى كيا نيت تقى ؟ اس نے بتايا ميرى كوئى نيت نهيں تتى۔ نيوچھا طلاق كى نيت تھى ؟ اس نے كما نهيں! آپ نے فرمایا جاؤ تمهارى يوى كو طلاق نهيں نے اس فض نے كما حزاك الله خيرا "آپ كو الله تعالى جنت عطا فرمائے۔" (اگرچه عقيد تا اس بات نے كراہت ہے۔)

حضرت حماد بن ابی حنیفہ رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ میں نے مالک بن مغول سے ساوہ اکثر

الاب المام اعظم

المام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی مجلس میں بیٹھا کرتے تھے 'فرماتے ہیں میں نے ایک دن دیکھا کہ آپ کے سامنے ایک مسئلہ آیا۔ آپ نے اپنے قابل شاگردوں کی طرف دیکھا اور کما کہ اس مسئلہ میں غور کر کے جواب دو۔ تمام شاگردوں کے سر جھک گئے اور غور کرنے لگے۔ وہ سوچے سوچے تھک گئے گر ان سے کوئی جواب نہ بن سکا۔ اب حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے سر اٹھایا گئے گر ان سے کوئی جواب نہ بن سکا۔ اب حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے سر اٹھایا آپ کی آئھوں میں آنسو چھک رہے تھے 'فرمایا ۔ اے اللہ تو جانتا ہے میں قرامان کی طرف دیکھا' آپ کی آئھوں میں آنسو چھک رہے تھے 'فرمایا ۔ اے اللہ تو جانتا ہے میں قرامام مسائل صرف تیری رضا کے لیئے بیان فرماتا ہوں۔

ابراہیم بن الزیر رویٹی کہتے ہیں کہ ایک دن میں معر کے پاس بیٹا تھا کہ امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ وہاں سے گزرے 'آپ ہماری طرف آئے' سلام کیا اور تھوڑی دیر رک گئے' پھر چل پڑے کسی نے کما '' مسعر! امام ابوطنیفہ رویٹی تو آپ کے مخالف نہیں' کیا آپ بھی ان کی مخالفت کرتے ہیں ؟ مسعر اپنی جگہ سے فورا اٹھا اور بات کہنے والے سے کما' یمال سے دفع ہو جاؤ' تہیں پہتہ نہیں امام ابوطنیفہ رویٹی ایک ایسا مرد مجاہر ہے جس پر کوئی مخالف غالب نہیں آسکا۔

ابوحباب روافیہ کتے ہیں کہ میں نے عاصم برالح النجود کو دیکھا کہ وہ حضرت امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے فتوی بوچھے آیا۔ آپ نے اس کا صحیح جواب دیا۔ عاصم بہت خوش ہوا اور کنے لگا ابوحقیقہ! آپ پر اللہ خوش ہو' آپ بڑی بڑی مشکلات حل کر دیتے ہیں۔ شیبان روافیہ فرماتے ہیں کہ میں نے مسعر' عمر بن ذر' امام ابوحقیقہ اور حضرت عاصم برالجا النجود کی خدمت میں آئے۔ عاصم نے مصرت امام ابوحقیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو بلا کر اپنے پہلو میں بٹھایا' آپ سے حدیث لیلتہ القدر اور حدیث مفوان بن عسال انہی کی روایت سے دریافت کی۔ یاد رہے عاصم بن ابی النجود روافیہ وہ بزرگ بیں جنہوں نے حضرت امام ابوحقیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو قرآن مجید پڑھایا تھا۔ آپ بھرہ کے " الشیخ المقری " تھے۔ انہوں نے یاد دلایا' ابوحقیقہ جب آپ بی تھے قو ہمارے باس قرآن مجید پڑھنے آیا المقری " تھے۔ انہوں نے یاد دلایا' ابوحقیقہ جب آپ بی مسائل فقہ کی تحقیق کے لیئے حاضر ہوتے کرتے تھے۔ اب ہم بوڑھے ہو گئے ہیں آج ہم آپ سے مسائل فقہ کی تحقیق کے لیئے حاضر ہوتے ہیں۔

کلبی نے اپنے دوستوں میں امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو دیکھ کر کما لوگو! اس شخص کو دیکھ لو' مجھے جس مسئلہ کی شخفیق کی ضرورت بڑی میں نے ان سے ہی بوچھا حالانکہ ایسے مسائل

مرے لیئے بہاڑ کی طرح بھاری تھے۔

جیواللہ وصانی ملیجے فرماتے ہیں کہ ہم ایک دن عطاء بن ابی رباح کے پاس بیٹے تھے اور اسے ساتھ امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ بھی تشریف فرما تھے۔ ایک شخص نے ایمان کے بارے الفظو کا آغاز کیا۔ حضرت امام نے بوچھا کیا تو مومن ہے ؟ اس نے کما مجھے امید ہے کہ میں مومن ۔ آپ نے فرمایا 'اگر قبر میں مکر کمیر نے تہمارے ایمان کے متعلق سوال کیا تو کیا وہاں بھی کی سے۔ آپ نے فرمایا 'اگر قبر میں مکر کمیر نے تہمارے ایمان کے متعلق سوال کیا تو کیا وہاں بھی کی سے۔ وہ شخص جران ہو گیا کہ امام مطابح نے کس انداز سے مسئلہ کا حل کر ویا ہے۔ اس واقعہ کو سامزیز بن ابی رواد مطابحہ بیان کرتے ہوئے فرماتے ہیں کہ جب وہ شخص رو بڑا تو آپ نے فرمایا تم الفارش بیٹے رہے۔

ایک مخص رات کے وقت اپنی ہوی سے او پڑا۔ اس مرد نے غصے میں آگر کہ دیا تم میری

ایٹ کی طرح ہوگی۔ اگر میں آج رات ہر صورت میں تم سے جماع نہ کروں۔ عورت بھی

اللہ بھی اللہ جھی اللہ او او اس مرد نے وہی الفاء و حرائے کر اب اسے خیال آیا کہ وہ کیا کہ رہا

ماری رات پریٹان رہا گر عورت نہ مانی۔ صبح اٹھا کونے کے تمام علاء کے پاس گیا مسئلہ پوچھا گر کے تمام علاء کے پاس گیا مسئلہ پوچھا گر کے تمام علاء کے پاس گیا مسئلہ پوچھا گر کے تمام علاء کے پاس گیا مسئلہ پوچھا گر کے تمام علاء کے پاس گیا مسئلہ پوچھا گر کے تمام اللہ بخش جواب نہ دیا۔ آخر وہ حضرت امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ کی خدمت میں حاضر اور اپنا سارا ماجرا سایا۔ آپ نے پوچھا کیا اس کا جواب خمیس ابھی چاہئے؟ کہنے لگا خدا گواہ ہے مسئت ذہنی اضطراب میں جاتا ہوں اور جایا کہ وہ کوفہ کے تمام فقہا سے مل کر آیا ہے۔ آپ نے تمام نے کہا ہاں گئے۔ اب جاؤ تمہارے غلام ہیں ؟ اس نے کہا ہاں کے آداو کر دو تیری قتم کا کفارہ اوا ہو گیا۔

مطلب بن زیاد مراجہ نے فرمایا امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے جس نے بھی مسئلہ

اللہ عالم کوفہ نے مباحثہ کیا آخر اسے گھنے ٹیکنے پڑے اور اپنے بجز و فکست کا اعتراف

اللہ عبد بن سعید القرشی مراجہ کتے ہیں آج ایسا کوئی فقیہ نہیں جو امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ

اللہ بو تو اس نے علمی فوقیت کا وعویٰ کیا ہو۔ عمار بن مجر مراجہ فرماتے ہیں کہ آیک ون میں نے

اللہ ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کعبتہ اللہ میں بیٹھے ہیں۔ آپ کے اردگرد لوگوں کا ہجوم

اللہ عمر ملک مراج مراج کے علاء موجود ہیں۔ آپ ہر ایک کے سوال کا جواب دیتے جاتے ہیں ایسا

افت امام اعظم ١٨٠

معلوم ہو آ تھا کہ تمام جوابات آپ کی جیب میں تیار رکھے ہوئے ہیں اور آپ نکال نکال کر سے ا با نفتے چلے جارہے ہیں۔

حسر بن بزید بن طحان مطیع کہتے ہیں کہ حصرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ جب کسی مسلہ جواب دیتے تو ایک لمبا سانس تھینچ کر کہتے یااللہ مجھے معاف کرنا میں نے تیری رضا کے لیے اسے کشائی کی ہے۔ امام ابویوسف مطیع فرماتے ہیں کہ ایک بار میں حصرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی سے کشائی کی ہے۔ امام مام رہوا تو آپ کو بے حد معموم پایا میں گھرا گیا کہ آج آپ سے کس طرح سول کی خدمت میں حاضر ہوا تو آپ کو بے حد معموم پایا میں گھرا گیا کہ آج آپ سے کس طرح سول کے دوں۔ آپ نے گرون اٹھا کر فرمایا 'ابویوسف تم ہتا سکتے ہو کہ ان اجتمادات کے متعلق اللہ تھا

ہمیں کس انداز سے سوال کرے گا۔ میں نے عرض کی حضور! اللہ تعالیٰ آپ پر رحم فرمائے 'مجتد کے ۔ لیئے تو صرف اجتماد کرنا ہے' آپ اٹھے اور فرمایا' اے اللہ ہمارا مواخذہ نہ کرنا۔

عبدالله بن الاجلح رالیجہ نے فرمایا امام ابو حنیفہ رضی الله تعالیٰ عنه بحرعلوم کے غواص (خصر خور) تھے۔ موتی نکال نکال کر ہمارے سامنے وُھیر کرتے جاتے تھے۔ امام زفر رالیجہ نے فرمایا کہ جسے امام ابو حنیفہ رضی الله تعالیٰ عنه گفتگو فرماتے تو یوں محسوس ہو ناکہ جیسے آپ کے سربر کوئی فرشتہ کھ آپ کو جوابات سنا آیا جا آ ہے اور آپ بولتے جاتے ہیں۔

# چوروں کی گرفتاری کیلئے ایک عجیب و غریب طریق کار

قیس بن الربیع مطیحہ فرماتے ہیں کہ میں ایک دن امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے پیما تھا کہ ایک شخص نمایت مغموم اور محزوم ہو کر حاضر ہوا اور عرض کرنے لگا کہ حضرت رائے میرے گھر چور داخل ہوئے' ان سے جس قدر مال اٹھایا جا سکا اٹھا کرلے گئے۔ چوروں میں سے شر نے ایک کو پہچان لیا۔ وہ میرے ہی محلے کا ایک رہائشی تھا۔ اس کا مصلی میری مجد میں ہے اور وہ مصلے پر کھڑے ہو کر باقاعدہ نماز اوا کرتا ہے۔ اس چور کو بھی معلوم ہو گیا کہ میں نے بھی اسے پیچا لیا ہو کہ بڑھا اور جھے رسیوں سے جگڑ لیا۔ اور جھے سے قتم لی کہ اگر تم نے میرا نام افشاء کیا تیری بیوی کو تین طلاقیں ہوں گی۔ پھر اس بات پر بھی حلف لیا کہ اگر تم نے میرا نام افشاء کیا تیری بیوی کو تین طلاقیں ہوں گی۔ پھر اس بات پر بھی حلف لیا کہ اگر تم نے میرا نام افشاء کیا میرے گھر کا تمام مال اور سامان غربائے شہر کو تقتیم کرنا ہو گا' پھر اس نے بتایا کہ میں اس کا نام کھے میرے گھر کا تمام مال اور سامان غربائے شہر کو تقتیم کرنا ہو گا' پھر اس نے بتایا کہ میں اس کا نام کھے

ران ہے نہ نکانوں' نہ اشارہ کروں' نہ صراحت کوں۔ جھے ڈر ہے کہ اس تم اور حلف کے بعد ہیں نے اس کا نام کی پر بھی افشاء کیا تو میری بیوی کو طلاق ہو جائے گی۔ ہیں اس واقعہ کو اللہ کو گواہ بنا کر اس کا نام کی پر بھی افشاء کیا تو میری بیوی کو طلاق ہو جائے گی۔ ہیں اس واقعہ کو اللہ کو گواہ بنا کر ہے گئے کہ رہا ہوں۔ حض کو بھیجو جس پر تہمیں پورا پورا اعتاد اور وثوق ہو۔ اس نے جاکر اپنے بھائی کو بھیجا۔ اس صاحب نے اس کے بھائی کو فرمایا کہ تم حاکم وقت کے پاس جاؤ اور بیہ سارا قصہ بیان کو اور اس مرحب نے اس کے بھائی کو فرمایا کہ تم حاکم وقت کے پاس جاؤ اور بیہ سارا قصہ بیان کو اور اس تھیج کر اس ماحب نے اس کے بھائی کی پریشائی اور مجبوری کا بھی ذکر کو اور کو کہ پولیس بھیج کر اس موادن کو گرفتار کرائے جن کے مصلے اس کی مجد میں قائم ہیں۔ ان ہیں سے ایک کو بھی حرائداز نہ کیا جائے۔ پولیس حکم دے کہ مسجد کے دروازے سے تمام نمازی ایک ایک کو بھی حالے اس کی مجد میں قائم ہیں۔ ان ہیں بھائی کو بچھتی جائے سے نہارا چور ہے؟ تمہارا بھائی بالکل خاموش کی بیا ہے تمہارا چور ہے؟ تمہارا بھائی بالکل خاموش میں نہ کرے' اس خفس کو پولیس گرفتار کرے اور بادشاہ کے سور پیش کرے۔

جس وقت امام صاحب رایلیے کی بنائی ہوئی تدبیر پر عمل کیا گیا تو اصل چور گرفار کر لیا گیا اور مسل چور گرفار کر لیا گیا اور مسل چوری ہوا تھا اس نے اس کا نام تک بھی کسی کو نہ بنایا' اب اس گرفار چورے دو مرے چروں کا بھی پہتا ہوگیا اور سب کو گرفار کر لیا گیا۔ ان سے چوری کا مال بھی برآمد کر لیا گیا اور حدوں کو مزابھی ہو گئی۔

علی بن ہاشم ریالی فرماتے ہیں کہ حضرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عند علم کا آیک بہت برا اللہ سے ، جو مسائل کہیں سے حل سنہ ہو سکتے وہ آپ نمایت آسانی سے حل فرما ویا کرتے تھے۔
آپ اکثر ابن الی لیل کے فاوی اور فیصلوں کو ہدف تنقید بناتے تھے اور انہیں غلط قرار دیا کرتے تھے۔
اس الی لیل اس قدر بدنام ہوئے کہ انہیں منصب قضا سے معزول کر دیا گیا۔

ابو معاویہ الضریر نابینا تھے گر کوفہ کے جلیل القدر علماء میں سے تھے۔ وہ فرمایا کرتے تھے کہ سے خطرت امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے بردھ کر کوئی عالم دین نہیں دیکھا۔ وہ نہ کی سے خطرت امام بوتے اور نہ کسی مباحثہ کے وقت گھراتے۔ میں نے مناظرہ کے وقت ان

NY ABEIDING

#### ے برے کر کوئی باحوصلہ مناظر شیں دیکھا۔

امام ابوبوسف رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ جب سے میں نے امام ابوطنیفہ رضی اللہ عدم کی مجالس میں حاضری دی ان کی گفتگوسی 'مجھے ان سے نشست و برخامت کا شرف حاصل عدم کی مجالس میں حاضری دی ان کی گفتگوسی 'مجھے ان سے نشست و برخامت کا شرف حاصل میں نے فیصلہ کرلیا کہ میں اس شہر میں نہیں رہوں گا جمال امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نہیں سے کے۔ ایک بار مجھے کوفہ سے باہر کسی شہر میں جانا پڑا' میرے پاس ایک مخص آیا اور پوچھنے لگا ابوب ! بھے اس مخص کے بارے میں بتاؤ جو نہر فرات کے کنارے بیٹھا وضو کر رہا ہے' وہاں پر شراب گھڑا ٹوٹ گیا اور وہ مختص اس طرف بیٹھا وضو کر رہا ہو جس طرف پانی بہتا ہے۔ اب وہ کیا کے گھڑا ٹوٹ گیا اور وہ مختص اس طرف بیٹھا وضو کر رہا ہو جس طرف پانی بہتا ہے۔ اب وہ کیا کے امام ابوبوسف ریا ہے گئے بخدا میرے پاس اس کا کوئی جواب نہ تھا' میں نے اپ توکرے کیا اس شہرے نکل چلیں جمال مسئلہ کا جواب نہ آئے اور کوئی راہنمائی کرنے والا بھی نہ ہو۔

جب میں کوفہ میں واپس آیا مصرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عند کی خدمت میں حاصل وی تو آپ میں کوفہ میں واپس آیا مصرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عند کی خدمت میں حاصل وی تو آپ بنس پڑے اور کما اس سو کا جواب نمایت آسان ہے اس بہتے ہوئے پانی سے شراب کی ہو آرہی تھی یا ذا نقد بدلا ہوا تھا تو ہوئے نہیں۔ نہ کیا جائے ورنہ جائز ہے اس میں کوئی حرج نہیں۔

ابوبوسف رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ میں نے ایک دن حضرت امام ابوحقیفہ رضی اللہ تعدمت سے حضور صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم کی ایک حدیث کی وضاحت جابی افا کان الماء قلنیں عصم کے جہ تو وہ پلیدی کا حال نہیں ہو سکتا۔ "کیا مطلب ہے۔ میں جسم سلے حبثا ہے " جب پانی دو قطع ہو تو وہ پلیدی کا حال نہیں ہو سکتا۔ "کیا مطلب ہے۔ میں تا میں کرتا رہا گر جھے لیقین تھا کہ آپ اسے قبول نہ فرمائیں گے۔ میں نے عرض کی اللہ تعالی سے بور رحمت فرمائے آپ ہی بتائیں۔ آپ نے فرمایا آس وقت کا سم میے جب پانی جاری ہو۔ میں اللہ کر آپ کے سرکو بوسہ دیا اور آپ کی زبانت اور بصیرت کو ہدیہ تحسین چش کیا۔

## خارجیوں سے ایک مکالمہ

حماد بن ابو صنیفہ رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ میرے والد گرامی امام ابو صنیفہ رضی اللہ تھا۔ عنہ کے علمی ادراک کی خبر جب خوارج کو پینجی اور انہیں یہ معلوم ہوا کہ آپ فسق کی وجہ سے ا قبلہ پر کفر کا فتوی نہیں دیتے ان کے ستر آدی ایک وفد کی صورت میں آپ کے پاس آئے اس، وقت آپ کے پاس لوگوں کا بہت برا جوم تھا اور حضرت امام مالجد کے پاس بیضنے کی کوئی محنجائش نہیں مقی- انہوں نے چلا کر کما حضرت ہم ایک ملت پر ہیں' آپ اینے لوگوں کو کمیں کہ وہ ہمیں ملاقات كے ليئے قريب آنے كاموقعہ ديں۔ جب يہ لوگ حضرت امام عاليج كے قريب منتج تو سب نے ميانوں ے تكوارس نكال ليس اور كما تم اس امت كے وحمن ہو، تم اس امت كے شيطان مو- مارے زدیک سر آدمیوں کے قتل کرنے سے آپ جیسے تنا محف کو قتل کر دینا بھتر ہے۔ لیکن ہم قتل کرتے وقت ظلم نہیں کریں گے۔ حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عند نے فرمایا کہ تم مجھے انصاف ویتا چاہتے ہو اگر سے بات ورست ہے تو پہلے اپنی تلواریں میانوں میں کر لو کو تک مجھے ان کی چمک سے خوف آتا ہے۔ وہ کہنے لگے ہم انہیں میانوں میں کرلیں ہم تو انہیں آپ کے خون سے رتھین کرنے آئے ہیں۔ آپ نے فرمایا چلوتم اپنا سوال کرو۔ وہ کہنے لگے مسجد کے وروازے پر وو جنازے آئے ں' ایک ایسا شخص ہے جس نے شراب کے نشے میں دھت ہو کر جان دی ہے' دو سری ایک عورت کی لاش ہے جس نے زنا کروایا اور اس کے پیٹ میں حرام کی اولاد ہے اس نے شرمساری سے بچنے کے لیئے خود کشی کرلی ہے 'کیا آپ ان کی نماز جنازہ پڑھیں گے۔ آپ نے پوچھا کیا وہ دونوں مرنے والے يهودي تھے ؟ كما شين ولياكيا وہ نصراني تھے ؟ كما شين كيا وہ مجوى تھے ؟ كما شين فرمايا تو وہ س دین اور کس فرمب پر سے ؟ کہنے لگے اس دین پر جس کی تم گواہی دیتے ہو کہ اللہ کے سواکوئی ورسرا معبود نمیں۔ حضرت محمر صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم اللہ کے بندہ اور رسول ہیں۔ حضرت امام نے قربلیا تو تم خود گواہی دے رہے ہو کہ وہ ملت اسلام پر تھے اکین بناؤ کہ ان کا ایمان تمائی تھا یا چوتھائی یا انجوال حصد تھا؟ وہ کہنے گئے کہ ایمان تمائی چوتھائی نہیں ہو سکتا۔ آپ نے فرمایا وہ ایمان کی کتفی تدار لے کر مرے ؟ انہوں نے کما ایمان کی کوئی مقدار نہیں ہوتی۔ آپ نے فرمایا عجیب سوال ہے ب تم کس گمان میں ہو جب خود ہی اقراری ہو کہ وہ مومن تھے ' پھر پوچھتے ہو ان کی نماز پڑھی جائے ا تسیں۔ انہوں نے کما جمارا سوال میہ ہے کہ کیا وہ جنتی ہیں یا دوزخی ؟ آپ نے فرمایا جب تم مومن ونے کے اقرار کے بعد بھی سوالات کرنے سے باز نہیں آتے تو سنو' ان کے بارے میں وہی کموں گا اراہیم علیہ السلام نے اس قوم کے بارے میں کماجو جرم میں اِن سے بردھ کر بھی۔

بامام اعظم بامام

فرایا فمن تبغی فانه منی ومن عصانی فانک غفور الرحیم ﴿ " بو میری اتیل کرے گاوه میرا ہے بو مجھے ہے بخاوت کرے گا اللہ بخشے والا ہے۔ " پھران کے بارے میں بھے کہ کمنا ہے جو جھزت عینی علیہ السلام نے اس قوم کے متعلق کما تھا جو ان ہے جرم میں بردھ کرتھ ان تعذیبهم فانهم عبادک وان تعفرلهم فانک انت العزیز الحکیم ﴿ " اگر اللہ ان پر عذاب نازل کرے تو وہ مرمان اور کئیم ہے۔ " میں نازل کرے تو وہ مرمان اور کئیم ہے۔ " میں عفرت نوح علیہ السلام کے فرمان کے مطابق سلوک کروں گا۔ آپ نے فرمایا اذ قالوا انومن لک واتبعک الار ذلون قال فما علمی بما کانوا یعملون ان حسابهم الاعلی رہی لو واتبعک الار ذلون قال فما علمی بما کانوا یعملون ان حسابهم الاعلی رہی لو تشعرون ﴿ پُورِی اللهِ واللهِ علی اللام نے فرما قل لا اقول لکم عندی خزائن الله ولا اعلم الغیب الی قوله انی اذالمن الظالمین ﴿

حضرت المام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے ان زیردست دلائل کے سامنے خوارج نے بتھیار ڈال دیے اور اس مجلس میں اعلان کیا کہ آج ہم ان تمام بداہب باطلہ اور خیالات فاسدہ سے بیزاری کا اعلان کرتے ہیں جس پر آج تک ہم عمل بیرا تھے اور ہم آپ کے نظریات کی روشنی میں دین اسلام کو ہی اختیار کرتے ہیں۔ اللہ تعالی نے آپ کو دینی علوم سے نوازا ہے۔ راوی نے بتایا کہ جب خوارج کا بیہ وفد یمال سے روانہ ہوا تو اپنے خیالات سے توبہ کرکے روانہ ہوا اور آئرہ کے لیے اللہ تا کہ عقائد ہر آگے۔

حضرت ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ فرماتے ہیں کہ ایک بار ہیں نے قادہ ہے اس شخص کے متعلق سوال کیا جس نے معصیت کی منت مانی۔ اس نے جواب دیا اس کا کفارہ کی ہے کہ وہ معصیت کا آئندہ ار تکاب نہ کرے۔ ہیں نے کما اللہ تعالی تو فرما تا ہے الذین یظا ھرون من نسائھم نہ یعودون لماقالوا فتحریر رقبہ ہے اس معصیت پر اللہ تعالی نے تو کفارہ اوا کرنے کا حکم دیا ہے۔ قادہ غصے میں آگئے اور کھنے گئے اس بدعتی ! جب تک تم کوفہ میں موجود ہو میں بھی فتوی نہیں دول گا۔ میں نے کما یہ کیا انصاف ہے کہ میں تنہیں ایک غلطی سے قرآن مجید کی آیات کی دوشن میں آگاہ کر رہا ہوں اور تم ناراض ہو رہ ہو۔ یاد رکھو اب میں بھی تم سے کوئی سوال نہیں کوں گاجب تک تم کوفہ میں ہو۔

بشرین المفضل مولیے فرماتے ہیں کہ میں ایک دن حضرت امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے سی بیٹھا ہوا تھا 'آپ نے بجھے ایک بات سنائی کہ ہماری ایک کارگر ہمائی تھی۔ اس کا ایک توکر تھا 'گل رات وہ اپنے کام سے واپس آیا تو اس کی مالکہ نے جو ابھی تک غیر شادی شدہ تھی اس سے موف لطف اندوز ہونے کے لیئے مباشرت کی۔ گریہ کوشش کی کہ اس کا مادہ منونیہ اس کی فرج میں موف لطف اندوز ہونے کے لیئے مباشرت کی۔ گریہ کوشش کی کہ اس کا مادہ منونیہ اس کی فرج میں موف سے بیٹ میں نہ ہونے پائے۔ گرکسی طرح اس نوکر کا مادہ منوبیہ اس کے رحم میں چلا گیا اور وہ نطفہ بیٹت میں محمر گیا۔ اس کے رشتہ دار میرے پاس آئے اور کما آپ اس مسئلہ کا کوئی حل بتا ہیں 'آگر بچہ بیدا ہو گیا۔ اس کے رشتہ دار میرے پاس آئے اور کما آپ اس مسئلہ کا کوئی حل بتا ہیں 'آگر بچہ بیدا ہو سال و جواب کر سکوں اور وہ اس لڑکی سے آگ بات کر سکے۔ انہوں نے بتایا اس کی آیک پھو پھی کو جہہ کر دے جس نے اس کے ساتھ شب سال و جواب کر سکوں اور وہ اس لڑکی سے آئے بات کر سکے۔ انہوں نے بتایا اس کی آیک پھو پھی کی ہم بہ کر دے جس نے اس کے ساتھ شب سے 'آپ نے فرایا آگر میہ عورت اپنا وہ غلام اپنی پھی کی وجہہ کر دے جس کے اس کے ساتھ شب شک کے ' پھر پھی فلام کو اس کے حوالے کر دے اس طرح وہ مالکہ اس کے نکاح سے بھی آزاد ہو جائے گی اور شمرے کی شرماری سے بھی نے جائے گی۔

یوسف بن خالد ریالی فرماتے ہیں میں اور امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ ایک جمام میں عشل کے گئے۔ ہم نے ویکھا کہ شیطان '' الطاق '' جمام میں نگا بیٹھا تھا۔ نہ اس پر چادر' نہ کوئی اور کیا ۔ امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے تو آئھیں بند کرلیں۔ مگروہ شیطان الطاق کنے لگا ابو حقیقہ نے تہیں کب سے اندھا کر دیا ہے ؟ آپ نے فرمایا جب سے اس نے مجھے ذلیل و خوار کیا سے بال بن کچی الرائی ریائی نے بتایا ہے اس وقت کی بات ہے جب یوسف بن خالد بھرہ میں رہتے ہور امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کوفہ میں۔

اس واقعہ کو ایک دوسرے انداز میں بیان کیا گیا ہے کہ ایک دن ہم کوفہ کے باہر سرو تفری کے سے فلے 'شام تک سر کرتے رہے ' واپس آرہے تھے تو راستہ میں ابن ابی لیل طے ' وہ اپنے فچر پر سے مجھ کے 'شام تک سر کرتے رہے کہ اور امام ابوطیفہ رضی اللہ تعالیٰ عند کے ساتھ چلنے گئے۔ جب سے ' ہمیں دکھ کر السلام علیم کما اور امام ابوطیفہ رضی اللہ تعالیٰ عند کے ساتھ چلنے گئے۔ جب سے ایک باغ میں پہنچ تو وہاں چند دوسرے لوگ بھی سر کر رہے تھے۔ ان کے ساتھ کچھ الی سے باغ والی عورتیں تھیں جو کوفہ میں برنام سمجھی جاتی تھیں۔ ان عورتوں نے ہمیں دیکھا تو سے بانے والی عورتیں تھیں جو کوفہ میں برنام سمجھی جاتی تھیں۔ ان عورتوں نے ہمیں دیکھا تو

ہوری طرف متوجہ ہو ہیں اور ہمارے پاس آکھڑی ہو ہیں گر ہمیں دیکھ کر ظاموش ہو گئی۔
امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے کہا احسنتن "تم نے خوش کرویا "جب ہم آگے ہوئے
اب ہم نے ایک دو سرے سے جدا ہونا چاہا تو ابن ابی لیلی نے امام صاحب کے بیہ الفاظ یاو رکھے
کی مجلس میں انہیں شرمسار کرنے کے لیئے بیان کر دوں گا۔ ایک دن اس نے ایک عدالت ہی گوائی کے کوائی تحریر کردی گر ابن ابی فرائی کے ایک عدالت ہی گوائی کے لیئے بلاکر آپ سے تحریری دستخط کرنے کو کہا "حضرت نے گوائی تحریر کردی گر ابن ابی نے آپ کی گوائی اس لیئے مسترد کر دی کہ آپ نے گانے بجانے والی عورتوں کو احسنتن کما اور ان فاحشہ عورتوں کو داو دی تھی۔ آپ نے دریافت کیا ہیں نے انہیں کب احسنتن کما سے گار رہی تھیں یا جب وہ خاموش ہو گئی۔
گار رہی تھیں یا جب وہ خاموش ہو گئی تھیں۔ ابن ابی لیلی نے کہا جب وہ خاموش ہو گئی۔
نے فرمایا " اللہ اکبر " میں تو انہیں احسنتن ان کے سکوت اور گانا بند کرنے پر کہا تھانہ کہ ان سے فرمایا " اللہ اکبر " میں تو انہیں احسنتن ان کے سکوت اور گانا بند کرنے پر کہا تھانہ کہ ان سے فرمایا " اللہ اکبر " میں تو انہیں احسنتن ان کے سکوت اور گانا بند کرنے پر کہا تھانہ کہ ان سے فرمایا " اللہ اکبر " میں تو انہیں احسنتن ان کے سکوت اور گانا بند کرنے پر کہا تھانہ کہ ان سے فرمایا " اللہ اکبر " میں تو انہیں ابی لیلی نے آپ کی گوائی خاموش سے قبول کری۔

امام ابوحنیفہ نے کما ولا یحیق المکرالسیئی الا باہلہ اس دن کے بعد ابن ابی ہے آپ اللہ ہو ہوگئے ابن ابی ہے آپ سے خوف زدہ رہنے گئے۔ جب ان کے پاس سخت ترین مسائل آتے تو وہ امام ابوحنیفہ رہے اللہ تحالی عند کی خدمت میں بھیج دیتے۔ آپ اس کی چال کو سمجھ گئے اور بید شعر کما۔

واذا تكون عظيمة ادعى لها واذا يحاس الحيس يدعى جندب

(ترجمه) "جب بهت سخت کام ہو تو مجھے بلایا جاتا ہے اور جب حلوہ پکایا جائے تو جندب کو بلا یے ہو۔"

# بیویاں تبدیل ہو گئیں

امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے ایک واقعہ بیان کیا کہ کوفہ میں دو سکے بھائی ہے ونوں ا دو سکی بہنوں سے بیک وقت نکاح ہوا۔ بیہ کھا تا پتیا گھرانہ تھا۔ بڑی دعو تیں اڑائی گئیں ' جشن کیئے گے اور عوام و خواص دور دور سے اس شادی پر آئے۔ رات کے وقت عور توں نے غلطی سے ایک بھڑ

ك متكوحه كو دو سرك ك ياس اور دو سرك كى منكوحه أيك بھائى كے ياس بھيج ديا۔ دونول في رات ب باش کی اور ہر بھائی نے دو سرے بھائی کی متکوحہ سے جماع کیا۔ صبح موئی توب راز فاش موا اور ہر ا کو سخت پریشانی ہوئی۔ دونوں گھرانے امیر تھے اس راز کے افشاء ہونے سے انہیں شرمیں بدنامی ا خدشہ تھا۔ میرے پاس آئے اور حقیقت حال بیان کی اور پریشانی میں کما کہ کوئی ایس ترکیب بتا تیں ك بم لوگ بدناي سے في جائيں۔ ميں نے ان دونوں بھائيوں كو جن كا نكاح موا تھا عليحده عليحده بلايا اور ایک سے بوچھا کہ رات فلال نام کی اڑکی کے ساتھ تم نے شب باشی کی وہ کون تھی ؟ اس نے بتایا ك اس في تواس و يكها تك نهيس- آب في اس فرمايا تم اس ايك طلاق و اس في طلاق وے دی۔ میں نے اے کما اب تیری منکوحہ کو طلاق با من ہو گئی ہے۔ تمہارے لیئے عدت کی سورت نمیں اس تمہیں اسے نصف مراوا کرنا ہوگا۔ اس طرح دوسرے بھائی کو بلایا اور اس بھی 🥒 مشورہ دیا اور اے بھی طلاق با من دلوا کر نصف مہر کی ادائیگی کا کہا ( نصف مهراس کینے ادا کرنا تھا کہ وہ غیر مدخولہ تھیں ) پھر میں نے ایک بھائی اور منکوحہ اڑ کیوں کے وکیل اور گواہوں کو طلب کیا ور ان کے سامنے اس اڑکے کو کما کہ میں وکیل اور گواہوں کی موجودگی میں تمہارا فلال اڑکی سے تکاح كريا ہوں جہيں اس كا نصف حق مرادا كرنا ہوگا۔ وكيل كى تقديق ادر گواہوں كى شادت لے كر وے سے کما تم کمو قبلت " میں نے قبول کی۔" اس تکاح سے فارغ ہو کر آپ نے دوسرے وے کو طلب کیا اور اس طرح اس کا تکاح کرویا اب حاضرین کو مبارک کمی عمی اور انہیں کما اب جاؤ واوت ولیمہ میں عوام و خواص کو شریک کرو' تمام برادری نے میرا شکریہ ادا کیا اور کہا کہ آپ نے ا مشکل اسان کر دی اللہ تعالیٰ آپ کی مشکلات کو بھی اسان فرمائے۔ علیٰ بن عاصم ریاطیہ فرماتے یں کہ میں نے حضرت امام ابو حذیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے بردھ کر کوئی قطین و تہیم نہیں ویکھا۔

احد بن یونس ریافیہ فرماتے ہیں کہ میں نے وسیع کی زبان سے سنا وہ فرمایا کرتے تھے کہ میں فی ام ابو حقیقہ ' سفیان توری' مسعر' مالک بن مغول' جعفر بن زیاد الاحمر اور حسن بن صالح کو دیکھا کہ سب کوفہ میں ایک دعوت ولیمہ پر موجود تھے۔ اس دعوت پر امیرو غریب' اعلیٰ و ادنیٰ' غلام اور اللہ مرفتم کے لوگ آئے ہوئے تھے۔ ایک محف نے اپنی دو لڑکیاں کسی دو سرے محف کے دو الکول سے بیابی تھیں گرولی نے آگر کہا ہم تو بہت بری مصیبت میں بھنس گئے ہیں۔ گواہوں نے

لب المام اعظم

پوچھا وہ کیا مصیبت ہے ؟ انہوں نے کہا ہم اس مصیبت کو کسی کے سامنے بیان بھی نہیں کر کے اہم ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ نے پوچھا کہ بتاؤ تو سمی کیا بات ہے ؟ ممکن ہے کہ کوئی حل کی آئے۔ انہوں نے کہا کہ ایک کی منکوحہ غلطی سے رات وو سرے کے پاس چلی گئی اور وو سرے کی باس۔ اس طرح چاروں نے شب باشی بھی کرلی۔ حضرت سفیان ٹوری ریائیے نے کہا کوئی ہے نہیں ایسا واقعہ ایک بار حضرت علی کرم اللہ وجہہ کے زمانہ میں بھی رونما ہوا تھا۔ جب بیہ بات صحب معاویہ رضی اللہ تعالی وجہہ کے پاس ایک آدی معاویہ رضی اللہ تعالی وجہہ کے پاس ایک آدی گھیجا' جب وہ آیا تو آپ نے کہا تہمیں معاویہ نے بھیجا ہے چنانچہ آپ نے ایسے ہی فیصلہ فرمایا جم طرح میں نے کہا ہو۔

لوگوں نے حضرت سفیان توری ریافیے کی بات سی تو بہت خوش ہوئے گر امام ابو حفیقہ رہے اللہ تعالیٰ عنہ خاموش بیٹھے رہے۔ مسعر نے امام کی طرف متوجہ ہو کر کہا آپ کا کیا خیال ہے؟ آپ نے فرمایا حضرت ابو سفیان ریافیے کے سامنے میری کیا مجال ہے کہ ان کے خلاف رائے دول آ گر آپ نے فرمایا 'ان دونوں لاکوں کو میرے پاس لاؤ جن کا نکاح ہوا تھا۔ جب وہ آگئے تو آپ نے ہرایک علیحدہ علیحدہ پوچھا کہ جو لاکی شادی کی پہلی رات تہمارے پاس آئی تھی تہمیں پند ہے۔ ہرایک علیحدہ علیحدہ بال آ آپ نے ایک کو پوچھا جو لاکی شمارے باس آئی تھی تہمیں پند ہے۔ ہرایک جواب دیا کہ ہاں! آپ نے ایک کو پوچھا جو لاکی تممارے بھائی کے پاس رات رہی تھی اس کا کیا ہے جواب دیا کہ ہاں! آپ نے ایک کو پوچھا جو لاکی تممارے بھائی کے پاس رات رہی تھی اس کا کیا ہے اسے طلاق دی۔ اس طرح دو سرے سے بھی کملوایا بھران دونوں کا دوبارہ نکاح پڑھایا۔ اور دعوت والم اسے طلاق دی۔ اس طرح دو سرے سے بھی کملوایا بھران دونوں کا دوبارہ نکاح پڑھایا۔ اور دعوت والم کی اجازت دی۔ اس موضیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی اس شخص کی عجت میں طامت کرتے ہو گر آت ہوا۔ مسعر الشھ اور امام کا منہ چوم لیا۔ لوگو! جمھے اس شخص کی عجت میں طامت کرتے ہو گر آت اس شخص نے جمھے اور سفیان توری ریا ہے کہی مطمئن کردیا' اللہ اسے خوش رکھے۔

# رفع یدین کی ممانعت

سفیان بن عیب فراتے ہیں کہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عند اور اوزاعی عطریوں کے گر جمع ہوئے 'امام اوزاعی نے حضرتِ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عند سے بوچھاکہ آپ رکوع اور رکوی ے اٹھتے ہوئے " رفع پدین " کیوں نہیں کرتے ؟ آپ نے فرمایا ' رسول اللہ صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم اس کے متعلق کوئی صحیح روایت نہیں ملتی۔ اوزائی نے کما میرے پاس صحیح حدیث کی سند موجود ہے۔ ججھے زہری نے حدیث بیان کی ہے ' انہوں نے سالم سے اور سالم نے اپنے باپ سے روایت کی ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم نماز میں ہاتھ اٹھاتے تھے۔ جب نماز شروع کرتے بھر رکوع کے وقت پھر رکوع سے اٹھے وقت ۔ حضرت امام اعظم رضی اللہ تعالی عنہ نے فرمایا جھے حدیث بیان کی تھی میرے استاد جماو نے ' انہوں نے حضرت ابراہیم سے ' انہوں نے ملقمہ سے اور انہوں نے میاللہ بن مسعود رضی اللہ تعالی عنہ سے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم صرف آغاز نماز کے میاللہ بن مسعود رضی اللہ تعالی عنہ سے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم صرف آغاز نماز کے وقت رکوع فرمایا کرتے تھے اس کے بعد ساری نماز میں بھی ہاتھ نہ اٹھاتے تھے یعنی ساری نماز میں بھی ہاتھ نہ اٹھاتے تھے یعنی ساری نماز میں بھی در رفع یوین " نہیں کیا کرتے تھے۔

اوزاعی نے کہا میں تہیں زہری ہے اور زہری سالم ہے اور وہ اپنے باپ سے روایت بیان کر رہا ہوں اور آپ جماد اور ابراہیم اور علقمہ اور عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالی عنہ سے بیان کر ہے ہیں۔ امام ابوعنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے فرمایا جماد بن سلیمان زہری ہے برے فقیہ ہیں اور اسلیم سالم سے فقیہ تر ہیں اور طقمہ عبداللہ بن عمر سے برے فقیہ ہیں اگرچہ عبداللہ بن عمر رضی سے حالی عنہ کو صحبت حاصل ہے اور صحبت کی فضیلت سے کوئی انکار نہیں کر سکتا لیکن اسود بہت کی فضیلت سے کوئی انکار نہیں کر سکتا لیکن اسود بہت کی فضیلت کے مالک ہیں۔ عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالی عنہ تو عبداللہ بن مسعود ہیں ان کے علم اسلیم کا جواب نہیں ( جنہیں حضرت عبداللہ ابن عمر رضی اللہ تعالی عنہا پر بھی فوقیت حاصل ہے) ہے سن کر اوزاعی خاموش ہو گئے۔ اس روایت کو امام ابوالحاس مرغینائی نے مرسل کہا ہے مگر سے اس میں عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالی عنہ کی بجائے حضرت عمر ابن الحظاب رضی اللہ تعالی عنہ کا ذکر کیا ہے اس کی وجہ ہے کہ انہوں نے اس روایت کو حضرت عمر ابن الحظاب رضی عنہ حدال عنہ ہے بھی روایت کیا ہے مگر اس کا وارور در حضرت عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالی عنہ ہے کہ انہوں نے اس روایت کو حضرت عمر ابن الحظاب رضی عنہ حمل عنہ کا ذکر کیا ہے اس کی وجہ ہے ہو کہ انہوں نے اس روایت کو حضرت عمر ابن الحظاب رضی عنہ حدال عنہ ہے بھی روایت کیا ہے مگر اس کا وارور در حضرت عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالی عنہ حدال عنہ ہے بھی روایت کیا ہے مگر اس کا وارور در حضرت عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالی عنہ حدال عنہ ہے بھی روایت کیا ہے مگر اس کا وارور در حضرت عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالی عنہ ہے بھی روایت کیا ہے مگر اس کا وارور در حضرت عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالی عنہ ہے بھی روایت کیا ہے مگر اس کا وارور در حضرت عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالی عنہ ہے بھی دورت کیا ہے مگر اس کا وارور دھن عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالی عنہ ہے دورت کیا ہے مگر اس کا وارور دھن عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالی عنہ سے دورت کیا ہے مگر اس کا وارور دھن سے بھی دورت کیا ہے مگر اس کا وارور دھن سے بھی دورت کیا ہے مگر اس کا دور دیا ہے بھی دورت کیا ہے دورت کیا

ایک مرتبہ اعمش اور اس کی بیوی کا آدھی رات کے وقت جھڑا ہو گیا تھا اعمش نے اپنی اسک مرتبہ اعمش اور اس کی بیوی کا آدھی رات کے وقت جھڑا ہو گیا تھا اسک ایک اور گالیاں دیے سے باز آگیا تو اس

عورت نے اس سے بات کرنا چھوڑ دی۔ وہ گفتگو کرنا تو چپ رہتی۔ کوئی جواب نہ دیتی اور نہ بولت۔ ا عمش کو پھر غصہ آیا اور کڑک کر کہا کیا وجہ ہے التو میری کسی بات کا جواب نہیں دیتی۔ صبح ہوگی 🖥 عورت کا روبیہ وہی رہا' اس کی بیٹی نے کماجب رات کو کسی بات کاجواب نہیں دیتی تو اب دن کو آپ كس طرح بات كرائين گـ اعمش نے كما أكر آج رات تك اس نے مجھ سے بات نه كى توات میری طرف سے طلاق ہے۔ وہ بھی بری ضدی تھی سارا واج اے، نہ کی ارات ہوئی تو اس کی لڑی \_ كما اعمش سے كوئى بات كو تاكه بيد مصيبت عل جائے مكراس نے پھر بھى بات كرنا پند نه كى اور و خاموش رہی۔ اب اعمش کو اپنی غلطی کا احساس بھی ہوا اور مغموم بھی اب اسے بیوی ہاتھ سے جال و کھائی دی تو اس کی پریشانی بردھی۔ عورت تو دن چڑھے مطلقہ ہو جائے گی وہ اس فکر میں گھرے لگا اور اسے خیال آیا کیوں نہ اپنی اس غلطی اور پریشانی کا حضرت امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے ذکر كرے۔ وہ حفرت كے گر بہنچ كيا و يكھا وروازہ بند ہے۔ وروازے ير وستك دى تو اندر سے لام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ اور آپ کے بیئے حماد بن الی صنیفہ کی آواز آرہی تھی۔ حماد نے پوچھا کون ہے ؟ تو اس نے کہا سلیمان۔ آپ نے فرمایا کون سلیمان ؟ اس نے کہا سلیمان اعمش۔ حضرت حماد مالي نے اپنے والد مرم كو اطلاع دى۔ آپ باہر آئے اعمش كو اندر لے گئے ، نمايت عزت و تحريم سے بٹھایا اور خود اس کے سمامنے بیٹھ گئے۔ اس نے کما حضرت میں ایک مصیبت میں مجنس گیا ہوں ای لیے آپ کی خدمت میں اس وقت حاضر ہوا ہوں۔ وہ اصل مسلم بیان کرنے کی بجائے نمایت معذرت سے مفتلو کر آگیا امام صاحب نے فرمایا آپ سیدھی بات کریں تکلف کو چھوڑیں اس نے سارا واقعہ سنایا۔ اگر وہ صبح تک میرے ساتھ نہ بولی تو وہ مطلقہ ہو جائے گی۔ وہ اس طریقہ سے مجھے چھوڑ دینا چاہتی ہے۔ پھراس سے مجھے یہ خطرہ ہے کہ طلاق کے نفاذ کے بعد مجھے نقصان بھی پنجائے گی کیونکہ وہ ایک امیر گھرانے کی عورت ہے۔ ہم ایک طویل عرصہ اکٹے زندگی گزار چکے ہیں۔ صاحب اولاد جیں' آپ الیا عل بتائیں جس سے معاملہ درست ہو جائے۔ آپ نے فرمایا تیلی رکھیں تمهارا مسلم حل مو جائے گا اور تم مشكل سے فكل أؤ كئے۔ الله تعالى آسانى بدا فرمائے گا۔ آپ نے ایک آدمی کو بلایا اور اے کما کہ تم آج اعمش کے گھروالی مجدیس طلوع سحرے پہلے اذان دے آنا۔ اس کے بعد اعمش گر چلا گیا اور موذن نے قبل از وقت ازان دے دی۔ عورت نے ازان س کا شکر ہے' اس بر خلق بوڑھے اعمش سے جان چھوٹی۔ اعمش نے کما واقعی تم اب جھ سے علیحدہ سے کہا شکر ہے' اس بر خلق بوڑھ اعمش سے جان چھوٹی۔ اعمش نے کما ابھی ضبح ہونے کو کافی سے تم ہونے کو کافی سے تم ہات کرنے پر رضامند ہوگئ اب میری فتم اپنی جگہ اور تم سے بیا بیوی بی رہوگ۔

اس واقعہ کو بیان کرتے ہوئے ابوعبداللہ بن ابی حفص الکبیر ملطحہ نے اعمش کا نام تو نہیں لیا سے بتایا کہ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عند نے خود اٹھ کر صبح اعمش کی بیوی کو بتایا کہ بیہ حیلہ میں اللہ تعالی عند نے بی لوائل آگہ تیرا خاوند اپنی قتم میں حانث نہ ہو جائے۔

## حرت امام باقر نفظ النائية كى خدمت مين

حضرت ابوعبداللہ سیدنا امام باقر رضی اللہ تعالی عند نے حضرت امام ابوعنیفہ رضی اللہ تعالی ابوعنیفہ ہم ہے کچھ بوچھے۔ حضرت نے فربایا حضور ثم لنسٹلن بومنطفین النعیم فیم ہم ہے کچھ بوچھے۔ حضرت نے فربایا حضور ثم لنسٹلن بومنطفین النعیم ہم ہے کیا مراد ہے ؟ کیونکہ قیامت کے دن اس کے متعلق سوال ہوگا۔ آپ نے فربایا ابوعنیفہ من کو قیم ہے کیا مطلب ہے۔ میرے خیال میں قیم ہے مراد ہننے والی چیزیں ہیں۔ صحت بدن وریافت کیا جائے گا گر اللہ تعالی مجھے آپ پر قربان ہونے کی توفیق دے آپ سلے متعلق دریافت کیا جائے گا گر اللہ تعالی عند نے فربایا کہ آگر اللہ تعالی صد نے دن تمام خور و نوش کے سامان اور صحت و تندرستی کے متعلق سوال کرے گا تو یہ سللہ سے کہ دن تمام خور و نوش کے سامان اور صحت و تندرستی کے متعلق ہر ایک ہے سوال کیا ہوتا ہو گا۔ النعیم ہے مراو ہم اہل بیت ہیں جن کے متعلق ہر ایک ہے سوال کیا گا کیونکہ ہماری وجہ سے اللہ تعالی غنہ نے عرض کی حضور کی محمت محکمہ ہے اور بی قول کے سے امام ابوعنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے عرض کی حضور کی محمت محکمہ ہے اور بی قول

امام باقررضی اللہ تعالی عند نے فرمایا کچھ اور پوچھے 'امام صاحب والیے عرض پرواز ہوئے کہ کیا ہے ۔ کہ حضرت سلیمان علیہ السلام نے تمام پرندول میں سے صرف مدہد کو گم پاکر اس کے لیئے ۔ کہ دھنرت سلیمان علیہ السلام باقررضی اللہ تعالی عند نے فرمانے گئے اصل بات سے بھی کہ ہدہد

ک نگاہیں زمین کی تمہ تک چلی جاتی ہیں۔ وہ پانی کو زمین کے اندر سے ایسے وکھ لیتا ہے جم ہم ایک شیشے کے برتن سے تیل و کھ لیتے ہیں۔ حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی نے عرض تعالی مجم ایک شیشے کے برتن سے تیل و کھ لیتے ہیں۔ حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی نے عرض تعالی مجھے آپ کی ذات پر فدا کرے ہدید پانی کو تو زمین کی تہوں میں وکھ لیتا ہے گر زمین کی سطح ہوا جال اسے نظر نہیں آیا اور اس میں پھنس جاتا ہے۔ آپ نے فرمایا ابو حنیفہ! جب نقدیر است کرتی ہو جاتی ہو جاتی ہیں۔ اب تم پر سلام ہو' وقت کانی ہو گیا ہے اب تم میں است ہو۔

حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ اپنے شاگردوں کو لے کر چلے آئے تو حضرت السے رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے حاضرین مجلس کو بتایا۔ ابو حنیفہ کے پاس ظاہری علوم کے خزانے ہیں۔ مار پاس باطنی اور روحانی علوم کے ذخائر ہیں۔

امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو بتایا گیا کہ "عزدی" کہتا ہے کہ سیدہ عائشہ صدیقہ اللہ تعالی عنہ کو بتایا گیا کہ "عزدی" کہتا ہے کہ سیدہ عائشہ صدیقہ اللہ تعالی عنہ سفر کر لیا کرتی تھیں آپ نے پوچھا اس حدیث کا کیا جواب ہے کہ ساتھ صدیقتہ رضی اللہ تعالی عنہا تمام اہل ایمان کی ماں ہیں کیا اس حدیث کی روشنی میں تمام مسلسمات کے بیٹے اور محرم نہیں ہیں۔

عثمان بن زائدہ مالیتہ کہتے ہیں کہ ہیں ایک دن حضرت اہام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عظم مجلس ہیں بیٹھا تھا۔ ایک شخص نے دریافت کیا کہ آپ اس شخص کے متعلق کیا فرہا ئیں گے جو ایسے پیالے سے پانی پیتا ہے جس کے کنارے سونے کے بنے ہوئے ہیں اور چاندی سے مزین ہے۔ آپ نے فرمایا کوئی حرج نہیں۔ عثمان بن زائدہ کہتے ہیں کہ وہ شخص مجلس سے چلا گیا تو ہم نے عرض کی خرمایا کوئی حرج نہیں۔ آپ نے کہا ہاں 'ہم نے عرض کی فرمائیں' تو آپ فرمایا کوئی شخص شرکے کنارے سے گذر رہا ہو اسے پیاس گی ہوئی ہو اس کے پاس کوئی چیز نہیں کہ وہ نسرے پانی نکال کر اپنی پیاس دور کر سکے وہ صرف جھک کر چلو سے پانی نکال کر اپنی پیاس دور کر سکے وہ صرف جھک کر چلو سے پانی نکال سکتا ہے۔ اس نے ای طرح پانی بیٹیا شروع کیا اور اس کے ہاتھ میں چاندی کی انگو تھی ہے' اب آپ بتا میں کہ کیا اس کے لیئے پانی بیٹیا جاز ہے۔ ہم نے کہا کوئی حرج نہیں۔ آپ نے فرمایا ہمارا مسلہ بھی اس مثال کی روشی میں حل کریں۔

MU かからはなり アモのとからからではいいという

# باب بشتم المعديدة في والمناس المعربية والمناب المساورة المناس المناسبة

# امام ابوحنيفه هيء كحفقى بصيرت اوردانائي

ابراہیم بن مسلم ریٹے فرماتے ہیں کہ میں نے اپنے زمانے کے زبردست فقیہ ابوجعفر سے سنا کہ اگر امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے سامنے کوئی مشکل مسئلہ آیا اور وہ اسے حل کرنے میں فرماتے تو فرمایا کرتے جھ سے کوئی ایبا گناہ سرزد ہوا ہے جس کی شامت سے یہ مسئلہ حل نہیں فرماتے تو فرمایا کرتے ہو مسئلہ حل استغفار فرماتے، بعض او قات تازہ وضو فرما کر دوگانہ پڑھتے بھر استغفار کرتے تو مسئلہ حل مسئلہ حل مالہ تعالی کا شکر ادا کرتے، اظہار مسرت فرماتے اور کہتے اللہ تعالی نے میری توبہ قبول ہے۔ آپ کے اس طرز عمل کو فضیل بن عیاض رحمتہ اللہ علیہ نے شا تو بے پناہ روئے اور کئے اللہ تعالی امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ پر رحم فرمائے کہ وہ پاکباز اور متقی ہونے کے لئے اللہ تعالی امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ پر رحم فرمائے کہ وہ پاکباز اور متقی ہونے کے سے کام کرتے ہیں۔ پھر اس کاکیا ہوگا جس کے بے شار گناہ ہوں گے۔

خارجہ بن مصعب را لیے فرماتے ہیں کہ میں زندگی میں چار ہزار علماء کرام کو ملا ہوں اور دنیائے

اسلام میں میں چار یا پانچ کو بصیرت و دانشمندی میں نگانہ روزگار پایا۔ ان میں ایک امام ابو حفیقہ الله تعالیٰ عنه ہیں۔ آپ فرماتے ہیں جو شخص موزوں پر مسح کا قائل نہ ہو یا اس مسئلہ میں ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی ندمت کرتا ہو وہ یہ سمجھ لے کہ وہ عقل سے عاری ہے۔

## حسن فراست کی ایک مثال

حضرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے ابتدائے زمانہ میں چند شخصیات کے ہار۔

بعض الیی ہاتیں کہیں جو واقعی حرف ، محرف درست خابت ہو نیں۔ آپ نے حضرت واؤد طائی اللہ علیہ کے متعلق فرمایا آپ عباوت کے لیئے خلوت اختیار کریں گے۔ امام ابو یوسف رحمتہ اللہ جو ابھی زیر تعلیم تھے ' فرمایا آپ دنیا کے لیئے اپنی دینی علیت کو استعال کریں گے۔ اپ آیک شاگرد حضرت زفر رحمتہ اللہ علیہ کو فرمایا تم علم کلام میں ماہر بنو گے۔ ان تمام حضرات کے متعلق نے جس فراست سے فرمایا تھا و لیے ہی ہوا۔

حضرت نافع رالیج فرماتے ہیں کہ جب ہمارا قافلہ روانہ ہونے لگا تو میں نے اس شخص کو گھ کہ ترازو لیئے بیٹھا ہے اور کنے لگا۔ ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ! پہلے میرا حساب چکاؤ پھر چلے ہے۔ آپ نے فرمایا تمام مهمان اسے پائی پائی کا حساب دے دیں اور کوئی شخص کمی یا رعائت نہ مائے۔ نے اس کا حساب چکا دیا۔ ہم نے امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے بوچھا آپ نے اس کی کس عادت سے بخیل اور لئیم کما تھا؟ آپ نے فرمایا میں نے اس کی گدی میں ایک الیمی نشانی دیکھی تھی جس سے مجھے یقین ہو گیا کہ یہ نمایت ہی بخیل اور لئیم ہے۔ حضرت نافع دیا بھے فرماتے ہیں ہمیں امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی فراست پر داد دیتا پڑی۔

جربن عبدالجبار حضری رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ حضرت امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ وگوں سے برے حسن سلوک سے پیش آتے 'اپنے اصحاب و احباب سے ملتے جلتے اور اپنے قرببی وستوں کی ضروریات کا خیال رکھنے یہ آپ کی زندگی کا معمول تھا۔ میں نے آپ سے براہ کر کسی کو میں دیکھا کہ اپنے اردگرد رہنے والوں کا اتنا خیال رکھتے ہوں۔ وہ منیذ فرماتے ہیں کہ شرافت اور شائعگی میں حضرت لمام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ اپنی مثال آپ تھے۔ وہ اپنی عقل و فراست سے ہر ایک کو اپنا ہمنو ابنا لیتے۔ پھر ہر ایک پر احسانات کی بارش کرتے۔

## ایک لالچی سے امانت برآمد کرالی

حضرت بربن خنیس مولیجے فرمایا کرتے تھے کہ اگر سارے زمانے کی عقلیں جمع کر لی جا ئیں صاحب مولیجہ کی عقل کے سامنے ہیج و کھائی دیں گی۔ ایک شخص نے اپ ایک دوست کے باس برار درہم بطور امانت رکھے۔ چند د نوں کے بعد اس نے مطالبہ کیا تو اس نے انکار کر دیا۔ وہ برا برن ہوا کہ اس شخص نے کیا کیا۔ کوئی گواہ نہ تھا' وہ اپنی پریشانی لے کر حضرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ سی عنہ کے باس بہنچا اور سارا قصہ سایا۔ آپ نے فرمایا تم کی دو سرے سے بات نہ کرنا' صرف کی عنہ کے اس کا نام و بیتا بتا دیں۔ اس نے بتا دیا۔ اب حضرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے اس کی طرف ایک آدی بھیجا اور کہلا بھیجا کہ جھے امیرالمومنین ظیفہ نے بھیجا ہے' وہ چاہتے ہیں کہ سے المال کی ایسے شخص کی گرانی اور تحویل میں دے دیا جائے جو بھیموں کے مال کی حفاظت سے المال کی ایسے شخص کی گرانی اور تحویل میں دے دیا جائے جو بھیموں کے مال کی حفاظت میں رقم کی ضرورت پڑے تو فورا ممیا کر دے۔ میں نے اپنے طقہ احباب میں دریافت کیا تو میرے رقم کی ضرورت پڑے تو فورا ممیا کر دے۔ میں نے اپنے طقہ احباب میں دریافت کیا تو میرے میں نے آپ کا نام لیا اور آپ کی دیانتداری کی تعریف کی ہے۔ اگر آپ اس ذمہ داری کو سعوں نے آپ کا نام لیا اور آپ کی دیانتداری کی تعریف کی ہے۔ اگر آپ اس ذمہ داری کو سعوں نے آپ کا نام لیا اور آپ کی دیانتداری کی تعریف کی ہے۔ اگر آپ اس ذمہ داری کو سعوں نے آپ کا نام لیا اور آپ کی دیانتداری کی تعریف کی ہے۔ اگر آپ اس ذمہ داری کو

افب امام اعظم ١٩٦

قبول کریں تو میں امیرالمومنین کو آپ کا نام دے دول۔ وہ شخص یہ بات من کر پھولا نہ سایا گھر امیرالمومنین بھی امام ابو حنیفہ کی سفارش سے جھے دیانتدار ختنب فرما رہے ہیں۔ وہ گھر گھر ساک اس منصب اور انتخاب کا تذکرہ کرتا۔ اب امام ابو حنیفہ رضی اللہ تحالی عنہ نے اس شخص کو بھی تم فورا جا کر اس شخص سے اپنی امانت کے لوٹانے کا مطالبہ کرو اور باتوں باتوں میں اسے بتا دیا میرے قربی احباب میں سے ہو۔ وہ شخص اس کے پاس پہنچا اور حضرت امام دیلیے کا بتالیا ہوا جملہ کہہ دیا۔ اس نے کما فکر نہ کرو تہمارا مال میرے پاس محفوظ بڑا ہوا ہے 'چنانچہ اس کی تھیلی کا اس کے حوالے کر دی۔ اپنی امانت پاکروہ شخص دوڑا دوڑا حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی حدمت میں حاضر ہوا 'شکریہ اوا کیا کہ آپ کی سفارش اور فراست سے میرا مال ججھے مل گیا۔ وہ خوش گو آیا۔ چند دنوں بعد وہ شخص جو امانت کو ضبط کر چکا تھا۔ حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی حدمت میں ساخر ہوا ، خوال تھا کہ امام صاحب دیائیج جھے برے اعزاز واکرام سے نوازیں گئو تو کے باس آیا۔ اس کا خیال تھا کہ امام صاحب دیائیج جھے برے اعزاز واکرام سے نوازیں گئوت کے باس آیا۔ اس کا خیال تھا کہ امام صاحب دیائیج جھے برے اعزاز واکرام سے نوازیں گئوت کیا تھا۔ خوالی دلا دی ہے۔ ابنا مقصد پورا ہو گیا۔ امام صاحب دیائی دلا دی ہے۔ ابنا مقصد پورا ہو گیا۔ امام صاحب دیائی دنا کیا دکران تھا کہ بیدہ خاطر اور ماہوس ہو کر کے امیان نہ آیا کرو۔

حفرت الم ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے ایک شاگرو ابن مبارک رحمتہ اللہ علیہ ۔
واقعہ بیان کیا ہے کہ ہم ایک مرتبہ کمہ کرمہ جارہ سے 'راستہ میں قیام کیا تو ایک موٹا تازہ برازی کے بیکیا۔ سب نے فیصلہ کیا کہ آج گوشت میں سرکہ ملا کر کھایا جائے۔ لیکن سفر میں ہمارے پاس کرتن نہیں تھا جس میں یہ گوشت اور سرکہ ملایا جاسے۔ سب فکر مند تھے کہ کیا کریں' میں نے ابو حفیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے دریافت کیا۔ آپ نے فرمایا فکر نہ کرو۔ آپ نے ریت میں کھرھا کھودا' اس کے اردگرد ایک موٹا سا کپڑا بچھا ویا جس میں سے سرکہ باہر نہ فکے۔ اب سرکہ اور گوشت اس میں وال کر بھگو لیا۔ ہم سب نے اس گوشت کو پکایا اور کھایا اور امام ابو حفیفہ رضی تعالیٰ عنہ کی اس تدبیر پر عش عش کر اٹھے کہ اس ویرانے میں سفر کی حالت میں آپ کی فراست کمال کر دیا۔ آپ نے فرمایا اللہ تعالیٰ نے میں کمال کر دیا۔ آپ نے فرمایا اللہ تعالیٰ نے میں ماری خواہش کے مطابق اللہ تعالیٰ نے میں مارغ میں ایس تدبیر وال دی کہ آپ لوگوں کا مسئلہ حل ہوگیا ورنہ میں کون ہوتا ہوں یہ سب اس

<u>سر ہے۔</u>

ایک شخص نے حضرت اہام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ کی خدمت میں حاضر ہو کرعرض کی حضور میں نے ایک قیمتی چیز گھر میں رکھی تھی گر بھول گیا ہوں اس کے لیئے بڑا پریشان ہوں' آپ کوئی تدبیر کریں۔ آپ نے فرمایا یہ کوئی شرعی مسئلہ تو نہیں' میں کیا کروں۔ وہ شخص آپ کی بات من کر رونے لگا اور عرض کی حضور کوئی تدبیر نکالیں۔ میری بڑی قیمتی چیز تھی۔ آپ نے حاضرین کو کہا چلو مسئل اس کے گھر چلیں اور وہاں ہی کوئی تدبیر نکالیں۔ تمام رفقاء آپ کے ساتھ اس شخص کے گھر کے۔ آپ نے فرمایا تم لوگ بھی اپنی قیمتی چیزیں چھپا کر رکھتے ہو۔ بتاؤ آگر یہ گھر تمہارا ہو تو کس حصہ چیز چھپاؤ گئے۔ کسی نے کوئی جگہ بتائی' کسی نے کوئی جگہ بتائی' کسی نے کوئی جگہ بتائی' کسی نے ایک جگہ نشان بنایا۔ کسی کے ایک نشان رفایا۔ آپ نے بھی ایک جگہ نشان بنایا۔ کسی کے ایک نشان لگایا اور اسے کھودنے کا تھم ویا۔ چنانچہ وہاں سے ہی شخص کی قیمتی چیز بر آمد ہو گئی۔

ای طرح کا ایک واقعہ حضرت حسن بن زیاد روالیج نے بیان کیا کہ کوفے بین ایک فخض اپنا رہیں بیں دفن کر کے بھول گیا کہ کس جگہ دفن کیا ہے۔ اسے یاد نہ رہا اور وہ ایک عرصہ تک حصر کرنا رہا گراسے وہ جگہ یاد نہ آئی جہال اس نے مال دفن کیا تھا۔ بالاً خر امام ابو صنیفہ رضی اللہ عند کی خدمت بیں حاضر ہوا اور سارا واقعہ سایا۔ آپ نے فرایا بیہ کوئی فقہی مسلمہ تو شہیں ہے میں اس پر اپنی رائے دول' البتہ میرا ایک مشورہ ہے کہ تم آج ساری رات اللہ تعالیٰ کی بارگاہ میں اس پر اپنی رائے دول' بابتہ میرا ایک مشورہ ہے کہ تم آج ساری رات اللہ تعالیٰ کی بارگاہ میں صادق تک نوافل پڑھ رہا تھا کہ اسے وہ جگہ یاد آگئ میں اس نے اپنا مال دفن کیا تھا۔ نوافل چھوڑ کر حضرت امام روالیج کی خدمت بیں حاضر ہوا کہ حضور اس نے اپنا مال دفن کیا تھا۔ نوافل چھوڑ کر حضرت امام روالیج کی خدمت بیں حاضر ہوا کہ حضور سے اپنا مال می اور وہ جگہ یاد آگئ جہاں میں کرنے دے گا۔ لیکن اچھا ہو تا کہ یاد آنے کے باوجود بھی تم شیطان مجھے ساری رات عبادت نہیں کرنے دے گا۔ لیکن اچھا ہو تا کہ یاد آنے کے باوجود بھی تم شیطان کچھے ساری رات عبادت نہیں کرنے دے گا۔ لیکن اچھا ہو تا کہ یاد آنے کے باوجود بھی تم شیطان کچھے ساری رات عبادت کرتے۔

ابن معین مطیح فرمایا کرتے تھے کہ امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ استے صاحب بصیرت تھے اسے کے سامنے کوئی شخص جھوٹ نہیں بول سکتا تھا۔ ابن مبارک رحمتہ اللہ علیہ نے آپ کی سامنے کوئی شخص جھوٹ نہیں بول سکتا تھا۔ ابن مبارک رحمتہ اللہ علیہ نے آپ کی سے اور اپنی تحریروں میں بردی مثالیں بیان کی ہیں۔ امام

اقب امام اعظم الم

ابوبوسف رایٹیہ فرماتے ہیں کہ مجھے ہزاروں اہل علم کی صحبت میں بیٹھنے کا موقعہ ملا مگر میں کے 🖚 ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ جیسا صاحب بصیرت کسی کو نہ پایا۔ آپ نے ایک چھوٹا سا مشاہدہ سات ب کہ حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ جب گھرسے باہر نکلتے تو اپنے جوتوں کے تھے وہ درست فرما لیا کرتے ' آپ اکثر موزے بہنا کرتے تھے۔ مگر مجال ہے کہ کوئی تسمہ ڈھیلا ہویا ا ہو۔ حضرت عبداللہ بن مبارک نے اپنے مشاہرے سے بہت ی چھوٹی چھوٹی باتیں بھی نقل کی ہے جس سے حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنه کی بصیرت اور عقلندی ظاہر ہوتی ہے۔ ابو بدر رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ کوفہ میں ایک بخیل شخص تھا اس نے ایک ہزارہ جمع کر کے صندوق میں رکھے اور اسے باہر ایک جنگل میں وفن کر آیا۔ چند ونوں بعد کسی نے اس د فن شدہ صندوق نکالا اور لے گیا۔ اے جب علم ہوا تو وہ اس غم سے نڈھال ہو گیا اور کئی دنول 💹 یڑا رہا۔ اس کے ہمائے نے اسے کما کہ تم امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے پاس چلے جاؤ کے ضرور کوئی راستہ بتائیں گے۔ شاید تحقیح اپنا کھویا ہوا مال مل جائے۔ وہ حفرت ریافیے کی خدمت 🚅 حاضر ہوا اور کہنے لگا میں اللہ تعالیٰ سے مدد چاہتا ہوں مگر اس سلسلہ میں آپ کی راہنمائی کی ضورت ہے۔ حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ اس کے ساتھ اس جنگل میں گئے جہاں اس نے مال 📠 كيا تھا وہاں چند مزدور كھيت سے كھنبياں نكالنے ميں مصوف تھے۔ آپ نے ان سے اس تمنارے ساتھ کوئی اور مزدور بھی کام کرتا ہے ؟ انہوں نے کما ہاں فلاں آدمی جارا ساتھی ہے ، گر كهنبيان نكال كرچلاكيا ب- انهول نے بناياكہ اس كانام " زر زر" ب اور وہ فلال محلے كے ايك

مع بین رہتا ہے۔ امام صاحب اس بخیل آدی کو لے کر اس جمام میں گئے ، جمام کے مالک کو پوچھا۔ حمام میں رہتا ہے۔ امام صاحب اس بخیل آدی کو لے کر اس جمام میں گئے ، جمام کے مالک کو پوچھا۔ آپ اس شخص کو جانتے ہیں جس کا نام زر زر ہے ؟ اس نے بتایا وہ فلال جگہ رہتا ہے۔ آپ والد گئے تو اسے وہاں بیٹھایلیا آپ نے اسے علیحدہ لے جاکر کھاکہ تم وہ صندوق نکال دو جو تم نے سے

جگہ سے نکالا تھا۔ تہمیں نکالتے ہوئے اور گھر تک لاتے ہوئے جس نے دیکھا ہے وہ مخض میں ہمارے پاس موجود ہے۔ آپ کی بات سن کر اس مخص کا رنگ فک ہو گیا اور ہلکی ہلکی باتیں کرنے گا اور اللہ معنور ہے۔ آپ کی بات سن کر اس مخص کا رنگ فک ہو گیا اور ہلکی ہلکی باتیں کرنے گا

اور اقرار کیا حضور وہ صندوق میرے پاس ہے۔ میرے اس پر پچاس ساٹھ درہم خرچ ہو گئے ہیں گے نے فرمایا اچھاتم اسے مالک کو واپس کر دو وہ پچاس ساٹھ درہم کا مطالبہ نہیں کرے گا۔ چنانچہ وہ افعا \_\_\_\_\_ رکھ کے ڈھیر میں سے وہ صندوق نکال لایا اور امام صاحب مایفید کو دے دیا۔ آپ نے مالک کے حالے کر دیا۔

# الم مالک مالی مالی علی کے متعلق ایک پیشین گوئی

کسی نے امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے بوچھا آپ کو مدینہ منورہ کے بچے کیسے گھ؟

نے فرمایا ان میں ایک بچہ اشقرازرق ہے۔ میں اسے " ابوالمحان " کہتا ہوں۔ (وہ بڑے ہو کر کسی اللہ تعالیٰ عنہ کے نام سے مشہور ہوئے۔) حقیقت یہ ہے کہ یہ بچہ جے حضرت من اللہ تعالیٰ عنہ نے نام سے مشہور ہوئے۔) حقیقت یہ ہے کہ یہ بچہ جے حضرت من اللہ تعالیٰ عنہ نے " ابوالمحان " کہا تھا بڑا ہو کر عالم اسلام میں علم و فضل کا آفاب بن معاصرین سے بازی لے گئے۔

ہم یماں علامہ دار قطنی کی فراست کا ایک واقعہ نقل کرتے ہیں کہ آپ نے مصر کی گلیوں کے چوں کو کھیا تو در مایا ان بچوں میں مجھے ابن سعید ازدی ابھر تا ہوا نوجوان و کھائی دیتا ہے۔ یہ کی سعید تھے جو آگے چل کر حافظ عبدالغنی کے نام سے مشہور ہوئے تھے اور حدیث کے متعلق ماصل کیا اور حفظ الانساب والغرائب میں نام پایا۔

#### احتی کی ایک علامت

حضرت امام ابوطیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا جو شخص فورا ہر بات حفظ کر لیتا ہے وہ ہوا مام طور پر لیے قد کا آدی احمق ہوتا ہے' گراگر کوئی لمبا آدمی عقلند ہو تو بڑا ہی عقلند موتو بڑا ہی عقلند ہوتو بڑا ہی عقلند محرت لمام ابوطیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ ایک بار ابن ھبیرہ کے ہاں تشریف لے گئے ابن امیر کوفہ تھے' اس وقت ان کے پاس ایک ایبا آدمی بیٹھا ہوا تھا جس پر لوگوں نے بہت بڑے کی تھت لگائی تھی' اے ابن ھبیرہ قتل کی وحمکیاں دے رہے تھے۔ اس نے دیکھا کہ ابن میں اللہ تعالیٰ عنہ کی بڑی عزت کی ہے تو کئے لگا یہ شخ مجھے اچھی طرح میں۔ ابن ھبیرہ نے بوجھا حصرت آپ اس شخص کو جانتے ہیں ؟ آپ نے فرمایا یہ تو وہی ہے ابن ھبیرہ نے لاالہ الماللہ' اس نے کما ہاں! وہی شخص ہے۔ آپ نے فرمایا یہ تو وہی ہے۔

اچھا اذان سناؤ تا کہ میں تمہاری آواز پہچان لوں۔ اس نے پوری اذان سنائی تو حضرت امام ابوسے رضی اللہ تعالیٰ عند نے کہا میہ اچھا آدمی ہے اسے پچھوں اللہ تعالیٰ عند نے ابن هبیرہ نے اسے پچھوں اور مقدمہ سے بری کر دیا۔ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے اذان اس کیئے سنی کہ وہ اللہ سول کی شمادت وے اور بھی شمادت اس کی رہائی کا ذریعہ بن گئی۔

#### قاضی بنے سے انکار

عبدالجبار بن عبداللہ ظیفہ وقت کا مصاحب تھا وہ حضرت سفیان ٹوری' حضرت معر' حسیہ شریک بن عبداللہ نخصی اور امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو لے کر وربار میں عاضر ہوا۔
ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے اپنے ان ساتھیوں کو کما کہ میں اپنی جان چھڑائے کے لیئے کوئی تھا۔
نکالوں گا۔ تم لوگ بھی کوئی نہ کوئی حیلہ ذہن نشین کر لو۔ سفیان ٹوری مطفیہ تو راستے ہی بی گئے۔
معر نے خلیفہ منصور کے سامنے اپنی بزدلی کا اظہار کر کے خلاصی حاصل کرئی۔ البتہ شریک عفی پھنس گئے۔ مسعر نے جاتے ہی ظیفہ منصور سے مصافحہ کیا اور اسے پوچھنے گئے آپ کا کیا۔
عفی پھنس گئے۔ مسعر نے جاتے ہی ظیفہ منصور سے مصافحہ کیا اور اسے پوچھنے گئے آپ کا کیا۔
عنی کونڈیوں اور کنیزوں کا کیا حال ہے' آپ کے جانوروں' گھوڑے اونٹ کس حال میں چھے آپ منصب قضاہ ضرور عنایت فرما دیجتے میں آپ کے تمام جانوروں کو سیدھا کر دوں گا۔ خیسے نے یہ ساتو کما پاگل آدی ہے پسرے دار کو حکم دیا کہ اسے باہر نکال دو۔
منصور نے حضرت لیام اعظم ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو بلایا آپ کے سامنے منصب شیش کیا تو آپ نے فرمایا اسے خلیفہ! میرا نام نعمان بن ثابت ہے' میرا باپ کوفہ کے کوچہ و بازار پھٹی کیا تو آپ نے فرمایا اسے خلیفہ! میرا نام نعمان بن ثابت ہے' میرا باپ کوفہ کے کوچہ و بازار پھٹی کیا تو آپ نے فرمایا اسے خلیفہ! میرا نام نعمان بن ثابت ہے' میرا باپ کوفہ کے کوچہ و بازار پھٹی کیا تو آپ نے فرمایا اسے خلیفہ! میرا نام نعمان بن ثابت ہے' میرا باپ کوفہ کے کوچہ و بازار پھٹی کیا تو آپ نے قرابی اسے خلیفہ! میرا نام نعمان بن ثابت ہے' میرا باپ کوفہ کے کوچہ و بازار پھٹی کیا تو آپ نے نام نام نظام تھا۔ ایل کوفہ کے کوچہ و بازار پھٹی کیا تو آپ کیا تھا۔

پی کیا تو آپ نے فرمایا آے قلیفہ! میرا نام تعمان بن فابت ہے میرا باپ کوفہ کے لوچہ و بازار ہے کو ٹریاں بیچا کرنا تھا اور غلام تھا۔ الل کوفہ کو یہ بات گوارا نہیں ہوگی ایک مفلوک الحال موالی کے ہے کو قضا کی مند پر بیٹھے دیکھیں گے اور اس کے فیصلے کیے قبول کریں گے۔ فلیفہ نے کہا یہ بات درست ہے۔ آخر میں شریک آگے برھے اور فلیفہ سے گفتگو کرنے گئے تو فلیفہ نے کہا چپ مصاب آپ کے علاوہ کوئی الیا عالم دین نہیں ہے جے میں اس عمدے پر فائز کر سکوں۔ شریک نے مصنور! مجھے نسیان کا مرض ہے میں بات کر کے بھول جاتا ہوں۔ فلیفہ نے کہا نسیان کا علاج لوبان سے استعمال کیا کرو۔ انہوں نے بھر کہا حضور میں کمزور اور ست آدمی ہوں' فلیفہ نے کہا آپ کے استعمال کیا کرو۔ انہوں نے بھر کہا حضور میں کمزور اور ست آدمی ہوں' فلیفہ نے کہا آپ کے استعمال کیا کرو۔ انہوں نے بھر کہا حضور میں کمزور اور ست آدمی ہوں' فلیفہ نے کہا آپ کے

لیے طوہ تیار کیا جائے گا جے کھا کر تکررست ، چاک و چوبند ہو جاؤ گے۔ مند قضاء پر بیٹے سے پہلے کھا لیا کو ، کوئی سستی نزویک نہیں آئے گی۔ شریک نے کہا میں ہر آنے جائے والے پر اپنا فیصلہ سلط کر دیتا ہوں خواہ وہ میراکتنا قریبی ہی کیوں نہ ہو۔ خواہ میرا بیٹا ہی ہو ، میں اپنی ذات سے بھی سے فیصلہ نہیں روکتا۔ اس طرح آپ کی حشمت اور مقام مجروح ہوگا۔ خلیفہ نے کہا مجھے منظور ہے تم اینے فیصلوں میں کلی طور پر آزاد ہو ہم دخل نہیں دیں گے۔

مند قضاء پر بیٹے ہی شریک کے سامنے جو مقدمہ سب سے پہلے پیش ہوا۔ وہ شاہی گھرانے کی ایک خوبصورت کنیز کا تھا۔ دو سرا فریق بھی عدالت میں موجود تھا، وہ کنیز چو نکہ شاہی ماحول کی تھی ہو آگے بردھ کر قاضی شریک کے پہلو میں جابیٹی۔ قاضی شریک نے کہا اے بدبودار عورت! یہاں سے اٹھ کر دور ہو جاؤ اور اپنے قبیلہ کے لوگوں کے ساتھ جاکر کھڑی ہو جاؤ۔ کنیز نے کہا یہ بوڑھا سے می تو بردا احمق ہے۔ قاضی شریک نے کہا میں نے تو پہلے ہی خلیفہ سے کہہ دیا تھا کہ میں کسی کالحاظ سے کروں گا۔ یہ کنیز خلیفہ وقت کی خاص کنیز تھی۔

# امام الوحنيفيه التصفيحية كي قيافيه كي باتيس

محد بن ابراہیم میلید فرماتے ہیں کہ ایک دن حضرت امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی مجلس چند احباب بیٹھے ہوئے تھے وہاں سے ایک شخص گزرا آپ نے اس پر ایک نگاہ غلط انداز ڈالی تو سے نے اپنے احباب کو فرمایا۔ یہ شخص "مسافر" ہے۔ پھر فرمایا 'اس کی جیب میں "مٹھائی " ہے۔ مرایا 'یہ بچوں کا "استاد" ہے۔ امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی یہ ساری باتیں سن کر آپ کے مروں نے عرض کی حضور! کیا آپ اس شخص کو جانے ہیں؟ آپ نے فرمایا 'نہیں' میں تو صرف سے سے یہ بات کمہ رہا ہوں۔ ایک شخص اٹھا اس نے اس جائے والے کا پیچھاکیا اور اسے جالیا۔ ویکھا کہ تم کون ہو؟ اس نے کما ہیں ایک مسافر ہوں۔ اس نے کما تمماری جیب میں کیا ہے؟ اس میں ستاد

ہوں۔ وہ شاگرد حضرت کی مجلس میں واپس آیا اور عرض کی حضور آپ کی ایک ایک ہات درست محل مگر حیرت ہے کہ آپ اسے جانتے تک نہیں مگر اس کے متعلق میہ ساری معلومات کس طرح بیان کر دیں؟

آپ نے فرمایا 'جب میں نے اسے یماں سے گزرتے دیکھا تو وہ دائیں ہائیں دیکھ رہا تھے۔
مجھے خیال آیا یہ مقامی آدمی نہیں یہ مسافر ہے جو ادھر ادھر نظریں دوڑائے چلا جا رہا ہے۔ پھر میں ہے
دیکھا کہ اس کے ارذگرد محمیاں منڈلا رہیں ہیں تو مجھے محسوس ہوا ضرور اس کے پاس کوئی میٹھی ہے
ہے۔ بھر میں نے دیکھا کہ وہ گلی میں کھیلتے ہوئے چھوٹے بچوں کو بڑی دلچیں سے گھور گھور کر دیکھیا
ہے، میں نے یہ نتیجہ افذ کیا کہ یہ بچوں کا استاد ہے۔

#### علم كاصله ملتاب

کوفہ میں ایک دن یہ انواہ اڑائی گئی کہ حضرت امام ابوبوسف ویلیے فوت ہو گئے ہیں۔ یہ بلت حضرت امام ابوجنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ تک پہنی تو آپ نے فرمایا۔ ابوبوسف فوت نہیں ہوئے یہ حضرت امام ابوجنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ تک پہنی تو آپ یہ بات کیوں نہیں مانے؟ آپ نے فرمایا کہ اللہ ابوبوسف نے علم کی بے پناہ خدمت کی ہے۔ گر اسے ابھی تک اس کا پھل نہیں ملا' ان کی علمی کوششوں کا انہیں صلہ نہیں ملا۔ اللہ تعالیٰ کسی کے علم کو بے ثمر نہیں کرتا۔ وہ جب تک اپ علمی کوششوں کا انہیں صلہ نہیں ملا۔ اللہ تعالیٰ کسی کے علم کو بے ثمر نہیں کرتا۔ وہ جب تک اپ علمی پولوسف کھل حاصل نہیں کر لیس کے فوت نہیں ہو سکتے۔ واقعی یہ خبر غلط نگی۔ اور حضرت قاضی ابوبوسف ویلئے نے اپ علمی کی خدمات سے بھرپور قائدہ اٹھایا اور اللہ تعالیٰ نے ان کو بہت بڑا صلہ دیا کہ وہ تھیں خوش اور خوشحال ہو گئے۔ وہ جوانی میں سلطنت عباسہ کے قاضی القصاۃ (چیف جسٹس) مقرم ہوئے۔ آپ نے بڑے بڑے تک دینی لحاظ سے مشعل راہ ہیں۔ جب وہ فوت ہوئے تو ان کے پاس سات سو رکاب سونا وریہ میں موجود تھا اور اپنے منصب کے اعتبار سے سارے علم اسلام میں مسلم فقیہ کی حیثیت سے زندہ رہے۔

## ستو اوریانی کا مشکیزه

حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ خود بیان کرتے ہیں کہ مجھے ایک سفر میں جنگل ا

کے بابان سے گزرتا پڑا۔ جھے بیاس کی تو کس سے بانی نہ ملا۔ ایک اعرابی (جنگلی) کے باس بانی کا مسیرہ قلد میں نے اس سے ایک بیالہ بائی مانگا گراس نے انکار کر دیا اور کما کہ قیمت اوا کو چنانچہ سے نے سارا مکیرہ پانچ ورہم میں میرے ہاتھ فروخت کر دیا۔ میں نے رعایت کے لیئے بار بار کما گر سے کوئی رعایت نہ کی۔ آخر میں نے اس سے بانی کا مشیرہ خرید کر رقم اس کے حوالے کر دی۔ موڑی دور جا کر میں نے اس کہ بھائی میرے پاس ستو بین تم کھاؤ گے۔ اس نے کماکیوں نہیں کو اس نے ستو لیئے اور بڑی سے نے اپنے شاگردوں کو کما شکر ملا کر اسے ستو کا ایک پیالہ دے دو۔ اس نے ستو لیئے اور بڑی سے کھانے لگا ،چند کموں بعد اسے بیاس گی اور کھنے لگا جھے سخت بیاس گی ہے جھے بانی دو۔ مرت امام ابو حفیقہ رضی اللہ تحالی عنہ نے فرمایا 'میں تو یہ بانی فروخت کروں گا تم نے خریدتا ہے تو سے بیالے کے لیئے بانچ درہم نکالو۔ وہ بمت اصرار کرتا رہا آپ نے کما نہیں ' ایک بانی کا بیالہ بانچ کی ہے اس میں گئے درہم ہی لوں کے اب وہ نمایت کی بائے درہم ہی لوں کے اب وہ نمایت تک آگیا۔ میرے پاس بار بار آتا اور رعایت کے لیئے کتا۔ میں نے اسے کما نہیں کوں گئے رعایت نہیں کروں گا۔ اس نے مجور ہو کربانچ ورہم دیے اور بانی کا ایک پیالہ خریدا۔ اب بانچ کی رعایت نہیں کروں گا۔ اس نے مجور ہو کربانچ ورہم دیے اور بانی کا ایک پیالہ خریدا۔ اب بانچ کی رعایت نہیں والی آگا اور رعایت کے لیئے کتا۔ میں نے اسے کما نہیں ہی گئے رعایت کربی میرے باس والیں آگا اور بانی کا مشکرہ بھی۔

میرے بیر اشعار ملاحظہ فرمائیں ۔

لا بى حنيفة ذى الفخار مناقب صفى الشريعة باجتهاد صائب اعلته همة علمه حتى اعتلى وجلوه معتذر ابلمحة فكره

مثل الحصاجلت عن الاحصاء افر عاف كل شريعة كدراء ظهر السماك و غارب الجوزاء بزلاء كل شرودة عذراء

> هبت رياح علومه فتبد دوا مثل الجراد بهبة النكباء

(ترجمه) " حضرت امام ابوصنيف رضى الله تعالى عنه ك مناقب ريت ك ذرول كى طرح ب

شار ہیں۔ وہ شریعت کی روشنی میں صاف ستھرا اجتہاد کیا کرتے تھے حالانکہ اس وقت شریعت کے مسامل بیان کرنے میں لوگوں کو بردی مشکلات کا سامنا تھا۔ آپ اپنے علم و فضل کی بلندیوں پر جو ال ہم پالیہ تھے اور تحقیق کی مرائیوں میں تحت الثریٰ تک نگاہ رکھتے تھے۔ جب آپ کے علوم کی موائيس چليس تو ساري ونيا سرسبرو شاداب مو گئي-" Belleville Walle \*\*\*\* Belleville Sale REMARKS STREET, E. \*\*\* INTRESTURY とうころとは、これは、一本本のいてことがらいたがないは していませんしているないとはいうとうないとうしていしてい

## باب تنم

# امام الوحنيفة كأتقوى

حضرت عبداللہ بن المبارک رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ میں نے حضرت امام سفیان توری رحمتہ اللہ علیہ ہے کہا کہ ہم نے بھی امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے اپنے مخالفین کا گلہ یا غیبت میں سن۔ آپ نے فرمایا یہ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی دانشمندی اور علمی بلندی ہے۔ انہیں یہ پند نہیں کہ ان کی نیکیاں ان کے مخالفین کے نامہ اعمال میں درج ہوں۔ جدیث پاک میں ہے کہ جس کا گلہ کیا جائے اس کے نامہ اعمال میں گلہ کرنے والے کی نیکیاں لکھ دی جاتی ہیں۔

کسی نے برید بن ہارون بیائیہ سے سوال کیا کہ انبان کب فتوی دینے کے قابل ہو تا ہے؟

اپ نے فرمایا، جب امام ابوطیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے مقام کو پہنچ جائے۔ راوی کہتے ہیں کہ میں نے یہ بات من کر کہا، ابو خالد! آپ بھی ایسا کہتے ہیں؟ (برید بن ہارون ظاہری طور پر امام ابوطیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے علم کے قائل نہیں تھے) انہوں نے فرمایا، اس سے بڑھ کر میرے پاس الفاظ میں ورنہ میں اس سے بھی بڑھ کر بات کر آ۔ آج وئیائے اسلام میں امام ابوطیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ جیسا کوئی فقیہ نہیں ہے اور نہ ہی آپ جیسا پاک باز عالم دین نظر آ تا ہے۔ میں نے آپ کو ایک وان تیز دھوپ میں ایک مخص کے مکان کے پاس کھڑے ویکھا۔ میں نے عرض کی آپ اس دیوار کے سایہ میں آجا کیں۔ آپ نے فرمای میں اس کی بیس اس کی ہو آب ہو کہ مور کا جواز پیدا نہیں کر سکتا۔ حضرت یوسف بن ہارون راہے فرماتے ویوار کے سایہ میں کو اور زیدا نہیں کر سکتا۔ حضرت یوسف بن ہارون راہو کے فرماتے ویوار کے سایہ میں کو احداد راتھوٹی کیا ہو سکتا ہے۔

یکیٰ بن ابی زائدہ رحمتہ اللہ علیہ بھی آپ کا ایک ایما ہی واتعہ بیان کرتے ہیں کہ میں نے ایک دن حصرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے عرض کی کہ میں آپ سے اس خدائے قدریر کی

Partition -

قتم دے کر دریافت کرتا ہوں کہ آپ نے شدید گرمی اور دھوپ میں اس مخص کے مکان کی دیوار کے سابہ میں اس مخص کے مکان کی دیوار کے سابہ میں کفڑے ہوئے ہوں کے سابہ میں کھڑے ہو کر فائدہ اٹھاؤں تو یہ آیک قتم کا سود ہے ہو کر فائدہ اٹھاؤں تو یہ آیک قتم کا سود ہے ہیں میرا اپنا فیصلہ ہے اور میری اپنی ذات کے لیئے ہے ، عوام کے لیئے یہ فتوی نہیں ہے۔

یکی بن الفظان رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ ہم ایک دن حضرت امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ کی مجلس میں بیٹے ہوئے تھے اور آپ کی ہاتیں سن رہے تھے۔ میں آپ کے چرے پر نظر ڈالٹا آ تکبریا خود نمائی کی بجائے بھے آپ کے چرے پر اللہ تعالی کا خوف اور ڈر محسوس ہو تا۔ اس طرح کچی سن معین رافیجہ سے لوگوں نے امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ کے متعلق بوچھا تو آپ نے فرمایا امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ کے متعلق بوچھا تو آپ نے فرمایا امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ کے متعلق بوچھا تو آپ نے فرمایا امام ابو حقیقہ رضی اللہ تھے بلکہ ثقتہ فی فقہ بھی تھے۔ خدا کی تشم وہ بست بوے متحق تھے۔ وہ از روئے قدر و منزلت بہت بلند پایہ تھے۔ انہی سے جب امام ابو یوسف رافیج کے بارے میں یوچھا گیا تو آپ نے فرمایا۔ وہ "صدوق "بہت سے بزرگ ہیں۔

حضرت قاسم بن معن بن عبدالرحل بن عبدالله بن مسعود رحمته الله عليهم سے لوگول فے دریافت کیا کیا آپ باین علم و فضل امام ابو حفیفه رضی الله تعالیٰ عنه کا غلام بنتا بهند کریں گے ؟ آپ نے فرمایا ' حفرت امام ابو حفیفه رضی الله تعالیٰ عنه سے بڑھ کر کوئی علمی شخصیت نہیں ہے۔ حضرت قاسم دیائی نے فرمایا ' تم میرے ساتھ ایک بار حضرت امام ابو حفیفه رضی الله تعالیٰ عنه کی مجالس میں چلو تو ساری زندگی ان کے غلام بے دام بن کر رہو گے۔ واقعی ایسا بی ہوا ' آپ نے ساری عمر آپ کے ساتھ گزاری ' آپ جیسا بلند پایہ فقیه کمیں میسر نہیں آیا۔ آپ فرمایا کرتے تھے۔ امام ابو حفیفه رضی الله تعالیٰ عنه حلیم بھی ہیں ، متقی بھی ہیں اور سخی بھی ہیں۔

ت حضرت ابو عوانہ ریلیے فرماتے ہیں میں ایک دن حضرت لمام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی خدمت میں بیٹا ہوا تھا، آپ کی خدمت میں ایک شخص آیا اور عرض کی کہ کوفہ کے گورز نے ایک شخص کے بارے میں مسئلہ بوچھا ہے کہ جس شخص نے کھجور کا شیرہ چوری کیا ہو تو اس کی کیا سزا ہے؟ آپ نے گورز کو لکھا کہ ایسے شخص کا ہاتھ کاٹ دیا جائے۔ میں نے کہا سجان اللہ! کیا آپ نے حضرت دافع بن خوری وضی اللہ تعالیٰ عنہ کی حدیث نہیں سی کہ چھل کی چوری میں قطع یہ نہیں ہے۔ حضرت دافع بن نہیں گ

اور اس طرح تھور کی چوری میں بھی ہاتھ نہیں کانا جائے گا۔ آپ نے حدیث من کر اپنا فیصلہ واپس کے لیا اور خط میں لکھا کہ اس کا ہاتھ نہیں کانا جائے گا۔

#### عالم اسلام كاسب سے بردا فقیہ

عبداللہ بن مبارک رحمتہ اللہ علیہ کوفہ میں پہلی ہار آئے تو آپ نے لوگوں سے پوچھا کہ اس شہر میں سب سے برا عالم دین اور فقیہ کون ہے ؟ لوگوں نے امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کا نام لیا۔ یمی روایت دو سرے الفاظ میں بھی آئی ہے کہ حضرت عبداللہ بن مبارک دایلی نے دریافت کیا اس شہر میں سب سے برا فقیہ اور متقی کون ہے ؟ لوگوں نے حضرت امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کا نام لیا۔ اس وقت کے ایک بہت برے فقیہ کی بن ابراہیم فرماتے ہیں کہ میں کی سال کوفہ میں رہا جھے امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے بردے فقیہ کی بن ابراہیم فرماتے ہیں کہ میں کی سال کوفہ میں رہا جھے امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے بردھ کر کوئی فقیہ اور متقی نہیں ملا۔

#### کاروباری دیانت داری کی ایک مثال

مفص بن عبدالرحل حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے کاروبار میں شریک اور حصہ وار تھے۔ آپ نے انہیں کپڑا بیچنے کے لیئے کی دو سرے شرمیں بھیجا اور ساتھ ہی بتا دیا کہ اس کپڑے میں " فلاں فلاں " فقص ہے۔ کپڑا ہینے سے پہلے تم نے گاہوں کو بتانا ہے کہ اس کپڑے میں سے عیب ہے۔ حفص بن عبدالرحلٰ نے کپڑا تو بیج دیا گرگاہوں کو کپڑے میں نقص سے آگاہ نہ کیا۔ جب امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو اس غلطی کا علم ہوا تو آپ نے اس کپڑے کی ساری قیمت غریبوں میں صدقہ کردی۔

حفص بن غیاف فرماتے ہیں جو سامان غلطی سے بکا اس کی قیمت تمیں ہزار درہم تھی۔ اتنی بڑی رقم حضرت امام ابو حنیفہ مرضی اللہ تعالیٰ عند نے صدقہ کر دی اور دنیاوی نقصان کی پروا نہ کی اور اس کے بعد انہیں اپنے کاروبار سے علیحدہ کردیا۔

یاد رہے اس واقعہ میں حفص کا نام آتا ہے یہ دونوں حفص علیحدہ علیحدہ شخصیت تھیں۔ ایک حفص بن عبدالر حمٰن آپ کے حصہ دار اور شریک کاروبار تھے اور دو سرے حفص بن غیاث مرائیر آپ کے علوم فقہ میں معاون تھے اور یہ اپنے وقت کے بہت بروے فقیہ اور باکمال عالم دین تھے۔ وہ خلافت عباسیہ میں امام ابوبوسف رائیر سے پہلے چیف جسٹس (قاضی القفناۃ) کے عمدے پر نامزد تھے۔ ان کی معزول کے بعد امام ابوبوسف رائیر کو قاضی القضاۃ مقرر کیا گیا تھا۔

کاروبار میں کو تاہی کے اس واقعہ میں حضرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنه کی احتیاط کا سے
عالم تھا کہ امام حارثی نے اپنی کتاب " ا کشف " میں تفصیل کے ساتھ اس واقعہ پر روشنی ڈالی ہے
اور جایا ہے کہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے اپنے شریک کاروبار کو صرف اس بے احتیاطی کی
وجہ سے علیمدہ کر دیا تھا اور کاروبار کے تمیں ہزار درہم خیرات کروئے تھے۔

### امين شهر

خلیفہ عبای جعفر منصور نے حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو دربار میں بلا کر تمیں ہزار درہم دیئے اور کہا اس امانت کو اپنے گھر میں رکھ دیں۔ آپ نے فرمایا میں بغداد میں ایک مسافر کی حیثیت سے قیام پذیر ہوں' میں اس امانت کی حفاظت نہیں کر سکوں گا۔ آپ اسے بیت المال میں رکھ دیجئے۔ خلیفہ نے آپ کی بات مان لی گرجب امام ابو حنیفہ رضی اللہ تحالی عنہ کا انتقال ہوا تو آپ کے گھر سے کئی غریب لوگوں کی امانتیں ملیں' تو خلیفہ نے کہا امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے ہمیں دھوکے میں رکھا۔ وہ تو بہت بڑے "امین " تھے۔

قیں بن الربیع کہتے ہیں کہ حضرت امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ بہت بڑے نقیہ اور محقّ تھے۔ آپ سے بہت علماء حمد کیا کرتے تھے' اگرچہ آپ کے پاس جو ضرورت مند آ آ اسے احسان و مروت کے ساتھ لوٹاتے تھے۔ اہل علم اور طلباء کو انعام و اکرام سے نوازتے تھے۔ آپ اپنے زمائے کے ذہین ترین اور عقل مند انسان تھے۔

یزید بن ہارون ریٹھ فرماتے ہیں کہ میں نے زندگی بھر امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے بردھ کر عقل مند انسان نہیں دیکھا۔ وہ اعمال میں افضل اور کردار میں متقی تھے۔ میں نے بزاروں علمائے کرام سے علم حاصل کیا کین میں نے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے بردھ کر معلم کہیں نہیں بلا۔ انہیں اپنی زبان پر اتنا قابو تھا کہ ایک لفظ بھی فاکدے سے خالی نہ لکھا تھا۔ ابن عیب

فرماتے ہیں کہ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے زمانے میں آپ سے بردھ کر افضل انسان کوئی نہ تھا اور نہ ہی ہم نے آپ سے بردھ کر کسی انسان کو متقی اور فقیہ دیکھا۔

علی بن خشرم کی روایت ہے کہ ابن عیدنہ نے فرمایا کہ میں نے امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے بردھ کر کسی کو زیادہ متقی نہیں دیکھا۔ اسی طرح ابراہیم بن عکرمہ مخزومی فرماتے ہیں کہ امام بوطنیفہ سے بردا پرہیزگار سارے عالم اسلام میں دوسرا نہیں دیکھا۔ عمر بن ذر فرماتے ہیں کہ امام بوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ عدل و انصاف کی مثال تھے۔ امام ابوبوسف رحمتہ اللہ علی فرماتے ہیں کہ جس مجلس علماء میں حضرت امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ موجود ہوتے بوائے علم ورع اور بھیرت کی وجہ سے سب پر حاوی ر جرد۔

حسن بن عمارہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے مخالف تھے اور جمال جاتے آپ کے الله على المنظورة ايك بار خليفه وقت في كوفه ك تمام علاء كرام كواي دربار من طلب كيا اور ان کے سامنے ایک مسئلہ رکھا۔ تمام علماء کرام نے اس مسئلہ پر اپنی رائے دی مگر خلیفہ نے اسے غلط قرار وا۔ صرف حسن بن عمارہ نے اس مسلمہ کو اس حسن و خوبی اور صحت سے پیش کیا کہ تمام علمانے تعلیم کیا۔ حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عند نے فرمایا اس میں کوئی شک نہیں کہ حسن بن عمارہ فے سلم صحیح بتایا مگران سے ایک غلطی ہو گئی ہے۔ حسن بن عمارہ کہنے لگے یہ ایک مجلس مناظر کا تھی اور خلیفہ عباسی کا دربار تھا اگر امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ اٹھ کر میری غلطی اور خطاء پر گرفت کرتے تو مجھے کہیں کا نہ چھوڑتے مگر انہوں نے خاموش رہ کر میری عزت بچالی۔ وہ ایک پیزگار انسان ہیں اس لیئے وہ اپنے مخالفین کو بھی شرمندگی سے محفوظ رکھتے ہیں۔ اس واقعہ کے بعد الم ابوصنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے راضی ہو گئے اور جہاں جاتے آپ کی تعریف کیا کرتے اور امام معنی رضی الله تعالی عنه کے علم و فصل کی قدر کرتے۔ محمد بن خزیمہ رحمتہ الله علیہ فرماتے ہیں کہ س وجہ ہے وہ اہلحدیث جو حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے مخالف ہیں حسن بن عمارہ کو " معن الديث "كت بين- وه آب كو صرف اس ليئ "ضعف الحديث "كت بين كه وه امام ابوحنيفه ر من الله تعالی عنه کے مداح تھے۔

ای واقعہ کو سل بن مزاحم را لیے نے ایک جگ لکھا ہے کہ خلیفہ کے وربار میں اس مسلم بر

علم ذكام د د حد كم كرة المراجة من المراجة المر

علائے کرام نے زبردست بحث کی۔ آخر امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عند کی رائے سب کے لیئے تھے۔ تشکیم تھی۔ حسن بن عمارہ آپ کی رائے سے متفق بھی ہوئے اور خوش بھی ہوئے اور باتی زندگ کے آپ کی رائے کا احترام کرتے رہے اور مداح بھی ہو گئے۔

عبدالرحمٰن نخصی فرماتے ہیں کہ میں نے امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ ہے براہ کر کھے پر بینزگار نہیں پایا۔ احمد الشقفی فرماتے ہیں کہ ہم عیسیٰ بن یونس کے گھر میں بیٹھے تھے' انہوں کہا کہ ہمیں امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے ایک حدیث بیان کی ہے۔ مجلس میں ایک فخص اور کہنے لگا' ابھی تک آپ لوگوں نے امام ابو حقیقہ سے توبہ کرنے کا مطالبہ نہیں کیا ؟ امام ابو حقیقہ حدیث بیان کرنے میں جھوٹے ہیں۔ عیسیٰ بن یونس نے اس چلانے والے فخص کو مخاطب کرکے حدیث بیان کرنے میں جھوٹے ہیں۔ عیسیٰ بن یونس نے اس چلانے والے فخص کو مخاطب کرکے فرمایا خدا تجھے اس جھوٹ اور گستاخی کی جلدی ہی سزا دے گا۔ ہم تو امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالیٰ حیدے متی اور عالم وین سے روائی کیا کو گے۔ آج امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالیٰ حدیث قال عنہ سے براہ کر سچا اور متی کون ہے ؟

علی بن خشرم فرماتے رائیے ہیں کہ کمی نے عیسیٰ بن یونس کے سامنے حضرت امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالیٰ عند کا شکوہ کیا تو انہوں نے اسے سخت الفاظ میں ڈائٹا اور فرمایا 'آج امام ابو حنیفہ جیسے مقی اور پر ہیزگار کوئی آدمی نہیں ہے۔

سلیمان بن شاذکونی ریابی فرماتے ہیں کہ مجھے عیسیٰ بن یونس نے فرمایا کہ امام ابوحنیفہ کے خلاف کبھی کوئی بات نہ کرنا اور نہ ہی ان کے سامنے میری کسی روایت کو ترجیح رینا۔ خداکی فتم میں نے ان سے بردھ کر کوئی متقی اور بزرگ نہیں پایا۔ عیسیٰ بن یونس کا معمول تھا کہ آپ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی روایات کو برے وثوق سے بیان فرمایا کرتے تھے اور امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے قول کو تمام علمائے کوفہ پر ترجیح دیا کرتے تھے۔

محمد بن داود رواطیر فرماتے ہیں کہ ہمارے ہاں عیسلی بن یونس تشریف لائے اور اپنی بعل سے ایک کتاب نکالی اور اسے پڑھ کر سنانے گئے 'کسی نے کما حضرت آپ ہمارے سامنے امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی روایات بیان فرماتے ہیں۔ آپ نے فرمایا میں نے تو زندگی بھر ان سے برا فقیہ اور سچا انسان نہیں دیکھا۔ میں انہیں اپنی زندگی میں بیند کرتا ہوں اور مرنے کے بعد بھی۔

یوسف صفار مرافیح فرماتے ہیں کہ میں نے وکیع کو فرماتے ساکہ میں نے حدیث بیان کرنے میں ابوصنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ جیسا تقوی اختیار کرنے والا محدث نہیں ویکھا۔ یکی بن معین مرافیح فرمایا کرتے تھے کہ حضرت وکیع امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے بارے میں بہت اچھی رائے رکھتے تھے اور آپ کے تقوی اور ورع کو بھشہ اچھے الفاظ میں بیان فرمایا کرتے۔

حضرت عبش رحمته الله عليه فرمايا كرتے سے كه امام ابوضيفه رضى الله تعالى عنه دن كو اكثر روزه ركھتے اور زياده وقت عباوت خداوندى ميں گزارتے وه متقى اور فقيه سے ابوداود حفرى فرماتے ميں كه إمام ابوضيفه رضى الله تعالى عنه ان حلال امور ميں بھى تقوىٰ كرتے جن ميں كى كوكوكى شك و شبه نہيں ہوتا تھا۔ اندازه فرمائيں جو مخص حلال امور ميں اتن التياط كرما ہے وہ حرام امور ميں كى قدر مختلط ہوگا۔

#### كاروبار مين احتياط

حضرت امام ابوبوسف ریافید فرماتے ہیں کہ میرے استاد حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ رسی کی گرے کا کاروبار کرتے تھے۔ ایک ون آپ سے کسی نے کپڑا خریدنا چاہا آپ نے اپنے جماو کہا کہ انہیں کپڑا دکھائے۔ جماد ریافید نے تھان کھولتے وقت زبان سے پڑھا ''صلی اللہ علیٰ محمد'' مسرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے بیٹے کو فرمایا اب اس مخص کو کپڑا نہ دیتا۔ تم نے ورود مرف پڑھ کر کپڑے کی تحسین کر دی ہے۔ وہ مخص چلا گیا۔ سارا بازار گھوما گراسے اس جیسا کپڑا میں نہ ملا۔ وہ دوبارہ آیا گر حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے اسے کپڑے دینے انکار

حضرت منصور مطفی فرمایا کرتے تھے کہ مجھے میرے والد گرای نے بتایا تھا کہ میں حضرت امام میں حضرت امام میں اللہ تعالی عند کی مجالس میں نو سال تک حاضر ہوتا رہا۔ میں نے سارے کوفہ میں آپ سے اللہ تعالی عند کی محالوں آپ بیشہ ان سیا تھی، پر بیزگار، صلوۃ و سلام کا پابند، صدقہ اور خیرات کا عادی کسی کو نہیں ویکھا اور آپ بیشہ ان سیار پر قائم رہے۔

فيض بن محمد الرقى ويطيه فرمات بين كه مين امام ابو حنيفه رضى الله تعالى عنه كو بغداد مين ملا-

میں نے ارادہ کیا تھا کہ کوفہ جاؤں' آپ نے مجھے بلا کر کما کوفہ جاؤ تو میرے بیٹے جماد کو کمنا کہ سے ایک ماہ کا خرچہ صرف دو درہم ہے تم نے وہ بھی روک دیئے' جلدی بھیجو۔ یہ وہ زمانہ تھا جب تطیفہ عباس کے قیدخانہ میں بغداد میں قیام فرما تھے۔ یہ تقویٰ تھا کہ زندان خانہ میں بھی آپ سر تعلق کھانا نہیں کھایا کرتے تھے۔ منصور نے این خاص معمان خانہ سے کھانا بھیجا تو آپ نے انکار کر سے انکار کر سے دو درہم کے ستو کوفہ سے منگوا کر گزر او قات فرمایا کرتے تھے۔

سفیان بن زیاد بغدادی مطیعت کی روایت ہے کہ امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ ہے ہے پہر گار تھے۔ آپ کا ریٹی کپڑے کا کاروبار بڑا وسیع تھا۔ آپ اس کاروبار میں بڑے تدبیر اور فرح خوض فرمایا کرتے اور مال کے لینے اور دینے میں سخت چھان بین کیا کرتے تھے۔ ایک مدنی آج کھی میں آیا۔ اسے اپنی بیٹی کے جیز کے لیئے قیمتی ریٹی کپڑا در کار تھا۔ وہ کپڑا صرف امام ابوطنیفہ رضی تعالیٰ عنہ کے پاس ہی تھا۔ لوگوں نے اسے بتایا کہ جب تم آپ کے گودام میں جاؤ اور تمہاری خوات کے مطابق تمہارے سامنے کپڑا رکھیں تو بلا کم و کاست کپڑا خرید لینا اور بھاؤ طے کرتے جھڑا نہ کے مطابق تمہارے سامنے کپڑا رکھیں تو بلا کم و کاست کپڑا خرید لینا اور بھاؤ طے کرتے جھڑا نہ کیونکہ ابوطنیفہ تو خود ہی مناسب قیمت بتاتے ہیں۔

وہ شخص آپ کی دکان پر پہنچا تو حضرت کے ایک شاگرد سے ملاقات ہوئی۔ اس نے خیال ہے شاید وہ امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ ہیں۔ اس نے کپڑا مانگا' اس نے کپڑا سامنے لا رکھا۔ اس قیمت بوچھی تو دکاندار نے ایک ہزار ورہم بتائی۔ اس شخص نے بلا سوچ سمجھے ایک ہزار ورہم سے حیمتے اور سامان لے کر مدینہ آگیا۔ ایک عرصہ کے بعد حضرت امام ابو صنیفہ نے وہی کپڑا طلب فرمایا شکھ نے بتایا میں نے تو اس ایک ہزار ورہم میں فروخت کر دیا تھا۔ آپ نے شاگرد کو فرمایا تم لوگوں مودکا دیتے ہو اور زیادہ رقم لیتے ہو۔ آپ نے ای دن سے اسے دکان سے نکال دیا اور خود اس شخص کی تلاش میں مدینہ منورہ پنچ اور ہزار درہم ساتھ لے گئے۔ مدینہ منورہ پنچ تو اس شخص کو اس کپڑے کی جادر اوڑھے نماز پڑھتے دیکھا۔ آپ نے بھی ای مسجد میں نوافل پڑھنے شروع کر دیتے مناز سے فرمایا۔ یہ کپڑا ہو تم نے اوڑھ رکھا ہے وہ میرا ہے' اس نے کہا ش اسے نماز سے فرمایا۔ یہ کپڑا ہو تم نے اوڑھ رکھا ہے وہ میرا ہے' اس نے کہا ش اسے نیا کیوں نہیں' آپ نے فرمایا' ابو صنیفہ میں ہوں' کیا تم نے بچھ سے کپڑا خریدا تھا اس نے تایا کیوں نہیں' آپ نے فرمایا' ابو صنیفہ میں ہوں' کیا تم نے بچھ سے کپڑا خریدا تھا اس نے تایا کیوں نہیں' آپ نے فرمایا' ابو صنیفہ میں ہوں' کیا تم نے بچھ سے کپڑا خریدا تھا اس نے تایا کیوں نہیں' آپ نے فرمایا' ابو صنیفہ میں ہوں' کیا تم نے بچھ سے کپڑا خریدا تھا اس نے تایا کیوں نہیں' آپ نے فرمایا' ابو صنیفہ میں ہوں' کیا تم نے بچھ سے کپڑا خریدا تھا اس نے تایا کیوں نہیں' آپ نے فرمایا' ابو صنیفہ میں ہوں' کیا تم نے بچھ سے کپڑا خریدا تھا اس نے تایا کیوں نہیں' آپ نے فرمایا' ابو صنیفہ میں ہوں' کیا تم نے بچھ سے کپڑا خریدا تھا اس نے تایا کیوں نہیں' آپ نے فرمایا' ابو صنیفہ میں اس کیا تم نے بچھ سے کپڑا خریدا تھا اس نے تایا کیوں نہیں' آپ نے فرمایا' ابو صنیفہ میں ہوں' کیا تم نے بچھ سے کپڑا خریدا تھا اس نے تایا کیوں نہیں' آپ نے فرمایا' ابو صنیفہ میں ' آپ نے فرمایا' ابو صنیفہ میں ' آپ نے فرمایا' ابو صنیفہ میں ' اس نے تایا کیوں نہیں' آپ نے فرمایا' ابو صنیفہ میں ' ابو صنیفہ کیوں نے کپڑا خریدا تھا اس نے تایا کیوں نہیں' آپ نے فرمایا' ابو صنیفہ میں نے بھی ابور نے بھی سے کپڑا خریدا تھا اس نے نے ابور نے بھی ابور نے بھی ابور نے بھی کی ابور نے بھی کیوں نے کپڑا خریدا تھا اس نے بھی ابور نے بھی ابور نے بھی کیا کیا کیوں نے نے

نس آپ نے فرمایا تو تم میرا سے گیڑا مجھے دے دو اور ایک ہزار درہم اس کے سامنے رکھ دیے۔ ان نے کہا۔ میں اس کیڑے کو ایک عرصہ تک استعال کرتا رہا ہوں مجھے سے جائز نہیں کہ استعال شدہ کہا واپس دوں اور ایک ہزار درہم لوں' ہاں آپ کچھ رقم دے سے ہیں۔ آپ نے اے فرمایا۔ اس وقت کیڑے کی قیت چار سو درہم تھی۔ اگر تم کیڑا رکھنا چاہتے ہو تو چھ سو درہم واپس لے لو اور اب یہ کیڑا بطور تحفہ رکھ لو۔ مگر اس مدنی شخص نے انکار کر دیا۔ اب آپ نے فرمایا۔ اچھا اگر تم ایسا نہیں کر سے تو میرا کیڑا مجھے دے دو اور اپنا ایک ہزار درہم واپس لے لو اور جو تم نے استعال کیا ہیں تمہیں محاف کرتا ہوں' اس کے باوجود وہ کیڑا واپس دیے پر راضی نہ ہوا۔ اور نہ آپ سے ایک ہزار درہم لیا۔ اور کہا کہ بیس نے ایک ہزار درہم سے اور کہا کہ بیس نے اے تربیدا تھا اور سوچ سمجھ کر خریدا تھا۔ اب حضرت امام ابو حقیفہ رضی اللہ اتحال عنہ نے اس کے چھ سو درہم بھی واپس کر دیے اور اسے کیڑا سرکھنے پر بھی مجبور کیا اور بس سے معذرت بھی کی اور واپس کوفہ آگے۔

عطاء بن جبلہ رویئیہ فرماتے ہیں کہ کوفہ کے علماء کرام بلا اختلاف اس بات پر متفق تھے کہ امام او حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ زبردست فقیہ اور متقی عالم دین تھے۔ آپ سے بردھ کر کوئی بھی فقیہ اور متقی نہ تھا۔ وہ پر ہیزگار' روزہ وار اور شب بیدار تھے۔

ہمربن معروف ریالیے فرماتے ہیں کہ لوگ ایک بار امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو دیکھتے تو پہچان لیتے۔ آپ فقہ میں بے مثال صاحب بصیرت تھے۔ آپ کی معرفت کا سبب کم لوگوں کو اوراک تھا۔ اور آپ کی عبادت تمام علماء کرام سے بڑھ کر تھی۔ آپ کو جو بھی کوئی دیکھتا تو بلا سوچ آپ کی جہے گاری اور فقاہست کا قائل ہو جاتا۔ آپ فرملیا کرتے تھے میں نے ایک دن امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے عرض کی حضور میں نے آپ جیسا کوئی دو سرا انسان نہیں دیکھا۔ آپ کے مخالفین آپ تعالیٰ عنہ سے عرض کی حضور میں نے آپ جیسا کوئی دو سرا انسان نہیں دیکھا۔ آپ کے مخالفین آپ کا گلہ کرتے ہیں تو اس کی خوبیاں ہی بیان کا گلہ کرتے ہیں۔ آپ نے فرمایا میں نے بھی کسی کا ذکر کرتے ہیں تو اس کی خوبیاں ہی بیان کرتے ہیں۔ آپ نے فرمایا میں نے بھی کسی کے عیب تلاش نہیں کیئے اور بھی برائی کا بدلہ برائی کا بدلہ برائی

حفص بن عبدالرحمٰن رافیر فرماتے ہیں کہ میں ایک دن ابن عون کو ملا تو اس نے پوچھا' وحنیفہ کس حال میں تھے ؟ میں نے کما میں نے ان کے متعلق سنا ہے کہ ان کے شاگرد کہتے ہیں کہ

آج حضرت المام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے جو پکھے کہا ہے کل اس سے رجوع کر لیں گے میں اس کے کمالات کے گیت گاتے ہو۔ کیا وہ شخص قائل اعتماد ہو سکتا ہے کہ جو اپنی بات پر قائم سکے۔ انہوں نے کہا' بھی تو حضرت المام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا کمال ہے کہ وہ آپنی کی بات اصرار نہیں کرتے اور اپنی بات پر اڑتے نہیں۔ حفص بن عبدالرحمٰن نے مزید کما کہ میں نے کہ جیسا شخص تمام علماء ' فقہا ' زاہدوں اور عابدوں میں نہیں دیکھا اور تقویٰ کے سب سے اول و میسا شخص تمام علماء ' فقہا ' زاہدوں اور عابدوں میں نہیں دیکھا اور تقویٰ کے سب سے اول و میں ہیں۔ حفص بن عبدالرحمٰن وہی ہیں جو امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے کاروبار میں شریک تھے ہیں۔ میں سال تک شریک تھے اور نمایت نیک سیرت انسان تھے۔

حفص بن عبدالرحمٰن رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ میں نے زندگی کا ایک طویل عرصہ حضرت امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی رفاقت میں گزارا۔ ہیں سال تک کاروبار میں شریک ربا آپ نے بھی کوئی بات پوشیدہ رکھ کر ظاہری طور پر کوئی اور بات نہیں گی۔ آپ کا ظاہر اور باطن آپ نے بھی کوئی بات پوشیدہ رکھ کر ظاہری طور پر کوئی اور باطن ایک تھا۔ وہ کی مشکوک اور شبہ والے کام کو اختیار نہیں کرتے تھے۔ اگر بھی ول میں شک گزر آپاتی ایک تھا۔ وہ کی مشکوک اور شبہ والے کام کو اختیار نہیں کرتے تھے۔ اگر بھی دل میں شک گزر آپاتی اسے ول سے نکال دیتے اور صاف ولی سے معاملات کو طے کرتے خواہ انہیں دنیاوی طور پر کتنا ہی نقصان اٹھانا بڑتا۔

سل بن مزاحم علین فرماتے ہیں کہ میں نضر بن مجر کے پاس بیٹا تھا کہ کی نے کہاکہ ابوغسان امام ابوحنیفہ کے متعلق ایس ایس باتیں کرتا ہے۔ نضر بن مجر سخت ناراض ہوئ فرمانے کی مجھے ان نابختہ بچوں کی باتوں سے کوئی سروکار نہیں کہ وہ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو کیا کیا کہتے ہیں۔ مجھے یقین ہے کہ آج کل امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ جیسا متقی فقیہ اور صاحب بصیرت آدمی کوئی نہیں۔ وہ بات پختہ کہتے ہیں اور اگر کوئی غلطی ہو جائے تو اس پر اصرار نہیں کرتے بھیرت آدمی کوئی نہیں۔ وہ بات پختہ کہتے ہیں اور اگر کوئی غلطی ہو جائے تو اس پر اصرار نہیں کرتے بیں۔

یاد رہے کہ نضر بن محمد روائی مرو کے ائمہ میں سے ایک صاحب بصیرت امام ہیں۔ حضرت امام ہیں۔ حضرت امام ہیں۔ حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی مجالس سے مستفیض ہوتے رہے ہیں' آپ کے مصاحب ہیں اور امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی روایات سے فقہ اور حدیث کی روایت کیا کرتے تھے۔ وہ خود جج

کے سفر پر گئے تو اپنی ایک کنیز حضرت امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عند کے گھر میں خدمت کے لیئے مرف کے لیئے مرف اس لیئے چھوڑ گئے کہ وہ امام صاحب کے اندوران خاند معمولات پر نظر رکھے اور انہیں آکر سائے۔ پھر آپ کی عبادت اور خصائل کی تفصیل بیان کرے۔

حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے نضر بن مجر مطلبے کو فتوئی دینے سے روک دیا تھا ور وہ رک گئے۔ حضرت امام کے بیٹے حماد . ابوحنیفہ مطلبے نے آپ سے فتوئی بوچھا تو وہ خاموش ہے۔ آپ نے انہیں اعتماد میں لیتے ہوئے کما آپ خفیہ طور پر فتوئی دے دیں میں کی کو فتوئی نہیں جوں گا۔ آپ نے فرمایا مجھے آگر بادشاہ بھی کے تو میں فتوئی نہیں دوں گا۔ بیہ بات حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے احترام میں تھی۔ بیہ روایت آپ کے بیٹے ابواسحاق زاہد نے بھی بیان کی ہے کہ میں نے اپنے والد کو کما آپ اور میں اکیلے ہیں دو سراکوئی نہیں فتوئی دیں۔ آپ نے انکار کرتے میں نے فرمایا ، تہیں معلوم نہیں کہ آگرچہ یہاں ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نہیں ہیں گر اللہ تو دکھ رہا

ے۔ میں اس تھم سے کیوں بغاوت کروں' میں قیامت کے دن اس باز پرس سے بچنا چاہتا ہوں۔ حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے لوگوں نے دریافت کیا کہ آپ اس مخض کے

سطلق کیا فرماتے ہیں جو وین کے معاملات پر عبور رکھتا ہوا لوگ اس سے مسائل دریافت کریں مگروہ اوگ نے دے اور لوگوں کے مسائل حل نہ ہوں اور اسے سے بھی معلوم ہو کہ اگر وہ مسائل کا جواب شوی نہ دے اور لوگوں کے مسائل حل نہ ہوں اور اسے سے بھی معلوم ہو کہ اگر وہ مسائل کا جواب نہ دیں گے تو دو سرے علماء کرام بھی ان مسائل کے صبح جواب نہیں دے سکیں گے۔ اس روایت کو سے دیں گے تو دو سرے علماء کرام بھی ان مسائل کے صبح جواب نہیں دے سکیں گے۔ اس روایت کو سے دیں گرنے والے مرو کے مشہور امام ابو حاتم ہیں۔ آپ امام ابو حذیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے رفقاعلم و

سل میں سے تھے۔ آپ نے عمر بن عبد العزیز میلیجہ کا زمانہ بلیا تھا۔ آپ عبد اللہ بن مبارک میلیجہ کے ستاد ہیں۔ انہوں نے امام ابو حذیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے ایک حدیث روایت کی ہے۔

حضرت مبارک ابن عبداللہ ریافیہ فرمایا کرتے تھے کہ میں نے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ عبرہ کر کسی شخص کو متقی نہیں پایا۔ آپ صرف اعمال و خصائل میں ہی تقویٰ نہیں کرتے تھے کہ آپ اپنے کاروبار میں بھی متقی تھے اور کاروباری اموال میں بھی تقویٰ کا مظاہرہ کرتے تھے۔ حرت امام احمد بن حنبل رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی مجلس میں امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا تذکرہ ہوا قرآپ نے فرمایا' اللہ تعالیٰ ان پر رحم فرمائے' وہ بے بناہ پر بین گار تھے۔ انہیں فرض (منصب قضاء) قبول نہ کرنے پر حکم انوں نے اکیس کوڑے لگائے گروہ فرض قبول کرنے سے انکار کرتے ہے حضرت عبداللہ بن مبارک رائیے فرماتے ہیں میں نے زبان پر قابو پانے والا مخص امام ابو حنیف رشی تعالی عنہ سے بڑھ کر کسی کو نہیں پایا۔ میں نے دیکھا کہ ایک یمودی قصاب آپ کو اکثر گالیاں سے آپ اس کو جواب میں گالی کی بجائے اس کے لیئے کلمہ خبر ہی کہتے۔

### کاروبار میں رزق حلال کے حصول کا معیار

عبدالکم ابن میسرہ فرماتے ہیں کہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا ایک غلام آپ كاروبار ميں آپ كے تجارتی امور ميں مشغول رہتا تھا۔ آپ ابنا بهت سامال اس كے حوالے كر كرتے تھے تاكہ وہ آزادانہ اپنے طور ير بھنی كاروبار كرسكے۔ ایک بار اسے تنس ہزار درہم نفع 🗝 اس نے نفع امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنه کی خدمت میں پیش کیا۔ آپ نے اس سے کاروبار تفصیلات دریافت فرمائیں۔ وہ تمام وجوہات بیان کرتا گیا۔ مگر باتوں باتوں میں اس نے ایک الی وہ بیان کی کہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے اس وجہ کی سچائی سے انکار کر دیا۔ آپ کے دل کے اس غلام کی کارکردگی پر شک پیدا ہو گیا' آپ نے اس پر ناراضگی کا اظهار کیا اور اے جھڑک کر کیا گ تم نے مشتبہ مال کو پاک اور ستھرے مال میں کیوں ملا دیا تھا' اب میہ تمام نفع میرے لیئے حرام ب آپ نے اسے تھم دیا کہ جاؤ غربا و مساکین کو بلا لاؤ۔ آپ نے وہ سارا مال غربا میں صدقہ کر دیا۔ اس طرح کا ایک اور واقعہ امام ابو بکر الزرنجری نے بھی بیان کیا ہے۔ وہ فرماتے ہیں' ایک وقعہ آپ کے کاروباری کارندول نے آپ کے کاروبار میں ستر ہزار درہم نفع کملیا۔ آپ نے ان – تجارت اور اس کثر منافع کی تفصیل یو چھی تو انہوں نے غلط بیانی ہے کام کیتے ہوئے حضرت کو مطمئے کرنے کی کو مشش کی۔ مگرجب آپ نے دو سرے ذرائع سے تحقیق کی تو بہتا چلا کہ اس تجارت کے ان غلاموں نے اسلامی اصولوں سے ہٹ کر کام کیا ہے۔ آپ نے کوفہ سے سات علماء کرام اور زہاد ا بلایا اور سارا مال انہیں دے کر فرمایا' میہ مال لے جاؤ اور سارے کا سارا فقرء اور مساکین میں تقلیم کے دو- ملازمین کو بلا کر کما کہ اس تجارت میں آپ لوگوں نے بہت برا نقصان اٹھایا ہے۔ ایک دفعہ آپ کے حصہ دار حفص بن عبدالرحمٰن کی وجہ سے بھی الیا ہی بے احتیاطی ا

واقعہ گزرا' جے ہم پہلے تفصیل سے بیان کر آئے ہیں۔ ان نتیوں واقعات میں حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی دیانت داری' تجارت میں تقویٰ اور کاروبار میں اسلامی اصولوں کی بیروی کا اندازہ ہوتا ہے۔

منصور بن عبدالحميد رطینے فرماتے ہیں کہ ہیں نے حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے قرآن پاک کی ایک آیت کی تفییر بوچھی تو آپ نے مجھے جھڑک ویا اور فرمایا' تمہیں ایبا کرنے کی جرات کیسے ہوئی؟ میں ایسے لوگوں کو پند نہیں کرتا جو حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کی تفییر و تشریح کے بعد بھی مجھے تفییر بیان کرنے کا کہیں۔ " مناقب صمیری " میں اس کی وجہ یہ بیان کی گئی ہے کہ حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا' تم نے مجھے بھی تفییر قرآن بیان کرتے دیکھا ہے۔ یہ بات آپ نے اس لیئے کہی کہ آپ تفییر کی بجائے فقتی مسائل میں طاق تھے اور اس پر گفتگو فرمایا کرتے تھے۔

اسلعیل بن بشرویلی فرماتے ہیں کہ میں نے کی بن ابراھیم (استاد امام بخاری) سے سنا ہے ،

آپ فرماتے تھے کہ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ اپنے قول اور فعل کو یکسال رکھتے تھے۔ یہ کی بن ابراھیم رویلی بلخ کے امام تھے اور کوفہ میں ایک سو چالیس ججری میں آئے اور امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی مجانس میں حاضر ہوتے رہے۔ آپ نے حدیث بھی می اور آپ سے روایت کرنے کی اجازت بھی لی۔ آپ کی ان مجانس میں آپ تقریباً دس بارہ سال استفادہ کرتے رہے۔ آپ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے مخلص احباب میں شار ہوتے تھے اور اپنے فرجب میں برے سختی اور شرحت سے کاربند تھے۔

اسلعیل بن بشر علیے فرماتے ہیں کہ ہم ایک دن کی بن ابراهیم رحمتہ اللہ علیہ کی مجلس میں بیٹھے تھے۔ آپ نے حضرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے ایک حدیث روایت کی بیہ بن کر ایک شخص چلا اٹھا آپ ہمیں ابن جریح کی حدیث بیان فرما کیں۔ ہمیں امام ابو صنیفہ کی حدیث کی ضرورث نہیں۔ حضرت کی بن ابراهیم رحمتہ اللہ علیہ نے فرمایا 'ہم ایسے بیو قوفوں کو حدیث نہیں ساتے جنہیں امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا مقام معلوم نہ ہو۔ اگر تم میری بیان کردہ حدیث کو کھنا گوارا نہیں کرتے تو میری مجلس سے اٹھ کر چلے جاؤ۔ آپ نے اس وقت تک کوئی حدیث نہ

مناقب امام اعظم

سنائی جب تک وہ مخص مجلس سے اٹھ کر چلا نہیں گیا۔ آپ نے اس حدیث کو ودبارہ مجلس میں ہے۔ کرنا شروع کیا۔

نیز ای طرح کی ایک اور روایت البیسیم بن ابی بکر مرابطی کی ہے کہ آپ اس فخص پر مخص غضبناک ہوئے اور آپ کا غصہ آپ کے چرے پر نمایاں تھا۔ اس فخص نے اپنی غلطی کا اعترف اور اپنی اس گتاخی سے توبہ کی۔ بایں ہمہ آپ نے ایسے لوگوں کی موجودگی میں حدیث بیان کر اسے نہ فرمائی جو امام ابو حذیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے علمی مقام سے بے خبر تھے۔ شداد بن تحکیم فرمائے ہے کہ امام ابو حذیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے بڑھ کر کوئی بھی پر ہیزگار نہیں تھا۔

ابو علی خوارزی بیالیے فرماتے ہیں کہ میں امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے پاس حاصہ میرے پاس نمایت ہی نفیس رہنی کیڑا تھا۔ میں اٹھنے لگا تو آپ نے جھے اپنے پاس بلا کر فرمایا۔ اور عمدہ کیڑا۔ اور نے کیڑا خریدنے کی خواہش کی تو میں نے اپنی رضا کا اظہار کر دیا۔ آپ نے فرمایا اس کی قبت ہے؟ میں نے کہا حضور آپ قبت وریافت فرماتے ہیں میں اے آپ کے لیئے ہدیہ کرتا ہوا ور یہ نذرانہ میری طرف سے یادگار رہے گا۔ میں اے بیج کر اس کی قبت کم کرنے کی ضورہ میں کرتا۔ آپ نے فرمایا۔ یہ کیڑا جھے بے حد پہند ہے گر جب تک تم اس کی قبت ہے گھوں نہیں لیا کرتا۔ میری خوشی اس می قبت ہے اس کی قبت ہے اس کی قبت ہے اس کی قبت ہے اس کی قبت ہے کہ میں اے بیج تو نہیں سکا گر آپ کے اصرار پر اے میں کرتا ہوں۔ آپ نے خوشی کا اظہار کیا گر مجلس میں بیٹھے اپنے بیٹے حماد کو کما انہیں اس کیڑے قبت ادا کی جائے۔ (یہ بات آپ کے تقویٰ کی بھین مثال ہے)

حضرت سوار فرماتے ہیں کہ میں نے حسن بن عمارہ کو خیزران کے مقام پر حضرت امام ابوسیہ رضی اللہ تعالیٰ سے رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے مزار پر روتے ہوئے دیکھا وہ کمہ رہے تھے اے امام ابو حفیفہ! اللہ تعالیٰ سے پر رحمت کی بارش برسائے۔ آپ ہمارے لیئے اسلاف کی نشانی تھے' آپ دنیا سے رخصت ہوئے گا اپنے جیسا عالم یادگار نہ چھوڑ سکے' اگرچہ آپ نے ہزاروں شاگرد پیدا کیئے مگروہ آپ کا جواب نہ سے اور نہ آپ کا جواب نہ سے اور نہ آپ کے علم اور تقویٰ کی مثال بن سکے۔

مجمد بن الحن را الحن را الحن را الحن را الله في الله علم الله علم الله تقال عنه مي الله علم الله تقد اور علمي الله تقر آب كى قبر شق بو تو وبال سے علم و كرم مواسات و ورع كا دريا بهتا نظر آئے گا۔ جو فقه اور علمي الله الله مثال بوگا۔

حضرت عبداللہ بن مبارک رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ جب میں کی کو حضرت امام روافیہ کا گلہ یا غیبت کرتے ویکھا تو میرا ول چاہتا کہ یہ شخص مجھے نظرنہ آئے اور اس سے سلام و کلام کا بھی روا دار نہ رہوں' گر مجھے یہ ڈر ہو تا کہ کہیں اس شخص پر اللہ تعالیٰ کا عذاب نہ ٹوٹ پڑے اور میں بھی اس کی لییٹ میں نہ آجاؤں۔ خدا کی قتم! حضرت امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی برائی کرنا یا ان کے متعلق بد زبانی کرنا اللہ تعالیٰ کے عذاب کو وعوت ویٹا ہے۔ ان کا ذکر تو ہمیشہ خیر و برکت کا باعث ہے۔ وہ بہت بڑے متی تھے۔ زبان کی حفاظت کرتے تھے اور علم و عرفان کی میٹھی زبان استعال کے عذاب اور کشرالعلم تھے۔

حن بن صالح را میں کہ امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سخت پر بیزگار تھے۔ حرام اور مشکوک چیز سے دور رہے۔ بعض او قات الیا بھی ہو تاکہ بہت سی حال چیزوں سے صرف اپنی پر بیزگاری سے دور ہو جاتے۔ آپ محض معمولی سے شہدگی بنا پر اس سے دور ہو جاتے۔ میں فیر بیزگاری نقیہ نہیں دیکھا جو آپ کی طرح متقی اور علم میں یکتا ہو۔

عبداللہ بن مبارک بیٹی فرماتے ہیں کہ ایک بار حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے ایک کنیز خریدنے کا ارادہ کیا۔ وس سال تک ارادہ کرتے رہے کہ کون سے قیدی قافلہ سے کنیز خریدی۔ حریدی۔ حریدی۔

ایک دفعہ کوفہ کی جانوروں کی مارکیٹ میں پچھ لوٹ مارکی بگریاں لاکر بیچی جانے لگیں اور بیہ معلوم نہ رہا کہ اصل بگریاں کون می ہیں اور چوری و لوٹ مارکی کون می۔ آپ نے لوگوں سے پوچھا کہ ایک بگری زیادہ سے زیادہ کتنے سال زندہ رہتی ہے؟ کما گیا کہ سات سال۔ آپ نے احتیاطا "سات سال تک کوفہ سے بگری کا گوشت نہ کھایا۔

### حضرت امام ابو حنیفہ نفت انتہا کے اخلاق و عادات

ابراهیم بن سعید جو ہری مافیہ فرماتے ہیں کہ میں ایک دن امیرالمومنین مارون الرشید کے بینا تھا کہ امام ابوبوسف ( قاضی سلطنت عباسیہ ) تشریف لائے۔ خلیفہ ہارون الرشید نے امام ابور ریالتیہ کو فرمایا مجھے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے علمی اور معنوی اوصاف سے آگاہ کیا جائے۔ ابوبوسف رائي نے فرمايا اللہ تعالى نے فرمايا نے۔ ما يلفظ من قول الا العيد وقيب عتيد سورہ ق ۔ یارہ ۲۷ رکوع ۲) اللہ تعالی ہر بولنے والے کی زبان کے قریب ہے۔ میں حضرت ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے متعلق میہ جانتا ہوں کہ وہ ہر حرام چیز سے دور رہا کرتے تھے اور کے دین میں تقویٰ اور پر ہیزگاری میں ان کی مثال نہیں ملتی۔ وہ دین کے متعلق تبھی گفتگو نہ کے تھے جب تک انہیں اس پر بورا یقین نہ ہو۔ آپ اللہ سے محبت کرتے اس کی اطاعت میں سرا رہے تھے۔ اس کے نافرمانی سے بچے رہے تھے ' زر پرست دنیاداروں سے دور رہتے تھے اور خاسمی ے وقت گزارتے تھے۔ واسع العلم تھے اور دائم الفکر تھے۔ اگر کسی بات کاعلم ہو یا تو اس پر سختے کرتے ورنہ خاموش رہتے۔ آپ سے اگر کوئی دینی مسئلہ پوچھا جاتا تو وہ اس علم کی روشنی میں اسے حل کرتے جو انہیں اپنے اساتذہ سے قرآن و احادیث کی روشنی میں ملی تھی۔ اگر اساتذہ سے بات سنی ہوتی تو قرآن و احادیث کی روشنی میں قیاس فرمایا کرتے تھے۔ وہ اپنے علم اور مال کی وجہ سے مج كے محتاج نہيں تھے۔ طمع اور لا لي سے دور رہتے۔ غيبت اور گله سے كوسول دور رہتے۔ جس كا كرتے اچھے الفاظ میں كرتے۔

امام ابوبوسف رویلیے کی میہ باتیں س کر خلیفہ عباسیہ ہارون الرشید نے کہا کہ حضور صلی کھ علیہ و آلہ وسلم کی امرت کے صالحین کے ایسے ہی اخلاق ہوتے ہیں۔ بھراہنے کا تعب کر فرمایا میہ باتیں لکھ لو اور میرے بیٹوں کو سمجھاؤ۔ بھراپنے مبیٹے کو بلا کر کہا۔ ان باتوں کو یاد کرلولیہ ان پر عمل کرو۔ میں زندگی میں تہیں ان باتوں پر عمل پیرا دیکھنا چاہتا ہوں۔

امام زفر رحمتہ اللہ علیہ کے سامنے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ اور سفیان توری رایلیے کا آگا آیا تو آپ نے فرمایا امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ حلال اور حرام کا ذکر کرتے تو حضرت سفیان توری والجير اپن نفس كى طرف خيال كرتے۔ شايد كوئى ميرے اندر خامى ہے۔ امام ابوحنيف رضى الله تعالى عدم سے بردھ كر دانا اور صاحب بصيرت كون ہو سكتا ہے۔ آپ پر بينرگار عيبت سے دور اور گلم طرازى سے اجتناب كرتے تھے۔ آپ كے اس اخلاق كى مثال نہيں دى جاسكتی۔ آپ باحوصلہ تھے اور صبرو محل سے زندگى بركرتے تھے۔

ابن عیبنه مالید نے بنایا کہ میں نے حضرت ابن جربج مالید سے ساکہ حضرت نعمان کوفہ کے فقیہ ہیں۔ تقوی اور پرمیزگاری میں اپنی مثال نہیں رکھتے۔ اپنے دین اور علم کی مکمل حفاظت کرتے ہیں۔ آخرت کا خیال رکھنے والوں کو اہل دنیا پر نزجے دیا کرتے تھے اور اپنے علم و تقویٰ میں عظیم الثان انسان تھے۔ ابن جربج عطاء بن رباح کے بعد مکہ مکرمہ کے زبردست فقیہ تھے انہوں نے اکابر تا بعین کی زیارت کی اور ان سے آکٹر احادیث روایت کیں۔

عبدالوہاب بن جام عبدالرزاق بن جام کے بھائی تھے۔ وہ فرماتے ہیں کہ میں نے عدن کے ان لوگوں کو جو کوفہ میں علم حاصل کرنے کے لیئے آتے تھے ساکہ ہم نے امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے زمانہ میں کوفہ میں آپ سے بڑھ کر کوئی فقیہ نہیں دیکھا اور نہ ہی ان سے بڑھ کر کوئی فید نہیں دیکھا ہور نہ ہی ان سے بڑھ کر کوئی میں گراد دیکھا ہے۔

نضر بن محمد مطیح فرماتے ہیں کہ میں نے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے بردھ کر کوئی متقی مسی دیکھا وہ یاوہ گوئی ہے دور رہتے تھے اور نہ ہی اپنی گفتگو میں نداق اور استهزا فرماتے اور بھی زور سے قتمہ نہ لگایا کرتے تھے۔ ضرورت پڑتی تھی تو تبہم فرماتے۔

ام ابوبوسف علیہ الرحمتہ فرماتے ہیں کہ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرمایا کرتے تھے کہ اللہ اللہ کی طرف ہے یہ تھم نہ ہو آ کہ علم کو ضائع نہ کیا جائے تو میں بھی فتویٰ نہ ویتا اور میں ان کے مطلات میں وخل نہ ویا کر آ خواہ انہیں خوش گواری معلوم ہوتی یا ناگواری۔ و کیم بن الجراح علیہ نے ایک روایت میں بیان کیا ہے کہ اگر لوگ اپنے معاملات میں درست رہتے تو میں کی کو فتویٰ نہ ایک روایت میں بیان کیا ہے کہ اگر لوگ اپنے معاملات میں دورت میں جاؤں گا۔ اس کے بیرہ کرکوئی خوف نہیں کہ میں اپنے کی فتویٰ کی وجہ سے دورخ میں جاؤں گا۔ اس لیے میں فتویٰ کی وجہ سے دورخ میں جاؤں گا۔ اس لیے میں فتویٰ دینے سے پہلے ہزار بار سوچتا ہوں اور اللہ کے خوف سے وُر آ ہوں۔

حفزت حماد بن ابو حنیفه رایلیه فرماتے ہیں کہ مجھے امام ابو حنیفه رضی الله تعالی عنه علم کلای

TTT

مناقب امام اعظم

حاصل کرنے کا تھم فرمایا کرتے تھے بلکہ اس پر اصرار فرمایا کرتے تھے۔ آپ فرماتے اے میرے ع علم كلام حاصل كرو اس ميں ہى علم فقہ ہے الكه ميى فقه اكبر ہے۔ چنانچه ميں علم كلام حاصل ك لگا یمال تک کہ مجھے اس میدان میں قدرے کامیابیاں حاصل ہوئیں۔ پھر میں نے اسے مزید آگ برهایا اور اس پر عبور حاصل کیا۔ ایک دن میرے والد گرامی میرے اس علمی حلقے میں تشریف لا جہاں میں لوگوں کو بڑھا رہا تھا اور میرے اردگرد بہت سے ایسے حضرات تشریف فرما تھے جو علم کھے کے مشاق تھے۔ ہم کسی ایک مسئلہ پر بحث کر رہے تھے 'مجھی مجھی ہماری آوازیں بلند ہو جایا کرتھے۔ مجھے محسوس ہوا کہ آج میری اس مجلس میں میرے والد گرامی بھی تشریف فرما ہیں۔ آپ نے پولیے حماد تمہارے حلقہ میں کون لوگ بیٹھے ہیں۔ میں نے عرض کیا مصور! فلال فلال اور فلال حضرات موجود ہیں۔ پھر آپ نے پوچھاتم کن مسائل پر گفتگو کر رہے ہو؟ میں نے عرض کی کہ علم کلام کے فلاں مسکلہ بر۔ آپ نے فرمایا۔ حماد تم علم کلام چھوڑ دو۔ میرے والد گرامی کی عادت تھی کہ آپ جس کام کا ایک بار تھم دیتے اس سے روکتے نہیں تھے۔ گر آج مجھے جرت ہوئی۔ میں نے عرض ک حضور! آپ نے ہی تو مجھے علم کلام حاصل کرنے کا مشورہ دیا تھا۔ آپ نے فرمایا' ہاں! میں نے ع حمیں یہ علم حاصل کرنے کا کہا تھا۔ مگر اب کسی وجہ سے روک رہا ہوں۔ میں نے وضاحت کے لیے عرض کی۔ آپ نے فرمایا بیٹا! جن لوگوں سے علم کلام میں تم مناظرہ اور مباحثہ کر رہے ہو وہ سابقہ ادوار میں کیجاتھے۔ ایک ہی دین پر تھے' ایک ہی قول پر تھے' بھران پر شیطانی اغراض نے اثر ڈالا۔ 🛚 آپس میں صرف اپنی فوقیت جمانے کے لیئے اختلاف کرنے لگے اور بات بات پر جھڑنے لگے۔ ایک دو سرے کے وسمن بن گئے ' ہر ایک کی راہ جدا جدا ہوتی گئی۔ یمال تک کہ معمولی اختلاف پر ایک دوس کو کافر کئے لگے۔

مجلس میں بیٹے ہوئے ائمہ اور مشائخ کو آپ کی یہ بات ناگوار گزری مگر آپ نے فرمایا 'کہ حضرات! تمہارا اللہ ایک 'تمہارا دین ایک 'تمہارا امام ایک 'تمہاری کتاب ایک 'تمہاری شریعت ایک ' چرجب تم اختلاف کرتے ہو تو اس قدر شدت کیوں کرتے ہو ؟ تمہارے اس اختلاف کی وجہ سے شیطان کو لڑانے کا مواقع مل جاتا ہے اور تمہارا نام لے لے کر امت میں امتیاز پھیلا تا رہتا ہے۔ حق کی حقانیت پر تو کسی کو اختلاف نہیں ہے پھر اس حق کی بات پر اتفاق کرلیں۔ مناظرہ بے شک کریں '

بحث و تنحیص کریں تا کہ مسئلہ صاف ہو کر سامنے آئے اور ججت واضح ہو کر صواب و خطا کا امتیاز ہو۔ مر اختلاف کرتے کرتے اپنے ہی خیال کو سب سے اعلیٰ نہ جانو' الفت اور محبت سے جو بات قریں شربیت ہو اس پر اتفاق کر لو اور ایک معاملہ پر متفق ہو کر لوگوں کی راہنمائی کرو۔ ہم کئی باتوں پر اختلاف کیا کرتے تھے۔ مگر کوئی ایبا محض بھی اٹھتا جو بولتا اور ہم اس کی رائے سے اتفاق کر لیا کرتے تھے۔ گر آج ساری مجلس میں ایک ایسا آدمی بات کرتا ہے جس سے اختلاف بردھتا ہے اور شیطان اینے مقاصد میں کامیاب ہو جاتا ہے۔ وہ روتا ہے تو ہمارا اختلاف بڑھتا ہے، ہم مجلس سے اٹھ کرالی جگہ جا پنچے ہیں جہال علم فقہ نہیں' علم کلام نہیں' بس صرف اختلاف ہی اختلاف ہے۔ ہم لوگ ایس علمی مجلس سے اٹھ کر دو سری جگہ جاتے تھے۔ تو لوگ جاری بات سنتے تھے بول محسوس ہو آ تھا کہ ان ك سرول بريرندے نشمن بنائے ہوئے ہيں۔ وہ نمايت غورے بات سنتے سے الل مجلس يول خوفزده ہوتے تھے کہ انہیں محسوس ہو تا تھا کہ جہنم کے کنارے پر کھڑے ہیں۔ اگر انہوں نے اختلاف کیا تو ان کی بخشش نہیں ہوگی۔ مر آج میں دیکھتا ہوں کہ مجلس میں بیٹھے لوگ ہنتے ہیں۔ کروٹیس بدلتے ہیں اور آپ لوگوں کی باتوں سے دلچین نہیں رکھتے اور علم کلام کا زاق اڑاتے ہیں۔ ہر ایک دوسرے پر عالب آنے کے لیئے کوشاں ہو تا ہے اورر اینے قبائل پر چھا جانے کی کوشش کرتا ہے۔ ان حالات یں علم کلام کو جھوڑ دینا ہی بھتر ہے۔

#### ائمه كااختلاف اور اتفاق

حضرت حسن رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ خلیفہ عباسیہ نے اپنے دربار ہیں ایک مسئلہ وریافت کیا' جمال ہیں' ابن ابی لیلی اور امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ موجود تھے۔ ابن ابی لیلیٰ اور امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ اس مسئلہ پر متفق تھے۔ گر ہیں ان سے اختلاف کر آ رہا۔ خلیفہ نے دونوں کی رائے سے انفاق کرتے ہوئے مقدمہ کا فیصلہ فرما دیا اور میری رائے کو نظرانداز کر دیا۔ تھوڑی دیر بعد امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے سوچ بچار کی اور اٹھ کر فرمایا' اے امیر! میری رائے ہیں فلاں فلاں غلطی تھی' حسن کی بات صحیح ہے۔ امیر نے ابن ابی لیلیٰ سے بوچھا آپ کی کیا دائے ہی فلاں فلاں غلطی تھی' حسن کی بات صحیح ہے۔ امیر نے ابن ابی لیلیٰ سے بوچھا آپ کی کیا دائے ہے ؟ انہوں نے فرمایا' میری رائے درست ہے۔ ہیں اس سے رجوع نہیں کر سکتا۔ وہ مناظرہ وائے ہے؟ انہوں نے فرمایا' میری رائے درست ہے۔ ہیں اس سے رجوع نہیں کر سکتا۔ وہ مناظرہ

المام اعظم المام الم

كرنے لكے مكر آخر ميں كہنے لكے كه علم تو الله كى رضا كا نام ب اس پر مناظرہ اور مجادله كيا معى ركھ ، اس بر مناظرہ اور مجادله كيا معى ركھ ب كيا ميں اللہ كيا معى ركھ اللہ كيا معى ركھ اللہ كيا ميں دونول بزرگول كى رائے سے اتفاق كرليا۔

ہم اپنی کتاب میں بہت می الی روایات بیان کر آئے ہیں جو امام مجر الحارثی رحمتہ اللہ سے نے روایت کی تھیں۔ انہوں نے حسن بن عمارہ روایت کے متعلق بیان فرمائی تھیں۔ فدکورہ واقعہ بھی الیم اورایت ہے۔ حضرت امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی مجلس میں ایک ایسا مخف آیا کر تھی ہے جو ہر مسئلہ میں اختلاف کیا کر تا تھا۔ آپ نے اسے فرمایا 'تم ہر روز مجھ سے پانچ ورہم لے لیا کہ گھی میری مجلس میں نہ آیا کرو۔ ایسا معلوم ہو تا ہے کہ امام صاحب کے نزدیک ایسے لوگ جو اختلاف می علم مانتے ہیں مفید نہیں ہوتے۔ ایسے لوگوں سے دور رہنا ہی بہتر ہو تا ہے۔

معافی بن عمران الموصلی کے الفاظ میں امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی عادات الی تعمیر و دسرے علماء میں بہت کم پائی جاتی تھیں۔ عام لوگ اپنی قوم کے سردار بن جاتے ہیں یا کسی قبیلے قیادت سنبھال لیتے ہیں تو ان کے ہاں پر ہیزگاری اور اکساری نہیں رہتی۔ گر حضرت امام ابو حفیہ رضی اللہ تعالی عنہ کو جب عزت و تکریم کمی اور دنیائے اسلام کے امام اعظم بنے تو وہ پہلے سے زیاد متنی اور پر ہیزگار بن کر سامنے آئے۔ وہ صدق و صفا میں کامل ہوئے اور انکساری میں تمام کے لیا عثم احترام بنے۔ وہ پریشان حالوں کی خدمت کرتے، دکھی لوگوں سے ہدردی کرتے، دشمن ہوئے ووروں سے ہدردی کرتے، دشمن ہوئے وہ دور ایک اور احترام رکھتے۔

اسد العلوم و غابه الاقلام تكبووراء بلوغها الاوهام فمتى يساق الى حماه حرام جادت به الاصلاب والارحام باهى به باهى به الاسلام حبر مديح ابى حنيفة انه قد حازفى شان التورع غاية للزهد لم يقبل حلالا طيبًا هل قد رايتم مثله مــتورعًا لمااتاه الفقه منهومًا وما

### مامثله رأت الليالي عابداً يقطان اوفى درسه الايام

وجمہ) "امام ابوطیفہ رضی اللہ تعالی عنہ بہت برے عالم سے وہ میدان علم کے میمسوار اور سے علم کے آقاب سے آقاب سے آپ برے پر بیزگار اور تمام اوصاف میں کائل سے آپ کے اوصاف میں قدر پہندیدہ سے کہ ہمارے وہم و گمان میں بھی نہیں آس کے نہدو تقویٰ کی وجہ ہے بھی حرام معال اور حال کو حرام نہیں کرتے سے بھے بتاؤ آج ان جیسا کوئی متقی اور عالم دین ہے۔ آپ کی سے سے تمام رشتے اور مناصب بلند ہوتے گئے۔ جب آپ کو فقہ کی دولت ملی اور اس فن پر عبور مسل کیا تو آپ نے اس پر افخر نہیں کیا۔ ہاں فقہ ان پر ناز کرتی تھی۔ راتوں کی تناہیوں میں ان جیسا کی رائم اور عالم نہیں و کھا۔ آپ ساری رات بیدار رہتے تھے اور دن کے وقت درس و تدریس میں سے اس ہوتے۔

\*\*\* \*\*\* \*\*\*\* \*\*\*\* \*\*\*

### باب دهم

### امام ابوحنیفہ طالعے کی دنیا سے بے نیازی

سل بن مزاحم ملالیہ فرماتے ہیں کہ اللہ تعالی نے امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے سے دنیا کے تمام خزانے کھول دیے گر آپ نے انہیں قبول نہ فرمایا۔ آپ کو برے برے منصب کے گر آپ نے انہیں ٹھرا دیا بلکہ اس انکار پر آپ نے کوڑے برداشت کر لیئے گر شاہی سے قبول نہیں کیئے۔ خارجہ بن منصور فرماتے ہیں کہ خلیفہ عباسی منصور نے ایک دن حضرت امام ابوسے رضی اللہ تعالی عنہ کو بلایا کہ دربار آگر اپنا انعام حاصل کریں۔ حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی ممرے پاس تشریف لائے اور مشورہ لینے گئے کہ آگر میں خلیفہ کا انعام رد کردوں تو ناراض ہو گئے کہ آگر میں خلیفہ کا انعام رد کردوں تو ناراض ہو گئے کہ قبول کر لوں تو میرے ضمیر کے خلاف ہے، میں نے عرض کی، حضور! بیہ رقم منصور یا اس کے دربار یوں کے سامنے بہت برا انعام ہے۔ آپ کو وہاں بلایا جائے تو آپ کمہ دینا کہ یہ انعام اتنا برا کہ میری بساط سے زیادہ ہے۔ آپ وہاں گئے تو اس انداز سے انکار کیا کہ یہ انعام خلیفہ نے اپنے ہیں رکھ لیا اور آپ خالی ہاتھ واپس آ گئے۔ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی عادت تھی کہ وہ مے۔ مورا کسی سے مشورہ نہیں لینے بھے۔

حسن بن ابی مالک اپنے والد سے روایت بیان کرتے ہیں کہ ایک بار ابوجعفر منصور ( طبقہ عباس) اور اس کی بیوی حرہ کے درمیان اختلاف ہوا تو نوبت جھڑے تک جا پنجی۔ ابوجعفر نے اس عورت سے رخ موڑ لیا اور بولنا چالنا بند کر دیا۔ اس بیوی نے عدالت میں انصاف کا مطالبہ کیا اور کہ اسے بھی دو سری بیویوں اور کنیزوں جیسا حسن سلوک ملنا چاہئے۔ ابوجعفر نے اسے کہا تم سمی قاضی یا عالم دین کا فیصلہ قبول کروگی تاکہ اسے بلا کر تصفیہ کرا لیا جائے۔ اس نے امام ابوحنیفہ رہے اللہ تعالی عنہ کو اس خاتھ

معالمہ کا فیصل مان کر بلایا۔ خلیفہ کی المیہ پردہ کے پیچے بیٹھ گئی۔ خلیفہ نے امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عدہ سے کہا کہ ایک آزاد مرد کتنی عورتوں سے نکاح کر سکتا ہے؟ آپ نے فرمایا صرف چار سے۔ آپ نے فرمایا کتنی لونڈیاں رکھ سکتا ہے؟ آپ نے فرمایا' جتنی جی چاہے۔ خلیفہ نے بوچھا' کیا اس مسئلہ میں علماء کا اختلاف ہیں۔ میں علماء کا اختلاف ہیں۔

اب خلیفہ معور نے بردے کے پیچے بیٹی ہوئی بوی کو کما تم نے من لیا اب تو حمیس يرے ساتھ الحفا زيب نہيں ويا۔ اس كى زوجہ نے كما ميں نے سارى بات سن لى ہے۔ اب امام مع منیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے فرمایا۔ چار عورتوں سے نکاح جائز ہے کیکن اگر وہ انصاف اور عدل نہ ر سکے تو صرف ایک بیوی پر ہی اکتفا کرے گا۔ قرآن نے کما ، ب فان خفتم ان لا تعدلوا فواحدة " أكرتم انصاف و عدل نهيس كريكة تو ايك بي بيوي پر اكتفا كرو-" بيه بات من كر خليفه معنوش ہو گیا اور کافی دریہ تک گم صم رہا۔ حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ تو مسئلہ بیان کر کے یے گئے۔ امام صاحب گھر پنیج تو خلیفہ کی اہلیہ کا ایک خادم آپ کے گھر پہنچا اور اس کی طرف سے ا تھیلیاں جو زر و جواہر سے بھری ہوئی تھیں بیش کیں۔ ان میں بچاس ہزار درہم تھے۔ اس نفذی کے ساتھ ایک لباس فاخرہ اور ایک نهایت ہی خوبصورت لونڈی اور سواری کے لیئے ایک مصری کھوڑا ا۔ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے اس خادم کو کما' میری طرف سے اپنی مالکہ کو سلام کمنا اور المناجس نے جو کچھ کما تھا محض رضائے اللی کے لیئے کما تھا' یہ میرا دینی فرض تھا۔ میں اس مسئلہ کے کے ونیا کی کوئی نعمت اور مال و دولت کینے کو تیار نہیں ' میری دولت میرا دین ہے۔ خادم جو کچھ لایا 📰 والیس لے گیا اور ساتھ ہی آپ کے خیالات بھی سائے اور کما آپ نے ان چیزوں کو دیکھ کرنہ سرت کا اظهار فرمایا أور نه ماته برهایا اور سارا مال و متاع واپس كرديا-

ابراهیم بن عبراللہ خلال بتاتے ہیں کہ ایک دن ہم عبراللہ بن مبارک روائیہ کے پاس بیٹھے ان کی مجلس میں امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کا تذکرہ ہوا۔ آپ نے فرمایا تم لوگ اس مخص اللہ تعالی عنہ کا تذکرہ ہوا۔ آپ نے فرمایا تم لوگ اس مخص اللہ کے اس کی بن نصر فرماتے ہیں است کرتے ہو جس نے تمام دنیوی وسائل اور مال و دولت کو محکرا دیا۔ یکی بن نصر فرماتے ہیں محرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کسی سے قرض لینا بھی پند نہیں کرتے تھے۔ ایک دفعہ سے اللہ مناور کرویا کہ ان پر المومنین خلیفہ عباسیہ نے دو سو دینار انعام پیش کیئے تو آپ نے یہ کمہ کرنامنظور کرویا کہ ان پر

میرا کوئی استحقاق نہیں۔ ایک بار انہی کی بن نفرنے فرمایا کہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سیرا کوئی استحقاق نہیں۔ ایک بار انہی کی بن نفرنے قصے۔ جس طرف آپ کی طبیعت کا میلان ہو آ اور سے سی میں سب سے احسن طریقہ پر ربنا پند کرتے تھے۔ جس طرف آپ کی طبیعت کا میلان ہو آ اور سے سی اور شب بیداری میں بڑھ چڑھ کر نظر آتے۔ ایک دن امیرالمومنین نے آپ کے لیئے ایک نمایت خوبصورت لونڈی بھیجی گر آپ نے قبول نہ کی اور کہا کہ میں تو اپنے کام اپ سے کی خلیفہ' امیریا رئیس سے درہم و دینار کا انعام قبول سے کیا۔ سارے اشراف عرب میں آپ کا مقام بلند رہا۔

زید بن ابی الزرقا مالیج نے فرمایا کہ کسی نے امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ ہے عرش کے آپ کو دنیا چیش کی جاتی ہے گر آپ اسے قبول نہیں فرماتے حالانکہ آپ ایماندار ہیں اور آپ کا ہے۔
ہے۔ آپ نے فرمایا' میں نے اہل و عیال کو اللہ کے سپرو کر رکھا ہے۔ وہ ان کا خود کفیل ہے۔ کا ذاتی خرچ دو درہم ماہانہ ہے میں اپنی ضرورت سے بڑھ کر کیوں لیتا پھروں۔ پھریہ لوگ مجھے انعام ہے۔
ہیں وہ تو خود اللہ کے سامنے سوالی ہیں اور جوابدہ ہیں۔ اللہ تعالیٰ تو ہر ایک کو براہ راست رزق ہے اور رزق تو آنی جانی چیز ہے۔ مطبع کو بھی ملے گا اور ہے۔ اور رزق تو آنی جانی چیز ہے۔ مطبع کو بھی ملے گا اور ہے۔ کہی ملے گا اور ہے۔ کہی ملے گا اور ہے۔ کہی ملے گا۔ نیک کو بھی ملے گا ور ہے۔ کہی ملے گا اور ہے۔ کہی ملے گا اور ہے۔ کہی ملے گا۔ نیک کو بھی ملے گا ور ہے۔ کہی ملے گا۔ نیک کو بھی ملے گا۔ پھر آپ نے یہ آیت کریمہ پڑھی۔ دفن السما، رز قسکم وما تو عدون ہے۔

امام حسن بن زیاد علینی نے فرمایا بخدا امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے زندگی بھر سی اللہ تعالیٰ عنہ نے زندگی بھر سیام ابو حنیفہ اللہ تعالیٰ عنہ کا ذکر ہوا تو آپ نے فرمایا الیے صخص کی کیا بات کرتے ہو جس کے سامنے شاہی خصص کی کیا بات کرتے ہو جس کے سامنے شاہی خصص کی کیا بات کرتے ہو جس کے سامنے شاہی خصص سے بہت سا مال وُحِرِ کر ویا گھر آپ نے اسے قبول نہ کیا بلکہ اس مال کی طرف ایک نگاہ بھر کر گئی دیکھا۔ اس پر ان کو کو ڑے مارے گئے 'گر آپ نے برداشت کر کے صبر کیا۔ اپنا ہاتھ نہ بھیلایا سے مصائب کو برداشت کیا گرمال و متاع کو قبول نہ کیا۔ آپ نے بھی دل میں آرزو بھی نہیں کو دنیا کا مال بادشاہی انعامت ان کے سامنے آئیں۔ حالا نکہ لوگ ان چیزوں کے لیئے سو سو بھن اور سے کرتے ہیں۔ بخدا آپ ان تمام علماء کے بر عکس تھے جنہیں آج ہم انعامات کے لیئے دوڑ آ دیکھے سے لوگ ویا کے طالب ہیں' دنیا ان سے بھاگتی ہے۔ گر امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ وہ شے کہ ان کے پیچھے آتی تھی تو آپ اس سے دور بھاگتے تھے۔

سل بن مزاحم والله فرمایا کرتے تھے کہ ہم امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عند کے گھرجاتے تو امراء کے ساز و سامان کی بجائے ہم چٹائیوں پر بیٹھتے تھے۔ امام عبدالرزاق نے بتایا کہ میں نے جب بھی حضرت امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عند کو دیکھا تو آپ کی آئیھیں تر ہوتیں اور چرہ خوف خدا سے خوفزدہ ہوتا۔

ایک مخص حضرت امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے ایک دوست کا سفار شی خط لے کر آیا کہ آپ حال خط کو بری توجہ سے پڑھا کیں۔ آپ نے اسے فرمایا کہ علم نہ سفار شوں سے طلب کیا جاتا ہے۔ اللہ تعالیٰ نے علماء سے بہ میثاق جاتا ہے۔ اللہ تعالیٰ نے علماء سے بہ میثاق (عمد) لیا ہے کہ وہ لوگوں کو علم سکھا کیں اور اس علم کے سکھانے میں کسی چیز میں بخل نہ کریں۔ پھر وین کا علم کسی خاص فرد طبقہ کے لیے نہیں ہوتا بلکہ ہر ایک کے لیے ہوتا ہے۔ مگر خوش نصیب وہ انسان ہوتا ہے جو علم حاصل کرنے کے لیے محنت کرے اور یہ اسے عنایت ہوتا ہے جے اللہ چاہتا اللہ عالیٰ ہوتا ہے جو اللہ عالیہ عاصل کرنے کے لیے محنت کرے اور یہ اسے عنایت ہوتا ہے جے اللہ عالیہ اللہ عالیہ ہوتا ہے جے اللہ عالیہ اللہ عالیہ ہوتا ہے جو اللہ عالیہ عاصل کرنے کے لیے محنت کرے اور یہ اسے عنایت ہوتا ہے جے اللہ عالیہ اللہ عالیہ ا

محر بن مقاتل رائی سے حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ اور سفیان توری مائیہ کے متعلق بوچھا گیا تو آپ نے فرمایا کہ جو اہتلا دیکھ کر بھاگ جائے وہ اس شخص کا مقابلہ کیے کر سکتا ہے جو حق بات پر کوڑے کھائے (یہ بات قاضی القصاء کے منصب قبول کرنے کے متعلق تھی۔)

### منصب قضاة (عهده چيف جسٹس) سے انكار

حمیری نے اپ والد گرامی ہے یہ واقعہ نقل کیا ہے کہ جب خلیفہ منصور عبای نے حضرت اللہ اعظم رضی اللہ تعالی عنہ کو کوفہ ہے بغداد بلایا تو مجھے بھی آپ کے ساتھ ہی طلب کیا گیا۔ حضرت اللم ابو حفیفہ رضی اللہ تعالی عنہ بغداد آئے تو خلیفہ نے آپ کو اپ گر بلایا۔ میں نے دیکھا کہ حضرت الم ابو حفیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے چرے کا رنگ فتی ہوا جا رہا ہے میں نے وجہ بوچھی تو آپ نے فرہایا مجھے ایک کڑے امتحان سے گذرتا ہے۔ جب آپ منصور کے گھر گئے تو میں بھی ساتھ تھا آپ کو خلیفہ عبای منصور نے علیمرگی میں بلایا۔ آپ باہر تشریف لائے تو میں نے بوچھا کہ منصور نے آپ کو خلیفہ عبای منصور نے علیمرگی میں بلایا۔ آپ باہر تشریف لائے تو میں نے بوچھا کہ منصور نے آپ کے لیے کے کیا کہا ؟ آپ نے بتایا کہ منصور نے سلطنت اسلامیہ کا چیف جسٹس ( قاضی القضاہ ) بننے کے لیے

منافب امام اعظم ۲۳۰ مکتب از

كما ين نے اے كماكہ مجھ ميں اس منصب كى صلاحيت نبيں ہے۔ ميں تے انسين جاياكہ القصاة وہ مخص ہو سکتا ہے جو آپ ہر' آپ کے رشتہ داروں بر' آپ کے امراء اور رؤسا بر ایس اولاد پر اور آپ کے مشیروں پر اپنا فیصلہ سا سکے۔ آپ مجھے منصب قضاہ پر بٹھاتے ہیں۔ آپ ا منیں کر سکیں گے اور میرا ول چاہتا ہے کہ میں آپ کے اس منصب سے دور چلا جاؤں۔ منصور کما کہ جمارا انعام اور ہدیہ کیوں قبول نہیں کرتے یہ جسارت توہین شاہی میں آتی ہے۔ میں گ حضور! اگر آپ مجھے ذاتی جائدادے مدید یا انعام دیں تو منظور ہے لیکن اگر آپ بیت المال (سر الله خزانے ) ے دینا چاہتے ہیں تو اس میں سے کھ لینا میرے لیئے جائز نہیں۔ بیت المال کے خرا کے حقد ار تو لاکھوں دو سرے لوگ ہیں۔ اگر آپ ان سب کو انعام و اکرام عنایت کریں تو مجھے 🍮 اتنا انعام ویں تو مجھے کوئی انکار نہیں۔ بیت المال سے وہ مخص حصہ لے سکتا ہے جو جماد میں مصوف ہو۔ میں میدان جماد میں مجھی شیں گیا۔ میرے آباؤاجداد میں سے بھی کی نے جماد میں حصہ شیں ا کہ میں ان کا جانشین بن کر اپنا حصہ ( پنشن ) بیت المال سے لوں۔ میں فقیراور مسکین بھی نہیں کے میری کفالت کے لیئے بیت المال سے مال دیا جائے۔ آپ براہ کرم چند روز صبر کریں آپ کے اس بت سے علاء کرام آئیں مے جو اس منصب کی تمنا بھی کریں مے اور امور سلطنت پر آپ کی مرافق کے مطابق فیصلہ بھی دیا کریں گے۔

عبدالعزیز بن عصام فراتے ہیں کہ حضرت امام ابو حنیفہ نے رضی اللہ تعالی عنہ منصب قفۃ قبول کرنے ہے انکار کر دیا تو منصور کو بڑا غصہ آیا۔ اس نے بھم دیا کہ آپ کو ہیں درے (کوڑے) مارے جائیں۔ آپ کے جم سے خون بہتے بہتے ایڑیوں تک جائیں۔ آپ کے جم سے خون بہتے بہتے ایڑیوں تک جائیں۔ آپ کے جم سے خون بہتے بہتے ایڑیوں تک جائیں۔ آپ کے جم بال کھڑا تھا۔ اس نے منصور تک جائیں جا جلا کے باس منصور کا چچا عبدالعمد بن علی بن عبداللہ بن عباس کھڑا تھا۔ اس نے منصور سے کہا تم نے یہ کیا کیا 'تم نے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے جم پر کو ڑے مار کر اپنی سلطنت کے جم پر ایک لاکھ تکواروں کے زخم لگا دیتے ہیں۔ جہیں معلوم نہیں ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے جم پر ایک لاکھ تکواروں کے نقیہ ہیں ؛ بلکہ اہل مشرق کے فقیہ ہیں !

کوڑے مارنے کے بعد منصور سخت نادم ہوا۔ اپنی غلطی کی حلاقی کے لیئے آپ کو دوبارہ طلب کیا اور آپ کو بیس ہزار درہم پیش کیئے تاکہ ان کو ژوں کی حلاقی ہو سکے۔ عبدالعزیز فرماتے ہیں کہ سے

ورہم آج کے لاکھوں ورہموں کے برابر ہیں۔ آپ نے یہ سارے درہم لینے سے انکار کردیا اور منصور نے کہا انہیں لے کر فقرا میں تقلیم کر دیں۔ آپ نے فرمایا' آپ خود تقلیم فرمائیں' آپ ان کے مالک ہیں۔ یہ فقرا اور غرباء کا حق ہے۔ گر میرے لیئے کی صورت میں طال نہیں۔

ابو بكر عتيق بن داؤد يمانى فرماتے ہيں كہ ابن ابى ليل نے فرمايا كہ دنيا كے اسباب ہمارے اور الم ابو حنيفہ رضى اللہ تعالی عنہ كے سامنے آئے 'ہم نے تو آگے بردھ كر ان اسباب اور انعامات كو اشھا ليا عمر المام ابو حنيفہ رضى اللہ تعالی عنہ نے ان اسباب كو مېر اٹھا كر ديكھا اور فيصله كيا يہ چيزيں تو نمايت حقير ہيں۔ انہوں نے ٹھرا ديا ہم دنيا كے اسباب كو جمع كيا اور بردے امراء اور رؤساء كى صف ميں كرے ہو گئے 'گر امام ابو حنيفہ رضى اللہ تعالی عنہ نے امور آخرت كو ترجيح دى اور دنيا سے منہ موڑ كر صرف آخرت كو ترجيح دى اور دنيا سے منہ موڑ كر صرف آخرت كو ترجيح دى اور دنيا سے منہ موڑ كر صرف آخرت كو ترجيح دى اور دنيا سے منہ موڑ كر صرف آخرت كو ترجيح دى اور دنيا ہے منہ موڑ

فراج كل عظيمة عوصاء فى حالى السراء والضراء لم يخش قط بوائق الخلفاء حتى رموه بفتنة خشناء احد الى الصفراء والحمراء لله در ابی حنیفة انه قویت براجمه علی اختالتقی فی حله والعقد راقب ربه قد هدوه فی القضاء فلم یکن صفرت یداه ولم یجده مائلا

صلبت معاجم دینه فی ردها لله وهسی مظنة الاغواء

ر جمه ) " الله تعالی امام ابو صنیفه رضی الله تعالی عنه کو این انعابات سے نوازے جنہوں نے مشکل سے مشکل کام کو نباہا۔ آپ تقویٰ میں نمایت قوی سے اور دکھ درد میں مکسال رہتے ہے۔ پر دکھ اور خوشی میں الله کی رضا کو ترجیح دیا کرتے۔ بادشاہان وقت ( خلفائے عبابیه ) کی پیدا کردہ سے اللہ کا دُٹ کا مقابلہ کرتے تھے۔ آپ کو منصب قضاۃ قبول کرنے لیئے بڑا دباؤ ڈالا گیا والا کیا دھمکایا گیا خوف زدہ کیا گیا گھر آپ کی طبیعت پر ذرہ بھر اثر نہ ہوا۔ برے بوے انعابات پیش

کیئے گئے ' طرح طرح لللج دیا گیا گر آپ ہر مقام سے خالی ہاتھ اٹھے اور بھی بھی دنیاوی کے سونا ویا گئے گئے ' طرح طرح اللہ دیا گیا گر آپ ہر مقام سے خالی ہاتھ اٹھے اور بھی بھی دنیاوی کہ سونا ویا نہ ہوئے۔ دینی امور کی وضاحت میں آپ کے اعضاء اسے قریب کہ بھی بھی کہیں ذاتی خواہشات کو سامنے نہیں رکھا۔ صرف اللہ کی رضا پر کاربریم رہے۔ آپ مسئلہ میں رد اور مقبولیت محض اللہ کے احکام کی اتباع کے لیئے تھا۔

\*\*\*\* \*\*\* \*\*\* \*\*

## امام ابوحنیفہ امانت اور مروت کے گوہ گرال تھے

بلیح بن وکیع مرافیہ بیان کرتے ہیں کہ میں نے اپنے والد محترم سے سنا وہ فرمایا کرتے تھے '
بخدا! امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ عظیم امانت وار تھے۔ ان کے ول میں اللہ تعالیٰ کی شان اور اس کا خوف جلوہ کر تھا۔ وہ اس کی رضا پر کسی چیز کو ترجیح نہیں دیتے تھے۔ اگر انہیں راہ حق میں تکواروں کی دھاریں گھیر لتیں تو وہاں بھی ثابت قدم رہتے تھے۔ وہ تکواروں کے وار تو جھیل لیتے تھے مگر اللہ تعالیٰ کی رضا کے خلاف بات نہ کرتے۔ خطیب البغدادی بھی اپنی تاریخ میں اس قتم کے تاثرات کا اظہار کرتے ہیں۔

محد بن ابی عبدالرحل مسعودی برائی نے بھی اپنے والدے بیان کیا ہے کہ میں نے زندگی بھر امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے بڑھ کر امانت کی حفاظت کرنے والا کسی کو نہیں دیکھا۔ آپ جس وان فوت ہوئے تو لوگوں کے بچاس ہزار درہم بطور امانت موجود تھے۔ ان میں سے ایک درہم کی بھی خیانت سامنے نہیں آئی۔

جعفر بن عون عمری ریافیہ فرماتے ہیں کہ میرے ہوتے ہوئے امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ
کے کاروباری مرکز پر ایک عورت آئی اور اس نے آپ سے گرال قیمت ریٹی کپڑا طلب کیا۔ آپ
نے اسے ایک کپڑا دکھایا' اس عورت کو کپڑا تو بہت بہند آیا گر کھنے گئی میں ایک غریب اور ضعیف عورت ہوں' میرا یہ کپڑا خریدنے کو جی چاہتا ہے گر آپ اس پر نفع نہ لیس تو میں خرید لول' صرف اسل قیمت دے عتی ہوں۔ آپ نے فرمایا' اچھا چار درہم میں لے جاؤ۔ عورت نے کما میں ایک اور می ہوں۔ میرے ساتھ نداق تو نہ کریں آپ نے اسے بتایا۔ میں نے دو کپڑے خریدے تھے ان اور می ایک عراجیا چار درہم کا فروخت کردیا ہے اور یہ اصل قیمت سے بھی کم پر بچا تھا۔ اب تم بھی

افت امام اعظم

چار' درہم کا لے جاؤ۔ میں اصل قیمت پر نفع کے بغیر تہیں دے رہا ہوں' یہ نداق شیں ہے حقیقت ہے۔ ہے۔

ام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ ریٹی کپڑے کے ایک عظیم آجر تھے۔ کوفہ اور دوسرے شہوں کی منٹریوں میں آپ کا اعتاد قائم تھا۔ آپ کے پاس ایک فخص آیا اور عرض کی جھے ریٹی کپڑوں کی ضرورت ہے۔ آپ نے فرمایا کیما رنگ پند کو گے ؟ اس نے کئی پندیدہ رنگ بتا گا آپ نے فرمایا تھمریتے آگر کمیں ہے ایسے رگوں کے کپڑے آگئے تو میں تممارے لیئے خرید لوں گھد دوسری صبح تک اس رنگ کا کپڑا مل گیا' وہ فخص آپ کی دکان کے سامنے ہے گزرا تو آپ نے اللہ کر فرمایا تمماری عرضی کا کپڑا آگیا ہے' اس نے کما و کھائے۔ کپڑا و کھا تو اسے پند آگیا۔ قبت بوچی اور کما میں اے اپنے غلام کے لیئے خرید رہا ہوں۔ آپ نے کما اس کی قبت ایک دینار ہے۔ اس فخص نے کما آپ میرے ساتھ نمات کر رہے ہیں یہ تو بہت قبتی کپڑا ہے' آپ جھے بہت کم اس فخص نے کما آپ میرے ساتھ نمات کر رہے ہیں یہ تو بہت قبتی کپڑا ہے' آپ جھے بہت کہ قبت بیا رہے ہیں۔ آپ نے فرمایا' میں نمات نمازی کر وہ ہیں ہے تو بہت قبتی کپڑا ہے' آپ جھے بہت کم شرف ایک وینار رہ گیا ہے بس اس کی قبت ایک وینار ہی ہے۔ پھر جھے یہ بھی خیال ہے کہ ایک صرف ایک وینار رہ گیا ہے بس اس کی قبت ایک وینار ہی ہے۔ پھر جھے یہ بھی خیال ہے کہ ایک ورست نے اپنے غلام کے لیئے لینا ہے اس کا تو خصوصی خیال وصوست سے کیا نفع لینا ہے۔ پھر جس ووست نے اپنے غلام کے لیئے لینا ہے اس کا تو خصوصی خیال رکھنا ہے اسے لے جائے۔

نضر بن محمد ملیلی فرماتے ہیں کہ ایک شخص ابن ابی لیلی کے پاس آیا اور آکر کہنے لگا الم ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ نے فلال شخص کا مال پیچنے کے لیئے اپنے بیٹے کو دے دیا ہے حالا تکہ ہے مال اس نے آپ کے پاس امانت کے طور پر رکھا تھا۔ اس شخص نے ایک قاصد حضرت امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ کے پاس بھیجا اور صور تحال سے آگاہ کیا اور آپ کو بتایا کہ آپ نے فلال شخص کی اللہ تعالی عنہ کے پاس بھیجا اور صور تحال سے آگاہ کیا اور آپ کو بتایا کہ آپ نے فلال شخص کی امانت اپنے کاروبار میں لگا دی ہے۔ آپ نے فرمایا کوگوں نے بیہ بات یو نمی اڑا دی ہے۔ اس کی امانت بوں کی توں میرے پاس محفوظ بڑی ہے اور اس پر اس طرح مر لگی ہوئی ہے۔ آپ آگر زیادہ تقدیق چاہیں تو امانت دین کی اگر چہ بیہ بات درست ہے مگر جمیں جا کر دیکھ لیں۔ ابن ابی لیلی نے کہا کہ آگر چہ سے بات درست ہے مگر جمیں جا کر دیکھ لین چاہئے۔ جب لوگ آئے تو آپ کے مال خانہ میں وہ امانت جوں کی درست ہے مگر جمیں جا کر دیکھ لین چاہئے۔ جب لوگ آئے تو آپ کے مال خانہ میں وہ امانت جوں کی

توں موجود پائی جس پر اس کی مر کلی ہوئی تھی۔ اس واقعہ کو دیکھ کرسب کو ندامت ہوئی۔

مسر بن عبدالمالک نے بیان کیا ہے کہ امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ ریشی کیڑوں کی خرید و فروخت کیا کرتے تھے۔ آپ کے پاس ایک شخص آیا اور عرض کی میرے پاس ریشی کیڑا پڑا ہے آپ خرید لیس۔ آپ نے اس کی قبت پو تھی تو اس نے ایک ہزار درہم بتائی۔ آپ نے فرمایا کہ مجھے محسوس ہو تا ہے کہ ایسے کیڑے کی قبت اس سے کمیں زیادہ ہے۔ میں اسے دو ہزار درہم پر خرید نے کے لیئے تیار ہوں۔ اس نے کما چاو دو ہزار درہم پر سودا طے ہو گیا۔ اس نے کما حضرت میں نے بعول کر آپ سے ایک ہزار مانگ لیا تھا حقیقت سے کہ میں نے سے مال دو ہزار میں خریدا تھا گر بھول کر آپ سے ایک ہزار مانگ لیا تھا حقیقت سے کہ میں نے سے مال دو ہزار میں خریدا تھا گر بھول کر آپ نے ایک ہزار مانگ لیا تھا حقیقت سے کہ میں نے سے مال دو ہزار میں خریدا تھا گر بھول گیا تھا۔ آپ نے فرمایا بھر تو میں اس تین ہزار درہم پر خرید لوں گا تا کہ خمیس اس مال سے منافع طے۔ الغرض کیڑا خرید لیا گیا چند دنوں بعد کی گیڑا چار ہزار دینار میں بکا۔ سے نفع آپ کی منافع طے۔ الغرض کیڑا خرید لیا گیا چند دنوں بعد کی گیڑا چار ہزار دینار میں بکا۔ سے نفع آپ کی وجہ سے تھا۔

کی واقعہ شداد بن کیم رواج نے جو بلخ کے ائمہ میں سے تھے بیان کیا ہے، گرانہوں نے بین کیا کہ اور بھی اللہ تعالی عند نے کہا میں ایک ہزار درہم پر خرید تو لیتا ہوں گر جھے اندازہ ہے اس کی قیمت زیادہ ہے، اگر تم چاہو تو میں زیادہ قیمت اداکر دول گر جھے پہلے یہ بتاؤکہ اس کی اصل قیمت کیا ہے؟ اس نے بتایا کہ چار سو درہم' اس کیڑے پر سودا بازی ہوتی گئ تو قیمت ایک ہزار درہم تک جا بہنی اور یہ کیڑا خرید لیا گیا۔

### الانتول كابي امثال محافظ

محر بن الفضل بن عطیه را بی عطیه فراتے ہیں کہ جب حضرت امام ابوصنیفه رضی الله تعالی عنه کا وسال ہوا تو آپ کے پاس لوگوں کی بچاس لاکھ دینار کی امانتیں تھیں جنہیں آپ کے بیٹے حضرت حماد کے ان لوگوں کو لوٹا دیں۔

عبد العزیز بن خالد صغانی علاقہ صغان کے امام تھے۔ انہوں نے امام اعظم ابو حنیفہ رضی اللہ اللہ عنہ سے فقہ پڑھی تھی وہ فرماتے ہیں جب مجھے صغان میں عروج ملا تو میں نے ایک نمایت ہی حسین و جمیل کنیز امام اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے پاس بطور امانت پیش کی میں جج پر گیا تو ایک عرصہ

PERIODICA P

تک واپس کوفہ نہ آسکا۔ جب آپ کے پاس حاضر ہوا تو میں نے دریافت کیا حضور میری کنرے کے گئے۔
کی کیسی خدمت کی۔ آپ نے فرمایا میں نے مجھی اس سے کوئی کام نہیں لیا اور نہ ہی اسے آگھ ۔
کر دیکھا' یہ آپ کی امانت تھی۔

امام ابو احمد عسكرى موليته فرماتے ہيں كہ جب امام ابوطنيفہ رضى اللہ تعالىٰ عنہ كو ظيف مسلم منصور كے پاس بلايا گيا تو اس نے آپ كی بے پناہ عزت كی اور احزام كيا اور پحر عظم ديا كہ اشيں ہزار دينار ديئے جائيں۔ منصور نے ایک درباری حسن بن تحطبہ كو عظم ديا كہ بيہ انعام حضرت الم گرجا كر پيش كيا جائے۔ اس وقت سے حضرت امام نے بات كرنى چھوڑ دى، حسن آپ كے گھر ہے آپ خاموش رہ وہ انعام آپ كے پاس چھوڑ كر ظلا گيا۔ حضرت امام نے ان ديناروں سے اللی نیازی افقيار كی كہ اپنے تصرف بين اللے كي بيان چھوڑ كر ظلا گيا۔ حضرت امام نے ان ديناروں سے اللی کا وصال ہوا تو آپ كے صاحبزاد سے حضرت حماد روائي کو فيہ ميں موجود نہيں تھے آپ آئے تو وہ روپ كا وصال ہوا تو آپ كے صاحبزاد سے حضرت حماد روائي کو فيہ ميں موجود نہيں تھے آپ آئے تو وہ روپ دينار) وہاں موجود بائے ان ميں اٹھايا اور حسن بن تحطبہ كے پاس لے گئے اور فرمانے لگے ہيں۔ حسے والد كے وصيت نامہ ہيں لکھا پايا ہے كہ دس ہزار دينار بطور امانت دفن كر ديئے گئے ہيں۔ حسے السے والد كے وصيت نامہ ہيں لکھا پايا ہے كہ دس ہزار دينار بطور امانت دفن كر ديئے گئے ہيں۔ حسے نوالد كے وصيت نامہ ہيں لکھا پايا ہے كہ دس ہزار دينار بطور امانت دفن كر ديئے گئے ہيں۔ حسے نوالد كے وصيت نامہ ہيں لکھا پايا ہے كہ دس ہزار دينار بطور امانت دفن كر ديئے گئے ہيں۔ حسے نوازے وہ اپنے دين كے اس خفيل كو ديكھا تو كہنے گئے جماد اللہ تعالى تيرے والد كو اپنی رحمت سے نوازے وہ اپنے دين كے اس خصور ختے اور دنيادى آلائشوں سے كئے دور تھے۔

خارجہ بن مصعب رالیے فرماتے ہیں کہ جب میں جج پر گیا تو اپنی ایک لونڈی حضرت الله الوصنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے پاس چھوڑ گیا' میں چار ماہ کے بعد واپس کوفہ آیا تو امام صاحب پوچھا حضور! اس لونڈی نے آپ کی کمیسی خدمت کی اور اس کے عادات و اخلاق کیے تھے۔ آپ فرمایا جس نے قرآن پڑھا ہو' علال و حرام کو جانتا ہو اس پر لازم ہے کہ خود ہی فتنوں سے محفظ رہے۔ بخدا! میں نے آج تک اے آگھ اٹھا کر بھی نہیں دیکھا۔ وو سری طرف میں نے اس لوعث سے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے اخلاق اور عادات کے بارے میں پوچھا تو کئے گئی میں نے اس جیسا مخص آج تک نہیں دیکھا۔ آپ جب سے جھے جھوڑ گئے ہیں میں نے آپ کو نہ بھی بحری سوتے ہوئے دیکھا ہے نہ علی جن بارے میں اور کرتے ہیں میں نے آپ کو نہ بھی بحری سوتے ہوئے دیکھا ہے نہ علی جناب کرتے ساری رات عبادت کرتے 'جمعہ کے دن گھر میں شی سے نکانے اور نماز جمعہ ادا کرنے چلے جاتے' جمعرات کو ساری رات عبادت کرتے' جمعہ کے دن گھر میں شی

چاشت کی نماز ادا کرتے 'مجد کے عسل خانوں میں عسل کرتے ' مربر تیل لگاتے ' میں نے انہیں بھی افظار کرتے نہیں دیکھا۔ رات کے پچھلے جھے خود ہی اٹھتے اور سحری کے طور پر پچھ کھا لیتے۔ اپنے مصلے پر ہی چند لحات آرام کرتے اور سو جاتے ' پھروضو کرکے نماز ادا کرتے۔

ہم نے جس خارجہ بن معصب کی بات کہی ہے وہ اہل سرخس کے امام تھے۔ علم حدیث اور فقہ میں اپنی مثال تھے۔ فقہ سے فارغ ہو کر فقہ میں اپنی مثال تھے۔ فقہ میں امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے شاگر دہتے۔ فقہ سے فارغ ہو کر خراسان چلے گئے اور دو سرے علوم کی مخصیل کے لیئے ایک ہزار علماء کرام سے استفادہ کیا۔ حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ ان سے بعض امور میں مشورہ لیا کرتے تھے اور ان کی رائے کو دانشمندانہ باتے۔ ہم نے ان کے چند اقوال حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے حالات میں قلم بند کیئے ہیں اور ان کی بصیرت افروز باتیں بائیسویں باب میں آئیں گی۔

وکیع بن الجراح فرماتے ہیں میں حضرت امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی خدمت میں بیٹا تھا کہ ایک عورت آئی' اس کے پاس ایک نمایت ہی نفیس ریٹی کپڑا تھا اور عرض کی آپ اس فروخت کر دیں۔ آپ نے پوچھا اس کی قبت کیا ہے ؟ اس نے کما کہ جتنے کا بک جائے بی دینا۔ گر میرا خیال ہے کہ ایک سو درہم کا تو ہو گا۔ آپ نے دیکھ کر فرمایا' یہ سو درہم سے زیادہ کا ہے' تم مجھے تا کتنے کا بیچوں۔ اس نے کما اچھا دو سو درہم کا بیچ دینا۔ آپ نے فرمایا اس سے زیادہ کا معلوم ہو آ ہے۔ اس نے کما اچھا تو سو درہم کا بیچ دینا۔ آپ نے باتھ میں لے کر گما مجھے تو اس کی قبت سے ۔ اس نے کما اچھا چورت نے کما آپ تو میرے ساتھ نداق کر رہے ہیں۔ آپ نے فرمایا تم بازار میں جا کر کمی خریدار کو بلا کر لاؤ۔ وہ ایک دکاندار کو لے آئی تو اس نے وہی ریٹمی کپڑا فرک کھڑے سو درہم میں خرید لیا اور وہ عورت یا نے سو لے کر چلی گواس نے وہی ریٹمی کپڑا گھڑے کھڑے کھڑے کو سو درہم میں خرید لیا اور وہ عورت یا نے سو لے کر چلی گئے۔

ایک دیماتی نے آپ کے پاس ایک لاکھ ستر ہزار درہم بطور امانت رکھے مگروہ فوت ہوگیا۔
س نے کی کو بتایا بھی نہ تھا کہ میں نے اس قدر رقم امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے پاس رکھی
ہے۔ اس کے چھوٹے چھوٹے بچے تھے۔ جب وہ بالغ ہوئے تو امام ابو جنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے
سیس اپنے پاس بلایا اور ان کے باپ کی ساری رقم لوٹا دی اور فرمایا سے تمہمارے والدکی امانت تھی۔
سیس اپنے پاس بلایا اور ان کے باپ کی ساری رقم لوٹا دی اور فرمایا سے تمہمارے والدکی امانت تھی۔
سیس نے امانت لوٹاتے کی کو گواہ بھی نہ بنایا تاکہ لوگوں کو اتنی خطیر رقم کا علم نہ ہو اور انہیں تھگ نے

C) MASSA

-05

ان الا مانة في الفقبر غناء طوبي لعبد ما استسر خيانة ان يعطه خب العهود صحابه يخشى الا له و ليس يخشى غيره واباحنيفة قد عنيت بمدحتى ادى الامانة حيث لم يره امرؤكم كم كان اسخط نفسه منطلبا كم كم و كم امرته شهوة نفسه

ان همه امر كفاه الله خوف إلاله وان طواه طواه طواه دارت على قطب الوفاء رحاه والله جل احق ان يخشاه اذقد ذكرت نعوته وحلاه لما راى ان الا له يراه من ذى المعارج عفوه و رضاة بلذيذها لكن نهاه نهاه

افلا یکون رضی امینا عالما والمصطفی اعلاه حین کناه

\*\*\*\*\* \*\*\* \*\*\* \*\*

#### بارهوال باب

# امام ابوجنیفہ کاہمسابوں سے حسن سلوک

### ایک سارنگی نواز سے حسن سلوک

حضرت عبداللہ بن رجاء الغرائی میلید فرماتے ہیں کہ امام ابو حقیقہ رضی اللہ نعالی عنہ اپنے ہما لیوں سے حسن سلوک اور رواداری ہیں بے مثال تھے۔ آپ ان کی خاطر قوت برواشت' احسان و مروت کا بے پناہ مظاہرہ فرمایا کرتے تھے۔ آپ کے مکان کے ساتھ ایک گلوکار میراثی رہتا تھا۔ وہ رات بھر سار گلی پر ریاضت کرتا رہتا اور ساری رات سار گلی بجانے ہیں گذار ویتا۔ لوگ اس کی اس میں ووہ عادت سے تنگ تھے اور جب اس کے دوست اس کی طرف توجہ نہ دیتے تو یہ شعر پڑھتا ہے۔

اضاعونی و ایی فتٰی اضاعوا لیوم کریمة وسلاد لا ثغر

(ترجمہ) مجھے میرے دوستوں نے ضابع کر دیا۔ کیے عالی شان نوجوان کو نظر انداز کر دیا گیا۔ میں ان کے دکھ درد میں شریک ہو تا تھا اور ان کی سرحدوں کی حفاظت کیا کرتا تھا۔

وہ ایسے کی اشعار بار بار پڑھتا' ہم نے اس کے کی ایسے اشعار یاد کر لیئے تھے۔ ایک دفعہ کوفہ کی گئے ہے۔ ایک دفعہ کوفہ کی گئے ہیں اسے گرفتار کر کے لے گئی۔ وہ اس حالت میں گرفتار ہوا کہ شراب کے نشے میں مست تھا اور سار نگی ہاتھ میں تھی۔ رات امام ابو عنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ گھر آئے گرسار نگی کی آواز سائی دی۔ بوچھا تو بیتا چلا اسے تو پولیس گرفتار کر کے لے گئی ہے۔ آب نے فرمایا چلو یارو' اپنے سائے کو چھڑا لا کی کیونکہ ہم پر اپنے ہمائے کا حق واجب ہے۔ جرئیل علیہ السلام نے حضور بی سلے اللہ علیہ وسلم کو ہمائے کے حقوق پر برا کچھ کما ہے۔ ہم سب مل کر تھانے گئے یمال تک

مناقب امام اعظم مكتبه نبويا

کہ تھانے کے برے آفسرکے ماس جا پہنچ آفسرامام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو دیکھ کر کھڑا ہو گیا اور لوگوں کو تھم دیا کہ حضرت کے لیئے راستہ چھوڑ دو۔ دریافت کیا حضور آپ یمال کیے تشریف لائے ؟ آپ کو اسنے یاس بھایا مضرت نے فرمایا ایک قیدی آپ کی قیدیس ہے وہ میرا بمسایہ ہے رات آپ کی گشتی ہولیس گرفتار کر کے لے آئی ہے' آپ اے چھوڑ دیں اور اس کی خطا معاف فرما دیں۔ آفیسرنے کما بروچھ اور تھم ویا کہ اس قیدی کو اور اس کے ساتھ جتنے بھی قیدی آئے تھے انسیں چھوڑ دیا جائے۔ پھراس آفیسرنے تمام رہائی پانے والے تمام قیدیوں کو مخاطب کرتے ہوئے کہا۔ آج تم سب کو امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی وجہ سے رہائی مل رہی ہے۔ گر آکر آپ نے اس نوجوان سار تھی نواز کا ہاتھ بکڑا اور فرمایا اب تو ہم نے متہیں ضائع نہیں کیا۔ اس نے عرض کی حضور آپ نے مجھ پر برا احسان فرمایا ہے انشاء اللہ آج کے بعد آپ مجھے الی کوئی حرکت کرتا نہ یا کیں گے جس سے آپ کے آرام اور عبادت میں خلل آئے۔ آپ اس نوجوان کو پکڑ کرائے گھرلے آئے اور اینے بیٹے حماد کو کما اندر سے میری تھیلی لاؤ۔ آپ نے اس تھیلی سے وس ویٹار نکال کر اس نوجوان کو دیے اور کما جیل میں جانے پر تمہارا جو نقصان ہوا ہے اسے ان درہموں سے بورا کرد-آئندہ بھی اگر ضرورت بڑے تو بخوشی بلا جھمک آجانا اور ضرورت کے مطابق لے جانا۔ آج کے بعد تہمیں معاثی طور پر کوئی فکر نہیں ہونی چاہے' میں تمہارا کفیل ہوں۔ وہ گھر چلا گیا، گناہوں سے توب کرلی' شراب و کباب چھوڑ دیا' سارنگی چھینک دی اور حضرت کی مجالس میں حاضری دینے لگا۔ ایک وقت آیا کہ وہ فقہ کا طالب علم بن گیا اور کچھ عرصہ کے بعد اے فقہ پر اتنا عبور حاصل ہو گیا کہ اپنے وقت کا فقیہ بن گیا۔

اس واقعہ کو ابوالحاس امام حسن بن علی مرغینانی دیائیے۔ نے بھی ذکر کیا ہے۔ انہوں نے اس واقعہ میں اضافہ کرتے ہوئے فرمایا ہے کہ اس نوجوان کی تربیت کا یہ فاکدہ ہوا کہ وہ کوفہ کے معززین میں شار ہونے لگا۔ گر قاضی کوفہ ابن ابی لیلی نے اس کی سابقہ زندگی کی بنا پر اس کی گواہی رد کر دی۔ قاضی نے اسے باغ کے درختوں کی تمنتی بوچھی تو وہ نہ بتا سکا۔ قاضی نے اسے جائل تصور کرتے ہوئے گواہی لینے سے انکار کر دیا۔ وہ حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے باس آیا تو آپ نے اسے کہا تم ابن ابی لیلی کے پاس جاؤ اور اسے کمو کہ آپ بیس سال سے منصب قضاء پر فائز ہیں اور

کوفہ کی جامع مجد میں بیٹھ کر ایک عرصہ تک وعظ و تھیجت کرتے رہے ہیں' آپ جھے بتا کیں جامع مجد کوفہ کے کتنے ستون ہیں۔ ابن ابی لیلی ہے جب اس نوجوان نے یہ سوال کیا تو وہ جران رہ گئے کہ یہ کیا سوال کر رہا ہے اور اس نوجوان کو کہا کہ اب تم گواہی دے سکتے ہو۔ میں اپنا پہلا فیصلہ واپس لیتا ہوں۔

ابن ابی لیلی کو اس معاطے میں بری ندامت اٹھانا بڑی۔ جب اسے یہ معلوم ہوا کہ یہ سارا سکلہ امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے سکھایا ہے تو چلا کر کہنے گئے کوئی ہے جو اس براز (کپڑا فروش) کی ذہانت سے میری جان چھڑائے۔ یہ شخص تو جھ پر بجلیان گراتا چلا جا رہا ہے۔ میں تو ابو صنیفہ کو گواہی سے محروم کرنا چاہتا ہوں گریہ شخص ایسے مسائل کھڑے کر دیتا ہے کہ میں زج ہو جاتا ہوں اور میرے سامنے ایسے لوگ کھڑے کر دیئے جاتے ہیں جن کی کوئی حیثیت ہی نہیں۔ اس فرحوان نے جب یہ سارا واقعہ امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو سایا تو آپ نے فرمایا' تم ثابت قدم رہو ہم اس شخص کے غور و بیدار کو خاک میں ملا دیں گے۔ پھر آپ نے ایک شعر بڑھا۔

انا الشجا يجدوني في حلوقهم لا ارتقى ضعدا فيه ولا ادري

(تیر جسمه) مجھے یہ لوگ ایسا ہار پائیں گے جو ان کے گلے میں پڑا رہوں گا' نہ میں اوپر پڑھوں گا نہ پنچے آؤں گا۔

یمی واقعہ " مناقب معیری " میں بھی بیان کیا گیا ہے۔ امام ابو منیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے دو شاگردوں نے اس واقعہ کی روشنی میں یہ اشعار کے ہیں۔

کانی لم اکن فیهم وسیطًا ولم تک نسبتی فی آل عمرو اجرر فی المجامع کل یوم فیا الله مظلمتی و صبری

(قر جمه) میں ان میں افضل نہیں ہول اور نہ ہی مجھے آل عمرو میں کوئی نبت ہے۔ میں ہر روز مجمعوں میں دکھ اٹھا تا رہتا ہول۔ اے اللہ میرے دکھ دور فرما اور کی میرا صبر ہے۔ marks

یہ واقعہ امام ابو محمد حارثی مرائیے نے بھی بیان کیا ہے۔ انہوں نے اپنی سند سے نقل کیا ۔

اس میں یہ اضافہ ہے کہ ابو حمیر فرماتے ہیں کہ جن دنوں میں کوفہ آیا تو امام ابو حفیفہ رضی اللہ تقال کے گھرکے قریب ہی قیام پذیر ہوا۔ آپ کے ساتھ والے مکان میں ایک بدمعاش اور فاسی مخف کرنا تھا۔ وہ دور دار آواز میں غل غیاڑہ کرتا۔ سرور و غنا میں مشغول رہتا ساری ساری رات کھ بازاری اشعار پڑھتا۔ امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالی عنہ یہ سب کچھ برداشت کرتے نہ اس سے ازاری اشعار پڑھتا۔ امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالی عنہ یہ سب کچھ برداشت کرتے نہ اس سے اور اپنی عاقبت خراب نہ کرے مرجب اس کے گھر شمشی پولیس نے چھاپا مارا تو وہ گرفتار ہو گھر مشتی پولیس نے چھاپا مارا تو وہ گرفتار ہو گھر مشتی پولیس نے چھاپا مارا تو وہ گرفتار ہو گھر مشتی بولیس نے جھاپا مارا تو وہ گرفتار ہو گھر مشتی بولیس نے جھاپا مارا تو وہ گرفتار ہو گھر مشتی بولیس نے بہر آیا تو امام ابو صفیفہ تھا کہ سے دوہ قید سے باہر آیا تو امام ابو صفیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی محاس میں آنے جانے کہ مرضی اللہ تعالی عنہ کی مجاس میں آنے جانے کہ مسائل فقہ پر غور کرنے لگا بیماں تک کوفہ کے نیک لوگوں اور اشراف میں شار ہونے لگا۔ سائل فقہ پر غور کرنے لگا بیماں تک کوفہ کے نیک لوگوں اور اشراف میں شار ہونے لگا۔ سائل فقہ پر غور کرنے لگا بیماں تک کوفہ کے نیک لوگوں اور اشراف میں شار ہونے لگا۔ سائل فقہ پر غور کرنے لگا بیماں تک کوفہ کے نیک لوگوں اور اشراف میں شار ہونے لگا۔

ان وتول وہاں امام ابن سرین رحمتہ اللہ علیہ رہتے تھے جو خواب کی تجیر نکالنے میں برے

شاق اور سے تھے۔ میں نے انہیں خواب کا سارا واقعہ بڑی تقصیل سے سایا۔ آپ نے سر اٹھا کر سے سلی دی اور کہا اے برہ خدا تم نے جس شخص کو ایسا کرتے دیکھا ہے وہ ایک بہت ہی عظیم اشان شخصیت کا مالک ہو گا۔ پھر جھے پوچھنے گئے کیا جس شخص کو ایسا کرتے دیکھا ہے وہ فقیہ یا عالم ہے ؟ میں نے کہا ہاں وہ زبردست فقیہ ہے۔ آپ نے فرمایا' بخدا سے شخص اپنی زندگی میں نبی کریم صلی اللہ علیہ و سلم کے علوم کو اتنا پھیلائے گا کہ جمان روشن ہو جائے گا اور بیہ مقام کی اور کو نہیں ملے کے اور اس کی شہرت مشرق و مخرب بلکہ تمام اطراف عالم میں پھیلے گی اور جس جس ست کو مزاد کی مشرک ہے وہ دین کے علم سے منور ہو جائیں گے۔ میں نے امام این سیرین مولیے کی ہاتیں سنیں تو کے اطمینان ہوا۔ میں واپس کوفہ آیا' حضرت امام ابو صفیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی خدمت میں حاضرہوا کے اطمینان ہوا۔ میں واپس کوفہ آیا' حضرت امام ابو صفیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی خدمت میں حاضرہوا کے اس تو آپ کی خواب کی تفصیلات سائیں پھر گئے۔ آدی ہو بتایا' میں تو آپ کی خاطری بھرہ کیا تھا۔ آپ نے فرمایا' کے بتایا' میں تو آپ کی خاطری بھرہ کیا تھا۔ میں نے تبایا' میں تو آپ کی خاطری بھرہ گیا تھا۔ میں نے تبایا کہ میں بھرہ گیا تھا۔ آپ نے فرمایا' کے بتایا' میں تو آپ کی خاطری بھرہ گیا تھا۔ میں نے آپ کواپینے خواب کی تفصیلات سائیں پھر اس سے نہاں' میں باری موابیے کی خاطری بھرہ گیا تھا۔ میں نے آپ کواپینے خواب کی تفصیلات سائیں پھر میں نے تبایا' میں تو آپ کی خاطری بھرہ گیا تھا۔ میں نے تبایا' میں تو آپ کی خواب کی تفصیلات سائیں پھر می نے تبایا' میں تو تبیا کی سے خوش ہوئے۔

یاد رہے کہ کوفہ سے بھرہ ایک سو ہیں فرت یا دوسرے الفاظ میں تین سو ساٹھ میل ہے۔

س شخص نے خواب کی تجیر کے لیئے اتنا طویل سفر کیا۔ اس تکلیف برداشت کرنے سے بیہ بھی
سطوم ہوتا ہے کہ حضرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا اپنے ہمائیوں سے کس قدر حسن سلوک
اللہ وہ آپ کے لیئے اتنا دور دراز کا سفر اختیار کر لیا کرتے تھے۔ وہ اپنے لیئے نہیں صرف حضرت میں مطابقہ کے لیئے اس قدر تکلیف برداشت کرتے تھے۔ یہ حسن سلوک کا بھڑین تمرہ ہے۔ ورنہ عام سور پر ہمائے ایک دوسرے سے دور رہتے زندگی گذار دیتے ہیں اور ہمائیہ کی نیکیوں کی بجائے اس فرر پر ہمائے ایک دوسرے سے دور رہتے زندگی گذار دیتے ہیں اور ہمائیہ کی نیکیوں کی بجائے اس محض سے عیب بیان کرتے رہتے ہیں اور ان کی برائیوں کو اچھالتے رہتے ہیں۔ ایک شخص حضرت امام سے بھری ہوئی کی خدمت میں صاضر ہوا ان دنوں آپ ج کے سفر پر دوانہ ہو رہے تھے۔ اس شخص سے عرض کی حضور مجھے بھی ساتھ لے چلیں۔ میں کہ کرمہ میں آپ کے ساتھ رہوں گا۔ برکات و اس سے متنفید ہوں گا۔ آپ نے فرمایا مجھے اللہ تعالیٰ کی ستاری میں بی رہنے دیجئے میں اکیلا ہی سفر عابیتا ہوں۔ آپ کا مطلب یہ تھا کہ آگرچہ انسان برکات و فیوض کے لیئے ساتھ ہو تا ہے گر بسا

او قات عیب تلاش کر تا رہتا ہے۔

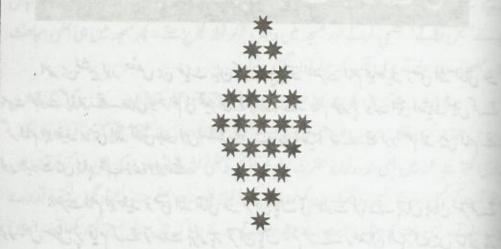
۔ ہم نے حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے متعلق فہ کورہ خواب بیان کی ہے۔ اسے بہت سے لوگوں نے اپنے اپنے انداز میں بیان کیا ہے اور صالحین امت کی بہت بدی فخصیتوں اسے بیان کیا ہے۔ اور اسلحین امت کی بہت بدی فخصیتوں اسے بیان کیا ہے۔ مثلاً بحیٰ بن نفر۔ ابو مقاتل سمرفندی اور ان جیسے بردے بردے جلیل القدر انگر خواب کے راوی ہیں اس متواتر روایت کو جو سند حاصل ہوئی ہے اسے کوئی جمٹلا نہیں سکتا۔ ہم متواتر روایت کو جو سند حاصل ہوئی ہے اسے کوئی جمٹلا نہیں سکتا۔ ہم متواتر روایت کو آگے چل کر تفصیل کے ساتھ بیان کریں گے۔

جار نعمان في جوار الدراري فاليه طوى الدجي كل سار زمن البؤس والنعيم جميعًا رزمن البؤس والنعيم جميعًا لم يروا مثلة بحسن الجوار فقد الجار جاره السوء لكن بات من فقده فقيد القرار اوثقوا جاره فما قرحتي اطلق الجار من وثاق الخسار لم يضعه ولكن شكوا ضياعا بلكساه فضلا شعار اليسار

لم يعين لبره قط جارا اذ سرى بره الى كل جار

(ترجمه) حضرت امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا ہمایہ بیشہ خوشحال رہتا ہے کیونکہ آپ این ہمسائے کے حقوق کو اچھی طرح اوا کرتے ہیں۔ آپ ہر قتم کی تاریکیاں دور کر دیتے ہیں۔ راحت اور تکلیف میں اپنے ہمسائے کا خیال رکھتے ہیں اور اس کے دکھ سکھ میں شریک ہوتے ہیں۔ حضرت امام علیفیہ ہمسا یوں کے لیئے تکلیفیں برداشت کرنے میں کوئی کو تاہی نہیں فرماتے ' یمال تک سارے شہر میں آپ جیسا مہمان ہمسائے کی کو میسر نہیں آیا۔ آپ نے ایک رات شور و شرابہ کرفے والے برے ہمسائے کو نہ بایا تو ساری رات ہے قرار رہے۔ دو سرے دن پیتا چلا کہ اسے بد کرداری

سی پولیس کر فار کر کے لے گئی ہے۔ آپ قید خانے پنچے اور اس برے ہسائے کو رہائی دلائی۔ آپ کے اس فی برکردار ہسائے کو بھی ضائع نہ کیا اور اس کی تکلیف کو بھی برداشت نہ کیا بلکہ آپ کو اس کی تکلیف کو بھی برداشت نہ کیا بلکہ آپ کو اس کی تکلیف پر صدمہ ہوا۔ آپ اپ احسان و کرم کے لیئے کمی خاص ہسلیہ سے ہی حسن سلوک میں کرتے تھے بلکہ ہر ہسلیہ آپ کے سایہ کرم میں رہتا تھا۔



(でうしょうしょうとしょ)というはかにもたればな

AND THE PERSON OF THE PROPERTY OF THE PARTY OF THE PARTY

AND MILES AND STREET AND AND THE PARTY OF TH

مناقب امام اعظم

تيرهوال باب

### امام ابوحنیفه کے تہجد، قرات، جمعہ کے مل

احمد بن بشیر اور حفق بن غیاف بیان کرتے ہیں کہ حفرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عد بہت عبادت گذار تھے۔ حلال و حرام کی تمیز کرنے والے تھے۔ عام طور پر لوگ اتنی احتیاط نہیں کرتے گر امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ اس سلسلہ میں بے حد احتیاط کرتے تھے اور علم فقہ میں امام تھے اور عبادت میں زاہد شب زندہ دار تھے۔

حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ قرآن پاک کی تلاوت فرماتے۔ جمال جمال سفر کرتے اور جس منزل پر قیام کرتے تو سات ہزار بار قرآن پاک ختم کرتے۔ رمضان المبارک میں ساتھ بار قرآن ختم کرتے تھے۔ ایک اول دن کے پہلے حصہ میں' دو سرا رات کے وقت۔ اہل بھرہ اور اہل کوفہ کے اتمہ اس معمول پر آپ کے گواہ ہیں۔ یہ بات حافظ خطیب نے بھی کی بن معین کی سند کے ساتھ روایت کی ہے کہ امام ابو حقیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ رمضان شریف میں ساتھ قرآن پاک ختم کیا کرتے تھے۔

معر بن کدام مالی فرماتے ہیں کہ میں ایک بار حضرت امام ابوطنیقہ رضی اللہ تعالی عنہ کی مجد میں حاضر ہوا' آپ صبح کی نماز پڑھ کرلوگوں ہے مسائل بیان کرنے گئے۔ یہاں تک کہ نماز ظهر کا وقت ہوگیا۔ ظہرے عصر تک علمی مختلو فرماتے پھر مغرب کی نماز کے بعد عشاء تک مجد میں تشریف فرماتے۔ میں نے سوچا کہ آپ عبادت کب کرتے ہوں گے' میں نے دیکھا کہ جب عشاء کی نماز کے بعد لوگ مجد سے چلے گئے اور اپ گھروں میں جاکر سوئے تو امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ خداوند کریم کی بارگاہ میں نوافل اوا کرنے میں مشغول ہو گئے اور اس طرح لوگ سوجاتے تو امام عنہ فداوند کریم کی بارگاہ میں نوافل اوا کرنے میں مشغول ہو گئے اور اس طرح لوگ سوجاتے تو امام باو خداوندی میں مشغول رہتے۔ جناب مسعر نے حضرت امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی رفاقت

یں برا ونت گزارا حتیٰ کہ امام صاحب کی زندگی میں ہی آپ کا انتقال ہو گیا۔

ابن معاذ والحيد فرماتے ہيں كہ بيں نے ويكھاكہ معر بن كدام نے امام ابوطنيفہ رضى اللہ تعالى عدد كى معجد بيں سجدہ كى حالت بيں وفات فرمائی۔ بيہ واقعہ صاحب " مناقب حميرى " نے بھى لكھا عدد مارى سارى رات عباوت بيں مشغول عدد مارى سارى رات عباوت بيں مشغول رح تھے۔ وہ آخر بيں لكھتے ہيں كہ امام ابوطنيفہ رضي اللہ تعالى عدد سارى سارى رات عباوت بيں مشغول رح تھے۔ وہ سے پہلے لوگوں كو بيدار ہونے كا احساس دلاتے " پھر گھر جاتے۔ آن وضو فرماتے "لباس بيلے" تيل لگاتے " كتابى كرتے اور معجد بيں واليس آكر نماز فجر بردھتے۔ بھر معجد بيں ہى على مباحث معروف ہو جاتے بيال تك كه سارا دن گرر جاآ۔

میرا خیال ہے کہ یہ طریقہ کار حفرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے ذندگی کے آخری اس میرا خیال ہو گا۔ اس دوران معر بن کدام آپ کے پاس رہتے تھے 'حتی کہ وہ فوت ہو گئے۔ اوی کہتا ہے کہ میں بھی ان دنوں حفرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے باس رہا کرتا تھا۔ میں نے آپ کو بھی موتے نہیں دیکھا۔ دن کو روزہ رکھتے 'نماز ظہرے پہلے چند کمچے اونگی لیتے یا قدرے نے جاتے۔ اس بات کو جناب ثابت نے مزید بڑھاتے ہوئے بتایا کہ میں نے معر کو دیکھا تھا۔ انہوں نے عدہ کی حالت میں وصال فرمایا تھا۔

اسی بات کو حافظ ابو بر خطیب نے تاریخ بغداد میں لکھا ہے کہ میں نے سلمہ بن کہیل عطاء سے اور سعید بن جبیر کو ویکھا تھا اور اسی زمانہ میں امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو بھی ویکھا ہے نے آپ جیسا کوئی دو سرا عبادت گزار نہیں دیکھا۔ علی بن برید الصدائی فرماتے ہیں کہ میں نے امام سینے رضی اللہ تعالی عنہ کو رمضان شریف میں دیکھا ، آپ نے اس ماہ ساٹھ بار قرآن شریف کا سینے رضی اللہ تعالی عنہ کو رمضان شریف میں دیکھا ، آپ نے اس ماہ ساٹھ بار قرآن شریف کا سینے اس ماہ ساٹھ بار قرآن شریف کا سینے اتھا۔ وہ ایک ایک دن میں تین قرآن پاک ختم کیا کرتے تھے۔

امام ابو یجیٰ حمانی امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے شاکردوں میں سے ہیں' وہ فرماتے ہیں۔

کہ میں ایک عرصہ تک حضرت امام مالیجہ کی صحبت میں رہا آپ عشاء کی نماز کے وضو کے ساتھ کی خماز کے وضو کے ساتھ کی خماز ادا کیا کرتے ہوتے تو نقیس لباس زیب تھے فرماتے۔ چرے کو تازہ کرتے۔ واڑھی پر کنگھی کر کے مصلی پر کھڑے ہو کر ساری ساری رہے خضوع و خشوع سے عبادت کرتے۔

حضرت امام ابو صفیفہ رضی اللہ تعالی عنہ فرماتے ہیں کہ قرآن پاک کی کوئی ایسی آیت سے بحصے میں نے وروں میں نہ پڑھا ہو۔ جعفر بن زیاد الاحمر رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ میں نے ابو صفیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو فرماتے ساکہ قرآن کی کوئی ایسی آیت نہیں جے میں نے وروں میں پڑھا ہو۔ نصر نے اس بات کی وضاحت جابی تو آپ نے فرمایا کہ حضرت امام روالیہ کی عادت تھی کرات کو نوافل میں قرآن پڑھتے رہتے تھے جب ور شروع کرتے تو اس سے آگے کی آیت کا تھا فرماتے۔ اس سے ظاہر ہوتا ہے کہ آپ کو قرآن پاک کے الفاظ پر کتنا عبور تھا۔ امام ابوعاصم نیمی مرابی فرماتے ہیں کہ امام ابوعاضم نیمی مرابیہ فرماتے ہیں کہ امام ابوعنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو شیخ کے نام سے نیکارا جاتا تھا کیونکہ آپ کڑے سے عبادت کرتے تھے۔

حسن بن محمد لیشی رواید فرماتے ہیں۔ میں کوفہ آیا تب لوگوں سے پوچھا اس شرمیں سے زیادہ عبادت گزار کون ہے اسب نے کما امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ ! میں آپ کی خدمت میں حاضر ہوا اور آپ کی عبادت گزاری کو واقعی اس سے براہ کربایا جس طرح لوگ کہتے تھے۔ پھر میں نے لوگوں سے پوچھا کہ اس شہر میں سب سے برا فقیہ کون ہے تو لوگوں نے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا نام لیا۔

سفیان بن عیدنه فرماتے ہیں کہ مکہ طرمہ میں کوئی فخص بھی امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعلی عنہ سے بڑھ کر نوا فل ادا نہیں کر تا تھا۔ یمی حضرت سفیان فرماتے ہیں کہ اللہ تعالی امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ پر رحم فرمائے میں نے ان سے بڑھ کر نوا فل اور کثرت سے عبادت کرنے والا کوئی نہیں دیکھا۔ ابو مطبع برا لیج فرماتے ہیں کہ میں ایک بار مکہ طرمہ میں قیام پذیر تھا۔ میں رات کو طواف کرنے کے لیے خانہ کعبہ میں پنچا میں نے دیکھا کہ حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے ساری رات طواف کرتے گزار دی ہے۔

سفیان ریائی فرماتے ہیں کہ میرے باپ نے ایک غلام خریدا اور اسے کچھ ونوں بعد آزاد کر ریا۔ اس کی وجہ یہ بھی کہ وہ غلام رات کا پہلا حصہ نماز میں مشغول رہا کرتا اور کوفہ کے لوگ اسے وکھنے آیا کرتے تھے۔ گرمیں نے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو دیکھا کہ ساری ساری رات نماز اوا کرتے۔ حفص بن عبدالر جمن فرماتے ہیں کہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ ساری رات بیدار رہا کرتے تھے۔ تعمیں سال تک آپ کرتے تھے۔ تعمیں سال تک آپ کا یہ معمول رہا۔

اسد بن عمرو فرماتے ہیں کہ حضرت امام ابو حذیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے چالیس سال تک عشاء کے وضو سے فجر کی نماز اوا کی۔ عام طور پر ایک رکعت میں بیس پارے پڑھ جاتے اور دوران ماز اتنا روتے کہ بعض او قات آپ کے ہمائے آپ پر ترس کھاتے۔ آپ نے جس مقام پر اللہ تعالیٰ کی بارگاہ میں اپنی جان سپرد کی وہاں آپ نے سینکڑوں بار قرآن پاک ختم کیئے تھے۔ بعض روایات میں آپ کہ آپ نے اس جگہ سات ہزار بار قرآن پاک ختم کیئے تھے۔

امام ابویوسف روایی فرماتے ہیں کہ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ رات کے وقت ایک قرآن ایک فرآن ایک فواقع میں ایک قرآن پاک مجے ایک قرآن باک عصر کے وقت ختم کیا کرتے تھے۔ رمضان المبارک میں ایک قرآن پاک مجیر ختم کر لیا کرتے کے وقت ختم فرمایا کرتے تھے۔ اور عام طور پر رمضان کے دوران باسمہ بار قرآن مجید ختم کر لیا کرتے ہے۔ آپ حالات و واقعات پر برا مبر کرتے 'مشکلات کو برداشت کرتے اور کی کی زیادتی پر ناراض میں ہوا کرتے تھے۔ حضرت داور طائی روائی رائی نادگی کا اکثر حصہ ایسے ہی گزارا تھا۔ وہ مبر کو مقرر ترجیح دیتے تھے۔

امام ابوبوسف رالیے فرماتے ہیں کہ میں نے دیکھا کہ امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے اللہ سال عشاء کے وضو سے فجری نماز اوا کی۔ حضرت حماد بن امام ابوطنیفہ رالیے فرماتے ہیں کہ سیرے والد گرامی نے وفات فرمائی تو میں نے حسن بن ممارہ کو کما کہ آپ میرے والد گرامی کو مسل دیں۔ وہ انہیں عسل دیتے وقت کہ رہے تھے اے اللہ! ابوطنیفہ پر رحم فرما۔ آپ نے تمیں سی تک افطار نہیں کیا تھا۔ یعنی روزے دار رہے اور چالیس سال تک رات کو بستر پر آرام نہیں کے آبے نے آرام نہیں کہ سے آب نے آرام نہیں کرسکا اور

اللب المام اعظم

علماء كرام آپ كے سامنے رسوا ہوتے گئے جب وہ آپ كى طرح عبادت ند كر كتے تو انہيں نادم سے

منصور بن ہاشم ملیج فرماتے ہیں کہ ہم ایک بار قادسیہ بی تھے۔ حضرت امام ابو حفیفہ رسی اللہ تعالی عند کے شاگر عبداللہ ابن مبارک ملیج بھی ہمارے ساتھ تھے۔ ان کے پاس کوفہ ہے ایک هنص آیا اور امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالی عند کے خلاف شکایت کرنے لگا۔ عبداللہ بن مبارک سے خص آیا اور امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالی عند کے خلاف شکایت کرنے لگا۔ عبداللہ بن مبارک سے نے کما اے بندہ خدا! تو اس شخص کی غیبت کرتا ہے جس نے بینتالیس سال تک عشاء کے وضو یہ فیمر کی نماز اوا کی ہے۔ جو ایک رکعت میں پورا قرآن مجید ختم کیا کرتا تھا۔ میں نے جو فقد پڑھی ہے جس کی تحریف کرتے ہو یہ امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالی عند کی مجالس کا فیض ہے۔

یکی بن نقبل روانی فرماتے ہیں کہ میں ایک جماعت کے ساتھ بیضا ہوا تھا ایک شخص نے کہ امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ وہ شخص ہیں کہ ساری رات عبادت میں گزار دیا کرتے ہیں۔ الم ابو حقیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے سنا کہ لوگ میری بے جا تعریف کرتے ہیں آج کے بعد میں واقعی ساری رات نوافل اوا کروں گا۔ رات کو بستر پر کروٹ نہ لوں گا۔ یماں تک کہ میں اللہ کے حضور پی مان رات نوافل اوا کروں گا۔ رات کو بستر پر کروٹ نہ لوں گا۔ یماں تک کہ میں اللہ کے حضور پی جاؤں۔ یکی روائی فرماتے ہیں امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ ساری رات عبادت میں بسر کرتے تھے یماں تک کہ آپ کا وصال ہو گیا۔

معر بن كدام والله فرماتے ہيں كه ميں ايك رات كوفه كى مجد ميں واخل ہوا تو ايك فخص كو مجد ميں واخل ہوا تو ايك فخص كو مجد ميں نوا فل اواكرتے ديكھا۔ ميں اس كى قرات سے برا محظوظ ہوا ، وہ فن قرات ميں قرات سعد كا ماہر تھا۔ ميں نے خيال كيا اب ركوع كرے كا مگروہ سارا قرآن پاك پڑھتا گيا اور ايك ركعت ميں سارا قرآن پاك ختم كرويا۔ ميں نے ديكھا تو وہ امام ابو حنيفه (رضى الله تعالى عنه) شے۔

معر والحجہ فراتے ہیں کہ مجھے رات کے اندھروں میں ایک ایبا فخص ملاجس سے خوشبو کی لیٹیں آرہی تھیں۔ مجھے خیال آیا کہ اس شخص کی تازہ تازہ شادی ہوئی ہے اور یہ وہی ہوگا اور اپنے گھرجا رہا ہے۔ مگر میں نے دیکھا کہ وہ معجد میں داخل ہو گیا اور ایک جگہ پر نماز کے لیئے کھڑا ہو گیا۔ تکبیر کمہ کر سورہ بقرہ شروع کر دی حتیٰ کہ ایک ہی رکعت میں سارا قرآن پاک ختم کر دیا۔ میں نے دیکھا کہ وہ امام ابو حفیقہ رضی اللہ تعالی عدہ تھے۔

خارجہ بن مصعب والمين فرماتے ہيں كہ ميں نے كمه كرمه ميں چار مخصوں كو سارى سارى رات قرآن پاك پڑھتے سا۔ ان ميں أيك تو عثان بن عفان رضى الله تعالى عنه و مرے متم وارى تيسرے سعيد بن جبير اور چوشتے امام ابو حنيفه رضى الله تعالى عنهم شھے۔

ابو ذا کدہ مطابعہ فرماتے ہیں کہ ایک ون معجد ہیں جھے امام ابوطنیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے ساتھ نماز پڑھ کر معجد سے چلے گئے 'صرف آپ فوافل میں کھڑے کا انفاق ہوا۔ ہیں نے دیکھا سارے لوگ نماز پڑھ کر معجد سے چلے گئے 'صرف آپ نوافل میں کھڑے رہے۔ آپ کو خبر تک نہ تھی کہ معجد میں کون آیا اور کون گیا ہے۔ میں نے کوشش کی کہ آپ کو میرے متعلق معلوم نہ ہو سکے۔ کوشش کی کہ آپ کو میرے متعلق معلوم نہ ہو سکے۔ گر آپ لوگوں کے چلے جانے کے بعد نماز میں کھڑے ہوئے اور پہلی ہی رکعت میں قرآن پاک پڑھتا شروع کیا۔ میں ہر بار خیال کرنا کہ آپ بھی رکوع کریں گے اور فارغ ہوں گے لیکن وہ آیات کی تلاوت کرتے رہے یماں تک کہ فجر کی نماز کی اذان ہو گئی۔

ضرار بن صرو رطیح فرماتے ہیں کہ میں نے بزید بن کمیت سے سنا (آپ اپ زمانہ کے نیک برت انسان سے ) آپ نے فرمایا کہ امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ خدا تعالیٰ کے خوف سے بے حد ورتے سے۔ ایک رات ہم نے علی بن حسن موذن کے پیچے نماز عشاء پڑھی۔ اس نے سورہ اذا والے لت پڑھی۔ امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ مجد میں بیٹھے والے نماز پڑھ کر گھروں کو چلے گئے گرہم نے دیکھا کہ امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ مجد میں بیٹھے گئے میں دور زور زور سے سانس لے رہے ہیں۔ میرے دل میں خیال آیا کہ اور غور غور نے میں اور زور زور سے سانس لے رہے ہیں۔ میرے دل میں خیال آیا کہ میں بال سے چلا جاؤں آلکہ آپ کے شخطی موئی تو میں دائیں آیا تو دیکھا کہ امام ابو حقیقہ رضی اللہ عنہ اس سے جلا جاؤں آلکہ آپ کے شخطی موئی تو میں دائیں آیا تو دیکھا کہ امام ابو حقیقہ رضی اللہ عنہ اس میں اب تھوڑا ساتیل تھا۔ سبح طلوع ہوئی تو میں دائیں آیا تو دیکھا کہ امام ابو حقیقہ رضی اللہ حقی عنہ ابھی اب تھوڑا ساتیل تھا۔ حج طلوع ہوئی تو میں دائیں تا تو دیکھا کہ امام ابو حقیقہ رضی اللہ حقی عنہ ابھی اب تھوڑا ساتیل تھا۔ حج طلوع ہوئی تو میں دائی سے جائے گئی پر اپنی ہزاروں مخشیس عنایت کرتی ہے۔ اے وہ ذات! جو برائی پر سزا دینے پر فرائی پر سزا دینے پر فرائی پر اپنی ہزاروں مخشیس عنایت کرتی ہے۔ اے وہ ذات! جو برائی پر سزا دینے پر فرائی یا برائی میں جو کو آئی یا برائی میں ہو کو آئی یا برائی میں ہو کو آئی یا برائی ہوا ہے۔ اپنی وسیع رحمت میں داخل فرما۔

یزید بن کمیت رایٹیہ فرماتے ہیں کہ میں نے اذان پڑھی' فانوس میں تھوڑا ساتیل ابھی باتی تھا'

میں نے دیکھا کہ وہ پہلے سے زیادہ روش تھا اور امام صاحب باقاعدہ قیام فرما رہے تھے۔ جب میں مسجد میں داخل ہوا تو آپ نے مجھے دیکھ کر فرمایا۔ آپ اسے لے جانا چاہتے ہیں' میں نے عرض کی میں لے تو فجر کی اذان بھی پڑھ دی ہے۔ آپ نے فرمایا' میرا ماجرا چھپانا' اپنے تک محدود رکھنا' کسی کو نہ کھا۔ اس کے بعد آپ نے فجر کی دو رکعت سنت ادا کیں اور ہمارے ساتھ عشاء کے وضو سے فجر کی نماز ادا کی۔

مسلم بن سالم راليے فراتے ہيں كه ميں كمه كرمه كيا۔ وہاں ايك برگزيدہ فخصيت سے سناكه امام ابو حقیقه رضی الله تعالیٰ عند نے يسال نو راتيں گذاريں۔ ميں نے انسیں ایک رات بھی سوتے نہیں پایا۔

ہشام نے بتایا کہ میں ایک دن میں امام حاکو ابی سلیمان رضی اللہ تعالی عند کے گھر بیشا تھا (سے حماد حضرت امام ابو حفیقہ کے استاد مکرم سے ) اسی دوران امام ابو حفیقہ رضی اللہ تعالی عند تشریف لائے اور کسی مسئلہ پر گفتگو فرمانے گئے۔ یمال تککہ آپ کا چرہ سرخ ہو گیا۔ جب آپ اٹھ کر چلے گئے تو حضرت حماد رضی اللہ تعالی عند نے فرمایا 'ابو حفیقہ فقیہ ہیں گر چرے پر سرخی آپ کی شب بیداری کی دجہ سے ہے۔ دجہ ہے۔

#### خوش لباسی

محر بن بشر دولیے فراتے ہیں کہ میں نے مسعر بن کدام سے سنا ہے وہ فراتے تھے کہ امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کا لباس برا صاف ستھرا اور قیتی ہوتا تھا۔ یہ لباس کھلا اور لمبا ہوتا تھا۔ فتیص ہوتی سلوار ہوتی یا چاور ہوتی کسی کی قیت ایک ہزار درہم سے کم نہ ہوتی تھی۔ جب آپ عشاء کی نماز اوا کرتے تو مسجد سے سارے لوگ چلے جاتے گروہ قیام فرماتے۔ آپ کا سارا لباس عطر و خشبو سے معطر ہوتا تھا۔ ایک دن میں نے عرض کی حضور یہ لباس تو باوشاہوں کے دربار میں پین کر جایا کرتے ہیں 'آپ نے فرمایا میں بادشاہوں کے بادشاہ کے دربار میں حاضر ہوتا ہوں اور انتھے لباس جایا کرتے ہیں 'آپ نے فرمایا میں بادشاہوں کے بادشاہ کے دربار میں حاضر ہوتا ہوں اور انتھے لباس سے اس کے دربار میں حاضر ہوتا ہوں اور انتھے لباس سے اس کے دربار میں حاضر ہوتا ہوں اور انتھے لباس

حضرت معر رافید فرماتے ہیں کہ ایک دن میں نے حضرت امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عند کو

عثاء کی نماذ کے بعد ویکھا آپ اپنے گریں واقل ہوئ کر باہر آئے اور مجدیں چلے گئے۔ نماذ کے لیے کورے ہوئے اور مجدیں چلے گئے۔ نماذ کے لیے کورے ہوئے اور قرآن پاک کی تلاوت شروع کردی۔ آپ جب اس آیت کریمہ پر پنچ۔ ان الذین یتلون کتاب اللّه واقاموا الصلوة وانفقوا می رزقناهم سراً و علانیة یر جون تجارة لن تبور ہ آپ اس آیت کریمہ کو بار بار پڑھے۔ پھر آپ جب اس آیت کریمہ پر پنچ امن هو قانت اناء الیل ساجدا و قائما یحدر الآخرة و یر جوار حمة ربه ان آپ اس آیت کریمہ کو بجر قرص و حراتے رہے۔ مجھے فدشہ ہوا کہ آپ اس آیت کریمہ کو فجر تک ہی نہ پڑھے رہیں گرا ہے ان آپ سے کریمہ کو فجر تک ہی نہ پڑھے رہیں گرا ہے ان آپ کریمہ کو فجر تک ہی نہ پڑھے رہیں گرا ہے ان آپ کریمہ کو فجر تک ہی نہ پڑھے رہیں گرا ہے نہ تا کریمہ کو قبر تک کردیا۔

عمرو بن بزید تمیمی فرماتے ہیں کہ میں نے علقمہ بن مر ثد سے سناکہ وہ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی عبادت اللہ تعالی عنہ کی عبادت میں مصروفیت اور جدوجمد نے انہیں اتا متاثر کیا کہ آپ جمال جاتے آپ کا ذکر اسی حوالے سے کرتے تھے۔

حضرت ابوب بن عبداللہ قصاب ریٹی کوفہ میں آتے تو امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے بال شب باشی کرتے اور جب حضرت امام سفر پر جاتے تو آپ ان کے ساتھ شریک سفر ہوتے۔ آپ فرماتے ہیں امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ دن کو روزہ رکھتے اور قرآن پاک مکمل ختم کرتے 'رات کو فرائے ہیں امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ دن کو روزہ رکھتے اور قرآن پاک مکمل ختم کرتے 'رات کو فرائل میں کھڑے ہوتے تو ایک قرآن پاک ختم کرتے 'آپ کا یہ معمول وفات سے ایک عرصہ پہلے تک میں دیکھتا رہا ہوں۔

حضرت علی بن سنان میافید فرماتے ہیں کہ میں نے امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو رات ماز پڑھتے دیکھا۔ ساری رات گزر گئی گر آپ نے بدن کے کس عضو کو متحرک نہیں فرمایا۔ صرف آپ کی زبان سے قرآن پاک کی خلاوت ہوتی' آپ قرآن پاک ختم کر کے رکوع و جود کے وقت محرک ہوتے۔

ابواساعیل فارسی روایئی فرماتے ہیں کہ میں نے سفیان مسعر اور امام ابو حقیقہ الک بن صغول اور ذاتکہ جیسے بلند پالیے حضرات کو دیکھا گر میں نے امام ابو حقیقہ رضی الله تحالی عنه جیسا عبادت گزار کے شیس بلیا۔ حسن بن طریف روایجہ فرماتے ہیں کہ میرے والد نے فرمایا کہ امام ابو حقیقہ رضی الله

تعالیٰ عنہ کے زمانہ میں آپ سے بڑھ کر کوئی عبادت گزار نہیں تھا۔ ابولغیم والیحہ فرماتے ہیں کہ میں کے جب کے دوران نے جب بھی امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو دیکھا کہ ساری رات قیام کرتے اور قیام کے دوران گریہ و زاری کرتے دیکھا۔

اسحاق بن ابی اسرائیل روینی فرماتے ہیں کہ میں نے علی بن برید معدانی کو فرماتے ساکہ اللہ الوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے رات کے اوراد تھے آپ ان کا بھی نافہ نہ فرماتے۔ رات کو ایک ق رکعت میں سارا قرآن پاک ختم کرتے۔ دن کو مختلف مسائل پر گفتگو فرماتے، فتوی جاری کرتے، عام لوگوں کے مسائل سنتے، دین کے معالات میں نمایت ورع اور تقوی کا خیال رکھتے۔ میں نے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ جیسا فقیہ اور عابد دو سراکوئی شیس دیکھا۔

امام ابو یوسف طالیہ فرماتے ہیں کہ میں ایک وقعہ امام ابوطیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے ساتھ چل رہا تھا، چلتے چلتے ہم ایک کوچہ کے کنارے جاپنچ دیکھا کہ کچھ لوگ بیٹے ہیں، امام ابوطیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو چھوٹے بچوں نے دیکھ کر شور مچانا شروع کر دیا کہ یہ ہیں امام ابوطیفہ رضی اللہ تعالی عنہ اللہ تعالی عنہ دو ساری رات کھڑے ہو کر اللہ کی عبادت کرتے ہیں۔ امام ابوطیفہ رضی اللہ تعالی عنہ لوگوں سے شرماتے تھے۔ گر جب ہم آگے بوھے تو آپ نے فرمایا، ابولوسف یمال کے لوگوں کو ممارے متعلق جو گمان ہے اس پر ہم پورے نمیں اترتے۔ اس طرح آپ اپنے آپ کو ظاہر نہ کرتے۔ ہیں طرح آپ اپنے آپ کو ظاہر نہ کرتے۔ ہمیدی نے اپنے باپ سے یہ بات بیان کی ہے کہ ایک بار امام ابولوسف، اسعد بن عموہ ابوداؤد، امام ابوطیفہ رضی اللہ تعالی عنہم کے ساتھ جارہے تھے جب ہم محلّہ بحیلہ ہیں پنچ تو بچوں نے شور مچا دیا کہ یہ وہ امام ہیں جو ساری رات عبادت ہیں گذارتے ہیں۔

بگیر بن معروف روالی فرماتے ہیں کہ میں امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے سفرو حضر میں آپ کے بہت قریب رہا ہوں۔ رات کے وقت ان کے مکان پر ہی سوتا آپ کی یہ عادت تھی کہ آپ اپ اسپ معمولات عبادت کو لوگوں ہے پوشیدہ رکھا کرتے ہتے۔ میں بے آپ کے علاوہ کوفہ میں کسی شخص کو نہیں دیکھا کہ دن کو روزہ رکھتا ہو اور رات کو قیام میں گزار تا ہو۔ پھر قیام کے دوران تلاوت قرآن پاک کرتا ہو اور اطاعت اللی میں تسلسل رکھتا ہو۔ تعلیم و تدریس کو عام کرنے والا ہو اور لوگوں کے مشکل مسائل کو حل کرتا ہو۔ یہ ہیں وہ اوصاف جو امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی

وات من بائے جاتے تھے۔ میں ان کی تفصیلات بیان کرنے کے لیئے الفاظ نہیں رکھتا۔

حفص بن عبدالرحمٰن رطیح فرماتے ہیں کہ میں حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے کیڑے کے کاروبار میں تمیں سال تک شراکت دار رہا' آپ اپنی مصروفیات کے باوجود دن رات میں تین قرآن کریم ختم کیا کرتے تھے اور ہر روز صدقہ و خیرات فرماتے۔ آپ نے مزید جایا کہ آپ کا معمول تھا کہ ایک ممینہ میں تمیں قرآن پاک ختم کرتے' شب بحر جاگتے اور ایک رکعت میں کھڑے کھڑے پورا قرآن پاک ختم کر لیتے تھے۔

ایک روایت میں آیا ہے کہ آپ تین دنوں میں ایک قرآن مجید ختم کرتے تھے۔ ہارے زدیک بید دونوں روایات درست ہیں۔ آپ عمر کے ابتذائی حصہ میں دن میں پورا قرآن پاک ختم کرتے تھے گرجب آپ کو دو سری معروفیات دینی نے آگیرا اور آپ عام لوگوں کے مسائل حل کرنے میں زیادہ وقت دینے گئے تو آپ تین دن میں ایک قرآن پاک ختم فرماتے۔ آپ طلباء اور دوسرے حضرات کی تعلیم و تربیت کی وجہ سے سمہ روز قرآن پاک ختم نہ سکتے تھے۔ اس زمانہ کے ایک فقیہ نے کہا تھا کہ امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ ابتذائی دور میں سخت مجاہدہ کرتے اور عبادت میں مشخول رہنے تھے۔ رات بھر قیام فرماتے اور پورا قرآن پاک قیام میں ختم کرتے تھے گرجب آپ کی دو سری علمی معروفیات زیادہ ہو گئیں تو آپ نے عبادت اور قیام میں کی کردی تھی۔

امام ابوبوسف رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں ہیں ایک دن امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے ساتھ کوفہ کے ایک محلے سے گزر رہا تھا۔ وہاں بچ کھیل رہے تھے 'انہوں نے امام صاحب کو ویکھا تو بالا چلا کر کہنے گئے کہ یہ ہیں امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ جو ساری رات عبادت کرتے ہیں اور ایک رکعت میں قرآن پاک ختم کر لیتے ہیں۔ امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے بچوں سے ساتو دل میں خیال آیا کہ میرے متعلق بچوں کو یہ گمان ہے اب ہیں ایسا ہی کروں گا۔ آپ نے یہ آیت کریمہ یہ قبال آیا کہ میرے متعلق بچوں کو یہ گمان ہے اب ہیں ایسا ہی کروں گا۔ آپ نے یہ آیت کریمہ پھل قبال آیا کہ میرے متعلق بحوں کو یہ گمان ہے اب ہیں ایسا ہی کروں گا۔ آپ نے یہ آیت کریمہ پھل قبالے سات کی اور قبام ہیں ویحبون ان یحملوا ایک انشاء اللہ آج کے بعد میں رات کو نہیں سویا کروں گا اور قیام میں ورا قرآن یاک فتم کیا کروں گا۔

محد بن الحن رحمته الله عليه فرماتے ہيں كه امام ابو حنيفه رضى الله تعالى عنه نے تميں سال

ر منافي امام اعظم

تک عشاء کے وضو سے فجر کی نماز اوا کی تھی۔ آپ کے بیٹے حماد بن ابی حنیفہ ملطحہ فرماتے ہیں کہ اللہ ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عند نے ساله اسال عشاء کی نماز کے وضو سے فجر کی نماز اوا کی۔

معضرت عبداللہ بن داؤد فرماتے ہیں کہ میں نے کئی راتیں حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تھیا۔ عنہ کے ساتھ گذاریں۔ میں نے ان کی عبادت میں مشغولیت اور دینی امور میں مصروفیت یہاں سے ویکھی کہ میں بیان نہیں کر سکتا۔ حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ ہر ملنے والے فقیہ اور میں سے علم اور عبادت میں بڑھ جڑھ کرتھے۔ ،

قاسم بن ابراہیم بغدادی رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عظم معمول تھا کہ آب عام مبینوں میں ہیں بار قرآن پاک ختم کرتے مگر رمضان المباک میں ساٹھ قرار پاک ختم کرتے مگر درمضان المباک میں ساٹھ قرار پاک ختم کرتے تھے۔ پھرون کو لوگوں کے دینی مسائل حل کرنا اور فتویٰ دینا بھی جاری تھا۔

ابوجعفر رازی را لیجے نے بتایا کہ میں نے امام زفر سے بوچھا تھا کہ امام اعظم ایک ماہ میں کتنی ہے قرآن پاک ختم کرتے تھے۔ انہوں نے بتایا کہ آپ ہر ماہ میں تمیں قرآن پاک ختم کرتے تھے۔ لکین رمضان المبارک آ تا تو ساٹھ بار قرآن پاک ختم کرتے۔ یہ ابوجعفر عیسیٰ بن ہامان رازی رصفہ اللہ علیہ حدیث و فقہ میں " رے " والول کے امام تھے۔ آپ کی اکثر روایات کی بنیاد امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعلیہ صدیث و فقہ میں " رے " والول کے امام تھے۔ آپ کی اکثر روایات کی بنیاد امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعلیہ عنہ کی روایت پر ہموتی تھی۔ وہ فرمایا کرتے تھے۔ میں نے امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعلیہ عنہ سے بڑھ کر فقہ میں کوئی دو سرا امام نہیں دیکھا۔

نوح بن ابی مریم رحمتہ اللہ علیہ بیان کرتے ہیں کہ میں نے امام ابوطیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو بار ایک رکعت میں پورا قرآن پاک ختم کرتے دیکھا۔ نصر بن حاجب القرشی فرماتے ہیں کہ میرے والد امام ابوطیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے دوست سے۔ وہ فرمایا کرتے سے کہ جھے کئی بار حضرت للم ابوطیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے گر تھرنے کا موقع ملا۔ میں دیکھتا کہ آپ ساری ساری رات نماز میں قیام فرماتے ، قرآن پاک ختم کرتے ، جب سجرہ کرتے تو مصلی پر ان کے آنسو گرنے لگتے۔ مصلی پر نی سے بول محسوس ہو تاکہ بارش برس ہے۔ بید واقعہ امام ابو یکی نیشا پوری نے بھی بیان فرمایا ہے۔ انسول نے کما کہ میں نے ساری رات امام ابوطیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو نماز پڑھتے اور اللہ تعالی کے سامے نے کما کہ میں نے ساری رات امام ابوطیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو نماز پڑھتے اور اللہ تعالی کے سام

آرگزاتے دیکھا۔ میں دیکھاکہ آپ کے آنسو مصلی پر پارش کے قطروں کی طرح نیک رہے ہیں۔
فضل بن سوید ملائیہ کوفہ سے واپس تشریف لائے تو لوگوں نے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ
کے متعلق پوچھا تو آپ نے فرمایا' میں ایک عرصہ تک ان کے ساتھ رہا' وہ بے پناہ عبادت گذار اور
شب زندہ دار ہیں۔ دن کو روزہ رکھے' رات کو اللہ تعالیٰ کے حضور کھڑے ہو کر قرآن پاک پڑھے۔
ابو المتوکل رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ میں ایک عرصہ تک امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ
کے ساتھ رہا۔ میں نے انہیں راتوں کے وقت تلاوت قرآن پاک کرتے ہی دیکھا اور آپ کے اس
سعول میں بھی سستی نہیں تھی۔ ہر رات عشاء سے صبح تک کھڑے تلاوت قرآن پاک کرتے رہے۔

لیث بن خالد کی بیر روایت مشہور ہے کہ امام ابوطنیفہ رضی الله تعالی عنہ رات کے وقت مرح نماز پڑھتے تھے اور ساری ساری رات قیام فرماتے۔ میں نے ایک رات دیکھا کہ وہ کھڑے ہیں اور قرآن پاک کی تلاوت کر رہے ہیں۔ آپ جب الهاکم النکا ثر پر پہنچ تو اے کی بار تلاوت قرآن پاک کی تلاوت کر رہے۔

ابومقائل رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ مجھے امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی صحبت ہیں کے لباعرصہ رہنے کا موقعہ ملا سفرو حضر میں آپ کے ساتھ رہا۔ میں نے آپ سے بردھ کر عباوت کے اراز نہیں دیکھا۔ یاد رہے کہ ابومقائل ، حفص بن سلم سمرقذ کے رہنے والے تھے وہ حضرت امام مستحقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے زمانہ میں ہی سمرقذ کے امام تھے۔ آپ نے امام کی صحبت میں ایک مستحقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے زمانہ میں ہی سمرقذ کے امام تھے۔ آپ نے امام کی صحبت میں ایک مستحق وقت گزارا اور آپ سے ہی صدیث کی روایت بیان کرتے اور فقہ کے مسائل پر گفتگو کرتے وہ خلیفہ عبای مامون الرشید کے عمد حکومت تک زندہ رہے۔

مامون الرشيد جن دنوں خراساں آيا تو اے ايک واقعہ پيش آيا تو خراسان کے جيد علاء کرام اللہ کا اللہ کا اللہ کا اللہ کا اللہ کیا تو کوئی بھی عالم دين خليفہ مامون الرشيد کو مطمئن اللہ کا حواب ابومقائل دائي دے سکتے ہيں يا کوفہ ميں اللہ کا جواب ابومقائل دائي دے سکتے ہيں يا کوفہ ميں اللہ ابوطنيفہ ہيں۔ خليفہ نے ایک تيز رفتار قاصد کو سمرقند بھيجا گر قاصد کے پہنچنے ہے پہلے ہی

اقب امام اعظم

آپ کا انتقال ہو چکا تھا۔ وہ قاصد ابومقاتل بلخی کے پاس گیا گروہ اتنے ضعیف تھے کہ سفر نہ کہ سخے۔ البتہ آپ نے مامون الرشید کے ایک سخے۔ البتہ آپ نے مامون الرشید کے ایک وزیر نے مرتب کیئے تھے۔ فلیفہ نے جب سے جواب دیکھا تو مطمئن ہو کر امام بلخی کی بڑی تعریف ابومقاتل نے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے علاوہ آپ کے اساتذہ سے بھی احادیث سی تھے۔ ان پر ابوایوب السخنیانی عمرو بن عبید' ہشام بن حسان' سعید بن ابی عروبہ 'عمرہ بن دینار' سے ہشام بن حسان' سعید بن ابی عروبہ 'عمرہ بن دینار' سے ہشام بن عروب اللہ تعالی عنم)۔

امام نفر سمرقذی رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ ہیں نے حفق بن سالم سے عرض کی کے المام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے راز دال ہیں۔ ہم حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے راز دال ہیں۔ ہم حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ مجالس میں دن کے وقت ہیں تے کہ وہ ساری ساری رات نوافل ادا کرتے تھے۔ ہم نے تو انسی کے وقت مجد میں فرائض ادا کرتے یا لوگوں کے مسائل کا جواب دیتے دیکھا ہے۔ حفق بی رائی رائی کہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ رات کے وقت جار سونوافل ادا کرتے تھے اسے رائی سارا تھے اس کی بار یہ نوافل پڑھتے دیکھا ہے۔ مجھے یہ انفاق بھی ہوا کہ آپ ان نوافل ہیں سارا تھے اپیک ختم کر دیا کرتے تھے اور کئی بار تو آپ نے پورا قرآن پاک ایک رگعت میں کر ڈالا۔

حفص بن سالم وہی ابن عبدالملک العنکی ہیں جو ابومقائل رولیے کے شریک رہے اور مقائل رولیے کے شریک رہے اور ابو حنیف رضی اللہ تعالی عنہ کی محالی عنہ کی محالی عنہ کی احادیث کی محالی کے رہے ہیں اور آپ کی احادیث کی محالی کرتے رہے ہیں انہوں نے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے اساتذہ اور مشائخ کا زمانہ بھی اور ان سے استفادہ بھی کیا آپ نے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے علوم کو ماورا النم تک محالی عنہ کی علوم کو ماورا النم تک محالی عنہ کی کا محالی عنہ کی اس کی محالی عنہ کی کیا تو محالی عنہ کی عنہ کی محالی عنہ کی عنہ کی عنہ کی محالی عنہ کی حالی عنہ کی محالی عنہ کی عنہ کی محالی عنہ کی حالی عنہ کی محالی عنہ کی عنہ کی عنہ کی عنہ کی محالی عنہ کی عنہ کی عنہ کی حالی عنہ کی عنہ کی حالی عنہ کی کی عنہ کی

متوکل بن عمران رواینی فرماتے ہیں کہ میں نے امام أبو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنه کی خدمت پورے چار سال گزارے۔ آپ جب عشاء کی نماز پڑھ لیتے تو تھوڑے سے وقت کے لیے شاگردوں کے حلقے میں تشریف لاتے۔ چند لمحات کیلئے گھر جاتے اور آرام فرماتے۔ پھر جاگ ایکھے تک عبادت میں کھڑے ہو کر پورا قرآن پاک ختم کرتے۔ یہ متوکل بن عمران روائید بلخ کے اقد ے تھے انہوں نے سارے بلخ کے علاقہ میں امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی روایات کو پھیلایا اور آپ کی صحبت سے جو علوم حاصل کیئے ان کی اشاعت میں برا حصہ ہے۔

حسن بن محر مراینے فرماتے ہیں کہ ہم جب بھی امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ کی خدمت میں حاضر ہوتے تو رات کے وقت آپ کو نماز پڑھتے دیکھتے۔ آپ فرماتے سے کہ امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ کے معمولات کو جو شخص ایک بار دکھ لیتا اس کی نظر میں بھردو سرے نقیہ اور ائمہ نہ جیتے۔ اکثر علماء امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ کے چرے پر نگاہ والتے چرے کی زردی اور آ تکھوں کی نمی کو دکھے کر ان کے لیے دعا کرتے۔ زرد چرہ کاغر جم اور آ تکھوں میں آنو آپ کی کثرت عبادت کی شاندہی کرتے ہے۔

حسن بن محاللینی والی الله کی امام تھے۔ انہوں نے حضرت امام ابوطنیفہ رضی الله تحالی عد کی صحبت افتدار کی اور آپ سے احادیث روایت کیس اور فقہ کی تعلیم حاصل کی۔ مومل بن وہاب فرماتے ہیں کہ میں حسن بن محد کے پاس محبد جرام میں حاضر ہوا تو انہوں نے تمام وقت امام ابوطنیفہ رضی الله تعالی عنہ کے واقعات زندگی ساتے گزار دیا۔ افسوس میں آپ سے نہ حدیث کی روایت کر کانہ فقہ کی تعلیم حاصل کر سکا اور محروم رہ کروایس آگیا۔

محمہ بن موزی ریابی فرماتے ہیں کہ میں نے سلم بن سالم سے مکہ میں سالموراس پر بہت بری جماعت گواہ ہے۔ وہ فرماتے تھے کہ اے لوگو! وہ علم حاصل کرد جو تہیں اور جھے لمام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے نفیب ہوا۔ تہیں بھی انہی کے علم پر التزام ضروری ہے۔ اس لیے کہ مجھے آپ کی صحبت سے زیادہ اچھی صحبت کمیں نفیب نہ ہوئی۔ لاذا ضروری ہے کہ بتم لوگ بھی آپ کی صحبت سے فائدہ اٹھاتے۔ میں نے ان سے بردھ کر کوئی عبادت گزار نہیں دیکھا۔ اہل مکہ میں سے مجھے آپ فخص نے بتایا کہ امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ جب مکہ مرمہ میں آتے تو میرے ہاں قیام فرماتے۔ ایک بار تشریف لائے تو مسلسل چھ ماہ میرے پاس تھی محبوف رہے۔ اگر تھکادٹ کا احماس ہو تا تو لیٹنے فرماتے وار قرآن پاک کی علاوت میں مصروف رہے۔ اگر تھکادٹ کا احماس ہو تا تو لیٹنے کی بجائے طواف میں مصروف ہو جاتے۔

سلم بن سالم رافیر فرماتے ہیں کہ مجھے زندگی میں بڑے بڑے مشائخ سے ملنے کا اتفاق ہوا ہے

کین میں نے امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ جیسا کوئی نہیں دیکھا۔ آپ کے دل میں است محملے علیم میں میں میں اللہ کا قول و تعل آیک جیسا تھا۔ یہ سلم بن سالم الل کلا کے امام شے لور انہیں امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی صحبت میں رہنے کا بہت موقع ملا تھا۔ آپ ابو مطبع لور ابو مطبع لور ابو مطبع اللہ ابو صنیفہ اللہ جا تھی کہ میں کعبتہ اللہ جب بھی گیا امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو قیام کرتے دیکھا یا طواف کرتے ہیں کہ میں کعبتہ اللہ جب بھی گیا امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو قیام کرتے دیکھا یا طواف کرتے پایا۔ میں نے آپ کو عبادت کرتے ہی دیکھا لور فقیمی مسائل کو حل کرتے بھی سانہ میں ان کے پاس کوفہ میں بھی رہا مگر میں نے آپ سے برادہ کر الم کا اللہ تعالی دو سرا محتص نہیں دیکھا۔

ذاہد عابد اور فقیہ کوئی دو سرا محتص نہیں دیکھا۔

ابو غیاف مطلحہ فرماتے ہیں کہ حضرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ رات کو قیام کرتے اور سارا قرآن پاک ختم کرتے۔ ابو حفص اپنے باپ سے روایت کرتے ہیں کہ ہیں ساکر آ تھا کہ حضرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ ساری رات ہیں پورا قرآن پاک ختم کرتے ہیں، جھے خیال آیا کہ ہیں انسیں اپنی آ تکھوں سے دیکھوں، ہیں آپ کی معجد ہیں پہنچا۔ دس راتیں متواتر وہاں ہی رہا اور سے اہتمام کر آگہ آپ کو دیکھتا رہوں۔ حضرت امام مطلحہ کی عادت تھی کہ عضاء کی نماز پڑھ کر فورا گھر انتہام کر آگہ آپ کو دیکھتا رہوں۔ حضرت امام مطلحہ ہیں تشریف لے آتے، وہ گھر سے نمایت عمد البی بہن کر واپس آتے ہو عطر و خوشہو سے بما ہو آ۔ مبحد میں داخل ہو کر پہلے دو رکعت نفل اوا کرتے۔ پھر اٹھی تو پہلی رکعت میں اتنا قیام فرماتے کہ پورا قرآن پاک ختم کر لیتے۔ دو سری رکعت میں صرف سورہ فاتحہ اور قل تلاوت کرتے اور اس طرح دو نفل کمل کر لیتے۔ اس کے بعد پھر گھر سے جاتے۔ فجر کی نماز کے لیئے دوبارہ آتے اور اس طرح دو نفل کمل کر لیتے۔ اس کے بعد پھر گھر سے جاتے۔ فجر کی نماز کے لیئے دوبارہ آتے اور عام لوگوں کو یہ آثر دیتے کہ وہ ساری رات گھر دہ ہیں۔ گرین آپ کے اس معمول کو مسلس دیکھتا رہا۔

ابو سحر مقصمی رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ میں نے امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی ہسائیگی میں تین سال گزارے ہیں۔ میں نے رات کے وقت آپ کو نماز میں قرات اوا کرتے اپ کانوں سے سنا اورر دن کو آپ کو اپنے شاگردوں کے حلقہ میں حدیث اور فقہ کے مسائل بیان کرتے دیکھا۔ میں جران ہوتا کہ آپ اپ دنیاوی معمولات کے لیئے کونسا وقت نکالتے ہیں۔

ابو رجاء بروی رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ مکرمہ میں امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ

آتے تو ہمارے ہاں بھی تشریف لاتے وہ ہمارے پاس چھ ماہ تھرے۔ میں نے انہیں رات کو بھی موتے نہیں دیکھا۔ یہ ابورجاء مطافحہ وہی بزرگ ہیں جو اہل ہرات کے امام تھے اور ابوعبداللہ بن واقد کے نام سے مشہور ہوئے۔ آپ ایک عرصہ تک امام ابوطیفہ رضی اللہ تعالی عند کی صحبت میں رہے۔ آپ سے فقہ پڑھی اور دو سرے علوم حاصل کر کے اپنے گھر لوٹے۔ حضرت امام ابوطیفہ رضی اللہ تعالی عند کو جب حسن بن عمارہ رحمتہ اللہ علیہ عسل کرواتے تو یہ ابو رجاء ہروی آپ کے لیئے پانی تیار کرکے لاتے سے

ابو اسحاق خوارزمی رحمتہ اللہ علیہ خوارزم کے قاضی تھے۔ آپ فرماتے ہیں کہ ایک ون معر

بن کدام علیہ حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی درسگاہ کے پاس سے گزرے' آپ تھوڑی
در ٹھر گئے' آپ نے فرمایا' یہ لوگ شمدا' عبادت گزاروں اور تہد گزاروں سے افضل ہیں۔ یک
حضرات سنت رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے احیاء کے لیئے کوشاں ہیں۔ جاہلوں کو جمالت کے
اندھروں سے نکالتے ہیں' یہ افضل الناس ہیں۔ آپ حضرت کے شاگردوں کے طقہ میں جا بیٹھتے اور
فرماتے' اے ہمارے امام کے یارو! تم لوگ اپ شیخ کے ساتھ تعاون کرو۔ وہ رات بھرجاگتے ہیں' پھر
تہمارے پاس آگر مسائل بیان کرتے ہیں۔ میں نے کل رات انہیں ساری رات قیام میں قرآن پاک
خونہ:

امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ بعض او قات باتوں باتوں میں ربنا اننا آمنا فاغفرلنا او کفر عنا سیئاتنا و توفنا مع الابرار ﴿ رِدِه لِية - بھی بھی بید معانوا فل کے بعد بھی پڑھ لیت عری کے وقت استغفار رڑھتے اور اللہ تعالی سے دعاکرتے۔

حضرت ابواسحاق رحمته الله عليه فرماتے ہیں۔ مجھے امام ابوصنیفه رضی الله تعالی عنه کے ہاں حاضر ہونے کا شرف حاصل ہوا تو رات کو آپ کی عبادت اور دن کو فقه کی تعلیم ہوتی۔ عبادت اور تعلیم میں ہرایک چیز بردھ چڑھ کر تھی۔

کی بن ابراہیم رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ حضرت امام ابو حفیفہ کا ایک ہمسایہ بڑا غالی شیعہ قما۔ وہ اپنے دوستوں کو کما کرتا کہ اگرچہ میں عقیدے کے لحاظ سے امام ابو حفیفہ سے اختلاف رکھتا موں گرمیں ان سے بات کرنے اور طاقات کرنے سے نہیں رکتا۔ میں نے چالیس سال تک امام کو ویکھا کہ آپ بیشہ حق بات کرتے ، پھر میرے گھر اور آپ کے گھر کے درمیان ایک دیوار حاکل تھے۔
امام صاحب ہر رات اللہ تعالیٰ کی بارگاہ میں قیام فرماتے اور ایک رات میں قرآن کا ساتواں حصہ پڑھتے۔ پھر مختلف دعا کیں اور استغفار پڑھتے۔ میں ان کے روئے اور گریہ کرنے کی آواز سنتا اللہ کی رحمتہ اللہ علیہ آیام ابو حقیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے کوئی حدیث سفتے تو اسے زبانی یاو کر لیتے تھے۔
وہ لوگوں میں بیٹھتے تو لوگ آپ کو حصرت امام کے شیعہ ہمسایہ کا واقعہ سانے کو کہتے۔ آپ اس شیعہ کی زبان سے اعتراف کمالات کو بیان فرمایا کرتے تھے۔ امام کی کو حصرت امام ابو حقیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے نقہ کی تعلیم کے لیئے اپنی پاس کوفہ میں رکھا ہوا تھا۔ وہ جب تک بھرہ نہیں چلے گئے آپ عنہ رہے۔

کے زیر تعلیم رہے۔

ابن جمیل مکہ مگرمہ میں رہتے تھے۔ فرماتے ہیں کہ میں نے ایک شخص سے بو کھا کہ مہمارے اس مبارک شہر میں لاکھوں حضرات آتے ہیں ان میں عام خاص ہر فتم کے لوگ ہوتے ہیں جھے ان سب میں سے کئی ایسے شخص کی بات سناؤ جو سب سے زیادہ عبادت گزار ہو۔ اس شخص نے بنایا کہ امام ابو حنیقہ رضی اللہ تعالی عنہ ساری رات نفل پڑھتے ہیں اور اگر تھک جاتے تو طواف کرتے تھے۔ دن کے وقت وہ لوگوں کے دینی مسائل حل فرمایا کرتے تھے۔ میں نے ان سے بڑھ کر کوئی شخص نہیں دیکھا جو اتنا عبادت گزار ہو اور مسائل پر بھی راہنمائی کرتا ہو۔

محر بن بوسف رحمتہ اللہ علیہ فراتے ہیں کہ لوگوں کا طریقہ تھا کہ اپنی بچیوں کی شادی اٹل کوفہ ہے کیا کرتے ہے۔ ان دنوں کوفہ ایک خوشحال اور امیر شہر تھا اور یہاں کے لوگ بری آرام کی زندگی بسر کر رہے تھے۔ این لڑکی کا شوہر چند دنوں بعد اس کے لیئے ایک کنیز خرید لا آبا اور اس کو فدمت پر مامور کر دیتا۔ گر اہام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ ایک ایسے محض تھے جن کے گھر نہ کوئی کنیز تھی نہ فادمہ اور نہ آپ کی عورت کو فدمت کے لیئے گھر ہیں رکھتے۔ آپ کے ہما میوں کا کہنا ہے کہ وہ گھر کے کام کاج خود کرتے 'رات کو عبادت میں کھڑے رہتے اور دن کے وقت شاگردوں کے حلقہ میں مسائل فقہ بیان فرمایا کرتے۔

ابوالاحوص رحمتہ اللہ علیہ قتم کھا کر کہتے ہیں کہ اگر امام ابوحثیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو کہا جاتا کہ آپ تین دنوں کے بعد فوت ہو جائیں گے آپ اس فضول بات پر توجہ نہ فرماتے۔ کیونکہ ان کے

نیک اعمال موت کے خوف سے بے نیاز تھے۔

ام ابوبوسف رحمتہ اللہ علیہ فرائے ہیں کہ شہر کے اکثر فقما اپنی نمازیں کوفہ کی جامع مجد میں اوا کیا کرتے تھے وہ سحر ہوتے ہی جامع مجد میں جا وینچے گرام ابوصیفہ رضی اللہ تعالی عنہ اپنی رات کی عبارت کی عباری کا علم نہ ہو سکے۔ مسعر ایک ایسے فقیہ سے جو امام ابوصیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی فیبست کی برنام سے وہ آپ سے حد بھی کرتے اور آپ کی فیبت بھی کرتے اور لوگوں کو بھی فیبت کرنے پر اللہ تعالی عنہ کی فیبت کرنے پر اللہ تعالی عنہ کی فیبت کرنے پر اللہ تعالی عنہ کی فیبت کرنے ہیں کہ ایک رات مسعر حضرت امام ابوصیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی فیرا اٹھا کر اللہ تعالی عنہ کے قریب سے گزرے تو آپ بحدے میں پڑے تھے۔ مسعر نے چند بھاری پھر اٹھا کہ ایک فیلہ میں رکھ دیے جس کا امام صاحب کو علم نہ ہوا۔ مسعر کی خواہش تھی کہ ویکھے بھلا آپ کی عبارت میں رکھ دیے جس کا امام صاحب کو علم نہ ہوا۔ مسعر کی خواہش تھی کہ رات کھڑے رہے۔ گر آپ کو ان پھروں کا علم نہ ہوا۔ آپ فرمایا کرتے تھے کہ فقیہ کے لیئے ضروری رات کھڑے رہے۔ کہ وہ ایسا عمل کرے کہ عام لوگوں کو اس بات کا علم نہ ہو اگا کہ اس کے عمل پر ریاگاری کا دخل نہ ہو۔ مزید فرماتے ہیں کہ جب نیند کا غلبہ ہو تو عبارت گزار کو چاہئے کہ آن ہ وضو کرلیا کرے۔ میں نہ ہو۔ مزید فرماتے ہیں کہ جب نیند کا غلبہ ہو تو عبارت گزار کو چاہئے کہ آن ہ وضو کرلیا کرے۔ مور مزید فرماتے ہیں کہ جب نیند کا غلبہ ہو تو عبارت گزار کو چاہئے کہ آن ہ وضو کرلیا کرے۔ مور مزید فرماتے ہیں کہ جب نیند کا غلبہ ہو تو عبارت گزار کو چاہئے کہ آن ہ وضو کرلیا کرے۔ مور مزید فرماتے ہیں کہ جب نیند کا غلبہ ہو تو عبارت گزار کو چاہئے کہ آن ہ وضو کرلیا کرے۔

معربے حرکت کرنے کے بعد مجد میں آیا اور اذان دیے لگا۔ اذان دے کر دوبارہ المم صاحب کے زدیک گیا وہ جران رہ گیا کہ حضرت المم ابھی تک سجدے میں پڑھے ہیں اللہ کی بارگاہ میں زار و قطار رو رہے سے اور اس کے رکھے ہوئے پھر ابھی تک آپ کی قبیص کے وامن میں پڑے ہوئے تھے۔ اب آپ الله و و رکعت نفل اوا کیئے۔ فجر کی سنتیں اوا کیس۔ پھر فجر کی نماذ کے لیے آپ جماعت میں کھڑے ہوئے۔ اس طرح معرف و یکھا کہ آپ نے عشاء کی فماذ کے وضو سے کی نماز ادا کی۔ معر اپنی حرکت پر شرمندہ تھا۔ اپنے دوستوں کو لے کرون کے وقت حضرت کی خدمت میں حاضر ہوا اور ندامت کا اظمار کرتے ہوئے معذرت کی اور معانی کی درخواست کی اور عرض کی کہ آپ مجھے اپنے حلقہ تدریس میں وافی فرما میں۔ آپ نے فرمایا عبال لوگ میرے خلاف علی و فیبت کرتے ہیں وہ ناواقف اور ناداں ہیں۔ وہ تو میرے حلقہ میں داخل ہو سے ہیں مجرجو علماء اور دانشور دیدہ وائت فیبت کا ارتکاب کرتے رہتے ہیں انہیں میرے حلقہ میں داخل ہو کے کا کوئی

آگرہ نہیں۔ ایسے علاء جب تک سے دل سے توبہ نہ کر لیں انہیں کوئی فاکدہ نہیں۔ میری تعیم تدریس ان کے حلق میں رہ جاتی ہے۔ آپ نے چونکہ مجھے معافی کا کما ہے میں نے آپ کو معاف ویا ہے گر آپ اللہ کے ہاں ضرور جواب وہ ہوں گے کہ اس نے تنہیں علم ویا گرتم اللہ و رسول میں کے احکام کے خلاف غیبت کا ارتکاب کرتے رہے ہو۔ حضرت امام کی بیہ بات سن کر مستر لے ہے دل سے توبہ کی اور آئندہ کے لیئے اپنے رویہ سے رک گئے۔

امام بوسف مایلید فرماتے ہیں کہ اس ون کے بعد دونوں حضرات ( امام ابوضیفہ اور مستر سے کا کدام ) بوے انداز میں رہتے رہے اور کسی کو کسی کے خلاف شکایت نہ رہی اور آدم زندگی شے و شکر رہے۔

عبدالجيد برالي رواد روائي فرماتے ہيں كہ ميں ايك عرصہ تك كمه كرمه ميں رہا كر ميں اللہ حضرت امام ابوطنيفه رضى الله تعالى عنه جيسا زاہد عابد طواف كرنے والا اور حديث كى تعليم دينے والد كوئى نہيں ديكھا۔ آپ رات دن الله كى رضا ميں مصوف رہتے اور اپنے نفس كے ليئے طلب آخرت كرتے تھے۔ آپ نے تعليم كا جو سلسلہ جارى كيا اس سے ہزاروں شاكرد اور طلبہ فيضياب ہوكر دنيائے اسلام كے گوشے كوشے تك پنچے۔ ايك بار ميں نے ديكھاكہ آپ نے متواتر دس دن اور دس راتي عبادت والدت تعليم اور تدريس ميں گزار دسيئے۔ نہ انهول نے نبيندكى نہ فارغ وقت بينے۔ نماز طواف اور فقہ كى تعليم ميں مشغول رہے۔

حفرت جمانی رحمتہ اللہ علیہ اپنے باپ سے روایت کرتے ہیں کہ میں ایک سال تک حفرت المام ابو حفیقہ رضی اللہ تحالی عند کی خدمت میں رہا۔ میں نے انہیں دن کو روزہ سے اور رات کو قیام و عباوت میں ہی دیکھا۔ آپ عشاء کے وضو عباوت میں ہی دیکھا۔ آپ عشاء کے وضو سے صبح کی نماز اوا کرتے۔ طلوع فجر اول تک پورا قرآن ختم کر لیتے۔ اس طرح ساری رات اللہ کی عبادت میں گزار دیتے۔

ابو تعیم رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ میں اپنی زندگی میں اعمش سے ملا ہوں۔ مجھے مسعر بن کدام کے ساتھ رہنے کا موقعہ ملا ہے۔ میں حمزہ زیات اور مالک بن صفول کے ساتھ رہا ہوں۔ اسرائیل اور عمرو بن ثابت کی صحبت اختیار کی۔ شریک اور ایسے دو سرے بلند مرتبہ علماء اور ائمہ کے

ساتھ وقت گزارا ہے اور اتنے علا کرام سے طاقات کی ہے جس کی تعداد نہیں بتا سکتا۔ میں نے ان کے ساتھ نمازیں اوا کیں ہیں۔ ان کے ساتھ راتیں بسر کی ہیں، تمرین نے ساری زندگی امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے بڑھ کر شب بیدار نہیں ویکھا۔ آپ نماز شروع کرتے تو پہلے اللہ سے دعا کرتے اور گڑ گڑا کر زاری کرتے، مجر قیام فرماتے اسمی طرح ساری رات گذر جاتی۔ میں گواہی ویتا ہوں کے آپ صحیح معنوں میں اللہ سے ڈرنے والے تھے۔

ابو بحربن عابد فرماتے ہیں کہ میں نے ایک رات امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو نماز پڑھتے دیکھا۔ آپ نماز میں رو رہے تھے اور وعائیں کر رہے تھے۔ یہ الفاظ ابھی تک جھے یاد ہیں آپ فرماتے۔ رب ارحمنی یوم تبعث عبادک وقنی عذابک و اغفرلی ذنوبی یوم یقوم الاشھاد ن " اے پودھگار! مجھ پر رحم فرما۔ جب تو اپنی بندوں کو اٹھائے گا تو مجھے عذاب سے بچا اور میرے گناہ بخش وے جس دن گواہی دینے والے آئیں گے تو اپنی رحمت سے مجھے معاف فرما۔"

سلم بن جنادہ اپنے والد سے روایت کرتے ہیں کہ میں جن دنوں کوف کی معجد میں حضرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے ورس میں پڑھا کرتا تھا آپ کے پاس ایک تنبیج تھی جس میں چار سو وانے تھے آپ حلقہ درس میں تشریف لانے سے پہلے ان پر استغفار پڑھا کرتے تھے۔

# امام ابوصنیفہ نفتی النہ کے تقوی کی چند مثالیں

ام زفر رحمتہ اللہ علیہ امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کیا کرتے تھے۔ آپ فرماتے تھے کہ مجھے ایک دن امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا کہ میں نے بجاس سال تک کیا ہے: اور ایسن نہیں کھایا۔ یکیٰ بن آدم رحمتہ اللہ علیہ نے فرمایا کہ حضرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے پہل جج کیئے تھے۔ امام ابو یوسف رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے پاس اگر کوئی خاتون مسئلہ پوچھنے آتی تو آپ مجد کے ستون کی آٹر میں چلے جاتے اور اس کی عنہ اس عورت نے بات اور مسئلہ بنا کر پھر مسند ارشاد پر تشریف فرما ہوتے اور شاگر دوں کو بناتے کہ اس عورت نے فلاں فلاں مسئلہ پوچھا تھا۔ پھر آپ فرماتے میں ستون کی آٹر میں اس لیے چلا جاتا ہوں کہ میری نگاہ اس عورت کے چرے پر بھی نہ پڑے اجنبی عورت کو دیکھنا نظر کا زنا ہے۔ اس سے بچنا چاہے۔

حفص بن عبدالرحمٰن مایٹے فرماتے ہیں کہ میں نے ایک ون امام ابو صفیفہ رضی اللہ تعالیٰ عند کے پیچھے نماز پڑھی۔ آپ نماز سے فارغ ہوئے تو مجد کی مغرب کی دیوار کے ساتھ بیٹھے رہے۔ ایک شخص آپ کے ساتھ آکر کھڑا ہو گیا اور کھنے لگا کہ کیا آپ محراب میں کھڑے ہو کر نماز اوا کرنے کا جائز سیجھتے ہیں حالانکہ اس میں تصوریں ہوتی ہیں؟ آپ نے فرمایا، میں اس مجد میں پینتالیس سال سے نماز پڑھ رہا ہوں۔ مگر مجھے محراب میں کوئی تصویر نظر نہیں آئی۔ تاہم آپ نے تھم دیا کہ ایے نقش و نگار جنہیں دیکھ کر کسی جاندار کی تصویر کا شبہوتا ہے انہیں مٹا دیا جائے۔ پھراس شخص نقش و نگار جنہیں دیکھ کر کسی جاندار کی تصویر کا شبہوتا ہے انہیں مٹا دیا جائے۔ پھراس شخص نظر نہیں ڈائی۔ اس مجد کی چھت پر کما کہ اس مجد کی چھت پر نظر نہیں ڈائی۔ (اس سے معلوم ہوتا ہے کہ آپ بیشہ نیجی نگاہوں سے مجد میں داخل ہوتے اور گردن جھکائے باہر طے جائے۔)

عروین الولید فرماتے ہیں کہ ہیں نے کئی بار دیکھا کہ حضرت امام ابو صنیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ عشاء کی نماز کے بعد چار رکعت نقل ادا کرتے ' پھر بیٹھ کر ساملوں کے سوالات کا جواب دیتے۔ بعض مسائل کی وضاحت کرتے ہوئے اجتماد فرماتے اور مسئلہ بیان کرنے کے بعد دعا دیتے اور دوستوں کے لیئے اللہ کی رحمت اور برکت کمی تمنا کرتے اور شاگردوں کو کہتے کہ اللہ تعالیٰ آپ کے سینوں کو علم کے نور سے منور فرمائے۔ بعض شاگرد آپ کے ساتھ نوافل میں کھڑے ہو چاتے اور ساری رات نقل پڑھتے پھر تہجہ کی نماز اوا کرتے ' یماں تک کی صبح کی نماز کی جماعت کھڑی ہو جاتی تو اس نماز کو اوا کرتے۔ آپ کے شاگرد کو بوری توجہ دیتے۔ حضرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ ہرایک شاگرد کو بوری توجہ دیتے۔

# سیدنا امام موی کاظم نصفی انتهای سے ملاقات

ایک متند اور ثقہ راوی نے حضرت امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے مناقب پر گفتگو کی ہے۔ اس نے لکھا ہے کہ سیدنا موئی بن امام کاظم بن امام جعفر صادق رضی اللہ تعالی عنم نے جب امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو پہلی بار دیکھا تو آپ نے فرمایا کیا تم ہی ابوطنیفہ ہو؟ عرض کی کہ حضور مجھے ہی نعمان بن ثابت کہتے ہیں۔ اس پر آپ نے امام موئ رضی اللہ تعالی عنہ سے بوچھا

صور آپ نے مجھے کیے بہونا۔ آپ نے فرمایا ' میں نے قرآن پاک میں پڑھا ہے سیماھم فی وجو میم من اثر السجود اس کی روشتی میں آپ کو بہون لیا۔

# زندگی میں ایک بار قنقهه مارا

امام ابوطنیقہ رضی اللہ تعالی عنہ خود فرماتے ہیں کہ میں ساری عمر میں صرف ایک بار ہسا ہوں اور اب تک اس پر نادم ہوں اور ساری عمر نادم رہوں گا۔ ہوا بول کہ ایک بار عمرو بن عبید سے مناظرہ تھا۔ میں نے ایک موقعہ پر محسوس کیا کہ میں نے مناظرہ جیت لیا ہے۔ میں اس زور سے ہسا کہ میرے مدمقاتل نے کہا ابوطنیقہ ایہ ہسی کیسی ؟ شرعی مسائل میں قبقہہ لگانا اچھا نہیں۔ میں ایسے مناظرے بات کرنا بھی بند نہیں کرتا۔ چنانچہ اس دن کے بعد عمرو بن عبید نے مجھ سے بات نہ کی۔ محصے اپنی اس حرکت پر بھیشہ ندامت رہی۔ ( یہ بات غیرت ایمانی اور عالمانہ و قار کی مثال ہے۔ آج مناظرہ باز اور وعظ فروش اپنے امام کی مثال کو سامنے رکھیں۔)

بت سی کتابوں میں یہ واقعہ موجود ہے کہ آپ نے چالیس سال تک عشاء کے وضو ہے فجر کی نماز ادا کی۔ آپ کا وصال ہوا تو آپ کے ہمائے کی ایک بچی نے اپنے باپ سے بوچھا۔ وہ ستون کر نماز ادا کی۔ آپ میں ہمائے کی جھت پر کھڑا دیکھا کرتی تھی۔ باپ نے بتایا ' بیٹی وہ ستون نہیں تھا وہ امام او صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ تھے جو رات بھر کھڑے ہو کر نماز پڑھا کرتے تھے۔ یہ قصیدہ آپ کی شان

و ليل ابى حنيفة للعباده ومنها خروا سطة القلادة وليس ليوم درسهم افاده وليس لباب سحتهم عضاده

نهار ابى حنيفة للافاده قلادة عابدى الغبراء تبت فليس لليل طاعتهم نظام وما لبناء صومهم اساس 11/2

من التقوى فتم له السعاد فاطعم عينه شوك القتاد بسورتها وقد سلبت رقاد لطاعته و خداه الوساد وللاخ في الهدى ساس المقاد

وزین جسم فنیاه بروح و ناظره قناده فی صباه و سورة زلزلت قد زلزلنه و ورع نومه خمسین عاماً علی اعدی العدی ارن حرون

وكان ابا الافادة للبرايا فما سامته آباء الولاده

(قرجمه) امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے دن لوگوں کو فائدہ پنچائے میں گررتے لور التیں اللہ تعالیٰ کی عبادت میں بسر ہوتی تھیں۔ تمام عبادت گرار تھک کر بیٹے جاتے اور وہ ایک ایک کرکے چلے جاتے۔ (ان کے گلے کے ہار کٹ جاتے اور ان کی شیع کے دانے ایک ایک کرکے گر جاتے) ان لوگوں کی شب بیداری اور عبادت کا کوئی نظام نہیں تھا اور نہ دن کے وقت وہ درس و ترریس سے فیض رسانی کرتے تھے۔ ان کے روزے کی کوئی بنیاد نہ تھی۔ اور نہ ہی ان کی افظاری گا کوئی انداز تھا۔ بال اس نوجوال (امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ) کا جم اور روح تقویٰ کے زاور سے مزین تھے۔ وہال صرف سعادت اور سعادت ہی تھی۔ بچین میں ان سے قادہ نے مناظرہ کیا تھی سے مزین تھے۔ وہال صرف سعادت اور سعادت ہی تھی۔ بچین میں ان سے قادہ نے مناظرہ کیا تھی نیدیں سلب ہو جاتیں۔ آپ سے بورہ الزلزال پڑھتے تو آپ کے اندر ایک لرزہ بریا ہو جاتیا اور آپ کی نیندیں سلب ہو جاتیں۔ آپ نے بچاس سال تک مسلسل عبادت کی۔ نیند کو نزدویک نہ آنے دیا۔ لور نیندیس سلب ہو جاتیں۔ آپ نے بچاس سال تک مسلسل عبادت کی۔ نیند کو نزدویک نہ آنے دیا۔ لور وستوں کے لیئے ناکدہ پنچانے والے دائی حصور کو بھی تکیہ کا سمارا نہ دیا۔ آپ کے ہاتھ میں دشنوں کے لیئے ناکدہ پنچانے والے دائی حصور کے ایک خاندان کاکوئی فرد آپ کے مناقب میں سیسے و شریک نہ ہو سکا۔

#### چودهوال باب

# امام ابوحنيفة سيعوام الناس كااستفاده

#### لاست كو نفيحت

حن بن زیاد رجمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے اپنے ایک موالئے دوست کو دیکھا کہ وہ پھٹے پرانے کپڑے پئے ہوئے ہے۔ آپ نے اے بلا کراپنے پاس بٹھالیا ، بلوگ چلے گئے تو آپ نے اے فرمایا میرے مصلے کے بنچے درہم و دینار پڑے ہیں اے اٹھا کر میں قدر چاہے لے لو۔ اس نے مصلی اٹھایا تو ایک ہزار درہم پڑے ہوئے تھے۔ آپ نے فرمایا میں قدر چاہے کے لو۔ اس نے مصلی اٹھایا تو ایک ہزار درہم پڑے ہوئے تھے۔ آپ نے فرمایا میں مارے لے جاؤ اور اپنالباس اور رہمن سمن ورست کلوں۔ اس نے کہا حضور خدا کے فصل سے میں فرشحال اور مالدار آدمی ہوں مجھے کسی چیز کی کمی نہیں ہے ، میرے پاس سب کچھ ہے ، میں مختاج تو مسلی اللہ علیہ و آلہ وسلم کی حدیث نہیں پڑھی کہ " میں ہوں۔ آپ نے فرمایا تم نے حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم کی حدیث نہیں پڑھی کہ " میں ہوں۔ آپ نے بروں پر اپنی نعمتوں کے اثرات و کھنا چاہتا ہے۔" تم اپنی حالت بدلو تاکہ تمہیں دکھے کر مسلی ہوں۔ مغموم نہ ہوں اور تمہاری خوشحال سے انہیں خوشی ہو۔

## یے کے استاد کی خدمت

اساعیل بن حماد بن ابی حنیفہ رائیے ( آپ کے بوتے ) فرماتے ہیں کہ جب آپ کے استاد علمی مراحل سے فراغت بائی تو امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے آپ کے استاد

کو پانچ سو درہم پیش کیئے۔ " مناقب میمری " کے آخری صفحہ پر لکھا ہے کہ آپ کے صاحرات نے سورہ فاتحہ ختم کی تو آپ نے اس استاد کو پانچ سو درہم نذرانہ دیا۔ امام زرنجری دیائی سے نے دوایت کے سورہ فاتحہ کے افتدام پر ایک سے کہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے اپنے بیٹے کے استاد کو سورہ فاتحہ کے افتدام پر ایک درہم نذرانہ دیا تھا۔ کتاب " الکامل " میں لکھا ہے کہ اتن خطیر رقم دیکھ کر استاد نے کما حضور ہیں۔ کونیا اتنا بڑا کارنامہ سرانجام دیا ہے کہ آپ اتنی رقم کا نذرانہ دے رہے ہیں۔ آپ نے فرمایا کے میرے بیٹے کو جو دولت عنایت کی ہے اس کے سامنے یہ نذرانہ تو بہت حقیر ہے۔ بخدا اللہ میرے باس اس سے زیادہ ہو آ تو وہ بھی پیش کر آ۔

وتنابي صني من فريش أألك اورما

#### دوست کا قرض ادا کر دیا

امام ابویوسف مرافیہ فرماتے ہیں کہ میرے استاد امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے جب کے سوال کرتا اور جتنا طلب کرتا آپ اتنا روہیہ عنایت کردیتے 'اس میں کی نہ فرماتے تھے۔ ایک بار آ کے پاس ایک ایسا شخص آیا جس نے عرض کی کہ میں نے کس کے پانچ سو درہم قرض دیتا ہے شک دست ہوں 'قرضہ کی ادائیگی ہے قاصر ہوں 'آپ سفارش کریں کہ میرا قرض دار پچھ دنوں مجھے مملت دے تاکہ میں اس کی اوائیگی کا بندوبست کر سکوں۔ آپ نے اسے بلا کر مملت کے لیے کما۔ اس نے کما حضور! آپ اس کے لیئے مملت مائیتے ہیں 'میں آپ کی وجہ سے اس کا سارا قرف معاف نہ کریں صرف چند روز کی مملت دے دیں۔ معاف کرتا ہوں۔ مقروض نے کہا میرا قرض معاف نہ کریں صرف چند روز کی مملت دے دیں۔ حضرت امام مرافیجے ضرورت ہے جاؤ آئے ۔ حضرت امام مرافیجے ضرورت ہے جاؤ آئے ۔ حضرت امام مرافیجے ضرورت نہیں گر تیرا قرض ادا کرنے کی مجھے ضرورت ہے جاؤ آئے ۔ حضرت امام مرافیجے ضرورت نہیں گر تیرا قرض ادا کرنے کی مجھے ضرورت ہے جاؤ آئے ۔ حضرت امام مرافیجے ضرورت نہیں گر تیرا قرض ادا کرنے کی مجھے ضرورت ہے جاؤ آئے ۔ حضرت امام مرافیجے ضرورت نہیں گر تیرا قرض ادا کرنے کی مجھے ضرورت ہے جاؤ آئے ۔ حضرت امام مرافیجے ضرورت نہیں گر تیرا قرض ادا کرنے کی مجھے ضرورت ہے جاؤ آئے ۔ حضرت امام مرافیع کرتا ہوگیا ہے۔

## راه گیرول پر مروت

بعض ناواقف لوگوں کی عادت تھی کہ آپ کی مجلس کے پاس سے گزرتے تو آپ کے پار چند لمحوں کے لیئے بیٹھ جاتے۔ انہیں آپ کی مجلس سے کسی فائدے کی غرض نہ ہوتی تھی' صرف چلتے چلتے ستانے کے لیئے بیٹھ جاتے۔ وہ اٹھنے لگتے تو آپ ان کی ضرورت کے متعلق دریافت کرتے۔ اگر ان میں سے کوئی بھوکا ہو آ تو اسے کھانا کھلاتے۔ اگر بیار ہو آ تو علاج کے لیئے روپے دیتے۔ اگر اس علاج کی ضرورت ہوتی تو خود طبیب کے پاس لے جاتے اور دوائی لے کر اس کے گھر پہنچاتے۔ آپ کے پاس چند لمحات گزارنے والے بھی آپ کی مروت سے محروم نہ جاتے۔

#### احباب کی خدمت

ولید بن قاسم رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ نعمان بن ثابت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ رہی کی ٹروں کی خرید و فروخت کیا کرتے تھے۔ اپنے احباب و اصحاب کی خدمت کرتے اور ان کی ضروریات کا خود خیال رکھتے اور بڑھ کر امداد اور تعاون فرماتے تھے اور جس چیز کی ضرورت ہوتی خود معلوم کرتے اور انہیں پہنچاتے۔ اگر کوئی ہمسایہ بیار ہوتا تو اس کی عیادت کے لیئے خود جاتے۔ اگر کوئی مرجاتا تو اس کے عیادت کے لیئے خود جاتے۔ اگر کوئی مرجاتا تو اس کے جنازے میں شرکت کرتے۔ اگر کوئی مجبوری ہوتی تو اپنا نمائندہ بھیجے۔ آپ کے احباب میں سے کوئی ضرورت مند ہوتا تو آپ اس کی ضرورت کا خیال رکھتے۔ آپ اپنے وقت کے الک تھے۔

#### احباب كو تحفه

زیاد ابن الحن رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ ایک دفعہ میرے والد نے حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی خدمت میں ایک قیمتی رومال بطور محفہ بھیجا۔ اس کی قیمت تین درہم تھی ا آپ نے اسے بخوشی قبول کر لیا۔ گرچند ونوں بعد آپ نے ایک نمایت ہی نفیس ریشی کیڑا بھیجا اور محفہ برائے تحفہ کا حق ادا کر دیا۔ اس کیڑے کی قیمت بچاس ورہم تھی۔

عبید اللہ بن عمروال تی رحمتہ اللہ علیہ نے حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو ایک ایسا وہ بطور تخفہ بھیجا جو سارے کوفہ میں نہیں ملتا تھا۔ آپ نے اس کے بدلے انہیں ایسے نفیس ریشی کڑے بھیج جو سارے عراق میں کہیں نہ ملتے تھے۔

یوسف بن خالد السمنی رحمته الله علیه ایک طویل واقعه بیان کرتے ہوئے فرماتے ہیں کہ میں بھرو سے کوفیہ آیا تو حضرت امام ابو حلیفہ رضی الله تعالیٰ عنه کی خدمت میں حاضر ہوا تو ایک حاجی

نے حضرت اہام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی خدمت میں ایک ہزار جوتے بطور ہدیہ بھیج وہ جوتے بود فیتی ہے۔ آپ نے اپنے احباب اور شاکردوں میں تقتیم کر دیے۔ میں نے دیکھا کہ دو تین روز بعد حضرت اہام ابوطنیفہ اپنے بیٹے کے لیئے بازار سے جو تا خرید رہے ہیں۔ میں نے عرض کی حضور! آپ کے باس تو ہزار جوڑے جوتے آئے تھے آپ پھر بھی بازار سے خریداری کر رہے ہیں۔ آپ نے فرمایا 'ہدیہ اور تحفہ کے متعلق ہمارا طریق کار حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی صدیث پر عمل کرتا ہے۔ آپ باتھا نے فرمایا کہ " ہدیہ خواہ کتنا ہو اسے قبول کر لو گراس کا بدلہ ضرور دیا کرد۔" میرے جتنے احباب اور شاگر و جمال جمال دو۔ ہیں بتے ایک ہزار جوتوں کے ہدیہ میں میرے شریک ہیں النذا میں نے ان پر تقتیم کر دیتے ہیں بی اسے تنا رکھنا گوارا نہیں کر تا تھا' چنر احباب رہ گئے تھے میں نے انہیں اپنا حصہ اور آپ بیٹے کا حصہ کبی دے دیا۔ میں نے دختور نبی کریم صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم کی حدیث کی روشن میں ہدیہ قبول بھی کر لیا۔ آپ احباب کو شریک بھی کر لیا اور اب ضرورت کے لیئے خریداری بھی کر دہا ہوں۔

حضور نبی کریم صلی الله علیه وآله وسلم بدیه قبول فرمات کوئی دعوت دیتا تو رونه فرمات میریم کریم صلی الله علیه وآله وسلم بدیه قبول فرمات کی مجسم تفیر موت اذا حیتم رحود می ادر وجی بنده اول پر فرمایا ولاتعسوا الفضل بینکم ☆

#### سفريس مروت

عبداللہ بن برسمی فرماتے ہیں کہ میں مکہ کے سفر میں تھا۔ میرا ساربان (جال) سے جھڑا ہو گیا۔ وہ جھے کھینج کر امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ جو ہمارے قافلہ میں شریک سفر تھے کے گیا ہم دونوں نے اپنا اپنا موقف پیش کیا 'آپ نے دونوں کا بیان سا۔ پھر فرمایا 'اگر میں تم لوگوں کے سوالات کا جواب دینے لگوں تو جھڑا بڑھ جائے گا اس سے تہیں پچھ فائدہ نہ ہوگا بلکہ نقصان ہو گا۔ اب آپ نے جال (اونٹ دالے) کو کما آپ جھے ہاؤ تہمارے کتنے درہم بنتے ہیں ؟ اس نے کما چالیس درہم۔ آپ نے فرمایا 'تم لوگ حرین کے سفر میں ہو گر ایک دو سرے سے مروت کا جذبہ اٹھ گیا ہے۔ جھے تو شرم محموس ہوتی ہے ہیہ کر آپ نے چالیس درہم نکال کر اس جال کو دے دیئے۔

اسحاق بن ابی اسرائیل رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ میرے باب کا بیان ہے کہ امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ بہت ہی تخی دل تھے اور اپنے احباب و اصحاب کی ضرورتوں کا خیال رکھتے اور بلا کے ان کی تکالیف میں ہاتھ بٹاتے تھے۔ عید کے دن نہ آتے تو خود پہنچ کر ان کی امداد کرتے اور امراء حباب کو ان کی حیثیت کے مطابق تحالف بھجتے۔ جے نکاح کی ضرورت ہوتی اس کے لیئے نکاح کا حباب کو ان کی حیثیت کے مطابق تحالف بھجتے۔ جے نکاح کی ضرورت ہوتی اس کے لیئے نکاح کا میدوبات کرتے اور ذاتی طور اپنی جیب سے خرج کرکے ان کے لیئے آسانیاں میا کرتے۔ آب بہت میرگار تھے، روزہ دار تھے اور شب بیدار بھی، رات بھر تلاوت کلام پاک کرتے اور دن کو فقہ کے مسائل سے لوگوں کی راہنمائی فرماتے۔ قرآن پاک اور حدیث کے مسائل کو بیان کرنے میں آپ کا سائل سے لوگوں کی راہنمائی فرماتے۔ قرآن پاک اور حدیث کے مسائل کو بیان کرنے میں آپ کا گئی نہیں تھا۔ گردد سری طرف عملی طور پر سخاوت اور مروت کی ایک مثال تھے۔

عبدالرحمٰن الدوى رحمت الله عليه فرماتے ہيں كه امام ابوحنيفه رضى الله تعالى عنه اپنے معتزادہ حماد سے فرمایا كرتے كه جر روز دس درجم كى روٹيان خريد كر ان غرباء جمسا يوں ميں تقسيم كيا كو جنهيں كوئى بھى نهيں بوچھتا، جو التھ نهيں كھيلا كتے۔ كيربازار ميں ان فقيروں ميں تقسيم كياكر جنهيں كوئى بھى نهيں بوچھتا، جو الله دروازے پر آجائے اسے كھانا ضرور كھلاؤ۔

## ابولیوسف روایلیہ کے اہل و عیال کی کفالت

امام ابویوسف روائی فرماتے ہیں کہ میں نے امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے بردھ کر کسی کو میں دیکھا۔ میں نے ایک دن جرات کر کے آپ کے سامنے کمہ دیا کہ میں نے آپ جیسا تخی میں دیکھا۔ آپ نے فرمایا کاش تم میرے استاد کو دیکھ لیتے وہ بہت برے سخی تھے۔

الم ابوبوسف علی فرماتے ہیں کہ الم ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ محمود اور مرغوب عادات اللہ سے اور اللہ معلی اللہ معالی عنہ محمود اور مرغوب عادات کے جامع تھے۔ میں نے ساری عمر میں آپ سے بردھ کر کسی کو نہیں سے وہ میرے اٹل و عیال کی دس سال تک متواتر کفالت فرماتے رہے۔ حسن بن مطبع فرماتے ہیں سے بن سلیمان اپنے وقت کے برے شخ اور جلیل القدر بزرگ تھے۔ وہ فرمایا کرتے تھے کہ میں اللہ تعالی عنہ سے بردھ کر کوئی تخی نہیں دیکھا۔ آپ تمام احباب شاگرد اور سے کی ضرورتوں کا خیال کرتے تھے۔ اکثر احباب کو ہرماہ وظیفہ دیتے یہ مقررہ وظائف آپ کی عام

# نادم قرض خواه کو معاف کر دیا

شقیق بن ابراهیم رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ میں ایک دن حضرت امام ابوحنیفہ رضی سے تعالیٰ عنہ کے ساتھ کوفہ کے ایک بازار سے گذر رہا تھا۔ حضرت امام ویلیے اپ ایک دوست کی سے بری کے لیئے جارہے تھے۔ سامنے ایک آدمی آبا وکھائی دیا مگروہ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ وکی کہ کر راستہ بدل کر فورا منہ چھپا کر ایک طرف ہو گیا۔ حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ اسے دیکھ کر راستہ بدل کر فورا منہ چھپا کر ایک طرف ہو گیا۔ حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ اس نے دیکھ کیا اور اس کا نام لے کر بلایا۔ تم اس راستہ پر چلتے آو' ادھر ادھر جانے کی ضرورت نسی اس نے دیکھا کہ امام صاحب نے اسے بچپان لیا ہے اور بلالیا ہے' وہ آپ کے پاس آیا آپ نے پوچھ تم راستہ چھوڑ کر کدھر جارہے تھے؟ اس نے بتایا حضور میں نے آپ کا دس ہزار درہم قرض حض مراب کو دیکھ کر ندامت آئی اور میں شرمندہ ہو کر آپ کو منہ نہیں وکھانا چاہتا تھا۔ آپ فرمایا' سجان اللہ! ہم قرضے کی وجہ سے جمیں اس فرمایا ہو دیکھ کے لئے یوں فدر ندامت اور پریشانی ہو رہی ہے۔ جاؤ تمہیں میں نے یہ قرض معانی کیا۔ آئیدہ کے لیئے یوں شرحی کو کہ میں نے تمہیں سے تمہیں سے قرض ریا ہی نہیں تھا اور ججھے کھلے بندوں ما کرو۔ شقیق فرماتے ہیں کہ سبجھو کہ میں نے تمہیں سے تمہیں سے ترض موات کو بھی کو جو سے آزاد کر دیتا ہے۔ بوجہ سے آزاد کر دیتا ہے۔ بوجہ دوستوں کو ندامت کے بوجھ سے آزاد کر دیتا ہے۔

## جفرت زید بن علی رایلیه کی سخاوت

مالک بن سلیمان رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ مجھے میرے باپ نے بتایا کہ سیدنا حضرت زید بن علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو اپنے پاس بلایا۔ آپ نے قاصد کو کہہ کر بھیجا کہ اگر مجھے یقین ہو جائے کہ آپ کے اردگرہ بیٹھنے والے لوگ آپ سے غداری نہ کریں گے تو میں آپ کی اتباع کرتا۔ گرمجھے خدشہ ہے کہ یہ لوگ آپ سے غداری کر رہے ہیں اور آپ کو ویک اور آپ کو دھوکا دے کر رسواکیا تھا۔ میں ان ویے ہی دھوکا دے کر رسواکیا تھا۔ میں ان

لوگوں سے بر سمریکار ہونے کو تیار ہوں بشرطیکہ آپ ان سے بریت کا اعلان کریں۔ اب میرے لیئے ایک ہی راستہ رہ گیا ہے کہ بیس آپ کی مالی امداد اس انداز سے کروں کہ کسی غدار کو اس کی خبر تک نہ ہو اور آپ اپنے مخالفین پر قابو پا سکیں۔ آپ نے قاصد کو دوبارہ کما کہ میری طرف سے معذرت کرنا اور اسے دس ہزار درہم دے کر کما۔ یہ نڈرانہ ہے اب آپ تک پہنچا دینا۔

اس واقعہ میں ایک روایت ہے بھی ہے کہ آپ نے قاصد کو کہا میں ان دنوں بہار ہوں خود عاضر ہونے سے قاصر ہوں۔ ہے وہ زمانہ تھا جب حضرت زید بن علی ظیفہ عبای سے بر مرپریکار تھے۔ ایم ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ آپ کے پاس نہ جاسکتے تھے۔ ایک اور روایت میں لکھا ہے کہ ان وڈں لوگوں نے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے سوال کیا کہ آپ امام زید بن علی رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مل کر خلیفہ کے ساتھ جماد کیوں نہیں کرتے؟ آپ نے فرمایا' آپ کے ساتھ جماد میں نگلنا اور شریک ہونا ایما بی ہے جس طرح رسول اللہ صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم کے ساتھ میدان بدر میں جانا۔ قرگوں نے کہا بچر آپ کیوں نہیں نگلتے اور اس عظیم الثان جماد سے کیوں بیچھے رہتے ہیں۔ آپ نے فرمایا' میرے پاس بے پناہ غریبوں کی امانتیں ہیں۔ میں نے ابن ابی لیالی کو کہا کہ یہ امانتیں سنبھالو اور سے ان لوگوں کو پنچاؤ میں جماد میں شرکت کرنا چاہتا ہوں گر انہوں نے انکار کر دیا۔ اب اگر چلا ہوں اور وہاں شہید ہو جاؤں تو امانتیں صائع ہو جائیں گی اور قیامت کے دن جھے سے باز پرس ہوگ۔ چیس اور وہاں شہید ہو جاؤں تو امانتیں صائع ہو جائیں گی اور قیامت کے دن جھے سے باز پرس ہوگ۔ سے سے بی برحت کی رات کو حضرت علی کر م اللہ وجہ کی سنت پر عمل کر رہا ہوں۔

زید بن علی رضی الله تعالی عند اسی جماد میں شہید ہو گئے۔ تو امام ابو حنیفه رضی الله تعالی عند اسی شمادت پر بوے روئے۔ جب بھی آپ کی یاد آتی تو آپ کے روتے روتے ہیکی بندهم و جاتی۔

یکی بن خالد روالی فرماتے ہیں کہ ابراهیم بن عیب فرض کی نادہندگی کی وجہ سے گرفآار کر کے گئے۔ یہ چار ہزار درہم کا قرض تھا۔ اس کے چند دوستوں نے عوام سے چندہ جمع کرنے کی ائیل کے۔ یہ دوست حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے پاس بھی آئے۔ آپ ابراہیم بن عیب میں عیب استحق سے۔ آپ نے ان لوگوں سے پوچھا کہ آپ پر کتنا قرض ہے؟ لوگوں نے بتایا چار ہزار درہم سے جھے ذائد ہے۔ آپ نے بوچھا کہ کتنا چندہ جمع ہوا ہے۔ لوگوں نے بتایا کہ کچھ رقم جمع ہو گئ

مکتبه نبویه -

میں اس عالم دین کو عوام الناس کے سامنے رسوا نہیں ہونے دوں گا۔ آپ نے یہ کہہ کر سارا قرضہ اللہ کر دیا۔ کر دیا۔ یہ ابراہیم سفیان بن عینیہ کے بھائی تھے۔ یہ سارے بھائی محدث تھے۔ سفیان بن عینیہ عمران' احمد' محمد آدم اور ابراہیم رحمتہ اللہ علیم۔

معر بن كدام رافيہ فرماتے ہیں كہ امام ابوصفه رضى اللہ تعالى عنه جس قدر اپنے الل و عيال پر خرچ كرتے اتنا بى مشائخ اور علماء پر خرچ كرتے ، جيسے كپڑے اپنے الل و عيال كو پہناتے ويسے بى مشائخ اور علماء كے ليئے تيار كراتے۔ آپ كے پاس اگر كہيں سے پھل يا عمرہ محجوريں آتيں يا اپنے الل و عيال كے ليئے بچھ پھل خريد كرلاتے تو اس ميں سے مشائخ كى خدمت ميں بھيج ويتے۔ يہ مروت اور سخاوت بس امام ابو حقيفه رضى اللہ تعالى عنہ كے بى حصہ ميں آئى تھى۔

شریک بن عبداللہ ملیلی فرماتے ہیں کہ امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ اپنے احباب کے لیے اب بناہ فکر مند رہتے۔ آپ علم و فضل کی دنیا میں فقہ پر بڑی گری نظر رکھتے تھے۔ علمی حاجات پوری کرنے میں بڑی اہمیت اور قابلیت سے حصہ لیتے۔ جے پڑھاتے اس کے دکھ درد میں شریک ہوتے سے۔ غریب و مساکین شاگردول کا خصوصی خیال کرتے۔ آپ بعض او قات ان لوگوں کو اتا دیتے کہ وہ خوش حال ہو جاتے۔ آپ کے پاس عقل و بصیرت کے فرانے تھے 'گراس کے باوجود آپ جھڑوں اور مناظروں سے اجتناب فرماتے۔ آپ لوگوں سے بہت کم گفتگو فرماتے اور ان سے مسائل میں الجھتے نہیں تھے اور خاموشی افتیار کرتے۔

## تجارت کے منافع میں مشائخ کا حصہ

حن بن الربیج رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ مجھے قیس بن الربیج نے بتایا تھا کہ حفرت المام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ بغداد ہے بہت سامال خرید کر کوفہ میں لایا کرتے اور اسے مارکیٹ میں بیج تھے۔ اس سے جو منافع ہو تا تو آپ کوفہ کے شیوخ کے لیئے ضروریات زندگی خرید کر ان کے ہاں پنجاتے ' پھر محد ثین کے لیئے ان کی ضروریات زندگی خرید کر ان کے گھر پنجاتے۔ ان کے لیئے کھانے پنجاتے ' پھر محد ثین کے لیئے ان کی ضروریات زندگی خرید کر ان کے گھر پنجاتے۔ ان کے لیئے کھانے پینے کی چزیں ' لباس کے لیئے کپڑے اور پوشاکیس سلوا کر بھیجا کرتے تھے۔ اگر پھر بھی منافع پی جا تا تو آپ انہیں نفتہ دے دیتے تاکہ وہ اپنی ضرورتوں کو اپنی مرضی سے پورا کر سکیس اور ساتھ ہی پیغام

سیج میں نے اپنی طرف سے کچھ نہیں بھیجا یہ سب اللہ تعالی نے آپ کے لیئے نفع عطا فرمایا ہے۔ لذا اس کی نعتوں کا شکر اوا کرو۔ میری تجارتی زندگی میں جس قدر منافع ہے اس میں آپ کا حصہ ا ہے۔ مجھے تو صرف اللہ تعالی نے آپ لوگوں کی خدمت کا سبب اور ذرایعہ بنا رکھا ہے۔ اس کا رزق میرے ہاتھوں آپ تک پہنچ رہا ہے۔

#### تجارت کے نفع میں ایک ضرورت مند کا حصہ

الله فرماتے ہیں کہ میرے والد نے جھے جایا تھا کہ حضرت امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے باس ایک شخص آیا اور عرض کی حضور جھے دو کپڑوں کی ضرورت ہے آپ جھے پر احسان فرمائے، ہیں الحقی کپڑے پہن کر فلاں شخص کے پاس جانا چاہتا ہوں، جس سے ہیں رشتہ ماگوں گا۔ آپ نے فرمایا، گھے دو ہفتے کی مسلت دیں۔ وہ دو ہفتوں کے بعد پھر آیا۔ آپ نے فرمایا، کل آنا۔ وہ دو مرے دن آیا آپ نے اس کے لیئے ایک قیمتی جو ڑا نکالا جس کی قیمت بست زیادہ تھی اور ساتھ ہی چھ نفتدی بھی دی۔ اس نے بوچھا، حضور یہ کیوں؟ آپ نے فرمایا، ہیں نے تیری نیت سے بغداد میں چھ مال بھیجا تھا اس میں سے جفنا نفع آیا وہ تمہارا ہے۔ اس میں دو کپڑے خریدے گئے جو تمہیں دے دیئے ہیں اور یہ نفتدی ہی گئی ہے یہ بھی تمہاری ہے۔ اس نے آما، میں تو ان کو قبول نہیں کروں گا۔ آپ نے فرمایا، میں انہیں استعمال نہیں کر سکا۔ جب اس نے امام صاحب کی یہ بات سی تو ساری چزیں قبول کر لیں اور دل سے دعا کرتا ہوا چلاگیا۔

عطاء نے حضرت ابن عباس رضی اللہ تعالی عنہ روایت فرمائی ہے کہ حضور ملھ بھا نے فرمایا " جس نے اپ مسلمان بھائی کو کہا۔ احسن المی مجھ پر احسان کرو اور اس نے اس کی خواہش پوری کر دی تو اس نے مجھ اپ راز کا این بنالیا " میں اس پر اپنی رحمت کی نگاہ کروں گا۔ " امام ابوبوسف ملطی فرماتے ہیں کہ امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ اپ جانے والوں اور وستوں پر برا خرچ کیا کرتے تھے۔ آپ ایک ایک دوست کو بچاس بچاس درہم عنایت فرما ویا کرتے تھے۔ آپ ایک ایک دوست کو بچاس بجاس درہم عنایت فرما ویا کرتے تھے۔ آگر وہ لوگوں کے سامنے آپ کا شکریہ ادا کرتے تو آپ مغموم ہو جاتے اور فرماتے مجھے اور آپ

TLA

**X** 

کو تو الله کا شکر اوا کرنا چاہئے' یہ تو ای کا دیا ہوا ہے۔ جو میں نے بڑھ کر پیش کیا یہ در اصل شمارہ ہوت تھا۔ حق قفا۔ حضور نبی کریم صلی الله علیہ و آلہ و سلم نے فرمایا مااو تیکم شیئا ولا امنعکموہ واللہ انا خازن اضع حیث امرت نہ "میں تہیں از خود ضیں دیتا نہ از خود روکتا ہوں میں تو الله کا خازن ہوں' وہاں خرچ کرتا ہوں جہاں مجھے تھم ہوتا ہے۔"

امام ابوبوسف ملینی فرماتے ہیں لوگ کہتے ہیں کہ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عند کو اللہ تعلق ف نے فقہ علم و عمل اور سخاوت اور پھر احباب پر خرچ کرنے پر مامور فرمایا تھا۔ آپ کے اخلاق قراق پاک کی روشنی میں مرتب ہوئے تھے۔

# صدیث پاک بیان کرنے سے پہلے صدقہ دیا جاتا

ملے بن و کیم رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ میرے والد نے بتایا کہ امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے اپنے اوپر لازم کر رکھا تھا کہ حدیث بیان کرنے سے پہلے صدقہ کیا کرتے تھے۔ اگر آپ کی حدیث پاک بیان کرنے کے بعد دینار کا چوتھا حصہ غربوں میں صدقہ فرماتے۔ اگری فتم کھا کر حدیث بیان فرماتے تو ایک دینار صدقہ کرتے۔ آپ کا دستور تھا کہ جتنا مال اپنے اہل و عیال کرتے۔ آپ کی فتم کھانے سے پہلے بھی صدقہ دیتے۔ آپ کا دستور تھا کہ جتنا مال اپنے اہل و عیال پر خرج کرتے اتنا ہی اللہ کے نام پر خیرات کر دیتے۔ جب آپ نیا لباس پہنتے تو پہلے شیوخ کوفہ کے بال کوئی تحفہ ضرور بھیجے۔ جب آپ کھانا کھانے لگتے تو اپنی مختمر می ضرورت کے لیئے کھانا رکھتے باقی ضرورت مندوں میں تقیم کر دیا کرتے اور اپنے عمرہ کھانے میں علاء کرام کو شریک کرتے۔ اگر کوئی فقیریا مسکین آجاتا تو خود تھوڑا کھاتے باقی اسے عنایت فرما دیا کرتے۔

# كثيرالعلوم والصيام

مناقب امام اعظم

ابن عیینه فرماتے ہیں کہ حفرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ بے پناہ علوم پر دسترس رکھتے تھے۔ اکثر روزہ سے رہتے ' پھر صدقہ اور خیرات کرنے میں سخاوت کا دریا تھے۔ آپ کو مال تحارت میں سے جتنا نفع ہو آ اس میں سے تھوڑا اپنے گھر کے لیئے رکھتے۔ زیادہ حصہ غرباء میں تقتیم

کر دیتے۔ گر پھر آپ کے مال تجارت میں برکت آتی اور کیٹر نفع حاصل ہو جاتا۔ ایک وقعہ میرے پاس اتنے تحائف اور ہدایا جمع ہو گئے کہ میں دیکھ کر گھبراگیا۔ میں نے ایک دوست سے صور تحال بیان کی تو اس نے بتایا کہ اگر تم ان تحائف اور ہدایا کو دیکھ لیتے جو سعید بن عروبہ کے پاس جمع بیں تو تم جران رہ جاتے۔ ابن عید نہ دولیے فرماتے ہیں کہ ان دونوں بزرگوں کے تحائف میں کثرت ان تحائف کی تھی جو حضرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ انہیں بھیجے تھے۔

حضرت فضل بن عیاض رحمتہ اللہ علیہ ( یہ مشائخ چشتہ کے پیران پیر ہیں ) فرماتے ہیں کہ الم ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو لوگ "کیرالافضال "کما کرتے تھے۔ آپ گفتگو کم کرتے 'اہل علم و فضل پر نوازشات و اکرام فرمایا کرتے تھے۔ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرماتے ہیں کہ میں نے چاہیں سال سے زیادہ عرصہ تک چار درہم سے زیادہ روپیہ اپنے پاس بھی نہیں رہنے دیا تھا۔ اگر چار درہم سے زیادہ روپیہ آیا تو میں اسے فقراء اور مساکین میں صدقہ کر دیا کرتا تھا۔ چار درہم بھی میں نے اس لیئے رکھے کہ سیدنا علی کرم اللہ وجہ کا ایک قول ہے کہ گھر میں کم از کم چار درہم ہونے چائیں آکہ فوری ضروریات کو پوراکیا جا سے۔ اگر مجھے اس سے کم ضرورت ہوتی تو میں ایک درہم گھی نہ رہنے دیا۔

حضرت حسن بن زیاد ریافید ایک عرصہ تک حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی خدمت میں رہے۔ میرے والد نے حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی خدمت میں گزارش کی کہ میری اولاد میں ساری بچیاں ہی ہیں صرف حسن میرا ایک بیٹا ہے۔ میری بچیاں اور میں خود ضرور تمند میں اور ہمارا خدمت کرنے والا اور کوئی نہیں ہے۔ آپ اے کوئی ایسا کام بتا کیں جس سے اسے میری ہو اور بیہ ہمارا کفیل بن سکے۔ آپ نے حسن کو اپنے پاس بلایا اور بتایا کہ تممارے والد آئے تھے اور یوں کہتے تھے۔ گر میرا مشورہ ہے کہ تم حصول فقہ میں ہی گئے رہو۔ میں نے فقیہ کو بھی تنگ اور یوں کہتے تھے۔ گر میرا مشورہ ہے کہ تم حصول فقہ میں ہی گئے رہو۔ میں نے فقیہ کو بھی تنگ سے سے نہیں بلاے چنانچہ حسن علم فقہ کی مخصیل میں مصووف رہے۔ اس میں شمیل حاصل کی ایک دن ایک دن ایک کوفہ کے مقبول لوگوں میں شمار ہونے گئے۔

## ایک شاگرد کا ایک صله

حضرت الم ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے ایک شاگرد تھے۔ انہوں نے ایک دن حرے خدمت میں حاضر ہو کر عرض کی حضور میں نے آپ کے ایک واقف آجر کو لکھا ہے کہ حضرت ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو تمیں ہزار درہم قرضہ کی ضرورت ہے اور آپ کا پیغام لے کر حد کے پاس گیا تو اس نے صرف تمیں درہم دیئے۔ حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے مسلم کیا تو اس نے صرف تمیں درہم دیئے۔ حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے مسلم کما' میرے وہم و گمان میں بھی نہ تھا کہ کوئی مخص میرا نام لے کر یوں بھی نفع اٹھا سکتا ہے۔ چاہے کے بیہ طریقہ کر لیا کوئی بات نہیں۔

عبدالله بن داؤد مرائیہ نے اس داقعہ میں اضافہ کرتے ہوئے فرمایا کہ آپ کے ایک دو سرے شاگرد نے جرجان کے حاکم کو ایک خط لکھا کہ امام ابو حنیفہ رضی الله تعالی عنہ کو چار ہزار درہم کی ضرورت ہے۔ انہیں قرضہ چاہئے اس نے چار ہزار دیتار دے دیئے۔ جب امام صاحب کو علم ہوا ہی آپ نے فرمایا' اچھا تو یوں بھی نفع حاصل کیا جاسکتا ہے۔ اسے پچھ نہ کما اور جرجان کے حاکم کو چار ہزار دیتار اداکر دیئے۔

کوفہ میں ایک شخص بڑا مالدار تھا۔ وہ بڑا خود داراور حیا دار تھا۔ ایک ایبا وقت آیا کہ وہ غریب اور مختلج ہو گیا۔ وہ شمر کے بازار میں چلا جاتا مزدوری کرتا مشقت اٹھاتا اور صبر کرتا۔ یہاں تک کہ اسے بھوک اور غریت اور معاشی برحالی نے دیا لیا۔ اس کی بیوی ایک دن حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے باس آئی صورت حال بیان کی اور کہا کہ چھوٹی چھوٹی بچیاں ہیں وہ ہر چیزے محروم ہیں ، ہم کی وقت صاحب شروت تھے 'گھر میں ہر چیز کی فراوانی تھی' دن رات عیش و عشرت میں بر ہوتی۔ مگراب ہم دونوں سخت محت کرتے ہیں مگر گزارا نہیں ہوتا اور بھوک اور فاقے نے فاکر دیا ہوتی۔ مگراب ہم دونوں سخت محت کرتے ہیں مگر گزارا نہیں ہوتا اور بھوک اور اس قدر مصائب ہے۔ ہمارے کھانے کے برتن خالی رہ گئے ہیں' اکثر ان میں سے بک گئے ہیں اور اس قدر مصائب اور بلائیں آگئ ہیں کہ اب دل چاہتا ہے کہ گداگری کے لیئے ہاتھ پھیلا دیتے جائیں' مگر میرے خود کو صبر کی تلقین کرتے رہتے ہیں اور خود بھی صبر کا مجمد بن کر اس دن کا انتظار کر رہے خاوند مجھ کو صبر کی تلقین کرتے رہتے ہیں اور خود بھی صبر کا مجمد بن کر اس دن کا انتظار کر رہے بیں جب پھر خوشحالی آجائے۔

ایک دن اس کی ایک بچی نے بازار میں کاری دیمی۔ اس کا دل اس کاری کے لیئے امنڈ آیا۔ وہ بوئی للجائی ہوئی نظروں سے اسے دیکھنے گئی۔ وہ ادھر جھی باپ سے کاری لے کر دینے کو کہا گرباپ نے صبر کی تنقین کی۔ گراس صبر کے ساتھ اس کا دل ریزہ ریزہ ہو گیا۔ وہ کیا کر سکتا تھا گھر کا سارا سامان بک چکا تھا۔ بچی کی خواہش کو دیکھا نہ جا سکتا تھا وہ اس دن کے بعد گداگری کی نیت سے سوال کرنے کے لیئے باہر نکلا اور سب سے پہلے اسے کسی بابر کت مجلس اور سخی انسان کی تلاش تھی۔ وہ قدم بردھا تا آپ کی مجلس میں آپنچا۔ تھوڑی دیر بیٹھا رہا گراسے شرم و حیاء اجازت نہ دیتی تھی کہ آپ سے سوال کرے۔

آپ نے (اہام ابو صنیفہ) اس غور سے دیکھا' اس کے چرے سے محسوس کیا کہ بیہ ضرورت مند ہے۔ گر خود دار ہے' حیا دار ہے' سوال نہیں کر رہا۔ وہ مجلس سے اٹھ کر گھر کو روانہ ہوا۔ آپ نے اس کے پیچھے کی آدی کو بلانے کے لیئے دوڑایا گروہ اپنے گھر کے اندر جا چکا تھا۔ یبوی نے پوچھا کیا لائے ہو' اس نے سارا واقعہ سایا اور کہا میں تو اس بابرکت مجلس میں بھی پچھے نہ مانگ سکا' مجھے حیا آئی۔ اس مختص نے والی جا کر سارا واقعہ آپ کو سنا دیا۔

رات خاصی گذر گئی تھی' ایک خخص نے دروازہ کھٹم دیا دروازہ کھلا تو آپ نے فرمایا کہ میں تہماری ایک چیز رکھے جارہا ہوں اسے لے لیجئے اور بید کمہ کر آپ واپس آگئے۔ میرے خاوند نے تھیلی اٹھائی۔ میں نے اسے دور دیا اسے کھولو' کھولتے کیوں نہیں۔ اس نے کما یہ خدا معلوم کس کی ہے۔ اس میں کسی ذمی کا صدقہ ہویا کسی کی امانت ہو۔ ہمیں اس کو کھولنا نہیں چاہئے۔ میں نے آگ بڑھ کر اس تھیلی کو کھول لیا۔ اس میں پانچ ہزار درہم تھے اور ایک کاغذ کے پرزے پر لکھا ہوا تھا' یہ تھوڑا سا مال ہے۔ تہمارے دروازے پر ابوحنیفہ آیا تھا۔ اس کی طال کی کمائی ہے' اسے استعمال میں لاؤ' واپس نہ کرنا۔

حضور میں آپ کا شکریہ اوا کرنے آئی ہول اور اپنے صالات بھی بیان کر چلی ہوں۔ میرا خاوند واقعی صابر' حیادار اور خود دار ہے۔ (یاد رہے کہ حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے بیر رقعہ مجوراً لکھ کر رکھا تھا آگہ انہیں کوئی غلط فنمی نہ ہو۔)

## مسلمانوں کے تقویٰ کا دور

اس زمانہ میں مسلمان کتنے خود وار اور متنی تھے۔ وہ صبر کرتے گر مشکوک مال کی طرف ہاتھ نہ بردھاتے تھے۔ وہ اہل ذمہ کی محبت اور مروت کے جال میں بھی نہیں آتے تھے۔ غربت میں بھی حلال مال کو استعمال کرتے۔

نعمان نفس مارات قط رتبة من الجود الاقد علت صهواتها
قد استحقرت ماستعظمته اشحة تذربها وقت الندى كحصاتها
اصابع كفيها وسناير اعها بروج بدت منها نجوم صلاتها
وسلوتها في جودها و عفافها و راحتها في صومها و صلاتها
وهل امها للعلم والمال مهجة وولت وما نالت مدى طلباتها
لقد اخلف الناس العداة وانها لاغنت عفاة الخلق قبل عدائها
تعجبت الوطفاء والبحر كلما افاضت على سوالها صدقاتها

حوت من صفات المدح ماعزجمعه على امة والجود ادئى صفاتها

(قرجمه) امام ابو حنیفہ جیسا تخی ہم نے کہیں نہیں دیکھا۔ آپ کا وجود متبرک ہے۔ آپ کی سخاوت کے جھنڈے بری بلندیوں پر لہرا رہے ہیں۔ بخیل لوگ جس مال کو بری عظیم الثان چیز سجھتے ہیں امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے سامنے وہ حقیر چیز تھی۔ اور مال و زر کو کنگریوں کی طرح جانا۔ آپ کے ہاتھ کی انگلیاں اور آپ کے ہاتھ کی کشادگ سے عطیات کے ستارے جھڑتے تھے۔ آپ کا وجود اطمینان پاک وامنی اور جود و سخاکا مجمعہ تھا۔ آپ کو صوم و صلوۃ ہیں ہی راحت ملتی تھی۔ آپ کی سخاوت کے سامنے بیابانوں کی بخیا ثمیاں اور دریاؤں کی روانیاں بیج دکھائی دیتی ہیں۔ آپ سائل کے سخاوت کے سامنے بیابانوں کی بخیا ثمیاں اور دریاؤں کی روانیاں بیج دکھائی دیتی ہیں۔ آپ سائل کے

THI

موال سے پہلے اس کی ضرورت کو پورا کر دیا کرتے تھے۔ سائل کی زبان سے آپ کا ہاتھ تیز تھا۔ آپ کے مناقب کے مناقب کے مناقب کے مناقب کے مناقب کے مناقب کے بخر بیکراں کی ایک اونی صفت ہے۔

#### يندر حوال باب

# أمام ابوحنيفة لتحت كاوقاراورقبى كيفيت

## مجلس میں سانب کا گریونا

شفیق بن ابراہیم زاہر رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ ہم لوگ ایک دن حضرت امام ابوطیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے پاس معجد میں بیٹھے ہوئے تھے۔ اچانک معجد کی چھت سے ایک مائپ ابرا تا ہوا ینچے آتا دکھائی دیا۔ وہ سیدھا حضرت امام اعظم کے سرپر لٹکٹا دکھائی دیتا تھا۔ دکھے کرلوگوں کی چینیں نکل گئیں۔ بھگد ڑ جج گئی۔ سانپ سانپ کہ کر سب کے سب بھاگے۔ میں بھی ان بھاگنے والوں میں سے تھا۔ گر میں نے دیکھا حضرت امام ابوطیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نہ تو اپنی جگہ سے اٹھے' نہ ان کے چرے کا رنگ بدلا۔ ادھر سانپ گرتے ہی امام صاحب کی گود میں آپڑا۔ آپ نے ہاتھ سے جھنک کر جے ایک طرف بھینک دیا۔ گر خود اپنی جگہ سے نہ ہے۔ اس دن سے جھے یقین ہو گیا کہ آپ کو اللہ تعالیٰ کی ذات پر کتنا پختہ اعتاد ہے۔

احمد بن الازہر رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ مجھے حبیب نے جو امام مالک رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے کاتب سے بتایا کہ آپ ایک بار مدینہ منورہ کے قیام کے دوران امام مالک ملیے سے امام مالک مریفیہ سے سائل میں آپ سے مباحثہ کرتا چاہتے تھے۔ گفتگو ختم ہوئی تو آپ اٹھ کر چلے گئے تو امام مالک مایلی ہے فرمایا' ابو حنیفہ کس قدر حلم و برداشت کا مالک ہے۔

المام عبدالله بن السبارك رحمته الله عليه فرماتے ہيں كه ميں نے امام ابوحنيفه رضى الله تعالىٰ عنه سے زيادہ عقل مند اور صاحب بصيرت انسان كوئى نہيں ديكھا۔ آپ نے تفصيل بيان كرتے ہوئے فرمايا كه ايك دفعہ ہم آپ كے پاس طقہ بنائے بيٹے ہوئے تھے تو ایك مخص نے چلاكر كما۔ سانب!

سانپ !! واقعی ایک سانپ چھت سے ینچ لئک رہا تھا اور آپ کے سرکے عین اوپر تھا۔ ہم سب ڈر کے مارے بھاگ ایشے۔ گر امام اعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو دیکھا کہ نمایت متانت سے اپنی جگہ تشریف فرما تھے نہ گھبراہٹ نہ پریٹانی' سانپ آپ کی گود میں آگرا۔ آپ آرام سے بیٹھے رہے اور التھ کے بھتے سے اسے ایک طرف پھینک ویا۔ اس واقعہ کا ایک اور راوی اسلم کہتا ہے کہ میں نے عبداللہ بن مبارک سے کما آپ تو ڈر کے مارے بھاگ کھڑے ہوئے ہوں گے۔ فرمایا ہاں! میں بھاگا۔ گرسب کے پیچھے (مترجم = آپ کی بیر کرامت یا استقلال ایسے ہی ہے جیسے حضرت غوث الاعظم رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا تھا۔)

ابو معاذ رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ آپ کا جن دنوں امام سفیان توری میلیجے ہے اختلاف تھا تو ہیں امام توری کے پاس آیا جایا کرتا تھا۔ حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو اس بات کا انہجی طرح علم تھا اس کے باوجود مجھے نہ تو آپ نے بھی ان کے پاس جانے ہے روکا اور نہ ہی اپنی مجلس میں آنے ہے منع فرمایا بلکہ میری دینی اور دنیاوی ضروریات پوری کرتے، ان میں کی فتم کی کو تاہی یا کی نہ فرماتے۔ آپ بہت ہی حلیم، متی اور باوقار انسان تھے۔ دو سری طرف میں جب امام سفیان قوری میلیج کے ہاں جاتا تو آپ مجھے امام صاحب کی مجلس میں جانے پر تنبیہہ کرتے۔ آپ کو میرا وہاں جاتا ناگوار گزر آتا تھا۔ بعض اوقات سخت ست کتے گرمیں اپنا رویہ نہ بدلتا اور کی کے سامنے آپ کی جانا باتوں کو بھی زبان پر نہ لایا۔ مجھے دو سرے مشاکخ کے پاس بھی جانے کا موقعہ ملتا جن میں مسور بن باتوں کو بھی ذبان پر نہ لایا۔ مجھے دو سرے مشاکخ کے پاس بھی جانے کا موقعہ ملتا جن میں مسور بن کا ایام جھے مقتدر بزرگ تھے۔ وہ سارے کے سارے نمایت خوش دل ہے امام ابو حنیفہ رضی اللہ عنہ سے نعلقات قائم رکھتے تھے۔ وہ نہ صرف آپ سے ملاقاتیں کرتے بلکہ ان کی تحریف بھی کرتے اور دلوں میں مجب رکھتے۔

#### گلیال دینے والے

عصام بن بوسف رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ میں ایک دن امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی مجلس میں بیٹھا تھا' اچانک ایک شخص مجلس میں نمودار ہوا اور کھڑے ہو کر حضرت امام کو گالیاں بھے لگا اور آپ پر مختلف الزامات لگانے لگا۔ آپ نمایت خاموشی سے منتے رہے اور اسے روکا تک

حمیں بلکہ اپنی گفتگو کو جاری رکھا اور اس کی وشنام طرازی کی طرف توجہ نہ دی اور نہ ہی اہل مجلس ہے کی نے اسے روکا۔ یمال تک کہ حضرت اہام ویلیجے اپنی بات سے فارغ ہو گئے۔ اٹھے' اپنے گھر روانہ ہوئے گروہ فخص آپ کے پیچھے پیچھے ہو لیا حتیٰ کہ آپ اپنے گھر کے اندر چلے گئے۔ ہیں نے اس فخص کو دیکھا کہ دیوار کے ایک سوراخ میں سے حضرت اہام کو گالیاں دے رہا تھا۔ گر آپ نے پھر بھی اسے کوئی جواب نہ دیا۔ میں سامنے ایک دکان پر بیٹھ گیا۔ میں نے دیکھا کہ گالیاں دینے والا اس قدر خصہ سے بھرا ہوا تھا کہ وہ آپ کے دروازہ پر سرکو مارنے لگا اور سرکو زور زور سے دروازے پر مار کا رہا اور کئے لگا۔ تم لوگ مجھے کتا سجھتے ہو کہ جواب تک نہیں دیتے۔ آپ نے آب تھی سے کہا ہاں! یہ عادت کوں سے ملتی جاتی ہے۔ یہ واقعہ زرنجری نے بھی لکھا ہو وہ لکھتے ہیں کہ جب اہام ابو عنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ مجلس سے اٹھ کر گئے تو آپ نے فرمایا' یہ میرا دروازہ ہے۔ کہ جب اہام ابو عنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ مجلس سے اٹھ کر گئے تو آپ نے فرمایا' یہ میرا دروازہ ہے۔ کہ جب اہام ابو عنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ مجلس سے اٹھ کر گئے تو آپ نے فرمایا' یہ میرا دروازہ ہے۔ کہ حسرت باتی نہ رہے۔ یہ سنتے ہی وہ شخص شرم و ندامت سے جھک گیا اور کئے لگا' انتما ہو گئی۔ آپ کی برداشت کی۔ اب ججھے معانی دے دیں۔ آپ نے خندہ پیشانی سے فرمایا' جاؤ تہمیں معانی کر ایس

یزید بن کمیت رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں۔ مجھے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے بتایا کہ ایک فخص مجھ سے مناظرہ کرنے آیا تو اس نے مجھے کما او بدعتی! او زندیق! گریس نے اسے کما اللہ عنی کہ حفات کرے۔ گر تمہارا نظریہ غلط ہے اور میں تمہاری رائے سے اتفاق نہیں کر سکتا۔ میں آپ کے عقیدے سے اتفاق نہیں کر سکتا۔ میں اپنے عقیدہ پر قائم ہوں ویتا ہوں۔ میں اللہ کے عقیدہ پر قائم ہوں وائم ہوں۔ میں اللہ کے ساتھ کی کو شریک نہیں ٹھراتا اور زندگی بھر اسی عقیدہ پر قائم رہوں گا۔ میں اس کے عذاب سے ساتھ کی کو شریک نہیں ٹھراتا اور زندگی بھر اسی عقیدہ پر قائم رہوں گا۔ میں اس کے عذاب سے ذر تا ہوں۔ اس کی بخش کا امیدوار ہوں 'آپ یہ بیان کرتے ہوئے رو پڑے اور روتے روتے بے ہوش ہو کر گر پڑے۔ جب آپ ہوش میں آئے تو اس شخص نے گردن جھکا دی اور معافی مائی۔ آپ نے فرمایا 'جو پچھ تم نے کما ہے آگر کوئی جائل کہتا تو کوئی بات نہ تھی۔ گر اٹل علم الیی بات کریں تو بے حد ملال ہو تا ہے کیونکہ علاء کرام کو نمایت مختاط گفتگو کرنا چاہئے۔ کیونکہ علائے کرام کی بات کے حد ملال ہو تا ہے کیونکہ علاء کرام کو نمایت مختاط گفتگو کرنا چاہئے۔ کیونکہ علائے کرام کی بات کے حد ملال ہو تا ہے کیونکہ علاء کرام کو نمایت مختاط گفتگو کرنا چاہئے۔ کیونکہ علائے کرام کی بات کے حد ملال ہو تا ہے کیونکہ علاء کرام کو نمایت مختاط گفتگو کرنا چاہئے۔ کیونکہ علاء کرام کی بات کے حد ملال ہو تا ہے کیونکہ علاء کرام کی بات کے حد ملال ہو تا ہے کیونکہ علاء کرام کو نمایت مختاط گفتگو کرنا چاہئے۔ کیونکہ علاء کرام کی بات کے حد ملال ہو تا ہے کیونکہ علاء کرام کو نمایت مختاط گفتگو کرنا چاہئے۔ کیونکہ علاء کرام کی بات کے حد ملال ہو تا ہے کیونکہ علاء کرام کو نمایت مختاط گفتگو کرنا چاہئے۔ کیونکہ علاء کرام کی بات کے حد ملال ہو تا ہوں کونکہ علاء کرام کو نمایت مختاط کونک کونکہ علاء کرام کو نمایت مختاط کے کونکہ علاء کرام کی بات کے حد ملال ہو تا ہوں کونکہ علاء کرام کو نمایت مختاط کے کونکہ علاء کرام کونکہ علاء کرام کونک کرائی علی بائی کرنا ہوں کونکہ علیہ کونکہ علیہ کونک کونکہ علیہ کونکہ علیہ کران جونک کونکہ کونکہ علیہ کرائی کونکہ علیہ کونکہ علیہ کونکہ کونکہ کونکہ علیہ کرائی کونکہ کونک

دور رس اثرات ہوتے ہیں۔

# امام ابوحنیفه نصفه المنظم المام ابوحنیفه نصرو فیش

ابو قطن عمرو بن الهيشم رحمته الله عليه نے بتايا كه ميس نے ايك شيعه سے كماكه ميس كوف جا رہا ہوں مجھے امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے نام ایک سفار شی خط لکھ ویں۔ آپ نے سفار شی خط لکھ دیا۔ جب میں امام صاحب کی خدمت میں حاضر ہوا تو اس وقت عصر کا وقت تھا۔ میں نے خط پیش كيا "ب نے پوچھا ابو سطام كيے ہيں ؟ ميں نے كماكہ خرو عافيت مع ہيں۔ ميں آپ كے پاس بيضا رہا' آپ نے عصر' شام اور عشاء کی نمازیں میرے سامنے ادا کیں۔ پھر میرا ہاتھ بکڑا اور مجھے اپنے گھر لے گئے۔ کھانا منگوایا اور میں نے آپ کی ساتھ ہی کھانا کھایا۔ آپ نے میرے لیئے بستر بچھایا اور مجھے بیت الخلا اور عنسل خانه دکھا دیا۔ رات کا کچھ حصہ گزرا تو آپ ستو اور شربت کا ایک پالہ لائے ، فرمایا جوتم نے پہلے کھانا کھایا وہ تھوڑا تھا۔ تم میرے سامنے شرماتے رہے ہو۔ اب میں تمہارے لیئے یہ ستو لایا ہوں۔ پھر آپ ایک گدا لے آئے اور مجھے کما اس پر آرام سے سو جاؤ۔ میں آپ کو دیکھتا رہا۔ آپ نے اپنا لباس اتارا' روئی کے کپڑے پنے' اوپر ایک چادر کی اور نماز کے لیئے کھڑے ہو گئے۔ ساری رات گزر گئی آپ نوافل ادا کرتے رہے اور میں بھی بھی کروٹ بدل کر دیکھ لیتا۔ وقت سے بھوا ا آپ نے اپنی چاور اتار کر ایک طرف رکھ دی اور اپنا روزمرہ کا لباس پین لیا اور میرے سرانے کھڑے ہو کر فرمایا الصلو ہ خیر من النوم میں آپ کی آواز س کر اٹھا وضو کیا اور پھر آپ کے ساتھ ہی معجد کی طرف چلا گیا۔ آپ معجد کا دروازہ کھول کر معجد میں داخل ہوئے تو پہلے دایاں پاؤں مجدين ركها اور منه سے اللهم افتح لما ابواب رحمتك برها اور يجركما واعذنا من الشيطان الرجيم مجدين واخل موتے بى آپ نے دو نفل ادا كيئے۔ اى دوران مجد كے مينار بر کھڑے ہو کر خود ہی اذان دی ای نے فجری دو سنتیں ادا کیں۔ پھر آپ معجد میں بیٹھے رہے آوقتیکہ لوگ فجر کی نماز کے لیئے مجد میں آ گئے۔ آپ نے اٹھ کر اقامت پڑھی اور سب کو نماز ر حائی۔ نماز کے بعد خاموش سے بیٹھ گئے اور راحتے رہے۔ میں نے دیکھا کہ مجد کی چھت سے آپ ر ایک سائی آگر اُ۔ آپ نے کچھ کما جے ہم نہیں سمجھ سکے۔ آپ نے اپناپاؤں سانپ کے سربر

رکھ کراسے دبالیا اور لوگوں کو کہا اسے مار ڈالو۔ چند لمحول بعد آپ تلاوت قرآن پاک میں مشغول ہو کئے یہاں تک کہ سورج چڑھ کر اوپر آگیا۔ آپ اٹھے اور اپنے شاگردوں کے حلقہ میں فقہ کی تدریس ك ليئ جا بيٹے اور شاكردول كو تعليم دينے لكے حىٰ كه دوپر ہو گئ- اب آپ كرمجدكى طرف جانے لگے تو میں نے وامن پکڑ کرعرض کی کہ آپ نے صبح سے پہلے مجد میں واخل ہو کر ووگانہ پڑھا' اذان پڑھی ' پھردو سنتیں پڑھیں۔ آپ نے فرمایا ہاں! یہ ساری باتیں میں نے حضور ماہیم کی احادیث سے سیھی ہیں۔ حضرت ابوذر رضی اللہ تعالی عنہ نے فرمایا کہ میں مسجد میں داخل ہوا تو حضور صلی اللہ عليه وآله وسلم نے تھم ويا ابوذر دو ركعت تحية المسجد اداكرو- من نے عرض كى آپ نے اذان كے بعد بھى وو ركعت نماز يرهى- آپ نے فرمايا بال! وو ركعت فجرى سنتيں تھيں- ميں نے عرض كيا کہ آپ نے طلوع سمس تک کوئی بات نہیں کی یمال تک کہ سورج طلوع ہوا۔ آپ نے فرمایا' عبدالله بن عمر رضى الله تعالى عنهاے مروى ہے كه جو شخص صبح كى نماز كے بعد الله تعالى كے ذكر كے علاوہ کوئی بات نہ کرے یمال تک کہ سورج طلوع ہوجائے۔ وہ مجابد فی سبیل اللہ کا مقام پائے گا۔ میں نے بوچھا وہ چھت سے گرنے والا سانپ کیا تھا؟ آپ نے فرمایا حضرت ابو سعید خدری رضی اللہ تعالی عنہ سے مروی ہے کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا کہ سانب کو تین بار چلے جانے کو کہو ورنہ اسے قتل کردو۔ میں نے تین بار اسے چلے جانے کو کہا۔ وہ نہ گیا تو میں نے لوگوں کو اس کے مارنے کا حکم دیا۔

ابوالخطاب جرجانی میلی فرماتے ہیں کہ میں امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے پاس بیٹا تھا۔
آپ اپنی مجد میں تشریف فرما تھے۔ آپ کے شاگرد آپ کے اردگرد طقہ بنائے بیٹے تھے۔ اچانک ایک نوجوان لڑکا آیا اور آپ سے کسی مسئلہ پر گفتگو کرنے لگا۔ آپ نے اسے جواب دیا تو اس نے کما آپ نے فلط کما ہے۔ آپ من کر خاموش ہو گئے۔ اس نے ایک اور مسئلہ پوچھا تو آپ نے جواب دیا تو اس نے کا قواس نے کا گردوں کو مخاطب کر کے کملہ تم دیا تو اس نے کی کما ابو حفیفہ آپ نے فلط جواب دیا ہے۔ میں نے شاگردوں کو مخاطب کر کے کملہ تم لوگ اپ استاد کی بے عزتی ہوتے دکھ رہے ہو اور خاموش بیٹھے ہوئے ہو۔ یہ نوجوان لڑکا آپ کی ہربات کو فلط غلط کمہ کر توہین کر رہا ہے۔ امام صاحب نے مجھے مخاطب فرماتے ہوئے کما آپ انہیں چھوڑ گئے۔ میں نے انہیں خاموش دہے کے لئے کما ہوا ہے۔ میرے سامنے ایسے کی لوگ آتے ہیں چھوڑ گئے۔ میں نے انہیں خاموش دہے کے لئے کما ہوا ہے۔ میرے سامنے ایسے کی لوگ آتے ہیں

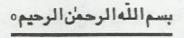
یہ میرا ذاتی معاملہ ہے۔

هو للجود و التصبر ماوي ان نعمان في الوقار لرضوي وهو راس فما يقاس برضوي كم رموه بباسقات الرواسي فانجلت عنه وهولم يبد شكوي عجمت عوده عوادي الاعادي هوثبت اذا تزلزل حسمي طلبوا ان يزلزلوه ولكن حين لا كنه مرة بعد اخرى رابط الجاش صابر في البلايا كان في حبه الاله كقيس وله ليل طاعة الله ليلي ومناجاة ربه الليل سلوي وله صومه النار كمن اذليا ليه في التفكرا حي قتل العلم ای قتل ذریع وجهه في السجود اثرى وَلَكُن نوح ذكراه فوق هام الثربا

(توجمه) امام ابوضفہ رضی اللہ تعالی عنہ وقار اور عظمت کے بہاڑ ہیں۔ جود و صبر کے بحر کیراں ہیں۔ آپ پر ظلم و ستم کے بلند و بالا بہاڑ گرائے جاتے ہیں گر آپ برداشت کرتے ہیں۔ یس تعجب سے کہتا ہوں کہ آپ کے ساتھ شدید فتم کے و شمن و شمنی کرتے رہے ہیں اور ظمراتے رہے ہیں۔ گر آپ فاموش رہتے ہیں۔ حتیٰ کہ و شمن خود ہی تھک ہار کر چلے جاتے ہیں۔ آپ کی زبان پر ان کی شکایت بھی نہیں آتی۔ یہ لوگ آپ کو فلکت دینے کی کوشش کرتے ہیں گر آپ ایک مضبوط میں کی شکایت بھی نہیں آتی۔ یہ لوگ آپ کو فلکت دینے کی کوشش کرتے ہیں گر آپ ایک مضبوط میاڑ کی طرح ڈٹے رہتے ہیں۔ جوش کے تھامنے والے مصائب اور بلاؤں پر صبر کرنے والے امام آپ پر مسلسل یہ بلائیس جہلہ آور رہتی ہیں۔ گر آپ فابت قدم رہتے ہیں۔ آپ کا دان روزہ ہیں گرز آ ہے۔ آپ کی خوراک " من " ہے اور رات کو اے " سلوی " عنایت ہو آ ہے۔ ( یہ خدا کی طاکردہ غذا کیں ہیں) انہیں علم نے قتل کر ڈالا۔ آپ زہر یلے سانپ کی پروا نہیں کرتے۔ آپ تشکر طاکردہ غذا کیں ہیں) انہیں علم نے قتل کر ڈالا۔ آپ زہر یلے سانپ کی پروا نہیں کرتے۔ آپ تشکر

بامام اعظم ۲۹۰

اور عبادت خداوندی میں ساری رات گزار دیتے ہیں۔ ان کے چرے پر سجدے کے نشان نمایاں نظر آتے ہیں۔ مگر رات بھر روتے روتے ان کی آنکھیں سوج جاتی ہیں۔ آپ کا تذکرہ پہاڑ کی بلندیوں سے بھی بلند تر ہے۔



" جلد دوم "

## مناقب امام اعظم

علامه صدرالاتمه ابي المنويد الامام الموفق بن احد المكي رطيعية (م٥١٨)

ترتيب وترجمه

علامه مولانا محرفيض احمر صاحب اوليي دامت بركاتهم العاليه

**☆..... ناشر.....** ☆

مكتبه نبويه يخ بخش رود لامور

ظم ، ۲۹۰

كتبهنبويه

#### بسم الله الرحمن الرحيم،

" جلد دوم "

# مناقب امام اعظم

علامه صدرالائمه ابي المئويد الامام الموفق بن احمد المكي رطيطية (م ٥٩٨)

ترتيب و ترجمه علامه مولانا محر فيض احر صاحب اوليي وامت بركاتهم العاليه

**☆.....ناشر....**☆

مكتبه نبويه كنج بخش رود لابور

#### سولهوال باب

### امام ابوحنیفی کاوالدین اوراسا تذہ ہے حسن سلوک و تعظیم

ام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سلطنت عباسہ کی عمدہ قضاۃ (منصب چیف جسٹس) سے انکار پر خلیفہ وقت کے ذیر عماب تھے۔ آپ کو جیل میں ڈال دیا گیا۔ جیل خانہ کے جلاد ہفتے میں لا دن آپ کو جیل سے نکال کر میدان میں لے آتے اور عام لوگوں کے سامنے کو ڑے برساتے اور آپ کو کہا جاتا کہ منصب قضاۃ قبول کر لیں مگر آپ اپنے موقف پر قائم رہتے ہوئے انکار کر دیا کرتے تھے۔ ایک دن کو ڑے کھاتے کھاتے آپ رو پڑے 'احباب نے رونے کی وجہ پوچھی تو آپ نے فرایا محصد اینی والدہ یاد آتی ہے کہ وہ میری جدائی میں کس قدر مغموم ہوگی۔

حضرت عسری رحمتہ اللہ علیہ نے یہ بات کہی ہے کہ ایک بار آپ کے سر پر کوڑے مارے گئے تو آپ کے سر پر کوڑے مارے گئے تو آپ کے سر سے خون نکل کر چرے پر بہنے لگا۔ امام رو پڑے لوگوں نے رونے کی وجہ پوچھی تو آپ نے فرمایا آج مجھے میری مال بہت یاد آئی 'جب میں گھر جاؤں گا اور وہ میرے چرے کو خون آلود دیکھیں گی تو انہیں کتا دکھ ہو گا۔ مجھ سے والدہ کاغم نہیں دیکھا جا آ۔

جربن عبدالجبار رافیے فرماتے ہیں کہ ہماری معجد میں ایک قاضی امات کرایا کرتے ہے۔ ان کا نام " زرعہ " تھا۔ یہ معجد آپ کے نام سے ہی مشہور تھی۔ ایک دن حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی والدہ نے آپ سے ایک فتوئی پوچھا تو آپ نے نمایت اجھے انداز میں لکھ کرجواب دیا گر والدہ کو اس تحریر سے تسلی نہ ہوئی انہوں نے اس فتوئی کو قبول نہ کیا اور فرمایا میں تو وہی فتوئی قبول کروں گی جو زرعہ لکھیں گے۔ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ والدہ کی دل جوئی کے لیے زرعہ کے پاس گئے اور کن میری والدہ آپ سے فتوئی پوچھتی ہیں "صورت مسئلہ سے اور اس کا جواب سے بستر جواب تو میرے علم میں بھی نہیں تھا۔ حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ سے۔ زرعہ نے کما اس سے بہتر جواب تو میرے علم میں بھی نہیں تھا۔ حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ

تعالی عند نے فرمایا کہ میں نے انہیں فتوی لکھ کر دیا ہے مگروہ اسے قبول نہیں کرتیں۔ قاضی ذرعہ نے اپنے قلم سے لکھ کر دیا کہ فتوی کا جواب تو وہی ہے جو ابوطیفہ نے دیا تھا' اس تحریر سے والدہ مطمئن ہو گئیں۔

امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ ہے آپ کی والدہ نے پوچھا کہ ایام طمرے پہلے آیک عورت کو ماہواری خون جاری ہوگیا کیا وہ نماز چھوڑ دے یا پڑھے؟ اب تم یہ مسئلہ ابوعبدالرحمٰن سے پوچھ کر آؤ۔ آپ اپنی والدہ کے کہنے پر عمر بن ذر (ابوعبدالرحمٰن) کے پاس گئے اور مسئلہ وریافت کیا۔ ابوذر نے آپ سے پوچھا کہ آپ اس کا کیا جواب دیں گئے 'آپ نے مسئلہ کا جواب دیا۔ ابوذر نے فرمایا میرا جواب بھی ہی ہے۔ آپ اپنی والدہ تک پہنچا دیں۔ آپ نے فرمایا جھے تو میری والدہ نے اپنی واروں کی وجہ سے آپ کے پاس بھیجا تھا۔

ام ابویوسف رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ ایک دن میں نے دیکھا کہ امام ابوضیقہ اپنی والدہ کو سے پر بٹھائے عمر بن ذرکے پاس جارہے سے آکہ آپ کی مسئلہ پر گفتگو کر سکیں۔ آپ اپنی والدہ کی خواہش پر لے جا رہے سے ورنہ آپ کو پہۃ تھا کہ عمر بن ذرکا کیا مقام ہے۔ یہ سب اپنی والدہ کی خواہش کے احرام کے پیش نظر تھا۔ امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرماتے ہیں کہ میں کئی بار اپنی والدہ کو سواری پر بٹھا کر عمر بن ذرکے پاس لے گیا آگہ وہ ان سے مسئلہ بوچھ سکیں۔ ایک دن میری والدہ نے جھے حکم دیا کہ فلال مسئلہ ابوذر سے بوچھ کر آؤ، میں والدہ کے حکم کی تعمیل میں ابوذر کے پاس چلا گیا۔ عمر بن ذر نے فرمایا کہ آپ استے بڑے امام ہو کر میرے پاس مسئلہ بوچھنے آتے ہیں' آپ یاس چلا گیا۔ عمر بن ذر نے فرمایا کہ آپ استے بڑے امام ہو کر میرے پاس مسئلہ بوچھنے آتے ہیں' آپ نے فرمایا جھے اس مسئلہ کا حل ہے خرمایا و آپ نے فرمایا اب آپ میری طرف سے یہ مسئلہ اپنی والدہ سے بیان فرمایا تو آپ نے فرمایا اب آپ میری طرف سے یہ مسئلہ اپنی والدہ سے بیان کریں۔

بعض روایوں میں ہے کہ امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ اپنے بیٹے جماد کو لے کر قاضی عمر بن ذرکی معجد میں جاتے اور وہاں تراوت کا اوا فرماتے۔ بید معجد امام صاحب کے گھرسے تین میل کے قاصلہ پر تھی بیہ محض اپنی والدہ کی دلدہی کے لیئے تھا۔

احد بن عطیہ رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ ہم حسن بن رہیج کے پاس بیٹھے تھے تو حس کم

رب سے کہ میں نے آئمہ کرام میں سے امام ابو حنفیہ رضی اللہ تعالی عنہ جیسا بردبار اور صابر کول انہیں دیکھا۔ آپ لوگوں کی چھوٹی چھوٹی باتیں بھی برداشت کرتے ہیں' اگر آپ کو ساری دنیا کے خرائے بیش کر دیتے ہیں' انہیں صرف اپنی والدہ کے خرائد خرائے بیش کر دیتے جائیں تو آپ انہیں لینے سے انکار کر دیتے ہیں' انہیں صرف اپنی والدہ کے خرائد خیال ہونے اللہ تعالی عنہ لے خیال ہے' اس سے بڑھ کر دنیا کی کسی چیز کو قیمتی نہیں سی سے امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ لے فرمایا جب جھے کو ڑے لگائے جاتے ہے تو میری والدہ جھے کہا کرتی تھی ابو صنیفہ! تھے علم نے اس قوت برداشت تک پہنچا دیا ہے' تم اس علم کو چھوڑ دو اور عام دنیاداروں کی طرح کام کرتے جاؤ۔ میں کے کہا لیاں آگر میں علم چھوڑ دول تو اللہ تعالی کی رضا کس طرح حاصل کروں گا۔

محمد بن بشرام بلمی رحمتہ اللہ علیہ نے فرمایا کہ میں نے کوفہ میں منصور بن معنصر اور حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے بڑھ کر مال کی تابعداری کرتے کی کو نہیں دیکھا۔ منصور تو اپنی خلافت اور منصب کے باوجود اپنی والدہ کا سر دھلا تا اور اس کے بالوں سے جو کیں تک نکالتا تھا۔ اور سرکو صاف سخرا رکھنے کے لیئے بالوں کو کنگھی تک کرتا تھا۔

خراش بن حوشب را الله بیان کرتے ہیں کہ میں نے اپ باپ سے ساتھا کہ امام ابو حنیفہ رضی الله تعالیٰ عند فرمایا کرتے سے کہ میں اپ والدین کے لیئے ہر جمعہ کے روز ہیں درہم خیرات کرتا ہوں اور اس بات کی میں نے منت مانی ہوئی ہے۔ وس درہم باپ کے لیئے اور دس درہم مال کے لیئے صدقہ کرتا ہوں۔ ان مقررہ درہموں کے علاوہ آپ اپ والدین کے لیئے فقراء و مساکین میں اور چیزیں بھی صدقہ کیا کرتے۔

حمزہ بن مغیرہ ملیجہ (جن کی وفات ۱۸۰ھ میں ہوئی تھی نوے سال کی عمر میں) فرمایا کرتے تھے کہ ہم عمر بن ذر کے ساتھ رمضان المبارک کی راتوں میں قیام اللیل کرنے جایا کرتے تھے میں نے دیکھا کہ حضرت امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالی عنہ اپنی والدہ کو ان کے پاس کئی بار لاتے حالانکہ امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کئی میل دور تھا۔ عمر بن ذرکی عادت تھی کہ وہ سحری کے ابو حفیفہ رضی اللہ تعالی عنہ اپنی والدہ کو لے کر سحری کے وقت اتن دور پہنچ جایا کرتے تھے۔

المام ابوبوسف رحمته الله عليه فرمات بيس كه حضرت امام ابو حنيفه رضى الله تعالى عنه كي والده

آو شرکے قاضی کے علم و فضل پر برا اعتاد تھا' ایک بار کسی مسئلہ پر انہوں نے قتم کھالی کہ بیں تو قاضی شرکے فتوئی پر اعتاد کروں گی اور اپنے بیٹے کو حکم دیا کہ ان کے پاس جا کر اس مسئلہ کا جواب لاؤ۔ یہ قاضی صاحب امام ابوبوسف مالیے کے ماموں تھے۔ ان کا نام ابوطالب تھا۔ وہ محض ایک واعظ تھے' مفتی یا فقیہ نہیں تھے۔ لوگوں کو ر تکین واستائین سنا سنا کر اسلام کی محبت پیدا کیا کرتے تھے۔ امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی والدہ ان کی مجلس وعظ بیں آیا کرتی تھیں۔ امام صاحب نے اپنی والدہ کی تتم کے مسئلہ کے لیئے ابوطالب کو اپنے گھر بلا لیا اور انہیں فرمایا کہ میری والدہ نے تتم کھائی ہے کہ وہ مسئلہ کے لیئے ابوطالب کو اپنے گھر بلا لیا اور انہیں فرمایا کہ میری والدہ نے تتم کھائی ہے کہ وہ مسئلہ کے لیئے ابوطالب کو اپنے گھر بلا لیا اور انہیں فرمانے گے حضور آپ مجھے مسئلہ کا حل کہ وہ مسئلہ آپ سے ہی دریافت کریں گی۔ قاضی ابوطالب فرمانے گے حضور آپ مجھے مسئلہ کا حل جا دیں' میں وہی بیان کروں گا تا کہ آپ کی والدہ آپ سے راضی ہو جا کیں۔

عربی ذر رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ یہ کوئی ناممکن بات نہیں کہ امام اعظم ملطیہ ایک واعظ سے مسائل کا استفسار کریں۔ آپ کو تو اپنی والدہ کا حکم ماننا تھا اور آپ کو اپنی والدہ کو کسی بات پر ناراض کرنا گوارا نہ تھا۔ کئی بار آپ نے صرف قاضی ابوطالب سے استفسار کیا۔ اس فتم کے واقعات بہت ہیں جمال حضرت امام دیا ہو کو اپنی والدہ کی خاطر ان لوگوں سے مسائل بوچھنے پڑے جو علمی اعتبار سے بہت ہی کمزور تھے۔

عبید بن عتبہ روالی فرماتے ہیں کہ میں نے محمد بن حسن شیبانی سے سنا وہ فرمایا کرتے تھے کہ میں نے امام ابو حفیقہ رضی اللہ تعالی عنہ سے سنا کہ جب میرے استاد امام حماد فوت ہوئے تو اس دن سے لے کر آج تک میں ہر نماز کے بعد استعفار پڑھتا ہوں اور اپنے استاد کے لیے بطور ایصال ثواب پہنچا تا موں اور اپنے استاد کے لیے بطور ایصال ثواب پہنچا تا موں اور ا

ابو بشیر مولی بن منبہ واللہ فرماتے ہیں کہ میرے استاد جماد کا وصال ہوا تو اس ون سے ان کے لیئے اور اپنے والد کے لیئے استغفار کرتا ہوں جس نے مجھے ایک بھی لفظ پڑھایا تھا۔ اس طرح میں ہرشاگرد کے لیئے بھی استغفار کرتا ہوں۔

حضرت امام ابوبوسف رياطيته كالمعمول

امام ابوبوسف رحمته الله عليه فرمات بيس كه ميس اسن والدين سے پہلے اسن استاد امام ابو حقيقه

رضی اللہ تعالی عنہ کے لیئے ہر نماز کے بعد استغفار کرنا واجب جانیا ہوں کیونکہ حضرت امام را لمجیہ فرمایا کرتے تھے کہ میں والدین کے ساتھ اپنے استاد کے لیئے بھی بلاناغہ استغفار کرتا ہوں۔

الم ابوحنیف رضی اللہ تعالی عنہ فرماتے ہیں کہ میں نے اپنے استاد کرم حضرت جماد رضی اللہ تعالی عنہ کے گھر کی طرف بھی پاؤل نہیں پھیلائے۔ ان کے احرام اور اکرام کی وجہ سے جھے حیا آتی تھی۔ آپ کے گھر اور میرے گھر میں چند گلیوں اور کوچوں کا فاصلہ تھا گر میں نے نہ بھی ادھر پاؤں کھیلائے نہ بھی پشت کی۔

نعمان كان ابرالناس كلهم بوالدية و بالاستاذ حماد قد كان يدعو لهم ماعاش مجتهدا شائى بذا كل محمود و حماد وكان يفتح بالحماد دعوته ولا يحابى لاباء و اولاد ابو الافادة اولى باليدابة من ابى الولادة عندالواحد الهادى

مامد رجلیه یومًا نحو منزله ودونه سکک سبع کاطوادی

(قرجمه) حفرت نعمان رضی اللہ تعالی عنہ تمام لوگوں کے ساتھ حن سلوک سے پیش آیا کرتے تھے۔ انہیں اپنے والدین اور اپنے استاد حضرت تماد روائیے کا خاص طور پر احرّام تھا۔ آپ جب کسی کے لیئے دعا کرتے تو حضرت تماد روائیے کا نام سب سے پہلے لیتے تھے۔ آپ فرمایا کرتے تھے کہ والدین نیچ کو جنم دیتے ہیں گر استاد علم و فضل کے خزائے دیتا ہے۔ ولادت اللہ کے خالق ہونے کی صفت کی مظرب کر علم کا حصول اللہ کے ہادی ہونے کا مظرب امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ دندگی بھر استاد کی طرف پاؤں نہیں پھیلاتے تھے حالانکہ ان کے اور ان کے استاد حماد کے گھر کے درمیان بہاڑوں کی طرح بلند دیواریں کھڑی تھیں۔

#### سترهوال باب

### امام ابوحنیفہ دھی اللہ ایک کے حاسدین اور آپ کاان سے حسن سلوک

بكيربن معروف رحمته الله عليه فرماتے ہيں كه ميس نے امام ابو حنيفه رضي الله تعالى عنه سے سنا' آپ فرمایا کرتے تھے میں نے ساری زندگی کسی کی برائی کلبدلہ برائی سے نہیں دیا اور نہ ہی کسی کا تذكرہ برے الفاظ میں كيا۔ تم لوگ جانتے ہوكہ میں نے اہل مكہ سے مجھى بغض نہیں كيا۔ ہم نے كما ہاں' آپ نے مجھی بخض نہیں کیا۔ آپ نے فرمایا اس کی وجہ سے کہ مدینہ منورہ میں حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ والہ وسلم پر بعض ایس آیات نازل ہوئی تھیں جن سے بعض کی آیات منوخ ہو گئی تھیں۔ ہم نے یہ ساری آیات اہل مکہ پر لوٹا دیں۔ آپ نے فرمایا ہم اہل مدینہ سے بھی بغض نہیں كرتے اس كى وجد يہ ہے كہ ہم تكبيراور كچينے سے خون فكوانے كو ناقص وضو جانتے ہيں مراال ميند اسے ناقص وضو نہيں مانے۔ ہم ان كى فاسد نمازيں انہيں كى طرف لوٹا ديتے ہيں۔ پھر فرمايا تم جائے ہو کہ ہم اہل بھروے بغض و عداوت نہیں رکھے۔ آپ نے فرمایا کہ ہم سکلہ نقدر میں ان کی مخالفت كرتے ہيں حالاتك مسلد تقدير ان كے عقائد اور نظريات كا سرتاج ہے۔ ہم اہل شام سے بغض میں کرتے اس کی وجہ سے کہ جب حضرت علی کرم اللہ وجبہ اور حضرت معاویہ رضی اللہ تعالی عنہ جنگ اور رہے تھے تو ہم حضرت علی رضی اللہ تعالی عنہ کے حامی تھے اور امیر معاویہ کے شامی لشکر ے جنگ كرتے رہے۔ ہم الل بيت سے بغض نہيں كرتے اس كى وجہ بيہ ك ہم رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم كے محرانے كے ايك ايك فردے محبت كرتے بيں اور ان كے فضائل اور مناقب كاقرار كرتے ہيں۔

ایک اور روایت میں آیا ہے کہ آپ نے اپنی ان وجوہات میں سے اضافہ کیا کہ تم لوگ جانتے ہو کہ ہم الل مدیث سے بغض نہیں رکھتے ہم حضرت علی کرم اللہ وجد کی ظافت کو برحق جانتے ہیں

اگرچہ بعض معاملات میں ان سے اجتمادی غلطیاں ہو کیں چربھی ہم انہیں حق پر جانتے ہیں اور بغض نہیں رکھتے۔

عبدالرزاق رحمتہ اللہ علیہ فراتے ہیں کہ ہم معجد خیف (منی کمہ) میں ام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی مجلس میں بیٹے تھے ایک فخص نے آپ سے مسلہ بوچھا او آپ نے اس کا جواب دیا ' کھر کمی نے کہا کہ حضرت حسن بھری مالئے اس مسلہ میں یوں فرواتے ہیں۔ آپ نے فروایا حس بھری مالئے سے اس مسلہ میں اجتمادی فلطی ہوئی ہے۔ ایک اور فخص آیا اس نے اپنا چرہ پی سے چھیایا ہوا تھا وہ کہنے لگا اے زائیہ کے بینے! تم حس بھری مالئے کو خطاکار اور فلط کہتے ہو۔ وہ آیہ الفاظ کمہ کر معجد سے نکل گیا گر آپ کی قوت برداشت کا یہ عالم کہ آپ کے چرے پر کوئی غصہ نظرت کا یہ عالم کہ آپ کے چرے پر کوئی غصہ نظرت آیا۔ اس کے باوجود آپ نے فرمایا کہ حس بھری مالئے سے اجتمادی فلطی ہوئی ہے۔

ابن داؤد ما لیجے فرماتے ہیں کہ امام ابو حفیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کبھی کی کو برا نہیں کہتے تھے۔
صرف دو مخصول کو برا کہا' ایک وہ حاسد جو آپ کے علم سے حسد کرتا تھا۔ دو سرا وہ جائل جو علم کی قدر و منزلت سے محروم تھا۔ ہیں نے ابومعاویہ بن بزید سے سنا انہوں نے فرمایا کہ ہیں ایک ون عبای خلیفہ ہارون الرشید عبای کے پاس بیٹا تھا ان کے سامنے حلوے کی ایک پلیٹ رکھی ہوئی تھی' ہیں نے اس سے چند لقمے اٹھائے اور کھا لیئے ہارون الرشید کے غلام میرے پاس پائی اور برتن لائے تاکہ میں ہاتھ وحولوں' فلیفہ ہارون الرشید نے برتن نیچ رکھ کر خود میرے ہاتھ وحلوائے اور پوچھا آپ میں ہاتھ وحولوں' فلیفہ ہارون الرشید نے برتن نیچ رکھ کر خود میرے ہاتھ وحلوائے اور پوچھا آپ جانے ہیں کہ آپ کے ہاتھ کون وحلوا رہا ہے؟ ہیں نے کہا نہیں' فرمایا امیرالمومنین ( خلیفہ ہارون الرشید ) ہیں نے کہا آپ نے علم کا اعزاز و اکرام کیا ہے۔ اللہ تعالیٰ آپ کو دنیا ہیں کرم و معزز بنائے گا۔ ہارون الرشید نے کہا واللہ میرا ہی اراوہ تھا۔

ابن داؤد ملطحہ فرماتے ہیں کہ امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے ساتھ بغض کرنے والے افراد دو قتم کے تھے' حاسد اور جاتل ۔ میرے نزدیک حاسد سے جاتل بمتر ہے وہ تو جمالت کی وجہ سے حد کرتا ہے' مگر دو سرے لوگ دیدہ دانستہ حسد کرتے ہیں۔

ابن المبارك رحمته الله عليه فرماتے ہيں كه ميں نے حسن بن عماره كو ديكھاكه وہ امام ابو صنيفه رضى الله تعالى عند كھوڑے كى ركاب كارے ہوئے كھڑے تھے۔ وہ فرماتے تھے كه ميں نے فقیہ

س لام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے براہ کر کسی ووسرے کو نہیں دیکھا اور نہ ہی حاضر جوالی میں ہے کا کوئی دو سرا ٹانی تھا۔ میں نے عرض کی اے امام ابو حنیفہ! آپ کی عادت کریمہ ہے آپ کسی ت بھی کسی کی برائی نہیں کرتے اور نہ ہی اپنے خلاف حملہ کرنے والے کی مدافعت کرتے ہیں۔ یاد ے کہ امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالی عند کی برائی صرف حمد کی وجہ سے بی کی جاتی تھی ورنہ آپ کا رایک کے ساتھ حسن سلوک ایبا تھا کہ مخالف سے مخالف فخص بھی آپ کی تعریف کرنے پر مجبور

ابو وہب العلد رحمته الله عليه فرماتے ہيں كه جو هخص مسح على الخفين كو تاجائز سجھتا و من اسے ناقص العقل اور جابل كهنا مول- اليے بى جو الحف امام ابو حنيفه رضى الله تعالى عنه كى ا العقل اور جال مرے زویک ناقص العقل اور جال ہے۔

سفیان بن و کیع فرماتے ہیں کہ میرے والدنے مجھے بتایا تھا کہ میں امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعلیٰ عنه کی خدمت میں حاضر ہوا' آپ اس وقت سر جھکائے بیٹھے تھے' مجھ سے پوچھا کہاں سے آئے و ؟ میں نے جایا کہ شریک کی مجلس سے اٹھ کر آرہا ہوں۔ آپ نے یہ اشعار پڑھے۔

قبلي من الناس اهل الفضل قد حسدوا ان يحسلوني فاني غير لائهم و مات اكثرنا غيظًا لما يجد قلام لی ولهم مابی ومابهم

( رجمہ ) یہ لوگ جھ سے حد کرتے ہیں مریس انہیں برابھلا نہیں کتا اور حد کرنے والے کو بھی ابل علم و فضل سے تصور کرتا ہوں۔ یہ حالت میری ساری زندگی رہی اس طرح میرے حاسدین بھی این ساری زندگی غیض و غضب کی آگ میں جلتے رہے۔

محد بن الحن مالية سے يوجها كياك امام ابوطيف رضى الله تعالى عنه كے ساتھ حسد كرنے والول کی کیا کیفیت ہے؟ آپ نے نیہ شعر پڑھا ۔

من عاش في الناس بو ماغير محسود هم یحسدونی و شرالناس منزلة

( ترجم ) وہ میرے ساتھ حد کرتے ہیں وہ مرتبہ کے لحاظ سے لوگوں میں برا آدی ہے مرکوئی دان

#### ایانس گزرناکہ جھ حمدنہ کیاجائے۔

احد بن عبد "رے" کے قاضی تھے۔ وہ اپنے والد کی زبانی فرماتے ہیں ایک ون ہم ابن عائشہ کے پاس بیٹھے تھے کہ کسی نے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عند کی طرف سے ایک حدیث بیان کی تو حاضرین مجلس بیں سے کسی نے کہا ہم اس حدیث سے وہ مراد نہیں لیتے جس طرح ابو حنیفہ (رضی اللہ تعالی عند) لیتے ہیں۔ میرے والد نے فرمایا اگر آپ انہیں ایک بار وکھے لیتے تو برطا کہ المحقے کہ واقعی ان کی رائے بالکل ورست ہے۔ تمہاری مثال تو ایس ہے ۔

اقلوا عليهم و يحكم لا ابآ لكم من اللوم اوسدوا المكان الذي سدوا

(ترجمہ) تم ان کی ذمت کرتے ہو اور انہیں حقارت کی نگاہ سے دیکھتے ہو'تم پر خدا جاہی نازل کرے تم اپنے باپ کے بیٹے نظر نہیں آتے۔

ابن المبارك رحمته الله عليه كو لوگول في امام ابو حنيفه رضى الله تعالى عنه كے متعلق پوچھا تو آپ في حرمانا ان جيسا آج ونيائے اسلام ميں كون ہے ونيا والوں في ان سے حمد كيا عمروه كھر بھى صبر كرتے رہے۔ ان پر كوڑے برسائے گئے وہ كھر بھى ثابت قدم رہے۔

حضرت ابراہیم بن الا شعث فراتے ہیں کہ ہم فنیل بن عیاض والیج کے پاس بیٹے تھے۔
ایک مخص حاضر ہوا' اس نے کما عبداللہ بن المبارک والیج جے دواپس تشریف لائے ہیں گر جھے
لوگوں نے بتایا کہ آپ ان کے خلاف ہیں۔ حضرت فنیل بن عیاض والیج نے فرمایا سفیان توری تو امام
صاحب کے خلاف بھے گر جب انہیں آپ کے ساتھ اٹھے بیٹے کا موقعہ ملا تو آپ کی دائے بدل گئ'
ساجتہ غلطیوں سے تائب ہوئے اور اپنی غلط فنمیوں پر توبہ کرتے ہوئے استغفار پڑھے تھے اور ندامت
کا اظمار کرتے تھے۔ بعض علائے کرام کا رویہ ایسا رہا ہے گر علی الاعلان ایک دو سرے کے خلاف آواز
میں اٹھایا کرتے تھے۔

محر بن مهاجر ریافید فرماتے ہیں کہ میں نے علی بن اسحاق سے سنا تھا وہ فرماتے تھے کہ میں نے شریک بن عبداللہ ریافید سے خود سنا تھا وہ فرماتے تھے کہ اے لوگو! مجھے حضرت امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے متعلق کچھ غلط فہمیاں تھیں جس طرح عام لوگ غلط فئمی کی وجہ سے غلط گوئی کرتے ہیں تعالی عنہ کے متعلق کچھ غلط فئمیاں تھیں جس طرح عام لوگ غلط فئمی کی وجہ سے غلط گوئی کرتے ہیں

ہم بھی ای طرح حضرت امام کے خلاف بعض مسائل میں غلط گوئی کرتے رہے ہیں۔ یہ ہماری نفرتیں مخصیں ، ہم ان سے معافی کے خواستگار ہیں اور اللہ تعالیٰ سے عافیت کے طلبگار ہیں۔

ابومعاویہ روایئی فرمایا کرتے تھے کہ شریک مسکین امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے صد کرتے تھے ' یہ ان کی جمالت تھی کہ ان کے علمی مقام سے عداوت رکھتے تھے گراعلانیہ سراٹھا کر بھی کوئی بات نہیں کر سکے۔ پھر شریک نے بہت سے مسائل امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے حاصل کیئے اور کئی مسائل پر نمایت خاموشی کے ساتھ آپ کی رائے کی اتباع کی۔ ابومعاویہ روایئے مزید فرماتے ہیں کہ میں نے کچیٰ بن آدم کو کہتے ساکہ شریک نے جب امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مسائل کا جواب ساتو کتنے خوش خوش گئے تھے گر زبان سے نہ امام کے کملات کا اعتراف کیا نہ کر دومروں پر ظاہر ہونے دیا۔ یہ بات ان کے حمد کی وجہ سے تھی کہ زبان سے اعتراف کمال نہ کر سکے۔

عبدالوہاب بن عبدالرحمٰن بن شبہ نے فرمایا کہ بید کتاب میرے دادا شبہ بن عبدالرحمٰن بن اسحاق کی ہے میں نے اس میں پڑھا ہے کہ محر بن خارجہ الصیر فی نے لکھا ہے کہ میں نے اہام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے سا ہے کہ آپ نے فرمایا ابن ابی لیلی میرے خلاف گلہ اور شکوہ کو حلال جانتے سے لیکن میں تو ان کی بلی اور ان کے گدھے کی برائی بیان کرنا بھی مناسب نہیں جانیا۔

حضرت عبداللہ بن المبارک رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ سفیان توری میلیہ اور امام اوزاعی المام اوزاعی اللہ تعالی عنہ کے اللہ البوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے خلاف بتنے وہ دونوں امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے خلاف باتیں کیا کرتے ہے اور اس معاملہ میں کوئی کسر نہیں چھوڑتے تھے اور اس معاملہ میں کوئی کسر نہیں چھوڑتے تھے لیکن وہ آپ کا کچھ نہ بگاڑ سکے اور نہ ہی وہ اپنے مقاصد میں کامیاب ہوئے۔

ای طرح ابن ابی لیلی ' ابن شرمه ' شریک اور حن بن صالح جیے لوگ بھی امام ابوحنیفه رضی الله تعالیٰ عنه کے حاسدین میں سے تھے گربایں جمہ وہ آپ کو نقصان نہ پہنچا سکے اور نہ ہی ان لوگوں کا شور و غل آپ کے مقام کو متاثر کرسکا۔ ان کی بیہ ساری کوششیں ان کے اپنے حلقہ تک رہیں گرامام صاحب کے علمی فیصلے سارے عالم اسلام میں روشنیاں پھیلاتے گئے۔

ابوسعد صنعانی فرماتے ہیں کہ مجھے کئی بار کوفہ جانے کا موقعہ ملا 'میں ہمیشہ امام ابوحنیفہ رضی

مناقب امام اعظم

1 1

الله تعالی عند کی مجالس میں صرف اس لیئے شریک ہو آک آپ سے علم سکھوں۔ پھر میں حضرت الم ابوحنیفہ کے مشورے سے کوفہ کے ووسرے محدثین اور اہل علم کے پاس بھی حاضر ہوا کرتا بلکہ آپ خود بھی فرماتے فلال عالم کی مجلس میں جانا تمہارے لیئے مفید ہو گا۔ میں ایک دن کوف کی ایک مجد کے سامنے سے گزرا تو میں نے دیکھا کہ ایک بوڑھا چند لوگوں کو بٹھائے کچھ مسائل سمجھا رہا ہے میں نے لوگوں سے پوچھا یہ کون بزرگ ہیں' انہوں نے بتایا کہ یہ شریک بن عبداللہ ہیں۔ مجھے ان کی باتوں سے مچھ حاصل تو نہ ہوا مگر میں نے جب امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عند کی خدمت میں حاضر ہو كران كاذكركيا تو آپ نے فرمايا بال وہ بهت برے عالم دين بيں۔ اس وقت كے محدث بين اور اين علم میں ثقة اور منتد ہیں۔ ان کی ہر حدیث لکھ لیا کو صرف ایک روایت نہ لکھا کریں جو وہ جایر الجعفى سے بيان كرتے ہيں۔ ميرا شريك كے ياس آنا جانا شروع ہو كيا ميں ان سے احاديث غنے لگا انسیس لکھ کر محفوظ کرنے لگا ایک ون شریک کی مجلس میں امام ابو حنیف رضی الله تعالی عنه کا تذکرہ ہوا تو آپ ان کے خلاف باتیں کرنے لگے اور کوئی بھی اچھی بات نہ کی۔ میں نے کما سجان اللہ آپ کے اور امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے درمیان تو زمین و آسان کا فرق ہے۔ اس نے کہا وہ کیے میں نے بتایا کہ جب میں نے امام ابو حذیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے آپ کے متعلق ہوچھا تو انہوں نے فرمایا کہ وہ بہت برے محدث اور ثقد ہیں متند ہیں ان سے احادیث ساکرو بلکہ لکھ لیا کرو مگر آپ کی باتیں س کر مجھے افسوس ہوا کہ کاش میں آپ کی مجالس میں نہ آنا وہ آپ کی تعریف کریں آپ ان کی غیبت کریں۔ میں فرق زمین و آسان کا فرق ہے۔ شریک نے میری باتیں سنیں تو خاموشی سے سرجھکا دیا۔ میرا خیال ہے کہ وہ اس بات ہر نادم تھے اور اپنی غلطی پر پچھتا رہے تھے۔ چند ونوں بعد پھر ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کا ذکر آیا تو وہ پھر گلہ و شکوہ کرنے لگے اور آپ کے نقائص بیان کرتے رے چنانچہ اس دن کے بعد میں نے ان کے پاس آنا جانا بند کر دیا اور سوچاکہ یہ بوڑھا (شریک) عقل وبصيرت سے عارى موگيا ہے اور زبان يرجو کچھ آتا ہے كمتا جاتا ہے۔

#### ایک شرابی سے گفتگو

ابن اللجنی فرماتے ہیں کہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ ایک بادہ نوش شرابی کے گھرے

مكتبهنبويه

قریب سے گزرے وہ نشہ میں وحت دیوار کے ساتھ کھڑا بیٹاب کر رہا تھا۔ آپ نے اسے فرمایا اگر تم بیٹے کر پیٹاب کر رہا تھا۔ آپ نے اسے فرمایا اگر تم بیٹے کر پیٹاب کرتے تو تمہمارے لیئے بہتر تھا۔ اس نے امام کو دیکھ کر کما جھے میرے دوست نے تو ایسا کرنے کو کما ہے۔ آپ نے فرمایا جھے سمجھ آگئ ہے کہ تم اپنے دوست پر پختہ ایمان رکھتے ہو جس طرح انبیاء کرام اپنے اللہ پر پختہ ایمان رکھتے تھے۔ تم بھی اپنے دوست (شیطان) پر نیکا ایمان رکھتے تھے۔ تم بھی اپنے دوست (شیطان) پر نیکا ایمان رکھتے ہو۔

صدقہ بن فضل فرماتے ہیں کہ میں بغدادگیا تو امام احمد بن حنبل مولیجہ سے طا۔ آپ نے پوچھا کیا تم المام شافعی مولیجہ سے ملے ہو؟ تم ان کے پاس جاؤ اور ان سے احادیث کی اجازت حاصل کرو ' میں نے کہا ابھی جاتا ہوں۔ میں حضرت امام شافعی مولیجہ کے پاس گیا اور احادیث سنیں ' واپس آیا تو امام احمد بن حنبل مولیجہ نے بچھ سے پوچھاتم امام شافعی مولیجہ کی مجالس میں گئے تھے تمہارا کیا تاثر ہے؟ میں نے کہا میں ایک ایسے شخص سے ملا ہوں جو لوگوں کے عیب بیان کرتا ہے ' عامیانہ گفتگو کرتا ہے۔ بچھ سے امام شافعی مولیجہ نے دریافت کیا اے خراسانی! تم کیا کہتے ہو؟ میں نے کہا میں وہی کہتا ہوں جو سنتا ہوں۔ آپ نے پوچھا کیا تمہارے پاس کچھ دلائل ہیں ' میں نے عرض کی آپ تو احادیث ساکر حیب ہو جاتے ہیں۔ ولائل تو ابو حقیقہ رضی اللہ تحالی عنہ کے پاس تھے وہ تو حدیث بیان کرنے کے بعد دلائل کے دریا بما دیتے تھے۔ میری یہ بات س کرامام شافعی مولیجہ خاموش ہو گئے۔

حضرت سفیان توری ریافیہ سے جب کوئی مشکل اور وقیق مسئلہ پوچھا جاتا تو خاموش ہو جاتے اور پھر سر اٹھا کر کتے اس مشکل مسئلہ پر تو وہی مخص گفتگو کر سکتا ہے جس سے ہم حسد کرتے ہیں۔ پھر آپ امام ابو حنیفہ رامنی اللہ تعالی عنہ کے شاگردوں سے مخاطب ہو کر پوچھے کیا تہمارے پاس اس کا کوئی حل ہے ؟ شاگرد دو سرے دن امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے دریافت کر کے سفیان توری میلیے کی مجلس میں بیان کرتے تو آپ محسوس کرتے واقعی ان مسائل کا جواب میں ہے۔

یوسف بن خالد سمتی مالیجه فرمایا کرتے تھے کہ ہم بھرہ میں علماء کرام کی ساتھ نشست و برخاست کرتے تھے گرجب ہم کوفہ میں آئے تو امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عند کی مجلس میں بیٹھنے اٹھنے کا موقعہ ملا تو محسوس کیا کہ کمال ایک علم و فضل کا دریا اور کمال سے چھوٹے چھوٹے چھوٹے جشتے - ہر مخص مسائل کے جوابات پر اطمینان کا اظہار کرتا گرجوننی موقعہ ملتا تو غیبت کرتا۔ نفربن علی رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ میں نے ابوعاصم نبیل سے سا۔ کہ میں نے اللم ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے ایک حدیث بیان کی تو بعض لوگ چین بہ چین ہونے گئے میں نے پوچھا یہ کیا وجہ ہے آپ چین بہ چین ہیں اور امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کا ذکر آتے ہی ناراش ہونے گئے ہیں حالانکہ امام کا وجود دین میں ایک زیردست فقیہ کا ہے۔ آپ حمد تو کر رہے ہیں محرک آپ کو معلوم نہیں کہ دین میں و محور "کا کیا مقام ہوتا ہے ایس تو انہیں عبداللہ بن قیس کے شعری روشنی میں و انہیں عبداللہ بن قیس کے شعری روشنی میں و کید رہا ہوں ۔

حسدا ان راوک فضلک الله بما فضلک به النجبا

(ترجمہ) یہ حمد ہی ہے کہ لوگ آپ کو دیکھ کر جل جاتے ہیں۔ آپ کو اللہ تعالیٰ نے وہی فضیلت مجنثی ہے جو امت کے نجا کو مجنثی جاتی ہے۔

عبدالوہاب بن محرے سامنے حصرت امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالیٰ کا ذکر کیا گیا تو آپ نے کما لوگ استے برے فقیہ سے حمد کرتے ہیں۔ انہوں نے کھریہ شعر پڑھا ۔

رايت رجالا يحسنون مجاهنا و نوالسر التلقاه الا محسنا

(ترجمہ) میں دیکھا ہوں کہ یہ لوگ ایک مجاہدے حمد کرتے ہیں وہ صاحب راز ہے اسے جو کھھ ملتا ہے وہ حاسدین کی نیکیوں سے ملتا ہے۔

مجر بن حن کے سامنے جب امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالیٰ عند کا نام لیا گیا تو آپ نے بھی اوپر کھا ہوا شعر پڑھا۔ یکی بن معین کے سامنے امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالیٰ کا ذکر کیا جا آتو آپ بھی بی شعر پڑھ کرسناتے تھے۔

عبدالله بن بدانی رحمته الله علیه فرماتے ہیں کہ ایک مخص نے ابن شرمه (جو حضرت امام اعظم را بلید کا مخالف تھا) کے سامنے دعویٰ پیش کیا تو ابن شرمه نے اس کے خلاف فیصلہ دے دیا۔ وہ

سے الم ابو حذیفہ رضی اللہ تحالی عنہ کی خدمت میں حاضر ہوا اور تمام ماجرا بیان کیا تو آپ نے اس وقت سے حق میں ایک مفصل فیصلہ لکھا۔ وہ شخص ابن شرمہ کی عدالت میں دوبارہ حاضر ہوا' اس وقت سے ابن ابی لیلی بھی بیٹے ہوئے تھے ان دونوں کو یہ معلوم نہ تھا کہ کس نے یہ فیصلہ لکھا ہے۔ وقول نے فیصلہ پڑھا تو اس کی تعریف کی اور کما بہت خوب دلائل پیش کیئے گئے ہیں۔ پوچھا یہ کس سے فیصلہ پڑھا تو اس کی تعریف کی اور کما بہت خوب دلائل پیش کیئے گئے ہیں۔ پوچھا یہ کس سے کھا ہے ؟ اس شخص نے تاایا امام ابو حقیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے نیہ دونوں امام ابو حقیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے نیہ دونوں امام ابو حقیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے نیہ دونوں امام ابو حقیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے نیہ دونوں امام ابو حقیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے خلاف باتیں کرنے گئے۔ امام صاحب کو جب بیہ معلوم ہوا تو آپ نے یہ شعر پڑھے ۔

ر يحسدوني فاني غير لائهم قبلي من الناس اهل الفضل قد حسدوا الله عير الله عي

رجمہ) لوگ جھ سے حمد کرتے ہیں میں انہیں کچھ نہیں کمتا اور نہ ہی آئندہ انہیں کچھ کموں گا کے الل علم و فضل سے بیشہ لوگ حمد کرتے رہے ہیں۔ میرے ساتھ بھی ان لوگوں کا یمی روب سے اللہ علم و فضل سے بیشہ لوگ حمد کرتے رہے ہیں اور غیظ و غضب کا شکار رہتے ہیں وہ اس میں مرجا کیں سے یہ لوگ ول کی جلن میں جلتے رہتے ہیں اور غیظ و غضب کا شکار رہتے ہیں وہ اس میں مرجا کیں

یہ روایت خطیب بغدادی نے بھی اپنی کتاب میں نقل کی ہے۔ ابو بکر زرنجری نے اپنی مشہور اللہ میں جو آپ نے اہل بخارا کے لیئے لکھی تھی بیان کیا ہے کہ میرے والد نے بیان کیا تھا کہ سالہ بن طاہرے بوچھا گیا کہ لوگ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی مخالفت اور فدمت کیوں سے بیر؟ انہوں نے بیہ شعر رواحا ۔

مایضر البحرا مسی ذاخرا ان رمی فیه غلام بججر

رمیا کا کوئی کچھ نہیں بگاڑ سکتا' وہ بھشہ اپنی روانی سے کام رکھتا ہے۔ اگر کوئی بچہ اس کے معلامے بیٹھا ہزار پھر چھینکتا چلا جائے تو اس سے کوئی فرق نہیں پڑے گا۔

ابوالحاس حسن بن على مرغيناني نے اپني كتاب جو انهول نے علائے بخارا كے ليئے لكھى تھى

اس ميں يہ اشعار لکھے ہيں ۔

أن يحسدوني فزادالله في حسدى لاعاش من عاش يومًا غير محسود ما تحسد المرء الامن فضائله بالعلم والباس او بالمجدو الجود

(ترجمہ) لوگ مجھ سے حد کرتے ہیں۔ اللہ تعالی انہیں مزید حد کرنے پر آمادہ رکھے۔ ان لوگوں نے اصل زندگی کا مزہ نہیں چکھا' انہیں یہ بھی معلوم نہیں کہ جس فخص کے خلاف حد کی آگ جلائی جاتی ہے اسے زندگی میں کتنے انعامات سے نوازا جاتا ہے۔ جس پر حمد کیا جائے اس کے فضائل ووچند ہوتے ہیں۔ وہ فضائل علمی ہوں یا بمادری کے۔ یہ کمالات اس کی بزرگی پر ہوں یا جود و سخا پر مالت میں حمد کرنے والے اس کی عظمت کو بردھا دیتے ہیں۔

واز دادلي حسدا من لست احسد ان الفضيلة لاتخلو عن الحسد

(ترجمه) وہ میرے خلاف حد کرتے کرتے بوطنا چلا جارہا ہے۔ جس پر حد نہ کیا جائے اس کی برتری واضح نہیں ہوتی۔

عمارہ بن عقیل رحمتہ اللہ علیہ نے کیا خوب لکھا ہے "۔

ماضرنى حسدا للئام ولم يزل نوالفضل يجسده نو ولنقصان يابوس قوم ليس حربى بينهم الا تظاهر نعمة الرحمٰن

(ترجمہ) خسیس اور کینے لوگ حمد کرتے ہیں 'مجھے ان کی اس عادت سے کوئی نقصان نہیں ہوتا۔ جو لوگ زندگی میں نقصان اور پریشانیوں کی زد میں ہوتے ہیں 'وہ اہل کمال اور اہل علم سے حمد کرتے رہتے ہیں۔ اے لوگو! میرے حاسدین کو کچھ نہ کمو ان کی اس وجہ سے جھ پر اللہ تعالیٰ کی رحمتیں اور احمانات نازل ہوتے ہیں جن سے وہ خود محروم رہتے ہیں۔

حاتم طائی علیہ الرحمتہ کے یہ اشعار کتنے عمدہ ہیں ۔

يا كعب ما ان ارى من بيت مكرمة الا له من بيوت الناس حساد

#### ایک حاسد کا انجام

کوفہ میں عبداللہ بن عبیداللہ الداباجی فخص آمام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے حاسدین میں سے تھا۔ وہ ہروقت حضرت امام مطفیہ کے خلاف باتیں کرتا اور آپ کی تنقیص کرتا رہتا تھا۔ آپ پر کئی فتم کے الزامات اور اتمامات کی تشمیر کرتا رہتا تھا۔ وہ اپنے گھر میں بیٹھا بیٹھا حمد کی آگ میں جاتا رہتا ہو اس کے گھر کو آگ لگ گئ وہ اس میں جل کر راکھ ہو گیا اس کے گھر کو آگ لگ گئ وہ اس میں جل کر راکھ ہو گیا اس فے بری کوشش کی کہ باہر نکل جائے گر آگ کے شعلوں نے اس کے تمام راستے بری کر دیتے تھے وہ علی کر خاکتر ہو گیا۔

#### الم ابوحنیف نفی اللہ کے وشمنوں کی ایک سازش

امام ابوحنیف رضی اللہ تعالی عنہ کے حاسدین اور وشمنوں نے ایک سازش تیار کی اور ایک حشہ عورت کو آمادہ کیا کہ حضرت امام دیلیجہ کے خلاف تہمت لگائے اور اس کی تشیر کرے۔ جب علی الصبح مبحبہ میں آئیں تو وہ شور مجا دے کہ آج رات ابوحنیفہ نے جھے سے بدکاری کی ہے۔ وہ موں کے کفے پر مبحبہ کے دروازے پر آگڑی ہوئی ادھرسے امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ تشریف مربح وہ چھاکر بولی اللہ تعالی آپ کو اپنی پناہ میں رکھے میں اللہ سے استغفار کرتی ہوں۔ حضرت بوچھاکیا بات ہے ؟ کمنے گل میراشوہر آپ کا ہمالیہ ہے ، عورت نے ایک گھر کے طرف اشارہ کر کے کہ اس گھر میں نشے میں دھت بڑا ہوا ہے ، جھے آپ جیسا قابل اعتاد دو سرا نمیں ملا جو اسے کے کہ اس گھر میں نشے میں دھت بڑا ہوا ہے ، جھے آپ جیسا قابل اعتاد دو سرا نمیں ملا جو اسے کے کہ اس گھر میں فرہ راست پر آجائے۔ آپ میری راہبری فرہا ئیں اور میری مدد کریں اور اسے کر تلقین کریں شاید وہ راہ راست پر آجائے۔ آپ اس کی باتیں سن کر اس کے ساتھ چل بڑے ، آپ

آس کے ساتھ اندر واخل ہوئے تو وہاں آپ کے حاسدین اور مخالفین کا ایک جُمع پہلے ہے ہی موجود تھا گر ان میں کوئی مست یا مریض نظرنہ آرہا تھا۔ آپ کو دیکھتے ہی ان لوگوں نے شور مچا دیا اور آپ کے گرد گھیرا ڈال ویا اور کئے گئے۔ ابوحنیفہ! تم یماں کیا کرنے آئے ہو۔ عورت نے انہیں بتایا کہ میں انہیں زنا کرنے کے لیئے لائی ہوں اور یہ قبہ خانہ ہے 'لوگ یماں زنا کرنے آتے ہیں۔ آج آپ کماں آگئے' آپ نے فرمایا مجھے اس مکان کے متعلق تو کوئی علم نہیں' ہاں یہ عورت مجھے اپنے بتار خادثد کے لیئے بلا خادثد کے لیئے للا کی ہے کہ وہ مررہا ہے' اس پر بیبوشی طاری ہے' میں اسے تلقین کرنے کے لیئے بلا گیا ہوں۔ ان لوگوں نے آپ کی کوئی بات نہ سی' یہ عورت تو ان کی کروہ شازش کی آلہ کار تھی انہوں نے اسے خود بھیجا تھا' وہ آپ کو حظے بمانے سے لے آئی تھی' لوگ آپ کو پکڑ کر آپ کے خورت کو علیمہ بھا دیا گیا جو بطور گواہ پٹین ہوں گے۔ اب یہ عورت کو علیمہ بھا دیا گیا۔ پھر ان لوگوں کو بھی علیمہ بھا دیا گیا جو بطور گواہ پٹین ہوں گے۔ اب یہ عورت کو علیمہ بھا دیا گیا۔ جو سے کہ ان ابوحنیفہ میرے طورت کو علیمہ بھا دیا گیا۔ کہ ان ابوحنیفہ میرے ماتھ زنا کرنے کے لیئے میں اس کا فیصلہ میں کا ابوحنیفہ میرے میلئے زنا کرنے کے لیئے میں کے آپ تھا وہ اس بات پر قائم رہنا۔

قاضی ابن ابی لیل چاہتے تھے کہ دن کے وقت اس معالمہ کو سامنے الیا جائے تاکہ شرکے لوگ زیادہ سے زیادہ جمع ہو جائیں' اس طرح امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی زیادہ رسوائی ہوگ۔ قاضی نے کہا ابو حنیفہ ابو سنیفہ ابو اس مکان میں لے جاؤ جہاں سے اسے گرفتار کیا گیا تھا۔ جب صبح عدالت گی تو امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو پیش کیا گیا۔ قاضی ابن ابی لیل نے امام صاحب کو نمایت شخت الفاظ میں زجر و تو بح کی۔ آپ نے نگاہیں نیچی رکھیں۔ قاضی بولتا گیا' کوئی جواب نہ پاکر قاضی سمجھا اب عورت آپ کے خلاف بحربور گواہی دے گی۔ حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ تو اللہ تعالیٰ کو یاد کرنے گئے۔ اللہ تعالیٰ ولال سے تعالیٰ کو یاد کرنے گئے۔ اللہ تعالیٰ ولال سے کو بدلنے والا ہے' اب اس عورت کو عدالت میں لایا گیا' عورت نے قاضی کو بتایا کہ ان لوگوں نے مجھے ایک مخصوص رقم دے کر تیار کیا تھا کہ میں آپ کے خلاف شمت لگاؤں اور عدالت کے سامے مجھے ایک مخصوص رقم دے کر تیار کیا تھا کہ میں آپ کے خلاف شمت لگاؤں اور عدالت کے سامے شخص آبا۔ وہ این ابی لیلیٰ کا شاگرد ہے۔ فلال قلال شخص آبا۔ وہ این ابی لیلیٰ کا شاگرد ہے۔ فلال قلال شخص آبا۔ وہ این ابی لیلیٰ کا شاگرد ہے۔ فلال قلال شخص این ابی لیلیٰ کا شاگرد ہے۔ فلال قلال شخص کیا۔ وہ این ابی لیلیٰ کا شاگرد ہے۔ فلال قلال شخص لین ابی لیلیٰ کا شاگرد ہے۔ فلال قلال شخص لین ابی لیلیٰ کا دوست ہیں اور عورت نے امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو عرض کی گھے

آپ کی نسبت اپنی بدنای اور شرت کی زیادہ فکر شے' آپ کسی طرح سے جھے یہاں سے زکالیں۔ آپ نے دہاں اپنی بیوی کو بلا لیا اور اسے کہا کہ اپنا لباس اس عورت کو پہنا دو اور اس کے کپڑے خود پہن لو پھر آپ نے اس عورت کو کہا تم اسی لباس میں لوگوں کے سامنے باہر چلی جاؤ۔ لوگوں نے سمجھا ہیں ۔ وہی عورت ہے اس مورت کو کہا تم اسی لباس میں لوگوں کے سامنے باہر چلی جاؤ۔ لوگوں نے سمجھا ہیں ۔ وہی عورت کے اس پر اعتراض نہ کیا اور وہ باہر چلی محق۔ اب امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عند منتے اور آپ کی اپنی بیوی تھی مگر انہوں نے اس عورت کا لباس کہن رکھا تھا۔

اب حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے مخالفین اور سازشیں کرنے والول نے اس عورت اور امام ابو حنیفه رضی الله تعالی عنه کو دوباره عدالت میں پیش کیا عدالت کا کمرہ تماشا کیوں سے بھرا ہوا تھا۔ قاضی ابن ال کیلی نے دونوں کو دیکھا' امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنه عدالت میں کھڑے ہیں۔ قاضی نے گرج کر کما ابو صنیفہ! تم ایک عالم اور فاضل آدمی ہو' تنہیں یہ فعل کرتے شرم نہیں آئی۔ قاضی نے امام ابو علیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو عدالت میں بت برا بھلا کما' آپ نے نمایت صبرو ورست کیا۔ اب آپ نے اٹھ کر کما قاضی صاحب آپ نے جو کچھ کما ہے وہ ورست ہے۔ طرموں کے ساتھ الیا ہی رویہ اختیار کرنا جائے۔ گرمیں آپ سے گزارش کرتا ہوں کہ اس عورت کے متعلق پہلے معلوم تو کر لو کہ یہ کون ہے ؟ یہ میری بیوی ہے ، میرے بیٹے حماد کی مال کی ہے۔ آپ اس عورت سے دریافت کریں۔ قاضی نے بوچھا تو اس عورت نے جواب دیا کہ میں الوصنيف كى بيوى مول عادكى مال مول الوصنيف ميرك شومرين بيات من كرعدالت مين سنانا جها گیا۔ قاضی ابن ابی کیلی سن کر مکا بکا رہ گیا۔ اس نے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو کہا کہ بیہ سارے لوگ تمہارے خلاف بیان دے رہے ہیں کہ تم نے زناکیا پھر قاضی نے اس عورت کو کما کہ یہ تمام لوگ تمہارے متعلق بھی ہے کہ رہے ہیں۔ محترمہ نے کہا مجھے لوگوں کے الزامات کا تو علم مس مرس امام ابوصف کی بوی موں۔ قاضی نے کما تممارے پاس کیا جوت ہے کہ تم ابوصف کی يوى مو- اس نے بتايا عدالت ميں ميرا بھائي موجود ب ميرا بينا موجود ب "ب ان سے شمادت لير،-ان دونوں نے گوائی دی کہ یہ عورت ابو حنیفہ کی بیوی ہے۔ اب قاضی نے عدالت کے دو سرے لوگوں کو مخاطب کیا جن میں عورتیں بھی تھیں سب نے کہا ہم اسے جانتی ہیں یہ امام ابو حنیفہ رضی ناقب امام اعظم حام مكتبه نبويه

الله تعالی عنه کی بیوی ہے۔

اب قاضی نے حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے معذرت کی اور الزام تراشی کرے والوں کو قرار واقعی سزا دی۔ لوگ چلے گئے تو قاضی امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی خوشاد کرے لگا اپنی مند پر بٹھایا 'آپ کی رفعت اور منزلت کی بے حد تعریف کی۔

ایک دن لوگوں نے حضرت امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عند کی مجلس میں قاضی ابی لیل کے متعلق بتایا کہ قاضی تو آپ کے خلاف ہر جگہ باتیں کر آ رہتا ہے' آپ پر الزامات تراشتا اور آپ کی فرمت کر آ ہے۔ مخالفت کا کوئی پہلو ہاتھ سے نہیں جانے دیتا۔ آپ نے فرمایا' میں تو اس کی لمی کی بھی فدمت کرنا پند نہیں کر آ۔ رضی موسوی کے اشعار اسی موقع پر کے گئے تھے ۔

نظر وابعين عداوة لوانها عين الهوى لاستحسدوا ما استقبحوا

يولونني شنرز العيون لانني غلست في طلب العلبي و تصبحوا

(ترجمہ) لوگوں نے امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ کو عدادت کی نگاہوں سے دیکھا کاش یہ لوگ آپ کو عربت کی نظروں سے دیکھتے۔ جن باتوں میں آپ کی قباحت کرتے ہیں وہ آپ کی محاس نظر آپ کو محبت کی نظروں سے بھی آبھیں چھر لیتے ہیں حالانکہ میں نے آپ کی بلند یوں اور رفعتوں کو اندھروں میں بھی دیکھ لیا ہے۔ یہ لوگ تو آپ کی شان کو روز روش میں بھی شیں دیکھ پاتے۔

حامد بن آدم مطیحہ فرماتے ہیں کہ میں نے فضل بن موسیٰ سینانی سے کما کہ ان لوگوں کو کیا ہو گیا ہو گیا ہو گیا ہو گیا ہے کہ امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ جیے بلند پایہ انسان کے خلاف باتیں کرتے رہتے ہیں؟ آپ نے فرمایا دراصل امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے ایسی باتیں بھی واضح کر دیں جن کی ان لوگوں کو ضرورت نہ تھی اور ان کی عقل و فکر سے بلند تھیں۔ یہ حمد کی آگ میں جلنے گئے ۔

اكباد من حسد النعمان في كبد وفي رقابهم حبل من المسد

ان تغضوا عيشه في يومه حسدا فانه في غد في عيشة رغد

لوقده المتناهى قاتل الجسد كذاك فعل وقود النار فى الحمد وانهم قد صلوا فى غصة الحسد وانهم من سرور الناس فى كمد تورطوا فى عناب واصب صعد

وقابل الحسد الوقادوا فده نابوا بوقدهم نابوا ولا عجب محسودهم في نعيم الله منغمس قدشاركوا الناس لما عمهم كمد لمارا واجده الصعاد منتظما

يقول حاسده رجلای فی صفد والجید فی مسد والکبد فی کبد

(قر جھہ) حضرت نعمان رضی اللہ تعالی عنہ کی حدد کی آگ میں لوگوں کے جگر جل رہے ہیں۔
ان کے گلے میں محجور کی چھال کے رہے پڑے ہوئے ہیں۔ یہ لوگ حدد کا خون پینے رہتے ہیں اور
خون پینے رہیں گے۔ انہوں نے اپنی زندگیاں تاخ کر دی ہیں۔ ان لوگوں کا محرر (امام ابوطنیفہ ) بھیشہ
اللہ کی نعمتوں کے دریا میں غوطہ زن رہے گا۔ حاسد حمد کی آگ میں جلتے رہیں گے' امام ابوطنیفہ
رضی اللہ تعالی عنہ تو لوگوں کے دکھ میں شریک رہتے ہیں مگریہ لوگ خوشی دکھ کر جلتے رہتے ہیں۔
ان لوگوں نے امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو دن رات ترقی کی منازل طے کرتے دیکھا تو دائی
عذاب میں جنل ہو گئے اور عذاب میں جلنے گئے۔ آپ کا ایک حاسد کہتا ہے کہ میرے دونوں ہاتھ اور
ہوں بین جگرے ہوئے ہیں' گردن میں رہے پڑے ہوئے ہیں اور ان کے جگر درد و غم سے
ہوں بین اور ان کے جگر درد و غم سے
ہوں بین اور ان کے جگر درد و غم سے

\*\*\*\*

فت المام اعظم ۲۱۲ مکتبه نبویه

#### المارهوال باب

#### امام ابوحنیفه نصحیاتی اور امرائے کوفه

#### گور فر کوف کے دربار میں

ابن ھبیرہ نے فیصلہ کیا کہ وہ ایک الیا مضمون لکھے جس سے اپ اور خوارج کے درمیان فیصلہ کن بات ہویا تو وہ باہمی صلح پر آمادہ ہو جا کیں یا دونوں ایک دو سرے سے جدا ہو جا کیں۔ اس نے ابن شرمہ آور ابن ابی لیل سے یہ بات کی۔ ان دونوں نے ایک مینے کی مسلت طلب کی ایک الیہ بعد ان دونوں نے ایک مینے کی مسلت طلب کی ایک الیہ بعد ان دونوں نے کہا کہ کوفہ میں ایک ایبا شخص سے جو اس موضوع پر خوب لکھنا جاتا ہے۔ ان کے بتانے پر ابن ھبیرہ گورز کوفہ نے امام ابوضیفہ رضی اللہ تحالی عنہ کی خدمت میں ایک آدی بھیجا۔ آپ تشریف لائے تو ابن ھبیرہ نے ان دونوں کی تحریریں آپ کے سامنے رکھ دیں۔ آپ نے پڑھ کر فرمایا اس تحریر میں اسائے المیہ کے علاوہ سارا مضمون برگار اور غلط ہے۔ ابن ھبیرہ نے فرمایا ابھی شاہی کاتب کو بلا کیں کاتب بلایا گیا آپ نے هبیرہ نے بوچھا کتنے دنوں میں ؟ آپ نے فرمایا ابھی شاہی کاتب کو بلا کیں کاتب بلایا گیا آپ نے ہیں میں سارا مضمون کھوا دیا۔ دربار کے تمام علاء نے اس تحریر کو بہت پہند کیا حتی کہ ابن ھبیرہ کو بھی بہت پند کیا حتی کہ ابن ھبیرہ کو بھی بہت پند کیا حتی کہ ابن عبیرہ کو بھی بہت پند کیا وان دونوں نے پڑھا تو انہیں بھی آپ کی قابلیت کو تسلیم کرنا پڑا۔ کوفہ عبیرہ کو بھی بہت پند گئی۔ ان دونوں نے پڑھا تو انہیں بھی آپ کی قابلیت کو تسلیم کرنا پڑا۔ کوفہ کی گردنیں جھی گئی۔ کی تابلی عنہ کی ہے پہلی فتح تھی جس کے سامنے تمام مخالفین کی گردنیں جھی گئیں۔

#### بیت المال کی نظامت سے انکار

عاصم فزارہ کے غلام نے بیان کیا کہ مجھے بزید بن عمر بن ھبیرہ نے حضرت امام ابوضیف

رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو بلانے کے لئے بھیجا۔ آپ آئے تو گورز نے عم دیا کہ آپ بیت المال کی فلامت قبول فرمائے۔ آپ نے انکار کر دیا۔ گورز خثمان ہو گیا آپ کو بیس کو ڑے مارنے کا علم دیا اور دات بھر جیل میں ڈال دیا گیا۔ صبح آپ نے نماز فجر اوا کی تو آپ نے محسوس کیا کہ کو ڈوں کی ضریوں سے آپ کا سر سوجا ہوا ہے۔ ابن ھبیرہ نے آپ کو دربار میں دوبارہ بلایا اور کما جھے آج دات کو حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم نے خواب میں فرمایا ہے کہ تم اللہ سے نمیں ڈرتے وات کو حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم نے خواب میں فرمایا ہے کہ تم اللہ سے نمیں ڈرتے میرے ایک بے گناہ امتی پر کو ڑے برسا رہے ہو اور ڈرا کر منصب دینا چاہتے ہو۔ ابن حسرہ نے آپ سے معانی مائی اور رہا کر دیا۔

#### دنياو آخرت ميں ايک کاانتخاب

ابوالاحوص نے فرمایا کہ جن دنوں امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ جیل میں تھے تو آپ کو بیت المال کی نظامت قبول نہ کرنے کے جرم میں قید کے علاوہ کوڑے بھی برسائے گئے۔ ان ونوں کوڑے سرپر بھی مارے جاتے تھے۔ یہ واقعہ ابن ابی لیلیٰ اور ابن شبرمہ نے سنا اس وقت دونوں مجد میں بیٹھے تھے۔ یہ دونوں امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے خلاف تھے۔ دونوں نے آپ کو برا بھلا کمنا شروع کیا لیکن ابن شبرمہ چند کمحوں کے لئے رک گیا اور کہنے لگا یہ شخص ( امام ابو حنیفہ ) جم دونوں سے اچھا ہے۔ ہم دنیا طلب کرتے ہیں گریہ شخص دنیا کی نعمتوں کی بجائے مار کھا رہا ہے۔

#### دین کے لیئے سزائیں

عبداللہ بن المبارک رحمتہ اللہ علیہ قرماتے ہیں کہ یوں تو بہت ہے لوگ عالم اور فاضل ہیں اور برے بردے منصب اور عمدے رکھتے ہیں گرنام کی عظمت کا اندازہ اس وقت ہوتا ہے جب ونیا ہیں کسی آزمائش سے گزرنا ہو۔ امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو جب آزمائش کا سامنا کرنا پڑا' جیل میں ڈال دیئے گئے' مر پر کوڑے برسائے گئے' انہیں بار بار بیت المال کی نظامت اور منصب کے قول کرنے پر آمادہ کیا گیا گر آپ انکار کرتے رہے۔ وہ ذلت قبول کرتے ہیں' کوڑے برداشت کرتے ہیں' قید و بند کی صعوبتوں کو لبیک کہتے ہیں گر اپنا اصول نہیں توڑتے اور آزمائش کے وقت سرگوں ہیں' قید و بند کی صعوبتوں کو لبیک کہتے ہیں گر اپنا اصول نہیں توڑتے اور آزمائش کے وقت سرگوں

اسیں ہوتے اور دین کی سلامتی کے لیئے سب کھ برداشت کرتے ہیں۔

#### علماء اور فقها کے لیئے اعلیٰ مناصب

بنو امیہ کے دور حکومت میں ابن ھبیرہ کوفہ کا گورٹر تھا۔ ای کے زمانہ اقدار میں کوفہ کے فسادات ہو گئے۔ اس نے عراق کے تمام علماء کرام کو جمع کیا سارے ملک کے فقها کا اجلاس ہوا کو میں ابن ابی لیلی بھی تھے اور ابن شرمہ بھی واود بن ابی ہند بھی تھا اور دو سرے بلند قدر فقها کی موجود تھے۔ گورٹر نے ہر ایک کو کوئی نہ کوئی اعلیٰ منصب دیا جب امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عدم سیت المال کی نظامت کا منصب بیش کیا گیا تو آپ نے انکار کر دیا۔ گورٹر چڑ گیا اور آپ کو بھی کوڑے مارنے کا حکم دیا۔ آب نے کوڑے کھا لیئے گریہ منصب قبول شیس کیا۔

ابو احمد عسكرى را ليج فرماتے ہيں كہ كوفہ كے گور تر ابن هبيرہ نے امام ابو حقيفہ رضى اللہ تعالى عنہ كو عمدہ قضاہ (قاضى كوفه ) مقرر كرنا چاہا تو آپ نے انكار كر ديا۔ اس نے غصہ بيں آگر محملى عنہ كو عمدہ قضاہ (قاضى كوفه) مقرر كرنا چاہا تو آپ نے انكار كر ديا۔ اس نے غصہ بيں آگر محملى كہ اگر انہوں نے يہ عمدہ قبول نہ كيا تو ان كے سرير تميں كو ثرے برسائے جائيں گے اور جل بيں ڈال دوں گا۔ آپ نے واقعی انكار كر ديا۔ كو ثرے كھائے اور جيل بيں جانا قبول كر ليا اور قرمايا محمدہ كو ثرے كو ثرے كو عام سزا ہے اگر اور جمھے قبل بھى كردے تو ميں عمدہ قضاہ قبول نہيں كروں گا۔

لوگوں نے امام صاحب کو بتایا کہ گور نر نے تو قتم کھالی ہے کہ وہ آپ کو جیل میں رکھے گا۔
آپ عہدہ قضاہ قبول فرمالیں تو آپ کے لیئے ایک عظیم الثان محل مختص کر دیا جائے گا۔ امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے کہا اگر گور نر مجھے مجد کے دروازے بتانے کا گران بھی مقرر کرے گا تو میں انکار کر دول گا۔ امام صاحب کا جواب ابن ھبیرہ کو بتایا گیا تو وہ غصے میں آگ بگولہ ہو گیا اور اندازہ لگانے لگا کہ میری قتم اور امام ابو حفیفہ کی قتم میں کیا فرق ہے۔ آپ کو دربار میں بلایا گیا بالمثافہ گفتگو کی اور اپنی قتم دھرائی کہ اگر آپ عہدہ قضاہ قبول نہیں کریں گے تو میں آپ کے مربر تمیں کو ڑے لگواؤں گا یمال تک کہ آپ کی موت واقعہ ہو جائے۔ امام صاحب نے فرمایا موت کا تو ایک وقت مقرر ہے وہ ایک بارے میں قیامت کے مقرر ہے وہ ایک بی بار آتی ہے۔ آپ نے مزید فرمایا آپ سوچ لیں میرے بارے میں قیامت کے مقرر ہے وہ ایک بارے میں قیامت کے مقرر ہے وہ ایک بی بار آتی ہے۔ آپ نے مزید فرمایا آپ سوچ لیں میرے بارے میں قیامت کے مقرر ہے وہ ایک بارے میں قیامت کے مقرر ہے وہ ایک بارے میں قیامت کے مقرر ہے وہ ایک بارے میں قیامت کے مقرب کی موت واقعہ ہو جائے۔ امام صاحب نے فرمایا میں میرے بارے میں قیامت کے مقرب کی بار آتی ہے۔ آپ نے مزید فرمایا آپ سوچ لیں میرے بارے میں قیامت کے مقرب کی بار آتی ہے۔ آپ نے مزید فرمایا آپ سوچ لیں میرے بارے میں قیامت کے مقرب کیا کو ایک کا موت واقعہ ہو جائے۔ امام صاحب کے فرمایا کیا کی موت واقعہ ہو جائے۔ امام صاحب کے فرمایا کیا کیا کہ کا کہ کو کیا گور کیا گور کے کی کو کر کیا گور کیا گور کیا گور کیا گور کے کی کی کی کور کیا گور کیا گور کیا گور کیا گور کیا گور کی کور کیا گور کیا گور کی کیا گور کیا گور کیا گور کیا گور کیا گور کی کور کیا گور کیا گور کیا گور کیا گور کیا گور کیا گور کی کور کیا گور کی کور کیا گور کیا گور کیا گور کی

ون الله تعالى دريافت كرے كاكم اس مخص كو كس جرم بيس كو رُے لگائے گئے تھے تو آپ كو اس كا كوئى جواب نہيں آئے گا۔ الله تعالى وى بات قبول كرے گاجو حق ہوگى۔

ابن هبیره نے آپ کی تقریر من کر جلاد کو بلایا اور کماکہ امام ابوطنیفہ مطفیہ کو جیل میں لے جاؤ۔ آپ نے ساری رات جیل میں گزار دی'کوڑے برسائے گئے جس کی تکلیف سے آپ ساری رات نہ سو سکے۔ صبح سر سوجا ہوا تھا۔ ابن هبیره کو حضور صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم نے خواب میں فرایا تم میرے امتی کو بلا وجہ سزا دے رہے ہو' شرم کرو۔ کہتے ہیں اس دن سے ابن هبیره نے آپ کو جیل سے رہا کر دیا۔

جن داول کوف کے دوسرے فقمانے مختلف عمدے قبول کر لیے تو ان سب نے حضرت امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو مشورہ دیا کہ آپ بھی عمدہ قضاہ قبول فرما لیں۔ آپ نے فرمایا کہ آگر مجھے واسط کی جامع مجد کے دروازے بنانے کا گران مقرر کیا جائے تو بھی میں گورنر کے تحکم ہے یہ ذمہ داری چنول نہیں کروں گا۔ آگر میں عمدہ قضاہ قبول کرلوں اور گورنریہ تحکم دے کہ فلاں شخص کی گردن اڑا دو فلاں کو قید کردو تو میں ایک بے گناہ کو کیوں سزا دوں۔ میں بے گناہوں کی سزا پر مہریں لگنے کا کام نہیں کروں گا۔ ابن ابی لیل نے غصہ میں آگر کما اسے چھوڑ دو یہ اکیلا حق پر ہے اور جم سب ناحق عمدہ قبول کر دے ہیں۔ ابن ہبیرہ کی پولیس آئی 'آپ کو گرفتار کیا اور جیل میں ڈال دیا گیا۔ جمعہ کے دن کو ڑے مارے گئے۔

ایک روایت میں ہے کہ جیل میں آپ پر مسلسل کوڑے برسائے گئے۔ جلاد ابن ھبیرہ کے پاس آیا اور کنے لگا ابو حقیقہ روائیے کوڑے کھا کھا کر قریب الموت ہے مگر زبان سے عمدہ قبول کرنے کو تیار نہیں۔ چنانچہ اب ابن ھبیرہ نے امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ سے بوچھا کہ میں آپ کے افکار پر سزا دینے کی فتم کھا چکا ہوں اب مجھے کیا کرنا چاہے۔ مجھے میری فتم سے بری کرنے نے لیئے آپ یہ عمدہ قبول کرلیں۔ آپ نے فرمایا میں تو گور نرکے تھم سے مجد کے دروازے درست کرانے کی ذمہ داری بھی قبول نہیں کر سکتا۔

ابن ھبیںرہ تنگ آگر کہنے لگا کہ کوئی الیا شخص لاؤ جو امام ابو حنیفہ کو تھیحت کرے۔ وہ چند روز کی مهلت مانگ لیں۔ کچھ ونوں کے لیئے ہی عهدہ قبول کر لیں' میں انہیں بڑے انعام و اکرام دول گا۔ امام صاحب کو جب گورز کی بیچارگی کاعلم ہوا تو آپ نے فرمایا جھے چھوڑ دو۔ بین مشورہ کا اول اور غور کر لول۔ آپ کو رہا کر دیا گیا۔ آپ کوفہ سے مکہ مرمہ چلے گئے۔ یہ واقعہ ۱۳۰ھ کا ہے۔ آپ اس وقت تک مکہ مکرمہ بین قیام پذیر رہے جب تک بنوامیہ کی حکومت کا تختہ نہ الٹ والکہ اور عمای حکومت آگئی۔ آپ ابو جعفر منصور ظیفہ عبای کے دور اقتدار بین کوفہ لوئے۔ ابو جعفر اللہ ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کا اجرام کرتا تھا آپ کو بلا کر بری عقیدت کا اظہار کیا۔ انعام و آگرام پیش کیا ایک خوبصورت لونڈی پیش کی گئی گر آپ نے یہ کہ کرتمام چزیں لینے سے انکار کر دیا کہ ان چزوں پر میراکوئی استحقاق نہیں ہے۔

#### انيس وال باب

## المام الوحنيفه نفعة النابيجة ائمه دين كي نظرين

#### عبدالله ابن السارك مايفته

امام عبداللہ ابن المبارک مالیے نے فرمایا کہ امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ اللہ کی آیات (شانیوں) میں سے ایک آیت ( نشانی ) ہیں۔ کسی نے آپ سے سوال کیا کہ "آیت خیر" ہیں یا" آیت شر" ہیں۔ ابن المبارک مالیے نے اسے کما اے بندہ خدا! تم قرآن مجید کی روشنی میں اس آیت کے لفظ کو تلاش کرو وجعلنا ابن مریم و امه آیه اللہ "ہم نے ابن مریم اور اس کی مال کو آیت بنایا "کیا آیت شرسے بھی بن عتی ہے؟

#### ابن عيينه مايني

ابن عیب در حمته الله علیه فرمایا کرتے تھے کہ امام ابو صنیفه رضی الله تعالی عنه جیسا فقیہ میری الله تعالی عنه اپنے الله عنه اپنے کے آج تک نہیں دیکھا۔ امام ابو کی حمانی روائی کہ امام ابو حنیفه رضی الله تعالی عنه اپنی فائے کے تمام لوگوں سے افضل ہیں۔ اسی طرح حضرت ابو بکر بن عیاش روائی نے فرمایا کہ امام ابو حنیفه سے بڑھ کرکوئی عالم دین نہیں۔ امام شافعی رحمته الله علیه نے فرمایا کہ لوگوں نے امام مالک روائی سے بڑھ کرکوئی عالم دین نہیں۔ امام شافعی رحمته الله علیه نے فرمایا کہ لوگوں نے امام مالک روائی سے بی ہوئی کہ تب نے امام ابو حقیفه رضی الله تعالی عنه کو دیکھا ہے؟ آپ نے فرمایا ہاں! وہ مرد میدان سے اگر وہ گفتگو کرتے اور بید دعوی کرتے کہ بیہ ستون سونے کا بنا ہوا ہے تو وہ ولا کل سے ثابت کر دیا گرتے تھے کہ واقعی بیہ سونے کا ہے۔

ایک اور روایت میں ابن المبارک روائیے نے فرمایا کہ جب میں امام مالک رحمتہ اللہ علیہ کے اس تھا تو آپ کے پاس ایک مخص آیا میں نے ابھی تک امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو نہیں دیکھا

تقا۔ امام مالک روایئیے نے مجھے بوچھا جانتے ہو یہ کون فخص ہے ؟ میں نے عرض کی میں تو شمیں جانا۔

آپ نے فرمایا یہ ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ ہیں۔ یہ استے ذہن و فطین ہیں کہ اگر کہہ دیں کہ یہ ستون سونے کا ہے وہ فقہ میں اس قدر بلند رہبہ رکھے ہیں کہ اللہ تعالیٰ نے انہیں اس علم میں بے بناہ توفیق بخشی ہے۔ یہ باتیں ہو رہی تھیں کہ امام مالک روایئی کہ اللہ مالک میں حضرت سفیان توری روایئی آگئ آپ نے بیٹھنے کے لیئے آپ کو وہ جگہ نہ دی جمال مالک روایئی کی مجلس میں حضرت سفیان توری روائی آگئ آپ نے بیٹھنے کے لیئے آپ کو وہ جگہ نہ دی جمال امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ ہو بیٹھا آپ نے سفیان توری روایئی کو اس احرام سے نہیں بٹھایا جس احرام سے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو بٹھایا میں اللہ تعالیٰ عنہ کو بٹھایا دو مرا نہیں پہنچ سکیا۔

ور مرا نہیں پہنچ سکیا۔

#### ابو ليحيل حمانی رمايليد

ابو یجیٰ حمانی رحمتہ اللہ علیہ نے فرمایا کہ میں نے امام ابو صنیفہ رضی اللہ تحالی عنہ سے بڑھ کر کوئی عالم آدمی نہیں دیکھا۔

#### ابوبكرين عياش رمايليه

ابو بکر بن عیاش رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ اپنے زمانہ کے تمام فقہا اور علماء سے افضل اور اعلیٰ ہیں۔

#### امام اوزاعی کارجوع مرافیته

عبدالله بن المبارك را ليج فرمايا كرتے تھے كه بين شام بين گيا اور وہاں امام اوزائ كى مجلس بين حاضر ہوا آپ نے مجھے بيروت مين ويكھا تھا مجھے ديكھتے ہى فرمانے لگے اے خراسانی! تم جانتے ہو كم ايك بدعتى كوفه بين بيدا ہوا ہے اس كى كنيت " ابو حنيفه " ہے۔ بين امام اوزائ كى بات من كر كيدہ خاطر ہوكر اٹھا اور اپنے گھر جمال مقيم تھا چلا گيا۔ مين نے بعض كمتوبات (مسائل) كا انتخاب كيا

یو مجھے امام ابو صفیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے لکھوائے تھے۔ میں تیرے دن پھر امام اوزائی کے پاس مجد کیا آپ میرے ہاتھ میں کاغذوں کو دیکھ کر فرمانے گئے یہ دکھاؤ میں نے کاغذ دیے۔ اوزائی اس مجد کے موذن بھی تھے اور امام بھی انہوں نے اذان دی اور کھڑے کھڑے پڑھتے رہے خود ہی اقامت پڑھی اور جماعت کرائی مماز کے بعد بھی کاغذات پڑھتے رہے مجھے پوچھایہ کس نے لکھے ہیں میں نے وضی کی یہ امام ابو صفیفہ کوئی رضی اللہ تعالی عنہ کی مجالس سے جمع کیئے گئے تھے۔ میرے سامنے وہ پھندات رکھتے ہوئے فرمایا اس کوئی کی گوئی بات ساؤ۔ میں باتیں کرنا گیا۔ میں نے کما میں نے انہیں خواسان میں دیکھا تھا ان جیسا اس وقت سارے عالم اسلام میں کوئی نہیں۔ میں جانے لگا تو اوزائی نے فرمایا کوئی اور بات ساؤ میں نے کہا کہ یہ وہی شخص ہے جے آپ بدعتی اور کوئی کہتے تھے۔

ایک اور روایت میں ہے کہ مکہ مرمہ میں امام اوزائی اور امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ

یک دوسرے کے پاس پاس ٹھرے ہوئے تھے۔ ایک دن میں نے (ابن مبارک) دیکھا کہ اوزائی امام

بوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ ہے ان مسائل پر شفتگو کر رہے تھے جو انہوں نے میرے کاغذات سے

یعے تھے۔ امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے ان مسائل پر وضاحت سے شفتگو فرمائی اور کئی

متعان کیئے۔ دو سرے دن میں امام اوزائی کو ملا اور امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے متعان ان

گشافات کیئے۔ دو سرے دن میں امام اوزائی کو ملا اور امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے متعان ان

گشافات کیئے۔ دو سرے دن میں امام اوزائی کو ملا اور امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے متعان ان

گشافات کیئے۔ دو سرے دن میں امام اوزائی کو ملا اور امام ابوضیفہ کے علم و بصیرت پر رشک کرتا ہوں اور کے متعلق بڑی غلط فہمیاں تھیں آج وہ سب دور ہو اپنے سابقہ خیالات سے تائب ہوتا ہوں' مجھے ان کے متعلق بڑی غلط فہمیاں تھیں آج وہ سب دور ہو

عبدالرزاق (محدث) فرماتے ہیں کہ ہم معمر کے پاس بیٹھے تھے وہاں عبداللہ ابن المبارک عبداللہ ابن المبارک عبد بھی آگئے 'معمر فرما رہے تھے کہ ہم نے آج تک کوئی ایبا شخص نہیں دیکھا جو فقہ کے مسائل میں احن طریقے سے گفتگو کر سکے یا قیاس میں اتن وسعت سے بات کر سکے جتنی امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کرتے ہیں۔ وہ حس معرفت کے مالک ہیں۔ فقہ میں لوگوں کے مسائل حل فرماتے ہیں ' وہ ایس شقیس اٹھا کر لوگوں کے مسائل حل فرماتے ہیں ' وہ ایس مسائل حل کرتے ہیں۔

مکتبه نبویه ۱

#### قاضى ابوبوسف رميطيه

قاضی ابو یوسف رحمتہ اللہ علیہ فرمایا کرتے تھے کہ میں نے تفیر 'احادیث اور فقہ کی وضاحت میں آبام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے بڑھ کر کسی کو نہیں دیکھا۔

#### ابومطيع رماطية

ابو مطیع ( رحمته الله علیه ) الحکم بن عبدالله فرماتے ہیں کہ میں نے حدیث الفقه میں سفیان توری مالیجہ سے بڑھ کر کسی کو ضمیں دیکھا تھا، گرجب میں نے امام ابو حنیفه رضی الله تعالی عند کو دیکھا تو مجھے تسلیم کرنا پڑا کہ فقہ میں امام اعظم سے بڑھ کر کوئی ضمیں ہے۔

#### يزيد بن ہارون رمایفتہ

یزید بن ہارون ریالیے نے فرمایا کہ اے ابوخالد! بتائے کہ آپ نے فقہ میں کوئی عظیم انسان دیکھا ہے۔ آپ نے فقہ میں کوئی عظیم انسان دیکھا ہے۔ آپ نے فرمایا امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ ۔ اس طرح امام حسن ابوعاصم سے پوچھا گیا کہ کیا امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ بڑے فقیہ ہیں یا سفیان ٹوری ریالیے آپ نے فرمایا امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا شاگرد اور غلام بھی سفیان ٹوری سے زیادہ فقیہ ہے۔ ایک اور روایت میں لکھا ہے کہ ابوعاصم نے فرمایا ارے بے خبرامام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا چھوٹا ساغلام بھی فقہی مسائل ہیں ابوسفیان ٹوری سے بڑھ کر ہے۔

#### سجاده رمايني

محمد بن عطیہ رحمتہ اللہ علیہ فرواتے ہیں کہ میں اور ابو مسلم المستملی بزیر ابن ہارون کے پاس گئے اور منصور بن مهدی کو ملے آپ اس وقت بالاخانہ میں تشریف فروا تھے 'ہم وہاں پنچے آ ابو مسلم نے کما اے ابو خالد! امام ابو حنیفہ کی علم فقہ میں کیا حیثیت ہے ؟ آپ نے فرمایا اگر آج فقہ کی علم مقد میں کیا حیثیت ہے ؟ آپ نے فرمایا اگر آج فقہ کی تمام کتابوں پر نگاہ ڈالی جائے تو تمام فقہا کی تحریریں امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی فقامت کے سامنے بیج دکھائی وی بیر۔ امام سفیان توری براٹی تاب کی کتاب "الرهن" بڑھ کر اپنی کتاب

لكسى تقى-

#### عبدالله بن مبارك رايفيه

عبدالله بن المبارك ملطي فرماتے بیں كه میں نے اپنی زندگی میں برے براے عبادت كرار اہل اور فقيد ديكھے بيں ' ففيل بن عياض برے پر بيزگار اور متقی بيں ' عبدالعزيز ابن ابورواد ملفيٰ ابو حنيفه عند الله اور عبادت كرار بيں۔ حضرت سفيان ثوری ملطجہ بردے عالم دين بيں ' گرميں نے امام ابو حنيفه سفی الله تعالی عند جيسا فقيد ' عبادت كرار اور متقی كوئی دو سرا نہيں ديكھا۔ حسن بن شفيق رحمته الله في الله قبالی عند جيسا فقيد ' عبادت كرار اور متقی كوئی دو سرا نہيں ديكھا۔ حسن بن شفيق رحمته الله في الله في اگر بيد دونوں كسى مسئله ميں مشفق بو جائيں تو بيد مسئله متفق عليه بو جاتا ہے اور وہ سئله نمايت قوی اور متحکم بو جاتا ہے۔

عبدالله بن المبارك ملائي اس سلسله مين فرماتے بين كه مين نے معركو ديكھا تھاكه وہ امام عنفه رضى الله تعالى عنه كے حلقه تدريس مين بيٹے تھے اور ان سے استفادہ كر رہے تھے اور جب امام عن كر مائل پر محفظو كرتے تو باہر آكر فرماتے كه آج مين نے فقہ پر بهترين محفظو عن ہے۔ امام عنفه رضى الله تعالى عنه سے بردھ كركوئى دو سرا فقه مين محفظو نہيں كر سكتا۔ ايك اور روايت مين ساتفادہ بى نہيں استفتاء كياكرتا تھا۔

#### عبدالله بن داود مایظیه

بشر بن الحارث والليد فرماتے ہيں كہ ميں نے عبدالله بن داود والليد سناوہ فرمايا كرتے تھے كه كر آثار يا حديث كو سجھنا ہو تو امام سفيان تورى والليد بردے باكمال انسان ہيں ليكن اگر حقائق فقہ اور علاقت كے اصل معانی جاننا ہو تو امام ابو سنيفہ رضى الله تعالی عنہ جيسا دو سراكوئی نہيں ملے گا۔ محمد بن سيد والليد فرماتے ہيں كہ عبدالله بن داود الخربي فرمايا كرتے تھے كہ الل اسلام پر واجب ہے كہ وہ نماز كے بعد امام ابو حنيفہ رضى الله تعالی عنہ كے ليئے معاكيا كريں 'آب نے امت مسلمہ كے ليئے سنن و كى حفاظت فرمائى ہے۔ الجوهرى كى روايت ہے كہ امام ابو حنيفہ رضى الله تعالی عنہ كو فقہ كے سائل ير بردا كمال حاصل تھا۔ آپ بردے غور و خوض سے گفتگو فرمايا كرتے تھے۔

# عبدالرحمن المقرى مليثته

ابوعبدالرحمٰن المقرى ملطنيد كى عادت تقى كه وه جب امام ابوحنيفه رضى الله تعالى عنه سے ملك روايت كرتے تھے تو كہتے " حدثنا! "

# يلح بن وكيع رايلي

ملیح بن و کیم اپنے والد کے متعلق فرماتے ہیں کہ انہوں نے بتایا تھا کہ میں نے امام ابو سیسے رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے بڑھ کر کوئی فقیہ نہیں دیکھا اور نہ ہی آپ سے بڑھ کر عبادت گذار دیکھ ہے۔

# يحيل بن معين رطيعيه

یجیٰ بن معین رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ میں نے بیجیٰ بن سعید سے سنا تھا کہ امام ابو سینہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے پاس جب بھی جاتے تو وہ بہت ہی عمرہ گفتگو فرماتے تھے۔

#### ألقطان رماينيه

یکی بن سعید القطان فرماتے ہیں کہ بخدا ہم امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عند کی رائے گ تکذیب نہیں کر سکتے 'ہم نے آپ کے اکثر اقوال کو بطور فقری لیا اور کوف کے اکثر آئمہ ماری راہنے۔ فرمایا کرتے تھے اور ہم انمی کے اقوال کو ترجیح ویا کرتے تھے۔

### امام شافعی ریافتیہ

 تفادہ کرنے والے ) ہیں۔ " مناقب الصمیری " میں لکھا ہے کہ قیاس اور استحسان میں تمام لوگ امام وضیفہ رضی اللہ تعالیٰ عند کے عیال ہیں۔

#### مفيان بن عيينه مايند

سفیان بن عیبند نے فرمایا کہ میرا خیال ہے کہ دو چیزیں صرف کوفہ میں ہی ہیں بلکہ ان دو چیزیں صرف کوفہ میں ہی ہیں بلکہ ان دو چیزوں سے سارا جمال مستفیض ہوا ہے۔ قرات میں حمزہ رحمتہ اللہ علیہ سے اور فقہ میں امام ابوحنیفہ اللہ تعالیٰ عنہ سے۔

# محلى بن معين رايطيه

یجیٰ بن معین را شید فرماتے ہیں کہ میرے نزدیک حمزہ رحمتہ اللہ علیہ کی قرات اور امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی فقہ نمایت بہندیدہ ہیں اور میری اس رائے سے آج تمام اہل علم متفق ہیں۔

# عبدالجيدبن عبدالعزيز والي

عبدالمجید بن عبدالعزرز بن ابی رواد روایت فرمایا کرتے تھے کہ میرے والد پر جب بھی کوئی دین سلہ مشتبہ ہو آ تو وہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو لکھتے، جب میں امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی خدمت میں حاضر ہونے گیا تو آپ نے مجھے بہت سے مسائل لکھوائے آ کہ میں امام ابو حنیفہ رضی منہ تعالی عنہ کہ مرمہ میں تشریف لائے تو اللہ تعالی عنہ مکہ مرمہ میں تشریف لائے تو میرے والد ان کی مجالس میں رہتے اور وین محاملات میں آپ کی اقتداء کرتے۔

### عبدالعزيزين رواد رطيتيه

عبدالعزیز ابی رواد رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ ہمارے زمانے میں تمام لوگوں میں امام معنی میں میں امام معنی رخت ہیں کہ ہمارے زمانے میں تمام لوگوں میں امام معنی رخت ہو ان سے محبت کرتا ہم اس سے محبت کرتا ہم اس سے دوست بن جاتے مگر جو ان سے بغض کرتا تو ہمیں یقین ہو جاتا کہ یہ بدعتی ہو گراہ ہے۔ ( آج حضرت امام المسنّت امام احمد رضا بر ملوی معیاد سنت ہیں۔ مترجم )

## عبدالله بن يزيد رمايطيه

عبدالله بن بزید مطیحہ اپنی علمی سند بول بیان فرماتے ہیں۔ حدثنا ابو حفیفہ شاہ مردان ۔ یاد رہے یہ عبدالله بن بزید ابوعبدالرحمٰن مقری حفاظ الحدیث میں سے تھے بلکہ بول کئے کہ اپنے وقت کے اللہ محدث تھے' آپ کی اکثر احادیث امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے بیان کی گئی ہیں۔

محر بن عبدالوہاب ریلیے فرماتے ہیں کہ ہم اس مقری کے پاس گئے، ہم ان کے پاس ہیٹے تھے کہ کہ کمی نے کما حدثنا ابوطنیفہ 'کمی دو سرے مخص نے کما کہ ابوطنیفہ کو چھوڑو اور ایوں کمو حدثنا انعمال بن ثابت ' لکھنے والے نے میں الفاظ لکھے مگر امام مقری عبداللہ بن بزید رویلیے نے فرمایا بیہ مردہ دل میں زندہ نہیں ہیں۔ انہیں ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے نام کے عرفان سے بے خبری ہے۔ وہ نہیں جانے کہ ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کا نام ہی کئی قضیلت والا ہے اور نہ ہی ان کے علمی مقام کی جانے کہ ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کا نام ہی کئی قضیلت والا ہے اور نہ ہی ان کے علمی مقام کی جانے ہیں۔

### امام مالك بن انس رمايطيته

حضرت امام مالک رحمتہ اللہ علیہ اکثر امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے اقوال کو بیان فرد کرتے تھے اور آپ کے اقوال کو بیان فرد کرتے تھے اگرچہ آپ اس حقیقت کو عام لوگوں سے بیاں فہیں کرتے تھے۔ اسحاق بن محمد رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ مسائل دینیہ میں امام مالک کا ابو حنیفہ کے اقوال کو معتبر سمجھتے تھے۔

#### محمد ابن اسحاق رمايطيه

یونس بن بکیر علینہ فرماتے ہیں کہ جن دنوں محمہ بن اسحاق رحمتہ اللہ علیہ کوفہ میں تشریف لائے ہم ابن سے مغازی (غزوات النبی ) کے واقعات سنا کرتے تھے اور محمہ بن اسحاق اکثر امام ابو حلیفہ رضمی اللہ تعالیٰ عنہ کی زیارت کے لیئے جایا کرتے تھے۔ وہ زیادہ وقت آپ کی مجلس میں گزارتے ہے اور دیر تک آپ کی محفظہ سنتے رہتے تھے اور بعض ایسے مسائل پر استفسار کرتے جو ان کے لیے

مشكل تقير

## امام مالك بن انس رميطيته

محر بن استعمل ابی فدیک روایت بین که بین که بین که بین که محد با الله رحمته الله علیه کو دیکھا که وه امام البه الله الله الله الله الله الله تعالی عنه کے ہاتھ بین ہاتھ ڈالے جارے تھے ، جب معجد بین پہنچ تو امام مالک روائی نے امام ابوطنیفه رضی الله تعالی عنه سے واللہ نے امام ابوطنیفه رضی الله تعالی عنه سے عالی جب معجد نبوی مالیم نم من واخل موئے تو کہا ہم الله بيد امن و امان کا مقام ہے اور الله تعالی مجھے عنداب سے بناہ بین رکھ اور دوزخ سے بچائے۔

#### ابو حمزه رمايني

اسحاق بن بملول رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ میں نے ابو حزہ دوافیہ سے سنا وہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا ذکر نمایت احس طریقہ سے کیا کرتے تھے اور فرمایا کرتے تھے اس بندہ خدا پر مجھے تعجب ہوتا ہے کہ وہ رات بحر اللہ تعالیٰ کی عبادت میں کھڑے رہتے ہیں اور دن بحر لوگوں کی عبادت میں کھڑے رہتے ہیں اور دن بحر لوگوں کی عبادت میں کھڑے رہتے ہیں۔ حرملہ شکاات حل کرنے میں مشغول ہوتے ہیں۔ پھر لوگوں کو حدیث پڑھانے میں سرگرم رہتے ہیں۔ حرملہ کہتے ہیں کہ امام مقری عبد اللہ بن بزید نے فرمایا کہ داڑھی اور سیاہ بالوں والا کوئی فقیہ لمام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے بڑھ کر نہیں ہے۔

# مسلم بن خالد زنجی مایلیته

احد بن حاج نیشاپوری رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ میں مسلم بن خالد زفجی کے ہال بیشا ہوا اللہ انہیں اپنے زمانہ میں بڑی بزرگی حاصل مقی۔ ان کا حلقہ درس بھی بہت وسیع تھا' ایک دن اس ملقہ درس میں مختلو ہو رہی مقی' جمال محر بن مسلم طائفی بھی تشریف فرما تھے۔ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تحالی عنہ کے متعلق مسلم بن خالد نے بڑی تفصیلی مختلو کی اور آپ کے بڑے اوصاف بیان فرما کے اور آپ کے ممائل کی مرائی کی بڑی تحریف کی' محر بن مسلم طائفی نے کما جن فضائل علمیہ کے اور ان کے مسائل کی مرائی کی بڑی تحریف کی' محر بن مسلم طائفی نے کما جن فضائل علمیہ کے

مناقب امام اعظم . ٢٢٦

متعلق تم مخفتگو کر رہے وہ تو امام ابو حنیفہ میں نہیں پائے جاتے۔ مسلم بن خالد روایطیہ نے کہا ہی اوساف نہیں پائے جاتے بلکہ اس سے کہیں زیادہ اوصاف و فضائل پائے جاتے ہیں۔ کاش مجھے وقت سے میں آپ کے سارے کمالات بیان کرتا۔

مسلم بن خالد زنجی اہل مکہ کے محدثین میں شار ہوتے تھے۔ آپ صرف عالم حدیث ہیں شہر ہوتے تھے۔ آپ صرف عالم حدیث ہی نہیں تھے بلکہ آپ کو فقہ اور علم الکلام میں بھی بڑا کمال حاصل تھا۔ آپ امام شافعی ریائید کے است میں شار ہوتے ہیں اور امام شافعی ریائید نے علم الکلام آپ سے ہی حاصل کیا تھا۔ عقیدہ کے لحاظ سے آپ ائمہ معتزلہ میں شار ہوتے تھے۔ غیلان بن مسلم کے رفقاء میں سے تھے۔ عمر بن عبید کے سکھ علم اصول پڑھا تھا۔ عبداللہ بن محمد بن حذیفہ کے ہم سبق رہے تھے۔

# امام جعفرصادق محدباقر نفتقا للتابئة

عبد المجيد بن عبدالعزيز بن ابى داور روالجيه فرماتے بيں كه بهم لهم جعفر بن محمد باقر رضى اللہ تعلقہ عنہ كے ساتھ " حجر" بيں بيٹھے ہوئے تھے۔ لهم ابو صنيفه رضى اللہ تعالى عنه وبال تشريف لے آئے آپ نے سلام عرض كيا تو الم جعفر صادق رضى اللہ تعالى عنه نے اٹھ كر آپ كو گلے لگاتے ہوئے سلام كا جواب ديا فيرو عافيت معلوم كى اور بوى عزت سے بٹھايا جب الم بجو صنيفه رضى اللہ تعالى حد اٹھ كر چلے گئے تو خدام نے حضرت لهم جعفر رضى اللہ تعالى عنه سے پوچھا كه آپ انہيں جائے بي الله كر چلے گئے تو خدام نے حضرت لهم جعفر رضى اللہ تعالى عنه سے پوچھا كه آپ انہيں جائے بي آپ نے فرمايا ارب احمق بيں ان كى فيرو عافيت پوچھ رہا ہوں اور تم پوچھتے ہو كه بيں انہيں جاتے ہوں يا نہيں باتے تو فرمايا در كھو بيہ مخص آج اپ شركوفه كا بهت بردا فقيه ہے۔

خالد بن ابوب فرماتے ہیں کہ میں نے امام عبدالعزیز ابن سلمہ روالی سے ایک بار اللہ ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ مدینہ منورہ میں موجود سے 'ہم نے ان سے دینی مسائل پر گفتگو کی' آپ جواب دیتے تو وزنی دلائل سے بات کرتے' ایسی ججت اور دلیل دیتے کہ کسی فتم کی کمی نہ رہتی۔ آپ نے آپ سے قیاس اور رائے سے گفتگو کی تو آپ نے مضبوط ججت اور دلائل سے ہمیں قائل کر دیا۔

#### الم مغيره رماطيد

امام جریر بن عبدالحمید فرماتے ہیں کہ مجھے مغیرہ نے فرمایا کہ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنه کی صحبت میں جایا کرو' اس لیئے کہ اگر آج امام ابراہیم زندہ ہوتے تو وہ بھی آپ کی صحبت میں آتے بات۔ جریر بن عبدالحمید فرماتے ہیں کہ مجھے مغیرہ نے فرمایا کہ اس حلقہ لیعنی امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے درس میں بیٹھو گے تو تم فقیہ بن جاؤ گے۔

جریر بن عبدالحمید فرماتے ہیں کہ مغیرہ نے ایک فتوی جاری کیا ' پھراس پر شک کا اظہار کیا '
حبل عمر بن حریث بھی تھے جو امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالی عند کے درس سے استفادہ کر چکے تھے '
حسوں نے فرمایا ہم تو اس مسئلہ کو یوں بیان کریں گے کیونکہ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عند نے یوں
میاں کیا ہے۔ اس کے بعد مغیرہ جو مسئلہ بیان فرماتے یہ لوگ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عند کی رائے گو بیان کرکے ترجے ویے۔

جریر فرمایا کرتے ہے کہ ہم آگر امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی محفل میں حاضرنہ ہوتے تو مغیرہ ہمیں سرزنش کرتے اور فرماتے جہیں معلوم نہیں امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی مجالس میں سائل کس قدر پختہ اور مدلل ہوتے ہیں 'مجھے خصوصی طور پر فرماتے تم امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی مجلس میں ضرور جایا کرو' ان کی مجلس سے گھرلیا نہ کرو کیونکہ ہم حضرت جماد (حضرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے استاد) کی مجالس میں جاتے تھے گرجو مسئلہ قہیں ذہن نشین نہ ہوتا وہ امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ یاد کرا دیا کرتے تھے۔

#### امام ابويوسف رمايتيه

امام ابویوسف رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ میں ابن ابی کیا کی مجلس میں حاضر ہوا کر تا تھا گر مجھے فقتی سائل میں تسلی نہ ہوتی تھی' میں نے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی مجلس میں جانا مشروع کیا تو دل برا مطمئن ہوا۔ ایک دن مجھے ابن ابی کیلی ملے اور پوچھا تمہارے صاحب کا کیا حال ہے' میں نے کہا وہ نہایت ہی متقی شخص ہیں اور فقہ میں ان کا جواب نہیں۔ ابن ابی کیلی نے کہا ان

LINE TIN

کی مجلس کو لازم کرلو اور وہال سے غیرحاضرنہ ہوا کرد ان جیسا فقیہ اور عالم نہیں ملے گا۔

#### أبو معاوبه رميطيه

ابو معاویہ والیجہ فرمایا کرتے تھے کہ ہمارے مشامخ کی مسلہ پر فتویٰ دیے تو انہیں شک و شر رہتا کہ یہ مسلم صحیح بیان کیا ہے یا نہیں 'گرجب امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی رائے معام علی جاتی تو انہیں تعلیٰ موج ہے۔ جب ان سے وریاف کے جاتی تو انہیں تو وہ فرماتے ابن ابی لیلیٰ وہ حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ سے صد کیا کرتے تھے۔ کمر آپ کے علم سے انکار نہیں کر سکتے تھے۔

## ابن ابی کیلی رمایطیه

کیت بن نصر ملیجہ فرماتے ہیں کہ جب امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ نے خلیفہ عمای کی طرف سے پیش کیا گیا منصب لینے سے انکار کر دیا تو درباری علماء نے اسے توہین خلافت قرار دے کو خلیفہ کو آپ سے برگشتہ کر دیا خلیفہ نے آپ کو گرفتار کر کے کو ڑے مارنے کا تھم دیا 'کہلی بار آپ کا عباس محل سے نکال کر بازار میں لایا گیا اور سر بازار کو ڑے مارے گئے۔ ایک درباری عالم دین لی عباس محل سے نکال کر بازار میں لایا گیا اور سر بازار کو ڑے مارے گئے۔ ایک درباری عالم دین لی شہرمہ نے آپ کو دیکھے کر کما یہ مسکین بھی کیا ہے آگر منصب قضاۃ قبول کر لیتا تو کیا بات تھی 'کو ڑے تو نہ کھا آ۔ یہ بات ابن ابی لیل نے من تو کما ابن شبرمہ آج یہ مخص میرے اور تمہارے سامے مسکین ہو کہا دیا ہے گا دہاں میں اور تم مسکین دکھائی دیں مسکین ہو کہا گیا ہے۔

### رقبه بن متقله ملاطيد

رقبہ بن متلد ملطحہ فرماتے ہیں کہ امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے علم فقہ و کلام میں اس قدر غور و خوض کیا اور اتنی مختیق نہیں کی کہ آپ سے پہلے کسی عالم دین نے اتنی شختیق نہیں کی سے تقی- جمال تک ہو سکے امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے علم حاصل کرنا چاہیے۔

#### معربن كدام راينيه

حن بن زیادہ دیائی فراتے ہیں کہ کوفہ کی جامع مجد کے ایک کونہ میں معر بن کدام دیائیے فرا اگرتے ، گردو سرے کونے میں حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نماز پڑھا کرتے تھے۔ نماز فرح ہو جایا فرح ہونے فارغ ہونے کے بعد بہت سے لوگ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے ارد گرد جمع ہو جایا کرتے اور آپ سے دبی مسائل دریافت کیا کرتے تھے ، بعض ایسے لوگ بھی ہوتے جو آپ سے مناظرانہ انداز میں گفتگو کرتے اور اس طرح بلند آوازوں میں بات کرنے گئے گرجب امام ابو حنیفہ ان کے سامنے نمایت اور قائل ہو کر جائے۔ معر کے سامنے نمایت اطمینان سے ولائل ویتے تو یہ لوگ خاموش ہو جاتے اور قائل ہو کر جائے۔ معر بن کدام کتے یہ مرد خدا ہے حقانیت سے بات کرتا ہے ، لوگوں کے شور و غل ان کے سامنے خاموش ہو جاتے ہیں ، یہ بی اس کی عظمت کی دلیل ہے۔

معر بن كدام فرماتے ہيں كہ ہن ايك دن حضرت امام ابو حنيفہ رضى اللہ تعالى عنہ كے پاس وقت حاضر ہوا جب آپ نماز پڑھ رہے تھے ' ہن تھوڑى دير كھڑا رہا گر آپ نے نماز ہن محويت كى وجہ سے ميرى طرف خيال تك نہ كيا ' ہيں واپس آگيا ' ہيں نے آپ كے كپڑوں ہيں ايك كئرى ركھ دى تاكہ آپ كو احساس ہو كہ كوئى آيا تھا ' جب ہيں دو سرى بار قريب گيا تو ديكھا كہ آپ ابھى تك نماز ہيں مشغول ہيں اور كئرى جوں كى توں پڑى ہے۔ ہيں نے خيال كيا كہ آپ نے اس وقت تك نماز ہيں مشغول ہيں اور كئرى جول كى توں پڑى ہے۔ ہيں نے خيال كيا كہ آپ نے اس وقت تك نہ ركوع كيا ہے نہ جود ورنہ ہے كئرى گر پڑتی۔ آپ فارغ ہوئے ہم نے بعض مسائل پر آپ سے گفتگو كى ' آپ اس طرح غالب آگئے كہ ہميں خاموثى كے بغير چارہ كار نہ رہا ' يہ تو ان كى علمى مرتب ہم نے ذہر ہيں مقابلہ كيا تو وہاں بھى آپ كى برترى نظر آئى۔ ہم نے فقہ ہيں مقابلہ كيا تو وہاں بھى آپ كى برترى نظر آئى۔ ہم نے فقہ ہيں مقابلہ كيا تو وہاں بھى آپ كى برترى نظر آئى۔ ہم نے فقہ ہيں مقابلہ كيا تو وہاں بھى آپ كى برترى نظر آئى۔ ہم نے فقہ ہيں مقابلہ كيا تو وہاں بھى آپ كى برترى نظر آئى۔ ہم نے فقہ ہيں مقابلہ كيا تو وہاں بھى آپ كى برترى نظر آئى۔ ہم نے فقہ ہيں مقابلہ كيا تو وہاں بھى آپ كى برترى نظر آئى۔ ہم نے فقہ ہيں مقابلہ كيا تو وہاں بھى آپ كى برترى نظر آئى۔ ہم نے فقہ ہيں مقابلہ كيا تو وہاں بھى آپ كى برترى نظر آئى۔ ہم نے فقہ ہيں مقابلہ كيا تو وہاں بھى آپ كى برترى نظر آئى۔ ہم نے فقہ ہيں مقابلہ كيا تو وہاں بھى آپ كى برترى نظر آئى۔ ہم نے فقہ ہيں مقابلہ كيا تو وہاں بھى آپ كى برترى نظر آئى۔ ہم نے فقہ ہيں مقابلہ كيا تو وہاں بھى آپ كى برترى نظر آئى۔ ہم نے فات ہيں مقابلہ كيا تو وہاں بھى آپ كى برترى نظر آئى۔ ہم نے فقہ ہيں مقابلہ كيا تو برتى نے برتى نظر آئى۔ ہم نے فات ہيں مقابلہ كيا تو برت ہيں مقابلہ كيا تو برت ہم كے فات ہيں ہيں ہيں ہيں ہو كيا ہے ہو كيا ہو

ہم بن مسلم نے فرماتے ہیں کہ ہیں نے معر بن کدام طابحہ کو کہتے ہوئے ساکہ آج الد صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ جیسا فقیہ عالم اسلام میں دو سراکوئی نہیں ہے۔ حس بن قنیب فرماتے ہیں کہ میں نے معر بن کدام سے سنا ہے کہ وہ فرماتے ہے کہ کوفہ میں علماء کرام دو مخصوں سے ہیں کہ میں نے معر بن کدام سے سنا ہے کہ وہ فرماتے ہے کہ کوفہ میں علماء کرام دو مخصوں سے صد کیا کرتے ہے اور حس بن صالح طابحہ سے صد کیا کرتے ہے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے فقہ کی دجہ سے اور حس بن صالح طابحہ سے

زہد و عبادت کی وجہ ہے۔

عبدالله بن المبارك والحية فرماتے ہیں كه ميں نے مسعر بن كدام كو كئ بار ديكھا كه جب المس ابوحنيفه رضى الله تعالى عنه تشريف لاتے تو وہ بے اختيار ادب اور تعظيم كے ليئے كھڑے ہو جائے۔ جب آپ كے سامنے بيٹھتے تو دوزانو بیٹھتے وہ آپ كی رائے كو رد نہیں كرتے تھے اور آپ كی تعریف كے بغير نہیں رہ كتے۔

معر بن کدام رایلیہ علماء کوفہ میں برے مقدر فقیہ اور باعث فخرعالم دین تھے۔ حفظ و نہم میں بھی مھروف تھے۔ امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ بھی آپ کی قدر کیا کرتے تھے' آپ نے ایک مند میں کئی احادیث معر بن کدام کی روایت سے بیان کی ہیں۔

#### امام شريك رمايطيحه

امام شریک رحمتہ اللہ علیہ فرمایا کرتے تھے ایک دن میں علماء قرایش ہے جو مکہ اور مدینہ میں مشہور تھے پوچھا کہ آپ کے نزدیک کوفہ کے ابو صنیفہ کا کیا مقام ہے ؟ وہ فرمانے لگے ابو صنیفہ فقہ کے میدان کے مرد میدان جیں 'وہ ہم سب پر غالب آجاتے ہیں' جمال بھی ہماری ذبانیں رک جاتی ہیں وہ مسلہ کو آگے بردھاتے چلے جاتے ہیں۔ ہم نے آج تک کسی ایسے شخص کو نہیں دیکھا جو ان پر غالب آیا ہو۔

# عثمان مدنى رمايفيته

حضرت عثان مدنی رحمتہ اللہ علیہ فرمایا کرتے تھے کہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ حملہ ابراہیم' علقمہ اور اسود جیسے علماء سے زیادہ فقیہ ہیں۔

# حسن بن عماره رايطته

حضرت حماد بن ابوحنیفہ ریٹی فرماتے ہیں کہ میں نے اپنے والد ابوحنیفہ اور حسن بن عمال دونوں کو دیکھا' وہ ایک پل پرے گزر رہے تھے' میرے والدنے حسن بن عمارہ کو آگے چلنے کو کا

حسن بن عمارہ نے کہا حضور آپ ہی آگے چلیں کیونکہ آپ ہی علم و فضل میں ہم سب پر فائق اور افضل و اعلیٰ ہیں۔

## ابو سعيد صاغاني رايثيه

ابوسعید ساغانی رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ میں نے امام ابو حقیقہ بولینے اور امام زمر بولیئے سے سافھا کہ ہم نے حسن بن عمارہ کو علم حدیث میں آزمایا تو وہ حدیث کو ایسے صاف شفاف طریقہ سے بیان فرمایا کرتے تھے جیسے خالص سرخ سونا آگ سے نکال لیا جاتا ہے۔ امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ فرماتے ہیں کہ میں نے حسن بن عمارہ ولیئے سے تعلقات استوار کیے' میل جول برحمایا' ہم نے انہیں خبر و برکت سے مالمال بایا۔ ابوسعید صاغانی نے فرمایا ہم نے جو احادیث حسن بن عمارہ ولیئے سے سنیں خبر و برکت سے مالمال بایا۔ ابوسعید صاغانی عنہ فرمایا ہم نے جو احادیث حسن بن عمارہ ولیئے کی مجلس میں سائی حقیق وہی امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ سے سنیں۔ جو باتیں حسن بن عمارہ ولیئے کی مجلس میں سائی جاتی تھیں وہی امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ کی مجلس میں سنتے' آگر ہم حسن بن عمارہ ولیئے سے مزید حتی مسئلے کی وضاحت چاہتے تو ہم امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ کا ذکر چھیڑ دیے' ہم ان دونوں سے ہوئے مسائل لکھ لیتے تو دونوں میں سرمو فرق نظرنہ آیا۔

#### لينين زيات مايني

لیس نیات رحمتہ اللہ علیہ فرواتے ہیں کہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا حال تو خوبصورت سیب جیسا ہے جو ہروقت ترو آزہ رہتا ہے۔ یمی لیسین زیات فرواتے ہیں کہ آدھی رات کا وقت تھا' مجھے ایک مشکل آپڑی اور اس مشکل کا حل دریافت کیئے بغیر نہ رہ سکا' میں اسی وقت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے خدمت میں حاضر ہوا اور اجازت چاہی' آپ اس وقت نماز پڑھ رہ سے 'تھوڑی دیر کے بعد آپ نماز سے فارغ ہوئے تو میں نے اپنا مسئلہ پیش کیا' آپ نے اس مسئلہ کا حل اس طرح بیان فروایا کہ میرے ذہن سے بوجھ اتر گیا' اب میں حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے لیع وعا مانگ رہا ہوں اس طرح میں قمام مسلمانوں کے لیئے وعا مانگر ہوں۔

وزر بن عبدالله والله فرماتے ہیں کہ ہم نے اللین زیات سے مکہ ہیں سا' آپ کے پاس بہت لوگ بیٹے تھے' آپ انسیں چیخ چیخ کر فرما رہے تھے لوگو! دین کے مسائل حاصل کرنے کے لیے حضرت امام ابو صنیفہ رضی الله تعالی عنه کی مجلس میں حاضری دیا کرو' ان کی مجالس کو غنیمت جانو' ان سے علم حاصل کرو' ان جیسی مجلس تہمیں کہیں میسر نہیں آئے گی اور نہ ہی ان کی طرح کوئی دو سرا مختص حلال و حرام کے مسائل بیان کر سکے گا۔ جب وہ دنیا سے رخصت ہوں گے تو بہت سے علم چائے گا۔

آپ نے یہ بات اس لیے فرمائی تھی کہ حضرت امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ اس سال کے لیے حرمین شریفین میں موجود تھے، محمد بن القاسم الاسدی فرمایا کرتے تھے کہ لیمین زیات الم ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کا ذکر بہت زیادہ کیا کرتے تھے۔ آپ اکابر اہل حدیث سے تھے۔ آپ الم ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی تعریف کرتے تھکتے نہ تھے اور ہر مختص کو آپ سے علم حاصل کرنے کی تصویف کرتے تھے۔

## حسن بن صالح رايطيته

حن بن صالح رحمته الله عليه اليه فخص تنظ كه جب انهيں امام ابوطنيفه رضى الله تعالى عنه كى طرف سے كوئى حديث سائى جاتى يا كوئى مسئله سايا جاتا تو آپ سانے والے كا شكريد اوا كرتے اور اس مسئله كو دوسرے لوگوں تك پنچانے ميں خوشى محسوس كرتے تنظے۔

## امام الكلى رمايية

ابوبكر بن عباس ما بليد فرمات بين كه مين في باربا امام الكلى ما بليد سے امام ابوطنيف رضى الله تعالى عنه كو بمترين مقرر بنايا عنه كا ذكر سنا وہ فرمايا كرتے الله تعالى في امام ابوطنيف رضى الله تعالى عنه كو بمترين مقرر بنايا ہے۔

## ابن اساك رمايطيه

الله تعالى نے كوف ميں چار " او آو" پيدا فرمائے ہيں امام سفيان تورى مالك بن معول وا

طائی اور ابوبکر شبلی رضی اللہ تعالی عنم یہ تمام حضرات امام ابوصیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی مجالس سے استفادہ کرنے والے بزرگ تھے اور آپ کی روایت بیان فرمایا کرتے تھے۔ عبدالحمید بن صالح ملیلی فرماتے ہیں کہ میں نے ابن اسماک ملیلی سے سنا وہ جب واقعات بیان فرماتے تو لوگوں کو رلا دیتے تھے۔ آپ کی مجلس میں شاید ہی کوئی ایسا شخص ہو تا جس پر رفت طاری نہ ہوتی۔ آپ اپنی مجلس کے افتقام پر امام ابوصیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے لیئے وعا فرمانے تھے اور لوگوں کو آمین کہنے کی ترغیب دیتے تھے اور فرماتے لوگو! امام ابوصیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی مجالس میں آیا جایا کرو وہ علم کا بہتا ہوا دریا ہیں۔

ابن اساک کا اسم گرامی محمد بن صبیح العجلی تھا۔ آپ کوئی تھے اور کوفہ کے اکابر علاء میں شار ہوتے تھے وعظ و خطاب سے لوگوں کو اللہ تعالیٰ کے خوف سے مستفیض کیا کرتے تھے۔ آپ نے امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے ساتھ ہشام بن عودہ دیائیہ سے علم حاصل کیا تھا۔ آپ کو عبای خلفاء کے ہاں بڑی پذیرائی تھی۔ آپ ہارون الرشید کے زمانہ تک زندہ رہے ، جب بھی موقعہ ملتا ہارون الرشید کو وعظ و تھیحت سے اسلام کی بھتری کی طرف توجہ ولاتے۔ ہارون الرشید آپ کا بیان سے اس کا رواں رواں کانپ اٹھتا۔

#### اسلعيل بن حماد رمايطيه

اساعیل بن جاد بن ابی سلیمان رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ میرے والد کے قربی رشتہ دار تھے۔ میرے والد اکثر امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی مجالس میں حاضر ہوا کرتے تھے، میں نے اپنے والد سے وہی حاضر ہوا کرتے تھے، میں نے اپنے والد سے وہی روایات ازبر کی تھیں جو انہیں امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی مجالس سے حاصل ہوئی تھیں۔ اپنے والد کی وفات کے بعد میں نے خود امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی مجلس میں جانا شروع کیا اور ان سے وہی روایات آزہ بھی ہو گئیں اور ان سے وہی روایات آزہ بھی ہو گئیں اور بھے ان روایات کی سند بھی حاصل ہو گئی۔ یکی بن آدم فرماتے ہیں کہ اساعیل بن حماد را اللہ بست بو رہے ان روایات کی سند بھی حاصل ہو گئی۔ یکی بن آدم فرماتے ہیں کہ اساعیل بن حماد را اللہ بیا تھا مگر ان کے دل کا میلان امام ابو صنیفہ رضی اللہ بو شیفہ رضی اللہ

منافب امام اعظم

تعالیٰ عند کی طرف تھا اور آپ انہیں کی روایات سایا کرتے تھے۔

#### اسباط بن نصررمايطيته

اسباط بن نصر فرماتے ہیں کہ میں نے منصور بن المعمر کے ہاں امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ منصور کے پاس آتے تو وہ کھڑا عنہ منصور کے پاس آتے تو وہ کھڑا موجاتا اور جس انداز سے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے گفتگو کرتا کسی دو سمرے عالم سے نہ کرتا۔

# خلف بن الي ايوب الكوفي راينية

خلف بن ابی ابیب الکوئی را شیخ فرماتے ہیں کہ مجھے بہت سے علماء اور مشاکح کی مجالس میں جانے کا موقعہ ملا ہے، میں بعض الیمی باتیں سنتا جس پر میرا دل مطمئن نہ ہوتا اور ان مسائل کو میں صحیح طور پر نہ سمجھ پاتا۔ مجھے اس بات پر سخت کوفت ہوتی، لیکن جب میں امام ابوضیفہ رضی اللہ تعلی عنہ کی مجالس میں حاضر ہوتا تو جن امور کا مجھے علم نہ ہوتا تھا آپ سے پوچھتا تو آپ ایسے عمرہ طرف اور احسن انداز سے بیان فرماتے کہ میرا دل نور سے معمور ہو جاتا۔

# قيس بن الربيح ملطية.

قیس بن الربیع را بینے فرماتے ہیں کہ میں نے بہت سے اہل علم کی محافل اور مجالس میں شرکت کی لیکن امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی مجالس کا کوئی جواب نہیں تھا۔ یہ مجلس علم و فضل کا مرقع ہوتی، حجاج بن محمد را بینے فرماتے ہیں کہ میں نے قیس بن الربیع را بینے مالیج سے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے متعلق بوچھا تو انہوں نے فرمایا کہ آج ان جیسا عالم سارے عالم اسلام میں نہیں ہے۔

#### حفص بن غياث رميطية

حفص بن غیاث رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ میں نے امام ابو حلیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ ک کتابیں پڑھیں' ان کی نقل کردہ روایات سنیں' میں نے ان کے بیان سے بڑھ کر کوئی عمدہ بیان شعب بلا اور آپ کے قلب سے زیادہ شفاف کوئی قلب نہیں دیکھا' مجھے آپ کے بتائے ہوئے احکام میں مجھی شک و شبہ کرنے کا موقعہ نہیں ملا۔ آپ نادر زمانہ تھے اور فنم و نظرمیں مکتائے زمانہ تھے۔

يجلى ابن آدم رمايطيته

یکی بن آدم رحمتہ اللہ علیہ نے فرمایا اہل کوفہ اور اہل بھرہ کا اتفاق ہے کہ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے بڑا کوئی دو سرا عالم فقیہ نہیں۔ آپ نے مزید فرمایا کہ فقہ میں امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی گفتگو محض رضائے اللی کے لیئے ہوا کرتی تھی اس میں کوئی دنیاوی غرض یا خواہش کی ملاوٹ نہ ہوتی تھی۔ آپ کے حاسدین اور مخافیین کے حمد اور مخافت کے باوجود آپ کے کارنامے دنیا کے گوشے گوشے تک پنچے۔ یکی بن آدم دیلیجے نے ایک اور مقام پر فرمایا کہ امام ابوحنیفہ نے فقہ میں ایما اجتماد کیا کہ اس کی مثال نہیں ملتی۔ اللہ تعالی نے انہیں صبح راہ وکھائی اور خواص و عوام نے ان کے علوم سے استفادہ کیا 'امام شریک اور کوفہ کے دو سرے علما تو ان کے سامنے طفل کمتب دکھائی دیج جسے بادشاہ کے سامنے غلام ہوں۔ وہ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے علم و فعنل کے سامنے دست بستہ نظر آتے 'کاش زمانہ سمجھ پا آگہ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کا کیا مقام ہے۔ امام سامنے حد تھے نود بھی کیرائی عنہ کا کیا مقام ہے۔ امام جانے حد احرام تھے 'خود بھی کیرائی میں اللہ تعالی عنہ کا کیا مقام ہے۔ امام جانے حتے 'خود بھی کیرائی دین آئیں امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کا کیا مقام ہے۔ امام جانے حتے خود بھی کیرائی بین آئیں امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کا کیا مقام ہوں۔ وہ علی حد احرام تھا۔

کی بن آدم برائی فرماتے تھے کہ کوفہ فقہ سے ممک رہا تھا اس میں فقما کی کیر تعداد موجود تھی ' ابن شرمہ ' ابن ابی لیلی' حن بن صالح' امام شریک جیسے ہزاروں اہل علم موجود تھے گران تمام کے اقوال امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے اقوال کے سامنے بے وقعت وکھائی دیتے تھے۔ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کا علم کوفہ سے فکل کر عالم اسلام کے تمام دو سرے شہول میں پھیلتا گیا اور آپ کے بی اقوال پر مستقبل کے آئمہ اور قاضی شری فیلے صادر کیا کرتے تھے اور امور دینیہ طے ساتے تھے۔

THE STATE OF THE S

#### حماوين طلحه رمايطيه

حماد بن طلحہ ملینی فرماتے ہیں کہ جس مجلس میں امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ تشریف فرما ہوتے اس میں کی دوسرے کے کلام پر اعماد نہ ہو آ تھا۔ جب تک وہ اس مجلس میں تشریف فرما رہتے کی دوسرے کی بات پر کوئی شخص دھیان نہ دیتا۔

## عبيدبن اسحاق رمايطته

عبید بن اسحاق رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سیدالفقہا ہیں۔ آپ کے حاسد آپ کے فقائص بیان کرتے رہتے اور الزامات تراشتے رہتے گرلوگ جو پکھ پاتے آپ کے علم سے ہی پاتے۔

#### امام ابوبوسف رايفيته

الاصمعی فرماتے ہیں کہ ہم سب اپنی آپنی آرزوں اور تمناؤں ہیں گھرے ہوئے ہیں کیا آپ کی کوئی بھی تمناہے؟ امام ابوبوسف روالیے نے فرمایا کاش جھے ابن ابی لیلی اور مسعر بن کدام کا سا نہد اور امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ جیسا فقہی علم مل جاتا۔ یہ بات امیرالمومنین کو ہتائی گئی تو آپ نے فرمایا واقعی امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی فقمی بھیرت خلافت عباسیہ سے بڑھ کر ہے۔ اصمعی روائے ہیں کہ جب امام ابوبوسف روائی مند قضاۃ پر تشریف فرما ہوئے یہ بہت بڑے جاہ و جلال کا منصب تھا' میں نے مبار کہاد چیش کی اور عرض کی کیا اب بھی کوئی ایس تمنا ہے جو اس منصب جلیلہ کے بعد آپ کے دل میں موجوّد ہو؟ آپ نے فرمایا ہاں کاش جھے امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی فقہ کا بے مصلی اللہ تعالی عنہ کی فقہ کا بے مصلی ہوئی۔ امام ابوبوسف روائی کے بال حضرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی فقہ کا بے مصلی مقام تھا کہ آپ فرمای ہی اس دفت مقام تھا کہ آپ فرمای ہیں اس دفت مقام تھا کہ آپ مجلی ہی دیادہ قبی درکھی فرماتے ہیں میں نے پوچھا کہ آپ ای دی بی وان کی جائیداد کی قیت دو لاکھ سے بھی زیادہ تھی۔ اصمعی فرماتے ہیں میں نے پوچھا کہ آپ اتی ہیں ہو ان کی جائیداد کی قیت دو لاکھ سے بھی زیادہ تھی۔ اصمعی فرماتے ہیں میں نے پوچھا کہ آپ اتی ہیں ہو بیت کیوں کرتے ہیں' لمام ابوبوسف روائیے فرمانے گئی اب میرے سامنے ہزاروں مسائل آتے ہیں ہو بیت کیوں کرتے ہیں' لمام ابوبوسف روائیے فرمانے گئی اب میرے سامنے ہزاروں مسائل آتے ہیں ہو

منے حسرت آتی ہے کاش میں ان مسائل کا جواب امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے دریافت کرے۔ سکا۔

عصام ابن یوسف دیلیے فرماتے ہیں کہ جس نے ایک دن امام ابویوسف دیلیے کو کما آج آپ کی یہ شان ہے کہ سینکڑوں لوگ آپ کے سامنے آتے ہیں گرایک شخص بھی آپ کے علم و فضل کا عالمہ نہیں کر سکتا۔ فرمانے گئے میری ساری "معرفت فی الفقہ" امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی صرفت " فی الفقہ " کے مقابلہ میں آیک چھوٹی صرفت " فی الفقہ " کے مقابلہ میں آیک چھوٹی کے شرموں کے مقابلہ میں آیک چھوٹی سے شرموں اللہ تعالی عنہ کے عیال ہیں۔ امام سے شرموں امام ابولوسف دیلیے نے فرمایا ہم تو امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے عیال ہیں۔ امام ابولوسف فرمایا کرتے تھے امام ابولوسف رضی اللہ تعالی عنہ نے ہمارے لیئے دین اور دنیا کے راہتے کھول سے ہیں " آپ کی وجہ سے ہماری دنیا بھی سنور گئی اور آخرت بھی بن گئ اللہ تعالی امام ابولوسف فرمایا عنہ کو جنت میں اعلیٰ جگہ عطا فرمائے۔ ان کی وجہ سے ججھے دنیا کے علم سے بہاہ صے ملا۔

معلی بن منصور مرافیہ فرمایا کرتے تھے کہ میں نے امام ابوبوسف مرافیہ سے سنا تھا کہ جب میرا کوئی فیصلہ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے قول سے متفق ہو آئے تو جھے بول محسوس ہو آئے کہ میرے سینے سے نور کی کرئیں نکل رہی ہیں اور مہیں مجھے اختلاف کا موقعہ ملا تو میرے ول نے بول محسوس کیا جیسے میرے ول پر شک و شبہ کا بہاڑ گر پڑا ہے۔

خالد بن صبیح فرماتے ہیں کہ میں نے امام ابوبوسف رطیعے کو فرماتے ساکہ احادیث کی وضاحت اور تفییرے میں میں نے امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے بردھ کر کسی کو نہیں پایا۔ ہمیں اگر کسی سلہ میں تردد ہوتا یا اختلاف ہوتا تو ہم آپ کے پاس حاضر ہوتے تو مسلہ سنتے ہی آپ اس کا جواب ماری جھیلی پر رکھ دیے ، بینی آپ فورا اس کا صبح صبح جواب عطا فرما دیے۔

#### خلف بن ابوب رمايليد

خلف بن ایوب رالیجہ فرماتے ہیں کہ امام ابویوسف رالیجہ نادر زمانہ تھے' آپ نا بغہ روز گار تھے' آپُ پر ہر کسی دو سرے کو قیاس نہیں کیا جا سکتا۔

ابن زماد حسن اللال رمايليه

ابن زیادہ حسن اللال روالیے فرماتے ہیں۔ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ علم فقہ کا آیک ایس سمندر تھے جس کا کوئی کنارہ نہیں تھا اور جس کی گمرائی نہیں تھی۔ ہم نے ان سے علم سکھا تو تھ محسوس کرتے ہیں کہ یہ کتنا بڑا انعام تھا۔

# ايوب سختياني رايطته

حماد بن زید روالیحیه فرماتے ہیں کہ مجھے ایوب سختیانی رحمتہ اللہ علیہ نے فرمایا جب تم عالم عراق یعنی امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنه کی مجلس میں جاؤ تو میرا سلام عرض کرنا 'مجھے معلوم ہوا ہے کہ ال دنوں کوفہ میں ایک ایسا فقیہ ہے جس کی مثال ساری دنیا میں نہیں ملتی۔ جب آپ حج کرنے جائیں ہیں میرا سلام ضرور عرض کرنا۔

"مناقب الصميرى" ميں لكھا ہے كہ حماد بن زيد روا ليج فرمايا كرتے تھے ميں امام ابو حذيف رضى الله تعالى عنہ سے محبت كرتا ہوں كونكہ انہيں ابوب ختيانى سے محبت ہے۔ ياد رہے كہ ابوب ختيانى بھرہ ميں زہد اور فقہ كے امام تھے اور حسن بھرى رحمتہ الله عليہ كے بعد انهى كا مقام تھا۔ وہ نمايت بله پاليہ فضيح و بليغ امام تھے۔ آپ اكثر امام ابو حذيفہ رضى الله تعالى عنه كى روايات كو بيان فرمايا كرتے تھے اور فرمايا كرتے ابوحنيفہ رضى الله تعالى عنه كى احادیث عجیب نہيں مجھے ابوب ختيانى سے حضور المجھے كے روضہ اقدس كے بہلو ميں محبد نہوى ميں بيٹھے ہوئے ملنے كا اتفاق ہوا ميں امام كے عمل و عبادت كو جب ياد كرتا ہوں تو ميرے رونكئے كھڑے ہو جاتے ہيں۔ وہ مجھے عجيب سے لگتے ہيں ميں ان سے صرف الله كى رضا كے ليئے محبت كرتا ہوں۔ ميرے اور ان كے درميان برادرانہ رازدارى ہے۔ وہ بھرہ كے فقيہ تھے اور انہيں امام ابوحنيفہ رضى الله تعالى عنہ سے بے حد محبت تھی۔

. محرالتقاء رمينيد

بحرالسقاء رحمته الله عليه فرمات بين كه جب مين امام أبوطيفه رضي الله تعالى عنه ي

تعلو كرتا تها تو وہ مجھے فرمايا كرتے تھے ، كراسقاء تم اسم بامسى ہو ' ميں عرض كرتا حضور ميں تو ، كر (دريا) موں ' مگر آپ تو علم كے وہ سمندر بيں جس كاكوئى كنارہ نه ہو۔ ، كراسقاء ( ، كر بن كثير السقاء بصرى وحته الله عليه ) بصرہ كے ائمه اور فضلاء سے تھے۔

#### معيد بن الي عروبه رها في

قاضی ابوبوسف رحمتہ اللہ علیہ فرمایا کرتے تھے میں سعید بن ابی عروبہ دافیہ کے پاس حاضر ہوا اساء ابو جنیفہ رضی اللہ اللہ عنہ کی مجال کے فیض یافتہ ہیں مجھے ان کی کوئی بات تو ساؤ۔ میں نے آپ کی مجلس کے کئی عنہ کی مجالس کے فیض یافتہ ہیں مجھے ان کی کوئی بات تو ساؤ۔ میں نے آپ کی مجلس کے کئی سائل شائے تو فرمانے گئے سجان اللہ ہیہ کتنا مرغوب کلام ہے۔ سعید بن ابی عروبہ امام ابوحنیفہ رضی اللہ عنہ ایک بار ملے تھے اور چند روز ساتھ گزارے۔ فرمانے گئے ابوحنیفہ ہم جن مسائل کو محرے ہوئے پاتے ہیں اور مختلف مقامات سے حاصل کرتے ہیں آپ کے ہاں سے بامل جاتے ہیں۔ یہ عدید بن ابی عروبہ بھرو کے علی الاطلاق امام اور فقیہ تھے۔ زہد و تقویٰ میں ان کی مثال نہیں تھی۔ اہل عدید بن ابی عروبہ بھرو کے علی الاطلاق امام اور فقیہ تھے۔ زہد و تقویٰ میں ان کی مثال نہیں تھی۔ اہل عدمت میں تحالف مدید ہوئے کرتے تھے اور سعید بن زیاد یہ تحالف سائے رکھ کر اپنے احباب کو دکھاتے اور فخر سے تھے کہ انہیں ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو فے سے آپ کی خدمت میں تحالف سائے رکھ کر اپنے احباب کو دکھاتے اور فخر سے تھے کہ انہیں ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے تحالف سائے رکھ کر اپنے احباب کو دکھاتے اور فخر سے تھے کہ انہیں ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے تحالف سائے رکھ کر اپنے احباب کو دکھاتے اور فخر سے تھے کہ انہیں ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے تحالف سائے کی کر اپنے احباب کو دکھاتے اور فخر سے تھے کہ انہیں ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے تحالف بھیج ہیں۔

#### وسف بن خالد رماطية

یوسف بن خالد روالیے فرمایا کرتے تھے کہ میں بھرہ میں عثان البنی کے پاس جایا کر آتھا۔ آپ

ے بے شار دینی مسائل حاصل کیے 'میں نے دل میں سوچا اب میں بہت بڑا فقیہ ہو گیا ہوں 'اب

ھے کی مسئلہ کی مزید ضرورت نہیں رہی۔ ان دنوں امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ کی کوفہ میں بڑی

سرت سنی۔ میں کوفہ گیا تو مجھے امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ کے شاگردوں کے ایک حلقہ میں بیٹھنے

موقعہ ملا 'میں نے محسوس کیا میں تو ابھی ان کے سامنے طفل کمت ہوں 'میں نے اب تک جو کچھ

ناقب امام اعظم مم مم

غرور كاجو پرده تهاوه كوفه ميں اتر كر پھٹ گيا اور ميں اپنے آپ كو ہيج سجھنے لگا۔

#### هلال الرائي رميطية

هلال الرائی ملائیہ فرمایا کرتے تھے کہ میں نے ابویوسف بن خالد ملائیہ سے سنا کہ امام ابو سینہ رضی الله تعالیٰ عنه علم کے بحر زخار تھے جس کا کوئی کنارہ نہ ہو' وہ ایسے عجیب انسان ہیں کہ ان جسے کوئی نہ دیکھانہ سنا۔

مكتبهنبويه

# يحيى بن سعيد القطان رواطيد

یجیٰ بن سعید قطان را طیحه فرماتے ہیں کہ میں عمر بھر فقیبی مسائل میں تمام لوگوں پر چھایا رہا گھ جب امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو دیکھا تو یوں محسوس ہوا کہ میں ان کے سامنے کچھ بھی شمیر۔ حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو وہ مقام حاصل ہوا کہ کوئی دو سرا فقیہ ان تک نہیں پہنچ سک

## ابوعاصم رافي

عثمان بن عفان سجزی رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ میں نے ابوعاصم رالیجہ جو اپ وقت کے بہت بڑے عالم تھے سے سنا کہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ اپنے علم میں صدیق تھے۔ ان سے ہرایک نے استفادہ کیا اور ان کا فیض سارے عالم اسلام میں پہنچا۔

# عبدالرحل بن مهدى ملطيد

امام صدقہ روائیے فرماتے ہیں کہ میں نے عبدالرحمٰن بن مبدی روائیے سے سنا وہ فرمایا کرتے ہے کہ میں احادیث کا خالف کہ میں نے سفیان بن عیب کو امیر العلماء پایا اور شعبہ کو احادیث کا کہ میں احادیث کا خالف بایا۔ حضرت عبداللہ بن مبارک روائیے کو صراف الحدیث بایا اور یکی بن سعید روائیے کو قاضی العلماء بلا۔ حضرت عبداللہ بن مبارک روائی کو قضاۃ العلماء بلا۔ یعنی وہ تمام محدثین اور فقها کے بھی الم گر امام ابو حذیفہ رضی اللہ تحالی عنہ کو قضاۃ العلماء بلا۔ یعنی وہ تمام محدثین اور فقها کے بھی الم رویف جسٹس) تھے۔ اگر کوئی شخص تمہیں امام ابو حذیفہ رضی اللہ تحالی عنہ کے خلاف بات کرتا ہے۔

ے تو اس کی فضول باتوں کو کوڑے کرکٹ کے ڈھیر میں پھینک دو۔ یہ عبدالرحمٰن بن مهدی ملیجہ بھرہ کے علاء کا انخراور حافظ الحدیث تھے اور بڑے پاید کے فقید تھے اور امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عند کے ہمعصر تھے۔

#### روح بن عباده رمايفيد

روح بن عبادہ رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ میں امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے پچھ زیادہ استفادہ نہ کر سکا اور نہ ان سے زیادہ احادیث من سکا لیکن میں نے جتنا دو سرے علماء اور ائمہ سے نیادہ اس سے زیادہ امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے حاصل کیا تھا۔ ججھے فلال فلال امور میں محبت تھی۔ چند امور کا ذکر بھی فرمایا اور ساتھ یہ بھی فرمایا بہت سے امور مجھ میں نہ رہے تھے۔ وگوں نے بوچھا کہ آپ امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے کیوں زیادہ استفادہ نہیں کر سکے تو آپ نے بتایا کہ میں شعبہ کی مجلس میں زیادہ جایا کرتا تھا' بھر ابن صرح کی مجالس میں جانے لگا' پھر ججھے طال آبا کہ میں شعبہ کی مجلس میں زیادہ جایا کرتا تھا' بھر ابن صرح کی مجالس میں جانے لگا' پھر ججھے طال آبا کہ اب ججھے کوفہ جانا چاہیے مگر میں ابن صرح کے پاس میٹھا ہوا تھا کہ ججھے امام ابوطنیفہ رضی طلہ تعالیٰ عنہ کی وفات کی افسوسناک خبر ملی۔

### الوعمروبن العلاء ملتفيه

ابو عمرو بن العلاء مطفیہ فرماتے ہیں کہ میرے والد مجھے ہمیشہ تلقین فرماتے کہ میں امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنه کی اللہ تعالی عنه کی اللہ تعالی عنه کی اللہ تعالی عنه کی عباس میں بیشا کرتے تھے۔ جو کچھ آج مارے پاس ہو وہ امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنه کی مجالس میں بیشا کرتے تھے۔ جو کچھ آج مارے پاس ہو امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنه کی مجالس سے حاصل ہوا تھا۔

#### جرير بن حازم مايفيد

وهب بن جرر بن حازم رحمته الله عليه فرمات بين كه ميرك والدامام ابو حفيفه رضى الله

# عبدالله بن معاذ راينيه

عبداالله بن معاذ رحمتہ الله عليه فرماتے ہيں كہ مجھے ميرے باپ نے فرمايا كہ بيں ہے كا ارادہ كيا تو پہلے شعبہ كى فدمت ميں حاضر ہوا اور عرض كى آپ مجھے كوفہ كے دوست علما طرف خط لكھ ديں تاكہ ميں ان كى مجالس ميں بيٹھ سكوں۔ آپ نے فرمايا ميں تجھے ايے مرد موال طرف خط لكھ كر دول گا جو دافعى مرد موالى ہيں انہوں نے امام ابوطنيفہ رضى الله تحالى عنه كے ہما لكھ كر ديا۔ كوفہ پنجا تو حضرت كى خدمت ميں حاضر ہوكر شعبه كا خط ديا تو آپ نے شعبہ كى مطلمت پر برى عمدہ گفتا فرمائى۔ دوسرى طرف لوگوں نے جب شعبہ سے امام ابوطنيفه رضى الله تعالى عنه كے متعلق پوچھا تو انہوں نے بھى آپ كى بهت تعريف كى۔ شعبہ مرسال آپ كے ليے تحاف عنه كے متعلق بوچھا تو انہوں نے بھى آپ كى بهت تعريف كى۔ شعبہ مرسال آپ كے ليے تحاف سے ايا ہى سلوك فرماتے۔

#### ابو سفیان حمیری رایطیه

ابوسفیان الحمیری رافیہ فرماتے ہیں کہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ اس است کے بہترین انسان ہیں جس طرح کشف المسائل کے اسباب امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کھول کر بھی فرماتے ہیں آج تک کی دو سرے کو یہ کمال حاصل نہیں ہوا۔ ایسے ہی مشکل مسائل کے حل کرے کے لیئے احادیث کی روشنی ہیں بیان فرمایا کرتے تھے۔ ابوسفیان حمیری رافیجہ کا نام سعید بن مجیلی حمید کے لیئے احادیث کی روشنی ہیں بیان فرمایا کرتے تھے۔ ابوسفیان حمیری رافیجہ کا نام سعید بن مجیلی احادیث ہے۔ آپ "واسط" کے ائمہ میں سے تھے۔ حفاظ الحدیث میں شار ہوتے تھے۔ آپ نے کئی احادیث کی روایت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے کی ہیں۔

# على بن عاصم رمايطيه

معروف بن عبدالله رایلید فرماتے ہیں کہ میں ایک دن علی بن عاصم رایلید کی مجلس میں سے تھا۔ آپ نے لوگوں کو زور دے کر کہا علم کو لازم پکڑو۔ فقہ کو لازم پکڑو اوگوں نے عرض کی ہم سے علم فقہ نو حاصل کر رہے ہیں آپ نے فرمایا میرا مطلب ہے کہ امام ابو حذیفہ رضی اللہ تعلق سے

ے علم عاصل کرو۔ ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے فقہ عاصل کرو۔ علی بن عاصم مالیتے۔ آپ شرا " واسط اور فقہ کے علاوہ دو سرے علوم بھی امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے حاصل کیئے۔ آپ شرا " واسط " کے اٹمہ کرام میں سے تھے۔ حفاظ حدیث میں سے تھے " آپ اکثر احادیث امام ابو حنیفہ کی روایت سے بیان فرایا کرتے تھے " آپ نے حدیث اور فقہ کا کافی حصہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے عاصل کیا تھا اور آپ کے مقترر تلافہ میں شار نہوتے تھے " جب لوگ چاہتے کہ ان سے گرب مائل عاصل کریں تو آپ کے سامنے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کا ذکر چھیڑ دیتے تھے ' چر آپ ایک جرزفاز سے موتی برآمد کرنے والے غواص کی طرح ممائل کے موتی بھیرتے جاتے۔ امام عاصم ایک جرزفاز سے موتی برآمد کرنے والے غواص کی طرح ممائل کے موتی بھیرتے جاتے۔ امام عاصم آپ کا علم بھاری رہے گا۔ محمد بن المہا جر رہائی فرماتے ہیں کہ امام ابو حنیفہ کی باتیں علم کی تغیر ہیں گر و خص آپ کی گفتی میں وہ جرام کاری پر راغب ہو جائیں گے۔ وہ حلال کو حرام اور حرام کو حلال بنانے کی تدبیر حیجتے رہیں گا ور سلامتی کے راست سے بھیکے رہیں گے۔

## يزيدبن محمد سعداني ماينيه

یزید بن محمہ سعدانی روائیے فرماتے ہیں کہ ہیں نے یزید بن ہارون روائیے سے سنا کہ ان کے ہال کی بن معین علی بن المدین واحد بن حنبل اور زهر بن حرب کے علاوہ کئی اہل علم بیٹھے ہوئے تھے اس مجلس میں ایک شخص نے فتوی پوچھا تو یزید نے فرمایا اس کا حل بیہ سارے اہل علم کر رہے ہیں گریہ مطمئن نہیں کر سکیں گے۔ ابن المدین نے کہا یہ اہل علم نہیں بلکہ اہل حدیث حضرات ہیں اور یہ سب آپ کے پاس ہیں 'یہ سب امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ کے شاگر دہیں اور تلافہ ہیں 'یہ وگ علم حدیث ہو واقف ہیں۔ یزید مرد میدان تھے 'وگ علم حدیث ہو واقف ہیں۔ یزید مرد میدان تھے 'وگ علم حدیث اور تقیر میں ماہر تھے علمی فضائل میں بینظیر تھے 'بڑھا ہے میں حضرت امام ابو حذیق رضی اللہ تعالی عنہ کے آخرام سے بیش آیا ۔ منتقادہ کیا تھا اور انہیں بڑے احرام سے بیش آیا ۔ منتقادہ کیا تھا اور انہیں بڑے احرام سے بیش آیا ۔ بیت تھی ہو ہے ۔

F | 1 | EMELACATOR

## يزيدين ابراجيم ماطيه

بزید بن ابراہیم ملافیہ سے بوچھا گیا کہ ایک مفتی کب اس قابل ہو تا ہے کہ وہ دینی ساکر فتویٰ دے ' فرمایا جب وہ امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ جیسا صاحب علم و بھیرت ہو جائے۔ رہے کہا یہ تو ناممکن ہے کہ امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ جیسا بنا جائے۔ آپ نے فرمایا پھر اس کتابوں کو حفظ کرے' ان پر حمری نظر رکھے اور ہر مسئلہ میں ان سے راہنمائی حاصل کرے۔ محفی فقیہ کملانے کا مستحق ہے۔ محمر بن احمد الجنبيد کی ایک روایت میں بوں ورج ہے کہ مستحق ہے۔ محمر بن احمد الجنبيد کی ایک روایت میں بوں ورج ہے کہ مستحق میں فقہ میں امام ابوطنیفہ رضی میں فقہ میں امام ابوطنیفہ رضی میں فقہ میں امام ابوطنیفہ رضی میں فقیہ ہونا ضروری ہے۔

## احمد بن على رايطيه

احمد بن علی بن موی رحمته الله علیه فرماتے ہیں که جب امام ابو صنیفه رضی الله تعالی سے گفتگو فرماتے تو اہل علم کی گرونیں جھک جایا کرتی تھیں۔ عبدالرحیم بن حبیب روایئیہ فرماتے ہیں کہ سے ابو حنیفه رضی الله تعالیٰ عنه " اعلم الناس " تھے۔ حفص بن علی روایئیہ نے فرمایا دنیائے علم و فضل ہے۔ امام ابو حنیفه رضی الله تعالیٰ عنه جیسا سرتاج نہیں دیکھا گیا۔

#### يزيدبن ہارون رمایٹیہ

لبیر بن لبید فراتے ہیں کہ ہم ایک دن برید بن ہارون واٹی کی مجلس میں بیٹے ہوئے تھے مغیرہ نے ایک روایت کی سند بیان کی عن ابر اھیم انہ قال کذا ایک دو سرے مختص نے اٹھ کے و دعنا عن ھذا اسے چھوڑتے برید بن ہارون واٹی نے کہا اے احمق! یمی رسول اللہ صلی علیہ و آلہ وسلم کی حدیث کی تغییر ہے۔ صرف حدیث کے الفاظ سنا دینے سے کیا عاصل ہو گا سے تک اس کی تغییر اور تشریح سامنے نہ آئے صرف الفاظ کا سننا اور پڑھنا کافی شیس ہو آ۔ مسلم احادیث کے مطالب جانے میں ولچی لینی چاہئے۔ آگر ایسا نہ ہو تو تم امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی سے کیا کو تھے کیا کو تاکہ حمیس احادیث کا صبح مطلب آجائے۔ آپ نے اس مختص کو تھے

توبیج کرے اپنی مجلس سے اٹھا دیا۔

#### ابو اميه رمايني

علی بن عبداللہ عبدالکریم دولیے فرماتے ہیں کہ میں نے ابو امیہ سے بوچھا ان دنوں عراق کے شرکوفہ میں سب سے برا فقیہ اور عالم کون ہے ؟ آپ نے فرمایا امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ ۔ ایک دن لوگوں نے ابوامیہ سے فتویٰ بوچھا تو آپ نے فتویٰ دیتے ہوئے ایک غلطی کی اس مجلس میں ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے شاگرد ابو حمزہ بیٹھے ہوئے تھے انہوں نے ابوامیہ کو اس فروگزاشت سے آگاہ کیا۔ آپ نے ان سے بوچھا تم کون ہو؟ انہوں نے بتایا میں فام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا شاگرد ہوں اور میں نے ان کی زبانی اس مسئلہ کو یوں سنا تھا۔ ابوامیہ فرمانے کے پھر تمہاری رائے درست ہے اور اپنا فتویٰ واپس لے کر امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے قول پر فتویٰ دیا۔

#### عفان بن سيار رمايطيه

اسحاق بن ابراہیم روایئے فرماتے ہیں کہ میں نے عفان بن سیار روائیے سا تھا کہ امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ دنیائے فقہ میں ایسے حکیم حاذق ہیں جو ہر بیاری کا درست علاج کرتے ہیں۔ شابہ بن سوار روائیے فرماتے ہیں کہ میں فارجہ بن مصعب روائیے سے سا تھا کہ میں اپنی زندگی میں ہزاروں علماء اور فقہاء سے ملا ہوں گر جھے ان تمام میں صرف تین چار حضرات صاحب علم و بصیرت ملے ان سب میں بند پایہ امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ ہیں۔ آپ کے سامنے تمام فقیمان علم طفل محتب و کھائی دیتے ہیں۔ ان کا علم، فقیمی بصیرت زہد و تقوی سب بر حاوی تھا۔ آپ کے سامنے یہ تمام حضرات ہیج دیتے ہیں۔ ان کا علم، فقیمی بصیرت زہد و تقوی سب بر حاوی تھا۔ آپ کے سامنے یہ تمام حضرات ہیج

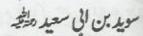
ابراہیم بن رستم مالیجہ فرماتے ہیں کہ میں علم کی تلاش میں ہزاروں علما کی مجالس میں پنچا لیکن مجھے امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ جیسا ایک بھی نہ ملا۔ ان کی علمی مسائل پر گمری نظر تھی' ان کی عقل بلند روشتی کا مینار تھی' وہ امام کائل تھے۔ خارجہ بن مصعب سرخس کے اتمہ کرام میں سے تھے اور فتویٰ میں اہل سرخس کے معتند اور متند تھے گر آپ بھی علم حدیث میں حضرت امام ابوحنیفہ

رضی اللہ تعالی عنہ سے ہی روایت لیا کرتے تھے۔ سارے خراسان میں انہی کی کوشٹوں سے فقہ للم ابوحنیفہ کو فروغ حاصل ہوا تھا۔ وہ فرمایا کرتے تھے کہ میں نے اپنی تعلیم پر ایک لاکھ روپیہ صرف کیا تھا اور ایک لاکھ روپ علم سکھانے والے اساتذہ کو ہدیہ کیا۔ میرے والد بھی بہت بڑے عالم اور دولت مند تھے جنہوں نے حضرت علی رضی اللہ تعالی عنہ کے لئکر میں معاونت کرتے ہوئے شمادت پائی متم سے تھی۔ انہوں نے حضرت علی محضرت فلی عضرت زبیر اور اصحاب بدر رضی اللہ تعالی عنم سے احادیث سنی مگرجی انداز سے جھے ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنم سے احادیث سنی مگرجی انداز سے جھے ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ عنہ نے احادیث سنی حضرت ول و دماغ روشن ہو گئے۔

## ابراہیم بن رستم رمیطید

ابراہیم بن رستم ریٹی فرایا کرتے تھے جے اپنی زندگی میں امام ابو حذیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کا محلم حاصل نہیں ہوا میرے نزویک وہ جاتل ہے۔ اس طرح ابو حزہ السکری ریٹیے فرماتے ہیں کہ مجھے لام ابو حذیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی تحریر بڑھ کر اتنی مسرت ہوئی کہ اگر مجھے ایک لاکھ ویٹار مل جا آ تو مجھے اتنی خوشی نہ ہوتی نہیں اس کا تو کوئی مول ہی نہیں اتنی خوشی نہ ہوتی نہیں اس کا تو کوئی مول ہی نہیں ہے۔ ابو حزہ السکری " مرو " کے ائمہ کرام میں سے ہیں آپ نے ان مشاکخ سے روایات سی تھیں جنہوں نے بذات خود حضرت امام ابو حذیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی مجالس میں حاضر ہو کر احادیث می تھیں۔ بایں ہمہ آپ خود ایک عرصہ تک امام ابو حذیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی مجالس میں حاضر ہو کر آخر ہو کر آخر ہو کہ سے براہ راست احادیث سنتے رہے ہیں۔ آپ اکثر روایات امام ابو حذیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے حوالے سے براہ راست احادیث سنتے رہے ہیں۔ آپ اکثر روایات امام ابو حذیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے حوالے سے بی بیان فرمایا کرتے تھے۔

عبدالله بن المبارك رحمته الله عليه سے لوگوں نے بوچھا ان دنوں ذئدہ علماء میں سے كس فقيه كى بيروى كى جائے ؟ آپ نے فرمايا ابو حزہ السكرى ديائيد كى ابو حزہ دائي فرمايا كرتے تھے كہ جميں "دبيج فاسد" اور " نماز فاسد " كے متعلق بيجے معلوم نہيں تھا ، يہ لمام ابو صنيفه رضى الله تعالى عنه كا احسان ہے كہ انہوں نے احادیث رسول ماله بيلم كى روشنى ميں ان مسائل كو حل فرمايا اور جميں سمجھايا۔



بشربن الوليد والحية فرماتے بين كه سويد بن ابي سعيد والحية فرماتے تھے كه أكر الله تعالى كى طرف سے امام ابوطنيفه رضى الله تعالى عنه كو امر محكم نه بوتا تو انہيں يه توفق عاصل نه بوتى جس سے سارا عالم اسلام سيراب بوا۔ "رواية البلخى" بين لكھا ہے كه جم نے اپنے اور الله كے ورميان اپنے نفس پر گرانى كرنے والا امام ابوطنيفه رضى الله تعالى عنه كو ديكھا ہے۔

FFL

### فضل بن موى مايييه

احمد بن يحيٰ الباهلی رواليد فرماتے ہيں كہ ميں نے الفضل بن مویٰ سينانی رواليد سے ساكہ ہم اوگ مشائخ ججاز اور عراق كے پاس آتے جاتے سے اور ان كی مجالس سے استفادہ كرتے سے گرہم نے سب سے زيادہ علمی اور بركت والی مجلس لهام ابو حنيفہ رضی اللہ تعالیٰ عنه كی پائی تتی۔ سينان مرو كی حدود ميں ہے۔ امام فضل بن مویٰ رواليد حضرت امام ابو حنيفہ رضی اللہ تعالیٰ عنه كے زمانہ ميں احاديث كے حافظ اور عالم سے انہوں نے احاديث كا زيادہ ذخرہ امام ابو حنيفہ رضی اللہ تعالیٰ عنه كی خدمت ميں حاصل كيا تھا، آپ دو سرے علماء اور مشائخ كے ساتھ امام ابو حنيفہ رضی اللہ تعالیٰ عنه كی خدمت ميں حاضر ہوتے سے اور كئی كئی روز قیام كرتے۔ آپ كو اس بات پر بڑا ناز تھا كہ وہ امام ابو حنيفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ كی خدمت ميں حاضر ہونے كی حدمت ميں حاضر ہونے كی حدمت ميں حاضر ہونے كی حدمت ميں حاضر ہونے كی ترخیب ويا كرتے ہے۔ الفضل بن موئی كی الجديث ميں بڑی شہرت ہے۔ اس طبقہ ميں ایک مستند ترخیب ويا كرتے ہے۔ الفضل بن موئی كی الجديث ميں بڑی شہرت ہے۔ اس طبقہ ميں ایک مستند ور معتمد عالم دين مانے جاتے ہے۔

## عبدالله بن السبارك رايفيه

حضرت عبدالله بن مبارک رحمته الله علیه فرماتے ہیں کہ میں برے علاقوں اور شہوں میں گیا مجھے حلال و حرام کے اصول معلوم کرنے میں بڑی دشواری ہوئی اگر جب سے مجھے امام ابو حلیفه رضی الله تعالی عنه کی مجلس نصیب ہوئی تو میرے لیئے یہ مسئلہ حل ہو گیا۔ آپ فرمایا کرتے تھے کہ اگر امام ابو حلیفہ رضی الله تعالی عنه تابعین کے ابتدائی دور میں ہوتے جب صحابہ کبارکی کثرت تھی۔

العب المام اعظم محملة المام اعظم

تو کئی تابعین بھی آپ کے علوم سے بہرہ ور ہوتے۔ آپ نے ایک مقام پر فرمایا کہ حضرت امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالیٰ عند کا قیاس دراصل احادیث کی تفییرہ تشریح تھا۔ اگر آپ جید صحابہ کے زمانہ بھی ہوتے تو ان کی مثل کوئی دو سرا چرہ یا فقیہ بہیں دیکھا جس کی احادیث منقول ہو تیں لیکن اس کے باوجود میں نے ان کی مثل کوئی دو سرا چرہ یا فقیہ نہیں دیکھا جس طرح وہ احادیث بیان فرمایا کرتے تھے۔ اگر مجھے مبالغہ گو نہ کما جائے تو میں کمہ سکتا ہوں کہ حضرت امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے براج کرکوئی دو سرا فقیہ نہیں تھا۔

#### ابن زمعه رماطيته

ابن زمعہ رحمتہ اللہ علیہ حفرت عبداللہ بن المبارک ملائیہ سے روایت کرتے ہیں کہ الم الوحنیفہ رضی اللہ تحالی عنہ احادیث تبوی پر نمایت گری نظر رکھتے تھے۔ وہ ایک ایک جزو پر غور و غوض رکھتے تھے۔ ای طرح ابواسحاق طالقائی نے ابن المبارک ملائیہ کے حوالے سے فرمایا کرتے تھے کہ آج دنیائے اسلام کے تمام علائے کرام کو امام ابوحنیفہ رضی اللہ تحالی عنہ کی ضرورت ہے اوار انہیں احادیث کی تقییر و تشریح میں آپ کی راہنمائی فمایت ہی اہم ہے۔ حضرت ابن المبارک ملائیہ فرملا کرتے تھے اگر میں کوفہ کے بیوقوف اور حاسد علاء کی باتوں پر عمل کرتا تو میں حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے علمی فیضان سے محروم رہ جاتا اور میری محنت اور علم پر بے پناہ خرج بیکار ما جاتا۔ اگر میں آپ سے نہ ملتا اور آپ سے علم حاصل نہ کرتا تو میں علمی دنیا میں کوگل رہ جاتا۔ ایک مقام پر فرمایا میں صرف ایک فقال ہوتا۔

ایک دن عبداللہ بن المبارک رحمتہ اللہ علیہ کی مجلس میں بعض صاسد علماء نے آپ کے متعلق ست گفتگو کی تو آپ نے ابوصنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ جیسا کوئی دو سرا تو دکھاؤ اگر تمہارے پاس اس کا ثانی کوئی نہیں تو محض حسد کی وجہ سے مجھے ایڈا نہ دو۔ میں نے وقت کے اکابر الل علم کو امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی محفل میں طفل کمتب کی طرح بیٹھے دیکھا ہے۔ وہ ایول دکھائی دیتے تھے جیسے علم سے خالی جنہ کی محمل میں طفل کمتب کی طرح بیٹھے دیکھا ہے۔ وہ ایول دکھائی دیتے تھے جیسے علم سے خالی جنہ کی دکھائی دیتے تھے جیسے علم سے خالی جنہ کی شرک سانے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی شکایت کرتا ہے تو مجھے اس کی وانائی پر رحم آتا ہے اور مجھے ور لگتا ہے کہ یہ مختص اللہ کے ہاں سرا پائے گا۔ آپ فرمایا کرتے جے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے دسترخوان علم سے بچھے نہیں ملا وہ بائے گا۔ آپ فرمایا کرتے جے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے دسترخوان علم سے بچھے نہیں ملا وہ

محروم العلم --

ایک دن حضرت عبداللہ بن المبارک رالیے کی محفل میں کسی محفل نے امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے خلاف بات کی تو آپ نے غضیناک ہو کر فرمایا۔ اس سے تمہارا کیا مطلب ہے؟ دوبارہ فرمایا اس سے تمہارا کیا مطلب ہے۔ جے اللہ تعالیٰ بلند فرمائے وہ بلند تر ہوگا، جس پر اللہ کا فضل ہو تا ہا س کا تم کیا بگاڑ کتے ہو۔ آپ نے اس محف کو بتایا کہ آگر تم نے امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی زیارت کی ہوتی یا ان کی مجلس میں بیٹھے ہوتے تو کہ اٹھے کہ وہ امت رسول داڑھ کے لیے اللہ کی رحمت ہیں۔ پھر آپ نے اہل مجلس کو مخاطب کر کے فرمایا۔ اے لوگو! آگر تم امام ابو صنیفہ رضی اللہ کا تعالیٰ عنہ کو دیکھ لیے تو تم خوش نصیب ہوتے، جو آپ کی مجلس سے محروم رہا وہ علم و فضل سے محروم رہا اور علمی اعتبار سے ناقص ہے۔

حضرت عبداللہ بن البارک رحمتہ اللہ علیہ فرمایا کرتے تھے کہ جو شخص امام ابوصنیفہ رصی اللہ تعالیٰ عنہ کی فدمت کرتا ہے اللہ تعالیٰ اس کا منہ سیاہ کروے گا۔ بشربن یجی ویلیے فرماتے ہیں کہ ایک ون ہم عبداللہ بن البارک ویلیے کی مجلس میں بیٹھے تھے کہ ایک شخص نے ایک سوال اٹھایا' آپ نے طاق سے مسلک پر اس کا جواب ویا اور فرمایا گر امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی رائے طاق س کے خلاف ہے وہ شخص کنے لگا ہم طاق س کے قول کو مانے ہیں اور ابوصنیفہ کے قول کو دیوار پر مارتے علی سے میں۔ آپ نے فرمایا افسوس تم نے امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی زیارت نہیں کی ورنہ یہ بات زبان پر نہ لاتے۔ اگر تم انہیں یا لیتے تو ان کے اقوال کو دیوار پر مارنے کی بجائے اپنے سینے ہیں محفوظ کر لیتے۔ پ

ایک دن علاء کرام نے عبداللہ بن البارک ماینی سے بوچھا کہ آپ کو علاء میں سے کون سب سے اچھا لگتا ہے اور آپ کی آرزو کیا ہے؟ آپ نے فرمایا کہ کاش میں امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ جیسا ہوتا۔ میرا طریقہ سفیان توری مایئی جیسا ہوتا اور انداز بیان ابن عون مایئی جیسا ہوتا۔ عبداللہ بن البارک مایئی فرماتے ہیں کہ اثر (حدیث) کو لازم پکڑو۔ حدیث کی تغییر اور تشریح کے لیے امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی اتباع کو 'حضرت حسن بھری رحمتہ اللہ علیہ فرمایا کرتے تھے کہ وکی ایا کرو جدیث میں مارا دین ہے۔ عبداللہ بن المبارک

مناقب امام اعظم ، ۲۵۰ مکتبه نبویه

مالیہ نے فرمایا حدیث ثقد کو اپنا دین بناؤ حدیث ثقد کی تشریح امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عند کے قیاس سے بی ہو سکتی ہے۔ آگر کوئی ثقد راوی امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عند سے حدیث روایت کرے آلا اسے حق تسلیم کرو۔

ابو عصمہ سعد بن معاذ ویلئے فرماتے ہیں کہ جب محد ثین نے ساکہ لوگ عبراللہ بن المبارک رحمتہ اللہ کو اپنا امام تسلیم کرتے ہیں گریہ لوگ عبراللہ بن المبارک ویلئے کے امام (ابوطیفہ) کو امام تسلیم نہیں کرتے تو انہیں بڑا تعجب ہوا' ایسے لوگ کتے ہیں کہ ہم عبراللہ بن المبارک ویلئے کو ہی اپنا امام تسلیم کریں گے۔ ہمارے نزدیک یہ لوگ شیعوں کی طرح ہیں جو حضرت علی کرم اللہ وجہ کو تو امام تسلیم کرتے ہیں گر حضرت علی کرم اللہ وجہ نے جن حضرات کو اپنا امام مانا تھا انہیں یہ لوگ امام تسلیم کرنے سے انکار کر دیتے ہیں۔ حضرت ابو بکر اور حضرت عمر رضی اللہ تعالی عنما کو حضرت علی کرم اللہ وجہ نے اپنا مقتذا اور خلیفہ رسول مانا تھا۔ گر شیعہ انہیں تسلیم کرنے سے انکار کرتے ہیں۔

حفرت عبداللہ بن المبارک رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ میں ہر ضبح و شام امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی مجلس میں جایا کرتا تھا۔ ایک دن آپ کی مجلس میں حیض کے متعلق گفتگو ہو رہی تھی۔ آپ نے اپنے تلافہ اور شاگردوں کو فرمایا کہ تم لوگ اس مسلم کا حل دریافت کو' تین دن گزر گئے گر کسی شاگرد نے مسلم کا حل چیش نہ کیا گرجب شام ہوئی تو سب نے اللہ اکبر کے نعرے بلند کیئے انہیں اپنے امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مسلم کا حل مل گیا۔

حضرت عبدالله بن المبارك والله كي عادت تقى كه آپ حضرت امام ابوصفيفه رضى الله تعالى عنه كه فضائل اور كمالات كثرت سے بيان فرمايا كرتے تھے اور اننى كے مسائل بيان فرماتے بعض مسائل براہ راست حاصل كيئے تھے بعض ثقة راويوں كى وساطت سے 'يه آپ كا ايك معروف طريق كار تھا ايسے واسطے سے وجب الفرارى 'اسحاق بن ابى المجعد 'ابوسفيان نسائج 'ابوجعفر الرازى 'ابوحمزہ السكرى 'ابوعصمہ اور فضل بن موكی وغیرهم ثقة راوى تھے۔ اى طرح حضرت امام ابوصفيفه رضى الله تعالى عنه ك شاكروں اور تلامدہ ميں سے زفر 'اسد بن عمراور محمد ابن الحن تھے۔

عبداللہ بن المبارک ریافی فرمایا کرتے تھے کہ مجھے ایک مخص نے روایت کی۔ اس نے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت لی۔ بچھ یوں فرماتے ہیں مجھے ایک دو سرے مخص نے روایت ک'اس نے فلال فخص سے روایت کی اور اس نے امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے روایت کی۔

اس طرح آپ امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی روایات کو ہی بیان فرماتے اور اپ کی روایات پر اعتاد فرماتے۔ آپ کو اس بات پر فخر تھا کہ آپ امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی روایات کو بطور سند بیان فرماتے ہیں۔ وہ بلا جھجک فرماتے کہ بیہ مسئلہ امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے اس طرح بیان فرمایا تھا۔ آپ فرمایا کرتے تھے کہ میں اگر امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے نہ ملا اور ان کی عالم رویوں اور محدثین کی طرح ہوتا۔ آپ امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی بیاہ تحریف کرتے اور ان کے علم و کمالات کا برملا اعتراف فرماتے۔ آپ امام ابوطنیفہ رضی اللہ کرتے۔ امام ابوطنیفہ رضی اللہ کرتے۔ امام ابوطنیفہ کرتے امام ابوطنیفہ کرتے۔ امام ابوطنیفہ کرتے امام کو جواب دیتے تھے۔

## سهيل بن مزاحم رايطيه

سیل بن مزاحم ریائی فرماتے ہیں کہ قاضی ابوبوسف ریائی نے بعض مسائل میں حضرت امام ابوضیفہ کی مخالفت کی تھی۔ اس کی وجہ یہ تھی کہ آپ امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے بعض سائل کو سمجھ نہ پاتے تھے اور انہیں ایسے مسائل سمجھنے کا وقت نہ ملا تھا۔ سیل بن مزاحم "مرو" کے ائمنہ میں سے ہیں۔ ایک عرصہ تک امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی مجالس میں رہے' آپ سے علمی مباحثے کیئے اور بہت کچھ حاصل کیا اور علوم فقہ کا وافر حصہ پایا' آپ خراسان کے عابدوں اور البووں میں شار ہوتے ہیں۔

# خليفه مامون الرشيد اور امام ابوحنيفه رياطية كي تحريب

فتح بن عمرو الوراق فرماتے ہیں کہ نضر بن شمیل کے زمانہ میں مجھے اقتدار ملا میں مرو میں تھا حضرت امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے مخالفین نے فیصلہ کیا کہ امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی تحریب اور کتابیں دریا ہیں چھینک دی جائیں 'بت سی کتابیں جمع کی گئیں 'لوگوں سے ماصل کر کے دریا میں ڈبونے کے لیئے جمع کر دی گئین لیکن ان دنوں خالد بن صبیح مرو کے قاضی مناقب امام اعظم ۲۵۲ امکتبه نبویه

تھے۔ آپ بذات خود اور اپنے اعزہ و اقارب میں سے چیرہ چیرہ افراد کو لے کر فضل بن سل مط کے پاس پنچ آگہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی کتابوں اور تحریروں بر مُفتَّلُو کر سکیں۔ خالدین صبیح کے ساتھ بچاس سے زائد ایے ائمہ اور فقیہ تھے جو منصب خلافت کے لیئے موزون تھ' آپ ك اس وفد مين ابراجيم بن رستم اسيل بن مزاحم بھي تھے آك يد لوگ فضل بن سل كے ساتھ ال كربات كرسكيس كه خالد بن صبيح حفرت امام كى كتابيس كيول وريا بردكرنے كا حكم دے رہے ہيں۔ خالد بن سل نے برطا کما کہ میں اس وقت تک اس فیصلے کو واپس نہ لوں گا جب تک مجھے خلیفہ مامون الرشيد ند روكين- چنانچه فضل بن سل خليفه مامون الرشيد كي خدمت مين حاضر موت ساري صورت حال بیان کی خلیفہ نے یوچھا کہ کون کون لوگ اس کام پر آمادہ ہیں؟ آپ نے اسحاق ہن راهويه ابراجيم بن رسته احمد بن زمير اور چند ووسرے نوجوانوں كا نام ليا۔ ان من نضر بن سميل كا بھی نام لیا گیا۔ ان کے مقابل خالد بن صبیح، سہیل بن مزاحم ہیں مامون الرشید نے فرمایا ان حضرات کو كيس رات آرام كريں صبح بات كريں كے۔ يہ لوگ بھى تيارى كرليس رات كو تمام حفزات نے فيصلہ كياكه خلفه سے كون بات كرے گا- نضر بن شميل أو علم كلام اور فقه ميس كمرور بين وه بات نبيل كر سكيس كيا على احمد بن زمير كو منتخب كيا كيا كيا كه وه مامون الرشيد سے بات كرے گا- ووسرے ون مامون الرشيد كا دربار لكا- مامون الرشيد نے ان سب حضرات كو سلام كيا برے اعزاز اور احرام ے اسين دربار ميس بشمايا، پهريوچها كه آب لوگ ابوحنيفه رضى الله تعالى عنه كى كتابول كو كيول دريا برد كرنا چاہتے ہیں؟ نضر تو خاموش رہا گر احمد بن زہیرنے کما یا امیرالمومنین اگر اجازت ہو تو میں کچھ بیان كون الرشيد نے كما بال بات كريں احد بن زمير نے كما حضور ابو حنيف كى تمام كماييں قرآن و احادیث کے خلاف ہیں' آپ کے سامنے خالد بیٹھے ہیں وہ امام ابوطنیفہ کے بدے قریبی ہیں اور مارے مخالف لیں آپ انہیں فرمائے کہ وہ امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عند کی کسی کتاب سے ایک مسلم بیان فرما کیں میں اس کا رو کروں گا۔ خالد نے ایک مسئلہ بیان کیا جے امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے لکھا تھا' احمد بن زمیرنے حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم کی ایک حدیث پڑھ کر سالی۔ مگر مامون الرشيد نے حضور طابع کی ايك ايس حديث براه كرسائی جس كا جواب مجلس ميس بيشے موت علماء کے پاس نہ تھا اور بیہ حدیث امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنه کی تائید میں تھی اس پر مخالفین بت

شرمندہ بھی ہوئے اور مایوس بھی۔ پھر مامون الرشید نے فرمایا اگر آج میرے دربار میں بعض ایسے مقدر علماء نہ ہوتے تو میں ان غلط بیان لوگوں کو الیم سزا دیتا کہ وہ زندگی بھریاد کرتے۔ اب میہ لوگ خلیت رسوا ہو کر خلیفہ کے دربارے باہر آگئے۔

اس دن کے بعد مامون الرشید نے ملک بھر کے علاء ' آئمہ اور محد ثین کو چن چن کو جمع کیا اور اس دن کے بعد مامون الرشید نے ملک بھر کے علاء ' آئمہ اور محد ثین کو چن چن کو جمع کیا اور اپنے دریار میں اعلیٰ مراتب عطاکر کے انہیں اپنے قریب رکھا آباکہ کوئی فضول آدی ان مسائل پر الی فتنہ نہ اٹھا سکے۔ اگر ان علاء میں سے کوئی فوت ہو جاتا تو دو مرے عالم کو اس منصب پر بٹھا دیا جاتا' اگرچہ مامون الرشید خود بھی بہت بڑا عالم تھا مگروہ اہل علم کی قدر کر ' تنا۔

#### نضربن شميل مايئية

نضر بن شمیل فرایا کرتے تھے لوگ خواب غفلت میں پڑے تھے۔ حضرت اہام ابو صفیقہ رخی اللہ تعالیٰ عنہ نے انہیں بیدار کر دیا۔ آپ بھرہ کے انکہ میں سے تھے۔ فربایا کرتے لوگو! اہام وصفیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے مسائل دریافت کرنے جایا کرو' میں یہاں بمیٹھا ان کے مسائل سے وقعیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کرتا رہتا ہوں' نضر بن شمیل مرہ کے بہت بڑے اہام تھے' ادب عجبی انہیں کمال عاصل تھا۔ اہام ابو صفیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے معتقد تھے اور مسائل کو حل کرنے میں کسل رکھتے تھے' مامون الرشید جب بھی مرہ جاتما انہیں نمایت احرام و اوب سے اپنے دربار میں بلاتا۔ من سے دیئی مسائل پر گفتگو کرتا اور اس ملک میں مختلف شہروں میں جاتا تو آپ کو اپنے ساتھ رکھتا کا ان سے واقعات سنتا' مسائل سنتا اور مخطوظ ہوتا۔ نضر بن شمیل کو خلیفہ مامون الرشید نے کئی امام ابو حفیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے خلافہ کے پاس لے جاتا چاہا گروہ سے کمہ کر ان سے ملئے سے مائل کر دیتا کہ یہ لوگ ابھی مسائل میں پختہ کار نہیں۔ باین ہمہ نضر بن شمیل کو اہام ابو حفیقہ رشی اللہ تعالیٰ عنہ کے شاگرہ مناظرہ میں گھر لیتے اور مسائل میں رسوا کرتے اس کے باوجود مامون الرشید ان کی عزت کرتا اور ان کے علم و فضل کی وجہ سے اپنے ساتھ رکھتا۔

ابراہیم بن فیروز رمایتی

ابراہیم بن فیروز عبداللہ بن المبارک رحمتہ اللہ علیہ کے شاگرد تھے وہ فرماتے ہیں کہ میر

مكتبه نبويه

# عبد العزيز بن الي زرمه رواطيه

عبدالعزیز میلیجہ فرماتے ہیں کہ میں نے اپنے والدے ساوہ کماکرتے تھے کہ سب سے بھی رائے وہ ہوتی ہے جو امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ ویتے۔ یہ عبدالعزیز امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعلی عنہ کے شاگرد تھے اور آپ سے روایت کرتے اور اکابر محد ثین میں شار ہوتے تھے۔ مرو میں رہے تھے اور وہاں آپ نے مند تدریس اور فتوی بچھا رکھی تھی۔ خالد بن صبیح اور سمیل بن مزاحم کے بعد "مرو" میں آپ ہی مرجع خلائق تھے۔ آپ نے امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے فقہ حاصل کی پھران کے وصال کے بعد قاضی ابولیوسف اور امام زفرے استفادہ کیا۔

# يحلي بن اكثم ماينيد

محر بن اسلم ویلیے فرماتے ہیں کہ میں نے یکی بن اکثم سے سنا آپ فرماتے تھے علم الدیہ میں امام مالک بن انس رضی اللہ تعالی عنہ بہت بوے کامل محدث تھے 'گر رائے اور قیاس میں اللہ مالک ویلیے سے امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ زیادہ قابل تھے۔ آپ نے مزید بتایا کہ میرے والد فرید کرتے تھے کہ فقہ میں امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ کا کوئی ٹائی نہیں تھا۔ یکی بن اکثم کو بھی اللہ ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ کی مجلس میں حاضری کا موقعہ ملا تھا آپ سے ہی روایت کرتے ہیں کہ آپ کی وفات کے بعد امام زفر کی مجلس میں التزام کے ساتھ حاضر رہتے۔

#### معروف بن حسان رمايطيد

محد بن سمیل رافیہ فرماتے ہیں کہ میں نے معروف بن حسان رافیہ سے سناتھا آپ فرماتے

سے کہ میں نے نقد علم کلام ورع اور دیانت میں امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ جیسا ووسرا کوئی اللہ معروف بن حسان سمرقد کے فخر اور مقتدر ائمہ کرام میں سے تھے۔ انہوں نے شریک بن سال معروف بن حسان سمرقد کے فخر اور مقتدر ائمہ کرام میں سے تھے۔ انہوں نے سال اسلام میں اسحاق بن ابراہیم سے حضرت امام ابو حنیفہ کے علم کو سمرقد کے علاوہ ماورا النہر میں میلیا تھا۔ یہ اپنے علاقہ میں صرف فقیہ ہی نہیں بلکہ ائمتہ الحدیث میں شار ہوتے تھے۔ انہوں نے سائخ ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے بھی روایت کی ہے۔

#### الحاق الحنظلي مايية

علی بن اسحاق بن ابراہیم حنظلی فرماتے ہیں کہ میں نے اپنے والد گرامی سے ساتھا وہ فرماتے ہیں کہ میں نے اپنے والد گرامی سے ساتھا وہ فرماتے سے کہ احکام شرعیہ اور قضایا میں امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے بردھ کر کوئی عالم دین سے۔ سعید بن عروبہ نے بھی حضرت امام صاحب را لیجھ کے متعلق ایسا بی بیان دیا تھا۔

## مقاتل بن حيان رمايطيه

مقاتل بن حیان میلیج فرماتے ہیں کہ میں امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی مجالس میں بیٹھا کرتا تھا' آپ جیسا صاحب بصیرت اور امور شریعت پر غور و خوض کرنے والا دو سرا کوئی نہیں دیکھا۔ استانل نے صحیح کما تھا بلکہ امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ اس سے بھی بڑھ کر ہیں جس انداز میں آپ کو یاد کرتے ہیں۔ مقاتل بن حیان میلیجہ نے ایک اور مقام پر فرمایا تھا میں نے تابعین اور ان کے بعد اہل علم حضرات سے ملاقات کی ہے گر مجھے ایسا کوئی شخص نہیں ملاجس کا ظاہر و باطن ایک ہو اور اس کی اجتماد اور اپنی ذات کی مگمداشت پر گمری نظر ہو' یہ وصف صرف امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعلیٰ عنہ میں بی بایا جاتا تھا۔

امام ابو محمد رحمته الله عليه فرماتے ہيں كه مقاتل عربن عبدالعزيز حسن بھرى حضرت نافع اللہ عند تابعين كى ايك برى جماعت سے طاقات رہى ہے۔ خود عقدر تابعين سے بھى ملتے رہے ہيں اور تابعين كى ايك برى جماعت سے طاقات رہى ہے۔ خود علی الله تعالى عنه كى مجالس القدر عالم دين تتے مگر جو استفادہ انہيں حضرت لمام ابو حنيفه رضى الله تعالى عنه كى مجالس سے على اور جو علم آپ نے لمام صاحب سے حاصل كيا اس كا برطا اعتراف كيا كرتے تتے وہ ملخ كے طا اور جو علم آپ نے لمام صاحب سے حاصل كيا اس كا برطا اعتراف كيا كرتے تتے وہ ملخ كے

ناهب امام اعظم ۲۵۱ مکتبه نبویه

مقاتل بن حیان را بلجہ نے ایک اور مقام پر فرمایا کہ میں حضرت عمر بن عبدالعزیز رضی 🖆 تعالی عند کی خدمت میں حاضر ہوا' انہوں نے مجھے دارالفیافت میں ٹھمرایا مجھے ان سے ملاقات کا اس . وقت موقع ملا جب ابھی تک وہ کسی سے ملاقات کے لیئے تیار نہ تھے بلکہ انہوں نے ابھی مخسل واجب كرنا تھا۔ انبول نے اپنے غلام كو كرم يانى لانے كو كما علام نے كما حضور كريس لكريال سي ہیں' آپ نے فرمایا بازار سے ادھار لے آؤ۔ غلام نے لکڑیاں خریدیں اور دارا افسیافت میں بان کر كرليا اور آپ كى خدمت ميں لے آيا أب نے يوچھاكمال سے كرم كركے لائے ہوا اس نے جا دارالفیافت میں سے۔ میں ان دونوں کی باتیں سن رہا تھا اس نے اس غلام کو تھم دیا ہے ۔ وارا اضیافت والوں کے پاس لے جاؤ اور میرے لیئے نسرے پانی لے آؤ علام نسرے پانی لے آیا م وہ نمایت محصدا تھا آپ محصدا پانی جسم پر وال رہے تھے اور فرما رہے تھے کہ یہ محصدا پانی جسم کے ا زمررے لایا عمیا ہے۔ مقاتل کہتے ہیں کہ میں یہ باتیں س کر جران رہ گیا کہ خلیفہ وقت ہو اور تھا كاب عالم- (حضرت مقاتل مالين نے عمر بن عبدالعزيز كاب واقعه اس ليئے بيان كيا ہے كه وہ الل 🐷 کا شعار اور معیار بنا سکیں مگران کے نزویک حضرت امام ابو حنیفه رضی الله تعالیٰ عنه کا تقویٰ اس = بھی زیادہ تھا= مترجم ) حضرت مقاتل امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے ہزاروں ایسے اوصاف میل فرمایا کرتے جو کسی دو سرے میں نہیں یائے جاتے تھے اور سے اوصاف صرف امام ابو حلیفہ رضی 🛋 تعالی عنه کی ذات سے ہی متصف تھے۔

# يجي بن اكثم رياثيه

مقاتل بن سلیمان رواطیہ فرماتے ہیں کہ ایک دن کی بن اکشم کے سامنے امام ابو صنیفہ رہی اللہ تعالی عنه کی زیارے اللہ تعالی عنه کی زیارے اللہ تعالی عنه کی زیارے کی تھی، میں نے کہا ہاں! آپ نے بوچھا تم نے انہیں کیما پایا ؟ میں نے بتایا کہ جب حضرت امام سے

م کی تغیر کرتے ہیں تو اتنی شافی اور وائی ہوتی کہ سننے والے کو دو سری بات کی گنجائش نہ رہتی متھی اور دینی امور میں برے ہی صحیح فیصلہ کرنے والے تھے۔ یکی فرمانے لگا اللہ تھالی ہمیں اور انہیں اور محر توفیق عطا فرمائے۔

مقاتل بن سلیمان بلخی الاصل تھے اور علم تقییر میں صف اول کے امام اُنتھے۔ آپ کی زبان پر ام ابوعنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کا اکثر ذکر رہتا۔ آپ بردی مدح و ثنا کرتے تھے، باوجود کھ تابعین عاصت احادیث میں امام ابوعنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے ساتھی تھے۔ حضرت امام ابوعنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے ساتھی عنے۔ حضرت امام ابوعنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے عطاء ' نافع' محمد بن المکندر ابوالزبیر' ابن سیرین اور دو سرے کئی حضرات ایسے تھے میں سے امام ابوعنیفہ نے حدیث ساع فرمائی تھی۔ مقاتل بن سلیمان نے بھی ان حضرات سے حدیث سی تھی مگروہ حضرت امام ابوعنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے اوصاف بیان کرتے تھے۔

# سابقة كتابول يربعض ائمه اسلام كے نام

یہ بری تحقیق گر عجیب بات ہے کہ بعض محققین نے سابقہ الهای کتابوں کا اس انداذ سے سابت گرا مطالعہ کیا تھا کہ ان میں امت محربیہ کے بعض مقدر ائمہ کرام کے اسامے گرامی بھی نظر ایک گرامی بھی نظر ایک گرامی میں امت محربیہ کے بعض مقاتل بن سلیمان وہب بن منبه اور نعمان بن عبی مقاتل بن سلیمان وہب بن منبه اور نعمان بن عبی سے بند رہبہ تھے۔ بعض حفرات نے کعب الاحبار کا نام بھی کے اس رضی اللہ تعالی عنمی )۔

# الومعاذ بلخى رمايطيته

ابومعاذ بلنی فرماتے ہیں کہ میں نے حضرت امام اعظم ابو حنیف رضی اللہ تعالی عنہ سے بڑھ کر کو کی صاحب علم و بصیرت نہیں بایا۔ آپ فرمایا کرتے تھے جے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی مصاحب علم و بصیرت نہیں بایک رہا اور مفلس رہا۔ ابومعاذ بلنی کا اصل نام خالد بن سلیمان بلنی علی میسر نہیں ہوئی وہ علم میں ناکمل رہا اور مفلس رہا۔ ابومعاذ بلنی کا اصل نام خالد بن سلیمان بلنی ہے۔ آپ نے امام سفیان توری سے احادیث سنی ہوئی وہ علاقہ کے علاقہ کے امام اور حافظ حدیث تھے۔ آپ نے امام سفیان توری سے احادیث سنی اور امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے فقہ اور حدیث حاصل کی۔ بڑے ذاہد اور علم و فضل

dimensi ( 0 V

میں مضبوط بزرگ تھے۔ امام مالک رضی اللہ تعالی عند فرمایا کرتے تھے کاش خراسان میں ان کی طب میں مضبوط بزرگ تھے۔ امام مالک رضی اللہ تعالیٰ سے اعلیٰ مقام پایا اور اللہ کی رضا میں ہر تھم کی ملامت کو برداشت کیا اور کئی سے خائف نہ ہوئے۔ یہ تین بزرگ توبہ بن سعد' الموکل اور ابوست رحمتہ اللہ علیم الجمعین تھے۔

حضرت سفیان ثوری سے کس نے مسئلہ دریافت کیا' آپ نے پوچھا کماں سے آئے ہو؟ چھا کہ بلغ ہے' آپ نے بوچھا کماں سے آئے ہو؟ چھا کہ بلغ ہے' آپ نے بوجھا ابومعاذ کا کیا حال ہے؟ عرض کی خیرو عافیت سے ہیں۔ آپ نے فرال ابومعاذ کے ہوتے ہوئے حمیس کسی دو سرے کی ضرورت نہیں رہتی۔ جب جے کے لیئے حضرت سفیاں ثوری مالیجہ تشریف لے گئے تو ان دنوں حضرت ابومعاذ بھی جج پر آئے ہوئے سے لوگوں نے معاد کا سفیان ثوری مالیجہ کے ہمسریایا اور آپ جیسی ہی عزت کی۔

## شقيق بلخي عايليته

ہدیہ بن عبدالوب الروزی کمہ میں فراتے ہیں کہ شقیق بلخی مالیجہ جن دنوں ہارے پال ودمون میں تشریف لائے ہم ان کی مجالس میں حاضر ہوا کرتے تھے۔ آپ امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعلق عند کا بکٹرت ذکر کرتے تھے۔ ہم نے عرض کی آپ عند کا بکٹرت ذکر کرتے تھے اور ان کی تعریف میں رطب اللمان رہجے تھے۔ ہم نے عرض کی آپ ہمیں کوئی الیمی بات بتا کیں جس سے ہمیں فائدہ پنچے۔ حضرت شقیق نے فرمایا افسوس تم نے لا ابو حفیفہ رضی اللہ تعالی عند کے ذکر کو فائدہ مند نہیں پایا 'یاد رکھو امام ابو حفیفہ کا ذکر کرتا' ان کی تعریف کرتا افضل الاعمال ہے۔ آگر تم لوگ ان کی زیارت کر لیتے اور ان کی مجالس میں حاضری کی سعادے حاصل کر لیتے اور ان کا مشاہدہ کر لیتے تو تہیں وہ کی محسوس نہ ہوتی جس کا تم ذکر کر رہو۔ پھر آپ حاصل کر لیتے اور ان کا مشاہدہ کر لیتے تو تہیں وہ کی محسوس نہ ہوتی جس کا تم ذکر کر رہو۔ پھر آپ نے حضرت امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی شان میں ایک زبروست قصیدہ پڑھا جس کے چند اشعاد یہ ہیں ۔

اذا ما الناس يومًا قايسونا بآيدة من الفتيا طريقه

حضرت شقیق بلخی بن ابراہیم بلخی رحمتہ اللہ علیہ برے عابد اور زاہد بزرگ تھے اور اپنے نامیہ

کے باند پایہ فقیہ بھی تھے۔ مور خین کا اس بات پر انفاق ہے کہ بلخ نے بھیق بلخی میافیہ جیسا دو سرا عالم الم انہیں کیا۔ ایک بار حضرت شقیق بلخی مرافیہ بغداد میں تشریف لاک آپ نے درویشوں کی طرح ایک ملی اوڑھی ہوئی تھی اور درویشوں کی صورت میں گھوم پھر رہے تھے 'امام ابوبوسف مرافیہ نے آپ کو دکھ لیا۔ امام ابوبوسف اس وقت بردی شان و شوکت سے ایک شاندار سواری پر براجمان نوکروں کو دکھ کر فرمایا وجعلنا بعضکم لبعض ماروں کے جمع میں جارہے تھے 'آپ نے شقیق بلخی مرافیہ کو دکھ کر فرمایا وجعلنا بعضکم لبعض فننة انصبرون ہم نے تمہارے بعض لوگوں کو دو سرے لوگوں کے لیے ایسا بنایا ہے اس پر تم صبر میں۔

حضرت شقیق بلخی مرافیہ نے من کر فرمایا ہاں ہم صبر کرتے ہیں وو بار ایسے ہی فرمایا اس کے علاقت ابوابوسف نے دوسری بار زیارت کی تو آپ اس حالت میں تھے۔ آپ نے فرمایا اے احاق (شقیق) آپ بھی اس حال میں ہیں اور اس لباس میں ہیں۔ آپ نے فرمایا ہاں! مجھے ابھی سرا لباس نہیں ملا یعنی اہل جنت کا لباس تاہنوز مجھے نہیں ملا۔ آپ نے جو لباس طلب کیا تھا وہ آپ کو اس لیے مل گیا ہے کہ آپ کا دنیاوی لباس آئے دن بدلتا رہتا ہے۔ یہ بات ایک دوستانہ طنز تھی ہے ایک واقف علم عالم دین کو کہہ سکتا ہے۔

#### خلف بن الي يوسف ماينيد

ایک دن لوگوں نے خلف بن ابی یوسف سے ایک مسئلہ پوچھا آپ نے اس کا جواب دیا اور ساتھ ہی فرمایا کی جواب ابویوسف کا ہے اور سے جواب امام ابوحنیفہ رضی اللہ تحالی عنہ کا ہے گرلوگوں نے کہا یہ تو ان دونوں کا مسلک ہے آپ کا اپنا کیا جواب ہے۔ فرمایا میں تم لوگوں کو دو مہاڑوں کی بات ساتا ہوں تم ایک ذرہ ناچیز کا جواب پوچھتے ہو 'میری کیا حیثیت ہے۔ خلف بن ابی یوسف فرمایا کرتے تھے جو شخص امام ابوحنیفہ کی شان میں کمی کرتا ہے ہم اس سے بدخان ہیں لوگوں نے پوچھا۔ امام ابوطنیفہ کی شمان سے ہو خلف بن یوسف فرمایا کرتے تھے کہ مجھے بیات دل سے تسلیم کی جواب نے فرمایا امام ابوحنیفہ کی شمان سے ہو ہو ہو کہ ہے کہ بیہ بات دل سے تسلیم کی جواب ابوحنیفہ کی شمان سے ہو بات دل سے تسلیم کی جواب ابوحنیفہ کر آپ سے بردھ کر کوئی بھی فقیہ اور عالم نہیں ہے۔ خلف بن یوسف فرمایا کرتے تھے کہ مجھے ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی دو عادتیں بہت عجیب لگتی ہیں قران کی تفیر کے در پے نہ ہونا '

LOV Estimates

میں مضبوط بزرگ تھے۔ امام مالک رصی اللہ تعالی عنه فرمایا کرتے تھے کاش خراسان میں ان کی طرح میں مضبوط بزرگ تھے۔ امام مالک رصی اللہ تعالیٰ سے اعلیٰ مقام پلیا اور اللہ کی رضا میں ہر تھم کی مطامت کو برداشت کیا اور کئی سے خائف نہ ہوئے۔ یہ تین بزرگ توبہ بن سعد' الموکل اور اوست رحمتہ اللہ علیم اجمعین تھے۔

حضرت سفیان توری سے کسی نے مسلہ دریافت کیا' آپ نے پوچھا کہاں سے آئے ہو ؟ ہے۔

کہ بلخ ہے' آپ نے پوچھا ابومعاذ کا کیا حال ہے ؟ عرض کی خیر و عافیت سے ہیں۔ آپ نے فیصلہ ابومعاذ کے ہوتے موتے ہوئے حضرت سفیل ابومعاذ کے ہوتے ہوئے حضرت سفیل توری دیلجہ تشریف لے گئے تو ان دنوں حضرت ابومعاذ بھی جج پر آئے ہوئے تنے لوگوں نے معلی سفیان قوری دیلجہ کے ہمسریایا اور آپ جیسی ہی عزت کی۔

## شقيق بلخي عايطيته

ہریہ بن عبدالوب المروزی کمہ میں فراتے ہیں کہ شقیق بلخی والیجہ جن دنوں ہارے ہیں و مرو" میں تشریف لائے ہم ان کی مجالس میں حاضر ہوا کرتے تھے۔ آپ امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعلق عند کا بکٹرت ذکر کرتے تھے اور ان کی تعریف میں رطب اللمان رہتے تھے۔ ہم نے عرض کی آپ ہمیں کوئی الیمی بات بتا کیں جس سے ہمیں فائدہ پنچے۔ حضرت شقیق نے فرمایا افسوس تم نے لاہ ابو حفیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے ذکر کو فائدہ مند خمیں پایا یاد رکھو امام ابو حفیفہ کا ذکر کرتا ان کی تعریف کرتا افضل الاعمال ہے۔ اگر تم لوگ ان کی نیارت کر لیتے اور ان کی مجالت میں حاضری کی سعادے حاصل کر لیتے اور ان کی مجالت میں حاضری کی سعادے حاصل کر لیتے اور ان کا مشاہدہ کر لیتے تو جہیں وہ کی محسوس نہ ہوتی جس کا تم ذکر کر رہو۔ پھر آپ نے حضرت امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی شان میں ایک زبروست قصیدہ پڑھا جس کے چند اشعاد سے جند اشعاد سے

اذا ما الناس يومًا قايسونا بآيدة من الفتيا طريقه

حضرت شقیق بلخی بن ابراہیم بلخی رحمتہ اللہ علیہ برے عابد اور زاہد بزرگ تھے اور اپنے نام

کے بائد پایہ نقیہ بھی تھے۔ مور خین کا اس بات پر انفاق ہے کہ بلخ نے شقیق بلخی مطیعہ جیسا دو سرا عالم اللہ اللہ ایک بار حضرت شقیق بلخی مطیعہ بغداد میں تشریف لائے آپ نے درویشوں کی طرح ایک محملی اور درویشوں کی صورت میں گھوم پھر رہے تھے 'امام ابوبوسف مطیعہ نے آپ کو دکھے لیا۔ امام ابوبوسف اس وقت بڑی شان و شوکت سے ایک شاندار سواری پر براجمان نوکوں کو دکھے لیا۔ امام ابوبوسف اس وقت بڑی شان و شوکت سے ایک شاندار سواری پر براجمان نوکوں کو دکھے کو دکھے کر فرمایا و جعلنا بعضکم لبعض چاکوں کے بیج میں جارہے تھے 'آپ نے شقیق بلخی مطیعہ کو دکھے کر فرمایا و جعلنا بعضکم لبعض فندہ انصبرون ہم نے تمہارے بعض لوگوں کو دو سرے لوگوں کے لیئے ایسا بنایا ہے اس پر تم صبر کو۔

حضرت شقیق بلخی ریافیہ نے من کر فرمایا ہاں ہم صبر کرتے ہیں وو بار ایسے ہی فرمایا اس کے عدد قاضی ابوبوسف نے دوسری بار زیارت کی تو آپ اس حالت میں تھے۔ آپ نے فرمایا اے واحاق (شقیق) آپ بھی اس حال میں ہیں اور اس لباس میں ہیں۔ آپ نے فرمایا ہاں! مجھے ابھی سرا لباس نہیں ملا یعنی اہل جنت کا لباس تاہنوز مجھے نہیں ملا۔ آپ نے جو لباس طلب کیا تھا وہ آپ و اس لیے مل گیا ہے کہ آپ کا دنیاوی لباس آئے دن بدلتا رہتا ہے۔ یہ بات ایک دوستانہ طنز تھی ہے ایک واتف حال صوفی واقف علم عالم دین کو کہہ سکتا ہے۔

#### خلف بن الي يوسف رمايفيد

ایک دن لوگوں نے خلف بن ابی یوسف سے ایک مسئلہ پوچھا' آپ نے اس کا جواب دیا اور ساتھ بی فرمایا کی جواب ابویوسف کا ہے اور رہ جواب امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا ہے گر لوگوں نے کہا یہ تو ان دونوں کا مسلک ہے آپ کا اپنا کیا جواب ہے۔ فرمایا میں تم لوگوں کو دو بہاڑوں کی بات ساتا ہوں تم ایک ذرہ ناچیز کا جواب پوچھے ہو' میری کیا حیثیت ہے۔ خلف بن ابی یوسف فرمایا کرتے تھے جو شخص امام ابو صنیفہ کی شان میں کی کرتا ہے ہم اس سے بد خلن ہیں لوگوں نے پوچھا۔ امام بوصف مولیا کرتے ہوئے فرمایا امام ابو صنیفہ کی شان میہ ہم کہ میہ بات دل سے تسلیم کی جواب سے کہ میہ بات دل سے تسلیم کی جواب سے کہ آپ سے برڈھ کر کوئی بھی فقیہ اور عالم نہیں ہے۔ خلف بن یوسف فرمایا کرتے تھے کہ ججھے کہ آپ سے برڈھ کر کوئی بھی فقیہ اور عالم نہیں ہے۔ خلف بن یوسف فرمایا کرتے تھے کہ جھے اور عالم نہیں ہے۔ خلف بن یوسف فرمایا کرتے تھے کہ جھے ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی دو عاد تیں بہت بجیب لگتی ہیں قران کی تفیر کے در پے نہ ہونا' ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی دو عاد تیں بہت بجیب لگتی ہیں قران کی تفیر کے در پے نہ ہونا' ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی دو عاد تیں بہت بجیب لگتی ہیں قران کی تفیر کے در پے نہ ہونا' ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی دو عاد تیں بہت بحیب لگتی ہیں قران کی تفیر کے در پے نہ ہونا'

ام اعظم م

دو سرے منصب قضاۃ قبول نہ کرتا باوجود انعام و اکرام کے آپ کو ڈرایا و همکایا گیا اور کوڑے کے لگائے گئے اور پھر دنیاوی لالج اور مال و منال پیش کیا گیا۔ خلف بن ایوب بلخ کے رہنے والے تھے گر آپ ابویوسف سے بھی روایت کرتے ہیں اور امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے بھی وہ اپ نہ کے بہت بڑے ذالم کی بہت بڑے ذالم کی بہت بڑے ذالم کی بہت بڑے اللہ کر آپ کے بہت بڑے زائم بھی تھے 'جب آپ عبداللہ بن المبارک کے باس آئے تو آپ نے اللہ کر آپ کا گیا 'جب آپ رخصت ہو گئے تو آپ نے فرمایا جنت کی نشانیاں اس مختص میں پائی جاتی ہیں۔ جب آپ حماد بن ابوضیفہ روائی سے حدیث سننے آئے تو واپس جانے گئے تو آپ نے فرمایا آج تک تو علی مانسان سارے خراسان سے ہمارے پاس بھی نہیں آیا۔ آپ ۱۹ سے گھر سے لے کر قبر سی خطیم انسان سارے خراسان سے ہمارے پاس بھی نہیں آیا۔ آپ ۱۹ سے گھر سے لے کر قبر سی خطیم انسان کندھا ویا اور آپ کے گھر سے لے کر قبر سی شکل کندھا ویا وی کہ اے اس طرح سے گئی مسلسل کندھا ویت رکھا۔ جب نماز جنازہ اوا کرنے کے بعد واپس آرہ سے تھے تو غیب سے گئی مسلسل کندھا ویت رکھا۔ جب نماز جنازہ اوا کرنے کے بعد واپس آرہ سے تھے تو غیب سے گئی وقت طلف بن ابوب کی نماز جنازہ بڑھنے پر اس غیبی انعام کا مستحق ٹھرا تھا۔

## شدادبن حكيم ملاثيه

شداد بن حکیم روائی فرماتے ہیں کہ اگر امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ اور ان کے شاگردوں کی شکل میں اللہ تعالیٰ ہم پر انعامات نہ فرما آ تو ہم علمی طور پر مفلس اور محروم رہ جاتے 'نہ ہم احادیث نبوی ماٹی کو سمجھ پاتے نہ دین کے مسائل سے واقف ہوتے۔ شداد بن حکیم اپنے وقت کے جلیل القدر ائمہ میں سے تھے 'وہ نصیر بن کی کے استاد تھے۔ جب تک آپ کو امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی مجالس میں حاضری نصیب نہ تھی تو آپ حضرت سفیان ثوری روائی ہو وایت کیا کرتے تھے گر حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تھے گر حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تحالی عنہ کی مجالس میں جانے کے بعد انہی کی روایات کی اشاعت کو ترجیح دی۔ پھر آپ کے تلافہ ابو بوسف اور امام زفر کی روایات بیان کرتے تھے۔ آپ اپ وقت کے زاہد اور عاہد تھے۔ ایک ظہرے لے کر دو سمری ظہر کی نماز ایک وضو سے ادا کرتے تھے۔ یہ سللہ مئی سال تک رہا' آپ کا وصال ۱۲۱۳ھ کو ہوا تھا۔

## سعدان بن سعيد الحلمي راينيه

سعدان بن سعید روایتے ہیں کہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ دین کے ایک ایسے طبیب سے جن کی وجہ سے جمالت کی بیاریاں دور ہو گئیں' جمالت کی بیاریوں کا علاج علم ہے جو حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے علم کی ایسی اللہ موٹر تشریح اور تفیر فرمائی کہ جمالت کی بیاری بالکل مٹ گئے۔ بیہ سعدان بلخ کے کئی علاقوں کے ایسی موٹر تشریح اور تفیر فرمائی کہ جمالت کی بیاری بالکل مٹ گئے۔ بیہ سعدان بلخ کے کئی علاقوں کے الم شخصہ آپ نے ساری عمر حضرت سیدنا امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی روایت کی تھی۔ آپ خود بلخ کی ایک بستی سم کے رہنے والے تھے۔

#### كنانه رماينتيه

کنانہ فرماتے ہیں کہ میں نے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی زبان سے ایا بھی کوئی لفظ نہیں ساجس پر مواخذہ کیا جا سکتا ہو۔ کنانہ بن جلیلہ ہروی تھے اور ہرات کے علاقہ کے ائمہ میں شار ہوتے تھے۔ آپ اکثر روایات امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے لیتے۔ ہرات کے علاقے میں آپ کی وجہ سے فقہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی بری اشاءت ہوئی تھی۔

## ابن جريه رماطية

ابن جریر طلیح فرمایا کرتے تھے کہ مجھے مغیرہ بن قاسم نے کہا کہ تم امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عند کی مجالس میں جایا کرو' خداکی قتم آج امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عند کے استاد الاستاد ابراہیم طلیح زندہ ہوتے تو وہ بھی ان مجالس سے استفادہ کرتے۔ حقیقت ہے کہ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عند سے بڑھ کر حلال و حرام کے مسائل کو بیان کرنے والا دو سراکوئی نہیں ہے۔

## داؤد طائى رايطيته

حضرت واؤد طائی رافیے کی محفل میں جب حضرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عند کا ذکر آ ما تو فرماتے وہ ہدایت کا چمکتا ہوا ستارہ شھے۔ اُن سے راہ ہدایت پر چلنے والا ہر مخص راہنمائی حاصل کر سکتا ہے۔ ان کا علم وہ ہے جے اہل ایمان کے قلوب قبول کرتے ہیں۔ ہر عالم سے علم حاصل نہیں کیا جاسکا۔ وہ اس کے حامل کے لیئے آزمائش ہوتا ہے۔ اللہ تعالیٰ ہی نے حامل و حرام کی حدود متعین فرمائی ہیں' اس کے عذاب سے نجات حاصل کرنے کے لیئے پوشیدہ پر ہیزگاری بهترین ذریعہ ہے اور سے پر ہیزگاری امام ابو حذیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ جیسے وائی خدمت سے حاصل ہوتی ہے۔

#### شعبه رماطيه

لفربن علی فراتے ہیں کہ ہم ایک دن شعبہ کے پاس بیٹے تھے، ہمیں خر پہنی کہ امام ابوصنیفہ کا وصال ہو گیا انہوں نے اناللہ وانا الیہ راجعون پڑھا اور فرمایا افسوس کوفہ سے علم کی روشنی بچھ گئی۔ بسرصال اب ان جیسا کوئی پیدا نہ ہو گا۔ شعبہ ہمیشہ امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کا ذکر ایکھ الفاظ میں کیا کرتے تھے۔ جب بھی آپ کا نام سنتے تو دعاؤں سے یاد کرتے، بھی کسی نے نہیں دیکھا کہ جب آپ کے سامنے امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کا ذکر کیا گیا ہو تو آپ نے مرت کا اظهار نہ کیا ہو۔

## امام مالك رمايفيته

ایک دن حضرت امام مالک رائیہ ہے کسی نے یہ مسئلہ دریافت کیا کہ اگر کسی شخص کے پاس صرف دو ہی کپڑے ہوں' ایک پاک ہو اور دو سرا ناپاک ہو گراہے بقین نہ ہو کہ کون سا کپڑا پاک ہو اور کون سا ناپاک' اوھر نماز کا وقت مختصر ہو تا جارہا ہو تو اسے کیا کرنا چاہئے ؟ آپ نے فرمایا تحری کرے بعنی تجی سوچ پر عمل کرے۔ اس شخص نے عرض کی کہ میں نے امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے سنا ہے وہ فرماتے تھے ہر کپڑے کے ساتھ ایک بار نماز پڑ لے۔ امام مالک رحمتہ اللہ علیہ فرمانے گے کہ امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی بات زیادہ پندیدہ ہے۔

#### سعيد بن الي عروبه رياطية

ابن عیینہ نے فرمایا کہ میں سعید بن ابی عروبہ کے پاس حاضر ہوا تو آپ نے فرمایا کہ امام

ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے شمر کوفہ سے جتنے لوگ آتے ہیں وہ امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو بہترین عالم تصور کرتے ہیں' اللہ تعالی نے ابوطنیفہ کی وساطت سے علم کی روشنیاں لوگوں کے دلوں میں بھر دی ہیں۔ فقہ کا کوئی ایبا مسئلہ نہیں جے آپ نے اصادیث کی روشنی میں بیان نہ کیا ہو۔ سعید بن عوبہ نے امام حسن بھری رحمتہ اللہ علیہ کے بعد بھرہ میں احادیث و فقہ کے امام تھے۔

#### سفيان بن عيينه مايني

سفیان بن عیب فرمایا کرتے تھے کہ سب سے پہلے میری توجہ امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے اطاریث کی طرف دلائی۔ جب میں پہلی بار کوفہ میں گیا تو ان دنوں امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ لوگوں کو حدیث کے مسائل بیان فرمایا کرتے تھے۔ آب نے میرے متعلق لوگوں کو بتایا کہ میں عمرو بن دینار کو بہت زیادہ جانتا ہوں آپ کی یہ بات بن کر بہت سے علماء و مشائخ میرے حلقہ میں آنے لگے اور عمرو بن دینار مطابح کی اطادیث سننے لگے۔

سفیان بن عیبینه فرماتے ہیں کہ جو مغاذی کا علم جانتا چاہتا ہے اسے مدینہ پاک میں قیام کرنا چاہیے۔ اگر مسائل حج اور مناسک حج کی تربیت حاصل کرنا چاہتا ہو تو مکہ مرمہ میں جائے 'اگر فقہ کی تعلیم حاصل کرنی بُو تو کوفہ میں رہ کر امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی مجالس میں شرکت کرے۔ سفیان بن عیبینه اپنے وقت کے مقتدر علماء کرام میں شار ہوتے ہیں۔ آپ کے معاصرین میں حضرت ابن عباس شعبی اور امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سرکردہ اہل علم و فضل شھ۔

#### عبدالله بن السبارك ملطحة

عبداللہ بن المبارک رحمتہ اللہ علیہ نے فرمایا علم حدیث بے شک سیجہ گراس کی تشریح اور وضاحت کے لیئے فقہ اور قیاس کی روشن کی ضرورت ہے اور بیہ علم امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنه کی مجالس کے بغیر حاصل نہیں ہو سکتا۔ آج علمائے کرام کو امام مالک ' سفیان توری اور حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنم کی رائے اور قیاس کی ضرورت ہے۔ ان میں سے نمایت احسن رائے وقیق فکر ' معانی پر گرا غور و غوض صرف امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے ہاں ملتا ہے۔

خلاد سکونی نے فرمایا کہ میں ایک دن زہیر بن معاویہ روافیہ کے پاس حاضر ہوا تو آپ نے فراللہ کہ کا امام ابو حذیقہ رضی اللہ تعالی عند کی طرف سے آیا ہوں' آپ نے فرمایا ان کی ایک دن کی مجلس میرے ایک ماہ کی مجالس سے زیادہ مفید ہے۔

## عبدالله بن داود الخريبي رايطيته

عبداللہ بن داؤد مالیے نے فرمایا جو شخص چاہتا ہو کہ وہ جمالت کے گڑھے سے نکل آئے ' ہے علمی کے اندھیروں سے باہر آجائے اور فقہ کی روشنیوں سے اپنی آئکھوں کو منور کرے وہ لام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی تحریوں اور کتابوں کا مطالعہ کرے۔ علی بن الحن الدر همی فرماتے ہیں کہ عبداللہ بن داود رولیے فرمایا کرتے تھے کہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی مجالس جماد بن سلمہ " حماد بن زیب سے زیادہ نفع بخش ہیں۔

## عاصم نبيل رمايثيه

تصربن علی فرماتے ہیں کہ میں نے عاصم بن نبیل مایٹیہ سے بوچھا کہ آپ کے نزدیک المام الوصنیفہ رضی اللہ الموصنیفہ رضی اللہ تعالی عنه فقید تر ہیں یا حضرت سفیان توری مایٹیہ ' فرمایا بخدا امام الوصنیف تعالی عنه تو ابن صریح مایٹیہ سے بھی زیادہ قابل ہیں۔ میری آنکھ نے آج تک فقہ میں امام الوصنیف رضی اللہ تعالی عنه سے بردھ کر کوئی نہیں دیکھا۔

## يزيد بن ہارون رمایت

کسی نے بزید بن ہارون مرفیہ سے کہا اے ابو خالد! آپ کے نزدیک امام مالک رضی اللہ تعالی عند کی رائے اور قیاس زیادہ بہندیدہ ہے یا امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عند کا؟ انہوں ے فرمایا احادث تو امام مالک مرافیہ سے لکھ لیا کرو' وہ احادیث کو بڑے متھرے انداز میں بیان کرتے ہیں گرجب حدیث کی تفسیرہ تشریح فقد کی روشن میں سمجھنی ہو تو پھر میں امام ابو حنیفہ رضہ اللہ تعالی عند سے بڑھ کر کمی

کو نہیں دیکھا۔ فقہ کی بات یوں بیان کریں گے' اس طرح آپ کے شاگرد فقهی مسائل اس انداز میں بیان کرتے ہیں کہ جیسے وہ اس فن کے لیئے پیدا ہوئے ہیں۔

## يجي بن معين ريافيه

یکی بن معین ریائی فرماتے ہیں کہ ہارے زمانہ میں چار فقما ہیں' امام ابو صنیقہ' سفیان توری والمجہ نے بھی حضرت مالک اور امام اوزاعی رحمتہ اللہ علیم اجمعین ان سے بوچھاگیا کیا سفیان توری روائیجہ نے بھی حضرت ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے بچھ روایات کی ہیں ؟ فرمایا ہاں! امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ حدیث اور فقہ میں ثقہ سے صدوق سے وین اللہ بر مامون سے سلیمان بن واؤو روائیجہ فرمایا کرتے سے کہ میں نے امام شافعی رضی اللہ تعالی عنہ سے سا وہ فرمایا کرتے سے امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کا قول عظیم ہے اور اسے کسی صورت میں محکرایا نہیں جاسکتا۔ امام شافعی رحمتہ اللہ علیہ نے ایک اور مقام پر فرمایا جے امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی فقہ میں واقفیت نہیں وہ فقہ میں تبحر حاصل میں کر سکتا۔

#### الم جعفرصادق تفتيانيك

ام ابو یوسف رحمتہ اللہ علیہ فراتے ہیں کہ ہیں نے دیکھا کہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تحالی عنہ مجد جرام میں بیٹھے تھے' ای وقت امام جعفر صادق رضی اللہ تعالی عنہ مجد جرام میں تشریف لائے' اگرچہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے آپ کو نہیں دیکھا تھا گر آپ سمجھ گئے کہ بھی امام جعفر صادق رضی اللہ تعالی عنہ ہیں۔ تعظیم کے لیئے آگے بردھے اور عرض کی اے ابن رسول مائی اگر مجھے معلوم ہو آ کہ آپ تشریف لارہے ہیں تو میں دیر تک کھڑا آپ کے استقبال کے لیئے تیار رہتا۔ اب آپ جب تک تشریف فرما رہیں گے میں تعظیما کھڑا رہوں گا۔ امام جعفر صادق رضی اللہ تعالی عنہ نے آپ کو تھم دیا اب آپ جب تک تشریف فرما رہیں گے میں تعظیما کھڑا رہوں گا۔ امام جعفر صادق رضی اللہ تعالی عنہ نے آپ کو تھم دیا اب آپ بیٹھ جائے اور لوگوں کے مسائل کا جواب د ہجئے۔

## رباح بن نصررها يليه

رباح بن نصره اللجة فرماتے ہیں کہ میں نے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ اور عمرو بن ور واللجے الملے

بناقب امام اعظم مكتبه نبويه

کو دیکھا تھا وہ جب ایک دوسرے کو ملتے تو ایک دوسرے کو گلے لگاتے۔ عمرو بن ذر روائی جب ملتے تو امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے دونوں ابروؤں کو درمیان سے چومتے۔

#### محمد عبرالله رايفيه

محمد عبداللہ بھرہ کے قاضی بھی آپ نے فرمایا ہم اہل کوفہ کے انداز معاشرت کو خوب جانے ہیں 'لوگوں نے عرض کی حضرت علماء سے انصاف کی توقع ہوتی ہے امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے بیہ طریقتہ اور آداب معاشرہ وضع کیئے گر آپ لوگ جمال تھے وہاں ہی ہیں۔ اگرچہ آپ نے بہت انجھی عبارتیں کھی گرائل کوفہ کے مقابلہ میں ان عبارتوں کی حیثیت ٹانوی ہے۔ امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے اسلامی روایات کی اشاعت میں جو اضافہ کیا تھا آپ اس کا جواب نہیں لا سکے۔ محمد بن عبداللہ خاموش ہو گئے اور فرمایا کہ میں امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو حق تسلیم کرتا ہوں اور حق تسلیم کرتا ہی بہتر ہے۔

## امام شافعی رایفتیه

حفرت الم شافعی رضی اللہ تعالیٰ عند نے فرمایا کہ آج دنیائے اسلام کے لوگ پانچ بزرگوں کے عیال ہیں۔ اگر کوئی شخص مغازی کا علم حاصل کرنا چاہے تو محمد بن اسحاق سے سیجے 'اگر فقہ حاصل کرنے کو آئے الم ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے سیجے 'اگر فن شاعری ہیں کمال حاصل کرنا چاہے تو زیر کا شاگر د بنے 'اگر تفیر ہیں تجربہ حاصل کرنا چاہے تو وہ مقاتل بن سلیمان را لیجے کی مجالس ہیں حاضر ہو کر سیجے 'اگر نحو ہیں کمال حاصل کرنا ہو تو وہ کسائی کا عیال ہوگا۔

## عبدالله بن السارك رايطيه

حضرت عبدالله بن المبارك را ليجه فرماتے ہيں كه أكر آج كوئى شخص فقه بر بات كرما ہے تو اس كو اپنا مقتدا امام ابوصفه رضى الله تعالى عنه كو بنانا برے گا۔ ميں نے امام ابوصفه رضى الله تعالى عنه كى بين مرايديشن ميں مجھے عمدہ اضافے ملے ہيں 'اگر عنه كى بہت كى بہت عدہ اضافے ملے ہيں 'اگر

تہمیں کوئی ایسا شخص طے جو حضرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی غیبت کر رہا ہے اور برائی سے باز نہیں آیا تو اس پر رزق کی تنگی ہو جائے گی۔ اس پر اعتبار نہیں کرنا چاہئے۔ حضرت عبداللہ المبارک والیجے جب بھی آپ کا ذکر کرتے تو آپ کی آنکھوں سے آنسو جاری ہو جاتے اور آپ کی المبارک والیجے جب بھی آپ کا ذکر کرتے تو آپ کی آنکھوں سے آنسو جاری ہو جاتے اور آپ کی داڑھی مبارک تر ہو جاتی۔ آپ نے ایک اور مقام پر فرمایا کہ میں نے اپنی زندگی میں ہزاروں علماء کرام سے ملاقات کی ہے گر میں نے تین علماء جیسے کامل العلم نہیں دیکھے۔ راوی نے وضاحت طلب کی کہ وہ کون کون ہیں؟ آپ نے بتایا' ابن عون والیجے ورع اور تقویٰ میں بے مثال ہیں۔ امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نقیر میں لا ثانی ہیں۔ راوی نے کہا امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سفیان توری والیجے کے مقابلہ میں کیا حیثیت رکھتے ہیں آپ نے فرمایا افروس صد افسوس اگر میں امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو نہ ماتا تو میں ان فلسفیوں سے ہو تا جو بغداد میں مال و زر اکٹھا کرنے میں گئے ہوئے ہیں۔ آگر میں امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو نہ ماتا تو میں مال و زر اکٹھا کرنے میں گئے ہوئے ہیں۔ آگر میں امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو نہ ماتا تو میں مال و زر اکٹھا کرنے میں گئے ہوئے ہیں۔ آگر میں امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو نہ ماتا تو میں میں میں ہوئی۔

عطیہ بن اسباط عبداللہ بن المبارک والیج کے رشتہ دار تھے فرماتے ہیں کہ عبداللہ بن المبارک جب کوفہ میں تشریف لاتے تو سب سے پہلے امام زفر والیج سے حضرت امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی کتابیں لے کر مطالعہ کرتے، ان کو نقل کرتے اور ان کتابوں کو کئی کئی بار لکھتے۔ لوگوں نے آپ سے بوچھا کہ امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرمایا کہ ساری زمین امام مالک رحمتہ اللہ علیہ جیسے علماء سے بھر جائے پھر بھی امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے نقیبی مقام کو نہیں پاکتے۔ عبداللہ بن المبارک والیج نے فرمایا ہم اپنے نفوں میں اللہ تعالیٰ کی کتابیب نہیں کرتے، فقہ میں امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالیٰ کی کتابیب نہیں کرتے، فقہ میں امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ منفرہ ہیں۔ حدیث میں سفیان توری والیج سے گذریب نہیں کرتے، فقہ میں امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ منفرہ ہیں۔ حدیث میں سفیان توری والیج سے آگر ہیہ دونوں حدیث اور فقہ میں متفق ہوتے تو آج کی کو اختلاف کرنے کی جرات نہ ہوتی۔

## وكيع بن الجراح مافيد

وكيع بن الجراح را ليج فرمات بين كه بين جنني لوكون سے ملا موں مجھے امام ابو حنيف رضى الله تعالى عند كے فيلے بحارى نظر آئے بين۔

## جعفربن بدلع رمايطيه

جعفر بن بدلیع ریافیہ فرماتے ہیں کہ میں امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عند کی مجالس میں پانچ سال تک فقہ کے مسائل سنتا رہا' میں نے ان سے زیادہ خاموش طبع کمی کو نہیں ویکھا ہاں جب دین مسائل بیان فرماتے تو ایک بہتا ہوا دریا معلوم ہوتے۔

#### محربن المروزي رماينيه

محمد بن مروزی ملیجہ نے قرمایا کہ اللہ تعالی امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ پر رحم قرمائے ان کی زبان جب تھلتی ہے حق بولتی ہے۔

#### ابو بوسف رايني

قاضی ابولیوسف را لئیر فرماتے ہیں کہ جب امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ زندہ تھے تو ہم ہزاروں خطائیں کرتے تھے' اب ہمیں اپنی خطائیں دکھائی نہیں دیتیں یوں محسوس ہو تا ہے کہ اب ہماری خطا اور غلطی کو پکڑنے والا کوئی نہیں۔ ہم جو پچھ کہہ دیتے ہیں لوگ اے ہی سی جا اور حق سمجھ لیتے ہیں۔

#### ابن سيار رماينيه

ابن سیار روایئی فرماتے ہیں کہ تمام سیاسی بادشاہ حضرت عمر رضی اللہ تعالی عنہ کا عیال ہیں' فقہ میں تمام فقہا امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کا عیال ہیں' تمام محد ثمین امام احمد بن حنبل رضی اللہ تعالی عنہ کا عیال ہیں۔ آپ نے پھر فرمایا چار ایے تعالی عنہ کا عیال ہیں۔ آپ نے پھر فرمایا چار ایے بزرگ ہیں کہ ان جیسا کوئی پیدا نہیں ہوا۔ ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ فقہ ہیں۔ خلیل اوب ہیں۔ حافظ تصنیف ہیں اور ابوتمام شاعری ہیں۔ اسی موضوع پر چند اشعار ملاحظہ فرمائیں ۔

فى العلم والنقوى بنو الايام فرق الهدى وائمة الاسلام مدحوه مثل مديح اهل الشام مدخا بجد على بلى الاعوام والعلم صار امام كل امام ومن العبادة اوفر الاقسام نحو المديح شوافع الارحام

شهدت نعمان الامام بسبقه وتالبت و تظاهرت في مدحه اهل الحجاز مع العراق باسرهم بل اهل كل الارض قدمدهوا الرضا نادوا بان ابا حنيفة للتقي اخذ الامام من الشريعة والتقي لله قد مدحوه اذلم تدعهم

عرفت ملوك الحق حق علومه فثنوا اليه اغنة الاعظام

قرجمه: زمانے کے تمام اہل علم نے امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے علم و تقوی کو تعلیم
کیا ہے۔ ہدایت کے تمام راہنماؤں اور اسلام کے ائمہ نے آپ کی مدح و تعریف کی۔ اہل عراق اور
الل حجاز نے آپ کی علمی برتری کو کیماں تعلیم کیا بلکہ یوں کئے کہ تمام اہل ذمین نے امام ابوطنیفہ
رضی اللہ تعالی عنہ کی تعریف و توصیف کی۔ پہندیدہ مدح جے خواص اور عوام کیمال تعلیم کرتے ہیں
میں نگار پکار کر کہ رہا ہوں کہ امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ تمام ائمہ کے امام ہیں۔ آپ شریعت و تقوی عبادت اور اعمال میں سب سے اعلی مرتبہ پر ہیں المذا انہیں مدح کے لیئے نہ بلاؤں تو آپ کے
ایفر مدح کیے ! آپ تو محمود زمانہ ہیں۔ تمام بادشاہ آپ کے علوم کا حق جانتے ہیں اور ہرصاحب علم
نے آپ کی مدحت مرائی کی طرف باگیں موڈی تھیں۔

\*\*\*\*\*\*\*\*\*

#### مع وال باب منطاع بالما يه المعالم المعالم المعالم المعالم المعالم المعالم

# امام ابوحنیفهٔ ایکی قرات قرآن پاک

علی بن محن التنوخی فرماتے ہیں کہ میں ابوالفضل محربن جعفر بن محر فزاع کے مدرسے مِن ٢٨٠ه مِن زير تعليم تها- بي اتواركا دن تها، آپ نے فرمايا الحمدلله وحده صلى الله على محمد النبي وآله وسلم ٥ آج مين تهارك التفارير بتانا چابتا مول كه حفرت الم ابوضية رضی الله تعالی عنه کونمی قرات اوا فرمایا کرتے تھے اور ان کی مروجہ قرات کیا تھی۔ میں ہر قرات کی تشریح اور وضاحت بھی کرنا جاہتا ہوں میں تمہارے سوال کا جواب محض رضائے خداوندی کے کے دے رہا ہوں' اگرچہ آج کے بعض نادان اور ناواقف لوگ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ پر مختف اعتراضات کر کے آپ کے علمی اور ققیمی مقام کو مکتر کرنے کی سعی بے حاصل کرتے رہتے ہیں اس بغض و حمد کی وجہ سے میہ مشہور کرتے ہیں کہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنه کو تو قرآن مجید حظ ت تھا۔ اپنی روایتیں غلط بیان کرتے تھے حالانکہ آپ کے کمال علم کا ایک زمانہ گواہ ہے اور امت کے تمام انصاف بیند اہل علم اس بات پر متفق ہیں کہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ ایک با کمال نقیہ تھے۔ میں نے اپنے مامول ابوالعباس احمد بن محمد سے سنا تھا کہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنه رمضا میں ساٹھ قرآن پاک ختم کیا کرتے تھے۔ ایک دن کو ختم کرتے اور ایک رات کو۔ ای طرح اس شافعی رضی اللہ تعالیٰ عنه بھی روزانہ ایک قرآن مجید ختم کیا کرتے تھے۔ یہ بات کسی دلیل کی علقہ نہیں کہ آج خطہ زمین پر کوئی ایبا فقیہ اور عالم نہیں جو امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا مقابلہ کر سکے بلکہ ہم یوں کمہ سکتے ہیں کہ آج برے سے برا امام بھی آپ کے وسترخوان علم کا فیض یافت سے اور دنیا بھرکے اہل فضل و کمال آپ کی مدح سرائی کرتے ہیں۔

ایک حدیث : حفرت ابن عباس رضی الله تعالی عنه کی ایک حدیث ہے که رسول الله صلی 🛋

عليه وآله وملم نے مجھے فرمایا اشراف امتی حمله القر آن اصحاب الليل 🔾 ميري امت

کے برگزیدہ وہ لوگ ہیں جو قرآن پاک کے حافظ اور شب بیدار ہیں۔ وہ شخ جنہوں نے بید روایت بیان کی ہے وہ احمد بن ابراہیم اساعیل حافظ قرآن اور صاحب الصحیح ہیں انہوں نے امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے حدیث پڑھی تھی اور قرات قرآن سیکھی تھی۔ اننی میں محمد بن الحسن ابویوسف اور ایک بہت پڑی جماعت تھی۔ ان حضرات نے آپ سے ایک ایک لفظ اور ایک ایک حرف کی قرآت سیکھی تھی اور یہ حضرات پورے انادے قرات کے مختلف انداز کو بیان کرتے ہیں۔

حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ رات بھر قرآن پاک کی قرات کے ساتھ تلاوت فرمات ہے ساتھ ورات بھر قرآن پاک کی قرات کے ساتھ تلاوت فرمات سے میں سے کئی بار امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو رمضان میں قرات پڑھتے سا۔ وہ مختلف قرائنوں میں قرات پڑھتے اور ابنی پہندیدہ قراتوں کو اوا فرماتے۔ آپ نے وہ انداز اختیار کیا تھا جو صحابہ کرام اور تا بعین رضوان اللہ علیم الجمعین سے آپ تک پہنچا تھا۔

#### فاتحتهالكتاب

محر بن الحن شیبانی رحمتہ اللہ علیہ فرمایا کرتے تھے کہ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ ملک یوم اللہ یعنی بہ صیغہ فصل اور " یوم " کو مفعول بنا کر پڑھا کرتے تھے اسی طرح ابوحیوہ بن شریح بن بزید اور دو سرے ائمہ قرات پڑھا کرتے تھے۔ ابو بکر مجاہد روافید نے فرمایا امام حسن بھری روافید اور یحیٰ بن عمر بھی ایسے بی پڑھا کرتے تھے۔ اور یکیٰ بن عمر بھی ایسے بی پڑھا کرتے تھے۔

#### ورة القره

امام محرکی روایت ہے کہ حضرت امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ واذا قبیل لھم کو (سا) سے
پڑھتے تھے۔ ایسے ہی امام کسائی اور بعقوب حضری پڑھا کرتے تھے۔ ایک روایت بیں ہے کہ اولیں
بھی ایسے پڑھا کرتے تھے۔ یہ قول بواؤ مکمورۃ کے ساتھ ہے کیونکہ یہ قول سے مشتق ہے اس کے
فعل کی عین کے بالقابل وزن میں ورد ہے۔ اس پر کمرہ ثقبل ہے اس لئے وہ قاف کو منتقل کر دی
گئے۔ پھرواد سے تبدیل ہوئی قاف کے کمرہ کی وجہ سے جیسے علم العرف کا قاعدہ ہے۔
امام محمد روائیے فرماتے ہیں کہ امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ واذا لا قوالذین الف کے ساتھ

FLY

مناقب إمام اعظم

بروزن فاعلوا برها كرتے تھے ابى طرح حضرت زيد بن على رضى الله تعالى عنه يعقوب حضرى اور يمانى بھى برهاكرتے تھے۔

بعض قراء نے تشابہت علینا کو جمع اور ثقیل کر کے پڑھا ہے قراۃ امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عند کی ہے اور اصل تشابہ کی ہے اور شین میں مرغم کر دیا جاتا تھا۔

#### سورة آل عمران

المام محمد مرافید روایت کرتے ہیں کہ ملاء الارض کو امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے میں ترک کرکے پڑھا کرتے میں این انداز میں پڑھا کرتے سے۔ اس طرح دو سرے مشہور قاری قنبل ابن کیر(ائمہ قرات) کی روایات ہیں۔

ابو زہیر عبدالرحمٰن بن معبد الدوی فرماتے ہیں کہ میں نے امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالی عدد اوالوالعلم قیما بالقسط ﴿ (قیم) به تشدید یا بغیرالف پڑھا کرتے تھے۔ علقمہ بھی ای طرح پڑھا کرتے تھے۔ امام احمد یکی نحوی نے فرمایا کہ القیم بروزن جید ہے۔ بعض حفرات اسے عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالی عنہ کی قرات لکھتے ہیں۔

امام محمر بن الحن كى روايت ہے كه ولله ميراث السموات والارض ﴿ يُل الله الوصنيفه رضى الله تعالى عنه نے بكر بردها يس نے بھى بعض قراء كے سامنے الله بى بردها تھا۔ يہ قرات حضرت نافع مالئيد نے بھى افتياركى تھى اور اس سے مروى ہے زاد دو لفظوں كے درميان يوسی الله وعدم الله كے ہے۔

#### سورة النساء

امام محد بن محد ملطید کی روایت میں ہے کہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عند کان لم تکن کا ""
"آ" کے ساتھ پڑھا ہے اس کی حمیر" المودة "کی طرف راج ہے ایسے ہی ابن کیر کیقوب الحفری بھی پڑھا کرتے ہے۔ دوس کے عاصم سے بھی یمی روایت سے سے اس کی روایت سے اس

-4-0

عبدالوارث کے طریق سے ابو عمر سے پڑھا ہے۔ ان یدعون من دونه الا اثنا اہام ابوطیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنه کی تھی۔ "اثنا"" " رضی اللہ تعالیٰ عنه کی قرات ہے۔ یمی قرات عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالیٰ عنه کی تھی۔ "اثناً" " ونن "کی جمع ہے" اجوہ" کی طرح اس کی واو ہمزہ سے تبدیل ہوئی ہے۔ اثنا پڑھا گیا۔

#### ورة الانعام

ام محر بن الحن رحمته الله عليه كى روايت بكه امام ابوطنيفه رضى الله تعالى عنه فبهديهم افتديه بإها كرتے تھے۔ بكر اور ابن عامركى بھى يمى قراة ب- ابن ذكوان كى روايت ميں بھى الله بى به بى جد ابوعلى الفارس كى بھى يمى قرات ب انہوں نے استدالل اس سے يه كيا- مصدر مراد بى بى جد ابوعلى الفارس كى بھى يمى قرات ب انہوں نے استدالل اس سے يه كيا- مصدر مراد بى بى بى بار كويا كما كيا ہے۔ اقتداقتداه بحر بكر ما - افتداء سے كنايہ ب اور يہ جت بمتر ب اس ليے به بار كيا كيا تو يه كنايہ ب اور كنايات ما بركرو بردهنا جائز ب

ابو زہیر دوی فرماتے ہیں کہ میں نے امام ابوضیقہ رضی اللہ تعالی عنہ سے سنا آپ نے پڑھا فسن ابصر فلنفسه ومن اعمی فعلیها امام محمد روائید کی روایت ہے کہ امام ابوضیقہ رضی اللہ تعالی عنہ لا تنفع نفستا " آ" کے ساتھ نفس مرفوع مروی ہے۔ ابوالفضل نے فرمایا کہ یہ ضعیف روایت ہے۔ امام محمد روائید کی روایت میں فله عشر کی تنوین کے ساتھ امام ابوضیقہ قرات کیا کرتے تھے۔ امثالها عشر کی صفت لام کو رفع کر کے امام ابوضیقہ رحمتہ اللہ علیہ قرات کیا کرتے تھے۔ امثالها عشر کی صفت لام کو رفع کر کے امام ابوضیقہ رحمتہ اللہ علیہ قرات کیا کرتے تھے۔ یوقوب حضرفی وغیرہ کی قراة بھی ہی ہے۔

#### مورة الاعراف

روایت محر بن حن ہے کہ امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عند نے "معائش" ہمزہ اور مدکے ماتھ پڑھا ہے۔ عرج اور نافع کی قراۃ جیسا کہ خارجہ کی روایت میں ہے۔ المازنی نے فرمایا کہ ہمزہ سے پڑھنا خطا ہے اس لیے کہ یہ عیش سے ہے اور جس نے معائیش پڑھا ہے تو اس کا مقصد لفظ پر ہوتا خطا ہے اس لیے کہ یہ عیش سے ہور جس نے معائیش پڑھا ہے تو اس کا مقصد لفظ پر ہوتا ہے وہن میں یا کو ہمزہ سے تبدیل کرنا) یہ لفظ رسائل کے وزن پر ہوگا۔ "مسنی السوہ" کو امام

مكتبه تنافريه و مكتبه تبويه و

ابوصنیفہ رضی اللہ تعالی عند نے یا ساکن سے پڑھا ہے اور سلیم بھی اس طرح روایت کرتے ہیں۔

## سورة الانفال وتوبير

امام محمر بن الحن كى روايت بك وليجدوا فيكم غلظة عنم غين برها كيا بك قراة عاصم سه روايت بك العلاء سه مروى ب انهول نے فرمايا كه لغت من كما جاتا ب غلظة غلظة و غلظة

الما الاستان المسيعة الأعالية في ملاحديث كما المعالمة والم

## سورة يونس

امام محمد ملینی کی روایت کے مطابق و آخر دعواهم ان الحمد لله رب العالمین به فتح نون اور مشدد اور دال مدضوبه - ایسے بی یحقوب الحفری نے پڑھا۔ یہ روایت حفزت امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے جاری ہوئی ہے۔ فالیوم 'ننجیک بابدانک لنکون لمن خلقک امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے اسے خاو قاف اور فتح اللام سے پڑھا ہے اور ننجیک بھی پڑھا ہے۔ البریری کی قرات بھی ہی ہے۔ الکروری نے الیددی سے لکھا ہے۔

#### سورهٔ پوسف

امام ابویوسف رونی نے فرمایا مجھے امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عند نے فرمایا کہ تم اس آیت کو کھے پڑھتے ہو لایا تیکھما طعام ترزقناہ میں عرض کی ترزقناہ میں بکر نون پڑھتا ہوں۔ آپ نے فرمایا نہیں یہ بضم نون ہے۔ ابوالفضل نے فرمایا میں اس قرات کی تائید میں کسی قاری ہے

حضرت امام ابو حذیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی قرات اختیار کرنے کے بے شار طریقے استعال کے گئے ہیں۔ یہ ایک نمایت ہی نئی طریقہ ہے جس کی تضیالت کو بیان کرنا ضروری نہیں جانے ' یہ ترجمہ کرتے وقت قار کین کرام سے معذرت کے ساتھ قرات کے مختمر طریقے لکھ دیئے گئے ہیں مالانکہ اس کتاب میں بچاس قرانوں کو بردی تفصیل سے بیان کیا گیا ہے۔ بعض قرائتوں کے وو برا ' بعض کے دو سو اور بعض کے نوے طریقے بیان کیئے گئے ہیں اور مولف علام نے بتایا ہے کہ بی نے اس کتاب کو صرف دو اماموں لیعنی امام ابو حذیفہ رضی اللہ تعالی عنہ اور امام شافعی مرافیج کے میں نے اس کتاب کو صرف دو اماموں لیعنی امام ابو حذیفہ رضی اللہ تعالی عنہ اور امام شافعی مرافیج کے میں نے اس کتاب کو صرف دو اماموں لیعنی امام ابو حذیفہ رضی اللہ تعالی عنہ اور امام شافعی مرافیج

مصف علام فراتے ہیں کہ قرات کی مشہور کتاب " الکائل " (جس سے ہم نے استفادہ کیا ہے) کے مولف نے بتایا ہے کہ جب ہیں اپنی بہتی یکرہ سے نکلا (یہ بہتی وسط مغرب میں ہے) تو دش تک سفر کرتا گیا (روش وسط المشرق میں واقع ہے) تو میں ہرایک شراور قریہ کی زیارت کرتا گیا۔ ہر شہر میں داخل ہوتا وہاں کے تا تاریوں سے ملاقات کرتا میں اس سفر میں اپنے راستے کے ایم یا کین تمام بیدائی ور بیا کی تمام میدائی ور بیاڑی علاقے دکھیے 'آباد اور غیر آباد وہاں کے تا تاریوں سے ملا پھر سفر میں اردگرد کے تمام میدائی ور بیاڑی علاقے دکھیے 'آباد اور غیر آباد علاقے دکھیے۔ آباد اور غیر آباد بستیوں میں گیا اور کی سے دیا قرات کے قواعد اور روایات سکھنے سے اجتناب نہیں کیا۔ مرد 'عورت' چھوٹے' بڑے غرضیکہ مراکب نے اکتساب فیض کرتا گیا۔ میں تر تالیس سال اس مشن پر رہا اور اکثر سفر میں رہا۔ بھوک' میں ناقر و فاقہ کی بھی پرواہ نہیں گی۔ رات دن ای کام میں مصوف رہا۔ ہر قراہ سے پانچ جج بلکہ میں اساتذہ سے ہیں تمیں طریقے یاد کیئے اور اس طرح اپنی کتاب " الکائل " مرتب کی۔

یاد رہے کہ " الکال " کے مصنف رحمتہ اللہ علیہ نامینا تھے۔ آپ نے اپنی شبانہ روز کاوش مے تمام قراتیں زبانی یاد رکھیں۔

" المناقب " كے مولف علام امام موفق رحمته الله عليه لكھتے ہيں كه اس كتاب كى اجازت سي الله الوالعلاء الحن بن احمد ابن الحن العظار الحمدانی رحمته الله عليه نے دی- انہيں سي الحازت اول سے آخر تك المقرى ابوالعز الواسطى رحمته الله عليه سے ملى تقی- انہوں نے مصنف

الیشکری (نابینا حافظ) سے پڑھی تھی ہے اس زمانے کی بات ہے جب " الکائل" کے مصنف گری الیسکری (نابینا حافظ) سے پڑھی تھی ہے اس زمانے کی بات ہے جب " الکائل" کے مصنف گری بغداد میں تشریف فرمات حاصل کروں جسے امام ابو حلیفہ رہی الله تعالی عند کی روایت سے لیا گیا ہے چنانچہ میں نے آپ کی روایات کو بیان کرنے کو ترجیح دی۔ الله تعالی ہم سب پر اپنی ہزاروں رحمیں نازل فرمائے۔ یہ چند اشعار ہدیہ قار کین ہیں۔

لابى حنيفة ذى الفخار قراة ب مشهورة منخولة غراه مرضت على القراء فى ايامه فتعجبت من حسنها القراء لله در ابى حنيفة انه خضعت له القراء والفقهاء خلف الصحابة كلهم فى علمه فتضالت الجلاله الخلفاء سلطان من فى الارض من فقهائها وهم اذا افتوا له اصلاء ان المياء كثيرة لكنه فضل المياه جميعها صلاء وبرغم انف حاسديه ذكره شرقًا و غربًا مسكة ذفراء

قرجمه: امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی قرات واضح اور روش ہے۔ ان کے دور بیس بھی نے اپنی قرات وقت کے قراء کے سامنے سائی تو وہ جران رہ گئے۔ امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ بے پناہ انعامات ہوں کہ ان کے انداز قرات کے سامنے قاربوں اور فقها کی گردنیں جھک گئیں۔ سی کرام رضوان اللہ علیم اجمعین نے اپنے علوم سے حضرت امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو ہوا العام عطا فرمایا تھا اور وہ صحابہ کرام کے نائب تھے۔ یمی وجہ ہے کہ ان کے علم کے آگے وقت کے امام العام طفاء بھی وم نہ مار سکے۔ آپ ساری زمین پر فقها کے سلطان ہیں۔ آپ جب فتوکی ویتے ہیں تو قرام فیلے بھی وم نہ مار سکے۔ آپ ساری زمین پر فقها کے سلطان ہیں۔ آپ جب فتوکی ویتے ہیں تو قرام فیلے بھی وکھائی ویتے ہیں۔ بیک علم کے سمندروں سے فیلے بھی وکھائی ویتے ہیں۔ بینک علم کے سمندروں سے فیلے نوازہ وسیع و عربین ہے۔ آب کے حاسدوں کے ناک تھس تھس گئے ہیں اور آپ کا ذکر فیلے شرقا غربا مشک خالص کی طرح پھیلا ہوا ہے اور ساری دنیا کو ممکا رہا ہے۔

مکتبه نبویه /////////

## امام ابوحنیفہ کے منہ سے نکلے ہوئے الفاظ یادگارز مانہ بن گے

امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے علمی کمالات کا ایک پہلو بڑا روش ہے کہ آپ کے منہ سے جو لفظ نکا وہ آنے والے اہل علم کے لیئے ایک سند بن گیا۔ امام ابویوسف ریٹیے فرماتے ہیں کہ میں نے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے سنا تھا' آپ نے فرمایا میں نے گناہ میں ذات ویکھی اس کے ترک سے مروت کو اختیار کیا تو وہ دیات بن گئی۔

امام ابوالحاس المرغينائي نے فرمايا كه جب ميں نے امام ابوطنيفه رضى الله تعالى عنه كى به بات لوگوں تك پنچائى تو انہوں نے نمايت غور و خوض كے بعد تنكيم كياكه واقعى امام ابوطنيفه رضى الله تعالى عنه كے الفاظ بے مثال ہيں۔

يروى الرواة لنا مقالا مرتضى لابي حنيفة كان فيه محسنا ان المعاصى نذلة فتركتها . لمروة حتٰى يصير تدينا

ترجمہ: ہمیں راوبوں نے ایک پندیدہ قول روایت کیا جو امام آلبو صنیفہ کا مقولہ تھا اور وہ بهترین ہے وہ یہ کہ معاصی ذات ہے اس کا ترک مروت ہے اور اس مروت کا متیجہ دیانت ہے۔

## امام ابو حنيفه تا بعي تص

امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ بلاشک و شبہ تابعی تھے آپ کو تیسرا دور ( زمانہ ) ملا اور اس زمانے کے متعلق نبی کریم صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم نے خیرو عدالت کی پیشین گوئی فرمائی تھی۔ الم ابو صنیفہ اس دور کے آخری حصہ میں تھے اور ان صحابہ کرام کی زیارت کی جو صحابہ کرام کی جماعت کے آخری دور کے تھے۔ آپ نے چھ سات صحابہ کرام کی زیارت کی تھی۔ بیہ بات صحیح ترین موایات میں ملتی ہے۔ بھر آپ نے ان کی زبان سے احادیث نبوی بھی سنی تھیں۔ ہم ان حضرات کی تفصیل اس کتاب کے پہلے حصہ میں کر آئے ہیں۔

حضرت امام ابوحنیفہ نے قرن ٹائی کے آخر اور قرن ٹالٹ کی ابتداء میں تعلیم و تدریس کا کام شروع کر دیا تھا۔ اس قرن ٹالٹ میں آپ کا انتقال ہوا تھا۔ آپ مشھور له 'بالخیر والعدالت تھے۔ اس دور میں آپ جوان ہوئے 'تعلیم حاصل کی پھرلوگوں تک مسائل دینیه پنچائے اور فتوی دیے میں اہم کردار اداکیا۔ آپ نے زندگی کا سارا حصہ رشد و ہدایت میں گزارا تھا۔

امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی نشو و نما اس دور میں ہوئی تھی جے نبی کریم صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم نے خیرو عدالت کا زمانہ قرار دیا۔ "خیرالقرون " کے بعد یمی بهترین دور تھا' اس کے بعد عالم اسلام میں سیاسی اور معاشرتی بے راہ روی کا آغاز ہوا۔ حضور طبیع کے زمانے کے بعد جوں جول وقت گزر تا گیا معاشرتی زندگی میں انحطاط آ تا گیا۔ ہم دیکھتے ہیں کہ روز بروز خرابیاں پیدا ہو رہی ہیں' فقہ و دیانت میں وہ بات دکھائی نہیں ویتی جو پہلے زمانوں میں بائی جاتی تھی' صدق و امانت ختم ہوتی جارہی ہے۔ حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم نے ان ادوار کے لیئے جو حدیث فرمائی اس کے جارہی ہے۔ حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم نے ان ادوار کے لیئے جو حدیث فرمائی اس کے لیئے تربیت کا نمانہ ہے' یعنی لفظ " ثم " لایا گیا ہے۔ قرآن پاک نے بھی اس دور کو اولم یرو انا نا تبی الارض ننقصها من اطرافها ہو اس آیت کریمہ کی مضرین نے مفیسر فرماتے ہوئے لکھا ہے کہ ایک وقت آئے گا کہ زمین سے بہتر اور اہل علم اٹھے مفرین نے مفیسر فرماتے ہوئے لکھا ہے کہ ایک وقت آئے گا کہ زمین سے بہتر اور اہل علم اٹھے جائیں گے ( یعنی اجھے لوگ فوت ہو جائیں گے ) اس لیئے حضرت لیام ابو حفیفہ رضی اللہ تحالی عنہ جائیں گے ( یعنی اجھے لوگ فوت ہو جائیں گے ) اس لیئے حضرت لیام ابو حفیفہ رضی اللہ تحالی عنہ خرمایا کہ مبلمانوں کی معاشرت کی بنیاد عدالت پر ہے' یہ دو سری صفات پر غالب رہتی ہے' آپ کا دور بھی عدل و صدق کا زمانہ تھا۔

امام ابوبوسف اور امام ابو محمد رضی الله تعالی عنما فرماتے ہیں کہ حاکم یا قاضی اس وقت تک گواہ قبول نہ کرے جب تک گواہی دینے والے کی صدافت کی تقدیق نہ کی جائے' اگر مخالف اس کی گواہی پر اعتراض نہ بھی کرے پھر بھی گواہی دینے والے کی صدافت کی تقدیق کرنا ضروری ہے۔ ان

ونوں جھوٹ اور بددیانتی کا دور دورہ ہے۔ ان دونوں بزرگوں نے فرمایا اگر امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالیٰ عدم آج کے لوگوں کو دیکھ لیتے تو وہ فتوے جاری نہ کرتے جو آپ نے جاری کیئے تھے۔ آپ کے زمانے کے لوگ سے تھے، ویانترار تھے، خود امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ عدل و دیانت کے ستون سے۔ آپ کی پر بیزگاری مثالی تھی۔ آپ کے سامنے ویانترار لوگ مسائل لاتے تو آپ فتوئی دیا کرتے تھے، آنے والے زمانوں میں ائمہ کرام اور قاضیوں کو لوگوں کی دروغ گوئی کے سامنے فیصلے کرتے بڑی دفت محسوس ہوئی۔ نبی پاک مائی میں شریعت کی حفاظت کس قدر مشکل تھی، اللہ تعالیٰ نے اس چیز کو اینے ذمہ لگایا انا نحن نزلنا الذکر وانا لہ لحافظون ﴿ " بیشک اللہ تعالیٰ نے اس کیام کو نازل فرمایا اور وہی اس کی حفاظت کرنے والا ہے۔"

الم ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے سب سے پہلے فقہ کی تدوین کی تھی۔ آپ سے پہلے سائل بیان کیئے جاتے تھے مگر جس ترتیب اور ضبط سے امام صاحب نے رواج دیا وہ آپ کو اولیت تھی۔ صحابہ کرام نے حضور صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم کی احادیث اور عمل کی روشنی میں فیصلے فرمائے' مر فقہ کو مرتب نہیں فرمایا اور نہ ہی ان قوانین کے متعلق کتابیں لکھیں' انہیں اپنی ذہانت اور یادداشت پر اعتماد تھا اور اس اعتماد کی روشنی میں فیلے فرمایا کرتے تھے۔ ان کے فیلے علم و فضل کے خزانے تھے' ان کے وماغ علم و فضل کے صندوق تھے' امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عند صحابہ کرام کے آخرین دور میں آئے' آپ نے دیکھا کہ علم منتشر ہو تا جارہا ہے' احادیث بیان کرنے والے ایک ایک كر كے رخصت ہو رہے ہيں 'آپ نے سوچاكد اگر يمي كيفيت ربى تو نالل لوگ اے اپني مرضى كے مطابق لے جائیں گے اور یہ خزانہ ضائع ہو جائے گا۔ اس لیئے حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے فرمایا تھاکہ " ایک وقت آنے والا ہے کہ علم قبض کرلیا جائے گا کوگوں کے سینے علم سے خالی ہو جائیں گے' علماء کرام اور اہل علم مرجائیں گے تو علم اٹھ جائے گا اور مجھے ڈر ہے کہ لوگ گراہ نہ ہونے لگیں۔" ان حالات میں امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے احادیث پاک کو مرتب کیا۔ علم فقہ کی بنیاد رکھی' اس کی تدوین کے مختلف ابواب کو مرتب کیا اور اس پر کتابیں لکھیں اور دوسرے اہل علم سے تکھوا کیں۔

یہ بات ذہن نشین کر لینی چاہے کہ فقہ کا آغاز طمارت سے ہوتا ہے' اس کے بعد دو سری

مناقب امام اعظم مكتبه نبوي

عباوات ہوتی ہیں۔ اس کے بعد وین معاملات کی خدمت ہوتی ہے اور فن میراث پر فقہ ختم ہو جاتی ہے۔ علم فقہ میں طمارت عباوات کا سب سے پہلے اس لیئے اہتمام کیا گیا ہے کہ قیامت کے ون سب سے پہلے جو سوال ہو گا وہ عباوت لیعنی نماز کا ہو گا اور نماز طمارت کے بغیر جائز نہیں ہو سکت نماز اخص العبادات ہے اور اہم ترین رکن اسلام ہے۔ معاملات عباوات کے بعد آتے ہیں اس کی سخیل کے بعد وصایا اور مواریث کو مرتب کیا گیا 'یہ فقہ کے آخری حصہ میں کیا گیا تاکہ انسان کی سخیل کے بعد وصایا اور مواریث کو مرتب کیا گیا' یہ فقہ کے آخری حصہ میں کیا گیا تاکہ انسان کی محالات شریعت کے مطابق درست طے پاتے جائیں۔ آخری زندگی بلکہ موت کے بعد کی زندگی کے معاملات شریعت کے مطابق درست طے پاتے جائیں۔ مارے نزدیک شریعت کی وضاحت کے لیئے فقہ نے کتنا خوبصورت آغاز کیا اور کس قدر اچھا اختام مارے بید امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی تدوین فقہ نمایت موثر اور اہم خابت ہوئی اس لیے الم شافعی ریائیہ فرمایا کرتے تھے کہ " تمام علماے کرام امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے عیال ہیں۔ "

ابن سری رحمتہ اللہ علیہ کے سامنے آپ کے ایک شاگرد نے حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنه کی ندمت کی تو آپ نے براشفتہ ہو کر فرمایا یاد رکھو حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ سے علوم شربیت کے تین چوتھائی پر واقف ہیں جبکہ دو سرے اہل علم کے حصہ میں علم کا صرف چوتھا حس آیا ہے۔ شاگردنے وضاحت طلب کی تو آپ نے فرمایا علم تو سوال و جواب کا نام ہے اور سوالات کے ورست جوابات دینے کا طریقہ سب سے پہلے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے ایجاد کیا۔ ان جوابات میں بعض نمایت مکمل اور اہم تھے' بعض جواب وضاحت طلب تھے' یہ طریقہ نصف العم ہے۔ ہم اگر صحیح جوابات کو سامنے رکھیں تو ناقص جوابات کے مقابلہ میں کہیں زیادہ ہیں اور سے محس چوتھا حصہ رہ جاتے ہیں۔ امام ابوضیفہ رضی اللہ تحالی عنہ نے اپنے معاصرین علماء سے جو علمی محت کی ہیں انہیں اوھورا نہیں چھوڑا بلکہ انہیں بورے ولائل سے قائل کیا اور راہ راست پر لائے۔ تعالی نے این حبیب پاک صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم کو آپ کی شریعت اور علوم کی حفاظت کی صاحب دی تھی اس ضانت کو بردئے تحقیق امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ نے اشاعت دی' علوم شریعت مرتب فرمایا اگر کسی کو کوئی خطا واقعہ ہوتی تو اس کا ایک طریقہ دیا گیا اور امام ابوصیفہ رضی اللہ تھا عنہ کے نزدیک سے خطا یا غلطی اجتمادی غلطی قرار دی گئی اور سے بات متفق علیہ ہے کہ اجتمادی مسلم غلطی نہیں ہوا کرتی اور اس پر کسی قتم کی گرفت نہیں ہوتی۔

## علم فرائض کی تدوین

ونیائے اسلام میں سب سے پہلے فقیہ امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ بیں جنہوں نے علم فرائص اور میراث کو مرتب فرمایا' اس پر کتابیں کھیں' نبی کریم صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم نے فرمایا شریعت میں سب سے اہم علم علم میراث ہے' اسے سیھو تاکہ اسلام کا معاشرتی نظام ورست رہے۔ یہ نصف انعلم ہے' علم میراث کی شرائط میں سب سے پہلے حضرت امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے کتاب کسی ولایاب کا تب ان یک نب کما علمہ اللہ ہے (البقرہ) کے مصدات قلم اٹھایا۔ اس آیت کریمہ سے یہ ثابت کرنا واضح ہے کہ اللہ تعالیٰ خود تعلیم دینے والا ہے مگراس علم کی شرائط کو مرتب کرنا علم کی بے بناہ خدمت ہے جے امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے سرانجام کی شرائط کو مرتب کرنا علم کی بے بناہ خدمت ہے جے امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے سرانجام

امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عند نے اسلام میں موجود تمام نداہب اور افکار کا ذکر فرمایا تھا اس پر آپ نے مقالات کھے۔ فقد کی روشنی میں تمام نداہب کے نظریات کو جمع کر کے ایک اصول مرتب فرمایا' آپ کا مقصد سے تھا کہ کل قاضی یا حاکم اپنی مرضی سے فیطے نہ کرتا پجرے بلکہ اس شریعت کی روشنی میں علم فقہ کے مرتبہ اصولوں پر کاربند رہ کر آگے بردھنا ہوگا اور کوئی حاکم ان اصولوں کو توڑنے کی جرات نہ کرے اور اپنی مرضی سے فیطے نہ کر سکے۔

آج بعض لوگ ہے کہتے ہوئے نہیں شرماتے کہ ہے ممائل تو اہام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے پہلے مرتب ہو چکے تھے 'ہم انہیں گذارش کرتے ہیں کہ وہ اہام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے پہلے کی ایک کتاب تو سامنے لائیں جس میں شریعت کے ان مسائل کو مرتب کیا گیا ہو' اس سلسلہ میں ہمیں نہ تو صحابہ کرام کی کوئی کتاب یا تحریر ملتی ہے نہ تابعین کی۔ آپ اس بات سے اتفاق کریں گے کہ اہام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے پہلے ایس کوئی کوشش' کوئی کتاب سامنے نہیں آئی' یمی وجہ ہے کہ ایسے لوگ مہموت ہو کر رہ جاتے ہیں اور انہیں تسلیم کرنا پڑتا ہے کہ واقعی علم شریعت کو فقتی انداز میں مرتب کرنا اہام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ ہی کا کام ہے۔

بعض محققین علم نے فرمایا ہے کہ حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے پانچ لاکھ شرعی

مناقب امام اعظم

۔ ممائل کو مرتب فرمایا تھا۔ آپ کی کتابیں اور آپ کے شاگردوں کی کتابیں اس بات کی دلیل ہیں۔ آپ کے نظریات اتنے پختہ ہیں کہ آپ کے مخالف بھی ان ممائل سے استفادہ کرتے ہیں اور لیے ایسے مکتے اور دقیقے تلاش کرتے ہیں جس سے وہ اپنے جوابات کو متند بنا لیتے ہیں۔ ایسے ممائل کا اہل عرب نے لیا' پھر جرو مقابلہ علماء نے حاصل کیا۔

## ابوبكررازي رافيه كاايك تاثر

ابو بكر رازى ماليند نے اپنی آليف " جامع صغير" ميں لکھا ہے كہ ميں " مدينة السلام سے شرح " جامع كبير" پڑھا كرتا تھا' اس ميں مجھے علم نحو كے ماہرين كے بعض مسائل پڑھنا تھے' ميں استاد ابوعلی الحن بن عبدالغفار الفارى تھے۔ آپ اس كتاب كو بڑے ماہرانہ انداز ميں پڑھايا كے تھے۔ وہ فرمايا كرتے تھے كہ اس كتاب كے مصنف نے بہت سے مسائل امام ابو حنيفہ رضى اللہ تھا عنہ كے مسائل وہى مختص وضع كر سكتا ہے جو فن ميں خليل اور سيويہ كا ہم پلہ ہو۔ امام ابو حنيفہ رضى اللہ تعالى عنہ نے ندہب كے بيان ميں محل مسائل كو جس انداز سے حل كيا ہے۔ وہ ماہرين نحو سے بھى داد وصول كرتے ہيں۔ اس علم كى تھے مسائل كو جس انداز سے حل كيا ہے۔ وہ ماہرين نحو سے بھى داد وصول كرتے ہيں۔ اس علم كى تھے بنات آپ كے ذہن ميں تھيں' وہ علم كے امام تھے' علم كے بحر عميق تھے' وہ سمندر كى گرائیں كے مالك تھے' ان كے علم كى بلندياں بہاڑوں كو بست كر ديا كرتی تھيں' المدنبى نے كيا خوب كما

امام رست للعلم في كنه صدره جبال جبال الارض في جنبها قف

ترجمہ : وہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ جس کے سینے کی گمرائیوں میں علم موجزن تھا' وہ عظم ایسا بلند و بالا پہاڑتھ کہ ونیا کے تمام بہاڑ آپ کے سامنے بہت وکھائی دیتے تھے۔

ہم دو سرے الفاظ میں یوں کہہ سکتے ہیں کہ جس شخص نے کسی فن کو حاصل کیا وہ اپ سے میں اور اپنے بعد کے زمانہ میں بھی اپنی تمام قابلیت اور ترقی کے باوجود اس فن میں تفکی محس کرے گا اور احساس کمتری کا شکار رہے گا گر امام ابو حذیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ اپنے علوم پر اس سے پختہ اور صائب الرائے ہیں کہ قیامت تک اس میں کسی قتم کی محسوس نہیں کی جائے گا۔ علوم و فنون کے ساتھ ساتھ حفرت امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ عبادت و ریاضت میں باکمال شخصیت کے مالک تھے اور دیانت میں بے مثال شخصیت کے مالک تھے اور دیانت میں بے مثال شخصیت

آپ ج اور عمرہ کے لیئے سفر بر جاتے 'روزہ اور افطار پر پابندی فرماتے۔ ہم آپ کی عبادات اور افطار کی تفصیل سابقہ صفحات میں کر آئے ہیں۔ ہم حضرت امام اعظم مطفحہ کے اس انداز کو کرامت کمہ کتے ہیں 'ورنہ ایک انسان کے بس کی سے باتیں نہیں ہیں۔

## شوافع کے استدال پر ایک نگاہ

بعض شافعی علماء نے امام شافعی رحمت اللہ علیہ کو علمی اعتبار سے بردا مقام اور اہم قرار دیا ہے اور اس سلسلہ میں انہوں نے ولائل بھی ویتے ہیں' ہم ان کے بعض نظریات پیش کرتے ہیں۔

- (۱) حضور صلی الله علیه و آله و سلم کی ایک حدیث که الائمة من قریش که امامت اور سادت صرف قریش که امامت اور سادت صرف قریش کوئی حاصل رہے گی۔
- (٢) حضور صلى الله عليه وآله وسلم نے فرمايا قدموا قريش والا تقوموا قريش كو المات اور قيادت دو ان كى آگے نه برهو-
- ۳) تعلموا من قریش ولا تعلیمواهم قریش ے علم سیمو خواہ مخواہ ان کے استاد نہ
   بنو۔

ان احادیث کی روشنی میں شافعی علاء دلیل قائم کرتے ہوئے میہ نتیجہ اخذ کرتے ہیں کہ قرایش می امامت کریں 'قرایش ہی قیادت کریں 'قرایش ہی غلم دیں گے اور قرایش ہی راہنمائی کریں گے۔ امام شافعی دالیجہ قرایش ہیں لہذا ان کے بغیر کسی شخص کو علمی قیادت یا سیاسی اقتدار کی اجازت نہیں ہے۔ امام شافعی ابن عم النبی اور آپ ان کی اولاد سے ہیں لہذا ان کے رتبہ کو کوئی ود سرا نہیں پا سکتا۔

ہم ان حضرات کے ان دلائل کے جوابات میں گذارش کرتے ہیں کہ نب کو علم پر کوئی فرقت نہیں، علم و فقہ کے مقابلہ میں نب کی کوئی حیثیت نہیں۔ تفاہر میں حضرت لقمان رضی اللہ قابل عنہ کے متعلق لکھا ہے کہ وہ حبثی تھے، آپ کے ہونٹ برے برے تھے، پیڈلیاں خٹک اور

کرور تھیں اس کے باوجود اللہ تعالی نے اشیں ولقد انینا لقمان الحکمة ﴿ ہم نے ان تمام نقائص کے باوجود لقمان کو حکمت کی دولت سے نوازا تھا۔ حکمت معرفت البیه کی ایک شاخ ہے الذا علم و حکمت انسان کی جسمانی حیثیت کو نظر میں نہیں لاتے 'نہ ہی نسب و ذات کو اہمیت دیتے ہیں۔

مفرین نے لکھا ہے کہ قرآن پاک میں جمال جمال بھی لفظ حکمت لایا گیا ہے اس سے مراد "
علم فقہ " ہے۔ بعض نے حکمت سے مراد الاصاب فی القول لی ہے۔ وہ بات جو منتہی
برصواب ہو وہ حکمت ہے۔ یعنی حضرت لقمان کو وہ حکمت دی گئی جو بنی آدم کو عطا ہوئی ہے' انسیں
علم و خیر سے نوازا گیا۔

تاریخ اسلام میں ہم دیکھتے ہیں کہ صحابہ کرام کے دور سے لے کر آج تک اکثر الل علم اور شریعت سے واقف اکثر ائمہ قریش میں بلکہ ان میں سے اکثر موالی لیعنی آزاد کردہ غلام ہیں۔ کیا تابعین میں علاء کرام کی اکثریت غیر قریش نہیں ہے۔ جو عربی نسل ائمہ ہوئے ہیں ان میں سے بھی اکثر غیر قریش ہیں' وہ عرب کے مختلف علاقوں سے غلام بن کر آئے تھے۔

حضرت قاضی شریح مطینے غیر قرایش سے مگر حضرت عمرفاروق رضی اللہ تعالی عنہ اور حضرت علی کرم اللہ وجہ جیسے صحابہ کرام نے ان سے فتویٰ لیا اور اپنی خلافت میں قاضی مقرر فرمایا۔ حضرت علی رضی اللہ تعالی عنہ علم و فضل کے سمندر ہیں اور مرتبہ العلم کے بلند و بالا دروازے ہیں اس کے باوجود آپ قاضی شریح ربیانیہ سے فتویٰ لیا کرتے سے اور مسائل میں اکثر صحابہ کے فیصلوں پر آپ کی رائے پر اعتماد کرتے اور ترجیح دیا کرتے سے۔ صحابہ کا اجماع اس وقت تک قبول نہ فرماتے جب سے قاضی شریح اپنا فیصلہ صادر نہ فرما دیا کرتے۔

حفرت علقمہ بن قیس رضی اللہ تعالی عنہ حضرت عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالی عنہ کے شاگر و تھے گروہ قریشی نہیں تھے۔ جب ابن عباس رضی اللہ تعالی عنہ کے تعارت علقمہ رضی لئے تعالی عنہ کی موت کی خبر سی تو فرمایا آج علم فوت ہو گیا۔

## عمرو بن شرجيل نفتي المنابئة

آپ کا علمی مقام اور مرتبہ مشہور ہے۔ اکثر شافعی ائمہ نے آپ کے مبائل کو محبت کے

طور پر تسلیم کیا ہے۔ صحابہ کرام میں اس مئلہ پر بحث ہوئی کہ جس کی آگھ کو تکلیف ہو اور وہ سر جھکانے سے قاصر ہو وہ نماز کیے اوا کرے گا۔ حضرت عمرو بن شرجیل رضی اللہ تعالی عنہ نے فرمایا وہ ال كر نماذ اواكر سكتا ہے۔ عمرو بن شرجيل عبداللہ ابن عباس نے حضرت عبداللہ بن مسعود رضى الله تعالی عنهم کے شاکردوں علقمہ اسود اور مسروق سے فتوی پوچھا تھا تو آپ کو حضرت عمرو بن شرجیل کا جواب بند آیا۔ جس مخص نے حضرت عبداللہ بن عباس رضی اللہ تعالی عنہ سے فتوی وچھا اور ان کے فتویٰ کو پند فرمایا ان کے علم و جلالت میں کیا شک ہو سکتا ہے۔ حضرت عبداللہ بن ماس رضی اللہ تعالی عند بنوہاشم کے قرایش سے ہیں مرجس سے فتائی لیا جارہا ہے وہ غیرقرایش ہیں۔ حفرت أسود مفرت مسروق معرت ابوعبدالرحن سليمي ذرين حيش شفق بن سلمه اراہیم اور شعبی جیے جلیل القدر شریعت کی علوم کے ماہر مانے گئے ہیں۔ شعبی اتنے مقدر امام تھے کہ جب ابراہیم نخفی رحمتہ اللہ علیہ فوت ہوئے تو آپ نے فرمایا آج اہل کوف کا فقیہ اور امام وت ہو گیا ہے۔ لوگوں نے شعبی سے کما آپ ایما کمہ رہے ہیں طال نکہ آپ خود بھی کوفہ کے فقیہ اور امام بیں! آپ نے فرمایا میں ابراہیم نخفی کو اہل کوفه کا عظیم فقیه تشلیم کرتا ہوں۔ پھر آپ نے قرمایا آج اہل کمہ کا فقیہ ابراہیم فوت ہو گیا ہے۔ لوگوں نے تعجب سے یوچھا آپ کیا فرما رہے ہیں عُلانکہ مکہ میں مجاہد و عطاء جیسے ائمہ موجود ہیں۔ آپ نے پھر فرمایا آج اہل مدینہ کا فقیہ فوت ہو گیا' وگول نے عرض کی مدینہ منورہ میں سالم بن عبداللہ عودہ بن الزبیر موجود ہیں آپ نے یہ سنتے ہوئے مجی فرمایا آج دنیا کا فقیہ اعظم فوت ہو گیا ہے۔ غور فرمائے کہ ابراہیم نخفی کے علم و فقہ کو کتنے اعمادے تشکیم کیا جارہا ہے حالانکہ ریہ سب حضرات عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالی عنہ کے شاگرد تھے اور قریش نہیں تھے۔

حفرت علی رضی اللہ تعالی عنہ 'حفرت عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالی عنہ کے وصال کے بعد ایک بار کوفہ میں تشریف لائے تو آپ نے دیکھا کہ حضرت عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالی عنہ کے تلافہ مجد میں مند تدریس پر بیٹے فقہ کا درس دے رہیں ہیں مجد میں چار سو دواتیں پڑی ہیں لور لوگ ان کے درس کو لکھتے جارہے ہیں۔ آپ نے فرمایا ابن ام عبداللہ بن مسعود اس شرمیں ان حضرات کو چراغ بنا کر چھوڑ گئے ہیں۔

عبیرہ سلمانی سعید بن جبیر و حسن بھری ابن سیرین ابوالعالیہ ابوصالی باذام ہانی ہے سب قریش نہیں تھے ام ہانی کے غلام تھے۔ ان حضرات کے علاوہ ونیائے اسلام کے مختلف شہوں میں ایسے ائمہ موجود تھے جو قریش نہیں تھے۔ حجاز میں مجاہد عطاء طاؤس عرمہ نافع رضی اللہ تعالی عنهم جھے متند ائمہ تھے۔ یہ تمام کے تمام قریش نہیں تھے۔ شام میں مکول عمود بن دینار کی ابن کی تمام کے تمام موالی (آزاد شدہ غلام) تھے۔

#### نسب رسول مانيكم كامقام و مرتبه

شافعی حضرات کہتے ہیں کہ امام شافعی ریائیہ اولاد رسول مٹائیل سے تھے۔ قریش النسب تھے۔ ہم اس کا جواب ہی دے سکتے ہیں کہ امام شافعی ریائیہ کا نب حضور مٹائیلم کے خانوادہ سے عبد مناف سے ملتا ہے۔ امام شافعی ریائیہ آپ کے نانویں یا دسویں پشت سے ہیں یہ قاعدہ یکر غلط ہے کہ جو حضور نی کریم صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم کے داوا پرداوا سے نبیت نسبی رکھتا ہو وہ بھی حضور مٹائیلم کی اولا ایک کلائے گا۔ اس طرح تو تمام عرب قبائل حضور صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم کے ابن عم ہیں وہ کی سکسی مقام پر قریش کی جد سے ملیں گے اس طرح سارا عرب ہی ابن عبد رسول ہے اور حضور مٹائیلم کی اولاد سے کملائے گا۔ عرب کے کئی قبائل ایس جن کا نب نضر سے ملتا ہے' کئی قبائل ہیں جی اولاد سے ملتا ہے' کئی قبائل ہیں جی کا نب حضرت اساعیل علیہ السلام سے ملتا ہے' کیا یہ سارے قریش کملائیں گے اور اولاد ابن جد رسول کا مقام حاصل کریں گے ؟

## ائمه من قريش كي حديث يرايك نظر

ائمہ قرایش سے امام نماز مراد ہے یا علمی امام ' پھر کیا قرایش نماز کی امامت ' علم کی مند کے حقد ارجیں یا خلافت و حکومت کی قیادت کے بھی حقد ارجوں گے ؟ اگر قرایش کو صرف نماز کا امام صلے کر لیا جائے تو شافعی علاء کرام کی دلیل میں کوئی جان نہیں رہ جاتی سے بات قرآن ' حدیث اور اجمال کے خلاف ہے کہ غیر قریش امامت کا حقد ار نہیں ہو سکتا ہم نے کتاب اللہ سے حضرت لقمان کی حکمت اور علم کی فوقیت کو ثابت کیا ہے ' آپ کو اللہ تعالیٰ نے حکمت اور علم کا امام قرار دیا ہے۔ آپ

کی اقداء کی جاتی رہی ہے حالانکہ وہ قرایش نہ تھے ایک حبثی غلام تھے۔ حضور ما پیلم کی حدیث مبارکہ اصحابی کا لنجوم وبا یھم اقتدیتم اهتدیتم "میرے صحابہ ستاروں کی طرح ہیں انمی کی اقداء کرد تم ان سے ہدایت پاؤ گے۔" اس حدیث پاک میں ایس کوئی تخصیص نہیں کی کہ صحابی صرف قرایش ہے ہی ہو۔

حفرت معاذ رضی اللہ تعالی عنہ کو جب یمن کا قاضی بناکر بھیجا گیا تو حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم بذات خود کچھ راستہ آپ کو الوادع فرمانے کے لیئے گئے اور راستہ میں کچھ ارشادات فرماتے گئے اور انہیں یمن کا والی بناتے وقت ان مسائل پر وریانے کیا کہ وہ وہاں جاکر کس طرح فیلے کیا کریں گے۔ یہ صحابی معاذ بن جبل قریثی نہیں تھے انصاری تھے۔ گر حضور نے انہیں یمن کی مربرای اور قضاۃ (فیلے کرنے کا مختار) کے عہدے عنایت فرمائے۔

ان شواہد کی روشی میں ہم شوافع کے نظریہ کا رد کرتے ہیں اور ان کی توجہ ولاتے ہیں کہ صفور صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم نے قرایش کے جلیل القدر صحابہ کی موجودگی میں حضرت معاذ رضی اللہ علی عنہ کو یمن کا گورنر مقرر فرمایا تھا۔ شوافع کا بیہ خیال اجماع امت اور اجماع صحابہ کے نزدیک بھی علط ہے۔ مندرجہ بالا شواہد کے علاوہ دنیائے اسلام کے اکثر اتمہ موالی (غلام) ہوئے ہیں۔ یہ لوگ تقف اتوام اور مختلف علاقوں سے تعلق رکھتے تھے۔ حضرت عبداللہ 'ابوموی' حذیفہ رضی اللہ تعالی سے اور معرت ابوطریہ تجاز میں تھے۔ معاذ 'ابوامامہ شام میں تھے۔ ان اللہ علیہ و آلہ و سلم کی ظاہری زندگی کے معد والیان ممالک اسلامیہ تھے اور امامت و قیادت کے فرائض سرانجام ویتے رہے ہیں۔

اس کے علاوہ ساری امت کا اس بات پر اتفاق ہے کہ جب بھی شریعت کے مسائل کی وضاحت کی ضرورت پیش آئے اے امت کے فقیہ ہی سلجھائیں گے اور جب بھی بھی ایبا وقت آیا آئے ام امت کے فقیہ ہی سلجھائیں گے اور جب بھی بھی ایبا وقت آیا آئے ام ائمہ اور فقہاء نے اسلام کی خدمت کی ہے۔ آیسے موقعہ پر قریش یا غیرقریش کی شخصیص بھی سیس ہوئی بلکہ اسلامی سربراہ کو تھم دیا گیا ہے کہ وہ مشاورتی امور میں وقت کے چند اہل علم فقہ کے ایراور ورع و تقویٰ رکھنے والے لوگوں کو منتخب کرے۔ ان کے افراجات و ظائف بیت المال سے ادا کیئے جائیں تاکہ ان کے اہل و عیال معاشی طور پر فارغ البال ہو سکیں ایسے لوگوں میں قریش یا

ے غیرقریش کا امتیاز نہیں رکھا گیا۔

الم ( ظلفہ وقت ) جے جاہے جس منصب پر جاہے مقرر کر سکتا ہے اس میں قریش یا دو سری قوم کی کوئی تخصیص نہیں۔ امام ( ظلفہ وقت ) کو اختیار ہے کہ وہ جے جاہے ان ضروری اسور کے لیئے کسی غیر قریش کو قریش پر ترجیح دے دے۔

#### آخری بحث

ہم نے ذکورہ بالا ولائل کی روشن میں خابت کیا ہے کہ امامت و قیادت میں قرایش ک تخصیص نہیں ہے البتہ تاریخی اعتبارے ہم دیکھتے ہیں کہ حضرت سیدنا صدیق اکبر (قرایش) رہی الله تعالی عنه کی خلافت کے وقت بنو ثقیفه کی اس تجویز برکه ایک ظیفه انصارے مقرر کیا جائے اور ایک قرایش ( مهاجرین ) سے مقرر کیا جائے سیدنا صدیق اکبر رضی اللہ تعالی عنہ نے است انتشارے بچانے کے لیئے فرمایا کہ میں قتم دے کر کہنا ہوں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسم نے فرمایا الائمة من قریش "امام قریش سے ہوگا" سب انصار نے کما ہاں یہ بات ہم نے بھی ت اور درست ہے۔ پھر آپ نے فرمایا میں اس حدیث کی روشنی مین دو قریشیوں میں سے ایک کا انتخب كرتا بهون آكه امت كى يجهتي مين فرق نه آئ يا تو عمر بن خطاب يا ابوعبيده بن الجراح سيبات كر انصار ميں سے ايك مخص اٹھا اس كا نام عويمر تھا۔ اگريد بات ب تو ابو بكر آپ اپنا ہاتھ بڑھاتے میں آپ کے ہاتھ پر بیعت کرتا ہوں۔ حضرت عمر رضی اللہ تعالی عند نے اس کے ہاتھ پر ہاتھ رکھ کے كما ابو بكريس سب سے يملے آپ كے ہاتھ ير بيعت كروں كا مجھ سے يملے كوئى فخص بيعت كا شرف حاصل نہ کرے۔ اب تمام مهاجر' انصار' کمی و مدنی' قریش و غیر قریش اٹھے اور ایک ایک کر کے بیت كرتے گئے۔ اس طرح بوثقيفه كے مقام ير بھى حضرت ابوبكر رضى الله تعالى عند كے ہاتھ ير بيت

## قدموا قريشاً

حضور صلى الله عليه وآله وسلم كابيه فرمان كه قدموا قريشاً وحكه قريش كو آم برهاؤ"

متعلق ہم یوں وضاحت کریں گے اس حدیث پاک کو جلیل القدر صحابہ نے حضور صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم کی حدیث تشلیم ہی نہیں کیا بلکہ یہ ایک عام قول ہے جو لوگوں میں مشہور ہو گیا۔ حضور صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم کی احادیث پاک میں اس کا کہیں ذکر نہیں۔ بایں ہمہ قرآن پاک کی آیات خود اس نظریے کا رد کرتی ہیں۔ احادیث رد کرتی ہیں' اجماع امت اس کا رد کرتی ہیں۔ احادیث رد کرتی ہیں' اجماع امت اس کا رد کرتا ہے۔

قرآن پاک میں واذا اخذ الله میثاق الذین اوتوا الکتاب لتبینه الناس ولا نکنمونه الله تعالی می که است می که است مین اور لوگول کو تائے رہیں۔"

ای طرح مدیث پاک میں ہے من علم علماً ثم کنمه الجمد الله تعالی بلجام من النار نجس شخص نے علم حاصل کیا پھراہے چھپاتا رہا قیامت کے دن اس کے منہ میں آگ کی لگامیں چڑھا دی جائیں گ۔"

ایک اور حدیث میں فرمایا رضیت الامنی مارضی لها ابن ام عبدالله ○ " میں اپنی امت کے لیئے وہی پند کرتا ہوں جو ابن ام عبدالله (عبدالله بن مسعود رضی الله تعالی عنه) نے پند کیا۔"

حضور صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم نے فرمایا کہ تم میں سب میں برے عالم وہ ہیں علم فرائض (
میراث) کے ماہر ہیں۔ وہ زید بن ثابت ہیں ( رضی اللہ تعالی عنہ ) اس حدیث پاک کی رو ہے امام
شافعی نے میراث کے تمام مسائل حضرت زید بن ثابت رضی اللہ تعالی عنہ سے لیئے ہیں حالانکہ
ظفائے اربعہ اور دو سرے صحابہ کی روایات بھی موجود تھیں۔ آپ نے حضور پاک ماٹھا کی اس
حدیث کی وجہ سے زید بن ثابت رضی اللہ تعالی عنہ کو ترجیح دی اس طرح حضور صلی اللہ علیہ و آلہ
وسلم نے ایک اور حدیث میں فرمایا تم میں سب سے بڑا قاری " ابی " ہے ( رضی اللہ تعالی عنہ ) بی
وجہ سے کہ حضرت عباس رضی اللہ تعالی عنہ آپ کی قراۃ اور تفیر کو اختیار کیا کرتے تھے۔

حضرت على كرم الله وجهد نے اپنے شزادوں امام حسن اور حضرت امام حسين رضى الله تعالى عند كے پاس بھايا عنماكو قرآن باك كى قرات سكھنے كے ليئے حضرت عبدالرحمٰن سلمى رضى الله تعالى عند كے پاس بھايا

م مناقب امام اعظم ۲۹۰ مکتبه نیر

تھا۔ یہ تمام اساتذہ غیر قرایثی متھ جن سے تمام قرایش ہاشمیوں نے مختلف علوم حاصل کیئے۔

سعید بن مسیب رضی الله تعالی عند نے حضرت ابو هریره رضی الله تعالی عند سے تمام علم علم علم علم علم علم علم علم ا حاصل کیئے۔ ابو سلمہ عبد الرحمٰن رضی الله تعالی عند نے بھی آپ سے علم لیا حالانکہ بید دونوں حضرات اہل قریش میں سے تھے اور حضرت ابو هریره دوسی تھے۔

#### ایک الزای جواب

ہم شافعی حفرات ہے ایک سوال کرتے ہیں کہ حفرت امام شافعی ریافیہ تو بلاشہ قریش کے انہوں نے قریش استادوں کی بجائے غیر قریش اساتذہ ہے استفادہ کیا۔ امام مالک' محمد ابن الحن' مسلم بن خالد الزنجی یہ تمام حفرات غیر قریش ہوتے ہوئے امام شافعی ریافیہ کے اساتذہ میں ہے تھے۔ اکتر تمام شافعی اس بات پر دور دیتے ہیں کہ امام شافعی ریافیہ قریش تھے گروہ یہ بات بھول جاتے ہیں کہ اللہ شافعی ریافیہ کے علم کا منبع تو غیر قریش تھے۔ یہ تسلیم بھی کرتے ہیں کہ آپ نے غیر قریشوں سے مسلم مان کیا تھا انہیں سارا علم غیر قریشوں سے ملا ایک خاص قریش غیر قریشیوں سے شریعت کے علم حاصل کر رہا ہے گرچند شافعی شور مجار رہے ہیں کہ ہم غیر قریش علماء کو نمیں مانتے۔

#### ایک اور سوال

ہم شافعیوں سے پوچھے ہیں کہ تمہارے نزدیک اس امام مجتد کی کیا حیثیت ہے جو غیر قرار کے حال نکہ اس غیر قرار گئی مجتد کے سامنے تمام قرایش علاء زانوے ادب ملہ کرتے ہیں اور کوئی قرار کا اسیں اپنی طرف نہیں بلا آ۔ کیا قرایش علاء ان حضرات سے جان بوجھ کر علم چھپاتے رہے تھے؟ اگر سے بات ہے تو علوم کو چھپانے والوں کے متعلق تمہارا کیا فیصلہ ہے؟ اگر تم یہ کمو کہ غیر قرایشیوں سے مصل نہیں کیا گیا تھا تو تم اپنی رائے کو تبدیل کردو جس کی وجہ سے تم غیر قرشیوں کی المیت کو تعلیم نہیں کر رہے۔

#### شافعی حضرات کے اعتراض کاجواب

شافعی حضرات کہتے ہیں کہ امام شافعی رضی اللہ تعالیٰ عنه عرب اللسان میں عربی النسل 🚁

وہ لغت عرب کے عالم ہیں 'ہم انہیں بتا دینا چاہتے ہیں کہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ 'امام مالک' امام اوزاعی بھی بلاد عرب میں پیدا ہوئے تھے۔ عرب میں ہی پرورش پائی تھی اور جوان ہوئے تھے ' پھر اس ماحول میں عربی زبان پر عبور حاصل کیا۔

حضور الل كوف تو خالص عرب بين الم شافعي رضى الله تعالى عنه كو اس سلسله بين كوئى الفراديت نبيس ہے۔ اب جو شافعي حضرات كتے بين كه الم ابو حنيفه رضى الله تعالى عنه (مولى) از او كرده غلام سے اور الم شافعى خالص آزاد عرب خريش بين بهم ان سے دريافت كرتے بين كه كيا آپ ديني مرتبه كو سامنے ركھتے بين يا دنياوى وجابت كو اگر آپ دنياوى طور پر الم شافعى ميا الله كو بمتر قرار ديتے بين تو بهم آپ كو اپنے حال پر چھوڑ ديتے بين اگر علمى اور اخروى مراتب كو سامنے ركھتے بين تو بهم بيل كو اپنے حال پر چھوڑ ديتے بين اگر علمى اور اخروى مراتب كو سامنے ركھتے بين تو بهم بيريلا كس كے كه الم ابو حنيفه رضى الله تعالى عنه كاعلم ، تقوى اور ورع بين كوئى مقابله نمين كر سكا۔ الم ابو حنيفه رضى الله تعالى عنه كاعلم ، تقوى اور ورع بين كوئى مقابله نمين كر سے سے سكا۔ الم ابو حنيفه رضى الله تعالى عنه الله عنه ما علم خصے۔ اطاعت اور رياضت بين سب سے براہ كر شے۔

الله تعالى نے فرمايا ثم اور ثنا الكتاب الذين اصطفينا من عبادنا ﴿ " بم نے الله بندوں مِن جن كو كتاب كا وارث بنايا انسي منتف فرمايا-"

تلک جنة النی اور ثنموها بما کنتم تعلون ﴿ "به وه جنت ہے کہ جس کے تم وارث کیئے گئے ہو به تمارے اعمال کا بدلہ ہے۔" ان دونوں آیات میں نب یا قبیلہ کو کوئی خصوصیت نہیں ہے۔

پر فرمایا ان اکرمکم عندالله انقاکم ثه " بیشک تممارا کرم تروه هجف م جوتم میں نیاده متق ہے۔ " اس میں انسبکم نہیں ہے کہ تم میں وہ بمتر ہے جو بمتر نساب کا مالک ہو۔

پر فرمایا لیس للانسان الا ماسعی "انسان کے لیے کوشش اور جدوجد ضروری ہے۔" اس میں نسب کو کوئی حیثیت نہیں دی گئے۔ پر حضور صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم فریہ "داع میں اعلان فرمایا کہ عربی کو مجمی پر کوئی فضیلت نہیں' معیار فضیلت صرف اور صرف تقویٰ ہے۔ پر فرمایا "جس کے عمل میں کی ہے اس کا نسب کوئی کام نہیں کرے گا۔" اللہ تعالیٰ نے

مناقب امام اعظم ٣٩٢

فرمایا انما یخشی الله من عباده العلماء " بینک الله کے بندوں میں سے علماء ہی اس سے ورئے ہیں۔" علماء کے لیئے ذوالانساب نہیں فرمایا۔

پر فرمایا هل بستوی الذین یعلمون والذین لا یعلمون الله اور ب علم برابر موسطة مين من يمال بهی نسب كى كوئى حيثيت نهيں دى حق ب غرضيكه قرآن پاك كى متعدد آیات صرف علم اور تقوی كو بى امامت اور قرب خداوندى كامعیار قرار دیتی بین كین نسب یا قوم كو معیار نمیں بنایا گیا۔

حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم نے فرمایا " اگر علم ثریا کی بلندیوں پر جا پہنچ تو فارس کے نوجوان اسے لانے میں کامیاب ہو جا کیں گے۔" یہ بات الل علم میں تسلیم شدہ ہے کہ اس حدیث کا اشارہ حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی طرف ہے۔ آپ نے زندگی میں شریعت کے علم کا وافر حصہ بایا۔ آپ کے معاصرین علمی طور پر اس مقام کو نہ پہنچ سکے جمال امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ جلوہ فرما تھے۔ آریخی طور پر آج تک دنیائے اسلام میں ایسا کوئی شخص نہیں آیا جو آپ کا ہم یلہ ہو۔

بعض حفزات حفزت على كرم الله وجه كابية قول نقل كرتے بين كه " بر فخص كى قدرة منزلت اس كے حن پر ہے-" اس قول كى بنياد بھى حضور نبى كريم صلى الله عليه و آله وسلم كى حديث پاك ہے- اس قول سے بھى حسن جو انسانى اوصاف ميں سے ايك صفت ہے كى ايميت بتائى گئ ہے گرنسب كے لحاظ سے ايميت نبين وى گئى- حضرت على كرم الله وجه كے بيد اشعار كيميے برمحل بين سے الناس من جهة النمثال اكفاء ابوهم آدم و والام حواء

فأن يكن لهم في أصلهم شرف يفاخرون به فالطين والماء ما الفخر الا الاهل العلم لنهم على الهدى لمن استهدى ادلاء و وزن كل أمرء ما كان يحسنه والجاهلون الاهل العلم اعداء الا تحقرن أمرء من أن يكون له من الروم أوعجاء سوداء

و ربما انجبت للفحل عجماء

فرب معربة ليست بمنجبة

رجہ: لوگ از روئے شکل ایک دو سرے کے ہم شکل ہیں طلائکہ ان کا باپ آدم ہے اور والدہ حواہ ہیں اگر انہیں اصل کی کوئی شرافت ہو تو کوئی ایک دو سرے پر فخر نہیں کر سکتا ان کا اصل تو مٹی اور پانی ہے۔ فخر تو اہل علم کو کرنا چاہیے کیونکہ وہ ہدایت یافتہ انسان ہیں۔ جو ان سے ہدایت عاصل کرنے کے لیئے آگے برھے گا اے فضیلت ملے گی ہر مرد کا وزن اور قدر و منزلت اس کا حسن بڑھاتا ہے اور حسن علم کا دو سرا نام ہے۔ جملا علم کے وشمن ہوتے ہیں۔ اس شخص کی تحقیر نہ کرو جس کی ماں روی ہے یا مجبی ہے یا کالے رنگ کا ہے۔ بہت می عربی عورتیں پاک باز نہیں ہوتی اور بہت می عجبی عورتیں انہاق کے اعلیٰ معیار پر اترتی ہیں۔ مرد ان کی پرورش سے نجیب بن جا تا اور بہت می عجبی عورتیں انہاق کے اعلیٰ معیار پر اترتی ہیں۔ مرد ان کی پرورش سے نجیب بن جا تا

## على مرغيناني كاايك خط

ابوالمحاس حسن بن على مرغینانی برایجے نے مجھے اپنے ایک خط میں لکھا تھا کہ رکن الدین ابوسعد مسعود بن التحسین اللثانی نے فرمایا ۔

فقلت لنفسى أذ تعلت و آثرت حظوظ هواها ماالذى انت صانع لموتك اذياتي ببابك غفلة وقد فنى اللنات والعمر ضائع فقالت نعم ضيعت عمرى وعدنى بانى للنعمان فى الدين تابع

رجہ: میں نے خود کو کہا جب اس نے اپنے آپ کو برا سمجھا اپنی بفسانی خواہشات کو برا پہند کیا تو میں نے اسے کہا تم کیا کر رہے ہو'جس دان تمہارے دروازے پر عورت دستک دے گی تو یہ تمام چزیں ختم کر دے گی' میرے نفس نے آواز دی واقعی میں نے تو تمام عمر برباد کر دی اس پر میں نے اے کہا ۔

غدا منهب النعمان خيرالمناهب كذى القمر الوضاح خيرالكواكب

مناقب امام اعظم ٢٩٢ مكتبه نبويه

تفقه في خير القرون مع التقي فمذهبه لاشك خيرالمذاهب ولا عيب فيه غيران جميعة خلا اذتخلي عن جميع المعائب الدعداه قدا قربحسنه واقراره بالحسن ضربة لازب فااين عن الرومي نسبح العناكب مناهب اهل الفقه عنه تقلصت وكان له صحب نور علومهم تجلى عن الاحكام سجف الغياهب ثلاثة آلاف والف شيوخه واصحابه مثل النجوم الثواقب ترجمه: المم ابوصفيف رضى الله تعالى عنه كا فرجب تمام فداجب سے اليے بى بردھ كر ب سے چاند ستاروں میں زیادہ روشن ہے' انہوں نے خیرالقرون میں تقویٰ اور بر بیزگاری کے ساتھ فقہ حاصل ک اس لیے بلائک آپ کا زہب تمام زاہب سے اعلیٰ ہے اس میں کوئی شک نیس کہ آپ کے تمام حالات عيوب سے محفوظ ہيں' آپ كے سخت ترين جھاڑالو وسٹمن بھى آپ كے حسن علمي ك سامنے اعتراف کرتے ہیں اور آپ کے عملی حسن کا بھی اعتراف کرتے ہیں' ایک طرح سے لازم اور ضروری ہے کہ تمام اہل فقہ کے غراب مزور برا جائیں اور ایک آدمی کی کیا حیثیت ہے کہ مرثری جیسا جالا بن سكے "آپ كے شاگرد مجمى ايسے تھے كہ ان كے علوم كے انوار ادكام كے ليئے چك اٹھے 'جم ے اندھرے جھٹ گئے' آپ کے چار ہزار شیوخ ( اساتذہ ) ہیں اور آپ کے تلاندہ ستاروں کی طرح ورخثال ہیں۔

00000 0000 000 000 00

#### ٢٤ ، وال باب

# امآم ابوحنيفة للتيكي فضائل

امام زفر بن الهذيل رحمته الله عليه في فرمايا كه امام ابوطنيفه رضى الله تعالى عنه فضائع علم و فضل كا الله فضائه بين اور آپ كه فضل كا الله شهباز بين كه ان كرون كى آواز سے علم كے دھارے چلتے بين اور آپ كے كھونسلے كا ہر ہر پرورش يافتہ (شاگرد) امت كا فقيه ہے۔

حن بن سلیمان روائی نے حضور پاک روائی کی ایک حدیث که " قیامت اس وقت تک قائم نه ہوگی جب تک شریعت کے تمام علوم بندول پر واضح نه ہو جائیں گے۔" کی تشریح کرتے ہوئے فرمایا اس سے مرادیہ ہے کہ امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے علم فقہ کی جب تک تشہیر و اشاعت نہ ہو جائے گی قیامت نہیں آئے گی۔

اساعیل بن حماد بن ابی سلیمان رحمتہ اللہ علیہ نے فرمایا میں " واسطہ" میں تھا اور اپ والد کے ساتھ اہل علم کی محافل میں حاضر ہوتا میرا چھوٹا بیٹا کوفہ میں تھا میرے والد اس سے بہت پیار کرتے تھے میں نے ایک دن والد سے بوچھا آپ کو سب سے زیادہ کس سے بیار ہے؟ میرے لیئے یا اپ یوتے کے لیئے آپ نے فرمایا تم دونوں پیارے ہو گر ابو حنیفہ جیسا پیارا مجھے ساری دنیا میں کہیں ملا۔

ابو مسعر ریافی فرماتے ہیں کہ میں امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے ساتھ جارہا تھا گلی میں کے گزرتے ہوئے ایک بچہ کھیلتا کھیلتا ہمارے سامنے آگیا اس کے پاؤں پر حضرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کا پاؤں جا پڑا آپ آگ بڑھے تو بچے نے چلا کر کما شخ ! قیامت کے دن قصاص کا خیال منیں ' بچے کی بیہ بات من کر حضرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کانپ اٹھے حتی کہ آپ زمین پر گرگے ' میں وہاں ہی کھڑا رہا' آپ ہوش میں آئے' آئھیں کھولیں میں نے عرض کی حضور آپ ایک

مناقب امام اعظم مكتبه نبويه ٦٩٩

نادان بچ کی بات پر اسقدر افسردہ خاطر ہو گئے ہیں' آپ نے فرمایا اس بچ نے مجھے تلقین کرے اللہ کے خوف سے آگاہ کر دیا۔

## ایک قصه گو واعظ کی مجلس میں

حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ عمر بن ذرکی محفل میں بھی جاتے تھے 'یہ عمرو بن در ایک قصہ کو واعظ تھے جو اپنے پر کشش بیان سے لوگوں کو رااتے اور مختلف قصے کمانیاں بیان فرماتے 'آپ اس کی محفل میں اکثر رو پڑتے تھے 'لوگ حضرت کے دل کی نری پر تعجب کرتے ' دو سری طرف عمرو بن ذر برائیے بھی حضرت امام برائیے کی مجالس میں حاضر ہوا کرتے تھے اور اس طرح دونوں ایک دو سرے کی قدر کرتے عمرو بن ذر برائیے حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے لیے وعاکیا کرتے تھے۔

## محد ثین حضرت امام کی خدمت میں حاضر ہوتے

امام زفر رحمتہ اللہ علیہ فرمایا کرتے تھے کہ میں نے دیکھا کہ امام ابو حقیفہ رضی اللہ تحالیٰ عند کی خدمت میں وقت کے برے برے اکابر محد ثین حاضر ہوا کرتے تھے۔ ان میں ذکریا بن ابی ذائعہ عبد الملک بن ابی سلیمان و اللیث بن ابی سلیم و مطرف بن ظریف و حصین ابن عبدالرحمٰن جیسے حضرات اکثر آتے اور مشکل مسائل پر گفتگو کرتے۔ کئی بار ان احادیث کے مشکل محانی اور مطاب حاصل کرتے جمال جمال انہیں مشکلات پیش آتی تھیں۔ حضرت عبدالرحمٰن بن محمد مالیے فرماتے ہیں حاصل کرتے جمال جمال انہیں مشکلات پیش آتی تھیں۔ حضرت عبدالرحمٰن بن محمد مالیے فرماتے ہیں کہ ایک دن میں حضرت امام ابو صفیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے ساتھ جارہا تھا' ہم نے دیکھا کہ کوفہ کی پولیس ایک نوجوان کو چھڑالیں مگر پولیس ایک نوجوان کو چھڑالیں مگر پولیس کا آدی نہ مانا' وہ آپ کو جانتا ہی نہیں تھا' آپ نے پولیس والے کو ایک تحییر رسید کیا' اس پولیس کا آدی نہ مانا' وہ آپ کو جانتا ہی نہیں تھا' آپ نے پولیس والے کو ایک تحییر رسید کیا' اس طرح جھڑا ہوگیا' لوگ جمع ہو گئے اور وہ نوجوان پولیس کی گرفت سے نکل گیا۔

ابو خباب ما في ن فرمايا كه منصور المعتمر اور امام ابوطيفه رضى الله تعالى عنه بيك وت محد مين داخل موئ اور ايك كون من كورك كورك كافى دير تك باتين كرت رم، لوكول من

دونوں کو دیکھا کہ رو رہے ہیں۔ میں نے امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے بوچھا حضور یہ کیسی باتیں تھیں جن پر آپ دونوں رو رہے تھے ' فرمایا ہم زمانہ حاضر کی سر کشیوں اور بے اعتدالیوں پر گرتے تھے اور سابقہ ادوار کی رحمتوں اور خوشحالیوں کو یاد کر کے روتے تھے۔ ہم دیکھتے ہیں کہ باطل نظریات کا غلبہ ہو تا جارہا ہے۔

ابواحد غسانی پرلینے نے فرمایا کہ میں ابو معاذ نجوبی کے ہاں حاضر ہوا آ کہ ان سے حروف قرآن پر گفتگو کر سکوں' انہوں نے فرمایا عبدویہ نے یہ معلومات امام ابویوسف پرلینے سے حاصل کی تھیں اور امام ابویوسف پرلینے امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ ہے۔ یہ باتیں سنتے ہی وہ لکھتے لکھتے رک گیا' وہ ابومعاذ کا بیان الماکیا کرتے تھے' آپ اس کی حرکت پر برے ناخوش ہوئے اور سخت ناراض ہو کر ایک واقعہ سنایا کہ ایک دن کلبی امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی مجالس کے نزدیک سے گذرا' کی نے کما حضور کی کلبی ہے جو سوار ہو کر تیزی سے جا رہا ہے۔ امام صاحب نے فورا ایک سواری لی اور سوار ہو کر اس کے بیچھے چلے گئے' اسے جالیا' آپ قرآن پاک کی آیات کی تغیر بوچھے' وہ بتا تا جا تا اور اپنی سواری پر چلتا جا تا تھا' مگر جب امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کلبی کی تغیر اور تشرح پر بعض سوالات اٹھات تو اسے سخت تبجب ہو تا۔ آپ نے ایک اور آیت کی تغیر بوچھی تو وہ سخت جب بھیایا' اس کے تیمری آیت کی تغیر بیا چسی ابوحنیفہ ہوں' سوالات اٹھاتے تو اسے سخت تبجب ہو تا۔ آپ نے ایک اور آیت کی تغیر بوچھی تو وہ سخت جب بھی کہی کئے لگا آپ کون ہیں؟ آپ نے بیایا میں ابوحنیفہ ہوں' کلبی کہنے لگا میں نے تغیر بیان کی ہے تھی کہ اس طرح کلبی کہنے لگا میں نے تغیر بیان کی ہے تم ذہن نشین کر لو' ابومعاذ براپنے فرماتے ہیں کہ اس طرح کلبی کبنے لگا میں نے تغیر بیان کی ہے آئی عنہ کے استاد استفادہ تھے۔

ایوب بن نعمان انصاری (امام ابویوسف کے بچازاد بھائی) نے فرمایا امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے سلمہ بن کہیل' زبید' ابوقیس اودی کو دور ہے آتے دیکھا تو آگے بڑھ کر ان کا استقبال کیا اور ان کے اجلال و احترام کے پیش نظر بڑی خدمت کی اور ساتھ ساتھ تیزی ہے چلتے جاتے سے انہوں نے حضرت امام کو فرمایا آپ فکر نہ کریں آرام ہے چلیں' آپ جیسے فقیہ کی ہمارے دلوں میں بے پناہ قدر ہے' یہ حضرات دیر تک کھڑے رہے اور حضرت امام سے باتیں کرتے رہے حضرت لمام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے ان جیسے حضرات سے بھی استفادہ کیا۔

حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ جب اپنی مند تدریس پر جلوہ فرما ہوتے تو آپ کے

m91

مكتبهنبويه

مناقب امام اعظم

اردگرد آپ بے شاگردوں کا ایک طقہ ہو آجن میں قاسم بن معن عافیہ بن بزید واؤدطائی اور زفر بن الهذیل جیسے جلیل القدر اہل علم جمع ہوتے۔ ان میں وقت کے آئمہ 'فقیہ بھی ہوتے تھے' اگر سے حضرات آپس میں کی مسئلہ پر گفتگو کرتے تو بعض دفعہ بلند آواز ہو جاتے اور جھڑا بڑھ جا آلین جب حضرت امام گفتگو شروع کرتے تو سب طرف خاموشی چھا جاتی 'جب تک آپ گفتگو کرتے رہے تمام اوب سے بیٹھے رہتے اور سنتے رہتے 'جب آپ کا سلسلہ کلام ختم ہو جا آتو یہ تمام لوگ آپ کی تقریر کو یاد کر لیا کرتے تھے 'جب یہ مسائل یاد ہوتے تو ان پر بحث کرتے۔ ( یہ انداز تدریس و تفیم المام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی مجالس میں رائج تھا)۔

عبداللہ بن نمیر والیج فرماتے ہیں کہ جب کوفہ کے فقما امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے سامنے بیٹھتے تو یوں معلوم ہو آ کہ وہ طفل کمتب ہیں جو مودب ہو کر بیٹھے ہیں۔ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ گفتگو فرماتے تو اپنے اپنے ذوق کے مطابق یہ لوگ مسائل کی گرائی تک چنجے۔ عبداللہ بن نمیر' ابوہشام ہدانی کوفہ کے زبردست فقیہ تھ' آپ نے بھی حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے تعلیم حاصل کی تھی۔

خدت بن معاویہ روائیہ جب امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ کا ذکر کرتے تو نمایت عظمت اور احترام سے آپ کا ذکر کرتے۔ راوی کہنا ہے کہ میں نے ایک دن ان سے بوچھا آپ امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی اتنی تعریف کیوں کرتے ہیں ؟ حالانکہ آپ دو سرے لوگوں کا بھی ذکر کرتے ہیں گر ان کی اتنی عزت نہیں کرتے 'آپ نے فرمایا یہ سب لوگ قابل صد احترام ہیں گر امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا مقام ان تمام سے بہت بلند ہے۔

امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ ہے بے شار لوگوں نے علمی استفادہ کیا جن میں اکثر وقت کے جلیل القدرائمہ اور اہل علم و فضل تھے۔ میں چند حضرات کا تذکرہ کرنا ضروری خیال کرتا ہوں آ کہ آپ کی عظمت واضح ہو جائے۔ یہ خد تج بھی اہل کوفہ کے زبردست امام تھے اور حدیث و فقہ میں بوے ماہر تھے۔

امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرمایا کرتے تھے میری زبان پر کبھی کسی کی ندمت یا برائی نہیں آئی' نہ کسی پر لعنت بھیجی' نہ کسی مسلمان پر ظلم کیا' نہ کسی ذمی کو ڈانٹا' نہ کسی کو دھوکا دیا' نہ کسی ہے فریب کیا۔ صمانی فرمایا کرتے تھے میں ہزاروں لوگوں سے ملا ہوں مگر امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے بڑھ کر کسی کو نہیں بایا' نہ ہی ان جیسا ورع و تقویٰ میں کسی کو دیکھا۔

عثان ابن شید روائی نے فرمایا میں نے اپ باب سے سا وہ فرماتے تھے کہ امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کوفہ کی مسجد میں فلال جگہ بیٹھ کر مسائل بیان فرمایا کرتے تھے' میں خود ان سے گفتگو کرتا' وہ علم و فضل کے درس دیتے تھے۔ مجھے ایک شخص نے کما چھوڑو امام ابو حقیقہ کی باتیں تو دریائے وجلہ سے بھی گزر جاتی ہیں لیعنی حدسے تجاوز کرتی جاتی ہیں' ابھی تھوڑا ہی عرصہ گذرا تھا کہ امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی علمی شرت سارے عالم اسلام میں پہنچنے گئی اور دور دراز سے چل کر لوگ آپ کے پاس آنے گئے' میں نے اس دوست کو کما دیکھو اب تو امام کی شرت وجلہ سے کمیں پار چلی گئی ہے۔

الم ابویوسف رحمتہ اللہ علیہ فرمایا کرتے تھے ہم ایک بات کرتے تو امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ اس کے برخلاف بات کرتے اور تلانہ بحث و تحیص کے بعد ای بات پر انقاق کرتے۔ یہ حضرت امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کا ایک انداز تھا۔ پھر ایک وقت آیا کہ کوفہ کے برے برے مشاکح ال کر احادیث کے مطالب سمجھنے آپ کے پاس آت 'جھے صحابہ کے آثار یا احادیث سے وو چار باتیں مل جاتیں تو میں حضرت امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی خدمت میں حاضر ہو کر بیان کر آپ بعض کو قبول فرما لیتے اور بعض کو دلائل کے ساتھ رد فرما دیا کرتے تھے اور فرماتے یہ حدیث صحح تمار دیتے وہ سب کے لیئے سند نمیں ہے یا یہ حدیث غیر محروف ہے اور جس حدیث کو آپ صحیح قرار دیتے وہ سب کے لیئے سند بن جاتی۔ ہم لوگ آپ سے بیا یہ حدیث کا کس طرح علم ہو جاتا ہے؟ آپ بن جاتی۔ ہم لوگ آپ سے بوچھا کرتے 'آپ کو صحیح حدیث کا کس طرح علم ہو جاتا ہے؟ آپ فرماتے میں ادار جس جو صحیح ہیں اور وہ احادیث کے اس ذخیرہ پر ہے جو صحیح ہیں اور وہ احادیث بھیلا دیتے ہیں ان پر بھی میری نظر ہوتی ہے۔

ابو عصمہ رحمتہ اللہ علیہ فرمایا کرتے تھے کہ امام ابو حقیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نہ صرف اہل کوفہ کے فقیہ اور عالم تھے بلکہ اس وقت عالم اسلام کے تمام آئمہ اور علماء کے راہنما تھے۔ اہل کوفہ کے علاوہ دو سرے شہوں کے علما پر بھی آپ کی نگاہ تھی' وہ صحابہ کرام کی روایت کردہ احادیث کو اپنی کتاب سروں کے علما پر بھی آپ کی ترکتاب ابواب الفقہ ہوتی' آپ کی کتاب "الصلوة" اہل علم کتاب سے کا کتاب "الصلوة" اہل علم

کے سامنے ہے' اس میں وضو کے متعلق ہی علمی نکات پر نگاہ ڈالیں تو معلوم ہوتا ہے کہ آپ لے ایک ایک سکلہ کو احادیث کی روشنی میں مرتب کیا اور اے " مجمع العلوم " بنا ریا۔ اس طرح آپ و سرے موضوعات پر قیاس کریں کہ آپ نے ان مسائل کو احادیث کی روشنی میں کس قدر مرتب فرمایا تھا' آپ کے بیان کردہ تمام مسائل احادیث صحابہ اور اسلاف کے عمل کے عین مطابق ہیں۔ آپ نے ہیشہ ہی آثار صحابہ سامنے رکھا۔

## امام ابوصنیفہ نفت المانیک کے شب و روز

الم دفر رائی فراتے ہیں کہ مجھے حضرت الم الوضیف رضی اللہ بحالی عند کی خدمت میں ہیں سال سے زیادہ ہیشنے کا موقعہ ملا میں ایک ایک لحمہ آپ سے استفادہ کرتا رہا میں نے دیکھا کہ آپ میں جردھ کر مخلوق خدا کا کوئی بھی خیرخواہ نہیں تھا آپ لوگوں پر شفقت فرماتے اور الل علم کو تو دل و جان سے چاہتے آپ کے شب و روز اللہ تعالی کی یاد ہیں گزرتے گر سارا دن محقق مسائل لور تدریس فقہ میں گزر جاتا اہر سے آنے والے استفتاء کا جواب لکھتے وائی طور پر مسائل پوچھنے والوں کو مطمئن فرماتے ، مجلس میں ہیشتے تو شاگردوں کے مجمع میں ہیشتے اور باہر نگلتے تو مریضوں کی عیادت کرتے اور اگر کوئی مرجاتا تو اس کے جنازہ میں شرکت فرماتے ۔ فقیراور مسائین دروازے پر آتے تو رد سوال کی بجائے آپ ان کی خدمت کرتے ۔ اپنے رشتہ داروں کی خبرگیری ضرور کرتے اور کوشش کرتے کہ ہر آنے والے کا مقصد پورا ہو۔ رات عبادت میں گذارتے اور اس خوبصورتی سے قرات کرتے کہ ہر آنے والے کا مقصد پورا ہو۔ رات عبادت میں گذارتے اور اس خوبصورتی سے قرات قرآن پاک ادا کرتے کہ دل کھل اٹھتا ' بی معمولات زندگی بھر قائم رہے ' یہاں تک کہ آپ کا وصل ہوگیا۔

محد بن ففیل نے خصیف بن عبدالرحل سے حضرت امام اعظم کی ایک ملاقات کا تذکرہ کیا ہے۔ خصیف الجزائر کے امام اور فقیہ تھے۔ بڑے جاہ و جلال کے مالک تھ 'کسی کو نظر میں نہیں لاتے تھ 'جب امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالی عنہ آپ کے پاس گئے تو آپ نے امام صاحب کو دور سے آتے دیکھا' جمارا خیال تھا وہ اٹھ کر امام صاحب کا استقبال کریں گئے گر انہوں نے غالباً دیکھنے کے باوجود پروا نہ کی' حضرت امام نے بھی اپنے شاگردوں کو اشارہ کیا کہ نمایت اوب سے آگے برھیں' جب حضرت نہام نے بھی اپنے شاگردوں کو اشارہ کیا کہ نمایت اوب سے آگے برھیں' جب حضرت

ابو حذیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ آپ کے بالکل قریب پہنچ گئے تو انہوں نے حفرت امام کا ہاتھ مسبوطبی سے پکڑ کر ایک ایبا سوال کیا جو حیا کے بھی خلاف تھا اور تقریر کے بھی قابل نہ تھا' امام مسبوطبی سے پکڑ کر ایک ایبا سوال کیا جو حیا کے بھی خلاف تھا اور تقریر کے بھی قابل نہ تھانے کی حدیث مستف کی مربث کی جھے ابو عبید بن عبداللہ نے یہ حدیث سائی تھی' انہوں نے خود مبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے سی تھی' حدیث شرم غیص اس کے خمن میں قدر کے مبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے سی تھی' حدیث شرم غیص اس کے خمن میں قدر کے مسلم بات کی تھی' خصیف الجزائر کے ان محد ثین میں سے تھے جو جلالت شان میں مشہور تھے گر مسرت امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے اس کے بادجود آگی مدیث سننے کے لیئے سب پچھ سات کی تھی۔

سعید بن عبدالعزیز روائی فرماتے ہیں کہ میں مکہ کرمہ میں حضرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عدے ساتھ تھا' میں نے دیکھا کہ آپ جب زبان کھولتے تو بوں محسوس ہو آکہ سمندر کی تمہ سے کالنے والے غوطہ خور نے لوگوں کے سامنے موتیوں کے ڈھیر سجا دیتے ہیں۔ سعید بن عبدالعزیز روائیے میں دمشق کے بام تھے اور ان کی منفرد حیثیت تھی' ان کی ذات پر اہل دمشق کو پڑا فخر تھا۔ آپ کے اور جمعصر جو دمشق کے امام تھے احوص بن علیم آپ نے بھی امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے اور انہیں محفوظ کیا۔ آپ نے کئی صحابہ کرام کو دیکھا تھا اور ان سے بھی احادیث سے کئی تھیں۔

ممرہ بن رہید ریالی فرماتے ہیں کہ حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عند کو علم میں اتنا اساک تھا کہ کوئی دوسرا اس کا مقابلہ نہیں کر سکتا تھا۔ آپ بلا اختلاف زبان میں مضبوط تھے 'جو بات سے بھرکی طرح مضبوط ہوتی' آپ کی زبان سے میں نے بھی کسی کی برائی نہیں سی۔

کھم بن ہشام ملیٹے نے کہا کہ میں نے ایک دن امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو کہا آپ کے تمام فتوے مبنی برصواب ہیں آپ نے فرمایا کیا معلوم بعض انہیں مبنی برخطاء خیال کرتے ہوں۔

لیث بن سعد رحمتہ اللہ علیہ نے بیان کیا کہ مجھے معلوم ہوا کہ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی سے جج کے لیئے روانہ ہو رہے ہیں میں نے بھی ارادہ کر لیا کہ اس سال جج کروں 'چنانچہ رخت سفر

م مناقب امام اعظم ۲۰۲ مکتبه نبری

پاندھا اور چل پڑا اور اہام صاحب کو مکہ کرمہ جا ملا۔ ہیں آپ سے مختلف مسائل دریافت کر آپ جواب دیتے گئے 'اب ہیں نے مسائل جنایات 'قصاص 'قل بالحظا' شہید عمر جیسے مسائل پر سخت کی ' آپ نے فرمایا ہیں نے تہمارے سامنے جو مسائل بیان کیئے ہیں ان ہیں سے بعض ایسے جنبیں تم کوہ ابو قیس پر دے مارو ' ہیں نے عرض کیا ہیں انہیں ابو قیس پر ضرور دے ماروں گا۔

جنبیں تم کوہ ابو قیس پر دے مارو ' ہیں نے عرض کیا ہیں انہیں ابو قیس پر ضرور دے ماروں گا۔

آگئے دو سرے سال ججھے بہتہ چلا کہ امام ابو جنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ اس سال بھی جج کو جارب چنانچہ میں بھی تیار ہو گیا۔ مکہ مکرمہ ہیں آپ کو ملا اور دل میں خیال کیا کہ اب پھر پچھ مسائل بوجھ گا گر میں بوچھتا بوچھتا رک گیا' آپ نے خود ہی ناور کلمات اور مسائل بیان کرنے شروع کر دیے گا گیا۔

گا گر میں بوچھتا بوچھتا رک گیا' آپ نے خود ہی ناور کلمات اور مسائل بیان کرنے شروع کیئے تو میرا دل باغ بل سے میں مبہوت ہو کر رہ گیا' پھر آپ نے جج کے مسائل بیان کرنے شروع کیئے تو میرا دل باغ بل گیا۔

گیا۔

امام ابو جنفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ بعض مسائل بیان فرماتے فرماتے فرمال کرتے سے کہ گیا۔

امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عند بعض مسائل بیان فرماتے فرماتے فرمایے کہ مسے کہ مسکم ہے۔ میں اللہ تعالی عند بعض مسائل بیان فرماتے فرماتے فرمایے کے تھے کہ مسکم ہے۔ ممکن ہے اس میں آپ مفترت علی کرم اللہ وجہ کا تبنیع کیا کرتے تھے اور بعض او قات لفظ کیا استعال فرمایا کرتے المبنت کلصے ہیں کہ عرب کا ایک قبیلہ لفظ خطاء سے یہ مراد لیا کرتا تھا کہ جھے۔ اگرچہ لفظ خطاء بولا جائے گا گر حقیقت میں ان کے نزدیک یہ کلمہ منقبت ہوتا ہے اس لیئے آپ عمر بھر سوائے اس کے کی نے یہ کلمہ نہیں سنا تھا۔

لیث بن سعد رحمتہ اللہ علیہ اہل مصرکے امام تھے اور علم حدیث اور فقہ میں مصراول ۔
امام تھے۔ ایک بار خلیفہ ہارون الرشید نے آپ سے ملنے کی خواہش کی تو آپ بغداد تشریف ۔
گئے۔ ہارون الرشید نے آپ کو برے اعزاز اور انعامات سے نوازا۔ امام شافعی روائیے فرمایا کرتے گئے۔ ہارون الرشید نے آپ کو برے اعزاز اور انعامات سے نوازا۔ امام شافعی روائیے فرمایا کرتے گئے۔ مجھے بھی کسی پر رشک نہیں آیا سوائے لیث بن سعد روائیے کے افسوس میں نے ان کا زمانہ نہ بلالہ ان سے ملاقات نہ کرسکا نیہ حسرت میرے دل میں جمیشہ رہی۔

عبداللہ بن عبیداللہ رحمتہ اللہ علیہ نے فرمایا کہ میں نے اپنے والد کو مسجد حرام میں دیکھیے۔ کے اردگرد لوگوں کا زبردست ہجوم تھا' آپ کسی مسافر سے مناظرہ کر رہے تھے اور بڑے دیتی ہے۔ مشکل مسائل پر گفتگو فرما رہے تھے۔ میرے والدنے اس مسافرے پوچھا کہ آپ کہاں سے تھے۔ لائے ہیں؟ فرمایا اقصائے مغرب میں ایک شہر طنجہ ہے اس کے اگے کا سارا علاقہ کفرستان ہے ' بھی تک اسلام آگے نہیں پنچا' یہ شہر مکہ مکرمہ سے تقریباً بینتالیس سو میل دور تھا۔ میرے والد نے پوچھا آپ کے پاس اسنے دقیق اور مشکل مسائل مس طرح پنچ گئے اور تم نے کس سے یہ مسائل حاصل کیئے ہیں؟ فرمایا امام ابو حضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی تحریروں اور کتابوں سے۔ پوچھا' آپ کے پاس امام مالک اور امام اوزائ کی تحریریں بھی پنچی ہوں گی؟ انہوں نے فرمایا ہاں 'مگریہ تمام تحریریں امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے ہاں بایا جا آ رضی اللہ تعالی عنہ کے خلاف ہیں۔ جو گرائی اور عمق امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے ہاں بایا جا آ روشین اس کا کوئی دو سرا شخص مقابلہ نہیں کر سکتا اور امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے علوم کی روشیناں آج طنجہ کے در و دیوار کو روشن کر رہی ہیں۔

اعمش نے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے فرمایا کہ اگر علم صرف طلب اور ملاقات سے موتا تو میں آپ سے زیادہ فقیہ ہوتا عمر فقہ تو اللہ کی عطاء ہے جے چاہے دے۔

حارث بن مسلم را لیے نے فرمایا امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ جن مسائل کو ایک دن میں بیان فرماتے دو سرے آئمہ ان مسائل پر عمریں بسر کر دیا کرتے تھے۔ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے علوم سے تمام لوگ مستفیض ہوا کرتے تھے جبکہ دو سرے آئمہ کے علوم مخصوص طبقوں سے تعلق رکھتے تھے۔ ہارون بن مغیرہ را لیے نوایا کہ میں نے علماء کرام سے سناکہ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعلق رکھتے تھے۔ ہارون بن مغیرہ را لیے تھی۔ نوریا کہ میں نے علماء کرام سے سناکہ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے زمانہ میں ان کی نظیر نہیں ملتی تھی۔

کی لوگ آپ کا گلہ کرتے ہیں ' فیبت کرتے رہتے ہیں گریں نے آپ کی زبان سے کسی کی فیبت کئی لوگ آپ کا گلہ کرتے ہیں ' فیبت کرتے رہتے ہیں گریں نے آپ کی زبان سے کسی کی فیبت خمیں سی۔ امام صافحب نے فرمایا ' اللہ تعالی جے صبر عنایت فرما تا ہے اسے کسی کی فیبت کرنے کی ضرورت نہیں ہوتی۔ کبیرین معروف مالیا فید فرمایا کرتے تھے کہ امت رسول اللہ صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم میں امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے بردھ کرمیں نے کسی دو سرے شخص کو نہیں دیکھا۔ بمیر ان معروف مالیا کے امام تھے۔ آپ ایک عرصہ تک امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی خدمت میں رہے اور آپ سے بحض علوم حاصل کیئے اور اپنے علاقہ میں پھیلاتے رہے۔

### حفرت امام ابوحنیفہ نفتی الدی میں بھی بات کرتے تھے

محر بن عمران ریلیے فرمایا کرتے تھے جن نے توبہ بن سعد سے بوچھا کہ کیا امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ فاری زبان سے واقف تھے؟ آپ نے فرمایا بال نہ صرف آپ واقف تھے بلکہ اس زبان کے ماہر تھے اور بری روانی سے گفتگو فرمایا کرتے تھے۔ ایک شیعہ آپ کی خدمت میں آنا تھا وہ بھٹ عربی بیں گفتگو کیا کرتا تھا ایک وفعہ اس نے آپ کو سلام کیا جس کا دوسرا معنی بدوعا لکتا تھا ای سے مربی اس کی اس شرارت کو بھائی لیا اور مجھے مخاطب کر کے فرمایا این بدمر د نسبت آپ نے تو مجھے اس کے سمجھایا مگر شیعہ یہ سمجھاکہ آپ نے میری تعریف کی ہے کئے لگا جزاک اللہ یا ابری حسیفہ ا

توہد بن سعد مرو کے امام مجھے اور مروکی قضاء بھی آپ کی سرد تھی۔ حسن سرت کے مالک سے و حضرت امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ کی صحبت میں رہ کر فقہ پر عبور حاصل کیا تھا۔ جب فوت ہوئے تو عبداللہ بن المبارک بولیے نے فرمایا کہ حصرت نے ہماری ہڈیاں توڑ دیں کیونکہ امام ابو حفق توہد بن سعد بولیے تو ہمارے بہت برے امور کے لیئے کفایت فرمایا کرتے تھے وہ مشکل وقت میں ہماری دھال بن جایا کرتے تھے وہ اللہ کی راہ میں کئی قتم کی ملامت اور تکلیف سے گھرایا نہیں کرتے تھے اور تکلیف سے گھرایا نہیں کرتے تھے اس بی جھے نظر نہیں آیا کہ ان کا کوئی قائم مقام ہوگا۔ وہ بردی برکت والے برداک تھے مارا عیش و آرام چھیناگیا اب ہم ان کے بعد کس سے امید رکھیں گے اپنی التجا ئیں کس کے پاس لے جایا کریں گے ان کی موت کے صدمہ سے حضرت عبداللہ بن المبارک برائیج نے ایک ماہ تک پڑھنا پڑھانا چھوڈ ویا تھا بہن المبارک برائیج نے ایک ماہ تک پڑھنا پڑھانا چھوڈ ویا تھا ، بہنا مغموم اور محزون رہنے گئے تھے۔

محر بن مزاحم رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ سب سے پہلے امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی بہچان بوں ہوئی کہ میرا بھائی ' ابوبشر سل کی معجد میں ایک دن نماز بڑھنے گیا ' اچانک ایک شخص آیا تو میرے بھائی نے جگہ چھوڑ دی ' وہ شخص آ ب کی جگہ کھڑا ہو گیا' مجھے یقین ہو گیا کہ بھی امام ابو صنیفہ رضی اللہ رضی اللہ تعالی عنہ ہیں۔ فضر بن شمیل فرماتے تھے کہ تمام وہ باتیں جو تم امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ ہیں۔ فضر بن شمیل فرماتے تھے کہ تمام وہ باتیں جو تم امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے ظاف کہتے ہونہ لکھا کرو' ہم لوگ غصہ میں بعض ایس باتیں بھی کہ دیتے ہیں جو ان میں سے نہیں ہیں۔

نضر بن شمیل ریافی اصحاب الاحادیث میں ہے ایک بلند پایا عالم تھے اور ان کی طرف داری بھی کرتے تھے ، وہ خلیفہ عبای مامون الرشید ہے امداد اور منفعت حاصل کیا کرتے تھے یماں تک کہ انہوں نے مامون الرشید ہے کہا کہ آپ اماح ابوصنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے شاگردول کو عمدہ قضاة ہے ہٹا دیں ' مامون الرشید تو خاموش رہے اسے معلوم تھا کہ مارے خراسال میں حضرت امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے شاگردول کا برا اثر ہے اور حکومت ایسا اقدام کرتے ہوئے جمراتی محقی۔

نصر بن شمیل رائی فراتے ہیں کہ میرا ایک بار ارادہ ہوا کہ اہا ہا بوصنیفہ رضی اللہ تعالی عد بغداد میں آئے ہوئے ہیں میں ان سے ملاقات کروں تو بہت انجھا ہوگا ای اثنا میں جھے معلوم ہوا کہ ہشام بن عورہ روئی بھی بغداد آئے ہوئے ہیں 'میں نے سوتھا کہ ہشام بن عورہ روئی کو چھوڑ کر ہشام بن عورہ روئی کی طرف چلا گیا انہوں نے جھے تقریباً دس احادیث سائمیں 'جھے ایک دوست نے ای مجلس میں کما میہ تمہارا پاگل بن انہوں نے جھے تقریباً دس احادیث سائمیں 'جھے ایک دوست نے ای مجلس میں کما میہ تمہارا پاگل بن انہوں نے جھے تقریباً دس احادیث سائمیں 'جھے ایک دوست نے ای مجلس میں کما میہ تمہارا پاگل بن دوران ایک مسئلہ سائے آیا ایک شخص نے بتایا کہ اس مسئلہ میں امام ابوبوسف روئی آئے ہو ای دوران ایک مسئلہ سائے آیا ایک شخص نے بتایا کہ اس مسئلہ میں امام ابوبوسف روئی انہ کھو! تمہیں امام ابوبوسف روئی انہ کھو! تمہیں امام ابوبوسف بول نہ کھو! تمہیں امام ابوبوسف بول نہ کھو! تمہیں ایا دہے کہ جب تم قاضی بھے تو تم بھی بیٹے ہوئے تھے انہوں نے فرمایا نصر بول نہ کھو! تمہیں یاد ہے کہ جب تم قاضی بھے تو تم بھی ہوئے تھے انہوں نے فرمایا نصر بول نہ کھو! تمہیں یاد ہے کہ جب تم قاضی تھے تو تم بھی ہوئے تھے انہوں نے فرمایا نصر بول نہ کو بیٹ کر بڑھا کرتے تھے اور مقدمات کے فیملہ انمی تجریوں کی دوشنی میں کیا کرتے تھے وار مقدمات کے فیملہ انمی تجریوں کی دوشنی میں کیا کرتے تھے وار مقدمات سے اس کے چرے کا رنگ اتر گیا۔

فضل بن عبدالجبار رطینے فرماتے ہیں کہ مجھے کی نے بتایا کہ نصر بن شمیل ایک دن خالد بن صبیح کے پاس گئے ، وہ " مرو " کے قاضی اور مفتی تھے اور امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے علاقہ میں سے تھے ' نصر نے آپ کو سلام کیا تو خالد اس کے لیئے تعظیما " کھڑا ہو گیا اور نمایت احرام و اعزاز سے بھایا ' انہوں نے آپ کو سلام کیا تو خالد اس کے لیئے تعظیما " کھڑا ہو گیا اور نمایت احرام و اعزاز سے بھایا ' انہوں نے آپ دوستوں کو تعارف کراتے ہو ، جج فرمایا کہ آج ابوالحن فصل بن عبدالجبار ہمارے پاس تشریف لائے ہیں ' آپ لوگ ان سے استفادہ کریں ' خالد کے شاگرد اور احباب

مكتبه ثنويه

ان سے مختلف سوالات کرتے رہے 'وہ انہیں جواب دیتے رہے 'اس کے بعد ان مسائل کی باریکیوں پر گفتگو ہونے گئی تو نضر بن شمیل جران رہ گئے کہ یہ لوگ کتنی گرائی سے مسائل حل کر رہ بیں نضر سنتے رہے گراٹھ کر چلے گئے 'چند دنوں بعد وہ فضل بن سل ذوا الریاستین کے پاس آیا اور کنے لگا آپ مجھے کوئی ایبا ضابطہ تحریر کر دیں کہ زمانہ بھر کے لوگ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعلی عنہ کا کوئی قول بیان نہ کریں اور نہ اس پر عمل کریں 'فضل بن سل نے اپ اہل علم و فضل احب کو بلا کر مشورہ کیا تو انہوں نے بیک زبان کما ایبا تو ممکن نہیں بلکہ سارا عالم اسلام تمہاری خدمت کو بلا کر مشورہ کیا تو انہوں نے بیک زبان کما ایبا تو ممکن نہیں بلکہ سارا عالم اسلام تمہاری خدمت کرے گا جس شخص نے آپ کو یہ بات کی ہے وہ فاطرالعقل معلوم ہو تا ہے۔ فضل بن سل نے نظر سے کما کہ اگر تمہاری تجویز خلیفہ وقت نے بن کی تو تمہیں سزا دے گا' میں خود بہت سخت نظر سے کما کہ اگر تمہاری تجویز خلیفہ وقت نے بن کی تو تمہیں سزا دے گا' میں خود بہت سخت بوں' گرامام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے قول کے سامنے مجبور اسر تسلیم کرنا پڑتا ہے۔

اسحاق بن بشررطینی فرماتے ہیں کہ میں ایک رات خلیفہ مامون الرشید کے پاس بیٹھا ہوا تھا۔
فضل بن سمل نے جھے اپنے خواص سے بنا رکھا تھا، بچھے اپنے قریب بٹھایا اور بچھے بڑا عزاز دیا۔ میں
بیا او قات آپ کے خلوت کرتے میں بھی چلا جایا کرتا تھا اور رات کے وقت اکثر میں اس کے ہل
وقت گزارا کرتا تھا، ایک رات نضر بن شمیل بھی مامون الرشید کے دربار میں ایک دعوت میں
شریک تھا ہم لوگ کھانا کھا کر فارغ ہوئے تو مامون الرشید نے کہا اب پچھے علمی باتیں بھی ہو وائیں السی لوگ صاحب علم ہیں بنی بھی ہو استفادہ کوں گا۔ ابو حذیفہ نے کہا کہ میں نے نضر سے پوچھا آپ ایکان کے متعلق کیا خیال رکھتے ہیں؟ اس نے کہا کہ میں ان شاء اللہ مومن ہوں، میں نے سوال
کیا تمہارے پاس قرآن پاک سے کوئی ایکی ولیل ہے کہ آپ اپنے ایمان کے متعلق ان شاء اللہ کہ
رہے ہو؟ اس نے کہا کہ اللہ تعالیٰ نے اپنی ولیل ہے کہ آپ اپنے ایمان کے متعلق ان شاء اللہ کہ
مجد میں داخل ہو چکے تھے یا باہر تھے؟ نضر کئے گے ابھی آپ مٹاجیم مجد کے باہر بی تھے۔ میں نے
محد میں داخل ہو چکے تھے یا باہر تھے؟ نضر کئے گے ابھی آپ مٹاجیم مجد کے باہر بی تھے۔ میں نے
محد میں داخل ہو چکے تھے یا باہر تھے؟ نضر کئے گے ابھی آپ مٹاجیم مجد کے باہر بی تھے۔ میں نے
ماک کہ آگر اب تک تم ایمان سے باہر ہو تو ضرور کہو ان شاء اللہ میں مسلمان ہوں۔ میری
بات من کر مامون الرشید بنس پڑا اور نضر کو دیکھا تو وہ شرمندگی سے بانی بانی ہو چکا تھا۔

خالد بن صبیح راینی فرماتے ہیں کہ ایک بار بغداد کے چند سادات گھرانوں میں جھڑا ہو گیا و

یے پاس آئے تاکہ میں فیصلہ کول وونول فریق بحث کرتے رہے اور معالمہ طول پکڑ گیا میں نے معلقہ کیا ور معالمہ طول پکڑ گیا میں نے معالیہ کیا اور معالمہ کواہ بیش کو وہ کواہ الے کر آگئے میں نے نہ تو گواہوں کی صفائی کا مطالبہ کیا اور یہ گواہوں سے گواہوں کی صفائی کا مطالبہ کیا اور یہ گواہوں سے گواہوں سے گواہوں سے گواہوں کو پیش کرتے ہوئے اصرار کیا کہ آپ اپنا سے اپنا موتف پر اڑے رہے اب مدعوں نے گواہوں کو پیش کرتے ہوئے اصرار کیا کہ آپ اپنا سے نافذ کریں میں نے گواہوں کے متعلق وریافت کیا تو انہوں نے ان کی صفائی جابت کر دی میں نے ان کے حق میں فیصلہ دے دیا۔

اس دوران مامون الرشید مرو کے دورے پر آیا ہوا تھا، مدعا علیم مامون الرشید کے پاس

المجینج اور میری شکایت کی کہ میں نے بلا تحقیق فیصلہ دے دیا ہے، مامون الرشید نے جھے طلب کرلیا

المر ساری بات سن کر فرمایا کہ آپ کو اتن کیا جلدی تھی کہ فیصلہ کر دیا میں نے بتایا کہ میں تو ٹالتا رہا

الموں نے گواہ پیش کیئے میں بھر بھی ٹالتا گیا، میرا خیال تھا کہ یہ لوگ صلح کرلیں گے گر صلح نہ ہو سکی

الموں نے عدالت سے فیصلہ لینے پر اصرار کیا، میں نے گواہوں کی چھان بین کرنے کے بعد فیصلہ

و دیا۔ مامون الرشید نے پوچھا کہ آپ نے کس کے فتوئی کی روشنی میں فیصلہ کیا؟ میں نے بتایا

مرے سامنے لمام ابوطیف رضی اللہ تعالی عنہ کا فتوئی بھی تھا گرامام ابولیوسف ریائید کا فیصلہ بھی موجود

مرابی سامنے المام ابولیوسف ریائید کے فیصلہ میں نرمی تھی، میں نے بھی نرمی افقیار کرکے فیصلہ دے دیا۔ ماموں

المید نے کما کہ احتیاط اور نجات کا بمی راستہ ہے کہ تمام امام ابوطیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے فیصلہ

مطابق فیصلہ کیا کو، جب تمہیں امام ابوطیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کا قول مل جائے تو پھراس سے مطابق فیصلہ کیا کو، جب تمہیں امام ابوطیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کا قول مل جائے تو پھراس سے مطابق فیصلہ کیا کو، جب تمہیں امام ابوطیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کا قول مل جائے تو پھراس سے مطابق فیصلہ کیا کو، جب تمہیں امام ابوطیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کا قول مل جائے تو پھراس سے مطابق فیصلہ کیا کو، جب تمہیں امام ابوطیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کا قول مل جائے تو پھراس سے مطابق فیصلہ کیا کو نہ کیا کو۔

خالد بن صبیح ریافی ایک عرصہ تک امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی صحبت میں رہے اور آپ سے استفادہ کیا اور امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی فقہ کو سارے خراسان میں پھیلایا۔ عبداللہ اللہ المارک ریافید جیسے جلیل القدر امام بھی آپ کی عزت و توقیر کیا کرتے تھے اور جب موقع ماتا استفادہ بھی کیا کرتے تھے۔ رافع بن اشرس فرماتے ہیں کہ خالد بن صبیح خراسان کے فخر اور امال مرو کے خاص بزرگوں میں شار ہوتے تھے آپ کو فقہ امام ابو حنیفہ پر بڑا کمال حاصل تھا اور وین کی معرفت اور امانت پر بڑا عبور تھا۔ بڑے باحیا تھے 'یوں معلوم ہو تاکہ ایک کنواری لڑکی ہے جو بھشہ پردے میں اور امانت پر بڑا عبور تھا۔ بڑے باحیا تھے 'یوں معلوم ہو تاکہ ایک کنواری لڑکی ہے جو بھشہ پردے میں

مكتبه نبويه

ربتی ہے ، گرجب فقہ پر بات کرتے تو یوں معلوم ہو تاکہ علم و فضل کا چشمہ ایل رہا ہے۔

خالد بن صبیح ریظیر فرماتے ہیں کہ میرے بہترین شاگردوں میں جو علم فقہ حاصل کرتے ہیں گر فتو کی دینے میں اجتناب کرتے ہیں۔ اس کے بعد وہ لوگ ہیں جو فتو کی اس لیئے دیتے ہیں کہ لوگوں گا دینی معاملات میں آسانی ہو جائے۔ گر خسیس ترین لوگ وہ ہیں جو قاصنی بن کر فیصلے کرتے جاتے ہے۔ اور لوگوں پر حاکم بن کر تھم چلاتے ہیں۔

فضل بن عطیہ روایتے ایک دن اہام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ کے پاس بیٹے ہوئے تھے آپ نے ان سے بوچھا تممارا بیٹا کیے لوگوں کے پاس آیا جایا کرتا ہے؟ انہوں نے بتایا کہ محد شیں کے پاس جا کر احادیث لکھتا رہتا ہے۔ آپ نے فرمایا اسے بھی میرے پاس لانا تاکہ دیکھوں کہ وہ کس حال میں ہے۔ فضل بن عطیہ ایک دن اپنے بیٹے کو آپ کے پاس لے آئے 'امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عظم اسے ناسے نمایت شفقت سے اپنے پاس بیٹھالیا اور بوچھا تم کن کن لوگوں کے پاس آتے جاتے ہو لو مال کیا لکھتے رہتے ہو؟ اس نے عرض کی محد ثین کے پاس جاکر احادیث لکھتا رہتا ہوں 'اس لڑک کے ہاتھوں میں کچھ کاغذات بھی تھے 'حضرت امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ نے وہ کاغذات لے کہ پر حفیا شروع کیئے تو پہلی حدیث پر نظر پڑی وہ بیہ تھی۔

عن النبى صلى الله عليه و آله وسلم أن ولد الزنا شر الثلاثة "كه ولد الزناتين عن النبى صلى الله عليه و آله وسلم أن ولد الزناشر الثلاثة "كه ولد الزناتين عن زياده برائب " حفرت امام روائية في بوجها اس حديث عن مطلب ليت بوجها الله والنالية و انا اليه راجعون تم أيك حديث كو بيت الفاظ تتم مين في ويت بي لكم ليت بين آب في منسوب كرك اليا تكم لكات بوجو جائز نهي اور حال بحى منسوب كرك اليا تكم لكات بوجو جائز نهي اور حال بحى منين بي توكتاب الله عليه و آله وسلم م منسوب كرك اليا تكم لكات بوجو جائز نهين اور حال بحى نهين بي توكتاب الله اور احاديث رسول الله طراية على خلاف بات ب- قرآن مجيد مين بي الله عليه و المدون وسول الله طراية على خلاف بات ب- قرآن مجيد مين بي الم

الم كلنفس بماكسبت رهنية الم

🖈 پُرَ قَرَالًا ليجزي الذين اساوا بما عملوا 🖈

🖈 پجرفرمايا وان ليس للانسان الا ماسعي 🖈

☆ كير قرايا ولا تجزون الا ماكنتم تعلمون ١

اور فرمايا و وجدوا ماعملوا حاضرا ١

لا اور فرماياولا يظلم ربك احدا ☆

☆ اور قرايا وما ربك بظلام للعبيد ۞

اور قرمايا ان الله لا يظلم مثقال فرة ا

☆ اور قرمايا ونضع الموازيس القسط ليوم القيامة فلا تظلم نفس شيا ۞

☆ اور قرمایا وما ظلمناهم ولکن کانوا هم الظالمین ۞

☆ اور قرايا لها ماكسبت وعليها ما اكتسبت ١٠

☆ اور قرمایا ان احسنتم احسنتم لانفسکم وان اسأتم فلها ☆

☆ اور پر فرمایا ولا تزروازرةوزر اخری ۵

آپ نے اور بھی بہت می آیات کریمہ پڑھ کر اس سے پوچھا اب بتاؤ جس نے تہیں یہ حدیث لکھوائی ہے اس نے کیا کیا ؟ اس نے عرض کی اس نے قرآن پاک کی آیات کریمہ کے خلاف بات کی ہے اور اس گناہ سے اپنے اور عذاب واجب کر رہا ہے اور ظلم وستم کی بات کر رہا ہے۔

فضل بن عطیہ نے یہ گفتگو بن کر حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی خدمت میں عرض کی اللہ تعالیٰ آپ پر رحم فرمائے آپ اس حدیث کا صحیح مطلب بتا دیں' آپ نے فرمایا ہمارے نزدیک بیہ تھم خاص فتم کے " ولدالزنا "کے لیئے ہے' ایبا ولدالزنا جو برا ہو کر اپنے مال باب جیسا عمل کرتا ہے' زنا کا ارتکاب کرتا ہے' وو مرے برے اعمال کا مرتکب ہوتا ہے' قتل چوری ڈاکہ اختیار کرتا ہے' اس لیئے کما گیا کہ ایبا "ولذالزنا " تین سے زیادہ برا ہے' اس کے مال باب تو صرف زنا کے مرتکب ہوئے تھے کفر نہیں کیا تھا گر اس کا عمل کفر بھی ہے ایبا کفر جو زنا سے بھی برا ہے اور یمی تین میں سے زیادہ برا ہے۔

فضل بن عطیہ نے اپنے بیٹے کو مخاطب کر کے کما بیٹا علم یہ ہے جو امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے پاس ہے۔ حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے اس نوجوان کو کما کہ جو مخص صرف حدیث کا طالب ہے گر اس کا مطلب اور تشریح سے ناواتف ہے وہ دین کو حاصل کرنے بیں کوشال تو ضرور ہے گر اس کی مصل نہیں ہوگا اس کی کوشش رائیگال جائے گی بلکہ بعض او قات ایسا علم اس کے لیئے وبال جان بن جاتا ہے۔ اس دن کے بعد وہ نوجوان (محمد بن فضل) حضرت امام ایسا علم اس کے لیئے وبال جان بن جاتا ہے۔ اس دن کے بعد وہ نوجوان (محمد بن فضل) حضرت امام

a Arthur Marian Marian

ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنه کی مجالس میں آنے لگا۔

## محمد بن فضل راينيه

محمد بن الفضل قبیلہ بنو اسد سے تھے' آپ بہت عرصہ بخارا کے علاقہ ختابین میں رہے اور وہاں ہی فوت ہوئے اور '' دارالرضی '' کے پاس وفن کردیئے گئے۔

( مترجم كا نوث ) ہم كتاب كے قار كين سے معذرت كے ساتھ چند گذار شات كرنا جاہتے ہیں كہ دین کی فضیلت اور احادیث کا مطالعہ کرنے میں کسی کو کلام نہیں مگر علم دین کو صحیح طور پر جانے کے لیئے ایک " شعبہ علم الفقہ " بھی ہے اور اس علم کے جاننے والے کو فقیہ کہتے ہیں۔ احادیث پاک کا جمع کرنا' ان کا حفظ کرنا بلاشک و شعبہ ایک اہم کام ہے مگر احادیث کا صحیح صحیح مطلب جاننا فقها کا ہی کام ہے۔ حضرت سیدنا امام بخاری رحمتہ اللہ علیہ حافظ احادیث تھے ' تذوین احادیث میں ان کا نمایت اہم مقام ہے' وہ امام المحدثین ہیں' ورع و تقویٰ میں اپنے زمانے میں بے مثال تھے مگر جب آپ نے احادیث کی روشنی میں فتوی دینے کی کوشش کی تو اس میں کامیاب نہ ہو سکے۔ یہ بات حقیقت پر مبنی ے کہ حفرت امام الائمہ محمد بن احمد الى سل السرضى (متوفى ١٨١٥ه ) نے اس واقعه كو اين "مسبوط" میں لکھا ہے کہ حفرت امام محمد اساعیل بخاری رحمتہ اللہ علیہ چار پاید کے دودھ کی حرمت رضاع کے قائل تھے۔ بخارا میں تشریف لائے تو ای پر فتوی دینے لگے ' بیہ زمانہ ابو حفص رحمتہ اللہ علیہ کا تھا' آپ نے امام بخاری ملیائیہ کو الیا فتوی دینے سے منع فرمایا اور متنبہ کیا کہ فتوی دینا آپ کے بس کا روگ نہیں ہے گر امام بخاری رایٹیے نے آپ کی نصیحت کی پرواہ نہ کی بالا آخر امام بخاری والیے ے فتویٰ یوچھا گیا کہ دو بیچ آگر ایک ہی بمری کا دودھ لی لیس تو کیا وہ بمن بھائی بن جائیں گے؟ امام بخاری راینیے نے فورا فتویٰ وے دیا کہ ان پر حرمت رضاعت ثابت ہو جائے گی۔ ان کے اس فتویٰ پر علمائے کرام نے بوا احتجاج کیا اور تلخی یہاں تک کہ بوھی کہ آپ کو بخارا سے نکال دیا گیا۔

یہ واقعہ چار نادرالوجو آئمہ کرام کی معتراور مضور کتابوں میں موجود ہے۔ آج کوئی صاحب علم اس سے انکار نہیں کر سکتا۔ ہم اس واقعہ سے صرف یہ بیان کرنا چاہتے ہیں کہ احادیث پاک کا صرف جمع کر لینا 'حفظ کر لینا یا نقل کافی نہیں ہے' احادیث کی روایت کرنا بھی نمایت اہم کام ہے' گر

ان احادیث ہے مسائل کا انبساط کرنا اور ان احادیث سے صحیح مسئلہ دریافت کرنا صرف فقیہ کا ہی کام ہے اور فقہ علوم احادیث اور علوم تغیر پر جامع ہے۔ ہم ایک مثال پیش کرتے ہیں کہ اللہ تعالیٰ نے کی مومنوں کو جماد میں جانے سے منع فرمایا اور ایسے لوگوں کے لیئے علم فقہ کے حصول اور روسری ضروریات کو سرانجام دینے کی ذمہ داری عائد کی ہے۔ سورة توبہ میں ارشاد فرمایا:

و ما کان المومنوں لینغروا کافۃ فلو لانفر من کل عرفۃ منھم طایفۃ یفقھو فی الدین ﷺ فقہ میں سب کے سب مومنون کو میدان جہاد میں جانے کی اجازت نہیں دی 'ایک گروہ ایسا بھی محفوظ ہونا چاہئے جو علم فقہ حاصل کریں اور لوگوں کے مسائل حل کریں 'اس آیت کریم ایسا بھی محفوظ ہونا چاہئے جو علم فقہ حاصل کریا فراد دیا گیا ہے ' یمی وجہ ہے کہ مفرفی فقہ نے احکام دین کو مرتب کیا اور اس کے مسائل کو صحیح صحیح بیان فرمایا ہے دونوں فرائض ہیں 'جہاد پر جانا فرض ہے مگر دونوں کو فرض عین کی بجائے فرض کفایہ قرار دیا گیا ہے۔ عبادت صوم و صلاۃ فرض عین ہیں مگر جہاد' تجارت' مفارت اور عدالت کے معاملات فرض کفایہ ہیں ایک محف اتنا علم حاصل کرتا ہے کہ اسے اجتماد کی صلاحیت حاصل ہو جاتی ہے تو وہ میدان جنگ میں جانے کی بجائے احکام اسلام کے نفاظ کا فریضہ مرانجام دے گا۔ اگر پورے شہر میں ایک محف بھی اس مقام کو حاصل کر لیتا ہے تو معاشرے میں مرانجام دے گا۔ اگر پورے شہر میں ایک محف بھی اس مقام کو حاصل کر لیتا ہے تو معاشرے میں فرضیت پوری ہو جاتی ہے اور اس طرح فرض کفایہ کی ادائیگی سے سارے شہر کی طرف سے فرضیت پوری ہو جاتی ہے۔

ایے جلیل القدر علم کو حاصل کرنا' اے پھیلانا' تھم ربانی ہے۔ ایک فقیہ کے لیے اس سے بڑھ کر اور کونی فضیلت ہو سکتی ہے وہ اسلامی ادکامات کو صحیح انداز میں پیش کرتا ہے آج دنیائے اسلام پر ثگاہ ڈالیں' عرب و عجم سے نکل کر برصغیر پاک و ہند کے علاوہ یورپ اور روس کے مختلف ممالک ایام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی فقاہت اور دینی راہنمائی سے مستفیض ہو رہے ہیں۔ پوری امت کا تیمرا حصہ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی فقہ کی روشنیوں میں اپنے مسائل حل کر رہا ہے۔ آپ کے پیروکاروں میں برے برے ائمہ' اولیاء اللہ اور اہل علم و دائش موجود ہیں۔ ہمارے نزدیک امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو دو سرے مقدا اماموں سے علم فقہ کی وجہ سے برتری حاصل ہے۔ اور یکی وجہ ہے کہ آپ کو دنیائے علم میں سب سے اعلیٰ مقام حاصل ہے۔ آج امام ابوحنیفہ رضی

الله تعالی عند کی پیروی کرنے والول میں لاتعداد محدثین منکلمین صوفیا نباد اولیاء الله الله الله تعالی عند کی پیروی کرنے والول میں لاتعداد محدثین منکلمین صوفیا نباد ملام کے اکثر حکمران امام ابو حفیفہ رضی الله تعالی عند کی فقد کے مقلد تھے۔ احادیث میں قیامت کے نزدیک حضرت عیسی علیه السلام اور امام مهدی علیه السلام کا جس شریعت پر عمل ہوگا وہ بلاشبہ امام ابو صفیفہ رضی الله تعالی عند کی فقد ہوگی۔ یہ ایک غیر معمولی شرف اور فضیلت ہے۔ (تمت حاشیہ من مترجم)

کی بن ابراہیم رختہ اللہ فراتے ہیں کہ میں تجارت کیا کرنا تھا' ایک وفعہ امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی خدمت میں حاضر ہوا' آپ نے فرمایا کی تم تاجر آدی ہو اگر علم کے بغیر تجارت کی جائے تو وہ وبال جان بن جاتی ہے بلکہ ایک جائل تاجر بہت می فرابیاں پیدا کرتا جاتا ہے' تنہیں پہلے علم حاصل کرنا چاہئے خصوصاً علم فقہ کی طرف توجہ دینی چاہئے۔ کمی بن ابراہیم مطافح کہتے ہیں کہ امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ مجھے تحصیل علم کے لیئے ترغیب دیتے رہے جی کہ میں نے علم حاصل کرنا شروع کر دیا' یمال تک کہ اللہ تعالیٰ نے مجھے اپنے علم سے وافر حصہ عطا فرما دیا' میں امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے اس احمان کا زندگی بھر ممنوں رہوں گا' ہر نماز کے بعد میں ان کے لیئے دعا کرتا ہوں اور ان کا جب بھی ذکر آتا ہے تو مجھے نمایت ہی مسرت اور راحت نصیب ہوتی ہے۔ اللہ تعالیٰ نے ان کی برکت سے مجھ پر علم کے دوازے کھول دیتے ہیں۔

ابوسلیمان جوزجانی رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی ایک شان سے بھی ہے کہ اللہ تعالیٰ نے انہیں اپنے علوم کی دولت سے نوازا تھا۔ ان کے تلافہ اکتھے ہو کر کسی مسلہ پر گفتگو کرتے تو بعض او قات بحث و تحجیص میں ان کی آوازیں بلند ہونے لگتیں۔ وہ مخلف موضوعات کو موضوع تخن بناتے گر امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نمایت ہی خاموشی سے ان کی گفتگو سنتے رہتے یوں محسوس ہو تا آپ مجلس میں تشریف فرما نہیں ہیں حالانکہ اس مجلس میں وقت کے جلیل القدر فقیہ اور ائمہ بیٹے ہوتے تھے۔ ایک دن امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کسی مسلہ پر گفتگو فرما رہے تھے اور بہ سب حضرات خاموش بیٹے سنتے جارہے تھے' ایک شخص نے کما" پاک وہ گفتگو فرما رہے تھے اور بہ سب حضرات خاموش بیٹے سنتے جارہے تھے' ایک شخص نے کما" پاک وہ گفتگو فرما رہے جس نے امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے لیے ان حضرات کو خاموش کرایا۔"

ابو سلیمان مالیجه فرمایا کرتے ہیں کہ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ زمانہ بھرے ایک نابغہ

ہیں۔ آپ کی گفتگو سے صرف وہی شخص روگردانی کرتا ہے جسے ان مسائل سے دلچین نہیں ہوتی تقی۔

#### ابوسليمان رمايثيه كانتعارف

ابوسلیمان امام ابوبوسف اور امام محد رحمته الله علیما کے شاگرد تھے۔ عبادت و ریاضت میں مشہور تھے۔ ورع و تقویٰ میں بے مثال تھے۔ ایک دن وہ عبای دربار میں مامون الرشید کے پاس بیٹے تھے تو خلیفہ نے فرمایا اگر اسلام میں کمی نے اہل الثراء کے راہب کو دیکھنا ہو تو وہ ابوسلیمان مالیجہ کو دیکھے۔ مامون الرشید نے آپ کو ایک بار عہدہ قضاۃ سونچنا چاہا تو آپ نے انکار کر دیا اور فرمایا اس سلمہ میں میں امام ابوحنیفہ رضی الله تعالیٰ عنہ کی پیروی کرتا ہوں۔ کچھ عرصہ کے بعد مامون الرشید نے آپ کو دوبارہ عمدہ قضاۃ سپرد کرتا چاہا تو آپ نے سات دن کی مسلت مائی مگر آپ نے بھرانکار کر دیا امرالمومنین! آپ کو یاد ہوگا کہ میرے دو نیک بخت صاحب علم بھائی ہیں ایک سیمل بن مزاحم ہیں امیرالمومنین! آپ کو یاد ہوگا کہ میرے دو نیک بخت صاحب علم بھائی ہیں ایک سیمل بن مزاحم ہیں جب آپ مرد کے دورے پر گئے تھے تو آپ نے انہیں عمدہ قضاہ پیش کیا گر انہوں نے انکار کر دیا آپ نے انہیں مزا دی۔ آپ نے اس عمدہ کو قبول بہت کہ اس عمدہ کو قبول کرنے پر مجبور نہیں کروں گا' اس لیئ آپ کے عمد کے مطابق مجھے امید ہے کہ آپ مجھے مجبور آپس کریں گے۔ ماموں الرشید تھوڑی دیر سوچنا رہا پھر کئے نگا آپ جائے۔

یکی بن سلیمان روائی نے فرمایا کہ ایک دن میں امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے پاس بیشا تھا' آپ کا صاجزادہ حماد دوڑا دوڑا آیا اور کھنے لگا ابا جی سخت گرمی ہے' ناشتہ تیار ہے' آپ کے سے مہمان بھی گرمی کی شدت سے پہلے پہلے ناشتہ کر لیس تو اچھا ہے' آپ نے اپنے بیٹے کے کان میں مرگوشی کرتے ہوئے فرمایا بیٹا اب رات میں کی آگئی ہے یہ گرمی شاہد اس دجہ سے ۔۔۔

عمر بن محمد علیے نے فرمایا ابو خزیمہ کے سامنے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کا ذکر ہوا تو کہنے لگے وہ بهترین فقیہ اور فاصل بزرگ ہیں'تم نے ان کا ذکر کر کے خوش کر دیا۔

محد بن سلمہ رایلیے نے فرمایا ہم بھرہ گئے ہماری خواہش تھی کہ بھرہ کے محدثین سے احادیث

بإمام اعظم مكتبه نبويه

تقل کریں۔ ہم ایک شخ کی مجالس میں پنچ انہوں نے کاغذات نکالے اور امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی روایت کردہ احادیث لکھوانے گئے ایک بے ذوق مخص جو امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ مخالف تھا احادیث لکھون نے انکار کرنے لگا محمہ بن سلمہ دیلیجے نے اس کی اس بے ذوق کے پیش نظر اس سے احادیث لکھوانا بند کر دیں اور فرمایا میں نے امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی مجلس میں فلال فلال جلیل القدر فقیہ کو دیکھا تو آپ بات کرتے جاتے اور روتے جاتے جب امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی موقع ہیں فلال فلال عنہ کے بید لوگ کون ہوتے ہیں اللہ تعالیٰ عنہ سے ایک کون ہوتے ہیں جو انکار کر رہے ہیں۔ ہم سب نے آپ کی منت ساجت کی آپ کے آنسو تھے ' تب آپ لے احادیث لکھواتے گئے۔ جس ایک کم نصیب نے انکار کر دیا تھا۔

امام ابواسحاق روائی فرمایا کرتے تھے کہ مجھے ان لوگوں پر ترس آتا ہے جو امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے علم کا حصہ لینے ہے محروم رہے اور ابن عبداللہ روائی نے فرمایا کہ میں نے حازم مجتلہ سے سنا انہوں نے فرمایا میں نے امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے زہد ' تقویٰ 'عبادت' یقین ' توکل اور اجتماد کے بارے میں وضاحت طلب کی تو انہوں نے ہر موضوع پر علیحدہ علیحدہ تغییر بیان فرمائی ' میں ایک کی واضح تعریف کرتے گئے ' ایک دو سرے سے ممتاز بتاتے گئے ' مجھے یوں محسوس ہوا کہ آپ ہر موضوع پر بہت برے عالم ' صاحب علم و فضل ' فقیہ اور زاہد اصحاب یقین اور مجتمد ہیں اور آپ تمام امور پر کامل عبور رکھتے ہیں۔

 رہوں گا۔ آئندہ مجھے بھی امام ابوبوسف رائی کے حواثی ملتے تو میں ان پر سرخ نشان لگا دیا کر آ تھا کہ ملاوث میرے مطالعہ میں نہ آئے۔

ابن دراوردی رحتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ میں نے امام مالک رضی اللہ تعالی عنہ اور امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو معجد نبوی میں نماز عشاء کے بعد دیکھا وہ علمی گفتگو کر رہے تھے ایک امام بات کرتا تو دو سرا نمایت اوب اور خاموشی سے بات شنتا و و سرا کرتا تو اس پر اعتراض یا انکار نہ ہوتا کہ سللہ صبح کی نماز کی اذان تک جاری رہا اور میں بھی اس مجلس میں ساری رات خاموش جیشا سنتا رہا۔

سعید بن ابی عروبہ ریا لیے ملہ بوجھا تو آپ نے فرمایا حضرت عثان رحمتہ اللہ تعالیٰ عنہ کی خدمت میں حاضر ہوا' ایک مسلہ بوجھا تو آپ نے فرمایا حضرت عثان رحمتہ اللہ علیہ نے بوں فرمایا ہے' میں حیران تھا کہ سارے کوفے میں کی نے عثان رحمتہ اللہ علیہ نہیں کہا سب لوگ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کہتے ہیں' مجھے معلوم ہوا کہ آپ حضرت عثان ذی النورین رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا ذکر نہیں کر رہے تھے بلکہ عثان البتی رحمتہ اللہ علیہ کا ذکر تھا۔ لوگ ای عثان کو معتزلہ کے طبقہ میں شار کرتے تھے۔ امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ چو نکہ ان کے فرجب سے واقف تھے اس لیے انہیں رحمتہ اللہ عقان موسی اللہ تعالیٰ عنہ چو نکہ ان کے فرجب سے واقف تھے اس لیے انہیں رحمتہ اللہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو دور کر دیا۔ ایک روایت میں ہے بھی ہے کہ حضرت عثان بن عفان رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا ذکر کرتے وقت رحمتہ اللہ علیہ کما کرتے تھے تاکہ شیعہ لوگ آپ کی روایت میں نے کہ شیعہ لوگ آپ کی روایت میں کربدک نہ جائیں اور احادیث سے محروم نہ رہیں (واللہ اعلم باالصواب)

## امام جعفرصادق الفتقالين كاشيخين كے متعلق عقيده

حضرت امام ابوصنیفہ رضی الله تعالیٰ عنہ فرماتے ہیں کہ میں ایک بار مدینہ منورہ میں حاضر تھا۔
حضرت امام ابوجعفر مجر بن علی رضی اللہ تعالیٰ عنما کی خدمت میں حاضر ہوا تو آپ نے فرمایا اے
میرے عراتی بھائی! میرے قریب آؤ' میں آپ کے قریب ہوگیا اور عرض کی حضور حضرت ابو بحر اور
حضرت عمر رضی اللہ تعالیٰ عنما کے متعلق کیا خیال رکھتے ہیں' لوگ کہتے ہیں کہ آپ ان سے بیزاری
کا اظہار کرتے ہیں ؟ حضرت امام جعفر صادق رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرمانے گے معاذاللہ جھے رب کعبہ کی

مکتب انجم

قتم ہے بیہ لوگ جھوٹے ہیں اور جھوٹ بولتے ہیں۔ اے ابو حنیفہ! تنہیں معلوم نہیں کہ حضرت علی كرم الله وجه نے اپنی لخت جگر بیٹی ام كلثوم بنت سيدہ فاطمہ رضی اللہ اللہ تعالی عنها كو حضرت عمر رضی اللہ تعالی عنہ کے نکاح میں دیا تھا کیا تہیں معلوم نہیں ام کلوم کون تھیں ؟ جن کی دادی خدیجہ الکبری رضی اللہ تعالی عنها تھیں' حضرت خدیجہ تو تمام امت کی عورتوں کی سردار ہیں کیا تنہیں معلوم نہیں کہ ام کلثوم کے نانا سیدالانبیاء حضرت محمد صلی الله علیه و آله وسلم تھے اس ام کلثوم کے بھائی حسن و حسین رضی اللہ تعالی عنما تھے جو جنت کے نوجوانوں کے سردار ہیں۔ اگر سیدنا عمرام كلوم كے فكاح كے الل نہ ہوتے تو يہ سارے حضرات بھى اس بات ير راضى نہ ہوتے۔ يس في عرض کی میں آپ کا دین ہے ' جو لوگ آپ کے خلاف باتیں بناتے ہیں وہ غلط گو اور جھوٹے ہیں۔ میں نے گذارش کی کہ آپ نے جو کچھ فرمایا ہے وہ مجھے لکھ ویں تاکہ جو لوگ آپ پر بہتان باندھتے ہیں انہیں وکھا سکوں' آپ نے فرمایا وہ لوگ قلبی طور پر سیاہ ہیں' وہ میرے لکھے ہوئے کو بھی نہیں مانیں گے 'میں آپ سے بالمشاف، بات کر رہا رہوں 'میں نے تہیں کماتھ کہ میرے نزدیک نہ بیٹھو مگر تم بیٹھ گئے اور باتیں بھی کرتے رہے ، جب تم میرے سامنے میری بات نہیں مانے تو کونے کے وہ لوگ میری تحریر کو کب مانیں گے۔ ( یہ بات آپ نے مزاحا" کہی تھی آکہ امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عند آپ سے تحریر کا اصرار نہ کریں۔)

بشربن الحارث ملطح فرماتے ہیں کہ میں عیسیٰ بن یونس کے ہاں بیٹھا تھا وہاں حضرت امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عند کا ذکر کیا گیا انہوں نے امام صاحب کے لیئے دعاکی اور فرمایا کہ آپ بھٹ اللہ کی نافرمانی سے بچاکرتے تھے اور اللہ کے احکامات 'شریعت پر کاربند رہاکرتے تھے۔

ایک وقت ایما آیا کہ عبداللہ بن المبارک ماٹیے نے امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو چھوڑ دیا اور آپ سے قطع تعلق کر لیا۔ ابواسحاق (راوی) فرماتے ہیں کہ مجھے اس بات پر برا دکھ ہوا کیونکہ عبداللہ بن المبارک ماٹیے کی بیہ بات مجھے بری تاگوار گئی میں ابراہیم بن شاس کے پاس آیا میرا ول بحرا ہوا تھا وماغ میں غصہ تھا میں نے انہیں کما مجھے بیہ خبر آئی ہے کہ عبداللہ بن المبارک نے امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے قطع تعلق کر لیا ہے۔ انہوں نے فرمایا معاذاللہ ایما بھی نہیں ہو سکنا کہ رہے ہو ابواسحاق کی رائے تھی کہ میری اس بات پر ابراہیم بن شاس انہیں ایک تھیٹر مار

ويتا-

یہ بات مختفری ہے کہ گراس واقعہ کے بعد بول ہوا کہ احمد بن مردویہ سے بھی کما گیا کہ ابراہیم بن شاس کمہ رہا ہے کہ عبداللہ بن المبارک نے حضرت امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو چوڑ دیا ہے' آپ نے سن کر فصہ میں کما کہ ایراہیم بن شاس کو جاکر کمہ دو کہ عبداللہ بن المبارک سلطے کی تیش (۳۳) کتابیں تمہارے اس الزام کی تردید کرتی ہیں اور تمہاری اس عبارت کی تردید کرتی ہیں۔

ابوعبدالله بن ابی حفص مالیح فرماتے ہیں کہ اس زمانہ میں بعض صاسدوں اور طعنہ زنوں نے یہ بات بے پر اڑادی تھی کہ عبدالله بن المبارک مالیج نے امام ہو منیقہ رضی الله تعالی عنہ کو چھوڑ ویا ہے' اس پراپیگنڈے میں حضرت عبدالله بن المبارک مالیج کے بعض شاگردوں کا بھی ہاتھ تھا' گر حقیقت میں ایساکوئی واقعہ نہیں ہوا کہ عبدالله بن المبارک مالیج نے ایک کھے کے لیئے بھی این استاو الم ابوعنیفہ رضی الله تعالیٰ عنہ کو چھوڑا ہو۔

سلیم بن سالم مالیج نے فرمایا کہ ہم معر کے طقہ درس میں بیٹے ہوئے تھے ان کا طقہ درس لام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے طقہ درس سے بہت قریب تھا ہم ان سے سوال کرتے تو سعر امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے مسائل سے بات شروع کرتے۔ مجل میں سے ایک مختص نے کما معر ہم آپ سے اللہ اور رسول کا سوال کرتے ہیں تو آپ ان بدعتیوں کی باتیں شروع کر سے ہیں۔ معر اس مخص سے نمایت ناراض ہوئے اور فرمایا تمماری اس بے مودہ بات کا صرف میں جواب ہے کہ تم میری مجلس سے اٹھ کر چلے جاؤ ، تمہیں معلوم نہیں امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ بواب ہے کہ تم میری مجلس سے اٹھ کر چلے جاؤ ، تمہیں معلوم نہیں امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ بواب ہے کہ تم میری مجلس سے اٹھ کر چلے جاؤ ، تمہیں معلوم نہیں امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ بواب ہوتا سائر و موسم ج میں کعنہ اللہ میں کھڑا ہو جائے تو سارے عالم اسلام کے علماء اسے

ا مناقب اما واغدا و اما استاله

لي المناكم

ختى رين - لما حمد مع براي يون عند الما ين الما يعالى المناء المن

## ستنه براس لأخيد الرهيهي مينه بالمات به

المناه ا

المنابعة سان به لواردارا من سياف له من المنابع المنابع المنابع المنابع المنابع المنابع المنابع المنابع المنابعة المنابع

 آگر کوئی شخص میری اس بات کو نداق سمجھتا ہے تو اسے لکھ دو کہ ایک وقت آئے گا کہ اس کو اس کی صداقت پر یقین آجائے گا اور وہ حضرت جابر رضی اللہ تعالیٰ عنه کی بات کی داد دے گا۔ امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنه نے فرمایا ہمارے معاشرے کی عورتیں اس حدیث کی صداقت پر گواہ ہیں' شاید ابراہیم نے ایسی ہی عورتوں کو دکھ کر دو سری شادی کی آرزو نہیں کی تھی۔

امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا اگر ایک سے زیادہ عورتوں سے نکاح کرنا ہو تو اس طرح انصاف کرد جس طرح نبی کریم صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم نے کیا تھا ورنہ اجتناب کرد۔ حضور ماہیام نے اپنی ازدواج سے جو عدل اور حسن سلوک کیا ہے اگر ایسا نہیں کر سکتے تو دوسری شادی کرنا ظلم ہے۔

امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے حضرت قادہ رضی اللہ تعالی عنہ کی روایت بیان کرتے ہوئے کما حضور صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم نے فرمایا جو شخص ایک سے زائد بیوی رکھے گا اور انصاف نہیں کرے گا وہ قیامت کے دن دیکھے گا کہ اس کے جم کا ایک حصہ پھرا ہوا ہوگا۔ حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ فرماتے ہیں کہ ایک عورت سے نکاح کرنے میں سلامتی ہے و و سرے نکاح کرنے میں عدل کرتا ہوا مشکل ہے۔ اللہ تعالی سے سلامتی کی توفیق ما گئی چاھیئے کہ ہر شخص کو گھر میں سکون اور عزت طے۔ حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم نے فرمایا تمماری عورتیں تمماری مدوگار ہیں۔

ان باتوں کے علاوہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے عورتوں سے انصاف کرنے کے متعلق بہت می باتیں بتا کیں۔ حضرت عبداللہ بن عون ریائی فرماتے ہیں کہ میں نے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی باتوں سے بہت کچھ سیکھا تھا۔ آپ نے امام اعظم ریائیہ کے متعلق سے اشعار کے ۔

بلاريب عيال ابي حنيفه تهجده وقتياه الطريقه لتحمل من وظائفه اوظيفه ائمة هذه الدنيا جميعًا وظائف ليله واليوم شئى بنوا الايام ماكانت جميعا وكفة فقه شقلت عياناً

ي ١٩٠٠ م المداولما المالية الم

منينة على مهنة عناى أبايد صلة مهنة عناى أبايد صلة مهنة عناى -من منيه بالرا -رية رايد كسم راياته شاري منيه برا را اسرا رايد كدن ريا : سرة المحاسمة رايا و سرة الما المحاسمة راياته المحاسمة المحاسمة والمحاسمة المحاسمة ال

アジハー

مالنعمان في الانام نظير درع صادق و خلق جميل ونقى عاصم و صوت جمير ونقى عاصم و صوت جمير ان يكن في الورى امير بحق ان يكن في الورى امير بحق وله من جهاه اهلى وزير وله من جهاه اهلى وزير في سرير العلم إضحى و امسى في سرير العلم إضحى و امسى علم العلامين شرقاً و غرباً كل ذي امرة اسير هبواه علم فتواه والتهجد سرا

فىجوابالسوال برق خطوف واظ عفت الدواهى ثبير

ہیں۔ وہ سخاوت کا بہتا ہوا دریا ہیں' وہ علم کا چشمہ ہیں' وہ متی ہیں' صاحب عصمت ہیں' ان کی ازرو کی بہت بلند ہیں اور ان کے علم ہو فضل کے کھیت بھشہ سرسبز و شاواب ہیں' ان کے علم کا تخت ہر صبح و شام بچھتا ہے۔ آپ علوم کے تخت پر کتنی شان سے جلوہ فرما ہوتے ہیں' مشرق و مغرب کے تمام علماء اور ائمہ امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا لشکر ہیں۔ وہ خود خطیرہ قدرت کے لشکر ہیں سے ہیں' ہر مقلند انسان خواہشات کا قیدی ہوتا ہے گر دنیا کی تمام خواہشات امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی قیدی ہیں۔ وہ دن کی روشنی میں فتوئی دیتے ہیں' رات کے اندھروں میں عبادت کرتے ہیں' سری کے وقت تھید اوا کرتے ہیں' وہ چشمہ رحمت ہیں اور باغ لطف و کرم ہیں' آپ کے پاس ہر سوال کا جواب چہتی ہوئی تماوار کی طرح ہر وقت موجود ہوتا ہے۔

# على الم الدعية المنظمة كانات كارات

البر المواجعة المحاجة الما المناه ال

المناسخ بإن المناسخ ا

و مناقب امام اعظم

جیل سے اٹھایا گیا تو سارا بغداد اللہ آیا اور لوگ دھاڑیں مار مار کر رونے گئے۔ نماز جنازہ پڑھنے کے بعد آپ کو خیزران کے میدان میں سپرد خاک کر دیا گیا۔

## امام ابوصنیفه نفتی الله کا جنازه بجاس بزار لوگول نے پڑھا

لعیم بن کی نے فرمایا کہ ایک بزرگ آدی حضرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی فیبت کیا کرتا تھا اے کی لوگوں نے کہا کہ امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ اس زمانے کی بلند پایہ امام اور فقیہ ہیں تم اس کام سے باز آجاؤ گروہ پھر بھی فیبت کرتا رہتا' جب آپ کا وصال ہوا تو آپ کی نماز جنازہ پر بچاس ہزار سے زیادہ آدی آئے تو وہ چرت زدہ ہو گیا کہ جس شخص کی ہیں فیبت کرتا رہا ہوں اس کا یہ مقام ہے۔ اس نے تو بہ کی اور اپنے سابقہ گناہوں کی معانی مانگی۔ ایک روایت ہیں ہے کہ آپ کی وفات اگر چہ جیل میں ہوئی تھی گریہ زہر خورانی کا نتیجہ تھی' اب فیبت کرنے والے کا جب جنازہ اٹھا تو صرف وس آدی وہ بھی اس کے رشتہ وار موجود تھے۔

#### ابن جری راینیه کو صدمه

روح بن عبادہ ریٹیے نے فرمایا کہ میں ۱۵۰ھ میں امام ابن جرت ریٹیے کے پاس تھا' امام ابو صنیفہ رضی ابلتہ تعالیٰ عنہ کی وفات کی خبر آئی' امام جرت کہ ریٹیے نے اناللہ وانا الیہ راجعوان کما اور نمایت اندھو یہ موکر فرمایا افسوس آج عالم اسلام سے علم اٹھ گیا' فقہ کا آفتاب غروب ہو گیا۔ ابن جرش ایدھو یہ بین دنوں بعد اس سال فوت ہو گئے۔ حضرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ جب فوت ہوئے تو آپ کی عمر ستر سال تھی اور آپ ۱۵ھ میں فوت ہوئے تھے۔

## امام الوحنيفه تفتقاندتيجا كاعسل

محر بن الحسين نے فرمايا كہ جب حسن بن عمارہ نے امام ابو حقيفہ رضى اللہ تعالى عنہ كو عشل ويا تو فراغت كے بعد فرمانے لگے كہ اے امام ابو حقيفہ رضى اللہ تعالى عنہ آپ پر اللہ كى رحمت نازل مو آپ مارے نقیہ اعظم تھے۔ عبادت گذار تھے اور زہد و تقوىٰ ميں بے مثال تھے وضائل خير كے مو

المارا الماراك الماراك الماراك الماراك الماراك الماراك الماراك الماراك المراراك المرارك المرارك المرارك المرربين المارك المرربين المارك المرربين المارك المرربين المارك المرربين المارك المرربين المرارك المرربين المرر

たしいらしょうりゃくてんかし ملى لذ ماه ، ما خد ايول د مه ب آس لي كرا العلام المع الد ماه على الم يع في من من مراي المندات عن جار كم آب ال با فوي حدد فرار ، فوائ جائي ال السند حيدً لهن لألا ما الالالدار لي المين لديم الميارية المؤاني في المحد الديمة الله خدرك شورك المياك بالجوال الماجولي المراب اليامان المياسية المامية المامية ふしいるがははいないととはないしとというとうないないで مركي المارة و للدرية المنابية ع به من اله المح كي منه الأله الحريمة المريد الله في الحذير ديا المريد المنابد المريد المريد المريد المريد الم 「小流はんとない」といい、一方は一方は一方は一方は على على المنا والمنا والمن و المرا المنا ا الله عن المراسك المناسك المراسك المراسك المراسك المن المراسك ا

الما المناعدة المناع

سلیمان بن طرخان بصرہ کے ایک عظیم المام اور زمد و تقوی میں مشہور تھے۔

واؤد بن راشد الواسطی رحمته الله علیہ نے بتایا کہ میں عینی شاہد ہوں کہ جب امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو کوڑے دارے جاتے ہے اور انہیں مجبور کیا جاتا تھا کہ آپ عمدہ قضاۃ قبول کرلیں ، میرے سامنے آپ کو دس کو ڑے روزانہ دارے جاتے گر آپ انکار ہی کرتے رہے۔ جب یہ مسلسل سزا دی جائے گلی تو آپ ایک دن رو پڑے ' اے اللہ! تو جانتا ہے کہ میں قضاۃ کے صلاحیت نہیں رکھتا' گریہ لوگ باز نہیں آتے ' اب آپ کو مسلسل انکار پر جیل کے باہر لایا جاتا اور لوگوں کے سامنے کو ڑے دارے گر گر آپ نے قضاہ قبول کرنے سامنے کو ڑے دارے گر گر آپ نے قضاہ قبول کرنے ہیں کہ حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ خفیہ طور پر اللہ تعالیٰ ہے دعا مانگا کرتے تھے اللہم ادفع عنی شرھم " اے اللہ مجھے ان کے شرے علاوہ مخفوظ رکھ " بسرطل جب آپ نے شعب قضاۃ قبول کرنے ہے انکار کر دیا تو اور تکالیف کے علاوہ آپ پر کھانے پینے کی اشیاء میں بھی کی کر دی گئ اور قیدخانہ کی ختیاں بڑھا دی گئی اور حکومت عبایہ کو آپ کے اراوہ کو تبریل کرنے کے لیے کوئی چارہ کار نہ رہا تو آپ کو جیل میں زہر دیا جائے گئی اور ان مواج کے اراوہ کو تبریل کرنے کے لیے کوئی چارہ کار نہ رہا تو آپ کو جیل میں زہر دیا جائے گئی اور اس طرح آپ کی شمادت ظاہری اور خفیہ طریقوں ہوئی۔

ام ابو حنیفہ رض اللہ تعالی عنہ ایک دن مضور کے دربار میں بیٹھے تھے تو ایک درباری شخص نے آگر بوچھا کیا جب خلیفہ وقت مجھے کی آدی کے قتل کا عظم دے تو میں اے قتل کر دوں اور سے اپناع شرعی طور کیا حیثیت رکھتی ہے؟ امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے اس شخص ہے بوچھا کہ کیا امیرالمومنین ناحق قتل کا عظم بھی دیا کرتے ہیں اس نے کما نہیں ایسا بھی نہیں ہوا' آپ نے فرمایا اگر حق پر قتل کرنے کا عظم ہو تا ہے تو ضرور بجا لاؤ' اسی دوران حضرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے سامنے ایک پانی کا پیالہ بیش کیا گیا جس میں زہر ملا ہوا تھا خلیفہ نے عظم دیا کہ آپ اے بی لیس مگر کے سامنے ایک پانی کا پیالہ بیش کیا گیا جس میں زہر ملا ہوا تھا خلیفہ نے عظم دیا کہ آپ اے بی لیس مگر آپ انکار کرتے رہے اور فرمایا میں خود شی پر نہ اعانت کر تا ہوں' نہ عظم مانتا ہوں' آپ کو اس جرو اکراہ کے بعد واپس بھیج دیا گیا اور جیل کے اس کمرے میں محبوس کر دیا گیا۔ تھوڑے دنوں بعد آپ جیل میں ہی فوت ہو گئے۔ آپ کی نماز جنازہ کے لیئے سارا بغد اور امنڈ آیا اور لاکھوں لوگوں نے شرکت کی۔ بغداد میں ہی فوت ہو گئے۔ آپ کی نماز جنازہ کے لیئے سارا بغداد امنڈ آیا اور لاکھوں لوگوں نے شرکت کی۔ بغداد میں ہی آپ کو دفن کر دیا گیا۔

الإنهاء المدى (غلا تعالم على الدهيمة على الداء " كال الحداء الداء المدى الداء المدى الداء المدى الداء المداء المداء المداء المداء المناه المن

حدد الما عناجة له عن الله تعلى من الله تعلى عنه عن الدارك الما المن المناهدة المناه المناهدة المناهدة

پر نہ غصہ نہ کرتے ' نہ جھڑا' آپ کی گفتگو کا دلوں پر اثر ہو تا' اس کے باوجود کوفہ کے گور نر ابن هبیرہ نے عمدہ قضاۃ قبول کرنے سے انکار کرنے پر سخت سزائیں دیں۔ بیہ بات کرنے والا بغداد کا ایک عام شہری تھا' وہ بھی ان واقعات کو بیان کرنے کے بعد سوال کرتا ہے کہ کیا آپ لوگوں نے اسلامی تاریخی میں بھی ایک بھی ہخص کا نام سا ہے جے چیف جسٹس کا عمدہ دیا گیا ہو تو اس نے انکار کر دیا ہو اور انکار پر اتنا اصرار کیا کہ کوڑے تک کھائے ہوں' امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ اپنے۔ علائدہ شاگردوں اور عام لوگوں پر احسان فرمایا کرتے تھے' ان کی ضروریات کو یوں پورا کرتے اور فرمایا کرتے تھے کہ جہنم اور مقاتل دونوں فاسق ہیں' میں ان دونوں کے نظریات سے بیزاری کا اعلان کرتا ہوں۔ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ امت محمدیہ کے متکلم تھے۔ حلال و حرام کی تمیز رکھتے تھے' اس پر عمل کرتے تھے کہ ابرائیم کا قول ہے پر عمل کرتے تھے کہ ابرائیم کا قول ہے بیکس کیا کرتے تھے کہ ابرائیم کا قول کے بیکس کرتے تھے کہ ابرائیم کا قول یا فتوئی جان کر قبول کیا کرتے تھے۔

حکم بن ہشام فراتے ہیں کہ ہیں حلب گیا تو ایک شخص میرے پاس آکر کھنے لگا جھے حفرت الم ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا تذکرہ سنا کیں 'میرے پاس آیک الیا شخص بھی آیا جو بد بخت بھشہ الم ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے نقائص بیان کرتا تھا' ہیں نے پہلے شخص کے سامنے آپ کے اوصاف بیان کیئے اور بتایا کہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی کو کافر نہیں کماکرتے تھے آو فتیکہ کہ وہ شخص خور وائرہ اسلام سے باہر نہ چلا جاتا' آپ اپنے ہر محب کی خیرخواہی چاہتے تھے۔ وہ عظم الامانت تھے' بہب آپ کا وصال ہوا تو آپ کے پاس بے شار امانتیں موجود تھیں جو لوگوں کو لوٹا دی گئیں۔ آپ کی النت واری کی وجہ سے بادشاہ وقت نے آپ کو بیت المال اور سرکاری امانت خانوں کی چابیاں میرد کیں گر آپ نے یہ کہ کر انکار کر دیا کہ ان امانتوں پر میرا فقیار نہیں ہے۔ آپ کو امانت کے متعلق آخرت کے عذاب کا پورا پورا علم تھا۔ ہیں نے یہ واقعہ " مناقب صمیری " سے مختر بیان کیا ہے گئی آخر میں اس شخص نے کما تھا کہ جیسے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے اوصاف بیان کیئے گئے گئیں شیں نہیں سے تھے۔

عمدہ قضاۃ کی قبولیت کے لیئے خلیفہ کی کوشش

ابوجعفر منصور سلطنت عباسيه كے حكمران تھے اس نے حضرت امام ابو حنيفه رضى الله تعالم

الماماعظم

VAA

دو پېنامبتکه

(当にはしたいからは、一般をとうない」はないといいとなる よいしかないいいはとなるといいといいないにかなしよっにいかないしん あるれど、一分一日子子のはなななりなりの」という الما المح ملح الأرييز ايب لأياب كر مر لا قدار ما جه المح هي من الما ميه مديدية كد منه ركات منارف منيه يما إلى ك الحرام بديد الماك للا يا الحوي در الميهاوي المناف بالألين سيويدي أفالالاساد حيد بولك فيهاك لا ساء دعية ك المانية ولى الميونين را على المنا المحالات منه وللا منا الني المناه المواجد من الم きしろさいなるはらればしないしまるというとはるいりといいい المالمات رايا بالإلى من من اليونون في المالية المارية والمارية والمارية المن الحريدة الماليال المالة حسالا خرا الميالا للك المالة المالة عرالا المي المرايد يا بالمرايد في الله تعلى عد ويا يا يدر الم عبر الله عبر الله على عبر الله عبر الله المن الله عليه المالي المرابل المالي المالية المن الله عليه الدارة عليه المالية المالية المالية المالية المالية

مبل د الدي ك الدي التا الماذي الحالية الماذي على الماذي الماير المائد ا

بائیں ہاتھ امام صاحب کی قبر بنائی گئی ( یہ اس وقت کی بات ہے جب آپ کا وصال ہوا تھا اب تو الحمد لله آپ کا دصال ہوا تھا اب تو الحمد لله آپ کا شائد ار مزار بنایا گیا ہے ' ایک بلند و بالا گنبد ہے اور ساتھ ہی ایک عالیشان مسجد اور مدرسہ قائم ہے اور زیارت گاہ عوام و خواص ہے۔ مترجم )

بت ے تذکرہ نگار اس بات میں اختلاف کرتے ہیں کہ آیا آپ کی موت کو روں سے موئی تھی یا زہر خورانی کا نتیجہ تھی۔ عبداللہ بن مطبع کہتے ہیں کہ میرے والدنے مجھے بنایا کہ میں نے ایک جنازہ ابوجعفر کے محلات کے طاقیحوں میں جو باب خراسان سے نزدیک سے آتے ویکھا اسے چار آدی اٹھا کر لے جارے تھے اور صرف ایک آدمی اس جنازے کے پیچھے پیچھے آرہا تھا میں نے لوگوں سے پوچھا کہ یہ کس کا جنازہ ہے اس کا کیا نام ہے اوگوں نے مجھے بتایا کہ یہ ابوعنیفہ کا جنازہ ہے جے قد خانہ میں کو ژوں کی ضرب سے مار ویا گیا۔ ہم باب الخراسان کے باہر آئے تو ایک منادی نے سارے شرمیں اعلان کیا کو ابوصفیہ! کا جنازہ ہے آؤ جنازہ پڑھ لو۔ یہ آواز سنتے ہی سارا بغداد امنڈ آیا ہر طرف سے لوگ دوڑے دوڑے آنے گئے ابھی جنازہ باب الخیرران تک پہنچا تھا تو لوگوں کا ایک سمندر تھا جو جنازہ کے اردگرد جمع ہو گیا تھا' نماز جنازہ پڑھی گئی مگرلوگ مزید پہنچتے رہے حتیٰ کہ دوسری بار جنازہ بڑھایا گیا ابھی چند کھے گزرے تھے کہ ایک بہت بڑا جوم جمع ہو گیا اس طرح آپ کا تیسری بار جنازہ پڑھا گیا' وفن کرنے میں وشواری تھی جنازہ کو دور دراز لے جایا گیا' میں نے لوگوں سے پوچھا کہ آپ کو اتنی دور کیوں دفنایا جارہا ہے تو مجھے بتایا گیا کہ خلیفہ کے محلات کے اردگرد لوگوں کی غصب شدہ زمین ہے یہاں امام کو نہیں وفنایا جائے گا اور مقبرہ خیزران جو وقف شدہ زمین تھی اور پا کیزہ اور طيب تھي آپ کو دفن کر ديا گيا۔

ظیفہ منصور نے قیدخانہ میں ہی آپ کو زہر دلوایا تھا جس کی تفصیلات سابقہ صفحات میں گذر چکی ہیں لیکن منصور نے احساس ندامت کو کم کرنے کے لیئے ہیں دن گذرنے کے بعد آپ کے مزار پر آگر نماز جنازہ اداکی تھی 'جب اے بتایا گیا کہ آپ کو ان کی وصیت کے بیش نظر مقبرہ خیزرال میں وفن کیا گیا ہے تو منصور نے کما ابوطنیفہ اللہ جھے پر رحم فرمائے تو نے زندگی میں بھی مجھے فکست دی اور موت کے بعد بھی مجھے شرمندہ کیا ہے۔

" مناقب مميرى " مين يه واقعه لكف ك بعد لكها ب كه باب الحيرزان تك آپ كا جنازه

ويونونك ٦٦ ما ما المعالم المارية

弘高山

-ريغ لد شديال الجارية كو إلى من المع لاردادي الله على المعلى الما المرا به الما منه و المراحة و المراحة المراد ا على المراد المناحة المنافعة المن في المنافعة الم غرد كريم كل الله الله الله المن خيرا أب خول الله على الله على الله على الله الله الله الله الله الله آئين مون كومات يا ادر كر پنج ادر اچنكر كه طافيح يل شاق هم نامد پيغ ادر خور كر الله المريد هي يوني الدا المريد لينا المريم المعند منية الما إلا المريد المين الما الما الما الما الم على ولارة واليف حظ مد منام الموارا لاراونه الما الما الما الما الما المن المؤلون المن المناهد جانب الله ك لولها معلى معلى المالية المالية والمائد في المالية المالية المالية المالية المالية المالية المالية فياك يمنه براد المرايد المن المناهم المناسك المناسكة المن المارانة بالحرايد المالة المناه المناه المناه المحالية المراه المراه المراه المراه المراه المراه المراه من الرائم والمائي المرنوبي الإيشاني المريد المرائمة المائي المرفدة المرائدة سيخ - تحظ شابه ون سيرك ، دا لاري ك اليه نين بي إلما ت المحايد بي إلى جدال الد الياري الله الميان ال العارك المعلى والمدين المارية المارية المارية المارية المعلى المعلمة المارية

ار را الله اساد المحد لا سنينه عند حريم رايد راي در الما سنة راي سنينه با الما المنا سنينه با إلما عند سنينه با إلى سراي المحم الله بما المرايد في إلى يا الما با المعند - الما الما الما الما المنابعة ومعهد الله تعالی عنه کو باہر لے جاکر سو کوڑا مارا جائے اور انہیں قیدخانہ میں بند کر دیا جائے۔ آپ ایک عرصہ جیل میں رہے' سزائیں جھلتے رہے' کوڑے کھاتے رہے' آخر کار موت کے دروازے پر پہنچ گئے۔

یکیٰ بن نضر نے کما کہ کو روں کی سزا کے باوجود امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ ثابت قدم رہے گر آخری ونوں میں آپ کو زہر دے دیا گیا جس سے آپ کی موت واقع ہوگی۔

حضرت ابراہیم بن عبداللہ رحمتہ اللہ علیہ نے جن دنوں دعویٰ ظافت کیا اور ظیفہ عبای کے فلاف علم بغاوت بلند کر دیا' آپ ان دنوں بھرہ میں تھے' فلیفہ منصور عبای کو معلوم ہوا کہ آعمش اور امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ ابراہیم بن عبداللہ کی حمایت کرتے ہیں اس کی وجہ یہ تھی کہ ابراہیم بن عبداللہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو ایک خط لکھا تو آپ نے خط کو ایک خط لکھا تو آپ نے خط کھولے بغیرائے چوہا تو جاسوسوں نے فلیفہ کو اطلاع دی کہ امام ابو حنیفہ تو ابرہیم بن عبداللہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو ایک غنہ کو ختم کر دیا تعالیٰ عنہ کو ختم کر دیا حقیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو ختم کر دیا جائے چنانچہ اننی دنوں آپ کو زہر دیا گیا' وفات کے بعد آپ کے چرے پر زہر کے سبز نشانات ظاہر ہو جائے چنانچہ اننی دنوں آپ کو زہر دیا گیا' وفات کے بعد آپ کے چرے پر زہر کے سبز نشانات ظاہر ہو گئے تھے' وفات کے بعد آپ کے علاوہ کوئی چیز آپ کے گھرے بر آمہ شہوئی۔

عبدالعزیز بن عصام نیتابور میں آیا جایا کرتے تھے انہوں نے فرمایا میں نے امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی زیارت کی تھی آپ نے حضرت سے دریافت کیا کہ آپ نے عہدہ قضاہ سے کیوں انکار کر دیا' آپ نے بتایا کہ جب مجھے منصور نے عہدہ قضاۃ کے لیئے تھم دیا تو میں نے کہا میں اس منصب کی صلاحیت نہیں رکھتا' منصور کنے لگا آپ اس لائق ہیں' آپ جھوٹ کہہ رہے ہیں' حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرمانے گے ایک جھوٹا شخص چیف جسٹس کیے مقرر کیا جاسکتا ہے۔ آپ کا جواب س کر منصور سٹ بٹا اٹھا اور آپ کو قیدخانہ میں بھیج کر کوڑے مارنے کی سزا دی۔ منصور نے امام صاحب کو کہا آپ نے تو مجھے لاجواب کر دیا' اب مزاکے بغیر کوئی چارہ نہیں۔

راوی نے عبدالعزیز مالیج سے دریافت کیا کیا آپ نے حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عند کو کوڑے کھاتے دیکھا تھا؟ تو انہوں نے فرمایا ہاں میرے سامنے آپ پر کوڑے برسائے گئے

مناسر المناسرة المنا

ار ما المنافر المناف

عدارة المناهم المناهم

عبر الا تعديم المعاد في أماع المعاد المعاد

کے شہر میں واقع ہوئی تھی' اس وقت آپ کی عمر ہے سال تھی۔ بعض تذکرہ نگاروں نے حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی وفات کے اسباب لکھتے ہوئے لکھا ہے کہ منصور کے دربار کا ایک بہت بڑا امیر حسن بن قحطبہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے پاس آیا اور عرض کی آپ میرے کردار سے بخوبی واقف ہیں کیا میری توبہ قبول ہو سکتی ہے' آپ نے فرمایا کیوں نہیں' اللہ تعالیٰ کے ہاں کسی چیز کی کمی نہیں مگر ایک شرط ہے کہ جس چیز سے توبہ کرد آئندہ کے لیئے بچھ بھی ہو جائے اس پر قائم رہو' اس نے کہا حضور ہیں نے حکومت وقت کے حکم پر کئی ہے گناہوں کو قتل کیا ہے' میں اللہ سے عمد کرتا ہوں کہ آئندہ اس گناہ میں ملوث نہ ہوں گا۔ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا اگر تم

حسن بن تحطبہ یہ معاہدہ یا عمد کر کے چلاگیا انہی دنوں حضرت ابراہیم بن عبداللہ (الجسنّت بن سے بنے) نے علم بغاوت بلند کیا اور عبای حکومت کے خلاف آواز اٹھائی ، خلیفہ منصور نے حسن بن قحطبہ کو تھم دیا کہ جاؤ اور ابراہیم بن عبداللہ کا سر قلم کر کے میرے پاس لاؤ۔ اب حسن بن قحطبہ حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی خدمت میں حاضر ہوا اور عرض کی کہ ابو جهنم منصور خلیفہ عباس نے مجھے سخت تھم دیا ہے کہ میں ابراہیم بن عبداللہ دیائی کو قتل کروں امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے فرمایا اب تمہارے عبد اور توبہ کی آزمائش کا وقت آگیا ہے اگر تم اپن عمد پر تائم رہو گئے۔

یہ من کر حسن بن تحطبہ نے فیصلہ کرلیا کہ وہ ابراہیم بن عبداللہ روالیہ کو قتل نہیں کرے گا اور اس کے لیئے دربار کی طرف ہے ہر سزا قبول کرلے گا' اس نے وصیت کر دی ہیں خود قتل ہونا پند کروں گا گر کسی ہے گناہ کو قتل نہیں کروں گا' چنانچہ حسن بن قحطبہ نے منصور کے سامنے اپنا استعفیٰ پیش کر دیا اور انہیں بتایا کہ چونکہ ہیں نے توبہ کرلی ہے اس لیئے میرا استعفیٰ قبول فرمائے ہیں ابراہیم بن عبداللہ روالیہ کے خلاف تلوار نہیں اٹھا سکتا' میں اپنی سابقہ خدمات سے بھی توبہ کرتا ہوں' اس بات پر جعفر غصے میں بحراک اٹھا اس پر اس کے بھائی حمید نے آگے بڑھ کر خلیفہ جعفر کو کہا۔ امیرالمومنین میں دکھے رہا ہوں کہ حسن کئی دنوں سے بدلے بدلے ہیں اس لیئے انہیں پچھ نہ کمیں میں ایرائیم بن عبداللہ روالیہ کو قتل کروں گا اور آپ دیکھیں گے کہ میں اس مہم میں کامیاب رہوں گا ایرائیم بن عبداللہ روالیہ کو قتل کروں گا اور آپ دیکھیں گے کہ میں اس مہم میں کامیاب رہوں گا

ناقب امام اعظم ٢٣٣٨ مكتبه نبوي

چنانچہ خلیفہ کے تھم سے حمید لشکر لے کر چلے گئے 'دو سری طرف جعفرنے حسن بن قصطبه کی تھر اللہ کی تعمر اللہ کی تعمر کے لیئے اپنے ایک خاص جاسوس کو مقرر کیا اور تھم دیا کہ دیکھو یہ شخص میرے کن کن مخالفین کے پاس آنا جانا ہے 'کن کن علماء کی باتوں کو سنتا ہے اور کون کون اس کے باس آتے ہیں۔

حسن بن تحطبہ قید خانہ میں امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے پاس آیا جایا کر آتھا علیہ ابوجعفر منصور نے جب امام ابوحنیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو زہر خوارٹی کا تھم دیا تو اس نے یہ بھی تھم دیا کہ حسن بن تحطبہ کو بھی زہر دے دیا جائے آکہ اس واردات کا کوئی گواہ زندہ نہ رہے 'حسن القاق حسن بن تجطبہ کو اس زہر خورانی کا بروقت علم ہو گیا اس نے علاج کرایا تو اس کی جان نے گئی۔

### امام ابوحنیفہ نفتی المنائج موت کے دروازے پر

ابوحسان زیادی ریافیہ فرماتے ہیں کہ قیدخانے میں جب امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عدا کہ موت سامنے نظر آتی دکھائی دی تو آپ اللہ تعالیٰ کی بارگاہ میں سجدہ میں گر بڑے ابھی انہوں نے سجہ سے سر نہیں اٹھایا تھا کہ روح پرواز کر گئی '' اناللہ وانا الیہ راجعون '' یہ بات نمایت متند اور جو ہرکی طرح خالص ہے اور اس کی صحت سے کسی کو انکار نہیں ہے اس کے راوی حفی نہیں شافعی ہیں اس مام شافعی میں بیارگ ہیں' ان کے بال یہ الیمی حدیث ہے جو حفید امام شافعی روایئی نہیں ماتی۔ یہ ان حق پہند شوافع کی ویانت کی دلیل ہے' اللہ تعالیٰ ایسے سے لوگھا کی رای رحمین نازل فرمائے۔

### حضرت امام ابو حنيفه الضيالية كاسن وفات

ظیفہ بن خیاط صاحب الطبقات المعروف بشبابہ نے فرمایا کہ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعلی عند بنو تمنیم بن ثعلبہ کے موالی میں سے تھے۔ آپ ۱۵۰ھ میں فوت ہوئے تھے۔ محمد بن سعد کاتے الواقدی رحمتہ اللہ علیہ نے فرمایا ہے کہ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کا وصال ۱۵۰ھ میں ہوا تھا اللہ آپ بنو تمنیم بن ثعلبہ بن وائل کے موالی میں سے تھے۔ حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے صاحبرادے حماد رحمتہ اللہ علیہ نے فرمایا کہ میرے والد ستر سال کی عمر میں فوت ہوئے تھے۔ ابولیم کی

روایت میں امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی وفات ۱۵۰ھ میں ہوئی تھی۔ ابو تعیم اور دو سرے علاء تاریخ نے کہا ہے کہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کا جب وصال ہوا تو آپ کی عمر ستر سال تھی اپ کی نرینہ اولاد میں سے صرف حماد بن ابو حنیفہ را لیجیہ ہی تھے۔ ان کے علاوہ آپ کا کوئی بیٹا نہیں تھا۔

ابوقعم ملط فرماتے ہیں کہ آپ بغداد ہیں فوت ہوئے اور خزران میں سردخاک کیے گئے۔
آپ کی نماز جنازہ حسن بن عمارہ ملطح نے پڑھائی تھی۔ بشربن ولید نے فرمایا کہہ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی وفات جیل ہیں ہوئی تھی۔ ابوجعفر منصور خلیفہ عبای آپ کو خلافت عباسیہ کا چیف جسٹس مقرر کرنا چاہتا تھا گر آپ نے انکار کر ویا' اس نے آپ کی تقرری کی قتم کھا لی گر آپ نہ مانے' آپ نے فرمایا کہ خلیفہ کے لیئے قتم کا کفارہ اوا کرنا آسان ہے' خلیفہ نے آپ کے انکار کو توہین خلافت تصور کرتے ہوئے جیل میں بھیج ویا۔ آپ وہاں فوت ہو گئے' ہم اس سلسلہ میں مندرجہ ذیل قصیدہ چیش کرتے ہیں ۔

عزالشریعة اذمضی کشافها عمرالتقی والشرع اکثر عصره فجنانه معنی الشریعة ماهد فالفقه یشکویتمه وضیاعه لانفقد الانسان طرفة عینه عجابا لقبر فیه بحر زاخر ان راح فقه خالص فهوالذی اوفاح ورد تهجد قد زانه اوطار منشورالعلوم الی الوری

وطهیرها النعمان نحو جنانه بالا صغرین لسانه و جنانه ولسانه رطب بحسن بیانه ومتی سلو الفقه عن نعمانه فی طرفه ان یخل عن انسانه عجبا لبحر لف فی اکفانه سبکته شعلة فکره فی خانه طل الثقاة فناک من بستانه فهوالذی کتبوه فی دیوانه

rmy

مناقب امام اعظم

مكتبهنبويه

اوراق تفاح القياس بنشره و بطعمه فاعرفه من لبنانه اوعجبت صلة سماحة حاتم فتوسموها من طراز بنانه اوسرذا فقر جمان فائق عندالسوال فلاجمان عمانه اواذ راينم روض فقه ناضرا بالبحث يسقى فهو من سعدانه نصبت موائد طعمهن فوائد في كل مصر وهي فضل خوانه فمحاه بالآيات من فرقانه قدجاء اهل زمانه بزبورهم قدشد ايوان القياس بكده وقد استراح الخلق في ايوانه قدسه المنصور سما مزعفا ليعيش مامونًا على سلطانه مضيا الى لحد يهما هذا الى سخط الاله وذا الى رضوانه

حسانه انا مرتج فی مدحه حسنی شفاعته الی حسانه

قرجمه: آج شرق امور کے حل کرنے میں مشکلات پیش آدبی ہیں کیونکہ ان کے حل کرنے والا دنیا ہے رخصت ہو گیا ہے۔ آج اس کا کوئی مددگار نہیں رہا یعنی حضرت نعمان (ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ) جو داخل جنت ہو گئے ہیں ان کی ساری عمر تقویٰ میں گذری اور شریعت کی پاسراری کرتے رہے۔ زبان اور قلب کے لحاظ ہے آپ نے عوام الناس میں زندگی بسر کی۔ آپ کا دل شریعت کی گرائیوں سے مالعال تھا۔ آپ کی زبان شریعت کے بیان میں رطب اللمان رہتی تھی۔ آن فقہ یہتیم ہو گیا' وہ اپنی تیبی پر قائم رہا ہے۔ حضرت نعمان کے بغیر کون اسے تعلی دے سکتا ہے۔ ہم اپنی آنکھ کی بتلی کو آنکھ سے جدا نہیں کر سے۔ اس طرح امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ دنیائے علم سمندر محو خواب ہے۔ اس سمندر پر تعجب آنا ہے جس پر علم و فضل کا اتبا برا سمندر محو خواب ہے۔ اس سمندر میں اللہ تعالیٰ عنہ کی فقہ سے ممکا تو صرف امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی فقہ سے ممکا تو صرف امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی فقہ سے ممکا تو صرف امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی فقہ سے ممکا تو صرف امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی فقہ سے ممکا گو مرف امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی فقہ سے ممکا گو تجد کا ورد ممکا تو آپ کے سے ممکا تو صرف امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی فقہ سے ممکا گو تجد کا ورد ممکا تو آپ

نوافل سے اسے زینت بخش آج لاکھوں فقیہ آپ کے باغ سے سراب مو رہے ہیں۔ آج دنیا میں علوم کے دفتر لوگوں تک پہنچ رہے ہیں۔ تو یہ دفتر وہی ہیں جنہیں امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنه نے مرتب کیا تھا۔ قیاس کا سبب آپ کی ذہانت اور خطابت سے بارونق ہوا۔ آپ نے اس نفیس کھل کو چھا پھر اے دنیا میں پھیلا دیا۔ تم حاتم طائی کی سخاوت پر تعجب کرتے ہو، وہ تو حضرت امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عند کی انگلیوں کے پورول کا صدقہ ہے۔ کیا یہ چک دار موتی تمام خزانوں کو جگمگا رہے ہیں جب کہیں اجھائی کا بوال اٹھتا ہے تو حفرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عند عمان کے خزانے کا موتی بن کر نمایاں ہوتے ہیں۔ دنیا میں فقہ کا باغ اگر پررونق ہے تو امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنه كے چشمہ علم و فضل سے سراب ہو كر موا ہے۔ آپ كے دسترخوان ير طرح طرح كى لذيذاكتيں مجى ہوئی ہیں۔ سارا جہاں آپ کا اس خوروہ کھا رہا ہے سارا زمانہ اپنے علم و فضل کی کتابیں لایا مرامام ابوطیقہ رضی اللہ تعالی عنہ کی فقہ کے فرمان کی آیات نے انہیں منبوخ کر کے رکھ دیا۔ آپ نے قیاس کا ایک مضبوط محل تیار کیا جمال سے تمام مخلوق نے اپنا ایمان مضبوط کیا۔ آپ کو منصور نے زہر دیا منصور کا خیال تھا کہ وہ بیشہ زندہ رہے گا اور اس کی سلطنت کو زوال نہیں آئے گا دونوں این این قبرول میں اتر گئے۔ منصور اللہ کے غضب میں ہے اور امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنه رضوان اللی ك باغول مين آرام فرما رب بين مام الوصنيف رضى الله تعالى عنه كا احسان مند بول ان كى مدح لکھ رہا ہوں' اللہ اس کے احسان کو بہتر شفاعت عنایت فرمائے۔ آمین

# المم ابوحنیفہ تفظیمی کی مرح میں کے گئے چند اشعار

كنا من الذين قبل اليوم في سعة قوم اذا اجتمعوا صاحوا كانهم قاموا من السوق اذقلت مكاسبهم اما الغريب فامسوا لاعطاء لهم

حتى بلينا باصحاب المقابيس ثعالب صيحت بين النواويس فاستعملوا الراى عندالفقرو البوس وفى الموالى علامات المغاليس

ترجمہ : آج سے پہلے ہمارے سامنے دین کی وسعتیں تھیں' ہم اصحاب قیاس کو ملے ہیں۔ آج لوگ جمع ہو گئے ہیں' وہ فقرو فاقد کی زندگی لوگ جمع ہو گئے ہیں' وہ فقرو فاقد کی زندگی بسر کرنے گئے ہیں' آج لوگ ایسے مسافر بن گئے ہیں جن کے پاس کوئی سامان نہیں' کوئی زاد نہیں' ایک موالی میں ہی قیاس کی دولت تھی۔

یہ اشعار حمیری نے کے تھے' آپ نے فرمایا جب ان اشعار کو زندگی میں امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ اور آپ کے تلافرہ نے ساتو انہیں شاق گذرے' یہ مایوس کن صور تحال بیان کی گئی تھی' مگرس کے بعد حمیری نے یہ اشعار کے ۔۔

مصیب من طراز ابی حنیفه واثبتها بحبر فی صحیفه من الماضیبن،مسندة غریفه اتيناهم بمقياس صليب اذ اسمع الفقيه بهاوعاها يآثار اتنه عن سواة نوازل كن قد تركت وقيفه

فاوضح للخلايق مشكلات

رجمہ: آج لوگ ہمیں طعن و تشنیع سے مغموم کر رہے ہیں' ہارے عجیب و غریب فاوئ ان کے سائے آرہے ہیں' ہم ان کے سائے ایک مضبوط قیاں اور میزان لے آئے ہیں جو بٹی برصواب ہے۔ ہم امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے طریق کار کو لے سند پیش کرتے ہیں۔ جب آپ کی فقہ سائی جاتی ہے تو لوگ اسے یاد کر لیتے ہیں بلکہ اسے اٹل علم و دانش صحفہ دل پر نقش کر لیتے ہیں۔ آپ نے وہ آثار جمع کیئے جے اسلاف نے مرتب کیا تھا اور بہترین سندات کے ساتھ بیان کیا تھا۔ امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے دین کے مشکل مسائل کو لوگوں کے لیئے آسان کر دیا تھا۔ ایسے مسائل جنیس امام نے موقوف کر کے چھوڑ دیا تھا آج تک حل نہیں ہو سکے۔

یہ اشعار جب امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ تک پنچ تو آپ کو بڑی خوشی ہوئی۔ مساور وراق کتے ہیں کہ ہمیں ایک دن کوفہ سے دعوت ولیمہ آئی' یہ سخت گرمی کا موسم تھا' بے پناہ گرمی پڑ رہی تھی' مجلس ہیں پنچ تو ہجوم کی وجہ سے کوئی جگہ نہ ملتی تھی جمال بیٹھ سکیں' امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ وہاں ایک صدر کی حیثیت سے جلوہ فرما تھ' مجھے دیکھتے ہی فرمانے گے ساور آپ اوھر آجا کیں اور میرے پاس میٹھیں' یہ بڑی وسیع جگہ ہے' یمال ٹھنڈک ہے' میں آپ کے پاس جا میٹھا تو مجھے محسوس ہوا کہ میرے اشعار میرے کام آگئے ہیں۔

سفیان کتے ہیں کہ جب ہم اٹھ کر کے تو امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے ساور کو روک لیا 'بعد میں ساور نے جھے بتایا کہ امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے میرے کے گئے اشعار پر بوی مسرت کا اظہار کیا اور تین سو ورہم انعام عطا کیا۔ میں حضرت امام کی اس محبت اور شفقت کو زندگی بھر نہیں بھولا' ایک اور روایت میں ہے کہ ساور آپ کے اظلاق سے اس قدر گرویدہ ہوا کہ ساری زندگی آپ کی خدمت میں گذار دی۔

### عبدالله بن المبارك

حضرت عبدالله بن المبارك ملطيه نے ايك مجلس ميں فرمايا اگر امام ابو حذيفه رضي الله تعالى عنه

نہ ہوتے تو ہم دوسرے لوگوں کی طرح شریعت کے مسائل سے ناواقف ہی رہے۔ پھر آپ \_\_ اشعار پڑھے ۔

جوابا في مديح ابي حنيف نقيا عابداً لا مثل جيف كطيران الصقور من المنف ولا بالمشرقين ولا بكوف

فهمت مقالکم فاجبت عنه لان ابا حنیفه کان برا روی آثاره فاجاب فیها ولم یک بالعراق له نظیر

ترجمہ: اے دوست میں نے تیری گفتگو تی 'یہ گفتگو امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی مرح میں مختی مقتی میں اس کے جواب میں میہ اشعار کہہ رہا ہوں 'امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالی عنہ ہمارے محس محص صاف ستھرے تھے 'عابد تھے اور بے مثال تھے 'آپ نے آثار نبوی کی روایات سے مسائل حل کھے آپ کی مسائل اس پرندے کی ہی جو اپنے گھونسلہ کو ہر طرح مضبوط بنا لیتا ہے 'عراق میں لا جیسا کوئی عالم دین نہیں ہے 'مشرقین ان کی مثال نہیں لا کھے 'کوفہ میں ان کے مقابلہ کا کوئی اہل میں نہیں ہے۔

حارثی کہتے ہیں کہ مجھے بعض حفرات نے بتایا کہ بیہ اشعار بھی عبداللہ ابن المبارک ریلجے ہے۔ ہی کے تھے۔

امام المسلمين ابوحنيف كآيات الزبور على الصحيف ولا بالمشرقين ولابكوف لقد زان الباد ومن عليها بآثار وفقه فى حديث فما ان بالعراق له نظير

ترجمہ: آج دنیائے اسلام کے شہوں اور ان میں بسنے والوں کو امام المسلمین حضرت امام ابوضیہ رضی اللہ تعالی عند کے علم نے زینت بخشی ہے' آثار احادیث اور قرآنی آیات کو صحیح پیش کیا اللہ فقہ سے ہمارے دماغ روشن کر دیئے۔ ان کی مثال سارے عراق میں نہیں ملتی ان کی نظیر مشرقین میں نہیں ملتی ان کی مثال سارے کونے میں نہیں ملتی۔

### کیا قرآن مخلوق ہے؟

ابو مقاتل حفق بن سلم روائيہ ہے ايک سوال کيا گيا (آپ اتال سمرقد کے امام تھے) يعقوب بلخي کے والد گرامی کتے ہيں کہ ہيں اس مجلس ہيں موجود تھا۔ يہ سوال تھا کہ کيا کلام اللہ غير مخلوق ہ ؟ امام حفق روائي نے فرمايا جو ايما کہتا ہے وہ کافر ہے' آپ کو آپ کے بيٹے نے کہا آپ امام ابوحنيفه رضی اللہ تعالی عنه کا نظريہ پیش کریں وہ کیا فرماتے تھے' انہوں نے فرمايا ہاں مجھے امام ابوحنيفہ رضی اللہ تعالی عنه نظریہ پیش کریں وہ کیا فرماتے ہیں نہ کر سکو تو وعدہ کرو اسے بیان نہیں کرد گو میں اللہ تعالی عنه نام ہوں کہ آپ نے ايما ہی کہا تھا۔ آپ اپنے زمانہ ہیں فقہ 'علم' ورع کے امام بین انہیں طرح یاد رکھتا ہوں کہ آپ نے ايما ہی کہا تھا۔ آپ اپنے زمانہ ہیں فقہ 'علم' ورع کے امام بین اور المبنت کی صاحت تھے کہ ان سے اتل بدعت اور المبنت کی کہیان ہو۔

نوث: آج ہمارے زمانہ میں امام المسنّت احمد رضا خان بریلوی رحمتہ الله علیه اہل بدعت کے مقابلہ میں المسنّت کی پھیان ہیں۔ مترجم

امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے جم پر کوڑے برسائے گئے یہ بیان کرتے ہوئے امام حفص رائیے نے یہ اشعار پڑھے ۔

بآبدة من الفنيا طريقه مبين من طراز ابى حنيفه وكتان يحاك ولا قطيفه و تدحض عنده الجحج الضعيفه بعيد الغور فرضته نظيفه غزار العلم مشيخه حصيفه

اذا ماالناس يومًا قايسونا اليناهم بمقياس عنيد الطرازليس من غنم وقطن تذل له المقائس حين تبنى لان اباحنيفة كان بحرأ روى الآثار عن نبل ثقات

بمنظرة وتبصرة لطيفه ولكن قاسها بتقى وخيفه نوازل كن قدتركت وقيفه من الماضين مسندة عريفه لقصد غير جائرة محبفه فقاس مقائسًا اعيت قضاة ولم يقس الامور على هواه فاوضح للخلائق مشكلات بآثار اتنه عن سراة فمن يحكم حكومته يوفق

وقول الناقضين عليه فيها كهبط قطاما حنحة نشيفه

ترجمہ : جب لوگوں نے دینی مبائل پر فتوی دینے پر مجبور کیا تو ہم نے امام ابو حذیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی روایات کو بطور مقیاس اور میزان پیش کیا۔ آپ نے فقہ کا جو کیڑا تیار تھا وہ نہ تو برایوں کے بالول سے بنایا گیا تھا نہ روئی سے تیار ہوا تھا' نہ رکیٹم کے تاروں سے بنایا گیا تھا اور نہ ہی اون سے۔ ان کی فقہ کے سامنے تمام قیاس سر گول ہو گئے اور عجز کا اعتراف کرنے گئے 'ان کی کزور وليليں ب كار بوكر ره كنين- امام ابو حنيفه رضى الله تعالى عنه تو أيك سمندر تنصح جو انتمائي كرا اور صاف ستحرا تھا۔ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تحالی عنہ نے فقہ روایات بیان کی تھیں۔ آپ نے آثار صحابہ کو پیش کیا تھا' دنیا بھر کے علاء کرام نے آپ کی بزرگ کو تسلیم کیا تھا۔ آپ گھری نگاہ اور لطیف شرعی بصیرے سے اہل علم و فضل کو جیران کر دیا کرتے تھے۔ آپ نے اپنی نفسانی خواہشات بر قیاس نہیں کیا۔ بال آپ کا قیاس تقوی اور اللہ کے خوف پر تھا۔ آپ خلق خدا کی مشکلات دور فرمایا کرتے تھے۔ ایسے الیے حوادث آسان فرما دیتے جن کا کوئی عل نظر نہیں آتا تھا۔ آپ کے پاس سابقہ حضرات کے جو آثار پنچے آپ نے انہیں نمایت متند طور پر پیش کیا۔ آج جو حکومتیں امام ابوحنیفہ رضی الله تعالی عنہ کے فیصلوں کی روشنی میں چلیں گی وہ کامیاب رہیں گی۔ ایس حکومتوں کو کوئی ڈر اور خطرہ شیں ہوگا۔ آپ کے مخالفین کی ہاتیں ایس ہی ہیں جیسے قطا ( ایک پرندہ ) پر ٹوٹنے پر گر جا تا ہے۔

عبدالله بن المبارك رافير كي بد اشعار كي جكه لكھے بائے گئے ،

بزید نبالة و یزید خیرا اظ ماقال اهل الجور جورا فمن ذا تعلمون له نظیرا مصیبته لناامرا کبیرا وافشی بعده عملاً کثیرا وبطلب علمه بحرا غزیرا

وجدت اباحنیفة کل یوم وینطق بالصواب و یصطفیه بمقیاس یقائسه باب کفانا موت حماد و کانت ورد شماتة الاعداء عنا رایت اباحنیفة حین یؤتی

اذا ما المعضلات تنا فعتها رجال القوم كان بها بصيرا

ترجمہ: میں نے امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو یوں بلیا کہ ہر روز ان کی بزرگ اور برتری میں اضافہ ہو تا گیا۔ وہ بھیہ صواب کی بات کرتے صواب کا انتخاب فرماتے 'جب کہ ظلم والے ظلم کی باتیں کرتے تھے جیسے انہوں نے ایک مقیاس اور میزان رکھا ہوا ہو۔ امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے اپنے استاد حماد ریالیہ کی موت پر اتنا ملال کیا کہ اس کی مثال نہیں ملتی۔ حماد ریالیہ کی موت پر اتنا ملال کیا کہ اس کی مثال نہیں ملتی۔ حماد ریالیہ کی موت ہم سب کے لیئے ایک مصیبت تھی۔ آپ نے اعداء کی گالیوں کے اثرات زائل کر دیئے تھے 'یہ لوگ بہت بردہ چڑھ گئے تھے 'میرے نزدیک امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ ایک بحر میکراں تھے۔ آپ سے جو علم کے موتی حاصل کرتا یہ موتی قیتی اور طیب ہوتے تھے۔ وہ مشکل مسائل جنہیں بڑے بردے علماء اور انکہ نے مشکل جان کر نظرانداز کر دیئے تھے وہ امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی فقتی بصیرت نے حل کر دیئے۔

على بن الحسين بن الاسود طوى فرمات بين -

و الجود والمعروف للمنتاب جمع التقى والعلم بالاحساب

الفقه منا ان اردت تفقها طاوس منا و ابن سيرين الذي وعطامنا ليس بالكناب مصيب من طراز ابى حنيف واثبتها بحبر فى صحيف من الماضين مسندة غريف

واخوهم مكحول يعرف فقهه اتيناهم بمقياس صليب افا سمع الفقيه بهاوعاها بآثار اتنه عن سراة

فاوضح للخلايق مشكلات نوازل كن قد تركت وقيفه

ترجمہ: تم لوگ ہم سے نقہ چاہتے ہو پھر جود و سخا بھی اور نیکی اور محنت بھی' ہمارے در مرات طاؤس اور ابن سرین ریائیہ جیسے جلیل القدر علائے دین موجود ہیں' ان کے بھائی کمحول ہیں جن کا فقاہت بہت مضہور ہے۔ بھر عطاء ہیں جن کی شہرت دور دور تک بھیلی ہوئی ہے۔ اس بات بیں کھی جھوٹ نہیں بھرہ میں ایک جید عالم حسن بھری ہیں وہ بھی ہمارے محسن ہیں۔ تفتیش کر لیس انہوں نے ہر عالم سے بردھ کر کتابیں لکھی ہیں گر اس کے باوجود اگر آپ لوگ امام ابو حذیفہ رضی اللہ تعلی عدہ کا ذکر کریں گے تو تمام گردنیں جھک جا کیں گی۔ لوگوں نے ہزاروں علماء کی فقاہت پر اعتاد کیا لوگ مسئلہ قضاہ پر صاحب تفیر اور صاحب عقول تھے گر ان علماء کا جواب نہیں وہ لوگ مسئلہ قضاہ پر صاحب تفیر اور صاحب عقول تھے گر ان علماء کے مقابلہ ہیں امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ ایک در خشندہ آفاب تھے۔

ابو سعید رازی اہل کوف کی ہیشہ تحقیر کیا کرتے تھے۔ وہ اہل مدینہ کو اہل کوف سے بهتر جائے تھے۔ ایک کوفی نے (جس کا لقب شرشیر تھا) نے اہل مدینہ کی فدمت میں شعر لکھے۔

عندى مسائل لا شرشير يحسنها ان سيل عنها ولا اصحاب شرشير وليس يعرف هذا الدين يعلمه الا حنيفة كوفية الدور لاتسالن مدينياً فيكفره الا عن اليم والمثنى والزير

ترجمہ: میرے پاس چند مسائل ہیں' نہ انہیں شرشیر اچھا سمجھتا ہے' نہ اس کے دوست اچھا سمجھتا ہیں' اس دین کو کوئی نہیں جانتا' ہاں اگر کوئی جانتا ہے تو امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ جانتے ہیں'

گوہر کے ایک گوہر تایاب ہیں' اہل مدینہ سے کوئی سوال نہ کرد' اگر کرد کے تو مجبورا انہیں امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی طرف رجوع کرنا پڑے گا۔

ابوسعید کہتے ہیں کہ جب سے اشعار مدینہ منورہ کے علماء کے سامنے پیش کیئے گئے اور سے بھی بنایا گیا کہ ان اشعار میں تمہاری توہین کا پہلو نکاتا ہے اس کو جواب دینا چاھیئے تو ان میں سے ایک نے بول کہا ۔ یوں کہا ۔

وكل امرا ذاماحم مقدور الا الغناوا لالبم والزير قبر النبي وخيرالناس مقبور لقد عجبت لغاوساقه قدر قال المدينة ارض لايكون بها لقد كذبت لعمرالله ان بها

ترجمہ: مجھے اس گراہ شاعر کے کلام پر تعجب ہوتا ہے جے تقدیر یماں تک کھینج لائی ہے۔ یہ بات ضروری نہیں کہ ہم جس بات کا ارادہ کر لیں وہ ہمارے اختیار اور قدرت میں بھی ہو۔ اس نے یہ کما ہے کہ مدینہ پاک وہ زمین ہے جس میں بچھ بھی نہیں ہے۔ یہ تو اس نے سخت جھوٹ بولا ہے۔ بخدا مدینہ پاک وہ شہر ہے جس میں نہی پاک حضرت مجھ صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم آرام فرما رہے ہیں یہ بات مام فضائل پر فضیلت رکھتی ہے۔

### المم ابوحنیفہ نفتی اللہ کے مزار کا گنبد

اپوالحن علی بن هبة الله بن عبدالله بن عبدالله بن عبدالله الكاتب بغدادی نے كما كه جب ابوسعيد المستوفى نے امام ابوحنيفه رض الله تعالی عنه كے مزار پر گنبد بنايا تو شهر بغداد اس كے قريب تھا۔ يہ گنبد سارے شهر من نماياں نظر آتا تھا۔ ميں نے جب اے پہلی بار دیکھا تو دوڑا دوڑا گيا تھب ميں داخل ہوا امام ابوحنيفه رضی الله تعالی عنه كے مزار نورباركی زيارت كی۔ اس وقت ہمارے ساتھ سيد ابوجعفر مسعود بن المحن عباس بھی تھے۔ انہوں نے اس وقت بيد اشعار كے ب

فجمعه هذا المغيب في اللحد

الم تر ان العلم كان مضيعاً

فانشرها جود العميدابي سعد

كذلك كانت هذه الارض ميتة

ترجمہ: کیاتم نہیں دکھ رہے علم ضائع ہو گیا' زمانے میں علم کی خزانوں کو اس قبر میں رکھ دیا ہے۔ یہ علاقہ ویران تھا گر آج سردار ابو سعد کی سخاوت اور نفاست نے اسے آباد کر دیا ہے۔

سارو وراق نے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عند کی مدح میں یوں کہا ہے ۔

وما ارضى لذى ادب و دين بان يهدى الاذى لابى حنيف وكيف يحل ان يوذى فقيه له فى الدين آثاراً شريف اقذا دعوا القضاة لوجه امر وضافوا بالمسائلة الغيف

فقولوا مابدا لكم وخوضوا ففي ايدي صحابته القطيف

قضاة الناس والفقهاء منهم واهل العلم والسير العفيفه

ترجمہ: میں اس مخص سے بھی راضی نہیں جو امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ جیسے جلیل القدم فقیہ کو ایزا پہنچائے۔ یہ کیسے ہو سکتا ہے کہ ایسے فقیہ کو اذبت دی جائے جس کا دین آثار صحابہ پر ﷺ ہے۔ جب قاضیوں کو کسی مسئلہ کے حل کے لیئے طلب کیا گیا تو سب کے سب خاموش رہ گھے۔ صرف امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے مسئلہ حل کیا گریہ لوگ تو صرف قضاہ کا عمدہ چاہتے ہے۔ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ پاؤں کے تلے روند چکے تھے۔ ان قاضیوں سے کما گیا کہ جو کھے میں معلوم ہے بیان کرو۔ وہ سب کے سب جب رہے آج عوام کے قاضی' فقما اور اہل علم الجھی شہرت کے مالک ہیں گرامام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی مثال نہیں ملتی۔

امام ابو حنیفه نفتی انتها کی قبری نضیلت

قبر الامام ابي حنيفة روضة

من جنة الخلد المنيرة ناضره

من تحته المكرمات النادره سلاح نجم في السماء الزاهره منا ينابيع العلوم غزيرة فعليه من رب الانام سلامه

ترجمہ: امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کا مزار جنت الخلد کا ایک روش اور بارونق باغ ہے۔ اس کے میں علوم کے چیٹے اہل رہے ہیں۔ اس کے نیچ ایک نادر اور قیمتی شخصیت آرام فرما ہے۔ اس کے رب الانام کا اس پر سلام ہو اور یہ سلسلہ اس وقت تک جاری رہے جب تک آسانوں پر ستارے چک رہے ہیں۔

شخ الاسلام الم خراسال ابوالفاخر محد بن منصور السرخى رحمته الله عليه في كتاب النظم النبيه في المتنبيه على بطلان النشبه " من مندرجه ذيل اشعار كله بين مي حفرت النظم النبيه في التنبيه على بطلان النشبه " من مندرجه ذيل اشعار كله بين مرف چند اشعار الم ابوصنيفه رضى الله تعالى عنه كا بهترين قصيده ب اس من تمي اشعار بين بم صرف چند اشعار كله بين من اكتفار بين من من الله بين من التفاكرة بين ا

فتجددت فى اظهر البرهان منكبين مناهج الاذهان سبق الجواد البحر يوم رهان بالاقحوان الغض والحوذان فتصيح من طرب صباح اذان من خاطر الحبو الرضى النعمان تنسيك حسن شقائق النعمان وصنائع تزرى بوشى عمان تفرى فرى العضب وهويماني

درسوا علوم صحایف مدروسة
متمسکین بسنة و شریعة
وشاهم النعمان سیفاً ظاهرا
ما الروض فاح غداة غبسمائه
فرعت بلابله منارز برجد
یاغض من کتب سقاها ماطر
قد زانها بحقائق و دقائق
لابی حنیفة فی العلوم بدائع
وله اذ ادجت العویصة حجة

تلهیک عن درد بسلک جمان فی العلم واقتبسوا علی الازمان داود ذاک العالم الربانی حبر الشریعة ذاالفتی الشیبانی فاقت مناط الوهم والحسبان مستصرین مواقع الحسبان یعری الی حجج تنیر منان قد کان یخباهم له الملوان یابی تدنس عرضه الابوان

ومسائل قد صاغها بدلائل لله در عصابة نشا وابه وشاهم يعقوب ثمة بعده وحوى فروع اصوله وفصولها فبنى سماء للعلوم رفيعة فثوى بهار صد ترامى حجة فاتوا بفقه واضح مستنبط قاموا لابلاء العلوم وانما من كل حو طاهر اعراقه

من آية متلوة اوسنة مروية صينت عن للبهتان

ترجمہ: آپ نے ایسے صحائف سے علوم حاصل کیئے تھے جو اہل علم و فضل زندگی بھر پڑھتے آگے تھے۔ انہیں اپنے دل و دماغ میں نئی زندگی ہلی' انہوں نے ہمیشہ سنت رسول اور شریعت سے می مسک کیا۔ وہ تمام طریقوں پر خوب جھک پڑے۔ حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تحالی عنہ نے اپنی تمال (علم) کو ظاہری طور پر سنوارا۔ میدان کارزار میں ان کا گھوڑا ہمیشہ اپنی تیز رفتاری سے سبقت لے جاتا رہا۔ حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تحالی عنہ کے علم و فضل کا باغ کتنا ممکا ہوا ہے۔ اس کی خوشبو زمینوں کو معطر کرتی ہوئی آسمان کی بلند بول تک پہنچ گئی ہے۔ اس کی نورانی شعاعوں سے جھے خوشبو زمینوں کو معطر کرتی ہوئی آسمان کی بلند بول تک پہنچ گئی ہے۔ اس کی نورانی شعاعوں سے جھے زبر جد کی روشنیاں بھیلتی گئیں۔ اذان کی آواز سے یہ روشنیاں مزید دکش ہوتی گئیں۔ وہ کا ہیں جو دفیا خبر میں مقبول و محبوب ہو کمیں وہ حضرت امام ابو حقیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے فیضان سے حصہ لے کر مائے آئی تھیں۔

محمر بن ثابت الخجندي شافعي رافير مدرس نظاميه نے بير اشعار بڑھے تو فرمايا۔ "كم مير

والد امام ثابت خدندی مالیے نے ائمہ کرام کے قصائد لکھے ہیں جو بہت ہی طویل ہیں۔ ( ہم ان اشعار کو قار کین کرام سے معذرت کے ساتھ ترک کر رہے ہیں۔ مترجم

United the West Light Ed A

内独立是从370 Ld, 2m 内域以50 能量

### پچیس وال باب

# امام ابوحنیفه ﷺ کے مزار بردعاؤں کی مقبولیت

یونس بن داود کشی مرافیہ کے متعلق معلوم ہوا کہ آپ مالک بن الس رضی اللہ تعالیٰ عدے علام تھے۔ وہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عدے محبت رکھتے تھے۔ امام ابو حنیفہ روائیہ کا وصال ہوا آئی انہوں نے خواب میں دیکھا کہ ایک شخص امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو گالیاں دے رہا ہے۔ انہوں نے دعا کی اے اللہ ! آج کوئی ایبا کرشمہ دکھا کہ بیہ شخص زمین میں دھنس جائے۔ ویکھتے تی انہوں نے دعا کی اے اللہ ! آج کوئی ایبا کرشمہ دکھا کہ بیہ شخص زمین میں دھنس جائے۔ ویکھتے تی ویکھتے خواب میں ہی وہ شخص زمین میں دھنسا دول وہ شخص ان ہے چہٹ گیا اور کھیے گیا کہ کیوں نہ اسے اپنے پاؤں سے روند کر مزید زمین میں دھنسا دول وہ شخص ان سے چہٹ گیا اور کہنے لگا تھمرجاؤ کھمرے تو دیکھا تو اس مردے کو زمین نے باہر پھینک دیا ہے۔ اس کے ماتھ پر سات کا ایک داغ تھا اس کے بعد انہیں بادل کا ایک فکڑا دکھائی دیا اور امام ابو حنیفہ رضی اللہ تحالیٰ عد جھنڈا اٹھائے ہوئے بڑاردں لوگوں کے آگے تشریف لے جارہے ہیں۔

حفص بن غیاف را بی نے فرمایا کہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے وصال کے بعد میں فرمایا مجھے بخش دیا گیا ہے آپ سے کیا معاملہ کیا ؟ فرمایا مجھے بخش دیا گیا ہے آپ سے کیا معاملہ کیا ؟ فرمایا مجھے بخش دیا گیا ہے میں نے بوچھا آپ کے قیاس ( رائے ) کا کیا بنا ؟ فرمایا میرا قیاس عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تعالی عنہ کو بھی خوش و خرم پایا۔ جیسا نکلا' میں نے حضرت حذیقہ رضی اللہ تعالی عنہ کو بھی خوش و خرم پایا۔

امام ابو یوسف رویطی فرماتے ہیں کہ وصال کے بعد امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے خواب میں ملاقات کا شرف حاصل ہوا' دیکھا کہ آپ ایک بہت بردے وسیع محل میں جلوہ فرما ہیں' آپ کے اردگرد آپ کے شاگردوں کا بہت بردا حلقہ بنا ہوا ہے' آپ نے فرمایا کاغذ' قلم اور دوات لاؤ۔ میں اٹھے کر قلم دوات لے آیا' آپ نے کاغذ پر کچھ لکھنا شروع کیا' میں نے عرض کی حضور! آپ کیا لکھنا

چاہے ہیں ؟ فرمانے لگے میں اپنے ان شاگردوں کے نام لکھنا چاہتا ہوں جنہیں اللہ تعالی نے جنت عطا

فرمائی ہے۔ میں نے بردھ کر عرض کی حضور میرا بھی نام لکھ دیں 'آپ نے فرمایا تمہارا نام بھی لکھ لیا

عبدالله بن المبارك رحمته الله عليه جب بغداد مين آئے تو آپ نے لوگوں كو كما مجھے امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے مزار پر لے چلو' ہم وہل پنچے تو میں نے بلند آواز سے کما' اے استاد

من! ابراہیم (نخفی) فوت ہو گئے ہیں۔ انہوں نے اپنی مند پر اپنا جانشیں بٹھایا ' آپ کے استاد حماد بن سلمان فوت ہوئے تو انہوں نے اپنی مند پر اپنا جانشین بٹھایا، مگر آپ فوت ہوئے تو مجھے بتائے

آپ نے اپنا جانفین کیوں نہیں چھوڑا ؟ یہ کمہ کر عبداللہ بن الم ارک مالید بہت رومے اور روتے

ابومعاذ فضل بن خالد رالیتے نے کہا ایک عورت ہمیشہ میرے اعصاب پر چھائی رہی اور میں اس ك ليئة وكه اٹھا يا رما' ايك رات مجھے حضور نبي كريم صلى الله عليه وآله وسلم كى زيارت نصيب موكى' این تکلیف کا اظهار کیا اور شکایت کی که وہ غالب ہے اور مجھے دکھ پنچاتی ہے فرمایا کہ مرکبہ تقبل پیتا اور اس میں یانی نہ مانا خالی سوکہ پینا۔ ابومعاذ بن فضل بن خالد ریافتیہ فرماتے ہیں کہ میں نے پانی ملائے بغیر سرکہ پیا تو اللہ تعالی نے مجھے شفا بخش دی اب فرماتے ہیں کہ خواب میں مجھے امام ابو حنیفہ رضی الله تعالى عنه ماد آئے تو میں نے عرض كى يا رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم امام ابوحنيفه رضى الله تعالی عنہ کے علم کے متعلق آپ کا کیا ارشاد ہے ؟ آپ نے فرمایا اس کے علم کے تو تمام لوگ مختاج

ابوسعید معانی رحمت الله علیه نے فرمایا اگر حیا مانع نه ہوتا تو میں امام ابوصیف رضی الله تعالی عنہ کے مزار کے قریب اپنا گھر بنا آ اور ساری زندگی بسر کر آ کیکن اب میں نے آپ کے ذکر خیر اور دعا یر زندگی وقف کردی ہے۔

مقاتل بن سلیمان ویطید این زمانه میں اپ معاصرین میں تفیر کے امام تھے۔ ایک مخص آپ کی خدمت میں حاضر ہوا ' کہنے لگا اے ابوالحن! میں نے گذشتہ رات خواب میں دیکھا ہے کہ ایک مخص سفید براق بوشاک پنے آسان سے از رہا ہے وہ بغداد کے مسب مینارہ پر ازاجو بغداد کی م مناقب امام اعظم

تمام محمارتوں اور میناروں سے اونچا ہے۔ اس کے بعد سارے شریس اعلان ہونے لگا کہ لوگو! کو زیارت کو۔ مقاتل بن سلیمان مطابحہ فرماتے ہیں کہ تم نے یہ خواب دیکھا ہے تو آج وزیائے اسلام کا سب سے بڑا عالم رخصت ہوگیا ہو گا۔ صبح ہوئی تو معلوم ہوا کہ گذشتہ روز امام ابو حقیفہ رضی اللہ تعلق عنہ کا انتقال ہوگیا ہے۔ یہ خبر سنتے ہی مقاتل خوب روے اور کہنے لگے آج وہ رخصت ہوگیا جو امت مصطفیٰ صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم کی مشکلات آسان کیا کرتا تھا۔

مكتبهنبويه

الی ہی ایک دو مری روایت ہے کہ عبدالحکیم بن میسرۃ روایت نے فرمایا کہ ہم امام مقابل کے پاس بیٹھے تھے 'اس وقت آپ کی مجلس میں پانچ ہزار لوگ موجود تھے 'آپ نے دائیں بائیں دیکھا مجھے میں ایک مختص اٹھا اور اعلان کیا لوگو! اگر تم مجھے اچھا آدمی سجھتے ہو تو مقابل کے سامنے میری گواتی دو۔ سب نے کما حضور یہ مختص ایک نیک سیرت اور پندیدہ خصائل انسان ہے۔ جائز اشتمادہ 'مقبول القول اور سج اطوار کا مالک ہے۔ اب اس مختص نے جناب مقابل کو مخاطب کرتے ہوئے کما اب آپ میرا ایک خواب سنئے اس نے ذکورہ بالا خواب سنایا۔

ھیاج بن بسطام اہل ہرات کے امام اور مقداء تھے۔ آپ نے فرمایا کہ میں امام ابو حفیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی صحبت میں بارہ سال رہا ہوں' میں نے آپ سے بردھ کر کوئی شخص عبادت گذار اور فقیہ نہیں دیکھا۔ ایک رات میں نے خواب میں دیکھا کہ قیامت بریا ہے' امام ابو حفیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ ایک بلند جگہ جمنڈا لیئے کھڑے ہیں' میں نے پوچھا حضرت آپ کیوں کھڑے ہیں ؟ فرمایا میں اپنے ساتھیوں کا انتظار کر رہا ہوں آگہ انہیں ساتھ لے کر میدان حشر میں چلوں' میرے دیکھتے می لاکھوں لوگ جمع ہو گئے اور آپ انہیں لے کر چل پڑے' آپ کا جھنڈا بلندیوں پر ارا رہا تھا' ہم بھی لاکھوں لوگ جمع ہو گئے اور آپ انہیں نے امام ابو حفیقہ رضی اللہ اتعالیٰ عنہ کو سایا تو زار و قطار رونے گئے اور فرمانے گئے اللہ تعالیٰ جماری عاقبت فیر کرے۔

امام ازہر رحمتہ اللہ علیہ نے فرمایا کہ مجھے نبی پاک صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم کو خواب میں و کھنے کی سعادت حاصل ہوئی' آپ مالیوام کے پیچھے وو محف کھڑے تھے' میں ان ونوں امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے علم و فضل پر اعتراض کیا کرتا تھا' میں نے غور سے ویکھا وونوں ( حضرت ابو بکرصدیق اور سیدنا عمرفاروق رضی اللہ تعالی عنما) ہین میں نے آگے بڑھ کر ان وونوں سے یو چھاکیا

میں حضور صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم سے ایک بات پوچھ سکتا ہوں ؟ انہوں نے فرمایا پوچھو، ممر خبردار آواز اونچی نہ ہونے پائے۔ میں آگے جڑھا اور حضور صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم سے سوال کیا امام ابو صنیفہ کے علم کے بارے میں آپ کا کیا ارشاد ہے؟ فرمایا انہیں تو "علم خضر علیہ السلام" عاصل ہے۔ میں صبح اشھتے ہی اپنے سابقہ خیالات سے تائب ہو گیا۔

الی طیب صحابی رویطیے نے فرمایا کہ میں نے خواب میں دیکھا کہ آسان سے تین ستارے زمین پر آرہے ہیں ویکھا کہ آسان سے تین ستارے زمین پر آرہے ہیں ، چند ونوں میں امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنه ، امام مسعر رویطید اور امام سفیان توری رجمتہ اللہ علیہ کا انتقال ہو گیا ہے۔ میں نے یہ خواب امام مقاتل کو سایا تو آپ نے رو کر فرمایا واقعی یہ علماء آسان و زمین کے ستارے تھے۔

عبدالکیم بن میسرہ روایئی نے فرمایا کہ میں حماد بن ابوطنیقہ روائید کی خدمت میں حاضر ہوا ان کے باس ایک حدیث محفوظ تھی جے میں حاصل کرنا چاہتا تھا' میں نے اس حدیث کے بیان کرنے کی استدعا کی' بڑی خوشاد کی گر آپ نے فرمایا میں نے حدیث سانی ختم کر دی ہے۔ میں نے خواب میں اپنے والد گرای امام ابوطنیقہ رضی اللہ تحالی عنہ کو دیکھا اور بوچھا کہ آپ سے اللہ تعالی نے کیا سلوک فرمایا تو آپ نے کہا افسوس! افسوس! جاؤ احادیث نہ سالیا کرو' احادیث کی روشنی میں قیاس اختیار کرو' مایہ جھے تین بار کی گئی۔ حافظ ابوعبداللہ روائید نے فرمایا کہ یہ (حکیم) حاکم نیشاپوری "محتدرک" کے مصنف ہیں۔

#### ازالهوتهم

حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے اپنے بیٹے جماد کو بعض احادیث کو ترک کرنے کا کما تھا۔ یہ ان احادیث کے بارے میں تھا جو قرآن پاک کے فرمامین سے بہٹ کر بعض لوگوں نے احادیث کے نام منسوب کر دی تھی۔ یہ احادیث موضوع تھیں 'جھوٹی تھیں' امام صاحب نے اپنے بیٹے کو الیمی احادیث کی بجائے قیاس اور رائے اختیار کرنے کا حکم دیا تھا۔

معر بن عبدالرحمٰن بھری رائیے نے فرمایا کہ میں کعبتہ اللہ میں رکن ممانی اور مقام ابراہیم کے درمیان والی جگہ میں سو رہا تھا' میں نے خواب میں دیکھا کہ کوئی شخص میرے پاس آیا اور کہنے لگا م اس جگہ سو رہے ہو جہاں سے دعا کی جائے تو اللہ سے گوئی ججاب نہیں ہے میں یہ خواب دکھ کے مجراہ منے میں اٹھ بیٹھا اور جلدی جلدی دعا کرنے لگا اور عرض کی یااللہ الل ایمان کی خیر ہو۔ اللہ اسلام کی خیر ہو۔ یہ کہتے جھے دوبارہ نبیند نے آدیوچا اور بے بس ہو کر دوبارہ سو رہا۔ خواب میں جھے حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم کی زیارت ہوئی آپ میرے قریب جلوہ فرما تھے میں عرض کی یارسول اللہ صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم کیا میں کوفہ میں ابو صفیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے علم حاصل کو اس پر عمل کرو ، وہ بہت اچھے فقیہ ہیں احصل کر سکتا ہوں ؟ آپ نے فرمایا تم ان سے علم حاصل کرو اس پر عمل کرو ، وہ بہت اچھے فقیہ ہیں اس سے پہلے امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو نمایت ہی برے الفاظ میں یاد کیا کرتا تھا گر آج کی اس سے پہلے امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالی عنہ محبوب ترین نظر آنے گئی میں نے اپنی سابقہ خواب کے بعد مجھے امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالی عنہ محبوب ترین نظر آنے گئی میں نے اپنی سابقہ خواب کے بعد مجھے امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالی عنہ محبوب ترین نظر آنے گئی میں نے اپنی سابقہ کی معافی مانگی اور استعفار کی۔

مكتبه نبو يه

صالح بن ظیل دایند فرماتے ہیں کہ مجھے خواب میں نبی پاک حفرت محمد صلی اللہ علیہ و آلہ و ملم کی زیارت ہوئی و رکھا کہ آپ کے ساتھ حضرت علی کرم اللہ وجہ بھی کھڑے ہیں اس اثنا ہیں امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ حاضر ہوئے و حضرت علی کرم اللہ وجہ نے آگے بڑھ کر آپ کی بے حد تعظیم کی حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم اس منظر کو دکھے کر بہت خوش ہو رہے تھے۔

یعقوب بن ابی یوسف روائے نے کہا کہ مجھے امام ابو صفیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا کہ جس رات نوفل بن حیان فوت ہوئے تھے میں نے خواب میں دیکھا کہ قیامت قائم ہے تمام مخلوق غدا کھڑی ہے ' حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم اپنی چادر رحمت اوڑھے تشریف لا رہے ہیں ' آپ حوض کوٹر کے کنارے کھڑے ہیں ' دور دور تک صحابہ کرام اور مشائخ عظام کھڑے ہیں ' ہر ایک کا چرو نور ہے جگڑا رہا ہے ' میں نے دیکھا کہ حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم کے با میں ہاتھ ایک سفید ریش بوڑھا جس کا جم برف کی طرح سفید اور صاف ہے کھڑا ہے ' وہ آگے بردھا' حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم نے اس کا چرو اپنے نورانی چرے کے قریب فرمایا ' میں بھی آگے بردھا اور حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم نے اس کا چرو اپنے نورانی چرے کے قریب فرمایا ' میں بھی آگے بردھا اور حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم کے قریب ہو تاگیا۔ میں نوفل کو دیکھنا چاہتا تھا' وہ میرا اور حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم کے قریب ہو تاگیا۔ میں نوفل کو دیکھنا چاہتا تھا' وہ میرا ہمائیہ تھا میں دائمیں بائیں نظر دوڑا رہا تھا' دیکھا تو نوفل حوض کے قریب کھڑا ہے ' اس کے ہاتھ ش

وو برتن ہیں جو پائی ہے بھرے ہوئے ہیں' اس نے جوئی بھے دیکھا تو آگے بدھا' بھے دیکھ کر مسکرایا'
میں نے آگے بڑھ کر سلام عرض کیا' اس نے سلام کا جواب نمایت محبت اور شفقت سے دیا۔ میں
نے پائی مانگا' فرمانے گئے آج تو پائی حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم کی اجازت ہے ہی مل سکتا
ہے' میں نے دیکھا حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم انگلی کے اشارے سے جھے پائی دیے کا محکم
دے رہے ہیں' اس نے جھے ایک پیالہ پائی دیا' میں نے خود پیا اور جب خوب سیر ہو گیا تو اپنی
مثار دوں کو دیا' وہ بھی چتے گئے' میں حیران رہ گیا کہ پیالہ میں سے پائی کا ایک قطرہ بھی کم نہ ہوا' وہ پائی
دودھ سے زیادہ لذید' سفید اور برف سے زیادہ ٹھنڈا' شد سے زیادہ میٹھا تھا۔ میں نے نوفل سے پوچھا
دو کون بزرگ ہیں جو حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم کے وائیں ہاتھ کھڑے ہیں' فرایا ہیہ
خلیل اللہ علیہ السلام ہیں۔ میں نے کہا وہ کون ہیں جو ان کے قریب کھڑے ہیں ؟ حضرت نوفل رویشیہ
نے بتایا کہ وہ ابو بکر صدیق رضی اللہ تعالی عنہ ہیں۔ میں مختلف حضرات کے متعلق بوجھتا گیا' مجھے
ضور صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم کے عشرہ مبشرہ کی زیارت کرادی گئی' میں ان سب بزرگوں کے نام
حضور صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم کے عشرہ مبشرہ کی زیارت کرادی گئی' میں ان سب بزرگوں کے نام
انگیوں پر گنا رہا' آئکھ کھل گئی تو میں سترہ حضرات کو شار کرچکا تھا اور میری انگلی وہاں آکر درکی جمال

احر بن ابی الحورای ملینے نے فرمایا کہ ایک شخص نے امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو خواب میں دیکھا' آپ ایک خوبصورت مسجد میں تشریف فرما ہیں۔ یہ مسجد فضا میں میں معلق ہے' ہزاروں لوگ آپ کے اردگرد جمع ہو کر آپ کو دیکھ رہے ہیں' آپ نے مسجد سے سرباہر نکال کر فرمایا لوگو! اپنے اللہ سے ڈرو' احمد بن ابی الحواری مرائیے نے جب یہ واقعہ ابوسلیمان مرائیے کو سنایا تو وہ بے حد خوش ہوئے۔

ای طرح کی ایک اور حکایت کی روایت کی گی ہے کہ ایک شخص نے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تخالی عنہ کو خواب میں دیکھا آپ ایک تخت پر جلوہ فرہا ہیں' آپ کے پاس ایک بہت بڑا رجمٹر رکھا ہوا ہے' اس پر آپ بعض لوگوں کے نام اور ان کے لیئے انعامات کھتے جارہے ہیں' اس شخص نے دریافت کیا حضور اللہ تعالی نے آپ سے کیا معالمہ کیا اور یہ رجمٹر کیما ہے؟ آپ نے فرمایا اللہ تعالی نے میرے عمل اور میرے مسلک کو قبولیت عطا فرمائی ہے اور ججھے بخش دیا ہے' پھرامت رسول اللہ

طائیم کے لیئے میری دعائیں اور شفاعت بھی قبول فرمائی ہے۔ آپ سے پوچھا گیا کہ آپ کتے سے والے کے نام لکھ رہے ہیں؟ آپ نے فرمایا جے اثنا علم ہو کہ راکھ سے تیم ناجائز ہے تو اس کا پھی لکھ لیتا ہوں۔

### میں نے یہ اشعار آپ کی ہی شان میں کے ہیں ۔

لابی حنیفة خبرها و امامها داعی الغواة الی بمی اسلامها نهریة تحوی عظام عظامها فی الارض روضة دینه بشمامها کشافة لحلالها و حرامها للشرع حتی عاش فی ایامها یوما کهام البیض مثل حسامها

رات الهداة مبشرات منامها ولقد راى النعمان روضة احمد فانتاب روضة بهجة نبوية عبرو أكراه بان سجنى جاهداً لله نفس بالشريعة برة احيت لياليها بقلب شاغلى ان الائمة فاخرته وهل ترى

وحطام دنیاهم علی هاماتهم قد باض اذلم یرن نحو حطامها

نوٹ : یہ ترجمہ مولانا محمد فیض احمد اولی بماولپوری مد ظلہ العالی نے کیم ذوالحبہ سام الھ کو حرم شریف میں مکمل کیا تھا۔

### چوبيسوال باب

# امام ابو حنیفہ کے منہ سے نکلے الفاظ عربوں کے محاورے بن گئے

تاج الاسلام ابوسعد السمعاني رحمته الله عليه فرمات بين كه امام ابويوسف رحمته الله عليه فرمايا کرتے تھے کہ میں نے بعض عبارات میں نقائض کو دیکھا تو انہیں متروک قرار دے دیا اور ان کی جگہ ایے الفاظ اور جملے استعال کیئے جو اہل عرب کی فصاحت کے آئینہ دار تھے۔

یوسف بن خالد را طیر فرماتے ہیں کہ میں نے بارہا حضرت امام ابوصید رضی اللہ تعالی عنه کو يه شعريز هتے سا ۔

> كفي حزنا ان لاحياة هنيته ولاعمل يرضلي به الله صالح

(ترجمه) انسان کو غم کے لیئے اتنا کافی ہے کہ اس کی زندگی خوشگوار نہ گذرے اور اس کا کوئی عمل اليانه موجس ے اللہ خوش نه مو-

زفر بن النزيل رحمته الله عليه فرات بيس كه ميس في امام ابو حنيفه رضى الله تعالى عنه كو فرماتے ہوئے ساکہ جس کاعلم انسان کو محارم اللی سے نہیں روکتا وہ بھیشہ خسارے میں رہے گا۔ ایسے نافرہانوں کا اللہ کے ہاں کوئی مقام شیں ہے۔

فضیل بن وکین رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ میں نے امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنه کو فرماتے ہوئے سنا کہ اگر دنیا میں فقہا اور علماء میں سے کوئی ولی اللہ نہیں تو پھردنیا میں کوئی ولی اللہ نہیں

یجیٰ بن زیاد اپنے والدسے روایت کرتے ہیں کہ امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے مجھے

نافىپامام اعظم ٨٥٠

فرمایا اے بھرہ والو! تم ہم سے زیادہ پر بیزگار ہو اگر ہم تم سے زیادہ فقیہ ہیں۔ اس لیئے لوگوں میں مشہور ہے کہ الل کوف، فقد کی زیادہ روایات بیان کرتے ہیں۔ گربھرہ والے گربیہ زیادہ کرتے ہیں۔ مشہور ہے کہ الل کوف، فقد کی زیادہ روایات بیان کرتے ہیں۔ میں اس کا طرف اشارہ کیا ہے اور وہ قصیدہ میرے بھین کے زمانہ کا ہے اس کا ایک شعریہ ہے ۔

الفقه كوفى النجار مهلب والنحو بصرى فتم تمامى

" فقه كونى إنجار اور مهذب ب اور علم نحو بقرى ب- "

بچپن کے زمانہ میں میں نے خوارزم میں چند خطبات لکھے تھے جنہیں بلاد شام میں خوب رواج ملا اور بار بار پڑھا جاتا تھا۔ ابوسعید صنعائی فرماتے ہیں کہ انہوں نے امام ابوطیقہ رضی اللہ تعالی عنہ سے بوچھا کہ سفیان توری مالیج سے روایت لینا کیما ہے؟ آپ نے فرمایا وہ ثقہ ہیں میں ان سے روایت لینا ہوں جس کی انہوں نے سند ابواسحاق اور حارث روایت لیتا ہوں میں صرف ان روایات کو ترک کرتا ہوں جس کی انہوں نے سند ابواسحاق اور حارث سے لی ہے۔ چروہ احادیث جو انہوں نے جعفر جعفی سے روایت کی ہیں۔ امام ابوطیقہ رضی اللہ تعالی عنہ فرماتے ہیں کہ جعفر جعفی کذاب ہے۔ زید ابوعیاش بھی کذاب ہے۔

امام شافعی رجمتہ اللہ علیہ کے مناقب میں فرمایا گیا ہے کہ میں نے سفیان بن عینیہ سے سنا تھا وہ فرماتے ہیں کہ میں نے جعفر جعفی سے ایک ایسی انو کھی بات سنی جس سے مجھے خطرہ ہوا کہ کہیں ہم پر مکان کی چست نہ گر جائے۔ امام شافعی رجمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ یہ فخص جعفر جعفی کا عقیدہ رکھتا تھا۔ عیلی بن شاذان فرماتے ہیں کہ میں نے ڈیڑھ سو ایسی احادیث جمع کی ہیں جنہیں جعفر جعفی نے اپ اسائیر کے ساتھ بیان کیا تھا اور ان میں اکثر اضافے کر دیے تھے اور کئی جھوٹی باتیں ملادیں تھیں۔

ابوقطن فرماتے ہیں کہ مجھے شعبہ نے امام ابوعنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی طرف خط دے کر بھیما آگہ میں ان سے احادیث من سکوں۔ میں حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی خدمت میں پھپا تو آپ نے خط پڑھا اور آفرین و تحسین فرمائی اور فرمایا یعم خشوا المصر شعبہ ف

معركو بحربور فرما ديا ہے" "مناقب حميرى" ميں بد واقعہ لكھنے كے بعد لكھا ہے كہ اس جملہ سے امام ابوضيفہ رضى الله تعالى عند فے ايك نامعلوم شعبہ كى تعريف كى ہے يا قدمت (كيونكم " خثو" كا معنى فرقد خثويد كے اثر و رسوخ ير بھى اشاره كرتا ہے۔)

ابراہیم بن کی فرماتے ہیں کہ سفیان ٹوری میٹید امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عند اور الحن بن عمارہ میٹید قرات کے برابر سمجھتے تھے۔ حسن بن زیاد نے فرمایا کہ حضرت بن عمارہ میٹید قرات کے امام تھے اور فن قرات کو برابر سمجھتے تھے۔ حسن بن زیاد نے فرمایا کہ حضرت ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عند فرمایا کرتے تھے کہ جن لوگوں نے حضرت علی کرم اللہ وجہ سے جنگ کی وہ حق بہ میں منتی رضی اللہ تعالی عند کی طرف تھا۔ اگر اس وقت حضرت علی رضی اللہ تعالی عند کی طرف تھا۔ اگر اس وقت حضرت علی رضی اللہ تعالی عند ان کا مقابلہ نہ کرتے تو لوگوں کو حق و باطل میں تمیز کرنا مشکل ہو جا آ۔

محر بن زید بن علی رضی اللہ تعالی عنہ فرماتے ہیں کہ امام ابوحنیفہ مرافحہ نے امام زید رضی اللہ تعالی عنہ کو پیغام بھیجا کہ آپ اپنی جنگ میں لوگوں سے مدد ماتکیں اور آپ اس حالت میں کرور لوگوں کو جمع کر کے مضبوط کریں 'اس حالت میں دو مروں سے مدد ماتکنا ضروری ہے اس طرح آپ کے کرور ساتھیوں کی ارداد ہوگی۔

ابوجعفر رواس فرماتے ہیں کہ مجھے حضرت امام ابوطیفہ رضی اللہ تعالی عند نے بتایا تھا کہ میں جالیس سال تک ہر تماز کے بعد ۸۰ بار استغفار کرتا رہا کہ مجھ سے امر باالمعروف اور نھی عن المدنکو میں جو کو تابیال ہوئی ہیں اللہ تعالی مجھے معاف فرمائے۔

ابراہیم بن سوید النجفی فرماتے ہیں کہ میں نے امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے سوال کیا تھا (کیونکہ ابراہیم بن عبداللہ بن الحن نے خاندان عباسیہ کے خلاف مزاحت کی اور علم جماد بلند کیا تھ میرے نزدیک لمام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے بڑھ کرکوئی کرم نہیں تھا) کیا اس زمانہ جماد میں آپ کے نزدیک کچ کی فرضیت زیادہ ہے یا جماد کی؟ آپ کیوں شریک جماد نہیں ہوتے؟ آپ نے فرمایا جج کی بعد ابراہیم بن عبداللہ بن الحن کے ساتھ مل کرجماد کرنا پچاس حجوں سے افضل ہے۔

حن بن زیاد فرماتے ہیں کہ میں نے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو یہ فرماتے سا تھا کہ بیشک حضرت علی کرم اللہ وجہ نے حضرت علی اور حضرت زبیر رضی اللہ تعالی عنما سے اس وقت

dining 14.

جنگ کی تھی جب انہوں نے آپ سے بیعت بھی کی طف بھی اٹھایا اور پھر خلاف ہو گئے۔ ہارے زویک حضرت علی رضی اللہ تعالی عنہ خق پر تھے۔

حضرت حسن بن عبداللہ بن زبیر رضی اللہ تعالی عنهم فرماتے ہیں کہ میں نے حضرت المام الدوعنیفہ رضی اللہ تعالی عنه کو دیکھا تو آپ المام محمد بن عبداللہ بن حسن رضی اللہ تعالی عنه کا نام لے لئے کر روتے تھے' آپ کی آنکھوں سے آنسو جاری تھے' آپ اٹل بیت کی محبت میں سرشار تھے اور خلافت عباسیہ کو غلط سجھتے تھے۔

حسین بن ارجی فرماتے ہیں کہ ایک عورت امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے پاس آئی اسے وہ زمانہ تھا جب امام ابرائیم نے طلیفہ عبای کے ظاف علم جماو بلند کیا تھا۔ اس عورت نے عرض کی میرا بیٹا لشکر ابرائیم میں شامل ہو کر میدان جماد میں جانا چاہتا ہے ، گر میں اسے روک رہی ہوں۔ آپ نے فرمایا اسے مت روکو۔ حماد بن ایمن فرماتے ہیں کہ میں نے دیکھا کہ حضرت امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ لوگوں کو حضرت ابرائیم روائیم مرائیم مرائیم کے لشکر میں شریک ہونے کی ترغیب دیتے تھے۔

جعفر الاحرف فرمایا کہ میں نے امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ ہے ایک مسلم بوچھا' آپ نے اس کا جواب دیا' میں نے کما یہ شہر سدا آباد رہے جب تک آپ یمال مقیم ہیں' اس پر کوئی آفت نہیں آسکتی۔ آپ نے اس کے جواب میں یہ شعر کما ۔

> خلت الدار فسدت غير سود ومن الشفاء تفردي باسودو

(ترجمه) " دیار خالی ہو گیا' سرداروں کے بغیر شہر دیران ہو گئے' یہ اس شرکی بدفتمتی ہے کہ سرداروں سے خالی ہو گیا۔"

حضرت امام ابو حذیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ اپنے استاد حماد مایلی ہے روایت کرتے ہیں کہ ابراہیم مایلی فرمایا کرتے تھے ہمیں حضرت عنان رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی نبیت حضرت علی کرم اللہ وجہ سے زیادہ محبت ہے۔ امام ابو حذیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے جنگ جمل کے متعلق سوال کیا گیا تو آپ نے فرمایا حضرت علی کرم اللہ وجہ نے اس جنگ میں عدل و انصاف کا مظاہرہ کیا تھا۔ اہل المام بیشہ

باغیوں کے خلاف تکوار اٹھاتے ہیں۔ عبداللہ بن حبیب کلبی رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عند کی زبانی میں بیہ اشعار اکثر ساکر آتھا ۔

ر مناقب امام اعظم

عطاء ذی العرش خیر من عطایک وسیبه واسع یرمی و ینظر انتم یکدر ماتعطون منکم والله یعطی فلا من والکدر

(ترجمه) "عرش والے کی نعمیں تمہارے انعامات سے بدرجما زیادہ ہیں۔ اس کی عطاء بہت وسیع ہے' اس کی امید بھی ہے اور اس کا انتظار بھی' بخلاف اہل دنیا کے انعامات و اکرام کے'تم لوگ جب کچھ ویتے ہو تو ول بو جھل اور میلا کر لیتے ہو' اللہ تعالیٰ بے شار انعامات دیتا ہے' مگرنہ اسے جما آ ہے اور نہ ناگواری کا اظہار فرما آ ہے۔

بھی کوئی ضرورت نہیں کونکہ آپ کے خزانے مال و زر سے بھرے ہوئے ہیں۔ اللہ تعالی نے آپ کو اتنا دیا کہ حد و شار سے باہر ہے۔ اب صرف ایک بات رہ جاتی ہے کہ آپ اللہ سے ڈریں' اعمال صلح پر مزید کام کریں' اپنی نکیوں کی نہریں جاوی کریں' جن استور سے آنلہ تعالی نے آپ کو روکا ہم ہر قیمت پر رک جائیں' جن کا تھم دیا ہے اس میں دیر نہ کریں' اللہ تعالی آپ کو دین دنیا میں کامیاب و کامران فرمائے گا اور آخرت میں خوشحال فرمائے گا۔ محد بن علی رحمتہ اللہ علیہ نے یہ تقریر لکھ لی۔

عبدالعزيز بن روادہ فرمايا كرتے تھے " اصحاب الرائے " سنت رسول كے دشمن ہيں۔ فرمايا صدوريه ( فارقی لوگ ) اور اہل ہوا ( بدعتی اور بدندہب ) سے اجتناب كرو۔ يليين زيات اسحاب الحديث كے فقها ميں سے تھے وہ فرماتے ہيں كہ اصحاب الحديث كے نزديك "اصحاب الرائے" سنت (احادیث) كے دشمن ہيں۔ " اصحاب الرائے" اہل ہوا ( بدعتی اور بدندہب) ہوتے ہيں۔ ہاں! المام ابو حذیفہ رضی اللہ تعالی عنہ اصحاب السنت تھے وہ اپنے تمام فيلے احادیث و سنت كی روشنی ميں كيا كرتے تھے۔

ابن عینیه فراتے ہیں میں ایک دن حضرت امام ابوطنیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی مجلس کے نزدیک سے گذرا' آپ اس وقت کوفہ کی جامع معجد میں اپنے شاگردوں کے علقہ میں جلوہ فرما تھے۔ آپ کے شاگرد معجد میں زور زور سے بول رہے تھے' میں نے آگے بردھ کر کما' ابوطنیفہ! یہ معجد ہم اس میں آپ کے شاگردوں کا شور اچھا نہیں لگا۔ آپ نے فرمایا' انہیں چھوڑ کے یہ اس وقت تک مسائل نہیں مجھتے جب تک اونچی آواز سے انہیں بار بار کرار نہ کر لیں۔ (لیمنی معجد میں دینی مسائل میں گفتہ کر کے ممافعت نہیں)

حضرت الم ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ جب اپنے استاد الم محماد رویئے کے ہاں رات کے وقت حاضر ہوتے اور اپنے رفقاء کے ساتھ فقہ فنی کے لیئے اپنے استاد کرم سے گفتگو کیا کرتے تھے۔ شفیق استاد بھی کافی رات گئے تک بیدار رہتے 'استاد نے اپنے گھر میں ایک مرغا پال رکھا تھا جو رات کے اول جھے میں اذان دیتا' الم محماد رویئے کی عادت تھی جو نمی مرغا اذان دیتا تو آپ تمام کام چھوڑ کر گھر چلے جاتے۔ ایک دن الم ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے فرمایا اے مرغے! خدا تجھے رسوا کرے تو ہماری تعلیم (فقہ ) کو منقطع کر دیتا ہے۔ اے منحوس مرغے! تو نے رات کے اول حصہ میں بی بولنا جماری تعلیم (فقہ ) کو منقطع کر دیتا ہے۔ اے منحوس مرغے! تو نے رات کے اول حصہ میں بی بولنا

ہوتا ہے، ہم تیری آوازے علم کی روشنیوں سے محروم ہو جاتے ہیں۔

ہشیم بن عدی طائی رحمتہ اللہ علیہ نے فرمایا کہ میں امام ابو صنیفہ اور ابو بکر شیل کوفہ میں ایک قاری کی بیار پری کے لیے اس کے گھر گئے ان کا گھر شہرے ذرا فاصلے پر تھا۔ ہمارے ایک ساتھی نے کما جب ہم ان کے سامنے جائیں تو ان کے سامنے صبح کا ناشتہ کریں گئ ہم ان کے پاس بیٹے ہی تھے کہ ہمارے ایک ساتھی نے قرآن پاک کی ایک آیت پڑھی ولنبلونکم بشی من المحوف والجوع ونقص من الامول یہ آیت من کر مریض نے ہمر اٹھایا اور یہ آیت پڑھی المدس علی الضعفا وعلی المرض وعلی الذین لایجدون ماننفقون تو امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عد نے فرمایا اٹھو! ہمارا یہ مریض کچھ نہیں کھلائے گا بلکہ مریض ہوتے ہوئے بھی کھانے کی خواہش رکھتا ہے۔ آگرچہ یہ ایک لطیف گفتگو تھی گر مریض قاری نے ان احباب کو پچھ ورہم دیے خواہش رکھتا ہے۔ آگرچہ یہ ایک لطیف گفتگو تھی گر مریض قاری نے ان احباب کو پچھ ورہم دیے اور محذرت کرتے ہوئے کما یہ پچھ کھا لینگ

مفضل کوئی نے کہا کہ ہم کوفہ کے ایک محلے میں نکاح کی ایک مجلس میں شریک ہوئے ، ہمارے ساتھ سفیان ٹوری میلیے شریک کے علاوہ چند اور احباب بھی تھے۔ شرکائے مجلس میں سے کی فیر بھوک کا گلہ کرتے ہوئے اٹل خانہ کو پوچھا کھانے میں کیا دیر ہے، انہوں نے بتایا کہ ہم اہام ابوضیفہ رضی اللہ تعالیٰ عد کا انظار کر رہے ہیں، آدی بھیجا ہے بس آبی رہے ہوں گے۔ مزید وقت گزرگیا، بھوک نے پھر دستک دی، اب سفیان ٹوری میلیے اٹھے اور فرمایا آعال ابوضیفہ رضی اللہ تعالیٰ عدہ نہیں آئے، اس نے کہا نہیں، آب اس کام کا عدہ نہیں آئے، اس نے کہا نہیں! سفیان ٹوری میلیے نے بڑی تاگواری کا اظہار کیا۔ اٹل خانہ نے کہا آپ ہی خطبہ نکلح پڑھ دیں، سفیان ٹوری میلیے نے شریک کو کہا، اس نے کہا نہیں، آپ اس کام کا زیادہ حق رکھے ہیں۔ یہ باتیں ہو بی ربی تھیں کہ امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالیٰ عدہ تشریف لے آئے۔ سفیان ٹوری میلیے نے کہا لو وہ آگے، اب وہی نکلح اور خطبہ ارشاد فرمائیں گے۔ امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالیٰ عدہ نہیں ہوتی اللہ کی حمد و نتاء کی اور فرمایا حضرات کلام کیرہ مراس کا حضرت اللہ تعالیٰ عدہ نے اللہ کی حمد و نتاء کی اور فرمایا حضرات کلام کیرہ مراس کا حکم الم ابوضیفہ رضی اللہ تعالیٰ عدہ نے اللہ کی حمد و نتاء کی اور فرمایا حضرات کلام کیرہ میلی میں مضائے اللی مو اور سب سے برا کلام وہ ہے جس سے اللہ تعالیٰ تاراض ہو۔ یہ کہ وہ بیا جس میں رضائے اللی مو اور سب سے برا کلام وہ ہے جس سے اللہ تعالیٰ تاراض ہو۔ یہ کہ وہ بیا جس میں رضائے اللی مو اور سب سے برا کلام وہ ہے جس سے اللہ تعالیٰ تاراض ہو۔ یہ کہ وہ بیا جس میں رضائے اللی عو اور سب سے برا کلام وہ ہے جس سے اللہ تعالیٰ تاراض ہو۔ یہ کہ

مكتبهنبويه

لوگوں نے حضرت امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ سے حضرت علی کرم اللہ وجہ حضرت معلی اللہ عنہ اللہ وجہ حضرت معلی اللہ کے مقتولین کے بارے میں سوال کیا' آپ نے فرمایا میں اللہ سے وُر آ ہوں میری زبان سے کوئی الی بات نہ فکل جائے جس میں اللہ کی رضا نہ ہو اور قیامت کے ون مجھے جواب وسا پڑے۔ میں ان معاملات میں شریک نہیں تھا اور مجھے ان معاملات کی جوابدہی کے لیئے مکلف نہیں بنایا گیا۔ میں تو صرف ان معاملات کا جواب وے سکتا ہوں جن کا مجھے مکلف بنایا گیا ہے۔

#### ایک برزهب پر تقید

عبدالرحلن بن اصنع فرماتے ہیں کہ میں نے امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو فرماتے سا
ہے کہ جعفر جعفی ایک کذاب اور بدندہ ب آدی ہے اس نے اپنے آپ کو ہلاک کرلیا ہے وہ اپنی خواہش نفسانی کا اظمار کرتا رہتا ہے میرے نزدیک سارے کوفہ میں اس سے بڑا کوئی امیر بھی نہیں اور اس سے بڑھ کر کذاب بھی نہیں۔ حضرت نمام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے اپنے شاگردوں اور دو سرے احباب کو جعفر جعفی کے پاس جانے سے روک دیا تھا۔ آپ ایسے بدندہ ب علاء کی صحبت سے بھی لوگوں کو محفوظ رکھتے تھے۔

یکی بن عینیہ نے فرمایا کہ میں نے ملک غور کے سعدی سے سنا تھا کہ انہوں نے چند تھا نفا کہ انہوں نے چند تھا نفا میں اللہ تعالی عنہ کی خدمت میں بھیج تھے 'آپ نے چند دن بعد میرے تھا نف حضرت امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ کی خدمت میں بھیج تھے 'آپ یوں جواب دیں تحاکف سے دگنے تحاکف مجھے بھیج دیے 'میں نے کہا اگر مجھے یہ معلوم ہو تاکہ آپ یوں جواب دیں گے تو میں تحفہ نہ بھیجا۔ حضرت امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ نے ان کی اس بات کا برا نہ منایا اور فرمایا ایک دو سرے کی بردھ چڑھ کر خدمت کو 'اللہ تعالی محبین کو دگنا اجر دیتا ہے۔ ابتداء کرفے والے سبقت لے جانے والا زیادہ اجر یا آ ہے۔

حفرت ابوصالح فرماتے ہیں کہ مجھے نمی پاک حضرت محر مصطفیٰ صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم کی ایک حدیث یاد ہے کہ آپ نے فرمایا جو تمہارے لیئے بھلائی کرے اس کا بدلہ دو' آگر بدلہ نہ دے سکو

تو اس کی تعریف کرو' اس کا شکریہ اوا کرو۔ میں نے کما حضور یہ حدیث مجھے میری تمام ونیاوی وولت سے تین ہے۔

عبدالعزیز بن مسلم فرمایا کرتے تھے میں نے حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو دیکھا کہ وہ پیدل بی کمیں جارہ ہیں میں نے آگے بڑھ کر سلام عرض کیا اور عرض کی حضور جھے قیس بن مسلم کی وہ حدیث سنا کیں جس میں گائے کے دودھ کا بیان ہے۔ آپ نے فرمایا سجان اللہ! اور کما افسوس ہے کہ تمہیں حدیث سنے کا شوق تو ہے محرادب کا خیال نہیں۔ ( یعنی راہ چلتے چلتے حضور مالی یاک حدیث کا پوچھنا اوب کے ظاف ہے ) ان لوگوں کو یہ خیال نہیں آنا کہ اللہ تعالیٰ نے اپنے مجوب کی احادیث میں اپنے جلال اور جمال کے پہلو رکھے ہیں۔ اہل علم کو چاہئے کہ ادب ورع اور وقار سے رہیں اور احادیث میں اپنے ادب برقرار رکھیں۔ اب تم جاؤ کل آگر حدیث من لینا۔ میں اس حدیث کو سے بغیری والیں آگیا۔

محر بن ابراہیم بھری روایت کرتے ہیں کہ میں نے ایک دن امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو مغموم اور فکرمند بایا۔ میں نے پوچھا حضرت خیرتو ہے آج آپ متفکر اور مغموم ہیں۔ آپ نے فرمایا مطلوب سامنے ہے۔ اس طرح ایک دن میں آپ کے ساتھ نماز پڑھ رہا تھا امام نے جب یہ پڑھا ولاتحسین اللّه غافلا عما یعمل الظالمون ☆ تو امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کانپ اٹھے آپ کا کندھا ملنے لگا اور آئھوں سے آنو جاری ہو گئے۔

عبراللہ بن المبارک رحمتہ اللہ علیہ نے فرمایا کہ امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرمایا کرتے تھے جس نے افتدار اور منصب بلا وقت طلب کیا وہ زندگی میں ذلیل و خوار ہوگا۔ سمیل بن مزاحم نے فرمایا کہ میں نے امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی زبان سے سنا تھا آپ اپنے تلافہہ کو مخاطب کرک فرما رہے تھے اگر تم علم سے بھلائی طلب نہ کرو مے تو توفیق ایزدی سے محروم ہو جاؤ گے۔ حضرت امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے ایک اور مجلس میں فرمایا کہ مجھے اس قوم پر تعجب ہے جو ظن اور گمان سے بات کرتی ہے جبکہ اللہ تعالیٰ نے انہیں اپنے نبی کریم صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم کی و ساطت سے بات کرتی ہے جبکہ اللہ تعالیٰ نے انہیں اپنے نبی کریم صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم کی و ساطت سے بین علوم عنایت فرمائے ہیں۔

سیل بن مزاحم نے بتایا کہ حضرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ فرمایا کرتے تھے کہ

خاقب امام اعظم ۲۲۷ مکتبه نبویه

میرے ہزاروں شاگردوں میں سے باعثاد شاگرد تمیں ہیں۔ ان میں سے دس تو مقدر فقها ہیں ' بعض صلحاء ہیں جو فتویٰ دینے کی صلاحیت رکھتے ہیں' دس قضاۃ ہیں' یہ حضرات قاضی بن کر شریعت کے مطابق فیصلہ کرنے کی اہلیت کے مالک ہیں اور یمی میرے بمترین رفقاء ہیں۔

حضرت الم ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ فرمایا کرتے تھے کہ ابویوسف سے زیادہ قابلیت کے مالک ہیں۔ پھرامام زفر بھی عمدہ قضاۃ کے لائق ہیں۔ سیل بن مزاحم فرمایا کرتے تھے آج ان دونوں کے علادہ دوسرے تمام شاگرد فوت ہو چکے ہیں۔ سیل بن مزاحم " مرد " کے کبائر آئمہ میں سے تھے۔ انہیں فقہ حفی پر برا عبور حاصل تھا' وہ امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی مجالس سے فیض یافتہ تھے۔ وہ سارے فراساں کے عباد اور زباد میں شار ہوتے تھے۔

عبدربہ فرایا کرتے تھے جو مخص محض دنیا کے مفاد کے لیئے علم حاصل کرتا ہے وہ علم کی روحانی برکات سے محروم ہو جاتا ہے۔ جو مخص دل میں علم کی چاشنی نہیں لیتا وہ ساری عمر محروم العلم رہتا ہے، ہل جو مخص علم دین کی اشاعت کے لیئے پڑھے گا اللہ اسے دین اور دنیا کے اسباب سے ملامال کردے گا۔

نوح بن دراج فرماتے ہیں کہ مجھے ایک دن حضرت امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے دیکھ کر فرمایا نوح میں دیکھ رہا ہوں تم ابواب الفقہاء کے لیئے بڑے حریص دکھائی دیتے ہو۔ مجھے تہمارے فنم و فراست پر تعجب آتا ہے۔ گریاد رکھو تہماری یہ سعی ایک دن تہمارے لیئے فساد کا باعث ہوگ۔ راوی کہتا ہے کہ نوح بغداد کا قاضی مقرر ہوا آخری عمر میں آٹھوں کی بصارت سے محروم ہوگیا ٹابینا ہونے کے باوجود تین سال تک عمدہ قضاۃ پر فائز رہا۔ لوگوں کو معلوم نہ ہوتا تھا کہ وہ معندر ہے یا تابینا ہے۔ وہ ظرافت طبعی اور حیلہ کی وجہ سے ہر موقعہ پر اپنی علیت کا لوہا منوا لیتا تھا۔ بخارا کا رہے دالا تھا گراس کی پیدائش اور تعلیم کوفہ میں ہوئی تھی' اس نے ساری عمر بخارا میں گذاری۔

ابومقاتل نے ہتایا کہ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا جو مخص قاضی بنا ریا گیا وہ محمرے وریا ہے باہر نہیں آسکے گا۔ محمرے وریا میں غرق کر دیا گیا خواہ وہ کتنا تیراک ہو' کتنا زیرک ہو' دریا ہے باہر نہیں آسکے گا۔ حسن بن بلخی امل ملخ کے امام ہو گزرے ہیں۔ آپ فرماتے ہیں کہ میں نے امام ابو سنے بنہ رضی اللہ تعالی عند سے سناتھا کہ سب سے بدی اطاعت سے ہے کہ اللہ پر ایمان ہو اور سب سے برا گناہ سے کہ اس سے کفر کیا جائے۔ جو اللہ کی اطاعت کرتا ہے وہ بدی نعمت کا مالک ہوتا ہے اور بہت برے گناہوں سے زیج جاتا ہے۔ جس سے کفر اور ایمان کے درمیان ناوانستہ طور پر غلطیاں ہوں گی اللہ اسے بخش دے گا۔

م مناقب امام اعظم

حضرت اہام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ فرماتے ہیں کہ ہم ہمربن در کے پاس بیٹے ہوئے سے ایک فخص رو تا ہوا آیا ، وہ اپنے بیٹے کی موت پر زار زار رو رہا تھا ، اے کما گیا تم تین بار اناللہ واٹا الیہ راجعون پڑھو ، اس نے پڑھا ، اٹھ کر بیٹے کی تجییزو تکفین ہی معروف ہو گیا۔ وفائے سے پہلے وہ دوبارہ آیا ، ہم تمام اٹھے اور اس کی نماز جنازہ میں شریک ہوئے ، جب اسے قبر میں اتارا گیا تو اس کے باپ نے یہ دعا کی۔

اللهم هذا ابنى ذر متعنى به مامتعنى فى الدنيا و فتيه اجله ورزقه ولم تظلمه اللهم فماد عوتنى من الاجر فى مصيبتى هذا فقد دهبت جميع ذالك له فهب لى عذابه ولا تعذبه \*

(ترجمہ) اے اللہ! یہ میرا بیٹا ذر ہے اسے جتنا عرصہ دنیا میں مجھے نفع پنچانے کے لیئے رکھا' اس میں جتنا رزق پورا دیا ہے اس میں کوئی کی شیس کی۔ اے اللہ! تو نے اجر کا وعدہ فرمایا ہے' تو آج اسے پورا کر۔ اس لیئے مجھے اس خدمت کی وجہ سے اس عذاب سے بچا اور عذاب اثرت سے دور رکھ۔ اس کی یہ دعا من کر تمام لوگ رو پڑے۔ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ فرماتے ہیں کہ میں نے آج تک ایبا کوئی زندہ آدی شیس دیکھا جس کی دعا اتنی جلد قبول ہوئی ہو اور میں نے ایبا کوئی مخص شیس دیکھا جو اس بچ پر نہ رویا ہو' اور جے آخرت کے خوف سے اجر ضائع ہونے کا ڈر ہو' یہ صرف اس مخص سے ہو سکتا ہے جو زندگی میں اللہ سے ڈر آ رہا ہو۔

شفق بن ابراہیم رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے ایک دن ابراہیم بن اوھم مطلحہ کو فرمایا اے ابراہیم! اللہ تعالیٰ نے آپ کو عبادت صالح اوا کرنے کا برا موقعہ دیا تھا کاش! آپ دی علوم سے بھی حصہ پالیت کونکہ علم بی " راس العبادت " ہے اور اس علم پر بی تمام امور کا قوام ہے۔ امام ابراہیم نے اپنی ابتدائی زندگی میں حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ

تعالی عند کے درس میں بیٹھ کر احادیث سی تھیں۔ اعمش عجر بن زیاد جیسے بزرگوں سے بھی علمی فوائد حاصل كئے تھے۔

ابو رجاء ہروی رحمتہ اللہ علیہ نے فرمایا کہ امام ابو حنیفہ رحمتہ اللہ علیہ نے فرمایا جو حدیث کا طالب ہے احادیث کو یاد کرتا ہے مگر فقہ نہیں سکھتا تو وہ ایسے پنساری کی طرح ہے جو ادویات تو جمع کر لیتا ہے مگران کے استعل کو نہیں جانہا' اے کوئی کامل طبیب آگر بتا آ ہے کہ بید دوائی اس بیاری کے لیئے مفید ہے۔ طالب الحدیث احادیث کا مطلب نہیں جانا اور اے فقیہ ہی آگر بتا آ ہے کہ اس صدیث سے بید راہنمائی ملتی ہے۔

حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو بتایا گیا کہ فلال مسجد میں لوگ فقہ کے مسائل پر غور و خوض کرتے ہیں۔ آپ نے فرمایا ان کی کوئی راہنمائی کرتا ہے' کیا وہاں کوئی ماہر نقہ بھی ہو آ ہے؟ لوگوں نے بتایا نہیں' آپ نے فرمایا پھروہ کیا سمجھیں گے۔

سل بن مزاحم فرماتے ہیں کہ میں نے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے یہ بات سی تھی كه قاضى فيصله كرتے وقت سنت رسول كو سامنے ركھے اسے ترك نه كرے اگر اسے سنت رسول سے راہنمائی نہ ملے تو دوبارہ غور کرے اور جب تک سنت رسول تک رسائی نہ ہو اس کا فیصلہ ناممل

حفرت امام ابولوسف رحمته الله عليه فرماتے ہيں كه حفرت امام ابوحنيفه رائي كے سائے علقمہ اور اسود کا تذکرہ ہوا اور پوچھا گیا ان میں کون افضل ہے۔ آپ نے فرمایا بخدا میں جب ان کا تذكره سنتا ہوں تو دونوں كو دعا ديتا ہوں اور ان كے ليئے استغفار كرتا ہوں۔ بيد ان كى بزرگى كى وجه ے ب میں دونوں میں سے کے افضل کموں' اس لیئے جو محفق علم سے مفتگو کرتا ہے اور اسے یہ ممان نہ ہو کہ اس سے اللہ سوال نہیں کرے گا اور بیہ نہیں یو چھے گا کہ تم نے کتنے فتوے دیئے ہیں' كتنے فيلے كيئے ہيں تو اس كے ليئے أساني ہو جاتى ہے۔ امام ابويوسف رحمتہ الله عليه فرماتے كرتے تھے کہ میرے استاد امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنه اسلاف کے بهترین خلف ہیں۔ افسوس اب ان کا کوئی خلف نہیں۔ ان کی علمی عظمت کو کوئی دو سرا نہیں پہنچ سکا' بخدا ان کی مثل روئے زمین پر نہیں

خلیفہ ابو منصور (عباس) نے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ سے کما آپ ہمارے وربار شل کیوں تشریف نہیں لاتے 'آپ نے فرمایا جب میں آپ کے قریب ہو جاؤں گا تو برے فتنہ میں پڑ جاؤں گا' جب مجھے آپ سے دوری ہو گی تو میں غمزدہ اور معذرہ ہو جاؤں گا' مجھے آپ کے وربار میں کوئی کام نہیں جے کرانے کے لیئے میں امید لے کر آؤں۔ میرے پاس آپ کی کوئی چیز نہیں جس کا مجھے ڈر ہو' آپ کے پاس تو وہ لوگ آئیں گے جنہیں آپ کے سواکوئی نہیں ملتا اور مجھے آپ کی دولت کی ضرورت ہی نہیں۔

بعض تذكرہ نگاروں نے لكھا ہے امام ابوطنيفہ رضى اللہ تعالى عند نے سے كلمات عيلى بن موقعہ پر سے موئ كو كے تھے جب وہ كوفه كا كورنر تھا۔ حضرت لهام ابوطنيفه رضى اللہ تعالى عند نے اس موقعہ پر سے دو شعر پڑھے ۔

كسر جزو وقعب ماء وسحق ثوب مع اسلامه خير من العيش في نعيم يكون من بعلها نلامه

(ترجمہ) روٹی کا ایک مکڑا اور پانی کا ایک پیالہ اور پھٹا پرانا کپڑا ہو تو انسان سلامتی میں رہتا ہے۔ عیش کی زندگی میں نعتیں جنتی بردھتی جا کیں اس میں ندامت زیادہ ہوتی جائے گا۔

وكيع بن جراح كتے بيں كه من في ايك فخص كو ديكھا وہ امام ابوطنيف رضى اللہ تعالى عنه سے بوچھ رہا تھا كہ آپ في سب سے زيادہ علمى استفادہ كس سے كيا ہے اور فقه ميں كس سے زيادہ استقامت لى ہے۔ آپ في فرمايا "قطع تعلقات" ہے۔ آپ في وضاحت فرمائى ضرورت كى چيز لينے سے ہاتھ كھينج ليا اور سوالات كے ليئے بھى ہاتھ نہ پھيلايا نہ برهايا۔

الم ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عند فرمایا کرتے تھے کہ جو مخص فقہ اور اس کے جانے والوں کی قدر نہیں کرتا وہ ثقیل المحاسبہ ہے۔ وہ لوگوں سے نشست و برخاست تو کرتا ہے گرنہ کچھ حاصل کرتا ہے نہ کی کو فائدہ پنجاتا ہے۔ آپ نے یہ اشعار پڑھے ۔

مكتبه تبويه

#### علامنا ثقال الناس في كل بلدة فيارب لاتغفر لكل ثقيل

(ترجمہ) ہم نے ہر شرکے تمام لوگوں سے نشست و برخاست ختم کر ڈالی ہے۔ اے اللہ! اے نہ بخش جو کثرت سے نشست و برخاست کا رویہ اختیار کرتا رہتا ہے۔

لوگوں نے امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے ضبح کی نماز کے بعد چند مسائل پوچھ' آپ نے ان کے جوابات دیئے۔ آپ سے پوچھا گیا کہ دو سرے علماء تو اس وقت گفتگو کرنے یا مسائل بتانے کو محروہ کہتے ہیں ایبا کیوں ہے؟ آپ نے فرمایا اس سے بردھ کر اور کیا نیکی ہو عتی ہے کہ بلاتوقف طال و حرام کی تمیز کر دی جائے۔ ہم اللہ تعالیٰ کی تعریف بیان کرتے ہیں اور اس کی مخلوق کو ان کے معاصی سے بچاتے اور ڈراتے ہیں اس لیئے کہ کشکول جب سمامان سے خالی ہو جاتی ہو تو صاحب کشکول بعو کا رہ جاتی ہو حقمہ دلاتا ہو صاحب کشکول بھوکا رہ جاتا ہے۔ حضرت امام ابوضیفہ میا لیج فرمایا کرتے تھے جو فیض مجھے غصہ دلاتا ہے میں اس کے لیئے یہ دعا کرتا ہوں یااللہ اسے مفتی بنا دے' یہ ایک انسان کو مصیبت ہیں جٹلا کرنے کی میں اس کے لیئے یہ دعا کرتا ہوں یااللہ اسے مفتی بنا دے' یہ ایک انسان کو مصیبت ہیں جٹلا کرنے کی حق دعا ہے۔ یہ ایک مشکل ترین کام میں بچننے کی دعا ہے۔

امام ابوبوسف رحمتہ اللہ علیہ کا یہ معمول تھا کہ حضرت امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے مسائل کے مقابل میں اپنی عبارات بھی لکھ لیتے تاکہ ان سے موازنہ کیا جا سکے۔ ایک دن حضرت امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے ان تحریوں کو دیکھا تو فرمایا کون میرے مسائل کے سامنے اپنی تحقیقات لکھتا رہتا ہے 'عرض کی گئی ابوبوسف' آپ نے فرمایا اے قصہ گو! اپنے مسائل کو میرے مسائل کے سامنے لکھ کر اچھی طرح غور کر تاکہ مجھے قدر و منزلت معلوم ہو جائے۔ ابو مطبع فرماتے مسائل کے سامنے لکھ کر اچھی الم زفر نے بیں کہ جب ہم امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی محفل سے فارغ ہو کر باہر آئے تو مجھے امام زفر نے بیل کہ جب ہم امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی محفل سے فارغ ہو کر باہر آئے تو مجھے امام زفر نے بیل کہ جب ہم امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی محفل سے فارغ ہو کر باہر آئے تو مجھے امام زفر نے بیل کہ جب ہم امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی محفل سے فارغ ہو کر باہر آئے تو مجھے امام زفر نے بیل کہ جب ہم امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی محفل سے فارغ ہو کر باہر آئے تو مجھے امام زفر نے بیل کہ جب ہم امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی محفل سے فارغ ہو کر باہر آئے تو مجھے امام زفر نے بیل کہ رفرایا اے ابو مطبع " صناو" کو نہ بھولنا۔

اسحاق بن الحسين فرماتے ہيں كہ كرئے كے ايك بيوپارى نے بازار ميں آكر امام ابوطنيفہ كى دكان كا پنة بوچھا اور كماكہ يمال ايك فقيه كرئے كاكاروبار كرتا ہے۔ آپ نے س كر فرمايا فقيه نه كهو وہ تو ايك مفتى ہے اور وہ بھى زبردى مفتى بن كيا ہے۔ (بيد امام اعظم كى كسر نفسى تقى ) اصل اور

حقیقی مفتی بننا دورکی بات ہے۔

عیلی بن زید رحمتہ اللہ علیہ حضرت امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی خدمت میں حاضر ہوئے اور اورا آپ کے سامنے کھڑے ہو گئے 'آپ نے عیلی بن زید کو اٹھ کر اپنے پاس بٹھا لیا اور فرہایا آپ کے جدامجہ حضرت محمد رسول اللہ صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم کو یہ بات ناگوار بھی کہ کوئی کھڑا ہو کر کسی کا اوب بجا لائے۔ صرف تین مقامات پر کھڑا ہونا جائز ہے 'امیرالمومنین صاحب سلطنت کے لیے ور ذو شرافت کے لئے۔ یہ سلطنت 'علم اور شرافت کا احرام ہے۔

یزید بن الحکمت رحمتہ اللہ علیہ فراتے ہیں کہ ایک دن ایک مخص آپ سے مناظرہ کر رہا تھا۔ اس نے غصے میں آگر حضرت امام کو کما " فدا کا خوف کیجے " یہ سن کر حضرت امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سم گئے " آپ کا رنگ فق ہو گیا چرہ زرد ہو گیا اور خوف اللی سے سر جھکا لیا اور فرمایا میرے بھائی اللہ تعالی کچھے جزائے فیر دے اس سے بردھ کر اللہ کا مختاج کون ہوگا جھے عجائب وقت کی میرے بھائی اللہ تعالی ہو جبکہ لوگوں کی زبانوں پر اس کے علم کا چرچا ہو اور وہ کرنفسی سے گوں سار ہو کر اللہ کی رضا طلب کرتا ہوں اور اللہ کی رضا طلب کرتا ہوں اور کو بیشہ اللہ تعالی سے سلامتی طلب کرتا ہوں اور یا رکھو میں اس وقت تک علمی بات کرتا ہوں جب جھے یقین ہوتا ہے کہ میں سچا ہوں۔

#### حضرت امام کے تقویٰ کی ایک مثال

حضرت الم ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے ایک دن فرملیا جب کوئی عورت اٹھ کر چلی جائے تو اس کی خالی جگہ پر نہ بیٹھو جب تک وہ جگہ فحنڈی نہ ہو جائے۔ عورت کے جوتے کا تذکرہ نہ کرو اس کے چھوٹے بڑے جوتے کا بھی ذکر نہ کو کیونکہ اس بات سے اس کے پاؤل اور ایرایوں کا تصور سامنے آئے گا اور اس کے حسن و رعنائی کی طرف خیال جائے گا۔ اس طرح انسان فتق اور غلط سوچ کی طرف مائل ہو تا جائے گا۔ حضرت لمام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ جس راستہ سے گزرتے آپ بھی وائیں یا بائیں نہ جھا تھے' آپ کو یہ معلوم بھی نہ ہو تا کہ ان کے وائیں بائیں عورت جارہی ہے ہو تھی نہ ہو تا کہ ان کے وائیں بائیں عورت جارہی ہے یا مرو۔ حضرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے بھی یہ جرات نہیں کی کہ جارہی ہے یا مور۔ حضرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے فرمایا ہیں نے بھی یہ جرات نہیں کی کہ جارہی ہے یا مور۔ حضرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے فرمایا ہیں نے بھی یہ جرات نہیں کی کہ جارہی ہے وہ فقیہ یا مفتی کموں یا کملاؤں۔

مكتهنبويه

حضرت لهام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے پاس اگر کوئی فخص آیا اور کہتا ہے بات یوں ہے اور سے بات بوں ہے اور سے بوں ہے اور سے اور سے بوں ہے اور سے بات بوں ہے اور سے بات بوں ہے اور سے بات کو کاف کر فرماتے جن باتوں سے لوگ ناخوش ہوں ان کے بیان سے بچو خواہ وہ گفتگو کتی ہی اچھی ہو۔ اللہ اس مختص کو معاف فرمائے جو ہارے پاس ناگوار بات کرتا ہے۔ اللہ تعالی اس مختص پر رحم فرمائے جو ہمارے بات کرتا ہے۔ اللہ تعالی اس مختص پر مرحم فرمائے جو ہمارے بات کرتا ہے۔

#### امام الوحنيف الفي المنابة كي مناجات

حفرت المم الوحنيف رضى الله تعالى عنه بيه مناجات كياكرتے تھے۔

.... اے اللہ! اگرچہ میرے اعمال تیری اطاعت کے مقابلہ میں کوئی حیثیت نہیں رکھتے لیکن میری آرزو کیں تیری رحمت کے مقابلہ میں بھی کوئی حیثیت نہیں رکھتیں۔

.... اے اللہ! میں خائب اور خابر ہو کر تیرے دروازے سے کیے محروم جاسکتا ہوں' مجھے لیقین ہے کہ تیرے جود و کرم سے محروم نہیں رہوں گا۔

.... اے اللہ! اگر میری رائے اس بات سے پوشیدہ ہے کہ کونیا امر میرے لیئے مفید ہے تو میری اصلاح فرما لیکن میرے یقین اور ایمان سے پوشیدہ نہیں کہ کوئی امرا ایبا ہو گاجو مجھے نفع پنچائے گا۔

.... اے اللہ! تو نے میرے نفس کو ایمان کی دولت بخش ہے میرے نفس کو دوزخ کی ایکان میں وال کرولیل نہ کرتا۔

.... اے اللہ! جب ہم تیرے کلام میں تیرے سخت عذاب کی ہاتیں پڑھتے ہیں اور پھر کھتے اس کتاب (کلام اللہ) میں " غفور الرحیم" دیکھتے ہیں تو ہمیں امید ہو جاتی ہے کہ تو ہم پر رحم فرائے گا اور عذاب سے نجات دے گا' اگرچہ ہاری کوشش ہاری آزرو کیں تیری رحمت سے بہت کم ہیں لیکن تو اپنے کرم اور اپنی رحمت کو ہم پر نازل فرما ہے شک تو زندگی بھر جھ پر رحمت کو ہم پر نازل فرما ہے شک تو زندگی بھر جھ پر رحمت کو ہم پر نازل فرما ہے شک تو زندگی بھر جھ درحم فرماتا رہا' اب میرے مرنے کے بعد بھی اپنی رحمتوں اور احمانات کے دورانے کھلے رکھ۔

- .... اے اللہ! اگر تو بخش دے تو تیرا فضل ہو گا' اگر تو عذاب کرے تو تیرا عدل ہو گا' تیرے عدل ہو گا' تیرے عدل سے ہمیں خوف آ تا ہے گر تیرے فضل سے ہماری امیدیں ہری ہو جاتی ہیں' تیرے انحابات شاہد ہیں کہ تیرا فضل و کرم زیادہ ہے۔
- .... اے اللہ! میں جس رحمت کا امیدوار ہوں اگر میں اس کا اہل نہیں تو تو اپنے فضل ہے۔ میری جان پر جودو کرم فرما کر در گذار فرما۔
- الله! الله! الو نے ہیشہ نیکی کا حکم دیا ہے۔ مامورین میں تو ہی حق رکھتا ہے اگرچہ تو نے ہمیں التجائیں کرنے کی اجازت دی ہے گرتو التجاہے بردھ کر ہم پر فضل کرتا ہے۔
- .... اے اللہ! تو نے دنیا میں میرے عیوب چھپائے ہیں ' آخرت میں مجھے اس کی زیادہ ضرورت ہے کہ تو انہیں پوشیدہ رکھے۔ مجھے برسر میدان حشر رسوانہ ہونے دینا۔
  - O.... اے اللہ ! جس طلب میں میں نے اپنی زندگی گذار دی ہے اس پر مجھے ردنہ فرمانا۔
- .... اے اللہ! مجھے خالص توبہ کی توفیق عطا فرما' اس کی حلاوت مجھے چکھا بلکہ اپی رحمت کی مختلاک میرے دل میں پنچا دے۔
- .... اے اللہ! میں ونیا میں تیرا ہی مجیب ہوں' تیرا ہی عبد ضعیف ہوں' میرا قلب حزین ہے' میری جان تاتوال ہے' میں نے ساری زندگی گربید و دعا میں بسر کی ہے۔
- .... اے اللہ! جو کسی کے پاس حاجت ہوتی ہے وہ اس کی طلب کرتا ہے' تیری ذات ہے ۔... کئی بھروے ہوتے ہیں' مجھے تو تیری ذات کا ہی بھروسہ ہے' میں اپنی حاجتیں تیرے پاس ہی پیش کرتا ہوں اور صرف جھے ہے ہی اپنی حاجت کا طالب ہوں۔
- .... اے اللہ! میری حاجت پوری فرما تو ہی حاجتیں پوری کرنے والا ہے ' مجھے اپنی رحمت سے بخش دے ' دوزخ سے آزاد فرما دے ' مجھے صبح و شام کے گناہوں کی آلائش سے محفوظ رکھ ' میری غلطیاں معاف فرما۔

عیسیٰ بن عمرو نحوی رحمتہ اللہ علیہ نے فرمایا کہ جن دنوں میں کوفہ آیا تو لوگوں نے مجھے بتایا کہ حضرت امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ ان دنوں اہل علم و فضل کا مرجع ہیں 'میں آپ کی مجلس

مكتبهنبو

حسن بن زیاد رحمتہ اللہ علیہ نے فرمایا کہ حضرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے فرمیا کسی محدث سے صدیث سننا " سماع " کملا تا ہے ' یعنی اس کے منہ سے کہتے ہوئے سننا۔ پھر فرمایا تھے نہیں دیکھا کہ اگر کسی سے یہ سوال کرو کہ تم نے صبح کا کھانا کھایا ہے تو وہ کے گا ہاں! کیا اسے یہ میں منا چاھیے کہ میں نے صبح کا کھانا کھایا ہے ' کیا یہ بات زیادہ درست ہے یا پہلی ؟ ہے یا پہلی ؟

امام مالک رواینے کا یمی ذہب ہے 'وہ امام المدینہ تھے' وہ اپنے وقت کے تمام فقہا کے لیے تھے' مطرف بن عبداللہ فرماتے ہیں کہ میں نے امام مالک رواینے کی صحبت میں سترہ سال گذارے تھے میں نے بھی نہیں ویکھا کہ آپ نے اپنی کتاب '' موطا امام مالک '' کسی کے سامنے پڑھ کر سائی ہو۔ وہ اس بات سے انکار کرتے تھے کوئی کہتا کہ حدیث کی ساع کافی نہیں جب تک کہ محدث کے منہ سے نہ ہے' صرف لکھا ہوا پڑھنا ساع میں نہیں آیا۔ قرآن پاک کافی ہے تو حدیث بھی کافی ہے' قرآن بذات خود حدیث ہے مگر قرآن پاک صحابہ کرام نے لکھ کر نہیں پڑھا بلکہ حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی زبان مبارک سے ساع کیا تھا' لکھے ہوئے اوراق تو بعد میں سامنے آئے تھے۔

ابن المبارک مطلحہ ہے منقول ہے انہوں نے فرمایا کہ ابن شرمہ نے ایک ون امام ابوطنیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو کما کاش آپ ابن هبیرہ (گورنر کوفہ) ہے کوئی منصب قبول کر لیتے اور وو باتوں ہے تم قید و بندہ نجات پالیت ہی مصائب ختم ہو جاتے 'کوڑے نہ کھاتے اور ووسری مزائیں نہ پاتے ۔ کیا تم نے ابن مسعود رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی بات نہیں سی کہ وو الفاظ ایسے ہیں جن سی اللہ تعالیٰ عنہ کی بات نہیں سی کہ وو الفاظ ایسے ہیں جن سے تمام مصائب مل جاتے اور کوڑے دفع ہو جاتے ہیں' جب تم سے اب سوال کیا جائے تو اس پر بال کر دو۔

حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عند نے ابن شرمہ کی یہ تھیجت آمیز گفتگو سی تو آپ نے فرمایا میں تو عذاب اور مصائب کی نے فرمایا میں تو عذاب اور مصائب کی کوئی پرواہ نہیں کرنی چاھیئے 'جے اپنے نفس کی عزت در کار ہوتی ہے اسے دنیا اور دنیا کی تمام چیزیں آسان ہوتی ہیں۔

امام شافعی رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ ہے سوال ہوا کہ ایک مخص روزہ کی حالت میں طلوع فجر تک کھاتا پیتا 'جماع کرتا رہے اور اے کوئی سمجھ وار انسان کے کہ آدھی رات کو طلوع فجر ہو گئی ہے' امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے فرمایا خاموش تم بدی عقل کے مالک ہو لنگڑی عقل کی سوچ سے بات نہ بنایا کرو۔

حضرت الم ابوصنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ فرمایا کرتے تھے کہ تمام لوگ اگر عبد (غلام) ہوتے تو میں تمام کے تمام کو آزاد کر دیتا اور ان پر کوئی احسان نہ جما آلہ ایک اور مقام پر فرمایا اگر تمام گھاس کھانے والے جانور میرے قبضہ میں ہوتے تو میں انہیں صدقہ کر دیتا' ایک اور جگہ فرمایا کہ ذنوب گھان وستوں کے لیئے جمع نہ کرو اور دنیا کا مال و دولت مبغوض لوگوں کے لیئے جمع نہ کیا کرو' یمال دوست سے مراد اپنا نفس ہے اور مبغوض سے مراد اپنا وریث ہے' میں نے آپ کی شان میں چند اشعار کے ہیں۔ (ترجمہ)

المام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے اقوال بلاشبہ بے مثال ہوتے ہیں مگر اپ حس کی وجیہ

ا کا محبه برویه

- ہے مثال بن جاتے ہیں۔
- ٢- اتوال من آپ فريدالر هرت اور افعال من آپ وحيد العصر ته-
- ۳ تمام آئمہ نے اپنے قیاس کے قیدی آزاد کر دیئے مگر امام ابوصفیفہ رضی اللہ تعالی عند کے سامنے وہ غلاموں کی طرح نظر آتے ہیں۔
- ۳ بال! بال! انهول نے اپنے قیاس کو امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے قیاس پر ڈھالا 'وہ ان کی تقیحت اور علماء کے غلام ہیں۔
- ۵ تالہ بند شرول کے علوم کو امام ابو حقیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے لیئے کھول دیا گیا تھا آپ "فاتح الاقفال" ہیں' آپ نے علم کے دروازے کھول دیئے تھے۔
- ۲ لوگوں کے علوم کے ٹیلے پت ہیں' انہوں نے حضرت امام ابو حفیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے علمی بہاڑوں سے حصہ لیا تھا۔
- ۵ اپ فاوئ کے اظہار کی وجہ سے شیر عاب ہیں۔ آپ کے شاگرہ شیر اور دو سرے آئے۔
   آپ کے سامنے شیر کے چھوٹے چھوٹے بچے نظر آتے ہیں۔

000000000000000

· 一个人一个人们的一个一个人的一个人的一个人的一个人的一个人。

Charle Wongapanan June - - 1

#### پجيسوال باب

# امام ابوحنیفهٔ ایکی اینے شاگر دوں کو و میتیں

حضرت امام ابويوسف رحمته الله عليه فرمات بين ايك دن جم چند افراد حضرت امام ابوحنيفه رضی اللہ تعالی عنہ کے گرجم ہوئے تھے۔ باہر زوروار بارش ہو رہی تھی' ہم سارے آپ کے شاگرو بى تقصه ان مين داؤد طائى عافيت الاودى واسم بن معن المسعود وفقص بن غياث الجعفى وكيه بن الجراح والك بن مغول وفربن النويل كے نام قابل ذكرين (رحمته الله عليهم )- حضرت امام ماليد في ہم سب کو مخاطب کر کے فرمایا تم سب میرے ول کا سرور ہو' آ تکھوں کی شھنڈک ہو' حزن و ماال کی جلاء ہو' میں نے تمہارے لیئے فقہ کی سواری تیاری کی' اسے سجایا اور اس کی لگام تمہارے ہاتھ میں پرا دی ایک وقت آنے والا ہے کہ وقت کے برے برے اہل علم تمهارے فیلے سنا کیا کریں مے تہارے سامنے غلام بن کر آئیں گے ، تم یں سے ہر ایک عددہ قضاۃ کے لائق ہے۔ میرے لائق شاگردول میں سے دس تو ایسے ہیں جو قاضی بنیں گے اور ملک کے قاضیوں کے سردار ہول گے۔ آج میں تہیں اللہ کے نام پر چند سوال کرنا چاہتا ہوں اور اس کا وسلیہ تلاش کر کے تہیں چند نصیحتیں کرنا چاہتا ہوں' اللہ تعالی نے آج تہیں علمی جلالت سے نوازا ہے۔ یاد رکھو منصب قضاۃ پر فائر ہو کر اپنے آپ کو حکمرانی کے تصور کی ذات سے بچانا۔ صرف لوگوں کے مسائل حل کرنا۔ ان كا حكمران نه بنا- أكر تهيس قاضي بنا ويا جائے تو لوگوں كو انصاف ميا كرنا- أكر حالات ميس كوئي خرابی محسوس کرو تو فورا منصب قضاہ ہے علیحدہ ہو جاتا اور تخواہ اور دولت کی لالج میں اس منصب ے چٹے نہیں رہا۔ ہل! اگر ظاہر و باطن ایک ہوں تو پھر قضاۃ کے منصب پر قائم رہ کراللہ کی مخلوق كى الداد كرنا- ايے لوگ جو تمام امور دنيا سے عليحدہ جو كر محض الله كے رضا كے ليئے عمدہ قضاۃ قبول كرتے ہيں ان پر تنخواہ حلال ہے۔ لوگوں سے سامنے بردے نہ لگا دینا۔ ان كے ليئے اپنى عدالتوں كے

وروازے کھے رکھنا' پانچ وقت کی نماز جامع مجد میں حاضر ہو کر اوا کرنا اور نماز کے بعد اعلان کرنا کہ جے انساف کی ضرورت ہو اس کے لیئے عدالت کے دروازے کھلے ہیں۔ عشاء کی نماز کے بعد تین بار اعلان کرنا۔ اگر بھار ہو جاؤ اور عدالت میں نہ جاسکو تو اسنے ونوں کی شخواہ نہ لینا۔

یاد رکھو انصاف نہ کرنے والے قاضی کی امامت باطل ہوتی ہے۔ ایسے قاضی کا فیصلہ بھی درست نہیں ہے۔ اگر کوئی گناہ یا جرم کرے تو قاضی کا فرض ہے کہ اس کو روکے یا سزا دے۔ حسن بن بجلی المرغینائی نے آپ کی و صیں لکھ کر اپنا ایک نوٹ لکھا ہے کہ اگر امام (خلیفہ) اللہ تعالیٰ اور اس کے درمیان کوئی ایسا گناہ کرتا ہے جس پر سزا لازم آتی ہو اس پر حد لگائی جائے 'کوئی صاکم ظلم کرے یا رعایا کے کسی فرو سے زیادتی کرے تو قاضی کا فرض ہے کہ اس کے خلاف فیصلہ ما ہم

# حضرت امام ابوحنيفه نظفاتها كأوصيت نامه

(یوسف بن خالد ستی رحمته الله علیه نے حضرت سیدنا امام اعظم ابوصنیفه رضی الله تعالی عنه کا ایک وصیت نامه ترتیب دیا تھا جو برصغیریاک و ہند میں اردو ترجمه کے ساتھ کی بار طبع ہو چکا ہے ، ہم قار کین سے معذرت کے ساتھ اسے شریک کتاب نہیں کر رہے۔)

نوح بن ابراہیم نے فرمایا کہ میں نے امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے چند احادیث کے معانی پوچھے ہیں' آپ ان کی تفییرو تشریح بیان فرماتے۔ بعض مقامات پر ایسے وقیق نکات آتے اور ان سے جو فقہی مسائل آتے آپ ان پر بھی تفصیل سے روشنی ڈالتے۔ میں نے قضاہ و حکام کے متعلق سوالات کیئے تو آپ نے فرمایا نوح کیا تم قضاہ کے منصب کا دروازہ کھٹکھٹانا چاہتے ہو۔ میں "مرو "مرو کی پہنچا اور تھوڑا ہی عرصہ گذرا تھا کہ خلافت عباسیہ کی طرف سے مجھے قاضی بنا دیا گیا۔ ان دنوں ابھی امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ زندہ تھے میں نے آپ کو خط لکھا کہ مجھے مجبورا قاضی کا منصب قبول

کرنا پڑا ہے' میں آپ سے معذرت چاہتا ہوں' آپ اس منصب سے کبیدہ خاطر ہوا کرتے تھے گر میں نے مجبورا اس عمدے کو قبول کیا ہے۔

حضرت المام رائيد نے ميرے خط كا جواب براہ راست تو نہ ديا ميرے ايك دوست كو خط كھا كہ مجھے نوح كا خط بھى ملا اور اس كے عمدہ قضاۃ پر تقرر كا پيغام بھى ملا ، وہ ايك بهت برے عظيم امتحان ميں بھنس گئے ہیں۔ اس كام ميں تو برئے برئے اكابر عمدہ برآں نہيں ہو سكے۔ مجھے يوں محسوس ہو آ ہے كہ نوح كو بائدھ كر دريا ميں بھينك ديا گيا ہے۔ اللہ تعالی اسے اس مصيبت سے نجات دے۔ ميں اس كے ليئے دعا مانگ رہا ہوں كہ وہ تقویٰ كا دامن تھا ہے ركھے كيونكہ ان تمام امور كا دارددار تقویٰ پر ہے اور قيامت كے دن صرف تقویٰ سے ہى نجات ہوگی۔ اس سے تمام مصائب دور رہتے ہیں اور تمام امور اس سے خاتمہ بالخير پر پہنچتے ہیں۔

قضاۃ کے مختلف امور کا اوراک ناممن ہے' اسے صرف وہ فقیہ اور علماء مرانجام دے کتے ہیں جنہیں احادیث پر پوری پوری نظر ہو۔ مسائل کے مطابق حقائق جانتے ہوں' اصول علم کو کتاب و سنت کی روشنی میں حاصل کرتے ہوں۔ اقوال صحابہ ذہن نشین ہوں۔ پھر بصیرت علمی سے ان کے نفاذ اور اطلاق میں ممارت رکھتے ہوں۔ جب کوئی انیا مسئلہ سامنے آئے کہ اس کا حل عام حالات میں مشکل ہو تو کتاب و سنت و افعال آثار صحابہ و اقوال صحابہ پھر اجماع کتاب و سنت 'اجماع صحابہ سامنے بن جائے تو بھتر ورنہ ان کی روشنی میں قریب تر رہ کر فیصلہ کرتے ہوں۔ ان اصولوں پر شوابہ بات بن جائے تو بھتر ورنہ ان کی روشنی میں قریب تر رہ کر فیصلہ کرتے ہوں۔ ان اصولوں پر شوابہ قائم کرکے فیصلہ کرنے کی صلاحیت ہو' گریہ اصول وہی ہوں جو قرآن و سنت یا اقوال و آثار صحابہ سے متعلق کیئے ہیں۔ اس کاوش کے باوجود اٹال بصیرت اور اٹال معرفت سے مشورہ کرلینا ضوری ہے کو تکہ " راسخون فی العلم " سے مشورہ لینا ارباب بصیرت کا وظیرہ رہا ہے۔ مالا بدر ک له کے اندھرے مقالت سے گزرنے کے لیئے ایس روشنی کی ضرورت ہوتی ہے۔

# قاضی کے لیئے فیصلہ کرنے کا طریقہ

فقہ میں یہ اصول مقرر کیا گیا ہے کہ جب آپ کے سامنے دونوں فریق (مدعی اور مرعا علیہ) آجا کی تو کرور اور طاقتور' اعلیٰ اور ادنیٰ دونوں کو ایک جیسی جگہ دی جائے گی' انہیں مخاطب کرنے یا

ائیں بات کرنے کا ایک جیسا موقعہ ویا جائے۔ ان سے کوئی ایس بات نہیں کرنا چاھیے جس سے طاقتور امیر آدی کی حوصلہ افزائی ہو، غریب اور کمزور کی دل شکنی ہو، جب دونوں عدالت میں موجود ہوں تو انہیں علیحدہ علیحدہ ایک جیسی جگہ دی جائے، ان کی بات سنتے وقت نمایت نرمی افتیار کی جائی چاہئے، انہیں بلافوف و خطر اپنی بات کرنے کا موقعہ دیا جانا چاھیئے، وہ اپنی بات کو آرام سے محمل کر لیں۔ اگر درمیان میں کوئی بات دریافت کرنا ضروری ہو یا اس کی وضاحت مطلوب ہو تو نمایت نرمی سے دونوں کو کیسال موقعہ دیں، اگر ان میں سے کوئی اپنی فضیلت یا حیثیت کا رعب ڈالے تو اسے روک دیا جائے اور اسے سمجھا دیں کہ عدالت میں مساوات اور یگائی سے بات کی جائے گی۔ جب دونوں اپنے معاملات بیان کر چکیں تو فیصلہ کرتے وقت کس متم کا غضب غصہ یا گرمی کا اظہار نہیں ہونا چاھیئے، معاملات بیان کر چکیں تو فیصلہ کرتے وقت کس فتم کا غضب غصہ یا گرمی کا اظہار نہیں ہونا چاھیئے، فیصلہ کرتے وقت قاضی کو بھوک کی وجہ سے نکابت نہیں ہونی چاہیے، نہ بی اسے زیادہ کھانے کا بوجھ ہونا چاھیئے، اسے حاضر دماغی اور صحت قلبی کے ساتھ فیصلہ کرنا چاہیے۔

اگر کوئی ایبا مقدمہ سامنے آئے جس میں قاضی کے رشتہ دار بھی شریک ہوں تو اس مقدمہ کا فیصلہ کرتے وقت عجلت نے کام نہیں لینا چاھیے بلکہ کئی گئی بار سوچنا چاھیے 'فریقین کو موقعہ دیں کہ وہ عدالتی فیصلہ سے پہلے اگر آپس میں صلح کر سے ہوں تو کر لیں۔ اس سلسلہ میں اگر انہیں آر بخیں بھی دینا پڑیں تو کوئی حرج نہیں۔ اگر وہ کی صورت صلح نہیں کرتے تو پھرعدالت کا فیصلہ آنا چاھیے '
کوئی ایبا فیصلہ نہ ویا جائے جب تک دونوں طرف سے بیانات گواہ یا دستاویزات کو سامنے نہ لایا جائے۔ کی گواہ کو تلقین نہ کی جائے جب آب میں کوئی ایسی بات نہ کی جائے جس سے ایک فریق کی حوصلہ افزائی اور دو سرے کی تذکیل کا پہلو نکاتا ہو۔ اپ رشتہ داروں کے معاملت میں زیادہ مخاط ہونا چاھیئے۔ فریقین میں سے کمی کی دعوت قبول نہیں کرنی چاھیئے۔ اس سے دو سرے کو الزام تراثی کا موقعہ ملات میں کوئی ایسی بات نہ چھڑیں جس سے ایک فریق کی حوصلہ افزائی ہوتی ہو۔ موقعہ ملات میں کوئی ایسی بات نہ چھڑیں جس سے ایک فریق کی حوصلہ افزائی ہوتی ہو۔ اللہ کی رضت برستی ہے مدالت میں مداختی چاھیئے۔ اس میں سلامتی ہے اور اللہ کی رحمت برستی ہے۔

# الم نوح بن الي مريم

ہم سابقہ صفحات پر عدالتی فیصلوں کے سلسلہ میں امام نوح بن ابن مریم کا ذکر کر آئے ہیں

آپ کی ان مجالس میں حاضر ہوتے آؤر علم و فضل سے ابنا اپنا حصہ لیتے۔

حضرت توح رحمته الله عليه كالقب " الجامع " اس ليئے برا تھا كه آپ مجالس كے جامع تھے۔ مجالس الار " اقاویل الاحادیث ( امام ابو حفیفہ رضی الله تعالیٰ عنه کی تحقیقات کی روشنی میں) مجلس النو اور مجالس الار کی وجہ ہے آپ اپنے وقت کے آئمہ كبار میں شار ہوتے تھے۔ مشرقی ایشیاء کے وسیع علاقہ میں آپ کی وجہ سے فقہ حفی کی اشاعت ، روی ہوئی تھی۔ وہ جلالت القدر عالم دین تھے۔ آپ سے شعبہ اور ابن صریح نے روایت کی ہے۔ اس جلالت اور بزرگ کے باوجود آپ بھٹے امام ابو حفیفہ رضی الله تعالیٰ عنه کی فقبی تحقیقات کو مشعل راہ بناتے تھے اور ان سے بہت کی روایات کو آگے بیان کیا کرتے تھے۔ جب فوت ہوئے تو عبدالله ابن المبارک رحمتہ الله علیہ جیسے عظیم الثان محدث تعربیت کے لیئے پہنچ۔ دور دراز سنر کر کے ان کے گھر گئے اور تین دن تک تعزیب کی مجالس میں شرکت کرتے رہے۔

Berger and the second

بالكل برعكس جواب دے رہے ہیں۔ آپ نے فرمایا میں نے تخفے روكا تھا كہ راستہ چلتے ہوئے نہ سوال كياكرو نہ جواب لكھا كرو۔ آپ نے يہ بھى فرمایا جب میں تكیه لگائے آرام كر رہا ہوں اس وقت بھى سوالات نہ كياكرو۔ ايسے مواقع پر صحیح جوابات نہیں ہوتے كيونكہ انسان ست اور آرام كى حالت ميں ہوتا ہے اور دماغ كى توانائياں كمزور پر جاتى ہیں۔ آئندہ كے ليئے احتياط سے سوالات كريں اور نمايت محنت سے جوابات سرو قلم كياكريں۔

(نوث) كتاب كے اس مقام پر امام ابوبوسف رحمتہ اللہ علیہ كا ایک وصیت نامہ لكھا ہوا ہے اس كا اردو ترجمہ كئى وفعہ چھپ چكا ہے ، ہم قار كين سے معذرت كے ساتھ اسے نظرانداز كر رہے ہیں۔ (اصل كتاب كا صفحہ ١١٢ ويكھيں)

000000000000000

日本学行をもとりというできますという。

was it is to a first to be a f

THE STATE OF THE PROPERTY OF THE PERSON OF T

# مذابب اسلام پر مذبب امام ابو حنیفه نفتی انتمایی کی برتری

حضرت امام ابوبوسف رحمته الله عليه كالمعمول تفاكه جب كوئى فخص آپ سے كوئى مسله دريافت كريًا تو آپ فرماتے كه امام ابوطنيفه رضى الله تعالى عنه اس كابول جواب ديا كرسفتھے۔ جس في امام ابوطنيفه رضى الله تعالى عنه كو وسيله بنايا وہ دين اسلام ميں كامياب ہوگا۔

حضرت امام ابو بكر عنیق بن واؤر الیمانی فرمایا كرتے تھے كہ آكر كوئی فنحص پوچھے كہ تم حضرت الم ابوصنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے ذہب کو دوسرے نداہب پر کیوں فوقیت دیتے ہو تو آپ فرماتے میں تو امام مالیجہ کے بی نرمب کو فوقیت دول کا کیونکہ وہ اقدم اور اقوم ہے ، وہ سبق ' ردق' احصر' اجمع' اسل' الميع' افرض' امحض' احصب' احرب اور اوضح ہے۔ وہ كتاب الله كو اپني بنياد بنا آ ہے' وہ سنت رسول طائعام کو اپنا راہنما بناتا ہے وہ صحابہ کرام کی انتباع کرتا ہے وہ سلف صالحین کے نظریہ کو قائم ر کھتا ہے ' وہ اسلاف کے اقوال کو اہمیت رہتا ہے۔ وہ اخلاف کی طرف رجوع کرتا ہے ' وہ اصحاب علم كے ليئے اعلم ب اور مسائل كے ليئے اقوىٰ ب- اس ير جو لوگ عمل كرتے ہيں وہ اچھے سَائج پر وسیجے میں اور بلندی افکار کے مالک بنتے ہیں اور ادق اور مشکل معاملات کو حل کرنے میں کامیاب ہو جاتے ہیں۔ وہ قیاس میں مضبوط اور مسائل کے اثبات میں متند ہے۔ جو لوگ آپ کے نقش قدم پر چلیں گے وہ معاملات دینیہ میں کے اور اعلیٰ وای الی الخیر جابت ہوں گے۔ وہ کھانے پینے میں اطیب اور پاکیرہ چیزوں کا استعمال کریں گے۔ خرید و فروخت میں عادل اور امین ہول گے۔ وہ لوگول کے اموال کو باطل طریقے سے حاصل کرنے کا تصور تک بھی نہیں کریں گے۔ تھیتی باڑی کے معاملات میں احکام شریعت کو سامنے رکھیں کے اور ادائیگی صلوۃ میں سرگرم عمل ہوں گے اس میں سستی یا کو آہی نہیں كريس مع وه صله رحى مين ائي مثل آب مول معد احكام شريعت ك اجراء مين مشاق اور عادل مول کے وہ اپنی زبان کو فضولیات سے محفوظ رکھیں گے۔ افتراء کرتے وقت بھترین مقتری مول گے

اقبامام اعظم ۲۸۳ مکتبه نبویه و

اور المت کے وقت بھرین الم ہول گے۔ ان کے دستر خوان مساکین کے لیئے کھے ہوں گے ان کے ہاتھ سے کی حیوان یا مولیٹی کو بھی اذبت نیس پنچ گی۔ وہ بے شوہر مستورات کو نکاح کرنے کی ترغیب دیں گے اور بیبیوں کے احوال کی گرانی اور انصاف کریں گے۔ وہ قرآن پاک کی قرات نمایت صاف اور خوش الحانی سے کریں گے اور جب ان کے سامنے قرآن مجید پڑھا جائے گا تو وہ نمایت اوب اور خاموثی سے سنیں گے۔ وہ اپنے الم سے بہت کم سوال کریں گے۔ تضمین میں احسن اور تدوین میں مستعد ہول گے۔ نماز کے بعد دعاؤل میں افضل ہول گے۔

حضرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے دین پر چلنے والے اپنے وعدے پر کیے ہول گے۔ ولا میں بین میں اوئی ( وفا کرنے والے ) ہول گے۔ وہ اپنے ایمان پر بھین سے قائم ہول گے۔ ولا اق کے معاملات میں فقہ کی باریکیوں کو نگاہ میں رکھیں گے۔ قیدیوں پر بخی نہیں کریں گے۔ وہ و شمن کو قتل کرنے کی بجائے قید کرنے کو ترجیح دیں گے۔ وہ عوام پر اخراجات کرنے میں اولیت کریں گے۔ شادی بیاہ اور ولیمہ کی تقریبات میں اسلام کے احکام کو بہانے رکھیں گے۔ اس میں ہوشیار بھی ہوں گے اور خراج ول گر اسراف اور بیجا رسوم سے اجتناب کریں گے۔ وہ اکثر ایسے کام کریں گے جو مساکین کی فلاح اور بہود پر مشمل ہوں۔ وہ خرچ کرنے میں تخی بھی ہوں گے اور مختاط بھی ہوں گے او قات کو مساکین کی فلاح اور بہود پر مشمل ہوں۔ وہ خرچ کرنے میں تخی بھی ہوں گے اور مخاط بھی ہوں گے ' اوائیگی جج میں مستعد رہیں گے ' سفر جج کو خوشی خوشی طے کریں گے۔ وہ عبادت کے او قات کو مد نظر رکھیں گے۔ وہ شاہد فی المقال پر جرح کا خوب خوب جواب دیں گے۔ مالی معاملات میں افساف مد نظر رکھیں گے۔ وہ شاہد فی المقال پر جرح کا خوب خوب جواب دیں گے۔ مالی معاملات میں افساف سے احسن فیصلے کریں گے۔ وہ شاہد فی المقال پر جرح کا خوب خوب جواب دیں گے۔ مالی معاملات میں افساف سے احسن فیصلے کریں گے۔ وہ شاہد فی المقال پر جرح کا خوب خوب جواب دیں گے۔ مالی معاملات میں افساف سے احسن فیصلے کریں گے۔ وہ شاہد فی المقال پر جرح کا خوب خوب جواب دیں گے۔ مالی معاملات میں افساف سے احسن فیصلے کریں گے۔ وہ شاہد فی المقال پر جرح کا خوب خوب جواب دیں گے۔ مالی معاملات میں افساف

حضرت المام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ بذاب خود عقلا کو عقلی گفتگو کر کے مطمئن کرتے ہیں اور عورتوں کو مہر دلانے کے فیصلوں میں تاخیرے کام نہیں لیتے۔ وہ رات کو وہر ادا کرنے میں سنت نبوی کو سامنے رکھتے ہیں اور عیدالضحیٰ کے واجبات کو ادا کرنے میں فرصت اول میں اقدام کرتے ہیں ' اپنے وعدوں کو پورا کرنا' انہیں وقت پر ایفا کرنا' آپ کی زندگی کا معمول رہا ہے۔ حدود کو نافذ کرنے میں بڑی اختیاط ہے فیصلہ کرتے تھے۔ تلاوت قرآن کو نمایت نفیس طریقے ہے اوا فرماتے تھے۔ وہ سب سے پہلے نماز میں کھڑے ہوتے اور سب سے آخر میں فارغ ہوتے تھے۔ وہ لوگوں پر حسن ظن رکھتے تھے اور عقلند اور باتمیز احباب کے ایمانی قوتوں کو اجاگر کرتے تھے۔ ادائیگی ذکوۃ میں حسن ظن رکھتے تھے۔ ادائیگی ذکوۃ میں حسن ظن رکھتے تھے۔ ادائیگی ذکوۃ میں

اولین فرصت میں اوا کرتے ، جانور کو ذرئے کرنے میں نمایت احتیاط فرماتے تھے اور مستعمل چیز ہے کراہت کرتے تھے۔ نماز کو استے خلوص سے اوا کرتے جیسے وہ اللہ کو دیکھ کر عباوت کر رہے ہوں۔ اگر کسی واقف خاندان سے مرد غائب ہو جائے یا لاپۃ ہو جائے تو اس خاندان کا خیال رکھتے گراس کے گھرنہ جاتے تھے۔ لوگوں کے عیوب کو بیان کرنے کی بجائے اس پر پردہ ڈالتے اور دکھ درد میں شریک ہوتے ، نگ وست اور مخلوب کا عذر قبول کرنے میں دیر نہ کرتے تھے۔ اولاد کو انعام و اکرام دیے میں بڑے کشادہ دست تھے۔ وہ نمازول کو فوت ہونے یا قضا ہونے سے پہلے ادا کرتے۔

وہ اوائیگی حج میں اکمل ' قربانی دینے میں اول ' لبیک پکارنے میں بلند آواز ' قربانی کے ہدی میں کثرت اور عمد گی کا خیال رکھتے تھے۔ طواف کعبہ اور سعی میں بری تیزی فرماتے تھے ' اگر کوئی معالمہ سخت یا ناقابل حل آ آ تو قرعہ اندازی میں آخیرنہ کرتے۔ علم ارحام میں اللہ تعالی کے قوانین کی روشنی میں نفتگو فرماتے تھے۔ وہ اپنے وقت کے باتوقیرامام تھے۔

وہ وارالحرب اور وارالسلام کی حدیں متعین کرنے میں نمایت دیات ہے کام لیت ما صیام میں زوال عذر میں برے مخاط تھے۔ عورتوں کے قتل کرنے حتی کہ ان پر حدود نافذ کرنے میں برا آبال فرماتے تھے۔ تابالغ بچوں کو نماز کی اقتداء میں رکھتے تھے۔ قربانی کے جانوروں کو زیادہ ہے زیادہ قربان کرتے تھے۔ ویمات اور شہروں کے معاملات کو ان کے حالات کی روشنی میں حل فرماتے۔ جادوگروں اور کاہنوں کو سزا دیے میں آخر نہ کرتے۔ صوفیائے خام سے دور رہتے۔ بجر و نیاز کرنے والے اہل علم کی قربت حاصل کرتے تھے۔ غنا و ساع کی محافل سے دور رہتے تھے۔ عبادت گذار اور متقی لوگوں سے دوسی رکھتے تھے۔ ابو و لحب کی محافل سے دور رہتے۔ شطرنج اور دوسری مجلسی کھیاوں کے عادی لوگوں کی شہادت قبول نہ کرتے تھے۔ بلاعذر روزہ نہ رکھنے والوں کو سزا دلواتے۔ اعتقادی معاملات میں شہد سے بالاتر رہتے تھے۔ بلاعذر روزہ نہ رکھنے والوں کو سزا دلواتے۔ اعتقادی معاملات میں شک و شبہ سے بالاتر رہتے تھے۔

وشمن کے لیئے شدت اور سختی کرتے۔ بری تدبیر کرنے والوں سے نمایت سختی سے بیٹیڈ۔ باغی لوگوں سے قبال و جدال میں دیر نہ کرتے تھے۔ زمین میں فساد کرنے والوں کا کوئی کحاظ نہ کرتے تھے۔ صدقات کی اوائیگی میں پہل کرتے۔ فقرا اور مساکین کو سب سے پہلے صدقہ دیتے تھے۔ سفر کے فاصلوں کو طے کرنے میں جلدی کرتے۔ عورتوں کی عدت کے معاملہ میں نمایت احتیاط فرماتے۔ مكتبه

فقیراور خی کے درمیان فرق رکھتے تھے۔ صغیرہ و کبیرہ گناہ میں فرق فرماتے۔ پینا اور نابینا کے حالات کو سائے رکھ کر فیصلے کرتے۔ چوروں کے ہاتھ کا شخے میں فوری عمل کرتے۔ مسلمانوں کو بیت المال میں مائے کو کرنے کی ترغیب دیتے۔ معدور اور تندرست کے فرق کو سائے رکھتے۔ ولدا اللہ اور ولدا کمفرور میں فرق رکھتے۔ جہت شرعی قائم کرنے میں مضبوط' کی دو سرے کی ملکیت سے فائدہ اللہ اللہ فرور میں فرق رکھتے۔ جہت شرعی قائم کرنے میں مضبوط' کی دو سرے کی ملکیت سے فائدہ اللہ اللہ نے اجتاب کرتے تھے۔ نیج سلم میں جمالت کی دو ایات کو علیحدہ کرتے تھے۔ فدیہ و قضاء میں بھر اقوال پر عمل کرتے تھے۔ نیج سلم میں جمالت کی روایات کو علیحدہ کرتے ویرت کو بلائحرم سفر کی احتیات کو سائے رکھتے۔ عورت کو بلائحرم سفر کی احتیات نہ دیتے۔ آپ خاندانوں کی عظمت بر قرار رکھنے کے لیئے ہاشمی اور ابو مطلبی کے خاندانوں کے درمیان فرق رکھتے تھے۔ حقوق اللہ اور حقوق العباد کو بردی احتیاط سے سرانجام دیتے تھے۔ زندہ اور درمیان فرق رکھتے۔

تراوی کو سختی سے اوا کرتے اور کراتے۔ پیدا شدہ نیچ اور جنبین کے ممائل کو نمایت اصلاط سے حل فرماتے تھے۔ طلاق بدعۃ اور طلاق سئیہ کے دوران عورتوں کو نفقہ دلانے میں زور دستے۔ وولت مندوں کو صدقہ نہ دینے پر ہدایت فرماتے۔ زندیقوں و سزا دلانے میں کو آئی نہ کرتے تھے۔ اعتکاف کے دوران تقویٰ اور احتیاط کو سامنے رکھتے۔ ہمایوں کے حقوق کا خیال رکھتے۔ کنروں اور ظلاموں کے حقوق کو سختی ہے نافذ فرماتے۔ وصیت میں عجیب تر اقوال پر عمل فرماتے۔ مسلہ عرب میں احسن تاویل پر عمل کرتے۔ می و شرا میں جمال سود کا احتمال ہوتا اس سے دور رہتے۔ ضعفوں پر میں احسن تاویل پر عمل کرتے۔ تھے۔ اقارب کی وراثت میں بڑی سمجھ داری سے فیصلے میں احمد میں بڑی سمجھ داری سے فیصلے کرتے اور مساکین پر لطف کرم فرماتے تھے۔ اقارب کی وراثت میں بڑی سمجھ داری سے فیصلے کر تا تھے۔

ہم نے حضرت الم ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے معمولات اور اوصاف بیان کرنے ہیں کسی فتم کا مبلغہ نہیں کیا اور نہ ہی ہمیں دو سرے ائمہ کرام سے برتری کا اظہار مقصود ہے۔ تمام آئمہ اسلام اپنے اپنے وائرہ افقیار میں نمایت ہی برگزیدہ تھے اور شریعت کے احکام کے نفاذ میں درست فیصلے کیا کرتے تھے 'گر ہم امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی ترجیحات کو بیان کر رہے ہیں۔ اگر علم کو ایک مخصیت میں مرکوز کر لیا جائے تو ہم امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو ایک مثال محفصیت قرار دیں گے اور ہم واضح کریں گے کہ امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کا فدہب تمام ائمہ

كرام سے فضيلت ركھتا ہے۔ وہ ايك روشنى كا ميتار ب وہ جر آ كھ كو نظر آنے والا ب جس طرح الكيول مين الكوشا نمايال ب اس طرح آب كافدهب تمام ائمه كے فداهب مين نمايال ب- وه زبان كو نوک کی طرح اور ول کو گراہیوں کی طرح نمایاں ہے۔ جس طرح دائیں ہاتھ کو ہائیں پر فوقیت ہے اسی طرح امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے زہب کو دوسرے زاہب پر فوقیت ہے۔ وہ الفاظ میں معانی بیان کرتے جاتے ہیں اور ان میں کوئی ابرام نہیں رہتا۔ ہم تمام دوسرے نداہب اور اہل علم کو آپ کے غرجب کا طفیلی تصور کرتے ہیں۔

آپ علمی معانی کو نمایت عمرگ سے لوگوں کی راہنمائی کے لیئے بیان فرماتے ہیں۔ ہم نے جس اندازے حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے معمولات کو بیان کیا ہے ہر صاحب علم و ورع کے لیئے لازم ہے کہ ان پر غور کرے اور تسلیم کرے۔ میں نے جو چھ بیان کیا وہ سچائی اور حقیقت پر مبنی ہے۔ اس میں بے جاغور یا بلاوجہ تعریف نہیں بلکہ حقائق کا مرقع ہے۔ ہرصاحب علم پر دوسرا صاحب علم موجود ہوتا ہے مگر انصاف کے نقاضے بورے کرنے والوں کو چاھیے کہ نمایت غور سے فیصلہ کرے۔ میں نے خالصتا" امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے علم پر روشنی ڈالی ہے اور جو وبصيرت كاكام بكه اس معيار كوسامن ركيس-

امام ابوحنیف رضی الله تعالی عند کے بعد کئ اتمہ اسلام آئے ممر ہم امام ابوحنیف رضی الله تعالى عنه كى ذات كو " مقدام الائمه " قرار ديت بين- وه حبر بين وه معم بين وه عظيم الثان بين وه ربانى العلم بين وه معدن الفهم بين وه ووحته العلم بين وه فقه كا اصل اور خاصه بين وه امام الائمه ہیں' وہ سراج الامت ہیں' علم دین کی تدوین و تشریح میں صف اول میں کھڑے ہیں۔ آپ نے علم شریعت کو سب سے زیادہ پھیلایا' اسے محفوظ و مضبوط کیا۔ پھر اللہ تعالیٰ نے آپ کو اپن تائید و توفیق ے نوازا' ان کے ذریعہ حضور صلی اللہ علیہ والہ وسلم کی ساری امت کی راہنمائی فرمائی۔ اللہ تعالیٰ نے آپ کو ایا جامع کمانات بنایا کہ آپ کے بعد آپ کا ہم پاید کوئی پیدا نہیں ہوا۔ آپ کے معاصرین میں بھی کوئی دوسرا آپ کا ہم پایہ نہیں تھا' اگرچہ سے لوگ علم و فضل میں میکائے روزگار تھے اور بے مثل تھے گر حفرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے آفتاب علم و فضل کے سامنے وہ ستارے

امام اعظم ۲۸۸ مکتبه نبویه

2

# الم ابوصیفہ نصیالتہ کے تلافہ یر ایک نظر

حضرت المم ابوصنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے شاگردوں کی تعداد ہزاروں سے تجاوز کرتی ہے

مرجم يمال چند سرير آورده روزگار تلاغه كا ذكر كرتے ہيں۔

- (۱) امام ابوبوسف يعقوب بن ابراجيم الانصاري رحمته الله عليه
- (٢) حضرت المم محمد بن الحن الشياني عافيه ( ذوالفهم والبيان والفقه وعلم اللسان)
  - (٣) امام زفر بن النذيل حميمي راينيه (عالم الباهروالعلم الزاهر فقيه الماهر)
  - (٣) المام حسن بن زياد اللولوئي ماطيته (بيدار معز النهيم و فقيه "صاحب ورع و تقوي)
  - (٥) المام وكيع بن الجراح مطير (فقيه 'بصير' صاحب علم التفسير مخير في الدين)
- (٦) عبدالله بن المبارك المروزى ملطيه (آب زابد ابن زابد والكلام فقيه ذواللسان قائم على السنن النبويه)
  - (٤) بشربن غميات المريسي ميطية ( نقيه اعظم ' ماهر علم الكلام )\_
    - (٨) عاينه بن يزيد الادوى رحمته الله عليه
      - (٩) حضرت داود طائي رحمته الله عليه

ہم نے ان چند جلیل العلم و القدر شاگردوں کا ذکر کیا ہے یہ اپنے زمانے میں شریعت کے جمع کی آنکھ تھے اور دنیائے اسلام میں نمایت ارفع اور اعلیٰ مقام پر فائز تھے۔ وہ ذوقهم و بصیرت اور ارباب فقہ و علم الکلام تھے۔ وہ علوم حدیث اور سیرت میں کمال رکھتے تھے۔ وہ قرآن کی تفیر کو نمایت قابلیت سے بیان فرمایا کرتے تھے۔ وہ علوم نحو و لغت میں ماہر تھے۔ وہ معدن الفقہ والعلم تھے۔ وہ قادر الکلام تھے اور علوم شریعت کے باکمال ائمہ تھے۔

#### أيك اعلان

آج ونیائے علم و فضل میں کوئی ایبا امام نمیں رے جس کے شاگردوں میں ایسے لوگ ملتے

ہوں جس طرح امام ابوحنیفہ رایلی کے شاگرد تھے۔ ہم دعویٰ کرتے ہیں کہ ان ائمہ کے مقابلہ میں کسی فہمب میں الیک بلند پایہ مخصیتیں نہیں ملتیں۔ ہم یمال مشہور شاعر فردق کا ایک شعر نقل کرتے ہیں جو اس نے جریر کے متعلق کما تھا۔

> اولئيكاصحابي فجئي بمثلهم انا جمعتنا ياجرير المجامع

(ترجمہ) یہ ہمارے اصحاب ہیں ان کی مثل کوئی دو سرا لاؤ اے جریر! جب وہ مجمع ہوتا ہے تو ان کے مثال دو سرا نہیں ماتا)۔

# امام ابوحنیفه نفتی النایک کی مجلس شوری

حضرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے جب اپنی فدجب کی بنیاد رکھی تو آپ کے بیہ جلیل القدر ساتھی آپ کی مجلس شور کی کے اراکین تھے۔ آپ ان کے مضورے سے مسئلہ کو طے فرماتے تھے۔ ان سے مضورہ لیت ان کی تائید حاصل کرتے تھے۔ یہ تمام حضرات احکام شریعت کی اشاعت میں اجتماد کرتے اور امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی تائید کرتے تھے۔ یہ لوگ تمام عالم اسلام کی بمتری کے لیے کام کرتے رہے۔ امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا معمول تھا کہ کوئی اجتمادی اسلام کی بمتری کے لیے کام کرتے رہے۔ امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا معمول تھا کہ کوئی اجتمادی مسئلہ طے کرتے تو ان حضرات سے مشورہ ضرور لیتے تھے۔ یہ حضرات جو اعتراض اٹھاتے آپ اس پر اپنی رائے دیے اور جب تک یہ تمام اصحاب متفق نہ ہو جاتے آپ اس مسئلہ کا فیصلہ نہ کرتے تھے۔

حفرت الم ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی وفات کے بعد آپ کے شاگرہ الم ابو یوسف رحمتہ اللہ علیہ نے بھی ہی طریق کار اپنایا' ہی وجہ ہے کہ ہم اس اصول مشاورت کو دو سرے نداہب سے اعلیٰ اور برتر قرار ویتے ہیں۔ الم ابو یوسف رحمتہ اللہ علیہ نے فقہ کے اصول مرتب کیئے' جب یہ فرجب اصولی طور پر قرآن و احادیث کی بنیادوں پر اجتمادی اور شورائی انداز سے استوار ہوا تو اسے تمام فرجب اس میں حقانیت ہے' اصول پر سی ہو اور ول و دماغ اس کے نظریات کو قبول فراجب پر فوقیت ملی۔ اس میں حقانیت ہے' اصول پر سی ہو اور ول و دماغ اس کے نظریات کو قبول کرتے ہیں۔ اس طرح میہ طریقہ ند ہب حفی مستقل اصولوں پر کام کرتا رہا اور عالم اسلام میں آپ کی مقبولیت اور اہیت بردھتی گئی۔

حضرت امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کو اپنے طریق کار واضح کرنے میں اللہ تعالیٰ کی توفیق شامل حال رہی۔ اس میں مختلف اقوال ہی نہیں رکھے گئے بلکہ یہ متفقہ اقوال پر مرتب ہوا اور ہر مسئلہ پر ایک اصول مرتب کیا گیا تاکہ لوگوں کو آسانی بھی ہو اور صبح راہنمائی بھی مل سکے۔ اس میں مختلف وجوہات ، مختلف اختلافات اور مختلف اقوال کو نہیں رکھا گیا بلکہ اس میں صواب ہی صواب ہے۔ ہر مسئلہ کا قطعی جواب ہے جو "خیرالقرون قرنی " میں مرتب ہوا ہے۔ یہ حضور صلی الللہ علیہ وآلہ وسلم کے قریب العمد نبوی زمانہ کی یادگار ہے جس میں کئی جلیل القدر صحابہ کرام کے اقوال اور اکثر تابعین کے علمی افکار ہیں۔ جول جول زمانہ اصحاب نبوی سے دور ہو تا گیا اس میں کئی روایات اور اقوال غیر محتبر آتے گئے، انسان گوائی کی طلب سے پہلے گوائی دینے لگا۔ قسم کی ضرورت سے پہلے اقوال غیر محتبر آتے گئے، انسان گوائی کی طلب سے پہلے گوائی دینے لگا۔ قسم کی ضرورت سے پہلے قسمیں دینے لگا۔ اس طرح انسانی خواہشات کو ترجیح دینے لگا اور دین کو آہستہ آہستہ ثانوی حیثیت ملئے قسمیں دینے لگا۔ اس طرح انسانی خواہشات کو ترجیح دینے لگا اور دین کو آہستہ آہستہ ثانوی حیثیت ملئے گئی۔

حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم نے ایک حدیث میں فرمایا ہے کہ شریعت صداقت اور عدالت میرے زمانے میں معظم ہے۔ اس کے بعد دو سرا زمانہ آئے گا' پھر تیسرا زمانہ آئے گا' پھر تیسرا زمانہ آئے گا' پھر تیسرا زمانہ آئے گا' پھر پیرا زمانہ آئے گا' پھر تیسرا زمانہ آئے گا' پھر بھوٹ چوٹ اس کے بعد لوگوں میں صداقت کی بجائے گذب آنے گئے گا اور لوگ کھلے بندوں جھوٹ بولنے لگیں گے۔ صدق کی کی ہو جائے گی۔ یکشر فیبھم السمن" ان میں موٹلپا زیادہ ہو جائے گا' یعنی انسان ونیا کے کاروبار کو دین پر ترجیح ویتے گئے گا۔ اس کے اندر دنیا کی دولت جمع کرنے کی خواہش بردھ جائے گی۔ وہ ساری دنیا کو اپنی داڑھوں کے نیچ دبانے کی کوشش کرے گا۔ وہ جائوروں کی طرح اپنا پیٹ بھرنے اور اپنی ذات کے متعلق سب پچھ سمیٹنے کی کوشش کرے گا۔ ول کزور ہو جائیں گی اور روح مرتی جائے گی۔ جسم موٹے ہو جائیں گے۔

یی مقام ہے جب حفرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عند نے فرمایا تھا کہ جب تہیں حاجات دنیا مجبور کریں تو ان سے کنارہ کش ہو جاؤ' انہیں پورا نہ کرو' یمال تک کہ تہماری خواہشیں خور بخود وم توڑ دیں۔ زیادہ کھانے سے عقل زائل ہو جاتی ہے' حکمت تو خالی پیٹ بی پرورش پاتی ہے۔ ہم اس موضوع پر باب چوبیں (۲۳) میں تفصیل سے ذکر کر آئے ہیں' چنانچہ وہ قرن (زمانہ) جس میں نبی کریم صاحب کوڑ و تسنیم صلی اللہ علیہ والہ وسلم موجود تھے عدالت کی گوائی کچی ہوتی

تھی۔ آپ کے بعد کے ادوار میں اس گواہی کی صدافت میں کی آئی گئی۔ حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم کے زمانہ کے لوگ کھاتے ضرور سے گراتنا کھاتے کہ جسمانی قوت ہر قرار رہ سکے' اس سے زیادہ کھانا حیوانات کے لیئے تھا۔ یہ کھانا اور جسمانی قوت و بحال رکھنا بھی صرف عبادت اللی کے لیئے ہو تا' چنانچہ ہم دیکھتے ہیں کہ امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا فرجب کچی گواہی اور عدل و انصاف پر قائم ہے۔ آپ نے صحابہ کرام کا زمانہ دیکھا تھا' تابعین کے زمانہ میں رہے تھے' تی تابعین کو ترتبت دی۔ آپ نے صحابہ کرام کا زمانہ دیکھا تھا' تابعین کے زمانہ میں مضعل راہ بنایا' صحابہ کرام سے ہراہ راست احادیث سنیں تھیں۔ قرن طانی کے آخر اور قرن طالث کے ابتدائی ایام کو دیکھا تھا' کھر آپ اسی زمانہ میں فوت ہوئے۔ آپ نے قرن طانی میں ساری زندگی گذاری' اسی میں تعلیم حاصل کی' اسی میں فادی جاری کے' آپ اندازہ لگا ئیں ایسا مبارک زمانہ کی دو سرے امام کو کب ملا ہے۔

# معاندین امام ابوحنیف دین استان کرارش

ہم امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے معرضین سے سوال کرتے ہیں کہ آپ لوگ امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے مذہب کو اولیت نہیں دیے ' اعلیٰ و افضل نہیں مانے ' آخر کیوں ؟ آپ نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کے جلیل قدر صحابہ کا مشاہدہ کیا' یہ قرون اولیٰ کا ایک حصہ ہے۔ قرون افانی کا شباب ہے ' فقہ السلامی کی بنیاد رکھی جارہی ہے ' ویانت ہے ' عدالت ہے ' مراسی ہے اور جس تر تیب ہے ٹی کریم 'صلیٰ اللہ علیہ وآلہ وسلم نے زمانوں کی تر تیب و تقسیم فرمائی متنی اس میں سے آپ کو وافر حصہ ملا تھا۔

اس زمانہ کی فضیلت مختاج بیان نہیں۔ قرآن پاک اور احادیث گواہی دیتے ہیں اولم بروا انا مافی الارض تنقصها من اطرافها ہے مغرین اس آیت کی تغیر فرماتے ہوئے لکھتے ہیں کہ اس سے مراد علماء کرام کی موت ہے ' برگزیدہ لوگوں کی رحلت ہے۔ اس لیئے حضرت امام اعظم برافید نے فرمایا کہ اسلام کی اصل عدالت ہے ' اس پر جب غیر مصدقہ انداز چھا جائے گا تو انصاف میں نقص آجائے گا۔ آپ نے یہ اس لیئے فرمایا کہ آپ صدق و عدل کے زمانہ میں پیدا ہوئے' اس زمانہ میں نشو و نما پائی' امام ابولوسف برافیجہ اور امام محمد برافیجہ فرمایا کرتے تھے کہ قاضی اس وقت تک گواہی قبول نہ نشو و نما پائی' امام ابولوسف برافیجہ اور امام محمد برافیجہ فرمایا کرتے تھے کہ قاضی اس وقت تک گواہی قبول نہ

کرے جب تک اسے یقین نہ ہو جائے کہ گواہ عادل اور صادق ہے۔ اگر مدعی گواہ کی دیائت پر اعتراض نہ بھی کرے پھر بھی قاضی کو گوائی لیتے دفت گواہ کی صدافت کو پیش نظر رکھنا چاھیئے۔ ہمارے دور میں کذب اور خیائت کا دور دور رہا ہے۔ ہم فتویٰ دیتے ہیں گرگوائی کا خیال نہیں کرتے ' میں وجہ ہے کہ امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا زمانہ '' خیرالقرون '' میں سے ہا در اس کی فضیلت دوسرے المان غداہب سے ہر حالت میں زیادہ ہے۔

وہ زمانہ عدالت اور دیانت کا زمانہ تھا' وہ اس دور کا واحد امام تھا ہے آری آمام ابوضیفہ رض اللہ تعالیٰ عنہ کے نام سے یاد کرتی ہے۔ آپ نے اس دور کے صدق و صفا کے سامنے جو فیصلے کیے' جو فتوے دیے وہ اہمیت کے حامل ہیں اور ہرصاحب علم مخض مانتا ہے کہ اللہ تعالیٰ نے اپنی کی شریعت کی خود حفاظت کرتی ہے انا نحن نزلنا الذکر وانا له' لحافظون ﴿ یہ ذکر صرف قرآن پاک ہی نمیں اللہ کا قانون اور نبی پاک صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم کی شریعت بھی ہے جو اللہ کی حفاظت میں رہیں گے۔

## شربعت کی تدوین میں اولیت

حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ پہلے امام ہیں جنہوں نے شریعت کی تدوین فرمائی تھی۔ آپ سے پہلے روایات موجود تھیں' احادیث موجود تھیں گر تدوین شریعت نہ ہوئی تھی۔ وہ اصول مرتب نہیں ہوئے تھے' وہ قاعدے وضع نہیں ہوئے تھے جس سے شریعت سامنے آئے۔

صحابہ کرام رضی اللہ تعالیٰ عنم اور اکابر تابعین کو جہاد و اسفار سے فرصت نہ مل سکی کہ وہ تدوین شریعت کی طرف توجہ دیتے ، وہ شریعت کے قوانین کو مرتب نہ کرسکے ، وہ کتابیں نہ لکھ سکے ، وہ قرآن پاک و اعادیث کی روشنی میں اجتمادی نتائج کو ترتیب نہ دے سکے ، وہ قوت حافظ پر اعتماد رکھتے ہو اور اپنے مشاہدہ اور ساعت پر فیصلے کیا کرتے تھے۔ ان کے دل اور دماغ علوم کے صندوق تھے۔ امام ابو حذیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ شریعت لائے تو اسلامی سلطنت مظمم بنیادوں پر قائم ہو چکی تھی۔ اسلامی محاشرہ ترتیب دیا جارہا تھا، صحابہ کرام کی رحلت اور اہل علم و فضل کا مختلف ممالک میں پھیل جائے سے علم دین بھر رہا تھا۔ آپ نے بیہ خطرہ محسوس کیا کہ آگر میں صورتحال رہی اور کوئی کام نہ جائے سے علم دین بھر رہا تھا۔ آپ نے بیہ خطرہ محسوس کیا کہ آگر میں صورتحال رہی اور کوئی کام نہ

ہوا تو مستقبل میں آنے والے لوگ اپنی مرضی کی شریعت بناتے جائیں گے، حضور صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم نے فرملیا تھا کہ لوگوں نے علم نہیں چینا جائے گا بلکہ علماء کرام اور الل علم کی موت سے ختم ہو جائے گا۔

امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے شریعت کو مرتب کرنے کا آغاز کیا۔ سب سے پہلے طمارت کے ممائل کو سامنے رکھا' پھر نماز کے ممائل کو مرتب فربایا' پھر عبادت کے مختلف طریقوں کو ترتیب دیا' انسانی معاملات کو مرتب کیا' وصایا اور وراثت کو ترتیب دی اور ان کو آخر میں رکھا گیا کیونکہ یہ انسانی زندگی کے آخری حصے کے ممائل ہیں۔ حضرت کی ترتیب اور تدوین شریعت کتی شاندار ہے' یہ کام وہی کر سکتا ہے جے شریعت کے تمام علوم و فنون پر ماہرانہ وسترس ہو اور یہ وہی شخص کر سکتا ہے جو شریعت کے احکام میں نمایت بصیرت اور ذہانت کے ساتھ معالمہ کرنے کی اہلیت رکھتا ہو۔ آپ کے بعد میں آنے والے ائمہ نے آپ کی ان بنیادوں کو بلند کیا' آپ کے ممائل کو بنیاد بنا کر اجتماد کیا اور شری فیصلے کیئے۔ آج آگر غور کیا جائے تو تمام نماہب حضرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی ترتیب پر تیار کی گئیں ہیں۔ بی وجہ ہے کہ امام شافعی مائٹے جیسے امام فرمایا کرتے میں اللہ تعالی عنہ کی ترتیب پر تیار کی گئیں ہیں۔ بی وجہ ہے کہ امام شافعی مائٹے جیسے امام فرمایا کرتے سے کہ تمام ائمہ کرام امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی ترتیب پر تیار کی گئیں ہیں۔ بی وجہ ہے کہ امام شافعی مائٹے جیسے امام فرمایا کرتے سے کہ تمام ائمہ کرام امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کا عمال ہیں۔

ام جری عافی کے سامنے ایک فخص الم ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا گلہ کر رہا تھا' آپ نے فرمایا عزیز من السے چھوڑو الم ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے پاس علوم شرایعت کے تین جھے ہیں اور دوسرے ائمہ کے پاس صرف ایک حصہ ہے۔ اس نے پوچھا کیے؟ آپ نے فرمایا علم سوال و جواب کا دوسرا نام ہے اور اس سوال و جواب سے علم کی اشاعت اور تدریس ہوتی ہے۔ اس فن میں سب سے زیادہ کام امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے کیا ہے اور جزاروں اہل علم کے سوالات کے جوابات دیتے ہیں۔ یہ آدھا علم ہے' اب حضرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے ایسے سوالات کے جوابات بھی دیتے ہیں۔ یہ آدھا علم ہے' اب حضرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے ایسے سوالات کے جوابات بھی دیتے ہیں جن میں سے نصف مخطی تھے۔ اس طرح ثواب کو خطا کے مقابلہ میں دیکھا جائے تو مزید علم سامنے آتا ہے۔ اس طرح ابیض سوالات پر بعض علماء کرام نے اختلاف کیا گر دیکھا جائے تو مزید علم سامنے آتا ہے۔ اس طرح ابیض سوالات پر بعض علماء کرام نے اختلاف کیا گر بعض ایسے بعض نے اتفاق کیا۔ اس طرح چوتھائی علم ایسا تھا جس سے اہل علم مطمئن نہ ہوئے گر بعض ایسے بعض نے اتفاق کیا۔ اس طرح چوتھائی علم ایسا تھا جس سے اہل علم مطمئن نہ ہوئے گر بعض ایسے بعض نے اتفاق کیا۔ اس طرح چوتھائی علم ایسا تھا جس سے اہل علم مطمئن نہ ہوئے گر بعض ایسے بعض نے اتفاق کیا۔ اس طرح چوتھائی علم ایسا تھا جس سے اہل علم مطمئن نہ ہوئے گر بعض ایسے بعض نے اتفاق کیا۔ اس طرح چوتھائی علم ایسا تھا جس سے اہل علم مطمئن نہ ہوئے گر بعض ایسے بعض نے اتفاق کیا۔ اس طرح چوتھائی علم ایسا تھا جس سے اہل علم مطمئن نہ ہوئے گر بعض ایسے بعض ایسا تھا جس سے اہل علم مطمئن نہ ہوئے گر بعض ایسے کیا۔

ا مناقب امام اعظم ۲۹۳ مکتبه نبویه

سوالات تھے جن کے جوابات آپ نے رہا پندنہ فرمائے حالانکہ آپ کو جوابات آتے تھے۔

حضور في كريم صلى الله عليه وآله وسلم نے فرايا ميرى شريعت كى حفاظت كا وعده الله تعالى عنه نے فرايا ہے۔ شريعت كى سب سے پہلى تدوين امام ابوضيفه رضى الله تعالى عنه نے كى تقی- اس طرح الله تعالى نے امام ابوضيفه رضى الله تعالى عنه كے علم كو اپنى حفاظت ميں ليا ہے۔ امام ابوضيفه رضى الله تعالى عنه نے دير موضوعات سے پہلے "علم ميراث" كے مسائل كو مرتب فرمايا تھا۔ حضور في كريم صلى الله عليه وآله وسلم نے فرمايا كه علم الفرائض اور علم ميراث نصف علم ہے۔ تعلموا الفرائض ماهنا من دينكم وانها نصف العلم "علم الفرائض سيھو يه دين كا نصف علم ہے۔" الفرائض ماهنا من دينكم وانها نصف العلم " علم الفرائض سيھو يه دين كا نصف علم ہے۔" فرمايا ولا ياب كاتب ان يكتب كما علم الله الله الله الله الله عنه والا الله تعالى نے انكار نه كرے گرمايا ولا ياب كاتب ان يكتب كما علم الله الله الله الله الله علم الله الله علم الله الله علم الله

ام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ معلم شریعت ہیں۔ شروط وہ شعبہ علمیہ ہے جو علم کی انتا پر مشمل ہوتا ہے۔ نداہب العلماء اور ان کے مقالت سے آگاہ ہوتا ہی شروط ہے۔ اس لیے کہ علم شروط فقہ کی تمام کتابوں پر حاوی ہے اور اس کے ذریعہ جملہ نداہب میں دخل ہوتا ہے تاکہ کوئی فقی یا حاکم نقص یا فنح کی غلطی نہ کھائے علم شروط وضع ہو چکا ہے۔ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی اس کاوش سے آنے والے قاضی اور منصف غلطی نہیں کریں ہے۔ اگر کوئی یہ کے کہ اس علم شروط کی تدوین امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے پہلے ہو چکی تھی تو ہم اس پر تجب کریں ہے۔ اس علم کی تدوین امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے پہلے ہو چکی تھی تو ہم اس پر تجب کریں ہے۔ اس علم کی تدوین امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے پہلے کی نے نہیں کی تھی۔ کوئی کتاب کوئی کوئی کی تدوین وستاہ ہو تک تعاری مسائے نہیں آئی جس سے معاندین کا یہ دعویٰ ثابت ہو سکے۔ صحابہ تحریری دستاؤیز آج تک ہارے سائے نہیں آئی جس سے معاندین کا یہ دعویٰ ثابت ہو سکے۔ صحابہ کرام میں سے یا تابعین میں سے ایک محض ایسا سائے لائیں جس نے یہ کام کیا ہو۔

یہ پہلی ولیل ہے جو حضرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعال عنہ کو تمام ائمہ سے ممتاز فی العالم کرتی ہے اور آپ کا دین افضل المذاہب ہے۔ آپ نے نہ صرف شروط کو وضح کیا بلکہ نمایت وقیق مسائل کا حل پیش کیا'جن مسائل کا استخراج ناممکن تھا۔ ان مسائل کو بھی آپ نے حل کر دکھایا۔

# جرو مقابلہ کے علوم کی تدوین

الم ابو بحر رازی رحمتہ اللہ علیہ نے "شرح جامع کیر" میں فرمایا ہے کہ میں نے جامع کیر کے بعض مائل ایسے بزرگ کے سامنے پیش کیئے جو ان علوم پر حاوی تھے اور ماہر مانے جاتے تھے۔ وہ مدینة السلام میں رہتے تھے۔ ان کا اسم گرای ابوالحن بن عبدالغفار تھا۔ وہ من کر ونگ رہ گئے اور فرمانے گئے میں نے اس سے پہلے یہ مسائل کمیں نہیں دیکھے اور فرمایا آپ نے نحو پر بجیب و غریب مسائل بیان کیئے ہیں۔ جب انہیں بتایا گیا کہ یہ مسائل حضرت امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ کی تحریدوں سے لیئے گئے ہیں تو آپ فرمانے گئے انہیں تو وہی شخص وضع کر سکتا ہے جو سیبوہ اور خلیل جیسے ائمہ کا ہم پایہ ہو۔ بخدا امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ تو ان علوم پر بھی استاد کامل ہیں۔ مشینی کا یہ شعر آپ پر کتنا موزوں آتا ہے ۔

امام رست للعلم في كنه صدره جبال الجبال الارض في جنبها

( ترجمہ ) جس امام کو اس علم پر ممارت ہے وہ انتمائی مکتہ تک پنچا ہے۔ وہ اتنا برا کوہ علم ہے کہ زمین کے تمام پہاڑ اس کے سامنے مٹی کا ڈھیر د کھائی دیتے ہیں۔

امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا کوئی جمعصر آپ کا مقابلہ نہیں کر سکتا تھا۔ اگر کوئی دعویٰ جھی کرتا ہے تو اپنے بجز کا اظہار کرے گا۔ اس آپ کے سائے شرمسار ہونا پڑے گا۔ ان علوم کے باوجود آپ ریاضت اور عبادت میں بے مثل تھے۔ آپ کثرت عبادت میں اپنی مثل آپ تھے۔ آپ باوجود آپ ریاضت اور عبادت میں وقف کر دیا تھا۔

# شوافع کے تاثرات

امام شافعی رحمتہ اللہ علیہ کے مانے والوں کا دعویٰ ہے کہ امام شافعی ملطحہ کا ذہب ب اعلیٰ اور اقدم ہے۔ ان کی دلیل بیہ ہے کہ امام شافعی ملطحہ قریش الاصل تھے اور حضور ملطح نے فرملیا ہے کہ قریش سے علم حاصل کرو اور انہیں علم سکھاؤ۔ وہ کہتے ہیں کہ آئمہ ذاہب میں صرف فرملیا ہے کہ قریش سے علم حاصل کرو اور انہیں علم سکھاؤ۔ وہ کہتے ہیں کہ آئمہ ذاہب میں صرف

مناقب امام اعظم به ۲۹۲

الم شافعي رافعي ما في الله على الله الله الم شافعي ما من الماليم المام شافعي ما من المام شافعي المام شافعي المام شافعي المام المام شافعي ا

ہم ایے حضرات کو بتا دیا چاہتے ہیں کہ علم کا معیار نام و نب اور قبیلے پر نہیں ہو آ۔ اور نہ ہی علم کسی خانوادے کی میراث ہے۔ علم فقہ کے مقابلہ میں نسب کی کوئی حیثیت نہیں ہے۔ قرآن یاک کے مطالعہ سے معلوم ہو آ ہے کہ لقمان حکیم-ایک حبثی غلام تھے' ان کے ہونٹ موٹے' بدن ساہ اور کزور تھا۔ اس کے باوجود اللہ تعالی نے انہیں ولقد آتینا لقمان الحکمة 🛪 " ہم نے لقمان كو حكمت عطا فرمائي " الحكمة معرف بالام بناكر انسيس تمام علوم حكمت كا مابر قرار ديا- بيد استغراقی اور عمدی وونوں لحاظ سے اعلی و حکمت کے مالک تھے۔ اہل علم نے حکمت کو علم فقہ قرار دیا ہے۔ مفسرین قرآن نے لکھا ہے کہ قرآن مجید میں جہاں جہاں تھم اور حکمت کا لفظ استعال کیا گیا ہے اس سے مراد فقہ ہی ہے۔ یہ حکمت بن آدم کو عطا فرمائی گئی ہے۔ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو خیراعلم و افضل سے نوازا گیا تھا۔ آگر ہم علوم کی تمام صفات کو سامنے رکھیں تو معلوم ہو آ ہے کہ علم بشريعت صحابه كرام سے لے كر آج تك مختلف حضرات ميں رہا ہے اور اس ميں ہزارہا غير قرايش بھي طتے ہیں' ان میں اکثر غلام ہیں' موالی ہیں' تابعین میں سے علم شرح کا ماہر ایک بھی قریش الاصل نہیں۔ عرب کے مختلف قبائل کے لوگ اور آزاد شدہ غلام علم شریعت کے ماہر نظر آتے ہیں۔ قاضی شريح غلام تھے' انسيں حضرت عمر رضي الله تعالى عنه اور حضرت عثان رضي الله تعالى عنه جيسے اصلي اور اعلیٰ قریش نے مند علم پر بیٹھایا تھا۔ اپنے وقت کا قاضی تشکیم کیا۔ حضرت علی رضی اللہ تعالیٰ عنه تو آپ سے شریعت کے مسائل دریافت کرنے سے بھی ایکھاتے نہیں تھے۔

حضرت علی رضی اللہ تعالی عنہ مدینة العلم کے دروازے ہیں۔ آپ صحابہ کرام کے ہوتے ہوئے بھی قاضی شریح (غیر قرایش) کو ترجیح دیا کرتے تھے۔ قاضی شریح کے بغیر صحابہ کا اجماع بھی تنلیم نہ کیا جاتا تھا۔ ملتمہ بن قیس حضرت عبداللہ کے شاگر و تھے 'قرایش نہیں تھے۔ جب عبداللہ ابن عباس رضی اللہ تعالی عنما کو آپ کی وفات کا علم ہوا تو آپ نے فرمایا افسوس آج " ربانی العلم " فوت ہو گیا۔ حضرت عمر بن شرجیل رضی اللہ تعالی عنہ قریشی نہیں تھے ان کا علمی مقام صحابہ کرام نے تنایع کیا ہے۔

الم شافعي رحمته الله عليه أكثر جن اصحاب سے مشورہ ليتے تھے ان مي حفرت عبدالله ابن

عباس عبدالله بن مسعود علقمه اسود اور مسروق رضى الله تعالى عنهم جيے صحابہ تھے۔ آپ كابيہ فتوى الله تعالى عنهم جي صحابہ تھے۔ آپ كابيہ فتوى بھى غير قريش سے افذ كيا كيا ہے كہ جے آئھ كى تكليف ہو وہ ليث كر نماز اواكر سكما ہے۔ يہ وہ لوگ بيں جن بيں جن ميں تھے۔ حضرت عبدالله بن عباس رضى الله تعالى عنها ان سے فتوى ليت تھے باوجود يكہ وہ صاحب علم اور جليل القدر افراد تھے۔

حضرت اسود' حضرت مروق' حضرت ابوعبدالرحن ملمی' شفق بن سلمہ' ابراہیم و شعبی رحمتہ اللہ علیم تمام کے تمام موالی تھے' غلام تھے۔ جب ابراہیم مخفی رحمتہ اللہ علیہ فوت ہوئے تو شعبی نے کما کہ کوفہ کا سب سے براا فقیہ فوت ہوگیا ہے۔ انہیں کما گیا آپ بھی ایسا کہتے ہیں طلاظہ آپ سے براہ فقیہ فوت ہوگیا۔ مطافکہ آپ سے براہ فقیہ فوت ہوگیا۔ میں خوانے گئے واقعی اہل مکہ کا سب برا فقیہ فوت ہوگیا۔ یہ بات درست ہے کہ آج مکہ مرمہ میں مجاہد و عطاجیے فقیہ موجود ہیں مرابراہیم واقعی سب سے برا فقیہ تھا۔ آپ نے مزید کما آج مدید کا سب سے برا فقیہ چلاگیا۔ عرض کی گئی آپ کیا فرما رہے ہیں مدید منورہ میں سالم بن عبداللہ جیے فقیہ موجود ہیں۔ عروہ ہیں' ذہر ہیں' آپ نے فرمایا عالم اسلام کا مدید منورہ میں سالم بن عبداللہ جیے فقیہ موجود ہیں۔ عروہ ہیں' ذہر ہیں' آپ نے فرمایا عالم اسلام کا سب سے براا فقیہ فوت ہوگیا۔ یہ سب لوگ عبداللہ کے شاگرہ ضرور تھے مگر قربی نمیں تھے۔ سب سے براا فقیہ فوت ہوگیا۔ یہ سب لوگ عبداللہ کے شاگرہ ضرور تھے مگر قربی نمیں تھے۔

حضرت علی کرم اللہ وجہ جب کوفہ میں تشریف لائے تو عبداللہ بن مسعود رضی اللہ تھا۔ اس عنہ وفات پا چکے تھے۔ اس وفت ابن مسعود کے تلائمہ مسجد کوفہ میں لوگون کو فقہ پڑھا رہے تھے۔ اس وفت مسجد میں چار سو قلمدان پڑے تھے جن سے یہ حضرات علمی باتیں لکھا کرتے تھے۔ حضرت علی رضی اللہ تعالی عنہ نے فرایا ابن مسعود ان لوگوں کو اس شہر کے چراغ بنا کر چھوڑ گئے ہیں۔ ان الماموں میں جنہیں حضرت علی کرم اللہ وجہ نے کوفہ شہر کا چراغ کما تھا عبیدہ سلمانی معید بن جبیر ، الماموں میں جنہیں حضرت علی کرم اللہ وجہ نے کوفہ شہر کا چراغ کما تھا عبیدہ سلمانی معید بن جبیر ، حسن بھری کین میرین ابوالعالیہ ابوصالح ، باؤام (ام بانی کے غلام ) تمام کے تمام کے غلام تھے۔ حسن بھری طرف مجلید عطاء ، طاوس ، عکرمہ ، نافع اہل مجاز کے جلیل القدر فقیہ تمام غلام تھے۔ کمول ، عرف میاری طرف مجلید ، عطاء ، طاوس ، عکرمہ ، نافع اہل مجاز کے جلیل القدر فقیہ تمام غلام تھے۔ کمول ، عرف میاری بینیا دیا گرشافتی ن مینار ، یکی بن ابل کیرتمام غلام تھے ، ان غلاموں نے فقہ کو آسان کی بلندیوں تک پہنچا دیا گرشافتی نظرات صرف اہل قریش کی فضیلت کو تلاش کر رہے ہیں۔

شافعی حضرات امام شافعی رضی اللہ تعالی عند کی نضیلت اس لیے بھی ثابت کرتے ہیں کہ آپ ابن عم رسول کی اولاد ہیں سے تھے۔ یہ حقیقت ہے کہ امام شافعی رائید کا نب واقعی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ و سلم سے ملتا ہے ، عبر مناف کے بعد دسوال یا نوال جد ہے۔ یہ توکوئی قائدہ مسلم نہیں کہ حضور مٹاہیل سے نب طنے پر افغلیت دی جائے اور ہر نب کی نبت کو ابن عم رسول کہ کر افغنل قرار ویا جائے۔ اگر اس بات کو تسلیم کر لیا جائے تو سارا عرب حضور صلی اللہ علیہ وآلہ و سلم کے ابن عم ہیں۔ ہر ایک کو کسی نہ کسی طرح سے حضور صلی اللہ علیہ وآلہ و سلم سے نبست ہے۔ کسی کا نسب نفرے ملے گاکسی کا ملاکہ سے کسی کا حضرت اساعیل علیہ السلام سے۔

## شافعي حفزات كاليك اور اعتراض

شافعی حضرات کہتے ہیں کہ ائمہ قریش سے ہیں ہوں گئی ہیں۔ پھر "لیام میں الحلاق" بھی قریش ہے۔ کیا آپ قریش ہام کو " امام الصلواة " مراو لیتے ہیں یا " امام فی العلم " کتے ہیں۔ پھر " امام فی الخلافت " بھی قریش ہی سے ہو گا۔ یہ احادیث اجماع صحابہ کے خلاف ہے۔ حدیث شریف کے الفاظ یہ ہیں آپ نے فریلیا یو تکم اقراء کم " تمہاری نماز کا وہ امام ہوگا جو تم ہیں سے اچھا قاری ہو گا۔" اس زمانہ میں قاری سب سے زیاوہ علم والے کو کہتے تھے۔ اس وقت قرآن پاک کا پڑھنا اس کے احکامت کو جاننا قاریوں کا کام تھا۔ حضور مطابع نے فریلیا یقرء کم قریشی " تمہاری امامت قرایش کرائیں" حضور مطابع نے حضرت معاذ رضی اللہ تعالی عنہ کو اہل قبا کا امام مقرر کیا تھا حالانکہ اس وقت وہاں برواب کیا تو سب سے پہلے جے امام مقرر کیا گیا ابی بن کعب تھے۔ ابی بن کعب کو سیدنا عمر فاروق برض اللہ تعالی عنہ نے امام مقرر کیا تھا ، یہ قریش نہیں تھے۔ صحابہ کرام نے اجماعی طور پر نماز تراوش کا برض اللہ تعالی عنہ نے امام مقرر کیا تھا 'یہ قریش نہیں تھے ' حضرت امام شافعی میلئے نے خود و ترول شی تھے۔ اس مقرت کیا جب ابنی بن کعب کو سیدنا عمر فاروق آیت الکری پڑھنے کی روایت اس حدیث سے لی ہے اور فرمایا جب ابنی بن کعب رصنی اللہ تعالی عنہ نے مدینہ میں مناز تراوش کی امامت کرائی تو و ترول میں قنوت پڑھی تھی اور رمضان شریف کے دوروں میں بڑھی گئے۔ یہ تمام لوگ جانے ہیں کہ ابی بن کعب افسار مدینہ تھے ' قریش میں سے نہیں دوروں میں بڑھی گئے۔ یہ تمام لوگ جانے ہیں کہ ابنی بن کعب افسار مدینہ تھے ' قریش میں سے نہیں دوروں میں بڑھی گئے۔ یہ تمام لوگ جانے ہیں کہ ابنی بن کعب افسار مدینہ تھے ' قریش میں سے نہیں دوروں میں بڑھی گئے۔ یہ تمام لوگ جانے ہیں کہ ابنی بن کعب افسار مدینہ تھے ' قریش میں سے نہیں

purportion desputation

\_ë

صحابہ كرام كا اجماع ہے كہ جب جعد كى نماز كى المت كا سوال سائے آئے تو تمام لوگوں من ہو اعلم فقيد ہو اسے المت كے ليئے متخب كيا جائے۔ ايسے عى خليفہ اسلام اور سلطان وقت نہ ہو تو اعلم اور فقيد المامت كرائے گا۔

## شافعيوں كاأيك وہم

زیر بحث حدیث کو آگر تمام شافعی قریش کے لیئے " امامت فی العلم" مراد لیتے ہیں تو سے

ہات بھی کتاب اللہ 'احادیث رسول طابع اور اجماع صحابہ کے خلاف ہے۔ ہم سابقہ صفحات میں لکھ
آئے ہیں کہ حضرت لقمان حکیم علم و حکمت کے امام تھے۔ ان کی افتداء کی جائے وہ حبثی غلام تھے۔

اس لیئے حضرت امام شافعی رضی اللہ تعالی عنہ کی تقدیم و انضلیت الائمة من القریش نہیں بنائی جا

حتی ' یہ سنت رسول کی بھی مخالفت ہے ' آپ نے فرمایا اصحابی کاالنجوم بابھم اقتدیهم اھتدیهم " میرے صحابہ ستاروں کی طرح ہیں ان جی کی افتداء کو ہدایت یاؤ گے۔ " یہ تمام صحابہ کے الشہ ہے ' آپ مصابہ شامل ہیں۔

سیدنا معاذین جبل رضی اللہ تعالی عند کو حضور صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم نے خود یمن کا گورز مقرر فرمایا تھا ، وہ معلم القرآن بھی تھے ' قاضی بھی تھے گر انصار تھے حالانکہ حضور صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم کے سامنے قریثی صحابہ بعی موجود تھے۔ صحابہ نے اجماع کے طور پر اکثر غیرقریش صحابہ (موالی اور آزاد کردہ غلاموں) کو ائمہ تسلیم کیا ہے۔

00000000000000

#### اكتيس وال باب

# امام ابوحنیفہ کے شاگر دامام ابو یوسف کے حالات زندگی

اس باب میں سات فصلیں ہیں۔

ا ... فصل اول ... امام ابوبوسف رحمته الله عليه كے مولد اسب اور اخلاق ير مشمل ہے-

ا ... فصل دوم ... امام ابويوسف رحمته الله عليه كے علوم ير مشمل ب-

سو ... فصل سوم ... وه مسائل جن كاجواب آپ نے بالبدا يته" ديا تھا-

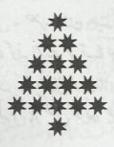
م ... فصل چارم ... آپ کی نصیحوں اور حکیمانہ اقوام پر مشمل ہے۔

۵ ... فصل پنجم ... آپ کے وہ اتوال جو آپ نے وقت کے امراء اور خلفاء کے سامنے بیان

一座型

٢ ... فصل ششم ... آپ ك ان عدالتي فيعلوں پر مشمل ہے جو آگے چل كر اسلامي عدل و انصاف كى بنياد بخ-

2 ... فصل ہفتم ... ان ائمہ اور نضلاء کے مناقب جو آپ کے ہمعصر تھے۔



## 

## حضرت امام يوسف راينيه كامولد اور خانداني نسب

امام ابو جعفر لطحاوی رحمته الله علیه فرماتے ہیں که امام قاضی ابوبوسف ساالھ کو پید ہوئے علام بن محمد نے آپ کا نسب یوں لکھا ہے۔

ابوبوسف یعقوب بن ابراہیم بن حبیب بن حبیسنی بن سعد اخوان النعمان بن سعد بن حبید بن حبید النصاری ۔ آپ کے آبا میں سے سعد خفص وہ ہیں جنہیں غزوہ احد میں حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی خدمت میں لایا گیا تھا آ کہ جنگ میں شریک ہونے کی اجازت مل جائے گر حضور صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے انہیں کم عمر ہونے کی وجہ سے اجازت نہ بخشی اور حبیب بن سعد اخوان النعمان بن سعد وہ مخص ہیں جن کا نسب نامہ یوں ہے۔ سعد بن بحیر بن محاویہ بن تحافہ بن بلیل بن سدوس بن عبدمناف بن ابی اسامہ بن شمہ بن سعد بن عبداللہ بن قدار بن ثعلبه بن محاویہ بن غرو بن بیل المعون بن بحد کی والدہ کا نسب نامہ بھی یوں ہے۔ حضیت بنت مالک بن عمو بن عوف تھا۔

قاضی ابویوسف میلیجہ نے اپنا نسب نامہ اس طرح لکھا ہے کہ ابویوسف یحقوب بن ابراہیم بن حبیب بن صعد بن حنبه البجلی - حضرت ابن حبہ بھی جنگ احد میں کم عمری کی وجہ سے روک دیتے گئے تھے۔ آپ مرینہ سے کوفہ ہجرت کر آئے اور پہیں فوت ہوئے۔ آپ کی نماذ جنازہ حضرت زید بن ارقم رضی اللہ تعالی عنہ نے پڑھائی اور جنازہ میں پانچ تحبیری پڑھی گئیں۔ (یاد رہے کہ زید بن ارقم کو نماز جنازہ کی پانچ تکبریں یاد تھیں گربعد میں یہ تھم منسوخ ہوگیا جس کا آپ کو علم نہ تھا۔)

تعمان بن سعد بھی وہی بزرگ ہیں جو حضرت علی کرم اللہ وجہ سے احادیث روایت کرتے

ہیں۔ آپ احناف کے نزدیک ثقتہ راوی ہیں۔ ای طرح سعد بن بجیرانھار کے مشہور سحابہ میں شار موت ہیں۔ آپ احناف کے والد بجیر زمانہ جالمیت میں کفر پر مرے تھے۔ لیکن وہ خوات بن جبیر عمرو بن عوف کے حلیف تھے اور خوات کی بیوی اسی خاندان سے تھی۔ اسی حنیث سے مطرت سعد پیدا ہوئے تھے۔ آپ امام ابوبوسف مطبع کے خاندان کے پہلے مسلمان تھے اور سعد کو اس وقت نصرت نصیب ہوئی تھی جب انہیں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی دعوت پہنی تو آپ نے اسلام قبون کو کرلیا اور انصار مدینہ میں شامل ہو گئے۔

ابن ماکولا کا بیان ہے کہ سعد ابن جبیر بن معاویہ بجلی کو حضور صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم کی صحبت نصیب ہوئی تھی۔ ان کی والدہ حنبتہ سے معروف تھیں 'یہ مالک کی بیٹی تھیں اس لیئے انہیں سعد بن جنبہ کہا جاتا ہے۔ انہی کی اولاد سے قاضی ابویوسف یعقوب راہیے پیدا ہوئے تھے۔ آپ کا مولد کوفہ کے نواح میں ہے۔

#### حضرت امام ابوبوسف ماینید کو انصاری کیول کماگیا؟

قاضی ابوبوسف مافید فرماتے ہیں کہ ہمارے اجداد کا شار انصار اوس میں ہو تا ہے۔ میرے دادا سعد رضی اللہ تعالیٰ عند جنگ خندق میں شریک تھے۔ آپ کو حضور صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم کی خدمت میں پیش کیا گیا اور جنگ میں جانے کی اجازت طلب کی گئے۔ آپ طابی نے انہیں کم عمر ہونے کی دجہ اجازت نہ دی مگر سر پر دست شفقت پھیرا جس کا نشان ہمارے خاندان میں کئی پشتوں تک رہا۔ امام ابوبوسف رحمتہ اللہ علیہ اپنے سر بر ہاتھ پھیر کریہ نشان دکھایا کرتے تھے۔

#### حضرت امام ابوبوسف راینی کے اساتذہ

احمد بن على الخطيب نے فرمايا كه امام ابويوسف رحمته الله عليه نے ابتدائى زندگى كوفه ميں گذارى اس ليئے انہيں ہم كوفى كہتے ہيں۔ عمدہ قضاۃ پر فائز ہونے كے بعد دارالخلافه بغداد ميں قيام پذير ہوئے۔ انہوں نے كوفه كے علاوہ حضرت امام ابوضيفه رضى الله تعالى عنه سے بغداد ميں اطاحت سنيں اور علوم فقه ميں ممارت حاصل كى۔ امام ابوضيفه رضى الله تعالى عنه كے علاوہ آپ نے اس

کے جلیل القدر آئمہ احادیث سے استفادہ کیا۔ ان میں حضرت ابواسحاق شیبانی سلیمان تیسمی کی بن سعید الانصاری سلیمان الاعمش ہشام بن عودہ عبداللہ بن عمرالعری حفظلہ بن ابی سفیان عطاء بن السائب محمد بن اسحاق بن بیار جاج بن ارطاق حسن بن ویتار کیٹ بن سعد بن ابوب بن عشبہ رحمتہ اللہ علیم اجمعین۔ ان حضرت کے علاوہ بھی آپ نے محد شین عصر کے بہت سے حضرات سے علمی استفادہ کیا مگر آپ نے جس انداز سے حضرت امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے زیر تربیت فقہ علمی استفادہ کیا مگر آپ نے جس انداز سے حضرت امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے زیر تربیت فقہ علم الکلام پر عبور حاصل کیا اس کے اثرات آپ کی ساری زندگی میں نمایاں اور درخشاں رہے۔

#### امام ابوبوسف رافی کے تلاقدہ

امام بوسف رحمته الله عليه كے چند تلافرہ النه وقت ميں بهت مشهور ہوئ ان ميں محمد الحن شيبانی ' بشر بن الوليد الكندی على بن الجعد' المام احمد بن حنبل' يكي بن معين' عمر بن محمد الفاقد' احمد بن مسيع على بن مسلم الفوى عبدوس بن بشر' الحن بن شيب' (رحمته اللعه عليهم الجمعين) يه حضرات ونيائ اسلام كے فقيى خانوادہ كے آخريں حضرات تھے۔

#### امام ابو بوسف رايطيه منصب قضاة پر

امام ابوبوسف رحمتہ اللہ علیہ کو موئ الهادی بن المهدی ( ظیفہ عباسی ) نے سب سے پہلے بغداد میں طلب کر کے عمدہ قضاۃ کے لیئے منتخب کیا۔ ہارون الرشید ظیفہ بے تو آپ کو ونیائے اسلام کا قاضی القضاۃ (چیف جسٹس) مقرر کیا گیا۔ اگرچہ سے منصب احناف کے نزدیک بدعت حنہ کملا آ ہے مگر امام ابوبوسف دیائی نے عدل و انصاف کی جو روایت قائم کی اس پر عالم اسلام فخر کر آ ہے۔

قاضی ابولوسف را لیجہ ایک ثقہ امام اور قاضی کی حیثیت سے زندہ رہے۔ آپ کی ثقابت کو کی بیٹا کی بیٹا معین ' احمد بن طنبل ' علی بن المدینی جیسے جید آئمہ نے تسلیم کیا۔ آپ کے پیچھے ایک بیٹا کوسف آپ کی علمی یادگار رہا۔ انہیں بھی خلیفہ ہارون الرشید نے قاضی القضاہ کے عہدہ پر مقرر کیا تھا گر بعض مورخین لکھتے ہیں کہ قاضی ابولوسف را لیج کے بعد ابوالخیری وہب بن وجد القریش کو قاضی القضاۃ مقرر کیا گیا تھا۔

#### فصل دوم

## قاضى ابو يوسف التكاكى ابتدائي زندگى

قاصنی ابویوسف رحمتہ اللہ علیہ اپنے حالات لکھتے ہوئے فرماتے ہیں کہ میں نے حدیث اور فقہ کے طالب علم کی حیثیت سے کوفہ میں وقت گزارا۔ تنگ وست اور مفلوک الحال گرانے سے تعلق رکھتا تھا۔ میرے والد مجھے ایک ون حفرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عند کی خدمت میں لے كن ميں وہاں يڑھنے لگا۔ ميرے والدنے گھر آكر مجھے كما بينا حضرت امام ابوحنيف رضى الله تعالى عندكى طرف پاؤل کھیلا کرنہ بیٹا کو یہ بے ادبی کا انداز ہے۔ ونیاوی اعتبار سے ان حفرات کی برابری کا تصور بھی دل میں نہ لاتا۔ ہم غریب لوگ ہیں' ان امراء کی خوراک مرغن ہوتی ہے' ہم سو تھی پھیکی روٹی کھا کر گزارا کرتے ہیں' وہ ونیادار ہیں' ہم مفلس ہیں' بہت سے امور میں تم پیچھے رہ جاؤ گے' تہارے لیے اپنے غریب والد کی خدمت کرنا ہی کافی ہے۔ یہ باتیں کمہ کر میرے والد محرم نے مجھے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنه کی مجالس میں جانے سے روک دیا۔ ادھر امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے مجھے غیر عاضریاکر میرے احباب اور واقف کار لوگوں سے بوچھا کہ یعقوب کیوں نہیں آرہا انہوں نے بتایا اے تو اس کے والد نے روک رکھا ہے۔ اوھر میرے ول کی کیفیت سے تھی کہ میں حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی مجالس میں حاضر ہونے کے لیئے بیتاب توبیا رہتا۔ آخر کار میں ایک ون تھ ول مو کر باپ کی پابندیاں توڑ کر آپ کی مجالس میں جا پہنچا۔ آپ نے بری شفقت سے غیرحاضری کی وجہ یو چھی تو میں نے اپنی غربت اور والد کے تھم پر نہ آنے کا بتایا۔ اس ون تو میں آپ کی مجلس میں احادیث سنتا رہا لیکن جب میں گھر جانے لگا تو امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عند نے مجھے بیٹھنے کا اشارہ کیا ، جب تمام لوگ چلے گئے تو آپ نے مجھے ایک تھیلی دی سے درہموں کی مجری ہوئی تھی۔ فرمایا اس سے گزارا کرد پھر اللہ مالک ہے۔ میں نے اسے کھولا تو ایک سو درہم تھے۔ آپ نے

جاتے ہوئے تھم دیا کہ میرے طقہ درس میں آجایا کرو۔ بید درہم ختم ہو گئے تو پھر بندوبست کریں گے۔ چنانچہ اس دن کے بعد میں با قاعدگی سے طقہ درس میں آنے لگا۔

تھوڑے دنوں بعد آپ نے مجھے ایک اور تھیلی دی اس طرح آپ و قا" فوقا" میری الداد فرماتے اور کسی کو علم نہ ہو تا۔ آپ نے مجھے ایک ہور تھیلی دی اس طرح آپ و قا" میری الداد اپنے اور کسی کو علم نہ ہو تا۔ آپ نے مجھے یہ مجھی نہ پوچھا کہ سابقہ روپے کس طرح خرچ کیئے وہ اپنے طور پر محسوس کر لیتے کہ اب سابقہ روپے ختم ہو چکے ہوں گے ادھر میں ان انعامات کو نمایت احتیاط سے خرچ کر آ۔ ایک وقت آیا کہ میرے پاس خاصہ روپیہ جمع ہو گیا اور میں محسوس کرنے لگا کہ میں مالدار اور خوشحال ہو گیا ہوں۔

میں مسلس آپ کے حلقہ درس میں آنا رہا، علمی استفادہ کرنا رہا اور ایک وقت آیا کہ حضرت امام ابو صنیفہ رضی اللہ تحالی عنہ نے مجھے ایک طرف دنیاوی مال سے خوشحال کر دیا اور دوسری طرف علم و فضل میں ممتاز بنا دیا۔ مجھ پر علم کے دروازے کھل گئے، میں اپنے استاد مکرم امام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا شکریہ کن الفاظ میں اوا کروں۔

قاضی امام ابوبوسف یعقوب رحمتہ اللہ علیہ نے ایک اور تحریہ میں بنایا کہ میرے والد ابراہیم بن حبیب کا جب انقال ہوا تو جھے اپی والدہ نے نظر شفقت سے پالا میری والدہ جھے ایک وحوبی کے بال لے گئی اور ملازم رکھ دیا میں وہاں ہے چین رہتا اس نے جھے امام ابوطیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے درس میں لا بھیلیا میری والدہ حلقہ درس میں آئیں اور جھے اٹھا کر دوبارہ وحوبی کے پاس چھوڑ آئیں۔ حضرت امام ابوطیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ میرے شوق اور ترب کو ویکھت کھر والدہ کی تحقی پر نگاہ والتے۔ میری والدہ بار بار حضرت امام کے پاس آئیں اور دھوبی کے پاس سے میرے بھاگ جانے کی شکایت کرتیں۔ ایک دن کہنے لگیس اس نیچ کو آپ کے علادہ کوئی استاد نہیں ملتا اور یہ بیتم بچہ غربت ذدہ ہے میں سوت کات کر اپنے گھر کا خرچہ چلاتی ہوں اور یہ کام پر جانے سے گرا آ ہے میری دل خواہش ہے کہ یہ دھوبی کے پاس رہ کر ہنر سکھے اور برا ہو کر اپنی زندگی آرام سے گذارے کمریہ بچہ میرے قابو میں نہیں آئے۔ حضرت نے فرمایا اسے میرے پاس چھوڑ دو یہ علم پردھے گا برنا ہو کر طوہ میرے تابو میں نہوں میں بواموں کی گریاں ہوں گی اور ایبا طوہ شاید ہی کی کے نصیبوں میں ہو۔

جناب ابوبوسف رحمتہ اللہ فرماتے ہیں کہ میری مال نے حضرت امام ابو حذیفہ رضی اللہ تعالی

عنہ کی بات سنی او ناراض ہو کر اٹھ کھڑی ہوئی اور ضعہ میں کینے گلی او بوڑھے تہمارا دماغ خراب ہو گیا ہوا۔
گیا ہے! سے بیٹیم بچہ اور سے تکما بچہ اس لائق ہے کہ طوہ کھائے گا اور وہ بھی باداموں کی گریاں ملا ہوا۔
بایں ہمہ اللہ تعالی نے مجھ پر فضل کیا امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ نے اپنے دامن شفقت میں لے
بایں ہمہ اللہ تعالی نے مجھ پر فضل کیا امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالی عنہ نے اپنے وامن شفقت میں لے
لیا۔ علم کی دولت سے مالمال کر ویا۔ وزیاوی آسائٹوں سے خوش کر دیا۔ ایک وقت آیا کہ میں اسلامی
سلطنت کا قاضی القضاہ مقرر ہو گیا اور ہارون الرشید کے ساتھ بیٹھ کر اس کے وستر خوان پر کھانا کھا آ۔

ایک دن خلیفہ ہارون الرشید از راہ شفقت میرے گر خود تشرلف لے آئے اور ساتھ ہی نفیس فتم کا حلوہ لائے اور دسترخوان پر رکھ کر فرمانے گئے ابویوسف ایسا حلوہ روز روز تیار نہیں ہو آیا خاص طور پر تممارے لیئے تیار کروایا گیا ہے۔ میں نے دریافت کیا یا امیرالمومنین یہ خاص کھاٹا کیا ہے؟ انہوں نے بتایا یہ ایسا حلوہ ہے جے روغن بادام میں ایک خاص طریقے سے تیار کیا گیا ہے۔ میں من کر باقتیار ہنس پڑا۔ ہارون الرشید کہنے گئے یہ ہننے کا کیا موقعہ ہے؟ میں نے عرض کی بس میں آپ کی عنایات خروانہ پر ہنا ہوں۔ اللہ تعالی آپ کو سلامت باکرامت رکھے۔ ہارون الرشید میرے اس جواب پر مطمئن نہ ہوا اور پھر نمایت لجاجت سے ہننے کی وجہ یو چھی میں نے حصرت امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کا وہ واقعہ سایا تو وہ حیران رہ گیا اور کہنے لگا واقعی علم ایک ایسی دولت ہے جس کا کوئی چیز مظالم منبی کر سکتی۔ یہ ونیاوی نفع بھی دیتا ہے اور بلند منصب پر بھی لا بٹھاتا ہے۔

الله تعالی میرے شفیق استاد امام ابو صنیفہ رضی الله تعالی عند پر بیشار رحمتیں بازل فرمائے۔
وہ جو بات کرتے عقل سے بھربور ہوتی اور الله کے انوار سے درخشاں ہوتی۔ وہ حالات کو صرف سرکی
آنکھ سے نہیں دیکھا کرتے تھے ول کی بصیرت سے دیکھتے تھے۔ کچی بات تو بیہ ہے کہ حضرت امام
ابو صنیفہ رضی الله تعالی عنہ کی قراست کا انداز صرف اس ایک واقعہ سے ہی کیا جاسکتا ہے۔

حضرت قاضی ابوبوسف رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ میں ابن ابی لیلی کے پاس آنا اور چند لمحات آپ کی مجلس میں بیٹھتا مگر میرے ول میں خیال آنا کہ میں امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے پاس بھی جاتا ہوں اور آپ کے مخالف ابن ابی لیلی کے پاس بھی آنا ہوں وہ بھی میری نمایت عزت مرت اللہ تعالی کرتے ان کے ہاں جب کوئی مشکل مسئلہ آنا تو مجھے فرماتے جاؤ یہ مسئلہ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے بوچھ کر مجھے بتاؤ' میں آنا مسئلہ بوچھتا ابن ابی لیلی کو بتانا پھروہ اپنی طرف سے لوگوں کو جواب

ناقب امام اعظم ٥٠٨ ما

دیتے مگر وہ حسد کی وجہ سے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو برے بھلا بھی کتے رہتے۔ اس وجہ سے مجھے ان سے نفرت ہو گئی اور اب میں نے وہاں جانا چھوڑ دیا۔

امام ابوبوسف دولیت نے اس نفرت کی ایک اور وجہ بھی بیان کی ہے کہ بیں ابن ابی کیا کی مجلس میں آیا کرتا تھا ان سے برا تعلق قائم تھا۔ ابن ابی کیا نے اپنی بیٹی کا نکاح کیا تو اس میں شکر بھیری گئی میں بھی دو سرے لوگوں کی طرح جھپٹ کر شکر لے رہا تھا جھے دکھے کر ابن ابی کیا نے کہا اس طرح جھپٹ کر لینا کروہ ہے گر شادی بیاہ کے موقعہ پر جھپٹ کر لینا کروہ ہے گر شادی بیاہ کے موقعہ پر جھپٹ کر لینا کروہ نہیں ہے۔ کہنے گئے آج سے میرے لیئے اس مسئلہ کو تبدیل کر دیجئے۔ موقعہ پر جھپٹ کر لینا کروہ نہیں ہے۔ کہنے گئے آج سے میرے لیئے اس مسئلہ کو تبدیل کر دیجئے۔ بیا جھے خیال آیا کہ کیا مسئلے تبدیل بھی کیئے جا کتے ہیں ؟ ہیں نے امام ابو حفیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے باس سارا واقعہ بیان کیا پھر میں بھی ادھر نہ گیا اور میرے دل میں یہ بات گھرکر گئی کہ یہ ابن ابی لیا بیس سارا واقعہ بیان کیا پھر میں بھی ادھر نہ گیا اور میرے دل میں یہ بات گھرکر گئی کہ یہ ابن ابی لیا بیس سارا واقعہ بیان کیا پھر میں بھی ادھر نہ گیا اور میرے دل میں یہ بات گھرکر گئی کہ یہ ابن ابی لیا بیس سارا واقعہ بیان کیا پھر میں بھی ادھر نہ گیا اور میرے دل میں یہ بات گھرکر گئی کہ یہ ابن ابی لیا بیس سارا واقعہ بیان کیا پھر میں بھی تبدیل کراتے رہتے ہیں۔

قاضی ابو یوسف رو الله فرماتے ہیں کہ میرے والد ایک دن حضرت امام ابو صنیفہ رضی الله تعالی کی خدمت میں حاضر ہوئے اور کنے گئے میرا بیٹا آپ کے پاس آنا جاتا ہے' یہ نہ دن کو گھر رہتا ہے نہ رات کو گھر میں آرام کرتا ہے۔ بس آپ کے اردگر و دوڑتا رہتا ہے۔ میں غریب آدی ہوں' عیال دار ہوں' اب ناتواں ہوں' اے سمجھائے اب یہ ہمارے لیئے پچھ کمائے' ہمارا سمارا ہے' آپ اے ہدایت سیجئے کہ پچھ وقت آپ کے پاس گزارے' پھر کسب معاش کی طرف توجہ دے۔ امام ابو صنیفہ رضی الله تعالی عنہ نے فرمایا اے ابواسحاق اے اپنے حال پر چھوڑ دو' تممارا یہ بچہ ایک دن اس مقام پر ہوگا کہ برے برے دولت مند اس پر رشک کریں گے۔ میرے والد نے ٹھنڈی آہ بھر کر کما ابو حنیفہ رضی الله تعالی عنہ) آپ جیسے شخص کو زیب نہیں دیتا کہ آپ غریب بچوں کو اس طرح کام سے رو کیس اور ایس باتیں کریں اور ہم غریوں کی غربت کا نماق اثرا کیں۔ میں سخت نگ دست ہوں' رو کیں دار ہوں' کوئی ذریعہ معاش نہیں' ہم برباد ہو جا کیں گے۔ گر آپ رشک کی باتیں کرتے ہیں' حضرت امام ابو صنیفہ رضی الله تعالی عنہ نے فرمایا' اچھاتم جاؤ فکر نہ کرد کچھ کرتے ہیں۔

میرے والد چلے گئے ' دو سرے لوگ بھی چلے گئے ' امام اعظم ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے مجھے اپنے پاس بلایا اور کما تم نے مجھے اپنی غربت اور بے سروسلانی کا حال کیوں نہیں جایا۔ میں نے عرض کی حضور مجھے شرم آتی تھی کہ آپ کو اپنا حال بتا آ۔ آپ نے فرمایا آج کے بعد تمہارے سارے گھر کی کفالت میرے ذمہ ہے' اس دن کے بعد آپ لوگوں کی نظروں سے بچا کر اتنا بچھ دے دیے کہ میں عیال داری کے اخراجات سے بری الذمہ ہو گیا۔ میں آپ کی مجالس میں حاضر رہنے لگا' ایک وقت آیا کہ آپ نے مجھے علم و فضل کے اس مقام پر لا کھڑا کیا کہ لوگ واقعی مجھے سے رشک کرتے اور رؤماء بغداد میرے بیچھے بیچھے دوڑتے۔

عبدالحميد الممانى نے فرمايا كہ يعقوب كا والد حضرت امام ابوطنيفہ رضى اللہ تعالى عنہ كى مجلس ملى آ ما اور اپنے بيٹے كو بازو سے پكر اٹھا كر لے جا آگر جو نمى يعقوب كو موقعہ ملكا وہ بھاگ كر پجر امام ابوطنيفہ رضى اللہ تعالى عنہ كى مجلس ميں آميشقا۔ ايك ون يعقوب كا باپ آپ كے پاس آيا اور روت روت كئے لگا كہ ميرا بيٹا يعقوب ميرا نافرمان ہو گيا ہے اور آپ اس كى نافرمانى پر اس كى مدد كر رہ بيں۔ امام ابوطنيفہ رضى اللہ تعالى عنہ نے فرمايا تمهراراكيا مطلب ہے؟ اس نے كما ميں چاہتا ہوں كہ سے پڑھنا چھوڑ وے اور ميرے ساتھ چل كر بازار ميں كوئى محنت مزدورى كرے۔ ميں عيال وار ہوں مخرج پورا نہيں ہو تا مارا پيٹ پالے۔ امام صاحب نے فرمايا آج كے بعد اس كے عيال كى كفات مراے ذمہ ہے۔ اس كے والد نے كما ميں اس بات پر راضى نہيں ہوں۔ آپ نے فرمايا تم اپنے بيٹے مارے ذمہ ہے۔ اس كے والد نے كما ميں اس بات پر راضى نہيں ہوں۔ آپ نے فرمايا تم اپنے بيٹے كو علم حاصل كرنے سے دوك رہے ہو، تم جاؤ ہم تممارى كوئى امداد نہيں كر كے۔ البتہ يعقوب كى تمام ضروتوں كا ہم خيال ركھيں گے۔

امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ فرمایا کرتے تھے کہ ابوبوسف نے میری مجلس میں جس لگن سے بیٹھ کر علم حاصل کیا کوئی دوسرا نہیں کر سکا۔ وہ ہزاروں مشکلات اور رکاوٹوں کے باوجود علم حاصل کرتا رہا۔ اگر داؤد طائی بھی اس لگن سے علم حاصل کریں تو ان سے بھی ہزاروں لوگوں کو فائدہ مل سکتا ہے۔ (یہ وہ زمانہ تھا جب حضرت داؤد طائی بھی آپ سے علم حاصل کر رہے تھے۔)

امام ابوبوسف ریلید کی پہلی ہوی فرماتی ہیں کہ ابتدائی دور میں ہم لوگ بڑے ہی تک دست سے۔ امام ابوبوسف ریلید کی پہلی ہوی فرماتی ہیں کہ ابتدائی دور میں ہم لوگ بڑے ہیں۔ ابوبوسف بھی متصد امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنه کی مجالس کوفہ میں اللہ علم و فضل کا مرجع تھیں۔ ابوبوسف بھی باقاعد گی ہوتے ' ایک دن شک آگر میں حضرت باقاعد گی ہوتے ' ایک دن شک آگر میں حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنه کی مجلس میں خود گئی اور اپنے خاوند کے روبیہ کی شکایت کی۔ آپ نے

مريسته

فرمایا کچھ عرصہ حبر کرد عنقریب وہ وقت آنے والا ہے کہ یہ فقر و فاقہ دور ہو جائے گا اور لوگ تمہارے خاوند پر رشک کیا کریں گے اور اس دن کے بعد حضرت امام ابو حفیفہ رضی اللہ تعالی عنہ میرے خاوند کو کچھ نہ کچھ دے دیتے اور ہماری گذر او قات ہوتی رہتی۔ میرے دیکھتے ہی دیکھتے میرے خاوند کو وہ انعامات اور فتوحات ہونے لگیں کہ لوگ دنگ رہ گئے۔ ایک فخص نے آپ کو بوچھا کہ ان دنوں آپ کا کیا حال ہے کہنے لگے میرے پاس ایک سو فچر اور تین سو گھوڑے ہیں۔ اس زمانہ میں یہ حالت بغداد کے امراء کے ہاں ہوتی تھی۔

الم ابوبوسف رحمته الله عليه خود بيان كرتے بين كه مين بچه تھا ميرى مال مجھے ايك قصار (تیلی) کے پاس کام سکھنے کے لیئے بٹھا دیا' میں روزانہ اس کے پاس جاتا' راستہ میں ایک معجد تھی جمال المم الوحنيف، رضى الله تعالى عنه كا ايك طقه ورس تها ايك ون من وبال بيره كيا مجمع آب كي گفتگونے اتنا محو کیا کہ اٹھنے کی جی نہ چاہا' جو روٹی گھرے لایا تھا وہ سامنے ایک بقال کے پاس رکھ دیتا' فارغ موتا روٹی لے کر کھالیتا۔ اس طرح بورا ہفتہ گذر گیا ایک دن میری والدہ نے کہا بیٹا تہمارا استاد نہ تو تمہیں کچھ سکھا آ ہے اور نہ کچھ ویتا ہے یہ کمہ کر مجھے وہاں سے اٹھایا اور ایک موچی کے پاس بٹھا آئی اور کہنے گلی اے ہر روز مزدوری دیا کرو۔ اس نے کمانی بی یہ بچہ تو ایک ماہ سے معجد میں بیشا رہا، مجھی باہر فکلا بی نہیں اے کیا مزدوری ملے گی۔ میری مال نے مختی سے کما خردار اب تم بھاگ کر كيس ك- ادهر حضرت امام مراجيه نے كئى لوگوں سے ميرے متعلق بوچھا مركمى نے كوئى جواب نہ دیا۔ آخر ایک دن میں خود ہی آپ کی خدمت میں حاضر ہوا' یوچھا کمال رہے ہو؟ میں نے بتایا کہ میری مال نے مجھے مارا اور ایک کام پر بٹھا کر پابٹد کر دیا کہ کمیں نہ جاؤں۔ حضرت امام ویلید نے میری بات من كر مجھے بچاس ورجم دئے اور فرمايا يہ اني والدہ كو دے دينا اور كمنا مجھے اس شخ نے دئے ہیں۔ میں نے مال کو پچاس رویے دیئے تو اس نے پوچھا کمال سے لائے ہو' میں نے بتایا کہ جس مجد میں بیشتا ہوں اس شخ نے دیتے ہیں۔ میری مال نے کما اچھا پھراس کی خدمت میں رہا کرو جو کام کے بغیر مزدوری دے دیتا ہے۔

\*\*\*\*\*\*\*\*\*\*

#### فصل سوم

## امام ابو یوسف شوالات کے جوابات دیتے ہیں

الم ابوبوسف مرافید ایک دن ایک خوبصورت گھوڑے پر سوار جارے تھے۔ آپ کا نوکر آپ کے پیچے پیچے چیچے جارہا تھا۔ کسی نے پوچھا آپ کو خیال نہیں آ تا آپ گھوڑے پر سوار ہیں اور نوکر بیچارہ پیچے دوڑا دوڑا آرہا ہے۔ آپ نے فرمایا کیا تم سے چاہتے ہو کہ میں اپنے نوکر کو کسی کراسے دار کو دے دول اور وہ کرائے دار کے پیچے پیچے دوڑ تا رہے۔

ظیفہ عباسی موئی کا ایک مسئلہ امام ابویوسف رولیجہ کی عدالت میں پیش ہوا۔ بظاہر فیصلہ تو موئی کے جق میں ہوا گر موئی نے بوچھا ابویوسف! آپ میرے مدمقائل کو کس طرح مطمئن کریں گے ؟ آپ نے فرمایا وہ کتا تھا کہ میں آپ سے قتم لول کیونکہ اس کے پاس گواہ ہیں جو گوائی دینے کے لیئے تیار ہیں۔ ظیفہ موئی نے کہا کیا آپ کی ہی رائے ہے کہ میں قتم کھاؤل ؟ آپ نے کہا ہال ! ورنہ آپ کو اپنا باغ مدی کو ویٹا ہو گا۔ ظیفہ موئی نے کہا ابن ابی لیالی کی عدالت نے تو فیصلہ میرے حق میں ویا ہے۔ ابویوسف رولیج نے کہا کہ اگر آپ قتم نہ کھائی، قاضی ابویوسف نے ظیفہ کا باغ مدی کو وے ویا۔ باغ ویٹا پڑے گا۔ فیلے نے کہا کہ اگر آپ قتم نہ کھائی، قاضی ابویوسف نے ظیفہ کا باغ مدی کو وے ویا۔

بشرین الولید فرماتے ہیں کہ میں ایک دن قاضی ابوبوسف دیافید کے پاس بیٹھا تھا وہاں ایک عجیب بات چل نکلی کوگوں نے بشرے کما وہ بات بتا کیں۔ بشر نے کما مجھے قاضی ابوبوسف نے کما میں بستر پر سونے والا تھا کہ کمی نے میرا دروازہ کھکھٹایا میں چادر اوڑھ کر باہر آیا ویکھا کہ دروازے پر ہر ثمد بن یمین کھڑا ہے۔ اس نے کما آپ کو امیرالمومنین (ظیفہ) بلا رہے ہیں۔ میں نے اے کما اے حاتم ! مجھے آپ کا بے حدا احترام ہے گرتم ویکھ رہے ہوکہ میں تہمارے سامنے کس حالت میں کھڑا ہوں اور میں کس طرح خلیفہ کے پاس جا سکتا ہوں 'مجھے سے بھی معلوم ہے کہ خلیفہ نے بیس جا سکتا ہوں 'مجھے سے بھی معلوم ہے کہ خلیفہ نے جھے کتنے

خافب امام اعظم مكتبه ثبويه

اہم کام کے لیے اس وقت باایا ہے۔ اگر تم امیرالمومنین کو ٹال سکتے ہو تو بھتر آکہ میرا معالمہ کل تک معلق رہے اور کوئی بہتر صورت نکل آئے۔ ابوحاتم نے کہا حضور مجھے ضیاع وقتی کے لیے کوئی بہانہ بھائی نہیں دیتا۔ آپ نے پوچھا آپ کس طرح آگئ ابوحاتم نے بتایا مجھے خلیفہ کے خادم خاص نے محم دیا ہے کہ میں ابھی آپ کو خلیفہ کے پاس لے آؤں۔ میں نے کہا اچھا اتنا کرو کہ میں بدن پر پائی بہالوں اور پچھے لباس بدل کر اس پر خوشبو لگا لوں شاید اس میں کوئی بہتری ہو اور کوئی صورت نکل بہالوں اور پچھے لباس بدل کر اس پر خوشبو لگا لوں شاید اس میں کوئی بہتری ہو اور کوئی صورت نکل آئے۔ وہ انتظار کرنے لگا۔

میں اندر گیا عسل کیا بہترین لباس پہنا بہترین خوشبو لگائی ہم دونوں ظیفہ کے محل کے طرف چل ویے۔ ہمیں ایوان کے دروازہ پر ظیفہ کا خادم خاص سرور ملا ابوحاتم نے کہا میں امام ابویوسف کو بلا الیا ہوں۔ میں نے سرور کو کہا تم جھے جانتے ہو میرے منصب کی اہمیت کو سیجھتے ہو بھے اس وقت کیوں بلایا گیا ہے کہا تم جانتے ہو کہ اس وقت امیرالمومنین کو کیا کام آبڑا ہے اس نے کہا جھے معلوم نہیں کہ کیا کام ہے۔ میں نے پوچھا کہ فلیفہ کے پاس اس وقت کون بیشے ہیں۔ خادم نے بنایا عینی بن جعفر میں نے پوچھا کوئی اور اس نے کہا کوئی نہیں اس دونوں بیٹے ہیں۔ خادم نے کہا آپ چلے جائیں دونوں باغ میں قالین پر بیٹے ہوئے ہیں۔ آپ زمین پر پاؤں مارنا وہ پوچھیں گے کہا آپ نے جانمیں دونوں باغ میں قالین پر بیٹے ہوئے ہیں۔ آپ زمین پر پاؤں مارنا وہ پوچھیں گے کون ہے آپ باپنا نام بتا رہنا وہ آپ کو بالیس گے۔ میں نے ایسے بی کیا جب میں قریب پہنچا تو میں کے نے دیکھا کہ وہ قالین پر بیٹا ہے اس کے دائیں جانب عیلی بن جعفر بیٹا تھا۔ میں نے السلام علیم کما تو فیلے کہا تو فیلے میں نہیں بلکہ میرے اہل خانہ کو بھی خت تکلیف سے دوچار کیا گیا ہے۔ وہ وہ رہے ہیں کہ خدا معلوم کیا بات ہے کہ امیرالمومنین نے اس وقت طلب فرمایا ہے۔ خلیفہ نے کہا آپ تشریف خدا معلوم کیا بات ہے کہ امیرالمومنین نے اس دقت طلب فرمایا ہے۔ خلیفہ نے کہا آپ تشریف خدا معلوم کیا بات ہے کہ امیرالمومنین نے اس دقت طلب فرمایا ہے۔ خلیفہ نے کہا آپ تشریف

ظیفہ میری طرف متوجہ ہوا اور فرمایا اے بعقوب! آپ کو معلوم ہے کہ آپ کو اس وقت
کیوں بلایا گیا ہے، میں نے کہا جھے کچھ معلوم نہیں، غلیفہ نے بتایا یہ عیلی بن جعفر ہیں، ان کی ایک
لونڈی ہے، میں نے اسے کہا ہے کہ اسے میرے ہاتھ بچ دو گر اس نے انکار کردیا ہے، میں نے کہا
اچھا اسے میرے لیئے جبہ کردو، اس نے پھر بھی انکار کردیا ہے۔ آپ گواہ رہیں میں اس خوبصورت

لونڈی کے لیے اتا بیتاب ہوں کہ اگر اس نے کوئی جلدی فیصلہ نہ کیا اور اس نے آج یہ لونڈی میرے حوالے نہ کی تو ہیں اے قتل کر دوں گا۔ ہیں نے عینی کو کما لونڈی دے دو کیوں انکار کرتے ہو اور اپنی جان خطرے ہیں ڈالتے ہو۔ اس نے کہا آپ جلدی نہ کریں 'میری بات بھی من لیں ' ہیں نے کہا کیا ہے ؟ اس نے بتایا کہ ہیں نے قشم کھائی ہے کہ نہ تو ہیں اس لونڈی کو بیچوں گا اور نہ بہہ کروں گا اور نہ بہہ کروں گا اور ہیں ایسا کروں گا تو بیری بیوی کو تین طلاقیں۔ ہیں نے ہارون الرشید کی طرف دیکھ کر کہا حضور اب کیا تھم ہے۔ اس نے کہا کہ کیا اس کی ضد کا کوئی علاج نہیں ہے 'کیا آپ کے پاس اس کا کوئی علاج نہیں ہے 'کیا آپ کے پاس اس کا کوئی علاج نہیں ہے 'کیا آپ کے پاس اس کا کوئی نہ اس کی قتم ہے۔ اس نے کہا ہاں! ہیں نے بتایا کہ یہ آدھی لونڈی فروخت کر دے' آدھی بہہ کر دے' اب نہ اس کی قوی کو طلاق ہوگی کیونکہ آدھے کام ہے کھل کام نہیں ہو آلہ عینی بن جعفر نے ذور دے کر پوچھا کیا ایسا ہو سکتا ہے۔ ہیں نے کہا ہاں! آپ کھل لونڈی کو نہ فروخت کر یں اور سو دیتار وصول کر لیے کس نہ جہہ کریں' نہ جہہ کریں' چانچہ عینیٰ بن جعفر نے نصف لونڈی فروخت کر دی اور سو دیتار وصول کر لیے کریں' نہ جہہ کریں' چانچہ عینیٰ بن جعفر نے نصف لونڈی فروخت کر دی اور موریتار وصول کر لیے کہیں' نہ جہہ کریں' چان طلاق ہو تکی طیفہ کے پاس لے آیا اور کہا یہ لونڈی لے لیجئ' آپ کو مہارک ہو۔ آج میں طلاق ہے تکی گیا اور قشم کے کفارے سے بھی تھی گیا۔

ظیفہ نے کہا یعقوب ایک بات رہ گئی ہے' ہیں نے کہا وہ کونی بات' یہ لونڈی ہے اس کا استبراء ضروری ہو تا ہے گر میرے لیئے اس کے بغیر ایک رات بر کرنا بھی گوارا نہیں۔ ہیں اس کی جدائی ایک رات کے لیئے بھی برداشت نہیں کر سکتا۔ ہیں نے کہا امیرالمومنین اب یہ لونڈی آپ کی ملکیت ہے' اسے ابھی آزاد کر دیں اور اس سے نکاح کرلیں کیونکہ آزاد عورت کے لیئے استبراء ضروری نہیں۔ اس نے لونڈی کو آزاد کر دیا' پھر پوچھا اب اس کے ساتھ میرا نکاح کون پڑھائے گا؟ بین نے کہا آپ اپنے وہ ملازمین سرور اور حسن کو بالیس اور انہیں نکاح کے گواہ بنا لیں' ہیں نے ایجاب قبول کرایا خطبہ پڑھا اور دونوں گواہوں کی موجودگی ہیں نکاح ہوگیا۔ دو سو دینار حق مہر مقرر ہوا اس وقت لا کر لونڈی کے حوالے کر دیئے گئے۔ اس کے بعد مجھے خلیفہ نے کہا اب آپ نے ہم دونوں کی مشکل کی حل کر دی ہے۔ اب آپ تشریف لے جاسجے ہیں۔ خلیفہ نے سرور کو باا کر حکم خلیف نے سرور کو باا کر حکم خلیف نے ایک کے لیگ ہیں دونوں کی مشکل کی حل کر دی ہے۔ اب آپ تشریف لے جاسمی اور اس کے اہل و عیال کے لیگ ہیں خلاتیں دی جاسمی۔ خلاتیں دی جاسمی۔

مكتبه نبويه ر

و مناقب امام اعظم

یشربن الولید فرماتے ہیں اس واقعہ کے بعد یعقوب (امام ابویوسف) نے میری طرف وکھے کر فرمایا کہ میں نے اس معالمہ میں کوئی شری غلطی تو نہیں کی میں نے کہا کوئی غلطی نہیں گی۔ آپ نے فرمایا میرے انعام میں آپ کا حصہ ہے۔ آپ نے مجھے مشورہ دینے پر وسوال حصہ دیا' میں شکریے اوا کر کے گھر کو روانہ ہوا' میں اٹھ کر گھر آنے ہی والا تھا کہ ایک بردھیا آگئ اور آکر کہنے گئی الم ابویوسف آپ کو رات والی کنیز سلام پیش کرتی ہے اور شکریہ ادا کرتی ہے کہ آپ نے اے غلای سے آزادی ولائی' آزاد خاتون کی حیثیت سے اس کی شادی ظیفہ عباس سے کرا دی۔ اس نے آپ کو ایک سو رینار بطور شکریہ بھیجا ہے۔ ابویوسف نے فرمایا میں آپ معاملات میں نذرانے قبول نہیں کیا کرآ۔ بکی کو آزادی مل گئی' ظیفہ سے شادی ہو گئی' وہ خوش ہو گئی ہے ججھے اس کام پر خوشی ہوئی ہے۔ سے نذرانہ مجھے قبول نہیں۔ بشر کتے ہیں کہ ہم نے منت ساجت کی' آپ نے ہماری بات مان لی مگر سارا نذرانہ اور انعام ہمیں انعام دے ویا۔

یکی بن معین والیج فرماتے ہیں کہ ایک بار میں امام ابولوسف والیج کے ساتھ کمہ کرمہ میں تھا' آپ کے پاس محد ثین کمہ اور مدید کی ایک جماعت بلیٹی ہوئی تھی' ان کے علاوہ اشراف کمہ بھی موجود تھے' امام ابولوسف والیج کو ام جعفر (خلیفہ کی ماں ) نے ہدیہ بھیجا جو مختلف اشیاء پر مشمل تھا۔ مجلس میں سے ایک ہخص نے فرمایا کہ اگر تمہیں کوئی ہدیہ بھیجے تو قبول کرلو اور ہدیہ کو مجلس میں بیٹھے ہوئے لوگوں میں تقسیم کر کے ایٹار اور مروت کا مظاہرہ کرو۔ قاضی ابولوسف والیج نے اس شخص کی بات سن لی۔ آپ نے فرمایا تمہاری بات بالکل ورست ہے مگر وہ ایسا ہدیہ تھا جس میں مجبوریں' بینر' انگور اور کشمش وغیرہ ہوتے تھے۔ ایسا ہدیہ نہ تھے تم دیکھویہ تو فرانے ہیں۔

سفیان بن و کیم بن الجراح فرماتے ہیں کہ میں نے اپنے باپ سے یہ بات می کہ مجھے الم ابویوسف مالیے فرمایا کرتے تھے کہ آپ ان مسائل کے متعلق کیا فرماتے ہیں کہ جو آج کل زیر بحث آرہے ہیں۔ میں نے عرض کہ حضور نئے نئے مسائل کا حل تو آپ ہی جانتے ہیں ' مجھے صرف ایک شکایت ہے کہ آپ مسجد میں بلند آواز سے باتیں کرتے ہیں یہ اچھی بات نہیں ' رسول خدا حضرت محمد مصطفے صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم نے مسجد میں بلند آواز سے گفتگو کرنا یا شور مچانے سے منع فرمایا ہے۔ آپ فرمانے گئے تو آپ میرے ساتھ فقہ کا کوئی مسئلہ بیان فرما کیں ' میں نے دوران گفتگو پر بوش آواز

ے بات کی تو آپ نے فرمایا سفیان تم معجد میں بلند آواز سے بات کرتے ہو کیا ہے مکروہ نہیں ہے۔ بس اتنی سی اجازت ہے کہ دین کے مسائل بیان کرتے وقت تھوڑی سی آواز بلند کرلی جائے۔

وکیع را الله نے بایا کہ ایک دن میں اور ابن ابی زاہدہ اور سفیان بن لمیننہ مبحد کوفہ میں بیٹے تھے اس وقت اہام ابو صنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ مبحد کے ایک کونے میں تشریف فرہا تھے۔

ہمارے دوستوں کی باتوں کی مبحد میں آواز آرہی تھی' اہام ابوبوسف رو الله الله ہمارے ساتھ آگر بیٹے گئے' انہیں ابن عینیہ نے کہا کیا اہام ابوصنیفہ مبحد کا حق نہیں جانے' اگر جانے ہیں تو پھریہ شور کیوں برداشت کرتے ہیں' ان لوگوں کو کیوں نہیں روکتے۔ اہام ابوبوسٹ موال سن کر خاموش ہو گئے اور اس کے بعد ہمارے ورمیان ایک مسئلہ پر بحث چھڑگئی۔ ابن عینیہ نے بات کی میں نے مخالف اور اس کے بعد ہمارے ورمیان ایک مسئلہ پر بحث چھڑگئی۔ ابن عینیہ نے بات کی میں نے مخالف میں دوسری بات کر دی' ہم ایک دوسرے کے جواب الجواب میں آوازیں بلند کرتے گئے۔ اہام ابوبوسف نے کہا سجان اللہ ! اب تم ہی مبحد میں آواز بلند کرکے گفتگو کر رہے ہو اور ہم پر الزام بھی الوبوسف نے کہا سجان اللہ ! اب تم ہی مبحد میں آواز بلند کرکے گفتگو کر رہے ہو اور ہم پر الزام بھی لگاتے ہو سے کہ کر اٹھ کر وہاں سے جلے گئے۔

امام ابوبوسف رحمتہ اللہ علیہ کی آواز بڑی بھاری تھی' بولتے تو سننے والوں پر وہشت طاری ہو جاتی تھی' پھر آواز علم و فضل کے موتی بھیرتی چلی جاتی' سننے والے لوگ پھر ہو جاتے' میں نے کی وقتی مسئلہ پر گفتگو کرتے سا' آپ کی زبان سے بول ولائل نکل رہے تھے جیسے کمان سے تیر نگلتے ہیں۔ آپ کے مقابلہ میں کسی کو بات کرنے اور کہنے یا جواب وینے کی جرات نہیں ہوتی تھی۔ ہم جران تھے کہ یہ مخص کتا قادرالکلام ہے اور کس انداز سے اپنے مقاصد بیان کرتا ہے۔ مسائل' معالی اور اسرار کو اللہ تعالیٰ نے ان کے لیئے آسان فرا دیا تھا' وہ روال دوال بات کرتے جاتے تھے۔

علی بن خشرم رحمتہ اللہ علیہ بیان فرماتے ہیں کہ ہیں اس مجلس میں موجود تھا جب کی نے حصرت امام ابوبوسف ویلئیے سے ایک ایسے مخص کے متعلق سوال کیا کہ اس نے تشم کھائی ہے کہ اگر میرا بید کام نہ ہوا تو میرا تمام مال و اسباب مساکین کو دے دیا جائے' اب اگر وہ کام نہ ہو رکا تو اس کے مال کے متعلق کیا تھم ہے؟ آپ نے فرمایا کہ اس کے لیئے ایک ہی صورت ہے کہ وہ اپنا مال ایسے مخص کو دے دے جس پر اے پورا پورا اعتماد ہے' جو پچھ کمحوں بعد اسے لیا ہوا مال والی کر دے۔ اس دوران وہ کام کرے جس کا اس نے عمد کیا تھا' ناکامی کے دوران کی قتم کے مال و منال کا مالک

نہیں تھا۔ (یہ ایک شرع حیلہ ہے جس کے جواز کو چیلنے نہیں کیا جاسکا۔ ہم احناف اسقاط کا شرع طلبہ ان ہی فیصلوں کی روشنی میں کرتے ہیں مترجم) یہ فیصلہ سن کر سائل نے پوچھا کیا ایسا فیصلہ بھی نہی کریم صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم نے فرمایا تھا؟ آپ نے جواب دیا حضور مالی اللہ نے تو ایسا بھی نہیں کیا نہ فرمایا تھا تو پھر آپ نے یہ فیصلہ کیوں کیا' ایسے فیصلے تو یہودی کرتے ہیں اور رسول اللہ مالی نے یہودیوں پر لعنت فرمائی ہے' ان پر جانوروں کی چربی حرام تھی مگر وہ چربی نیج کر اس کی قیمت وصول کرتے اور دو مری ضروری اشیاء خرید کر کھاتے۔ حضرت امام ابوبوسف دالیج نے فرمایا بندہ خدا کہاں یہ فیصلہ اور کہاں یہودیوں کا وہ فیصلہ' دونوں فیصلوں میں بڑا فرق ہے۔ انہوں نے حرام چیز کو طال کرنے فیصلہ اور کہاں یہودیوں کا وہ فیصلہ' دونوں فیصلوں میں بڑا فرق ہے۔ انہوں نے حرام چیز کو طال کرنے مسلمہ کیا اور جمارے سامنے جو مسلمہ آیا تھا اس میں ان کا مال طال تھا' اس کا اپنا تھا' وہ چاہتا تھا کہ اس کا حال مال اس کی قتم کی وجہ سے حرام نہ ہو جائے' سائل اٹھ کر باہر چلا گیا۔

یوسف بن خالد بیان کرتے ہیں کہ مجھے امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے بتایا کہ میرے یاس ربیعہ الزائی اور یکیٰ بن سعید قاضی کوفہ آئے۔ یکیٰ نے ربیعہ کو کما کہ اس شرکے لوگوں پر تعجب ہے کہ انہوں نے ابوحنیفہ جیسے آدمی کی رائے پر اتفاق کر لیا ہے۔ آپ نے انہیں مشکوک الاعتبار جان كرايخ شاكرد امام ابويوسف امام زفر اور چند دو مرے شاكردول كے پاس بھيج ديا اور تھم ویا کہ رہید الرائی سے مناظرہ کریں اور اے مطمئن کریں اوہ ان کے باس آئے تو امام ابوبوسف مالیے نے ان سے بوچھا تمہارا اس فخص کے متعلق کیا تھم ہے جس کے دو مالک ہوں' ایک مالک اپنا حصہ آزاد كردك توكيايه فيصله شريعت كى رو س صحح ب؟ ربيد كن لكاايانيس موسكمايه ناجاز ب اس میں ضرر ہے' نقصان ہے' انسان آزاد ہوتے ہوئے بھی غلام ہے۔ حضور صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم نے فرمایا ہے ضرر جائز نہیں۔ امام ابوبوسف مالیتہ نے بوجھا کہ اگر دو سرا بھی اسے آزاد کر دے تو ربعه کنے لگا اب جائز ہے۔ امام ابواوسف مالي كتے بين كه تم نے اپنے فيلے كو كول بدل ديا تم نے پہلے فخص کے آزاد کرنے پر اسے ناجائز قرار دیا۔ اب دو سرے نے وہی کام کیا تو تم جائز کہ رہے ہو' تمهارے نزدیک تو پہلے مخص کے کہنے سے غلام آزاد نہیں ہوا تھا ابھی غلام ہی تھا گرووسرے نے آزاد کیا تو تم نے اے جائز قرار دیا ہے۔ ربیعہ آپ کے اس اعتراض پر جیران رہ گئے اور خاموش ہو كركه جلاكيا

ہم نے یہ حدیث الحارثی کے طریق پر روایت کی ہے۔ حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عند نے جب یہ روایت ربیعہ کو سائی تو وہ کمی اور مسئلہ کے متعلق بھی گر لمام ابولیوسف کے ذہن میں تھی' انہوں نے اس مسئلہ کے حل کرنے کے لیئے ربیعہ کو لاجواب کر دیا۔ جن دنوں امام ابولیوسف رحمتہ اللہ علیہ قاضی القصناہ تھے اور خلیفہ ہارون الرشید عباسی کا دور تھا تو آپ کی عدالت میں ایک مقدمہ آیا۔ ایک مسلمان نے ایک نفرانی ذبی کو قتل کر دیا تھا' اس کے خلاف گواہوں نے گواہی بھی دے دی تھی اور واقعہ کی حقیقت ثابت کر دی۔ نفرانی کے وارث عدالت کی وساطت سے قاتل سے قصاص کا مطالبہ کر رہے تھے۔ قاتل نے مملت ماگی اور وعدہ کیا کہ فلال دن فیصلے پر عمل کوں گا۔ جب وعدہ کا دن آیا تو قاضی ابولیوسف میا پی مدد قضاہ پر تشریف فرما تھے اور حکم دیا کہ فیصلے کے کاغذات لائے جا کیں۔ اس دوران اس وقت کا مشہور شاعر ابوا لمغر بی عدالت میں آگیا' اس نے ان عدالت میں اپنا رقعہ ملا دیا جس پر یہ شعر کھا تھا۔

یاقاتل المومن بالکافر جرت وماالعادل کاالجائر یامن به بغداد وا اطرافها من فقهاالناس او شاعر

ترجمہ: اے ایک مومن کو کافر کے عوض قتل کرنے والے 'تم ظالم ہو' عادل نہیں ہو' عادل ظالم نہیں ہو' عادل ظالم نہیں ہو نہیں ہو سکتا' تم بغداد اور اطراف کے قاضی ہو'کیا تم قاضی عادل ہویا شاعر؟

> جار على الدين ابويوسف بقتله المومن بكافر نوجو اوبكو اخوتى دينكم واصطبرو اقالا حبرالصابر

ترجمہ: آج ابوبوسف دین پر ظلم کر آرہا ہے۔ وہ مومن کو کافرے قتل کے بدلے قتل کرنے پر تلا

تافي امام اعظم ١٨٥٠ مكتبه تبويه

، ہوا ہے۔ اے بھائیو! تم اپنے دین پر ماتم کو' اس پڑالوجہ کو اور صبر کرد اس لیئے کہ صبر کے لیئے اجر طے۔

قاضی ابویوسف نے جب بیہ اشعار پڑھے تو کاغذات ایک طرف رکھ ویے' اپنا دفتر بند کر دیا' اٹھے اور ظیفہ ہارون الرشید کے پاس چلے گئے۔ اس کے ہاں سارا واقعہ سایا اور اشعار بھی پڑھ کر سائے اور بیہ بھی بتایا کہ اس مقدمہ کا فیصلہ سننے کے لیئے لوگوں کا ایک مجمع جمع ہے۔ بیس سابقہ فیصلہ سنانے سے ڈر آ ہوں کہ کمیں فساد نہ ہو جائے۔ بات وہی حق ہے جو اشعار بیس کمی گئی ہے۔ ہارون الرشید نے آپ کو کما پھر آپ معذرت کر لیس۔ قاضی اپنے دفتر آئے مقتول کے وارث جمع تھ' فیصلہ سننے کے لیئے بیتاب تھ' قاضی ابویوسف نے انہیں مخاطب کر کے کما تممارے دو گواہ شمادت دیے ہیں کہ مقتول مرتے وم تک جزیہ اوا کر آ رہا ہے' یہ تو خون باطل ہے' اس کا قاتل قصاص بیس دیے ہیں کہ مقتول مرتے وم تک جزیہ اوا کر آ رہا ہے' یہ تو خون باطل ہے' اس کا قاتل قصاص بیس دیے ہیں کہ مقتول مرتے وم تک جزیہ اوا کر آ رہا ہے' یہ تو خون باطل ہے' اس کا قاتل قصاص بیس دیے ہیں کہ مقتول مرتے وم تک جزیہ اوا کر آ رہا ہے' یہ تو خون باطل ہے' اس کا قاتل قصاص بیس دیے ہیں کہ مقتول مرتے وم تک جزیہ اوا کر آ رہا ہے' یہ تو خون باطل ہے' اس کا قاتل قصاص بیس قبل نہیں کیا جاسکتا۔

ابراہیم الخراج نے فرمایا کہ میں امام ابو یوسف روٹیے کے پاس حاضر ہوا تو آپ سخت بیار تھ '
مجھے دکھے کر فرمانے گئے فلاں مسئلہ کا کیا حل ہے ؟ میں نے کہا اس سخت بیاری میں آپ کو مسئلہ کا حل کی پڑی ہوئی ہے۔ آپ بینے فرمایا کوئی حرج نہیں ' آپ مسئلہ کا حل تو بتا میں ' ہم مسئلہ حل کریں۔ بیاری سے نجات تو اللہ نے دیتی ہے آپ سے بتا میں ''شیطان '' کو پیدل کنگر مارنے افضل ہیں یا سوار ہو کر ؟ میں نے کہا سوار ہو کر (جمرات کرنا) کنگر مارنا افضل ہے۔ آپ نے فرمایا تم نے غلط کہا ہے ' بھر میں نے کہا پیدل چل کر کنگر مارنا افضل ہے ' آپ فرمانے گئے تم نے پھر غلط کہا' میں نے عرض کی پھر آپ ہی فرمائے۔ آپ نے فرمایا کنگریاں مارنے کے بعد وقوف نہیں سوار ہو کر کنگریاں مارنا افضل ہے ' کنگریاں مارنے کے بعد وقوف کرتا ہے تو بیدل کنگریاں مارنے کے بعد وقوف کرتا ہے تو پیدل کنگریاں مارنے کے بعد وقوف کرتا ہے تو پیدل کنگریاں مارنے کے بعد وقوف کرتا ہے تو پیدل کنگریاں مارنے کے بعد وقوف کرتا ہے تو پیدل کنگریاں مارنا افضل ہے کیونکہ اس کھے کام کے لیئے اس طرح بمتر ہے۔

بشربن الولید نے فرمایا کہ ایک دن میں نے امام ابوبوسف رایٹی سے سنا آپ فرما رہے تھے کہ جھے سے اعمش نے ایک مسئلہ دریافت کیا' میں نے مسئلہ بتایا تو پوچھنے لگے یہ جواب تم نے کمال سے سکھا' میں نے جواب دیا کہ آپ کی بتائی ہوئی اس حدیث سے' اس پر میں نے حدیث سنائی' وہ سن کر کمنے لگے اے بعقوب! یہ حدیث میں نے اس وقت یاد کی تھی جب تہمارے مال باپ کی ابھی شادی

بھی نہیں ہوئی تھی گرمیں آج تک اس حدیث کو بطور مسلہ بیان نہیں کرسکا۔ تہماری یادداشت کا کیا کمنا کہ اس حدیث کی روشنی میں مسئلہ کو حل کر دیا۔

اس ضمن میں مجھے این ابی عمر نے ایک واقعہ سنایا کہ امام ابوبوسف رحمتہ اللہ علیہ ایک ون عجاج بن ارطات کے ہاں تشریف لے وہ اس وقت کوفہ کا قاضی تھا اور امام ابوبوسف ابھی ایک فقیہ تھے۔ آپ نے اس ہے لونڈی کے پیٹ میں اس بچ کے متعلق سوال کیا جے حمل کے دوران کی نے گرا دیا تھا۔ قاضی نے کہا کہ لونڈی کی قیمت کا بیموال حصہ اوا کیا جائے۔ امام ابوبوسف نے پوچھا یہ تم نے کہاں ہے لیا ؟ اس نے بتایا حرہ (آزاد عورت) کے پیٹ کے بچ ہے 'قاضی یوسف کے کہنے لگے حمد کے بیٹ کے بیٹ پر مارا اور پچھا ہے تم نے کہاں ہے لیا ؟ اس نے بتایا حمد اگر میرا ہونے کے اس کے بیٹ پر مارا اور پچھا ہوا تو مارنے والے پر جربائہ ہے۔ اگر پیدا ہونے کے بعد مرا تو دیت دینا ہوگ ۔ تجاج نے کہا مملکہ تو ایسانی ہے۔ امام ابوبوسف نے فرمایا تم کے معالمہ برعکس کر دیا' لونڈی کے پیٹ میں بچہ مر گیا زندہ بچ کی قیمت بردھا دی اس لیئے کہ وہ زندہ ہو کر نگلے گا تو اس کی قیمت دو درہم ہوگی جبکہ اس کی ماں کی قیمت دو درہم ہوگی جبکہ اس کی ماں کی قیمت ایک سو درہم تھی۔ تجاج نے کہا ہاں بیٹے جب اس عمر میں تہماری تحقیقات کا بیا عالم ہوگے برے آئمہ اور علاء کرام سے مسئلہ پوچھنے کی کیا ضرورت ہے۔ تم لوگوں سے نہ طاکو اس سے تو میری قدر و قیمت ختم ہو جائے گی اور تم تو میرے فیصلوں پر اپنی رائے دیکر ججھے رسوا کرتے ہوگرے تم لوگوں سے نہ طاکو اس بھوگے تم لوگوں سے نہ طاکو۔

بکار بن قینیه رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ میں نے ہلال الرائی سے سنا وہ کہتے تھے کہ جب امام ابوبوسف ہمارے ہاں تشریف لاتے تو ہمارے دروازے کے سامنے شہر کے علماء اور محد شین جمع ہو جاتے تھے۔ ہر شخص آپ سے دو سی اور محبت کا دم بھر آتھا اور کہتا کہ امام ابوبوسف میرے خاص دوست ہیں اور اس طرح ہر ایک کی خواہش ہوتی کہ وہ پہلے امام صاحب سے ملاقات کرے' لمام ابوبوسف انہیں دکھے کر فرماتے واقعی یہ میرے مشترکہ دوست ہیں۔ ایک دفعہ علماء اور محد شین کے دو طبحہ دروازے پر جمع ہو گئے ہر ایک کو گمان یہ تھا کہ آپ ان کے ہیں' حضرت لمام ابوبوسف میٹے فرمانے گئے میں تو آپ سب کا مشترکہ دوست ہوں۔ میں محدث بھی ہوں' فقیہ بھی ہوں' میں کی طبحہ کو ایک دو سرے پر ترجیح نہیں دوا ہیں میرا ایک مسئلہ ہے جو اسے حل کر دے گا میں اس کی طبقہ کو ایک دو سرے پر ترجیح نہیں دیا' ہاں میرا ایک مسئلہ ہے جو اسے حل کر دے گا میں اس کی

قابلیت کا اعتراف کروں گا۔ وہ یہ ہے کہ میں نے ایک دن لوگوں کے جُمع میں ہاتھ برهایا تھا، میری انگلی میں ایک بیتی اگوشی تھی، ایک فخص نے آگے بردھ کر از رہ عقیدت اگوشی وانتوں میں دے کر چیا والی اور اے کلاے کردے کر دی۔ آپ حضرات اپنی اپنی رائے دیں کہ ایسے فخص کا کیا کیا جائے۔ محد ثین نے رائے دی کہ وہ فخص پہلے انگشتری کی طرح نئی انگشتری بنوا کر دے، وہ مروں نے کہا کہ اے توڑنے ہے جو نقصان ہوا وہ اے پورا کرے، میں نے آگے بردھ کر کہا خدا کے بندو! اس مسلہ کا حل یہ ہے کہ یہ ٹوٹی پھوٹی اگوشی اس فخص کو دے دی جائے جس نے یہ حرکت کی تھی اور اس سونے کی قیمت وصول کر لی جائے جو انگشتری میں لگا ہوا تھا۔ ہاں اگر اگوشی کا مالک اے اس حالت میں رکھنا چاہے اور کوئی محاوضہ طلب نہ کرے تو یہ ایک اچھا کام ہے، چیائے والے پر پچھے نہیں۔ میری یہ بات من کر تمام حاضرین خوش ہوئے۔ امام ابوبوسف نے مجھے قریب بلایا والے پر پچھے نہیں۔ میری یہ بات من کر تمام حاضرین خوش ہوئے۔ امام ابوبوسف نے مجھے قریب بلایا۔ آپ نے داد دی شابش کی اور اپنے پاس لا کر بھایا اور میرے ساتھیوں کو بھی اپنے قریب بلایا۔ آپ نے داد دی شابش کی اور اپنے پاس لا کر بھایا اور میرے ساتھیوں کو بھی اپنے قریب بلایا۔ آپ نے بوچھا تمہارا نام کیا ہے؟ میں نے تایا میرا نام "بلال" ہے۔ آپ نے قریا ان شاء اللہ تم ایک دن قری بن کر چکو گے اور کاتب کو بلا کر یہ مسلہ تکھوا دیا۔

اس مسئلہ کو صاحب "کتاب الصرف" نے ایک اور انداز میں پیش کیا ہے کہ دونوں اپنے حال پر رہیں گے، میں نے عرض کیا کہ اس مسئلہ کی نوعیت بالکل اس کے برعش کھی گئی تھی۔ آپ فے فرمایا دونوں اپنی اپنی جگہ درست ہیں حالات اور واقعات کی تبدیلی سے بعض دفعہ مسائل کے جوابات مختلف ہوتے ہیں۔

ابوالولید اللیای نے کہا اس دن میں بھی اصحاب الرائے کے ساتھ تھا۔ اس دن سب سے پہلے جس فخص نے امام ابوبوسف دیائیہ سے بات کی تھی وہ حسن بن صالحہ بن حمی تھے۔ ان کے دل میں کوئی بات کھنگی تو آپ نے لوگوں کی طرف دیکھ کر کہا بخدا آج جتنا مجھے حسن بن صالح سے بات کرنے میں خوف آیا ہے بھی نہیں آیا۔ گویا اس نے مجھے شعبہ کے سامنے پیش کر دیا ہے میں کھڑا ہو گیا اور کہا اللہ مجھے وہ مجلس نہ دکھائے جس میں ابوالکلام موجود ہوں میں اسی پریٹانی میں باہر نکلا راست میں خیال آیا خوف کس چیز کا وہاں ایک وزیر تھا وسرا قاضی القصاہ (چیف جسٹس) مجھے ان سے ڈرنا نہیں چاھیئے چنانچہ میں دوبارہ واپس آگیا اس وقت امام ابوبوسف املاسے فارغ ہو چکے تھے۔

ان کے زبن پر میرای خیال سوار تھا۔ وہ مجھے بغداد سے ہی جانتے تھے 'میں بغداد کے قیام کے دوران ان کے پاس آیا جا آگر آتھ ا مجھے فرمایا ہشام ادھر آؤ 'ابو بسطام میں بھلائی ہے لیکن میں نے حس بن صالح جیسا کوئی ذہین عالم نہیں دیکھا۔

علامہ نیٹالپری فرماتے ہیں کہ جب امام ابوبوسف والجہ منصب قضاۃ پر جلوہ فرما ہوئے تو آپ کے ہاں اساعیل بن حماد بن امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ آئے (یعنی ان کے استاد کرم کے پوتے) اس وقت امام بوسف والجہ کے پاس دو فربق ایک دو سرے کے مخالف مقدمہ لے کر کھڑے تھے۔ آپ نے امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے قول کے مطابق فیصلہ فرمایا تو اساعیل بن حماو نے اللہ کر فرمایا آپ تو امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے فیصلے کے خلاف فیصلہ کیا کرتے ہیں آج آپ کو کیا ہو گیا ہے۔ امام ابوبوسف والجہ نے کہا ہم حضرت امام کی زندگی ہیں ان کی مخالف دیدہ دانستہ کیا کرتے تھے تاکہ آپ ہمارے سامنے کوئی مزید نکتہ لائیں اور ہمیں راہنمائی طے مقیقت ہے ہے کہ آج تک ایسا کوئی فیصلہ نمیں کیا گیا جو امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے فیصلے یا رائے کے خلاف ہو۔

ایک دفعہ امام ابویوسف روانیہ ظیفہ عبای ہارون الرشید کے ساتھ جج پر گئے۔ دونوں ایک باپردہ کبادہ میں سفر کر رہے تھے۔ دوران سفرانام ابویوسف کو کھانی آئی تو آپ نے پردہ بٹا کر کھنکار بابر پھینکا خلیفہ ہارون الرشید نے کہا تم جانتے نہیں کس کے ساتھ سفر کر رہے ہو اور یہ عامیانہ حرکت کیوں کر رہے ہو۔ امام ابویوسف نے کہا تجھے معلوم ہے کہ میں جس کا شریک سفر ہوں اے اپنی فلافت پر بڑا ناز ہے مگر ساتھ ہی فرمایا آپ کو معلوم ہے آپ کس کے ساتھ سفر کر رہے ہیں 'ہردون الرشید نے تبایا ججھے معلوم ہے ابویوسف چیف جسٹس ممالک عباسیہ کے ساتھ بیٹھا ہوں' میں نے کہا الرشید نے تبایا ججھے معلوم ہے ابویوسف چیف جسٹس ممالک عباسیہ کے ساتھ بیٹھا ہوں' میں نے کہا موجود ہیں' میں ٹراروں قرایش نب کی وجہ ہے آئ موجود ہیں' کئی قرایش ہاشی مکہ مدینہ کوفہ لور بغداد میں موجود ہیں' میں ترموں کہ حسب و نسب کی وجہ ہے آئ فلافت کے دعویدار ہیں مگر میں علم و فضل کی وجہ ہے اس مقام پر ہوں کہ حسب و نسب کے بر بھی میرا کوئی جواب نہیں۔ خلیفہ ہارون الرشید امام ابویوسف کی بات من کر خوش بھی ہوا اور لاجواب بھی اور کئے لگا کاش میں خلیفہ نہ ہو آ ایک اونٹ کا ساربان ہو آگر علم و فضل میں کمل حاصل کر آلور کے لگا کاش میں خلیفہ نہ ہو آ ایک اونٹ کا ساربان ہو آگر علم و فضل میں کمل حاصل کر آلور

ناقب امام اعظم . ٥٢٢

۔ لوگ میری تلاش میں دور دورے دوڑے آتے۔

محر بن سلمہ اپنے زمانہ کے بہت بوے فقیہ تھے وہ بیان کرتے ہیں کہ ظیفہ ہارون الرشید بیت اللہ کی طرف روانہ ہوئے تو ان کے برابر ہی امام ابوبوسف واللہ کی سواری چل رہی تھی 'جب تمام تجاج عرفات کے میدان میں پہنچ تو امام ابوبوسف واللہ نے بارون الرشید کو اشارے سے بتایا کہ وہ مصلی پر کھڑے ہو کروو رکعت نماز کی امامت کرائیں۔ جب نماز ہوگئ تو امام ابوبوسف واللہ کھڑے ہو گئے اور اعلان کیا اے اشراف کہ! اے اٹل کہ! تم اپنی نماز پوری کرلوچار رکعت اوا کرلو' آپ کے امام ظیفہ ہارون الرشید مسافر ہیں' وہ کراوا کر رہے ہیں۔ یہ سن کر جمع میں سے ایک مختص اٹھا اور کئے لگا ابوبوسف میں تم سے اور تہمارے استاد سے بڑا عالم ہوں۔ اس سئلہ کو اچھی طرح جانیا ہوں۔ امام ابوبوسف میں تم سے اور تہمارے استاد سے بڑا عالم ہوں۔ اس سئلہ کو اچھی طرح جانیا ہوں۔ امام ابوبوسف نے فرمایا تم آگر عالم ہوتے تو نماز کے دوران گفتگو نہ کرتے' وہ لاجواب ہو کہ خاموش ہو گیا۔ اوھر ہارون الرشید یہ بات س کر بہت خوش ہوا اور کئے ذکا کاش میں اتباعالم دیں ہوتا ور لگوں کے مسائل کے جوابات ویتا۔

اس واقعہ کو ایک اور فخص نے بتایا کہ ظیفہ ہارون الرشید امام ابولوسف کے اس جواب سے ہنس پڑے اور فرمایا یہ قیمتی جواب عربوں کے سرخ اونٹول سے بھی بہترہے۔ (عربوں میں سرخ اونٹ نمایت اعلی سمجھا جاتا ہے۔) امام ابولوسف کی عدالت میں ایک دن ظیفہ کا دزیر علی بن عیسی گوائی دیت آیا' اس نے گوائی دی گر امام ابولوسف نے اسے مسترد کر دیا۔ وزیر نے ظیفہ ہارون الرشید کے پاس شکایت کی' ہارون الرشید نے لمام ابولوسف کو بلایا اور پوچھا آپ نے میرے وزیر کی گوائی کو کیوں مسترد کر دیا ؟ آپ نے فرمایا میں نے سام کہ وہ کہتا ہے کہ انا عبدالخلیفہ " میں ظیفہ کا غلام ہوں " اور شریعت میں غلاموں کی گوائی ناقائل قبول ہے۔

ایک اور روایت میں ہے کہ میں نے اس لیے گوائی رد کر دی کہ میں نے سا ہے کہ سے باجماعت نماز اوا نہیں کرما' اس دن کے بعد وزیر این عیلی نے گھر کے ایک کونے میں مجد بنالی جس میں پانچوں وقت باجماعت نماز اوا کیا کرما تھا۔

موی الهادی تخت خلافت پر بیٹا تو اس نے ایک نمایت ہی خوبصورت اور خوش اندام لویڈی دیکھی' وہ عورت کے روپ میں جاند کا کلزا تھی' خلیفہ کا دل اس پر ٹوٹ پڑا' اس نے اپنے وزیر کو تھم ویا کہ اسے ہر قیت پر خرید کر میرے پاس الیا جائے۔ جب اس کو بے پناہ دولت دے کر خرید لیا گیا تو علاء کرام نے فربلیا کہ لونڈی کا استہراء ضروری ہے۔ علاء کی ہے بات من کر خلیفہ جران مدہ گیا اور سوچنے لگا اب کیا کروں' استبراکو ایک وقت درکار ہے گراس کے اندر ایک تو آگ گئی ہوئی تھی' وہ کہنے لگا کاش آج امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ ہوتے تو وہ میری مشکل حل فرمات ۔ اس نے پوچھا کیا امام ابوضیفہ کا کوئی شاگرہ ہے جو مسائل فقہ میں طاق ہو' لوگوں نے امام ابوبوسف کا نام لیا۔ خلیفہ نے آپ کو بلایا اور آپ کے سامنے وہ مسئلہ رکھا۔ آپ نے پوچھا آپ کے دربار کے دوسرے فقہا نے کیا حل پیش کیا ہے۔ اس نے بتایا کہ علاء کرام کا کہنا ہے کہ لونڈی تو استبراء کے بغیر حلیل نہیں ہو سکتی۔ ایک حیض انظار کریں' پھر استبراء کریں گر میرے لیئے ہے دونوں باتیں تاگوار بیس۔ امام ابوبوسف میلئے نے کہا اب ایک صورت رہ گئی ہے آپ لونڈی کے مالک کو روپ دے کر بیس۔ امام ابوبوسف میلئے نے کہا اب ایک صورت رہ گئی ہے آپ لونڈی کے مالک کو روپ دے کر ویں جو خلوت کیے ابنیر اس اونڈی کو آذاد کر دیں' پھر اس کا نکاح کی بااعماد غلام ہے کر دیں جو خلوت کیے ابنیر اسے فرآ طلاق دے دے جب وہ مطلقہ ہو جائے تو یہ لونڈی آپ کے لیے دیں جو سائلے کو دس ہزار دینار انعام دیا۔

ایک مجد وران ہو گئی کی نے امام محر بن الحن سے بوچھا کہ الی مجد کا کیا تھم ہے ' آپ نے فرمایا مالک کی ملک میں واپس لوث آئے گی۔ اس فتوئی پر اس محفص نے ویران معجد پر قبضہ کر کے اپنا مکان بنالیا۔ امام ابوبوسف میٹی وہاں سے گزرے تو مسجد کی جگہ مکان و کھے کر جیران رہ گئے ' بوچھا یہاں تو محر بن الحن کی مسجد تھی' لوگوں نے بتایا کہ یہ فتوئی تو اسی امام محمد الحن کا ہے کہ ویران مسجد مالک کی مکیت میں چلی جاتی ہے اس مسئلہ پر آئندہ صفحات میں مفصل گفتگو ہوگی۔

ایک دن ایک خاتون حفرت امام ابوبوسف رحمتہ اللہ علیہ کی خدمت میں حاضر ہوئی کھنے گئی جھے رات کو احتلام ہو جاتا ہے میں کیا کروں؟ آپ نے فرمایا تم چکی اٹھایا کرو۔ دو سرے دن وہ مجر آئی آپ نے بوچھا تمارے احتلام کا کیا بنا 'کئے گئی اب تو میں چکی اٹھائے بھرتی ہوں' آپ نے بوچھا کیا تمارا شوہر ہے۔ اس نے کما میں نے نکاح نہیں کیا 'آپ نے فرمایا تم نکاح کر کو یک تیرا علاج

منافب امام اعظم ٥٢٨ مكتبه نبويه

ایک ون آوهی رات کے وقت خلیفہ ہارون الرشید کا قاصد آیا اور کہنے لگا آپ فورا خلیفہ کے محل میں پنچیں ایک نمایت ضروری کام ہے۔ امام ابویوسف رافید گھرا گئے کہ خدا خیر کرے یہ وقت اور خلیفہ صاحب کی طرف سے طلبی' بسرطال آپ جس لباس میں تنے اس میں چا ہو گیا پڑے اور خلیفہ خلیفہ کے محل میں جاپنچ اور جاتے ہی السلام علیم کما' خلیفہ نے جواب دیا تو آپ کی تسلی ہوئی' خلیفہ نے کما یعقوب میرا قیمتی زیور گم ہو گیا ہے' مجھے ایک لونڈی پر شک ہے وہ میری بڑی بیاری اور خاص نونڈی ہے' میں اس پر سختی بھی نہیں کر سکتا' ہاں! میں نے قتم کھائی تھی کہ اگر آپ اس کی چوری کی تقدیق کر دیں تو میں آج رات ہی اے قتل کر دول لیکن بلا تحقیق میں قتل نہیں کرنا چاہتا۔ آپ لونڈی سے تحقیق کریں شاید کوئی صورت نکل آئے۔

الم ابوبوسف رویلی فرماتے ہیں کہ ش نے جب اس لونڈی کو ایک نظر دیکھا تو وہ مجھے چاند کا کلوا نظر آئی وہ حسن و جمال میں یکنائے روزگار تھی میں نے اس سے بوچھا تمہارے پاس زیور ہے یا نہیں ؟ اس نے کما خدا کی قتم میرے پاس زیور نہیں میں نے اسے کما اگر تم بچنا چاہتی ہو تو جو الفاظ میں تمہیں پڑھاؤں انہیں یاد کر لو اور ان کے علاوہ کوئی لفظ نہ کمنا۔ اس نے وعدہ کر لیا میں نے اسے کما جب تمہیں خلیفہ بوچھیں کہ تم نے زیو رچرایا تھا تو بلا ججبک کمہ دیتا کہ بال! جب وہ کے کہ لے آؤ تو فورا کمنا میں نے نہیں چرایا۔ امام ابوبوسف نے یہ الفاظ اس لونڈی کو بار بار یاد کرائے اور خود خلیفہ کے پاس آگر بیٹھ گئے۔

اب ہارون الرشد نے لونڈی کو بلا کر پوچھا کیا تم نے زبور چرائے ہیں؟ اس نے فورا کما ہیں' پھر فلیفہ نے اسے کما تو جاؤ لے آؤ' وہ کئے گئی ہیں نے تو نہیں چرائے' مجھے فداکی فتم ہیں نے نہیں چرائے۔ امام ابوبوسف روافیہ نے فلیفہ ہارون الرشید کو کما اے امیرالموسنین! لونڈی اقرار اور انکار میں تجی ہے لیکن فتم کھانے میں گنگار نہیں ہوتی' اس طرح فلیفہ کا غصہ محندا ہو گیا اور تھم دیا کہ امام ابوبوسف کو ایک لاکھ درہم انعام دیا جائے۔ فلیفہ کے مصاحب نے کما اس وقت تو روہیہ نہیں خزانہ بہت دور ہے' رات کا وقت ہے' صبح دے دیں گے۔ فلیفہ نے کما قاضی ابوبوسف نے رات کا وقت ہے' میج دے دیں گے۔ فلیفہ نے کما قاضی ابوبوسف نے رات کے وقت ہمیں آزاد کرایا ہے اور ہم اس کے انعام کو کل تک ملتوی نہیں کر سے۔ اچھا اب فورا آٹھ تھیلیاں اٹھا کر لے جاؤ اور انہیں گھر تک پہنچا آؤ۔

ایک بار ظیفہ بارون الرشید اپن بیتم ملکہ زبیدہ سے ناراض ہو گئے 'جھڑا یہاں تک پنچالور زبیدہ نے ظیفہ کو اتنا غصہ ولایا کہ اس نے کہ ویا کہ اگر آج رات تم نے میری سلطنت میں گزاری تو تہمیں بین طلاقیں ' یہ الفاظ کنے کے بعد جب اس کا غصہ لحصنرا ہوا تو اسے بخت ندامت ہوئی اور پچھتانے لگا کہ میں نے کیا کر ویا ' مجھے تو زبیدہ سے اتن محبت ہے کہ اس کے بغیر رہ نہیں سکت فقیہ اور آئمہ کو جمع کیا مسئلہ کا حل وریافت کیا گر انہوں نے کہا آپ کی سلطنت کی سرحد میں اتنی وسطح بیں کہ اگر ملکہ ساری رات سز کرے تو بھی کی سرحد سے باہر نہیں جاسمین ' اب تو انہیں تین طلاقیں ہو جا سی گی۔ ایک شخص نے فلیفہ ہارون الرشید کو کہا ایسے معاملات میں امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی فقتی بصیرت کام آیا کرتی تھی گر اب وہ فوت ہو بچے ہیں ' ہاں! ان کا ایک فوجوان شاگرہ ہے آپ کیس تو اسے بلا لاؤں۔ امام ابولوسف فرمانے گئے آپ کی ملکہ رات بحر مجد میں رہ ' مجد میں اور اپنی شلطی کا اعتراف بھی کیا۔ امام ابولوسف فرمانے گئے آپ کی ملکہ رات بحر مجد میں رہ ' مجد میں آپ کی سلطنت میں نہیں ہے اور نہ ہی مجد آپ کے قبضہ میں ہے ان المساجد اللّه "مجد میں الله کا گر ہیں "کی اور کی نہیں۔ فلیفہ اس جواب سے بڑا خوش ہوئے اور اس ون سے الم ابولوسف کو قاضی القضاۃ (چیف جسٹس) بنا دیا۔

کے بغیر دو مرا استعال میں نہیں لا سے گا۔ میرا ہمایہ آیک خشر دیںودی تھا اس نے اپنی عبارت گاہ بنائی تو میرے گھر کا راستہ نگ کر دیا' میں نے اسے بار بار کما گروہ کھنے لگا اگر تم خلیفہ عبای کے شاہی کجاوے پر بیٹھ کر آؤ گے تو اس وقت میں اپنا عبارت خانہ توڑ دوں گا اور اسلام قبول کر لوں گا' یہ دونوں کام میرے لیئے مشکل تھے' میں نے بھی قتم کھا لی کہ میں شاہی کجاوے پر بیٹھ کر ہی آؤں گا یا امیرالمومنین سے دونوں کام آپ ہی قضا کراستے ہیں' آپ ایسا ضرور کریں' میں نے کئی بار آپ کو امیرالمومنین سے دونوں کام آپ ہی قضا کراستے ہیں' آپ ایسا ضرور کریں' میں نے کئی بار آپ کو نمایت مشکل اور نازک مسائل سے بچایا ہے۔

فلیفہ نے اس دفت خدام خاص کو تھم دیا کہ میرے لیئے خاص حلوہ تیار کرد اور خاص برتن میں لاؤ۔ حلوہ تیار ہوا چیش کیا گیا اور دونوں نے کھایا۔ اس طرح اس کی ایک قتم پوری ہو گئی اب فلیفہ نے تھم دیا کہ میری خاص سواری لائی جائے اس پر شاہی کجاوہ رکھا جائے اہم ابویوسف اس پر سوار ہو کر اپنے پرانے گھر جا ئیں گئ امام ابویوسف شاہی کروفر سے اپنے گھر پنچ فدام خلافت اور لاؤ لشکر ساتھ تھا۔ یہودی کے عباوت خانے کی وجہ سے راستہ تھک تھا اس شان و شوکت سے اندر می نہیں جلیا جاسکتا تھا امام ابویوسف نے یہودی کو کہا اب تو راستہ کھول دو اس نے اپنا عباوت خانہ گرا دیا اور آپ کو اپنے برائے گھر جانے کا راستہ دیتا پڑا۔ اس نے آپ کو اس منصب اور شان و شوکت میں دیکھا تو اسلام قبول کر لیا۔ اس طرح آپ کی دو سری قتم یا خواہش بھی پوری ہو گئی۔

ایک ون ایک فخض حضرت امام ابوبوسف ریٹیے کی عدالت میں پیش ہوا اور کنے لگا میں نے آپ کی اجازت کے بغیر ہی ایک امیر آدی کو آپ کا نام لے کر رقعہ لکھا تو اس نے جھے بہت سابال دے ویا اگر آپ جھے بخش دیں تو یہ بال میرے لیئے حلال ہو جائے گا۔ آپ نے اے گرفآر کرا دیا اور حکم ویا کہ یہ بال اس فخص کو واپس کو جس سے تم نے جھوٹ بول کر لیا ہے۔ اس فخص نے کما کہ میں نے آپ کے استاد امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کا نام لے کر ایک رئیس سے مال لیا تھا تو انہوں نے قوم جھے بخش ویا تھا اور آپ جھے گرفآر بھی کرا رہے ہیں اور مال بھی واپس دلا رہے ہیں۔ مضرت امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے تو جھے یہاں تک اجازت دے دی تھی کہ اگر آئے وہ تی فرمایا میں ضرورت ہو تو میرا نام لے کر کی امیر سے اپنا مطلب نکال لیا کو۔ قاضی ابوبوسف نے فرمایا میں موروث ہو میرا نام لے کر کی امیر سے اپنا مطلب نکال لیا کو۔ قاضی ابوبوسف نے فرمایا میں ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ) نہیں ہوں' میں یعقوب ہوں' ابوبوسف ہوں۔ امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ) نہیں ہوں' میں یعقوب ہوں' ابوبوسف ہوں۔ امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ) نہیں ہوں' میں یعقوب ہوں' ابوبوسف ہوں۔ امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ) نہیں ہوں' میں یعقوب ہوں' ابوبوسف ہوں۔ امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ) نہیں ہوں' میں یعقوب ہوں' ابوبوسف ہوں۔ امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ) نہیں ہوں' میں یعقوب ہوں' ابوبوسف ہوں۔ امام ابوضیفہ رضی اللہ اللہ تعالی عنہ)

تعالی عند فقید سے 'فیاض سے 'فریب پرور سے 'وسیع الحال سے 'صاحب مال و مثال سے 'لوگ ان کی تعظیم کرتے ہے 'ان کے نام پر مال دے کر خوش ہوتے سے 'تم نے یہ حرکات کی تحمیں تو ان کے علم و فیاضی اور وسیع نظری کی وجہ ہے کی تحمیں اور کامیاب ہو جاتے سے 'میں ان کے وسر خوان کا نوالہ بردار ہوں 'فلیفہ کا ملازم ہوں 'فلیفہ کی پناہ میں رہتا ہوں 'تو میرا نام لے کرجو مال لیتا ہے لوگ خلیفہ کے ڈر اور خوف ہے دے وسیع بین 'یہ ایک جرم ہے 'میں تجھے ایک ون کی مسلت ویتا ہوں مال والیس کر آؤ ورنہ سزا ملے گی۔ دو سرے دن اے بلا کر پوچھا تو نے مال والیس کیا ہے یا نہیں اس نے بیا کہ میں والیس کر آؤ ورنہ سزا ملے گی۔ دو سرے دن اے بلا کر پوچھا تو نے مال والیس کیا ہے یا نہیں اس نے بیا کہ میں والیس کر آیا ہوں۔ اب امام ابونوسف نے اپنی طرف ہے اے اس مال سے دگنا دے ویا اور فرمایا یہ طال ہے 'اسے استعمال میں لاؤ اور جب خمیس دوبارہ ضرورت پڑے تو میرے باس چلے آؤ۔

\*\*\*\*\*\*

#### فصل چارم

### امام ابویوسف راینیه کی حکمت آمیز باتیں اور پر بیزگاری

- ا امام ابولوسف قرآن پاک کی تقیر کے ماہر تھے۔ مغازی رسول کے حافظ تھے اور ایام العرب سے بوری بوری وا تفیت رکھتے تھے۔ علم فقہ پر مکمل عبور حاصل تھا۔
  - ٢- آپ فرمايا كرتے تھے جے حياو شرم نہيں اے قيامت كے دن ندامت اٹھانى بڑے گا۔
- سنتوں میں اعلیٰ تین چزیں ہیں' نعت الاسلام' نعت صحت اور نعت استغنا ان تینوں نعمتوں کے بغیر زندگی مصیبت کا گھر رہتی ہے۔
- ۳ اگر علم الرائے حاصل کرنا چاہتے ہو تو روئی زینون کے ساتھ کھائے جس کے جگر میں گرمی ہووہ تھجور اور انجیر استعال نہ کرے۔
- ۵ علم أيك اليى دولت ب كه تم اس ك ايك حصه سے بھى فأكدہ نيس الما سكو گـ جب تك تم اپنے بدن كاسارا حصه اسے نه وے دو-
- ابراہیم الحریص فرمایا کرتے تھے احادیث کو ہر جگہ بیان نہ کرتے جانا' اس طرح تم بدنام ہو جاؤ گے۔ اور دنیا کی دولت محنت اور بصیرت سے حاصل کرنا' کیمیا گری سے دولت نہ کمانا ہمیشہ نگ وست رہؤ گے۔ علم' علم الکلام کے ذریعہ حاصل نہ کرنا اس سے تم مختاج رہو گے اور مسئلہ پر معذرت کرنی پڑے گی۔
- 2 یجی بن یجی نے فرمایا کہ میں نے امام ابوبوسف ریا کے کو موت کے دروازے پر دیکھا وہ فرما دہ فرما دہ فرما کے میں اپنے تمام فقاوئ اور فیصلوں سے رجوع کرتا ہوں۔ صرف کتاب اللہ اور سنت رسول مطابع کی پناہ حاصل کرتا ہوں۔
- ٨ قاضى ابويوسف ما في منصب خلافت حاصل كرنے كے بعد مر روز دو سو ركعت نفل شكرانه

پڑھا کرتے تھے۔ ای طرح الم این سلمہ بھی ساری زندگی ہر روز دو سو نوافل پڑھتے رہے جی کہ دونوں برھانے میں کمزور ہو گئے۔

9 - نضيل بن عياض نے فرمايا كه امام ابويوسف ماليجه نے كى فرمايا فقه ميں وہ كامياب ہو سكتا ہے جے نه ونيا كاخيال ہونه آ فرت كا-

ا - قاضی ابوبوسف مطیح فرمایا کرتے تنے لوگو نیک ارادہ کو اللہ حمیس علم کے خزانے دے گا۔ راوی بیان کرتا ہے کہ میں جب بھی امام ابوبوسف مطیح کے پاس گیا تو باین منصب و شوکت وہ مجھے اٹھ کر ملے۔ اگر کوئی دو سرا انہیں اٹھ کرنہ مانا تو آپ اے بھی تواضع اور عزت سے ملتے کئی بار وہ مجھے ملتے آئے مگر میں ازرہ تکبران سے اٹھ کر نہیں ملا مگر مجھے بعد میں ندامت ہوئی۔

اا۔ اساق بن ابی اسرائیل نے فرمایا کہ مجھے ابویوسف نے بتایا کہ فقہ حاصل کرنا ہو تو امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی مجالس میں آیا کو 'میں نے ساری زندگی آپ کی مجالس میں آیا کو 'میں نے ساری زندگی آپ کی مجالس میں مغازی رسول "کوفہ میں قیام پذیر سے تو میں ان کی مجالس میں جا کر مغازی رسول سنا کر تا تھا مغازی رسول سنا کر تا تھا وہ ہمیں مغازی ساتے 'ان دنوں مجھے امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی مجالس میں جائے کا موقعہ نہ ملا۔ میں پورا یک ممینہ مغازی سنتا رہا حتیٰ کہ ان کی ساری کتاب یاو کر لی۔ ایک ماہ بعد امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی خدمت میں حاضر ہوا تو آپ نے فرمایا یحقوب! تم نے کیا کیا کیا کہ ایک پورا ممینہ نافہ کر لیا۔ میں نے بتایا کہ میں محمر بن اسحاق کی خدمت میں رہا' ان کے باس جاؤ کیا گئا کہ ایک ہو اللہ تعالیٰ عنہ نے فرمایا یحقوب اب تم ان کے باس جاؤ کو ان سے طالوت کے محرکے کی تفصیلت پوچھنا اور یہ بھی پوچھنا کہ اس وقت جالوت کا جمنڈ ا کو اتفات کی جھنوں سے ہاتھ میں تھا۔ میں نے عرض کی حضور یہ پرانی باتیں ہیں اور بہت پرانے واقعات کی حرکے کی تفصیلت نے عرض کی حضور یہ پرانی باتیں ہیں اور بہت پرانے واقعات کی جھنے اگر وہ اس کا جواب نہ دے سے تو انہیں ندامت ہوگی گر مجھے کھی حکو کے انہیں ندامت ہوگی گر مجھے کھی حاصل نہیں موگا۔

٣ - داؤد بن رشيد كما كرتے تھے الم ابوطنيفه رضى الله تعالى عنه كے واحد شاكرو حضرت الم

بالمام اعظم ٥٣٠

ابوبوسف رحمتہ اللہ علیہ تھے جن پر آپ کو ناز تھا۔ میں ابوبوسف ویٹیے کی مجالس میں بیٹھتا تھا اللہ جب وہ احادیث بیان فرماتے تو مجھے یوں محسوس ہوتا ایک دریا ہے جو ٹھا ٹھیں مارتا بہہ رہا ہے۔ وہ علم فقہ پر مخفظ کو کرتے تو یوں محسوس ہوتا کہ ایک بحریکراں ہے جس کا کوئی کنارہ انسیں۔ علم الکلام پر بات کرتے تو ایک تیز رو چشمہ ابلتا دکھائی دیتا جو ہر مسلہ کو بیان کرتا جاتا۔

۱۳ - امام ابوبوسف فرمایا کرتے تھے کہ میں علم الفرائفن کے لیئے حضرت علی اور حضرت زید رضی اللہ تعالی عنما کے اقوال کو سند بناتا ہوں۔ اگر ان دونوں میں کمیں اختلاف ہوتا ہے تو حضرت علی کرم اللہ وجہ کے قول کو جمت بناتا ہوں ان دونوں کا اختلاف اجتماد پر جنی تھا مگر حضرت علی رضی اللہ تعالی عنہ کا اجتماد مشاہرہ رسول مٹھیلم کا ترجمان تھا۔ حضرت علی رضی اللہ تعالی عنہ کا اجتماد مشاہرہ رسول مٹھیلم کا ترجمان تھا۔ حضرت علی رضی اللہ تعالی عنہ کا اجتماد مشاہرہ رسول مٹھیلم کا ترجمان تھا۔ حضرت علی رضی اللہ تعالی عنہ کے فرمایا تھا حضور صلی اللہ علیہ و آلہ و سلم نے فرمایا تھا الفضاکہ علی د قضا کے محاملات میں تم سب سے علی فائق ہیں۔"

۱۳ - حضرت امام ابوبوسف والله نے فرمایا ایک مجلس میں مجھے امام ابوضیفہ رضی اللہ تعالی عنہ سے حیض و نفاس کے مسائل پر مختلو شنے کا موقعہ ملا مجھے اس کی وسعت کمیں دوسری مجالس میں نصیب نہیں ہوئی۔ علم نحو پر مختلو شنے کے لیئے میں ایک ایسے مخض کے پاس جا آجو اس فن کا امام تھا۔

ہارون الرشید خلیفہ عبای نقد میں ہوا کمال رکھتا تھا' آپ کے ایک قربی ساتھی نے کہا یا امیرالمومنین آپ نے ابوبوسف کو ضرورت سے زیادہ سرپر چڑھا لیا ہے حالانکہ آپ خود بھی فقہ میں ورجہ کمال کو پہنچ ہوئے ہیں۔ آپ ان کے منصب اور مراتب بردھاتے جاتے ہیں۔ ہارون الرشید نے بتایا کہ میں نے علم فقہ کی روشنی میں ہی ان کا انتخاب کیا ہے انہیں مناصب دیئے ہیں اور ان کی قدر افزائی کرتا ہوں۔ بخدا میں نے علم کے جس شعبہ میں ابوبوسف کا امتحان لیا وہ اس میں فائن نظر آیا۔ افزائی کرتا ہوں۔ بخدا میں نے علم کے جس شعبہ میں ابوبوسف کا امتحان لیا وہ اس میں فائن نظر آیا۔ وہ ہمارے ساتھ علم الحدیث پڑھا کرتا تھا' ہم گلسے جاتے تھے گروہ دماغ میں حفظ کرتا جاتا تھا' ہم مجلس حدیث سے اشحے تو وہ ہمارے لکھے ہوئے ایک ایک حرف کو زبانی ساتا جاتا بلکہ ہماری تحربے کمیں چھوٹ جاتی تو ہم اس کے حافظ سے اس کی اصلاح کرتے۔ میں نے ساری مملکت عباہہ میں ایک مصنے طفل مختص بھی نہیں دیکھا جو آپ سے فقہ اسلامی میں مقابلہ کر سکے۔ برے برے فقیہ ان کے سامنے طفل مختص بھی نہیں دیکھا جو آپ سے فقہ اسلامی میں مقابلہ کر سکے۔ برے برے فقیہ ان کے سامنے طفل

کتب وکھائی دیے ہیں۔ ہیں تو ان کے سامنے نمایت چھوٹا ہوں' جب وہ علاء اور فقیہ حضرات کی محفل میں ہیٹھتے ہیں تو ان کے پاس کوئی کتاب' کوئی تحریر نہیں ہوتی' وہ بات کرتے جاتے ہیں جیسے کوئی کتاب لکیے کر سامنے رکھی ہو۔ وہ دن کو عدالتی معاملات میں مصوف رہتے ہیں دات کو علاء کی مجالس میں درس دیتے ہیں۔ پھر فارغ او قات میں ہمارے پاس آتے ہیں اور خود پوچھتے ہیں کہ تمہمارے کیا کیا مسائل ہیں' ہم بیان کرتے ہیں تو ایک ایک مسئلہ پر تسلی بخش جواب دیتے ہیں اور ہماری مشکلات مل کرتے جاتے ہیں کہ ہماری مجلس میں بیٹھنے والے علاء بھی واد دیتے ہیں۔ وہ فی البدیہ ایسے نکات بیان کرتے جاتے ہیں کہ ہماری مجلس میں بیٹھنے والے علاء بھی واد دیتے بغیر نہیں رہ سے۔ ان تمام مصوفیات کے باوجود اپنے فدہب میں مضوط ہیں' اپ فلریہ میں استقامت کا بہاڑ ہیں۔ وہ لیقین اور ایقان کی ایک جُمان ہیں۔

خالد بن صبیج فرماتے ہیں کہ میں ایک ون امام ابولوسف علیہ الرحمت کی مجلس میں حاضر ہوا مر بورے ایک ماہ تک مشکل مسائل جمع کرتا رہا باکہ ان سے بوچھ سکوں' میں ان سے بغداد میں ملا میں نے یوچھاکہ آپ کوفہ چھوڑ کر بغداد کیوں آگئ انہوں نے مجھے جواب تونہ دیا مگر میں ایام ج تک ان کے ساتھ رہا' میں مسائل بیان کرتا جاتا' وہ نمایت عمرگ سے جواب وے کر مجھے مطمئن كرتے۔ يس نے ج كے ليئے اپنا اراده ظاہر كيا تو فرمانے لكے تم جانتے ہويس بغداد كيوں آيا ہوں من نے عرض کی نہیں' فرمانے لگے کہ کوفہ میں مجھے غربت اور تنگ دستی نے آگھیرا تھا۔ میں کثیرالحیال مول 'میرا ارادہ ہے کہ دربار خلافت کے قریب رموں 'امراء کا دروازہ کھکھناؤل شاید کوئی طازمت ال جائے۔ اس طرح میں اپنے اہل و عیال کی کفالت کر سکوں گا، مگراے ابوالشیم ! تم مجھے مشورہ دو کہ میں ایسا کر لوں یا نہ کروں میں نے کما آپ نے مجھ سے مشورہ طلب کیا ہے تو میرا صائب مشورہ ہ جس میں آپ کی خرخواتی ہو' میری رائے ہے کہ اگر آپ نے علم رضائے اللی کے لیے برحا ہے آ صبر اختیار کرو اور ان امراء کے دروازے پر نہ جاؤ اور تنگ دئی کو اپناؤ ایک وقت آئے گا کہ اللہ تعالی خود بی این فرانوں سے عنایت فرمائے گا۔ اگر آپ نے بیہ سارا علم ونیاداری کے لیے حاصل کیا تھا تو پھر آگے بوھے جہاں سے جو پچھ ملائے اٹھاتے جائے اور اپنے بچوں کا پیٹ بھرتے جائے۔ ان دنول بغداد میں روزگار کی کی نہیں ہے میں تج پر جارہا ہول آپ کو دد سو درہم دیا ہول اس سے كذارا كريس عجے واپس آؤل كا توحتى المقدور مزيد خدمت كول كا- ابوالمشيم فرماتے بيں كه عن

مكتبة نبوية

نے دو سو درہم دے کر انہیں امراء کے دروازہ پر جانے سے روک دیا۔ میں خود تج پر چلا گیا واپس آرہا تھا تو مجھے بغداد کے باہر بی کسی مختص نے بتایا کہ امام ابوبوسف قاضی القصناۃ کے عمدے پر لگ گئے ہیں۔ میں ان سے ملا انہوں نے میری تھیجت اور امداد کے لیئے شکریہ ادا کیا۔

پر فتوئی دے گا وہ جھوٹا ہو جائے گا۔ ادار اور اور اللہ عالی کے مصر اس کا اور مدر مصر اللہ کا اس میں مسال کا مسال کا مسال کا مسال کا مسال کا مسال کا

امام ابوبوسف مایلی عمر کے ایک حصہ میں برسام کی بیاری میں جتلا ہو گئے تھے 'جب ذرا افاقہ ہوا تو لوگوں نے آپ سے پوچھا کہ آپ کے حافظ پر بیاری کے کیا اثرات مرتب ہوئے ہیں ' فرمانے گئے مجھے قرآن پڑھتے پڑھتے رکاوٹ محسوس ہوتی ہے گر دو سرے علوم تو یوں میرے سامنے ہیں جیسے کوفہ کی گلیاں۔ امام ابوبوسف رحمتہ اللہ علیہ روزانہ علی الصبح مجلس علم میں حاضر ہوتے گر بعض اوقات غیر معمولی تاخیر کر دیتے 'وہ ان اوراد میں مشغول رہتے جو ان کے لیئے مخصوص تھے۔ وہ ان اوراد میں مشغول رہتے جو ان کے لیئے مخصوص تھے۔ وہ ان اوراد سے محروم نہ رہتے تھے۔ لوگوں نے کئی بار اس تاخیر کی وجہ بوچھی گر آپ مال جاتے اور

وقت پر نہ آئے۔

ہمارے پاس ایک ون توبہ بن سعد مزوری تشریف لائے' آپ امام ابو حقیقہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے خاص شاگرد تھے' فقہ اور دین کے دو سرے مسائل آپ ہے ہی پڑھے تھے۔ لوگوں نے آپ سے سفارش کی کہ آپ انہیں اس تاخیر ہے روکیں' وہ آپ کے ہم سبق ہیں' ہم درس ہیں' استاد بھائی ہیں' توبہ بن سعد امام ابو یوسف کے گھر اس وقت تشریف لے گئے جب وہ وظیفہ ہیں مشغول تھے اور عرض کی اگر آپ علی الصبح لوگوں ہیں جاکر علم پڑھائیں تو علم دین کی اشاعت ہوگی اور اس کے اثرات دور دور تک پنجیں گے اور یہ کام وظیفوں اور اوراد سے کم نہیں ہے۔ امام ابو یوسف نے توبہ بن سعد کی بات س کر تبہم فرمایا کہ جس خفل ہیں میں صبح مشغول ہوتا ہوں اس میں کی کو اختلاف بن سعد کی بات س کر تبہم فرمایا کہ جس خفل میں میں صبح مشغول ہوتا ہوں اس میں کی کو اختلاف

نہیں ہو آ۔ حضرت توبہ نے فرمایا بیہ بات درست ہے گر علم کی اشاعت کے لیئے کتاب اللہ کا زول ہوا ہے' اس کے لیئے رسول اللہ صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم معبوث ہوئے تھے' کیی عمل صحابہ کرام کا تھا' آبعین کا تھا' بیہ بات سن کر امام ابویوسف خاموش ہو گئے گر اس کے بعد آپ نے اپنا معمول بنا لیا کہ صبح سورے وقت پر مجلس علم میں تشریف لے آتے اور تعلیم و تدریس کا سلسلہ جاری موجا آ

ابو تربیمہ بن علہ رحمتہ اللہ علیہ فراتے ہیں کہ میں نے اپنے والد سے ساکہ وہ لام زفر کی خدمت میں ہر روز حاضر ہوتے اور وہتی مسائل دریافت کرتے تھے اور بعض مسائل پر ان سے بحث بھی کرتے، میں ولیل طلب کرتا، بھر تنقیحات پر آتا، بحث طویل ہوتی تو آپ فراتے اب میرے پاس مزید ولیلیں شمیں ہیں۔ میں اس مسئلہ پر مزید بحث شمیں کر سکتا اس اعتراز کے باوجود لام زفر علم و زہر کی وجہ سے استے عزیز تھے کہ میں انہیں بجدو ڑبھی شمیں سکتا تھا۔ اس طرح عرصہ گذر گیا لام زفر علم الحاب، وصایا کے مسائل، قرات اور عورتوں کے مخصوص مسائل چین و نفاس پر اچھی تفظو فراتے تھے۔ میں ان کی مجائس کی برکات سے اپنے مقاصد حاصل کرنے میں کامیاب ہوگیا۔ دو سری فراتے و فروغ کو جانے تھے، میں ان کی برکات سے اپنے مقاصد حاصل کرنے میں کامیاب ہوگیا۔ دو سری و فروغ کو جانے تھے، حماب کی باریکیوں کے ماہر تھے۔ میں ان کے بال آنے جانے لگا تو مجھے اطمینان ہوا، مجھے ایے ایسے نکتے مکشف ہوئے جنہیں میں پہلے نہیں جانا تھا۔ وہ مسئلہ پر گفتگو بھی فراتے اور چرے پر طال کے آثار بھی نہ لاتے۔ وہ معلم بھی تھے اور محن بھی، میں ان کے باس مقیم ہوگیا یہاں تک کہ لوگ اور ون رات ان کی گفتگو کو لکھتا جاگا۔ میرے پاس آپ کی امال کا ذخیرہ جمع ہوگیا یہاں تک کہ لوگ میرے پاس وہ وال کل حاصل کرنے آتے جو کہاوں میں نہیں شے۔

اہم ابوبوسف والحجہ فرایا کرتے تھے کہ دو مسلول میں جھے بال برابر فرق محسوس ہوا گرش انہیں حل نہ کرسکا۔ یہ مسائل میرے دل میں کھکتے تھے 'گر اب میرے استاد اہام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ موجود نہ تھے۔ داؤد بن رشید الخوارزی نے فرمایا کہ میرے والد نے اہام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کی خدمت میں حاضر ہو کر چند مسائل پوچھے' یہ مسائل ان کے دل میں کھکتے تھے۔ لام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے انہیں جو اب دیا' واپس گھر آئے تو وہ مطمئن تھے 'گرچند مسائل وہی ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے انہیں جو اب دیا' واپس گھر آئے تو وہ مطمئن تھے 'گرچند مسائل وہی سے اثر گئے وہ شرم کی وجہ سے دوبارہ حضرت اہام اعظم والله کے پاس جانے سے ابکیاتے تھے گردہ اہام ابوبوسف والح کے پاس جانے سے ابکی ان کے سامنے مسائل پیش کیئے اہام ابوبوسف والح نے اپن سے گئے ان کے سامنے مسائل پیش کیئے اہام ابوبوسف والح نے اپن مسائل کا حل پیش کیا جس سے میرے والد کو تسلی ہوگئے۔

حسن بن زباد رجمتہ اللہ علیہ فراتے ہیں کہ ہم ایک سال لماخ ابولوسف ملے کے ساتھ ع

مناقب امام أعظم مكتبه نبويه

کرنے گئے وہ راستہ میں بیار ہو گئے 'ہم " بیرمیونہ " پر منزل گیر ہو گئے۔ اس ودران آپ کی بیار پرس کے لیئے سفیان عبید تشریف لائے ' مزاج پرس بھی کی اور چالیس احادیث بھی روایت کیں۔ جب وہ چلے گئے تو امام ابوبوسف علیہ الرحمتہ نے ہم سب کو بلایا اور وہ تمام احادیث سند ' علت ' مشن سمیت سنا دیں طلانکہ آپ بیار بھی تھے اور سفر کی تھکاوٹ بھی تھی۔ امام ابوبوسف ایک کتاب لکھ رہے تھے ' اس تحریر کا صرف ایک ہی مخف کو علم تھا ' آپ نے کتاب کمل کرنے کے بعد اس مخف رہے تھے ' اس تحریر کا صرف ایک ہی اس نے کما نہیں ' آپ نے فرمایا ہم اس کی بد نظرے بج گئے اور سے شحر پڑھا۔

كانه من سوء تاديبه اسلم في كتاب سوء الادب

(ترجمہ) گویا اس کی سوء تادیب سے کتاب سوء ادب سے چ گئی۔

عباس بن الوليد رحمته الله عليه نے فرمايا كه جم حجاج بن ارطاق كى سند فقه الحديث كے ليئے ابومعاويه كى طرف آتے جاتے تھے۔ ابومعاويه نے فرمايا كيا تممارے ساتھ امام ابوبوسف نہيں جي ابومعاويہ نے بن ارطات ميں خواج بن ارطات ميں نہيں ہوں ہے بتايا كه وہ بيں فرمانے گئے انہيں چھوڑ كر ميرے پاس كيوں چلے آتے ہو۔ ہم حجاج بن ارطات كے پاس احاديث كو حضرت امام ابوبوسف مرافية كے پاس احاديث كو حضرت امام ابوبوسف مرافية كے سامنے بيان كيا تو آپ نے كئى مقامات ير تھم كردى۔

امام ابوبوسف رحمتہ اللہ علیہ اپ دوستوں کے لیئے مثالیں قائم کرتے تھے۔ امام محمد ابن الحمن کے لیئے فرماتے ہیں کہ " وہ تلوار ہے اگر اس میں زنگ نہ ہو تا اور صفائی ہو جاتی تو اس کی کاٹ کا جواب نہیں تھا۔" محمد بن فضل بن عطیہ رحمتہ اللہ علیہ نے فرمایا کہ میں نے بغداد میں دیکھا کہ دو محف ایک لونڈی کے لیئے جھڑا کر رہے ہیں ' ہر ایک اس لونڈی کی ملکیت ہے بریت کر رہا تھا۔ ایک کہتا کہ یہ اس کی ہے ' دو سری کہتا ہے میری نہیں اس کی ہے۔ قاضی ابوبوسف وہاں سے گذرے رک گئے معالمہ کی تفصیلات معلوم کیں ' آپ کا چرہ متغیرہ ہو گیا اور اس قدر متاثر ہوئے کہ قریب تھا کہ بے ہوش ہو کر گر پڑتے۔ آپ نے انہیں مخاطب کر کے فرمایا تم لوگوں کو اللہ کا کہ قریب تھا کہ بے ہوش ہو کر گر پڑتے۔ آپ نے انہیں مخاطب کر کے فرمایا تم لوگوں کو اللہ کا خوف نہیں آ تا اور اس کے عذاب سے نہیں ڈرتے ' تم نے ایک بے بس عورت کو اپنے غذاق کا نثانہ

يناليا -

قاضی امام ابوبوسف داینجہ ایک دن اعلیٰ نسل کے فچر پر سوار ہو کر گھر سے اس شان سے نکلے کہ ان کے اردگرد دو سو سوار غلام تھے۔ آپ کی سواری کی رکابیں سونے کی بنی ہوئی تھیں۔ لوگوں نے آپ کو دیکھا تو کسے گئے آپ جیسے عالم دین اور واقف شریعت کو زیب نہیں دیتا کہ سونے کی رکابیں سواری کے لیئے رکھیں۔ آپ نے فرمایا جھے یہ معلوم ہے کہ سونے کا استعمال مردوں کے لیئے ممنوع ہے گر میں تو علم کی شان و شوکت کو لوگوں کے سامنے لانا چاہتا ہوں اور بتانا چاہتا ہوں کہ ایک درزی کا اثرکا ایک دھونی کا شاگرد اور ایک تیلی کا نوکر دین کا علم پڑھ کر کس مقام پر پہنچ سکتا ہے ، ہو سکتا ہے کہ ان دیکھنے والے لوگوں کے دلوں میں بھی دین کے علم کی عظمت واضح ہو اور وہ بھی اسے حاصل کرنے کے لیئے دن رات وقف کر دیں۔

امام ابویوسف روینی نے امام حسن بن زیاد رخمتہ اللہ علیہ کو سولہ مسئلے سمجھائے اور ان پر بار
بار حکرار کی باکہ انہیں ذہن نشین ہو جا کیں' اس کے باوجود کنے گئے مجھے یوں محسوس ہو با ہے کہ تم
ان مسائل کو نہیں سمجھ پائے۔ امام ابویوسف فرمایا کرتے سے کہ میں جب اپ والد کے لیئے دعا کر با
ہوں تو پہلے اپ استاد گرامی حضرات امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے لیئے دعا کر با ہوں کیونکہ میں
درکھتا ہوں کہ حضرت امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ اپ والدین کے لیئے دعا ما تھتے تو پہلے اپ استاد
معلو کے لیئے دعا کیا کرتے ہے۔ ایک محض نے بتایا کہ امام ابویوسف ہر نماز کے بعد یہ دعا ما تھتے اللہم
معفورلی والدی والابی حنیفہ اے اللہ مجھے بخش' میرے والدین کو بخش اور امام ابو حنیفہ رضی
اللہ تعالی عنہ کو بخش دے۔



فصل پنجم

ر مناقب امام اعظم

### امام ابوبوسف راینی خلیفه عباسیه اور امرائے سلطنت کے درمیان

عثمان بن عليم كت بي كد مجھے امام ابويوسف ميليد كا ايك واقعد ياد آنا ہے كہ جب ظيفہ عباس بارون الرشيد نے امام ابويوسف ميليد كا ايك واقعد ياد آنا ہے كہ جب ظيفہ عباس بارون الرشيد نے امام ابويوسف ميليد كو بلا كر كما كہ آپ اس سے مناظرہ كريں 'آپ نے فرمايا اميرالمومنين تلوار منگوائے اس كے سامنے ركھ كراہے اسلام كى دعوت ديجے مان جائے تو بهترورند اس كى گردن اڑا ديجے۔ ايے اس كے سامنے ركھ كراہے اسلام كى دعوت ديجے مان جائے تو بهترورند اس كى گردن اڑا ديجے۔ ايے بول كے ديوں سے مناظرہ كرنادين كى توبين ہے۔ ايوں كے ليئے اسلام نے يمي سزا ركھى ہے۔

امام ابوبوسف اور امام شریک دونوں ہارون الرشید کے پاس بیٹے ہوئے تھے۔ امام شریک کے کما امیرالموشین آپ کا بیہ قاضی ابو صنیفہ بریٹی کا شاگرد ہے۔ ان دونوں کا عقیدہ ہے کہ ان کا اور حضرت جرئیل علیہ البلام کا ایمان ایک جیسا ہے۔ یہ بات من کر ہارون الرشید غصہ میں آگیا۔ امام ابوبوسف سے بوچھاکیا واقعی تمہارا بھی عقیدہ ہے 'آپ نے جواب میں کما میں تو یوں شیں کہتا میں تو یوں شیں کہتا میں تو یوں کمتا موں کہ جس اللہ پر جرئیل علیہ البلام کا ایمان ہے 'میرا بھی اس اللہ پر ایمان ہے 'گر شریک ایک متا ہوں کہ جس اللہ پر جرئیل علیہ البلام کا ایمان ہے 'میرا بھی اس اللہ پر ایمان ہے 'گر شریک ایک دوات بیان کرتے ہیں اور اس کی نسبت حضور صلی اللہ علیہ و آلہ وسلم سے ملاتے ہیں اور کھتے ہیں کہ قریش کو سیدھا رکھو جب تک وہ سیدھے رہیں' آگر دہ ذرہ بھر بھی چوں و چرا کریں تو تلواریں اشما کر ان کے سروں کی فصل کا دو۔ ہارون الرشید نے پوچھا شریک کیا تم نے یہ حدیث بیان کی ہے ؟ اس نے کما ہاں' میں نے اعمش سے یہ حدیث من کربیان کی ہے۔ ہارون الرشید نے ورہان کو درہان کو گرفیو اور اسے باہر نکال دو۔ امام بغوی قرماتے ہیں کہ اس وقت میں وہاں موجود تھا جب کہا شریک کو گرفیو اور اسے باہر نکال دو۔ امام بغوی قرماتے ہیں کہ اس وقت میں وہاں موجود تھا جب مربان شریک کو گرفیو اور اسے باہر نکال دو۔ امام بغوی قرماتے ہیں کہ اس وقت میں وہاں موجود تھا جب مربان شریک کو گرفیو اور اسے بہر نکال دو۔ امام بغوی قرماتے ہیں کہ اس وقت میں وقت میں آگئی سفر کر رہ ہر کے جارہا تھا اور اس کی چادر اس کے ملتھ سواری میں آگئی سفر کر رہ ہر کیا اور امام ابوبوسف دیا تھیں ماتھ سواری میں آگئی مرکز رہ ہر کہ بارون الرشید تی پر گیا اور امام ابوبوسف دیا تھیں ماتھ سواری میں آگئی مرکز کر ہا ہر کے اور اس کے ماتھ سواری میں آگئی مرکز کر ہا ہر کے اس اور اس کے ماتھ سواری میں آگئی مرکز کر ہا ہر اس کے ماتھ سواری میں آگئی مرکز رہ کے مرکز کر ہور کر اس کے مرکز کر ہیں آگر کر ہا ہر کر ای کر کر ہا ہر کے مرکز کر ہیں آگر کر اس کے مرکز کی مرکز کر ہور کر کر ہر ہر کے دور ہور کر ہور کر کر ہور کر ہور کر کر ہور کر کر ہور کر ہی ہور کر کر ہور کر ہور کر کر کر ہور کر کر کر ہور کر کر کر ہور کر کر ہور کر کر ہور کر کر ہور

سے 'شریک بھی ای سال جج کو گئے 'شریک نے کما مجھے تو موت بی بھلی ہے اور زندہ رہے کا کوئی جی نہیں کہ امام ابویوسف خلیفة المسلمین کی سواری میں جے کے لیئے سفر کر رہا ہے، شریک نے یو چھا کہ آج لوگوں کو کس نے نماز پڑھائی کما گیا امام ابوبوسف نے وہ اور جل گیا۔ ہارون الرشید مکہ ے مدینہ آئے تو بھی امام ابوبوسف کو اپنی سواری میں بٹھایا ہوا تھا، ہارون الرشید نے کما کل ہم زیارات کو چلیں مے وہ تمام مقامات ویکھیں مے جو رسول خدا حضرت محر مصطفیٰ صلی اللہ علیہ واللہ وسلم سے منسوب ہیں واقدی کو بلایا گیا اور اس ساتھ لے کر تمام مشاہدات اور زیارات کی زیارت ك مج بوكى تو بارون الرشيد نے امام ابولوسف كو بلايا دونوں ايك بى سوارى ير سوار بوئے و فقهائے مينه بھي ساتھ ساتھ تھے' قاضي ابويوسف بتاتے جاتے فلال مقام كو حضور صلى الله عليه واله وسلم ے یہ نبت ہے الل جگہ پر حضور مراجع رونق افروز ہوئے تھے الل جگہ کا نام یہ ہے افلال مقام یر حضور مان کی است دن رہے وال مقام پر حضور التیام نے بید یہ کام کیا فلال فلال جگه جنس ہو کیں۔ دوران جنگ حضور طافیظ کمال کمال ٹھمرے۔ واقدی کہتے ہیں کہ میں حیران تھا کہ اس شخص کو اتنا تعارف اور اتنی واقفیت ہے۔ حافظے کا یہ کمال کہ ایک ایک جگہ کی تفصیلات بتاتے جاتے۔ امام ابوبوسف رات کو میرے ساتھ گفتگو کرتے ان مقامات سے واقفیت حاصل کرتے وو سرے دن ایک ایک مقام کو نمایت تفصیل سے بیان کرتے جاتے 'میں ان کے حافظے کی داد دیتا۔

امام ابویوسف رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ مہدی کا دور حکومت تھا، میں بری تھ دی سے وقت گذار رہا تھا، میں نے اپنی یبوی کے مکان کی ایک لکڑی نیج دی آکہ چند ونوں کے لیے اپنے افراجات پورے کر سکول، میری ساس نے سنا تو بری ناراض ہو کیں، مجھے مطعون کرنے لگیں، مجھے بری کوفت ہوئی، میں کوفہ کو چھوڑ کر بغداد آگیا اور وزیر کا مہمان ہو گیا، اس نے بچے ہے وہ صلوا النوف "کا مسئلہ دریافت کیا، میں نے وہ تفصیلات بیان کیں جو مجھے میرے استاد کرم امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ نے پڑھائی تھیں۔ دو سرے دن وہ مجھے دربار ظافت میں لے گیا، تھوڑے ونوں بعد خلیفہ ہارون الرشید مند بعد خلیفہ مہدی فوت ہو گیا اور ہادی تخت ظافت پر بیٹھا گر تھوڑے دنوں بعد خلیفہ ہارون الرشید مند آرائے ظافت عباسیہ ہو گیا۔ میری قسمت کا ستارہ چکا ہارون الرشید نے مجھے تمام ممالک کے قاشوں پر قاضی لگا دیا اور اس طرح میں قاضی القضاۃ سلطنت عباسیہ ہو گیا۔

ملکہ نیرہ ہارون الرشید کی ہڑی چیتی ہوی تھی۔ ایک بار ان کے درمیان جھڑا ہو گیا ہوری الرشید نے کما چوری طوے سے زیادہ میٹی ہوتی ہے ' نیرہ نے کما نمیں طوہ زیادہ میٹھا ہوتا ہے ' وہ ای بات پر جھڑ رہے تھ تو امام ابو یوسف رحمتہ اللہ علیہ تشریف نے آئے ' ہارون الرشید نے مارا معالمہ پیش کیا اور کما آپ ہی فیصلہ کریں۔ امام ابویوسف مطبع کنے گئے بی اس وقت تک فیصلہ میں کوں گا جب تک میرے سائے ایک تھال طوہ اور ایک تھال چوری کا لا کر نہ رکھ ویا جائے ' دونوں تھال لائے گئے ' امام ابویوسف مطبع نے ایک ایک چیچ دونوں سے چھا آپ نے فرمایا چوری کھاتے ہوئے تو جھے طوے کی مضاس کا خیال آتا ہے طوہ کھاتا ہوں تو جھے چوری کی یاد آتی ہے' آپ دونوں کے سائے دونوں چیزوں کو مزہ لے کے کر کھاتے رہے۔ ہارون الرشید نے فرمایا اب تو دونوں کے سائے دونوں جیزوں کو مزہ لے کے کر کھاتے رہے۔ ہارون الرشید نے فرمایا اب قو کوئی فیصلہ کریں ' امام ابویوسف میلیٹی نے کما چوری میٹھی تو ہے نہ کہ طوہ جیسی! دونوں میاں یوی ہنس پڑے اور ایک دو مرے کے غصے کو بھول گئے۔

حضرت لهام بولوسف ملے 'انہوں نے اپنی نگ وی کی شکایت کی اور کہا کہ میری ہمائیگی میں روانہ ہوا تو اہام ابولوسف ملے 'انہوں نے اپنی نگ وی کی شکایت کی اور کہا کہ میری ہمائیگی میں ایک بہت بڑا دولت مند رہتا ہے میں چاہتا ہوں اس کی نوکری کرلوں۔ میں نے کہا کہ آپ علم کی دولت پر مبرکریں 'علم تہیں ضائع نہیں کرنا چاہیے ' میں اٹھا تو میرا دامن ان کے لوٹے ہے چٹ گیا لوٹا پرانا تھا۔ وہ ٹوٹ گیا ابولوسف کو بڑا صدمہ ہوا اس کے چرے کا رنگ بدل گیا' میں نے کہا بھائی فکر نہ کرو اس نقصان کا ازالہ ہو جائے گا' فرمانے گئے تہیں معلوم نہیں میرے گھر میں مرف بی فکر نہ کرو اس نقصان کا ازالہ ہو جائے گا' فرمانے گئے تہیں معلوم نہیں میرے گھر میں والدہ کے کام بھی آنا تھا۔ دورہ میری والدہ کے کام بھی آنا تھا۔ دھڑے عبداللہ بن البارک فرماتے ہیں میرے پاس چند دینار تھے ان کے حوالے کیئے اور خود جج کو چلا گیا واپس آیا تو رائے میں ہی خاکہ اہم ابولوسف قاضی القعناہ مقرر ہو گئے ہیں ان کی شخواہ ایک لاکھ تمیں ہزار درہم ماہانہ مقرر ہوئی ہے' جب ان پر دولت کی بارش ہوئی تو اب ان کا سے صل ہے کہ ان کے گھوڑوں کے لیئے ایک علیمہ اسطبل بنایا گیا ہے اور خلیفہ ہارون الرشید ہر روز انہیں اپنی خصوصی محفل میں بلاآ اور اعزاز و اگرام سے بٹھانا ہے' وہ اس شان کے مالک بنے کہ خلیفہ انہیں اپنی خصوصی محفل میں بلاآ اور اعزاز و اگرام سے بٹھانا ہے' وہ اس شان کے مالک بنے کہ خلیفہ انہیں ان کی حکور کی گئے کہ خلیفہ کی خلیفہ کی خلیفہ کی مورف کے کہ خلیفہ کی دورہ اس شان کے مالک بنے کہ خلیفہ کیا تھوں کو مالک بنے کہ خلیفہ کا کھوڑوں کے لیک ایک جو کہ خلیفہ کی دورہ اس شان کے مالک بنے کہ خلیفہ کو خلیفہ کو میں میں کا دائے کہ کیا کہ کو کو کیا گئی جو کہ کو کی کو کیا گھوڑوں کے لیک کی دورہ کی خلیفہ کو کی اس کی مالک بنے کہ خلیفہ کی دورہ کی کو کیا گھوڑوں کے لیک کیا کہ کو کو کا کھوڑوں کے لیک کے کہ خلیفہ کی دورہ کی کو کی کھوڑوں کے لیک کیا کہ کی دورہ کی کیا گھوڑوں کے لیک کے کہ خلیفہ کی دورہ کی کھوڑوں کے لیک کے کو خلیل کیا کہ کی کیا کو کیا کے کی دورہ کی کو کی کورٹوں کے لیک کے کی کو کو کی کی کی کو کی کو کو کی کو کو کی کو کو کر کیا کی کو کی کو کی کی کی کی کی کو کو کی کی کو کو کی کو کی کو کی کی کو کی کی کیا کی کو کی کو کی کو کی کو کو کی کو کو کی کو کی کو کی کو کو کو کی کو کی کو کر

کے دربار پر فچر پر سوار ہو کر جاتے ہیں' خلیفہ کے ایوان کے پردے اٹھائے جاتے ہیں اور فچر پر سوار ہی اندر چلے جاتے ہیں' ہارون الرشید خود استقبال کر ہا' السلام علیکم کہتا اور امام ابویوسف کو دیکھ کر سے شعر پڑھتا۔

### جاءت به معتجر ابيده

" اے سواری لے آئی اور وہ اپنا دامن لیب کر میرے گھر تشریف لائے"

قاضی ابویوسف کا اعزاز اور رتبہ اتنا بلند تھا کہ آپ کے تھم سے کئی امراء دربار اور روساء بغداد کی شمادت اور گواہی رد کی جا بچلی تھی۔ ان لوگوں نے ہارون الرشید سے شکایت بھی کی ہارون الرشید نے کبیدہ خاطر ہو کر آپ کو متنبہ بھی کیا گر آپ نے بتایا کہ یہ لوگ کتے ہیں کہ ہم امیرالمومنین کے غلام ہیں شریعت محمیہ میں غلام کی گواہی مردود ہے اور اسے اسلامی عدالت مسترد کرتی ہے۔

قاضی ابویوسف سلطنت عباسیہ میں چیف جسٹس کی حیثیت سے است اعزاز و اکرام کے مالک تھے کہ عدالت میں بیٹھتے تو کسی کی رو رعایت نہ کرتے تھے اور بوے سے بوے عباسی امراء اور روسا کو خاطر میں نہ لاتے تھے۔ ایک دفعہ بغداد کا ایک وزیر اور رکیس جو سلطنت عباسیہ کا رکن بھی تھا اور خلیفہ عباسی کا رشتہ دار بھی عدالت میں حاضر ہوا تو امام ابویوسف رابھی نے اس کی شمادت مسترد کر دی اور اسے " مردود الشمادت " قرار دے دیا۔ اس نے خلیفہ سے شکایت کی خلیفہ ہارون الرشید نے امام ابویوسف رابھی سے بوچھا تو آپ نے فرمایا یہ شخص عدالت میں کھڑے ہو کر کہتا تھا کہ میں خلیفہ کا غلام ہوں ' شریعت میں غلام کی شکایت مردود ہو گئی شمادت مورود ہوتی ہے۔ مسترد کر دیا اور آگر یہ جھوٹ کہتا تھا تو میں نے اس کی شمادت کو مسترد کر دیا اور آگر یہ جھوٹ کہتا تھا تو میں ہے۔

اس بات كا رنج اس وزیر عزیز كے دل میں تھا اس نے خلیفہ كو لهم ابوبوسف میلئے كے خلاف ابھارنا شروع كر دیا حتی كه لهم ابوبوسف نے خلیفہ ہارون الرشید كے طور طریقے بدلے بدلے دكھے تو سمجھ گئے كہ بيہ سارى كارستانی اى وزیر كی ہے۔ لهام ابوبوسف ریائی بھی دربار سے دور دور رہے گئے۔ اننی دنوں ایک ہاشمی رئیس مرگیا جو خلیفہ وقت كا قربی رشتہ وار تھا۔ اس نے بہت سے امور سلطنت چھوڑے اور اس طرح بردى جائداد بھی چھوڑی اور ایک فخص کے جن میں وصیت كر

دی جس میں لکھاکہ میرے بعد تمام امور فلال فخص کے مشورے سے طے کیئے جائیں گے۔ اب سے معالمہ زیر بحث آیا کہ اس کا اصل وصی کون ہے اور انہیں کس حد تک موثر قرار دیا جائے۔ خلیفہ ہارون الرشید نے اپ وزیر کی بن خالدے فرمایا کہ اسے فقما کو جمع کریں وزیر کی نے یوچھا کہ كن كن كن فقها كو بلايا جائے ارون الرشيد نے كما شريك بن عبدالله كو بلاؤ ابوالخنرى كو دعوت وو اور لیقوب کو بھی بلالینا' وزیر کیلیٰ بن خالد کو خلیفہ ہارون الرشید کا اس اندازے امام ابوبوسف داینچه کا نام لینے پر برا تعجب ہوا بسرحال تمام فقها تشریف لائے۔ وزیر نے سب سے پہلے شریک کو وعوت مشاورت وی اور بتایا کہ وصیت کرنے والے نے یوں کما ہے کہ اب اس وصی سے کیا معاملہ کیا جائے۔ شریک نے کما وصیت کرنے والے سے پوچھا جائے اور وہ تقدیق کرے کہ واقعی اس نے اس منحض کو اپنا وصی بنایا تھا' شریک کا جواب سن کر بجی بن خالد ہنس پڑا اور بتایا حضرت وہ تو مرگیا ہے' اب توجم اے قیامت کے دن ہی بلا کر پوچھ کتے ہیں لیکن ہمیں تو اس معاملے کو اب طے کرنا ہے۔ شریک نمایت شرمسار ہوئے' اس کے بعد ابوالبختری سے بوچھا گیا' اس نے کما یہ سوال برا مشکل ہے اس کا حل میرے پاس نہیں ہے۔ وہ بے لبی سے ماتھا کھجانے لگے اور ماتھے پر آیا ہوا پسینہ یو نچھنے لگے اور نمایت مردہ آواز میں بات کرتے وزیر نے کما واقعی یہ مئلہ بت مشکل ہے اس کا حل کرنا فقما كاكام نيس تاہم شريعت نے اس كا حل ضرور ركھا ہو گا۔ وزير نے سب سے آخر بيس الم ابوبوسف کو مخاطب کیا اور بوچھا کیا آپ اس مسلم کا حل پیش کریں گے۔ آپ نے فرمایا سے وونول فقیہ ہیں جب تک بید وونوں متفق نہ ہوں مے کوئی معالمہ طے نہیں ہو سکتا۔ اب بیر سارا معالمہ خلیفہ ہارون الرشید کے سامنے پیش کیا گیا تو وہ شریک کے جواب سے نمایت محظوظ ہوا اور ہنتا رہا اور فرمایا تم نے پہلے ہی آمام ابوبوسف سے مسلم کیوں نہ بوچھا آکہ ان حضرات کی مفتحمہ خیر مفتاً وہم تک نہ پہنچتے۔ یہ معالمہ جب عوام میں جانے گا تو اوگ بھی ہنسیں کے اور دربار خلافت کی عقت ہوگی کہ ایسے ایسے فقما کرام بھی وربارے سلک ہیں۔ وزیر فرمانے لگا یا میرالمومنین آپ نے جس طرح الم ابوبوسف مانید کا نام بعد میں رکھا تھا اس ترتیب سے مسئلہ بوچھتا رہا اور ان کی باری سب سے آخر میں آئی کیونکہ میں نے محسوس کیا ہے کہ آپ کے دربار کے بعض لوگ ان سے بغض رکھتے ہیں اور اشیں عزت نمیں دیتے اور میرے کان میں ان کے خلاف بہت سے باتیں آچکی ہیں۔

امام ابوبوسف نے اس مسئلہ کو نمایت قابلیت سے بیان کیا اپنے برگائے سب مطمئن ہو گئے ، فلیفہ ہاون الرشید کی ناراضگی جاتی رہی اور قاضی ابوبوسف کی قابلیت کا اعتراف کرتے ہوئے اشیں کھلے دل دوبارہ عزت و احترام ملئے لگے۔ حضرت امام ابوبوسف ریائی اپنی معاملات میں اپنی استاد حضرت امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو وسیلہ اور راہنما بنایا کرتے تھے ، اننی کے فیصلوں کی روشنی میں امور سلطنت کو حل کرتے اور عدالتی فیصلے کیا کرتے تھے۔ وہ ایسے مشکل معاملات میں بعض او قات امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کی روح سے استمداد بھی کرتے تھے۔

بھربن الولید الکندی فرمایا کرتے تھے میں نے یہ واقعہ امام ابویوسف بریٹیے ہے ان کی بھاری کی حالت میں سنا تھا جس ہے ان کا انقال ہو گیا تھا۔ آپ نے مرض الموت میں یہ الفاظ کے .....

اے اللہ! تو جانتا ہے میں نے ساری عمرزنا نہیں کیا (حرام فرج سے وطی نہیں کی) اے اللہ! تو خوب جانتا ہے کہ میں نے حرام کا ایک اللہ این اللہ! اے اللہ! تو گواہ ہے کہ میں نے حرام کا ایک لقمہ بھی نہیں نمیں کھایا' آپ نے مزید کما کہ اے اللہ! تو جانتا ہے کہ میرے پاس عدالت میں اگر دو فراق آجائے تھے تو میں نے بھی کوئی فیطہ اپنی خواہش سے نہیں کیا صرف تیری رضا کے لیے کیا اور اس علم کی روشی میں کیا جو تو نے مجھے دیا تھا۔ اس کے باوجود اگر مجھے ہے کوئی فیط فیصلہ ہوا تو مجھے معاف کردے' بخش دے۔ ابو حفض فرمایا کرتے تھے کہ امام ابویوسف رحمتہ اللہ علیہ جسے بلند پایہ شخص سے کردے' بخش دے۔ ابو حفض فرمایا کرتے تھے کہ امام ابویوسف رحمتہ اللہ علیہ جسے بلند پایہ شخص سے توقع نہیں کی جاسمتی کہ وہ موت کے دروازے پر گھڑے ہو کہ اللہ کے حضور یہ باتیں کرے۔

## امام ابو یوسف عدل وانصاف کی مسند پر

امام ابوبوسف مافيد فرماتے میں كه ايك دن اميرالمومنين خليفه ماردن الرشيد خود مسند عدالت یر بیٹے فیلے فرما رہے تھے کہ میں عدل و انصاف جائے والوں اور خلیفہ کے درمیان ایک وکیل اور سفیر کی حیثیت سے کھڑا تھا' میں عوام کے معاملات من کر خلیفہ کے سامنے اچھے الفاظ میں پیش کر آ تھا' ایک دن عراق کے دور دیمات سے ایک برا امیر کبیر آدمی آیا اور کہنے لگا کہ میرا بہت برا باغ خلیفہ عبای نے وبا رکھا ہے اور اس پر ایک عرصہ سے غاصبانہ قابض ہے میں نے اس سے دوبارہ پوچھا کہ كيا اميرالمومنين غاصب بي ؟ انهول نے قبضه كيا ہوا ہے ؟ اس نے كما بال! ميں بار بار يوچھتا كيا وه اپی بات پر مصررہا میں نے انتمائی کوسٹش کی کہ سائل اینے اس وعویٰ سے باز آجائے اور کسی دو سرے مخص پر بیہ وعویٰ کر دے مگروہ اپنے وعویٰ پر ڈٹا رہا اور کہا کہ میرا مدعی علیہ امیرالموشین ہی ہے۔ میں بیہ سارا مقدمہ لے کر امیرالمومنین کی عدالت میں پیش ہوا' اس کا سارا جغرافیہ بیان کیا' امیرالمومنین کرس پر تشریف فرما تھے' ان کے ساتھ کی کرس پر ان کے وزیرانصاف کی کی بن خالد بیٹھے تھے عمی نے دو سروں کے مقدمات پیش کیئے مراس دیماتی کے مقدمہ کو سب سے آخر میں لایا اور عرض کی اے امیرالمومنین! ایک دیماتی سردار به دعویٰ لے کر آیا ہے کہ امیرالمومنین نے اس کاباغ غصب کیا ہے اور ایک عرصہ سے اس پر قبضہ جما رکھا ہے۔ میں نے اس بہت سمجھایا کہ امیرالمومنین الیا کام نمیں کرتے کی دو سرے نے دبایا ہوگا مگروہ اصرار کرتا ہے کہ امیرالمومنین نے ہی قبضہ کیا ہے۔ امیرالمومنین نے بتایا کہ اس بوڑھے سردار کے والدنے میرے والد کو بیہ باغ ہبہ کیا تھا' اب بیہ باغ مجھے اپنے والد کی وارثت سے منتقل ہوا ہے' وہ میرے قبضہ میں ہے' میں نے کہا اگر حضور اجازت دیں تو اس بوڑھے سردار مدعی کو عدالت میں بلالوں۔ امیرالمومنین نے اجازت دے دی وہ اندر آیا

میں نے اے کما کہ جس باغ کا تم دعویٰ لے کرآئے ہو اس کی تفصیلات اپنی زبان سے بیان کرو۔
امیرالمومنین تشریف فرما ہیں اب بیمال سوچ لیں کہ تممارے باغ پر کس کا قبضہ ہے، بوڑھ سردار
نے کما ہال اس امیرالمومنین نے میرے باغ پر قبضہ کر رکھا ہے، ہیں نے امیرالمومنین سے عرض کی حضور آپ کے پاس اس کا کیا جواب ہے، امیرالمومنین نے فرمایا اس کی کوئی چیز میرے قبضے ہیں نمیں ہے، ہیں نے دیماتی کو کما کیا تممارا کوئی گواہ ہے جو بہ شمادت دے سکے کہ تممارے باغ پر امیرالمومنین قتم کھا کیں گے اور پھر اس کے امیرالمومنین قابض ہیں، اگر تم گواہ ہیش نہ کرد کے تو امیرالمومنین قتم کھا کیں گے اور پھر اس کے مطابق فیصلہ کرنا ہو گا۔ اس نے کما میرا تو کوئی گواہ نہیں، امیرالمومنین قتم کھا کیں، میرے کھنے پر امیرالمومنین نے قتم کھائی کہ انہوں نے اس بوڑھے کے باغات پر قبضہ نمیں کیا۔ یہ دیکھ کر دیماتی سردار پیچھے ہٹ گیا اور کہنے نگا امیرالمومنین ایسے قتم پی گیا ہے جیسے کوئی ستو پی جائے۔ آج امیرالمومنین نے اپنا منہ خاک آلودہ کر لیا ہے، عدل و انصاف سے ہٹ گیا ہے۔

میں میہ ہاتیں من کو سوچنے لگا اب نہ میری خیرہے ' نہ ہوڑھے دیماتی کی 'گر خلیفہ کے وزیر کی بین خالد نے کما یعقوب آپ نے دیکھا آج امیرالموشین نے کس جرات سے عدل و انصاف کا مظاہرہ کیا ہے۔ رعایا کے ایک عام آدمی کے لیئے بھی اس نے قتم اٹھانے سے دریغ نہیں کیا۔ پھر امیرالموشین اس شرط کو پورا کرنے کے بعد چرے پرخوشی اور اطمینان کے آثار نظر آرہے تھے۔ سجان اللہ اسلامی عدل و انصاف کے سامنے امیرالموشین بھی گردن جھکا دیتے ہیں۔ ایسی مثال تو حصرت عمررضی اللہ تعالیٰ عنہ کے زمانہ خلافت میں ہی ملتی ہے۔

ابن زید فرماتے ہیں کہ امام ابولوسف رحمتہ اللہ علیہ نے یہ واقعہ ہمیں اپنی زبان سے سالا تھا اور کما جب بھی میرے سامنے یہ واقعہ آ با ہے تو میں غم سے ند هال ہو جا تا ہوں اور اللہ سے ور آ ہوں کہ اس دن میں نے عدل و انصاف کی بجائے امیرالمومنین کی قتم پر ہی اعتاد کیا۔ ہم نے پوچھا وہ کیسے ؟ فرمایا مجھے امیرالمومنین سے قتم لینے کی جرات کسے ہوئی 'پھر فرمایا دراصل بات یوں ہے کہ اگر بھے عدل کا معیار قائم کرنا تھا تو مجھے چاہیے تھا کہ میں دونوں کو (امیرالمومنین اور ویماتی سروار) ایک کشیرے میں کھڑا کرتا تھر اس وقت امیرالمومنین تو کری پر بیٹھے تھے' غریب دیماتی سامن ماکل کی طرح زمین پر کھڑا تھا اور میں دونوں کو دیکھ رہا تھا' چاہیے تو یہ تھا کہ اسے بھی کری میا کرتا اور وہ

مناقب امام اعظم محبه سرية

امیرالمومنین کے برابر بیٹھ کر فیصلہ سنتا۔

امام ابوبوسف ما بلی مشہور کتاب "ریاضة النفس" ہے۔ اس میں انہوں لکھا ہے کہ ایک دن علی بن عیمیٰی میرے پاس آئے' ان کا خیال تھا کہ میں اس وقت خواتین یا کنیزوں کے ساتھ بیٹھا خوش گیاں کر رہا ہوں گا اور مجھے اندر آنے کی اجازت نہیں طے گا۔ علی بن عیمیٰی کہتے ہے۔

م سے اندر آیا تو دیکھا کہ امام ابوبوسف گریں اکیلے بیٹھے ہیں اور کتابول کے ڈھیرے میں بیٹھے مطالعہ کر رہے تھے۔ آپ نے مجھے دیکھتے ہی فرمایا میرے گھرکے ہر گوشے پر نگاہ ڈالیس میں نے دیکھا تو چاروں طرف کتابیں ہی کتابیں نظر آئیں۔ آپ نے فرمایا سے عوام کے فیصلوں کی فائلیں ہیں میں

نے یہ فیلے اللہ کے خوف سے ڈر کر لکھے ہیں ' خدا کرے میری کمی غلطی کا قیامت کے دن مواخذہ نہ

### الم ابوبوسف راٹیے کی شخصیت پر ائمہ وقت کے تاثرات

اساعیل بن حماد رحمتہ اللہ علیہ فرماتے ہیں کہ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کے ہزاروں شاگرو تھے گر ان میں دس خاص شاگرد تھے۔ امام ابوبوسف امام زفر اسد بن عمرالبجلبی عافیہ الاودی واودطائی قاسم بن معن المسعودی علی بن مسمر کی بن ذکریا بن ابی زایدہ حبان مندل علی العنزی کے دو بیٹے لیکن ان تمام میں امام ابوبوسف رحمتہ اللہ علیہ اور امام زفر جیسا کوئی نہ تھا۔

حماد بن ابی مالک نے فرمایا کہ حقیقت یہ ہے کہ اگر امام ابوبوسف نہ ہوتے تو امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کا نام لینے والا کوئی نہ ہو آ اور ان کا دنیائے علم میں ذکر تک نہ ہو آ۔ ابن ابی لیل کو کوئی نہ جانیا' امام ابوبوسف نے ان دونوں کے اقوال' مسائل اور فیصلوں سے دنیائے اسلام کو روشناس کرایا تھا۔

طلحہ بن مجمہ بن جعفر نے فرمایا کہ ابویوسف رحمتہ اللہ علیہ بہت مشہور ہوئے تھے ان کی فضیلت چاردانگ عالم میں مائی گئی۔ آپ امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے خاص شاگرد اور اپنے زمانے کے مقترر امام تھے۔ آپ کے جمعصر آپ کے سامنے طفل کمتب نظر آتے تھے۔ علم و حکمت سیاست و منزلت میں آپ کا کوئی ہم پایہ نہ تھا۔ آپ نے سب سے پہلے اصول فقہ پر امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے فدجب پر ایک جامع کتاب کھی تھی اور آپ نے ہی اقطار عالم اور اکناف جمال میں امام ابوحنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے علوم کو پھیلایا تھا۔

عمر بن حماد بن امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ فرماتے ہیں کہ میں نے ایک دن اپ وادا امام ابو حنیفہ رضی اللہ تعالی عنہ کو دیکھا کہ آپ کے دائیں ہاتھ امام ابو یوسف بیٹھے ہیں اور بائیں ہاتھ امام دفیر میں ، دو نوا میں میں مناظمہ کی سے بین جد ملت امام ابو یوسف کمتے ہیں امام و فرماے المام دفر میں مناظمہ کی سے بین جد ملت امام ابو یوسف کمتے ہیں المام ذفر میرے

زوردار دلائل سے اس کا رد کر رہے ہیں اور جو مسئلہ امام زفر بیان کرتے ہیں امام ابوبوسف اس کی تردید کر دیتے ہیں۔ صبح سے ظہر تک ہی کیفیت رہی۔ امام ابوطنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ دونوں کو دیکھتے رہے، نہ کسی کو روکتے ہیں 'نہ کسی کو فلط قرار دیتے ہیں حتیٰ کہ موذن نے نماز ظہر کی اذان دی تو امام ابوطنیفہ ملاجی نے ہاتھ اٹھا کر امام زفر کی ران پر ہاتھ مارا اور فرحایا جس شہر میں ابوبوسف ہوگا وہاں تہماری دال نہیں گلے گی۔ اس طرح استاد گرامی نے ابوبوسف کے دلائل کو قبول کرتے ہوئے امام زفر کے دلائل کو مسترد کر دیا۔

اساعیل بن حماد بن امام ابوصنیفہ ریشے نے فرمایا کہ ایک دن امام ابوصنیفہ رضی اللہ تعالیٰ عنہ نے اپنے شاگردوں سے فرمایا کہ میرے معاون شاگرد چھتیں (۳۸) ہیں' ان میں اٹھا کیس (۲۸) قضاء کی صلاحیت رکھتے ہیں۔ ان میں میرے دو ( امام ابوبوسف اور امام زفر) تو ایسے ہیں کہ ان کی مثال نہیں ملتی اور وہ مستقبل میں قضاۃ کے منصب کو بردی قابلیت سے جھا کیں گے۔

会会会会会会会会会会会会会会

LE SURLEY END BETTERNESS REPRESENTATIONS AND ARREST

same and the state of the state

on with the same and the same the transfer of the same

A STARLING AND SHEET AND STREET

Washington Kulidan Kanan in him and

THE RELEASE WAS ELECTED FOR THE PROPERTY OF THE PARTY OF

ANTENNAMON OF THE RESIDENCE ENTRY OF

# خاتمهالطبع ...مصنف برایک نوٹ

صدر الائمه الى المويد ابن احمد المكي رحمته الله عليه لكصة بين كه بم نے امام اعظم الوحنيف رضی اللہ تعالیٰ عنہ کے جس قدر مناقب بیان کیئے ہیں وہ مشرق و مغرب کے تمام آئمہ اسلام اور خطبائے کرام سے بڑھ کر ہیں۔ ابن احمد المکی رحمتہ اللہ علیہ ایک اور مقام پر لکھتے ہیں کہ:

ان مناقب کے دس ابواب کو ہم نے وانستہ چھوڑ دیا ہے۔ ان میں آپ کے دس اسحاب كے مناقب اور اصول درج تھے۔ ہم نے ان مناقب كى محيل و تفصيل كے ليئ مناقب الدام الوحيف رضى الله تعالى عنه المام علامه البزارى الكردرى رحمته الله عليه كو بنياد بنايا ٢- مم في اول ع آخر تک ان مناقب کو بیان کر دیا ہے کہ ان اساد کو دانستہ نظر انداز کر دیا ہے جو ہر روایت سے پہلے جابجا موجود تھیں۔ الحمداللہ ہم اپنے مقاصد میں کسی حد تک کامیاب ہوئے ہیں۔ یہ ابند تعالیٰ کا احسان ہے' اس کاکرم ہے۔

اس خطی نسخه کو " وائرة المعارف النظاميه" حيدر آباد وكن في كلي بار ١١١١ه عن زاور ظباعت سے آراستہ کیا۔ اس ظباعت میں سلطنت آصغیہ کے سربراہ مظفر الملک ، فتح جنگ نظام الدوله ' نظام الملك آصف جاه ' مير محبوب على خان بمادركى راجمائي اور تعاون حاصل ربا ب-

اس الديش كي للباعث صحت ترتيب و تهذيب تقيح و تحقيق مين مطبع دائرة المعارف النظاميه حيدر آباد وكن كابرا باته ب، جس من الحافظ الحاج المولوي محر اتوار الله خان بماور (جو اس وائرہ کے بانی رکن ہیں) اور مولانا محمد عبدالقيوم نے برا حصد ليا ہے۔ اس كى صحت اور بروف ريدنگ يس محد حيدر الله خال المحقق النعماني مدير المطبعته اور مع الحن بن احد نعماني مولوي سيد ابوالحن الأمروبي، قاضي ابوانظفر عبد الملك محمه شريف الدين حفي، الفاطمي الحيدر آبادي كي لداد اور ماعی کے ہم ولی طور مفکور ہیں۔ یہ کتاب ۲۹ رہے الادل ۱۳۲۱ء کو چھپ کر سامنے آئی۔

( مترجم گرامی حضرت علامه ابوالصالح محر فیض احراد سی ضوی برای بی محل ایسان و

اقب امام اعظم ٥٣٨ مكتبه نبويه

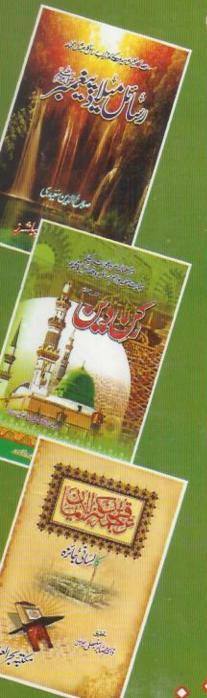
اس کتاب کا ۲۱ دسمبر ۱۹۹۷ء کو باب المدینه کراچی (پاکستان) میں اردو ترجمه کمل کیا۔ آپ ان دنوں کراچی میں مولانا سید محمد عارف شاہ صوفی محمد مقصود حسین قادری اولیی سید شاہ محمد اسداللہ جنیدی کے زیراہتمام دورہ تفیر قرآن کے سلسلہ میں قیام پذیر تھے۔



#### ملنے کے پتے

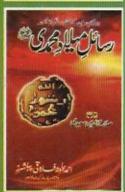
م كما بوى ادبستان، نيوالقمر بك كار پوريشن كمتبه قادريه كمتبه نبويه زاويه ببلشرز وادري رضوي ادبستان، نيوالقم بكر منوان كتب خانه نور بيرضويه دارالعلم دارالنور كرمانواله بك شاپ فيض مخ بخش بك شاپ علامه فضل حق ببلشرز گزار نيازی دار الكتابت (شخ بهندی سرید) كتبه خليليه سعيديه ، كت خانه ام) احمد رضا دار الكتابت (شخ بهندي سريد) كتبه خليليه سعيديه ، كت خانها احمد رضا فظاميه كتاب گهر شبير برادرز نغيمي كتب خانه علم وعرفان ببلشرز دار الاسلام (جيلاني سينز) كاخ نينشل ببلشرز اردو بازار لا بهور مكتبه اعلى حضرت محتبجال كرم مكتبه فيضان سنت بيبل والي معجد بوبر گيث ملتان كمتبه مهريه كاظميه جامعه انوار العلوم نيومتان كمتبه كريميه قذافي چوك ملتان مكتبه المفتاح شاكر ناون ديره غازي خان كر مازير يشن راولبندي خان كر ماته در بيسلطاني عيدگاه جام يوضلع را جن يور احمد بك كار پوريشن راولبندي خان كان كمتبه در بيسلطاني عيدگاه جام يوضلع را جن يور احمد بك كار پوريشن راولبندي دان كان كمتبه در بيسلطاني عيدگاه جام يوضلع را جن يور احمد بك كار پوريشن راولبندي

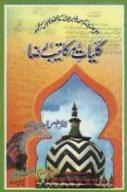
# قابل مُطالعه ويستكوين

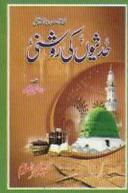














حمادا حرجا وبدف اروقي پبلشرز

وربارماركيث لامور 4584608 0300-4157405